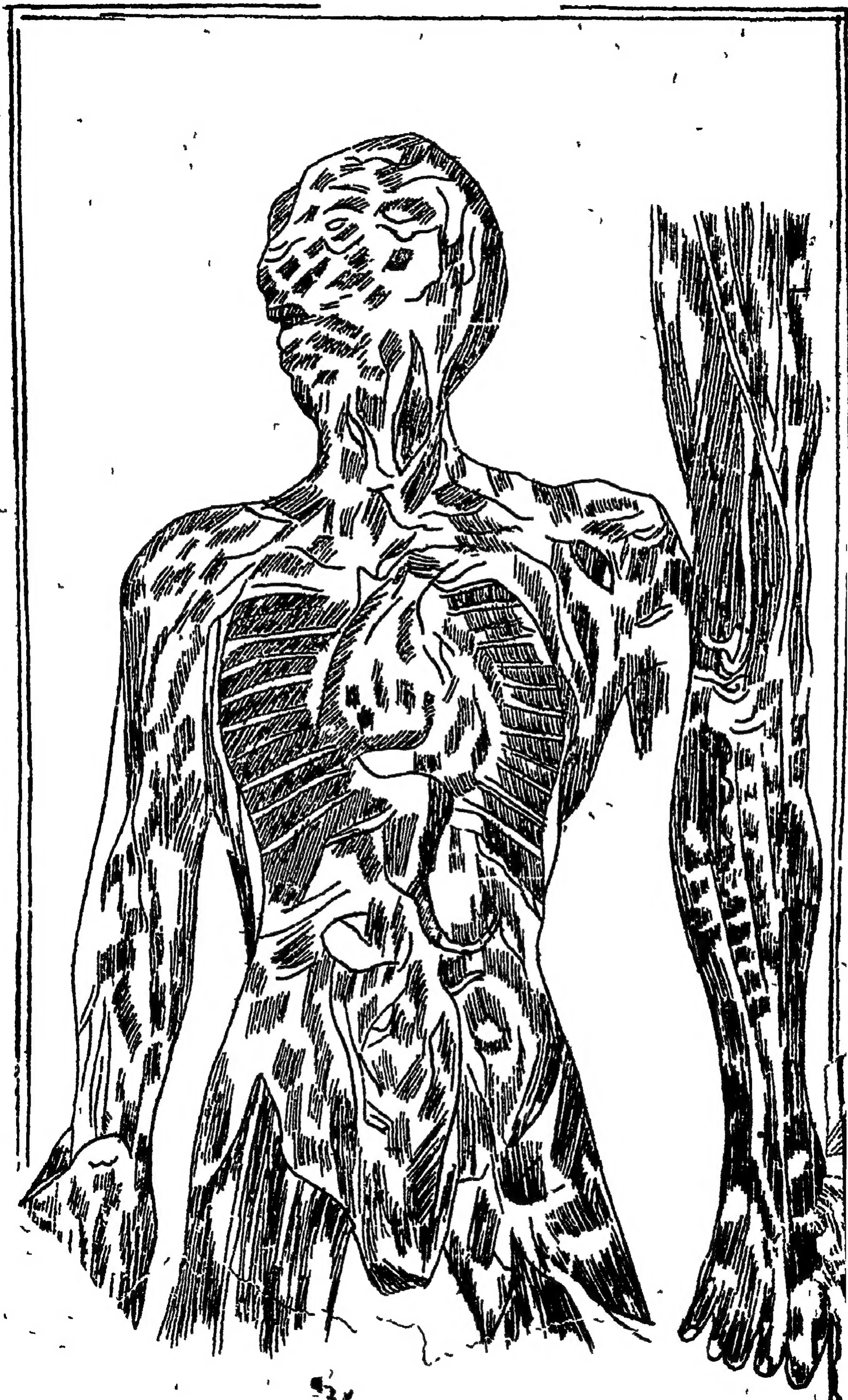
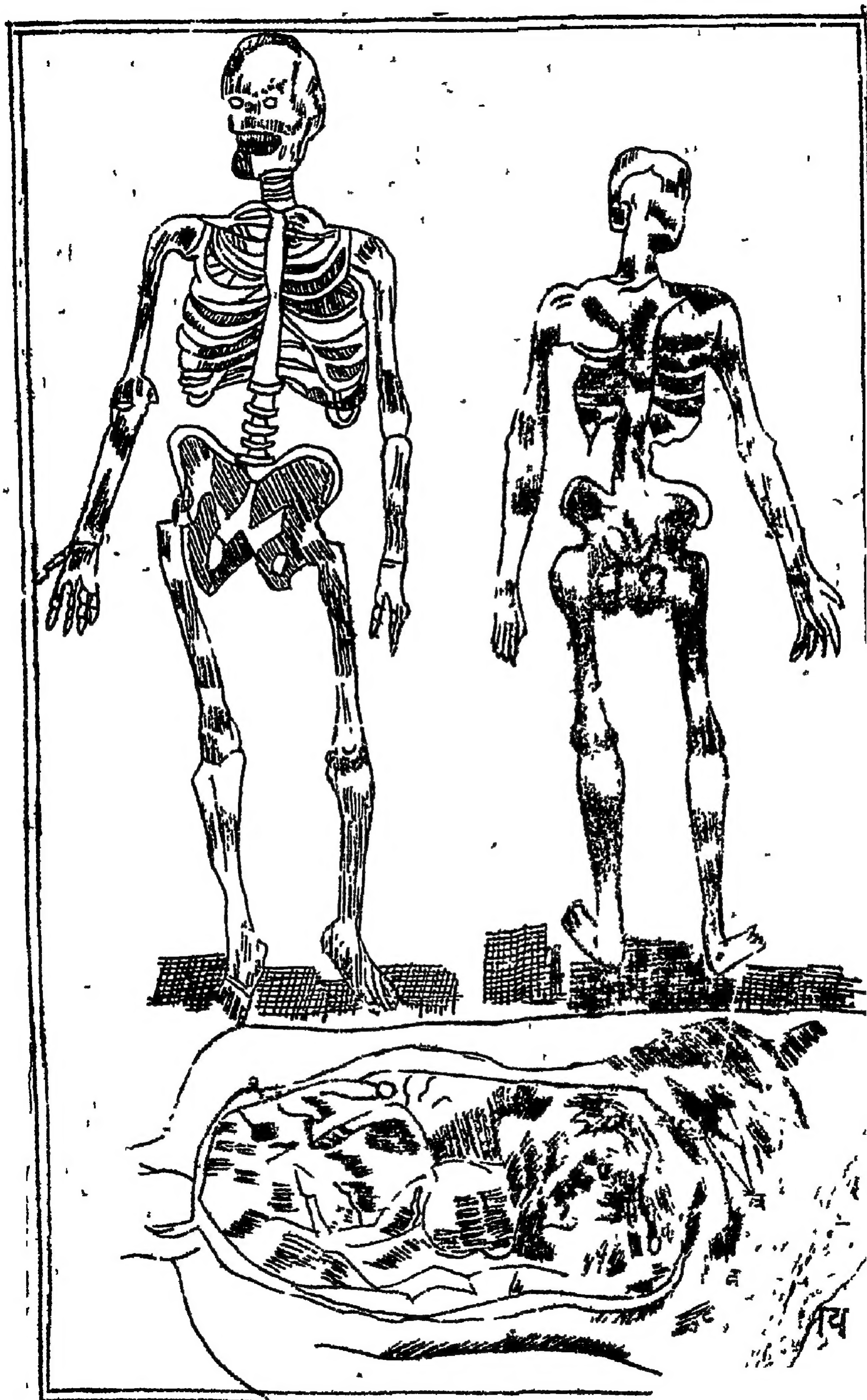
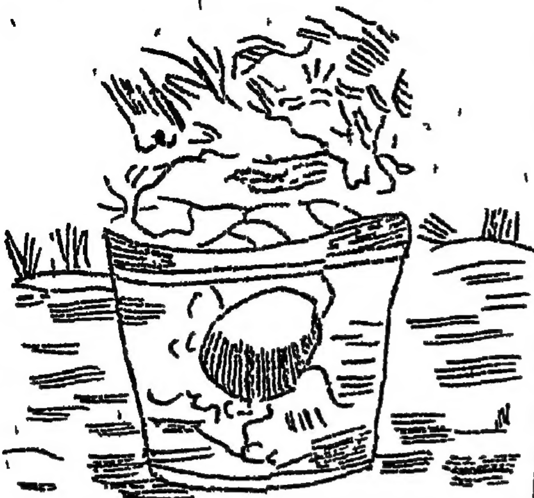





गजपुट



अथ नूतनामृतसागरस्थविषयानुक्रमणिका

इति विचार खण्ड

अथ निदान खण्ड

तरंग १

तरंग १२

तरंग १३

तरंग १४

तरंग २०

तरंग २१

तरंग २२

इतिविषयानुक्रमणिका ।

श्रीगणेशायनमः ।

नमो ब्रह्मप्रजापत्याश्विमल भिद्धन्वन्तरि ।

सुश्रुतप्रभृतिभ्यः ।

अथ नुस्खामृतसागरः ।

तत्रोत्पत्तिखण्डः १

गजमुखममरप्रवरं सिद्धिकरं विघ्नहर्तारम् ॥
गुरुभवगमनयनपदमिष्टकरीमिष्ट देवतां वन्दे ॥ १ ॥

भाषार्थः--देवताओंमें श्रेष्ठ, सिद्धिके देनेहारे, विघ्नोंकोदूरकरनेहारे जो गजानन, तथा वाञ्छा के सिद्ध करने हारे जो इष्टदेवता और ज्ञान दाता जो गुरु हैं तिनको मैं नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥

आयुर्वेदागमनं क्रमेणैयना भवद्भूमौ
प्रथमं लिखामि तमहं नानातंत्राणिसदृश्य ॥ २ ॥ भा. प्र.

इसपृथ्वीपर, जिस प्रकारसे आयुर्वेदका आगमन हुआउसेमैंकई ग्रन्थों को देखके इस ग्रन्थ के आदि मे यथाक्रमसे लिखताहूं ॥२॥

आयुर्वेदस्य लक्षणमाह ।

आयुर्हिताहित व्याधेर्निदानं शमनं तथा ।
विद्यते यत्र विद्भिः स आयुर्वेद उच्यते ॥ ३ ॥

अयुर्वेदस्य निरुक्तिमाह

अनेन पुरुषो यस्मादायुर्विन्दाति वेत्तिच ॥

तस्मान्मुनिवरैरेष आयुर्वेद इतिस्मृतः ॥ ४ ॥ भाव प्रकाश

भाषार्थ-जिसमें आयु के हित, अहित और व्याधिके निदान और शमन इत्यादि हों उसे आयुर्वेद कहते हैं ॥ ३ ॥ शरीर जीवका जो संयोग हो उसे जीवन कहते हैं वह जीवनयुक्त जो समय है उसे आयु कहते हैं और शरीर से जीवका वियोग होना उसे मृत्यु कहते हैं, जिसके द्वारा पुरुष पूर्ण आयुको पूर्णरूपसेप्राप्त हो तथा दूसरे की आयुको भी जान लेवे उसे मुनिराज आयुर्वेद कहते हैं क्योंकि इसके द्वारा सेवन असेवन योग्य पदार्थों के गुण कर्मका ज्ञान होनेसे सेवन योग्यका सेवन और सेवन अयोग्यका त्याग होता है जिससे आयु निश्चय की जाती है ॥ ४ ॥

तत्रादौ ब्रह्मणः प्रादुर्भावः ।

विधातार्थवसर्वस्वमायुर्वेदं प्रकाशयन् ॥
स्वनाम्ना संहितां चक्रे लक्ष श्लोकमयीमृजुम् ॥ ५ ॥
ततः प्रजापतिं दक्षं दक्षं सकलकर्मसु ।
विधिर्धीनीरधिं सांगमायुर्वेदमुपादिशत् ॥ ६ ॥ भवप्रकाशः

भाषार्थ प्रथम ब्रह्माजी ने अपनी प्रजा के हितार्थआयुर्वेद को प्रकाश करने के लिये एक लाख श्लोकमें ब्रह्मसंहिता बनाकरसर्व कार्य कुशल बुद्धि सागर अपने पुत्र दक्षको पढाई ॥ ७ ।

अथ दक्षप्रादुर्भावः ।

अथ दक्षः क्रियादक्षः स्ववैद्यो वेदमायुषः ॥
वेदयामास विद्वांसौ सूर्यांशौ सुरसत्तमौ ७ । भा. प्र.

भाषार्थ तत्पश्चात् क्रियाकुशल दक्षने आयुर्वेद सूर्य पुत्र देवता वैद्य अश्विनी कुमारजी को पढाया ।

अथाश्विनी—कुमारे प्रादुर्भावः ।

दक्षादधीत्य दस्रौ वितनुतः संहितां स्वीयाम् ।
सकल चिकित्सकलोकप्रतिप्रतिविवृद्धये धन्याम् ॥ ८ ॥

भावप्रकाशः

भाषार्थ—अश्वनी-कुमारों ने दक्षसे आयुर्वेद पढ़कर संसारमें आयुर्वेद की वृद्धि के हेतु अपने नामकी अश्वनी कुमार संहिता बनाई और भैरव से कटे हुए ब्रह्माजी के शिरको जोड़ा तब यज्ञ के विभागी हुए. देव दानव, संग्राम में जिन देवताओंके अंग भंग होगये थे उन्हें पूर्ववत् किये इन्द्रकी भुजा स्तम्भको आरोग्यकी चन्द्रमा का क्षयीरोग दूर किया, पूषा देवता के दांत जोड़े, भगदेवताके नेत्र सुधारे, और वृद्ध च्यवन ऋषिको तरुण बनायाइत्यादि अनेक कार्य करके देवपूज्य और वैद्य शिरोमणि हुए ।

अथेन्द्रप्रादुर्भावः ।

नासत्यौ सत्यसन्धेे शक्रेण किल याचितौ ।
आयुर्वेदं यथाधीतं ददतुः शतमन्यवे ॥ ९ ॥ भा.प्र.

भाषार्थ इंद्रने अश्विनी—कुमारों का पूर्वोक्त कर्म देखके उनसे आयुर्वेद के लिये याचना की, तब उन्होंने इंद्रको आयुर्वेद पढ़ाया और इंद्र ने अत्रि आदि अनेक मुनियों को पढ़ाया ॥ ९ ॥

अथात्रेय प्रादुर्भावः ।

आयुर्वेदोपदेशं मे कुरु कारुण्यतो नृणाम् ।
तथेत्युक्त्वा सहस्राक्षोऽध्यापयामासतं मुनिम् ॥ १० ॥

भाषार्थ-किसी समय आत्रेय मुनि प्राणियों को रोगयुक्त दे

उनके रोग निवृत्तिके हेतु इन्द्रलोकको गये, इन्द्र ने ऋषिकी पूजा कर आगमनका कारण पूछा. उसने सब कारण (वृत्तांत) कहा और आयुर्वेद पढ़नेका आशय दरशाया, तब इंद्रने उन्हें आयुर्वेद पढ़ाया तब मुनिने. पढ़के अपने नामकी (अत्रेय) संहिता बनाकर अग्निवेष, भेड़ जातुकर्ण पराशर क्षीरपाणी और हारीत इन ऋषियों. को पढ़ाई तब इन सबोने अपने २ नामकी पृथक् २ संहिता बनाई ॥ १० ॥

अथ, भारद्वाज प्रादुर्भावः ।

तमुवाच मुनि सांग आयुर्वेद शतक्रतुः ।
जीवेद्वर्षसहस्राणि देहो नीरुक् शिष्य यम् ॥ ११ ॥ भ.म.

भाषार्थ–एकसमय हिमाचलके समीप सब देवता और मुनिएकत्र हुए जिनमें सबसे प्रथम भारद्वाजजी आये, तदनंतर, आंगिरा गर्ग मरीचि, भृगु, भार्गव पोलस्त्य, अगस्त्य, असित, वसिष्ठ, पाराशर, हारीत गौतम, सांख्य, मैत्रेय, च्यवन, जमदग्नि, गार्ग्य, काश्यप, कश्यप नारद, वामदेव, मार्कंडेय, कपिंजल, शांडिल्य, कौडिन्य, शकुनी शौनक, आश्वलायन, सांकृत्य विश्वामित्र, परीक्षितदेवल, गालव धौम्य, काम्य, कात्यायन, बैजपाय, कुशिक, बादरायण, हिरण्याक्ष लौगाक्षी, शरलोमा, गोभिल, वैखानस और बालखिल्य इत्यादि ज्ञाननिधि तपस्वी परस्पर कहने लगे, कि अर्थ, धर्म, काम, मोक्षका कारण यह कलेवर है, यदि यह निरोगी रहै तो सर्व कार्य सिद्ध होते हैं, इसलिये हे भारद्वाजजी! आप इंद्रसे आयुर्वेद संहिता पढ़ो, तब भारद्वाजजी इन्द्र से आयुर्वेद पढ़ आये और सर्व मुनिमंडली में प्रवृत्त किया उससे द्रव्य गुण कर्मादिको जानके निरोग हो के आयुर्वेद को लोक में प्रसिद्ध किया ॥ १५ ॥

अथ चरकप्रादुर्भावः ।

यदा मत्स्यावतारेण हरिणा वेद उद्धृतः ।
तदा शेषश्च तत्रैव वेदं सांगमवाप्तवान् ॥ १२ ॥
अथर्वान्तर्गतं सम्यगायुर्वेदं च लब्धवान् ।
एकदा स महीवृत्तं द्रष्टुं चर इवागतः ॥ १३ ॥
तस्माच्चरकनामासौ विख्यातः क्षितिमण्डले ॥ भावप्रकाशः

भावार्थ—जब नारायणने मत्स्यावतार लेकर वेदोंको निकाला उस समय शेषजी वेदांगोंको प्राप्त होकर अथर्वण वेदके अंगभूत आयुर्वेदको प्राप्तहुए और पृथ्वीमेंगुप्तरूप से विचरतेहुए,लोगोंको रोगग्रस्त देखकर मुनि पुत्रका रूप बनाय चरकके सदृश विचार ने लगे सो चरकाचार्य प्रसिद्ध हुए और रोगियों को आरोग्य करते हुए चरकसंहिता बनाई ॥ १२ ॥ १३ ॥

अथ धन्वंतरिप्रादुर्भावः ।

अधीत्य चायुषो वेदमिन्द्राद्धन्वंतरिः पुरा ॥१४ ॥
आगत्य पृथिवीं काश्यां जातो बाहुजवेश्मनि ।
नाम्नातु सोऽभवत्ख्यातो दिवोदास इतिक्षितौ ॥ १५ ॥ भा.प्र.

भावार्थ—एकबार देवराजकी दृष्टि भूलोकपरपड़ी सो बहुतसे मनुष्य रोगसे पीड़ित दृष्टि आये, तब इन्द्रने धन्वन्तरिजी से कहा कि तुम लोकोपकार के हेतु पृथ्वी पर काशीपुरी में जाओ और काशीनरेश; होकर रोगको दूरकरनेकेहेतु आयुर्वेदका प्रकाशकरो तब धन्वतरिजी इन्द्रोक्तआयुर्वेद पढ़कर काशीमें जन्म लेकर दिवोदास नामक राजा हुए लोकहितार्थ अपने नामकी (धन्वतरि)य संहिता बनाकर प्रसिद्धकी ॥ १४ ॥१५ ॥

अथ सुश्रुतप्रादुर्भावः ।

पितुर्वचनमाकर्ण्य सुश्रुतः काशिकांगतः ।
तेन सार्द्धं समध्येतु मुनीनांतु शतं ययौ ॥ १६ ॥
आयुर्वेदं भवानस्मानध्यापय तु यत्नतः ।
अंगीकृत्य वचस्तेषां नृपतिस्तानुपादिशत् ॥ १७ ॥
प्रथमं सुश्रुतस्तेषु स्वतंत्रं कृतवान स्फुटम् ॥
सुश्रुतस्य सखायोऽपि पृथक्तंत्राणि तेनिरे ॥ १८ ॥ भा. प्र.

भाषार्थ एकसमय विश्वामित्र ऋषिने अपनी ज्ञानदृष्टि से देखा धन्वन्तरिका अवतार काशीमें दिवोदास राजा है. तब अपने पुत्र को आज्ञादी कि तुम काशीमें जाओ और दिवोदास राजा से आयुर्वेद पढ़कर लोक हित करो. क्योंकि इसके समान यज्ञादि कोई सत्कर्म पुण्यप्रद नहीं है. पिताकी आज्ञानुसार सुश्रुत काशी में आये और उनके साथ पढ़नेके लिये १०० मुनि और भी आये और दिवोदास राजासे अपने आनेका कारण प्रकाशित किया तब दिवोदास राजाने सुश्रुतादि मुनियों को आयुर्वेद पढ़ाया तब सबसे प्रथम सुश्रुत ने अपने नामकी (सुश्रुत) संहिता बनाई और उनके पश्चात् अन्यान्य ऋषियों ने भी बनाई इस प्रकार आयुर्वेदवक्ता ऋषियों का प्रादुर्भाव बिस्तीर्णरूप भाव प्रकाश के पूर्वखंड में लिखाहै ॥ १६ ॥ १७ ॥

इति श्री नूतनामृतसागरे उत्पत्तिखण्डे आयुर्वेद प्रवक्तृ प्रादुर्भावनिरूपणे प्रथमस्तरंगः ॥



अथ सृष्टिक्रमः ।

आत्मा ज्योतिश्चिदानंदरूपोनित्यश्च निस्पृहः ॥

निर्गुणः प्रकृतेर्योगात् सगुण कुरुते जगत् ॥ १ ॥

भाषार्थ–ज्योति स्वरूप, चिदानंद नित्य निस्पृह निगुण जो ब्रह्म परमात्मा सो प्रकृति के योगसे सगुण होकर जगतको उत्पन्न करताहै ॥ १ ॥ अब हम अमृतसागर के २१ वें तरंग में लिखे अनुसार ' सृष्टिक्रम;; प्रारंभ करतेहैं क्योंकि भावप्रकाशादि वैद्यक ग्रथोंमें उक्तविषय प्रथमही रक्खा गया है, इसलिये इस नवीन अमृतसागरमें सृष्टिक्रम पूर्वही होना चाहिये उसपरमेश्वर कीप्रकृति अर्थात् मायाने इस अनित्य संसारको " नटकौतुक " सदृश बनाकर इच्छारूप महत्तत्वको बनाया उस महत्तत्वसे अहंकार उत्पन्न हुआ सो ३ प्रकार का है (अर्थात् १ रजोगुण २ सतोगुण ३ तमोगुण) पश्चात् तमोगुणरूपी अहंकारने सतोगुण और रजोगुणसे मिळाकर १० इन्द्रियां और मनको उत्पन्न किया वे ये हैं ज्ञानेद्रियां–१ कर्ण २ त्वचा ३ नेत्र ४ जिह्वा ५ नासिका । कर्मेन्द्रियां १ वाणी २ हस्त ३ पद ४ लिंग ५ गुदा ।

तमोगुणनेअधिक सतोगुणयुक्त अहंकारसे पंचतन्मात्रा (१ शब्द २ स्पर्श ३ रूप ४ रस ५ गंध) उत्पन्न की ।

तन्मात्रासे पंचमहाभूत (१ शब्दसआकाश २ स्पर्शसे वायु ३ रूपसे अग्नि ४ रससे जल ५ गंधसे पृथ्वी) उत्पन्न हुए.

सो १ कानका विषय शब्द, २ त्वचाका स्पर्श, ३ नेत्रका रूप, ४ जिह्वाका स्वादऔर ५ नासिकाका गंध ये ज्ञानेन्द्रियोंके५ विषय हैं इस प्रकार १ वाणीका भाषण, २ हस्तका ग्रहण, ३ पदका चालन, ४ लिंगकामैथुन, औ़र५गुदाकामलत्याग ये कर्मेद्रियकेविषय जाने १प्रधान २ प्रकृति ३ शक्ति ४ नित्या और ५ विकृति येप्रकृतिके नाम हैं सो ये प्रकृति शिवसे मिली हुई रहती है ।

उक्तकर्मानुसार ये २४ तत्व उत्पन्न हुए (अर्थात् १ महत्तत्त्व १ अहंकार ५ तन्मात्रा १ प्रकृति १० इंद्रियाँ १ मन ५ महाभूत) और इनने मिलके १ शरीर रूपीघरबनाया तब उसघरमें जीवात्मा शुभाशुभ कर्मोंके स्वाधीनहोकेपरवश हुआ और मनरूपी दूतके वशमें हो निवासकरने लगा इस जीवयुक्त शरीरको बुद्धिमान् लोग देहीकहतेहैं यह देह पाप पुण्य सुखदुःखोंसेव्याप्तहोकर और मनसेजीवात्मा बँधकर स्वकृतकर्मबंधनोंसे बंधताहै और काम क्रोध लोभ मोहअहंकार दशोंइन्द्रियें और बुद्धि ये सब अज्ञानदशामेंजीवात्माकेबंधन के लिये हैं और जीवात्मा आत्मज्ञानी होनसे मुक्त होता है ।

इति श्री नूतनअमृतसागरे उत्पत्तिखण्ड सृष्टिक्रमोनाम द्वितीयस्तरगः ॥ २ ॥

अथ गर्भोत्पत्तिक्रमः ।

द्वादशाद्वत्सरादूर्ध्वमापंचाशत्समाः स्त्रियः ॥
मासि मासिभगद्वारा प्रकृत्यैवार्तवं स्रवेत ॥ १ ॥
आर्तवस्रावदिवसादृतुः षोडशरात्रय ः ।
गर्भग्रहणयोग्यस्तु स एव समयः स्मृतः ॥ २ ॥

भाषार्थ–१२वर्ष से उपरांत ५० वर्ष पर्यंत स्त्रियोंकी योनिद्वारा पूर्तिमास स्वाभाविक रजोधर्म प्राप्त होता है रजोधर्म के दिनसे सोलह रात्रितक स्त्रियोंको गर्भधारण करनेयोग्य समय है उनमें प्रथमकी ३ रात्रि छोडके शेष रात्रियोंमें ऋतुदान दे ।

इसके आगे अमृतसागरके २५वेंतरंगोक्त गर्भोत्पत्ति लिखते हैं खाया हुआ अन्न वायुकीप्रेरणासे आमाशयमें पहुँचताहै फिरवह आहारमधुरताको प्राप्तहोकर फिरवही आहारपाचक पित्तकेप्रभावसे कुछ पककर खट्टा होजाताहै अनंतर नाभि स्थितसमानवायुसे प्रेरितहोके छटवींग्रहणी कलामें प्राप्तहोताहै, तदनंतर वहांपक्केको

ठेकी अग्नि से कडुवा होताहै फिर कोठेकी अग्निसे पकके उत्तम रसरूप होजाता है यदि उत्तम प्रकार से न पककर कच्चा रह-जाय तो वही अहार आंव बन जाता है यदि कोठे की अग्नि बलाढ्य हो तो आहार का रस मधुर होकर चिकना होता है यही भली भांति पकाहुआ रस इस शरीरकी सर्व धातुओं को पुष्ट करके अमृतकी तुल्यता को प्राप्त होताहै उस आहार का रस यदि मंदाग्नि से दग्ध हो जावै तो उदरमें कडुवा अथवाखट्टाहोके विष रूप होजाता है और शरीर में रोग समूह को उत्पन्न करता है।

अहार रस सार युक्त होने से बलकारक और असार होने से द्रवमल अर्थात् पतला होजाताहै सो वह ठीक नहीं और पिये हुए जलका सारतो वायु नसों द्वारा शरीरमें पहुंचा देताहै, औरजलके असारको उदरमें प्राप्त करके मूत्र बनाताहै वहीमूत्रेन्द्री द्वारा बाहर निकलताहै और जो अहार का कीट अर्थात् मल होता है वह पक्काशय में रहता है सो गुदा के अपान वायुके बलसे नीचे को आकर्षण होके गुदाद्वारसे बाहर निकलता है औरजो अहार का रस है सो नाभि के समान वायुके बलसे प्रेरित होके मनुष्यके हृदय में प्राप्त होताहै और वहां पित्तसे पककर रुधिर बन जाता है जो सब शरीरमात्रमें रहताहै, इसीका जीवको पूर्णाधार है रुधिर चिकना भारी बलवान और मीठा होताहै यह रुधिर दग्ध होनेसे पित्त के समान होजाताहै एवं एक एक धातु सवा चार चार दिन में उत्पन्न होता है इस प्रकार भोजन किये हुए अहार का एक महीनेमें मनुष्यों को वीर्य उत्पन्न होता है और इसी प्रकार स्त्रियों को एकमास से स्त्रीधर्म द्वारा रज (रक्त) होताहै।

गर्भाधान के समय स्त्री और पुरुषके संयोगसे स्त्री का /र्य

रुधिर और पुरुषका शुद्ध वीर्य दोनों मिलके स्त्रीके गर्भाशय में गर्भ उत्पन्न करते हैं तब वह गर्भ अंग उपांग युक्त होके नव मास पश्चात् प्रसूतिवायुकी प्रेरणा से बाहर निकलताहै तब बालक पैदा हुआ ऐसा कहते हैं, यदि गर्भाधानके समय स्त्रीका रज अधिक होतो कन्या और पुरुषका वीर्य अधिक होतो पुत्र यदि दोनों का समान होतो नपुंसक बालक उत्पन्न हो अथवा गर्भ न रहै ऐसा आयुर्वेदका नियम है, तथापि ईश्वरकी लीला अपार है, इसलिये परमात्मा करे सो हो ।

इति श्रीनूतनामृतसागरे उत्पत्तिखण्डे गर्भोत्पत्तिक्रमनिरूपणे तृतियस्तरंगः ॥ ३ ॥



अथ शारीरिक विधानम् ।

कालेन वर्धितोगर्भो यद्यंगोपांगसंयुतः ॥
भवेत्तदा स मुनिभिःशरीरमीति निगद्यते ॥ १ ॥

भावार्थ-जो गर्भ समयानुसार बढता हुआ अंग उपांग संयुक्त होके प्रगट होताहै उसे शरीर कहते हैं और इस शरीर में जोजो वस्तुहै उनका वर्णन किया जावे उसे शारीरिक विधान कहते हैं सो अमृतसागरके २५ वें तरंगमें लिखे अनुसार हम यहां लिखते हैं क्योंकि जब तक शरीरको वैद्य पूर्ण रीतिसे न जानेगा तो निदान और चिकित्सा क्या करेगा इसलिये निदान आदि के पूर्व शारीरिक लिखना योग्य है ।

इस शरीरमें इतनी वस्तुएं हैं:-

७कला, ७आशय, ७धातु, ७उपधातु, ७धातुओंकेमल, ७त्वचा ३, ३ शरीरकी अस्थि, हड्डी आदि को बांधने के लिये

८०० नसें, २१० हड्डियां, (कोई कोई आचार्य ३०० भी लिखते हैं) १०७ मर्मस्थान, ७०नसें (रसको सर्वत्र पहुंचाने के लिये) २४ धमनी नाड़ी, ५०० मांस पिंडियां, (स्त्रियोंके ५२० होतीहैं) १६ कंडरा (सबसे बडी नाडियां जो कि शरीरमें सर्वत्र व्याप्त हैं) मनुष्यके शरीरमें १० छिद्र परन्तु स्त्रियोंके १३ होते हैं

अब शास्त्रानुसार हृदयका स्वरूप यथाक्रममें स्पष्टकर दिखाते हैं धातु और आशय के बीच में जो झिल्ली है (जिसमें बालक रहताहै) उसे कला कहतेहैं रुधिर मांस और मेद इन तीनों को पृथक्२ रखने के लिये तीनों के बीचमें एक एक झिल्ली (कला) है और यकृत् तथा प्लीहा के बीचमें एक झिल्ली है एवं अंतड़ियोंके बीचमें १ झिल्ली है १ झिल्ली जल तथा अग्निको धारण कर रही है १ झिल्ली (कला) वीर्य को धारण कियेहैं एवं ७ कला हैं। अब सात आशय दर्शातेहैं:—

आशय नाम स्थानका है. हृदयमें कफका स्थान. उसके नीचे आम (आंव) का स्थान;नाभिके ऊपर बाई ओर अग्निका स्थान अग्निके ऊपर तिल है नाभिके नीचे पवनका स्थान उसके नीचे पेडूमें मलका स्थान और उससे मिलताही हुआ कुछ नीचेमूत्रका स्थान (जिसे वस्ती कहतेहैं) हृदयसे कुछ ऊपर जीव और रुधिर का स्थानहै, ये सात आशय पुरुष स्त्रियोंके समान ही रहते हैं परन्तु इनमें व्यातिरिक्त स्त्रियोंके (१ गर्भस्थान २ दुग्धस्थान३ स्तन) ये ३ आशय अधिक हैं।

अब७धातुओं का दर्शातेहैं-१रस, २ रक्त.३ मांस, ४ मेद, ५ हड्डी ६ मज्जा और ७ वीर्य ये सात धातुहैंयेसातों धातुऐं जिस प्रकार उत्पन्न होती हैं, सो तीसरे तरंग में लिख चुके हैं, अब उपधातुओं के विषय में लिखतेहैं।

१ जिह्वा का मल, २ नेत्रों का मल, ३ गालों का मल ये तीन रसकी उपधातु हैं, २ रंजन (अर्थात् पित्त) रक्तकी उपधातु है ३ कानोंका मल मांसकी उपधातुहैं ४ जिह्वा दांत कांख और लिंगेन्द्रियसे जो मल निकलता है सो मेदकी उपधातुहै ५ बीस नख हाडों की उपधातुहैं, नेत्रों की कीच मज्जाकी उपधातु है, ७ मुखपर जो चिकनापन तथा कीलें निकलना है सो वीर्यकी उपधातु जानों ये सात उपधातु हैं तथा स्त्रियों के स्तनों में दूध और स्त्रीधर्म ये दो धातु पुरुषों से अधिक हैं सो समय २ पर ही होतीहैं और समय पर ही मिट जाती है ।

सातो धातुओं से और भी वस्तुएं उत्पन्न होतीहैं जैसे-१ शुद्ध-मांससे शरीर में घृत उत्पन्नहोताहै (जिसे बसा कहतेहैं) २पसीना३ दांत ४ केश ५ ओज ये सबसात धातुओंसे ही उत्पन्न होतेहैं ओज सब शरीरमें रहताहै चिकना, शीतल औरबलतथा पुष्टिकारक है; अब सात त्वचा को दर्शाते हैं—

पहिली त्वचा–अवभासिनी नामकी है यह चिकनी है और विभूति नामका स्थानहै दूसरी त्वचा लाल है जिसमें तिलनील आदि उत्पन्न होतेहैंतीसरीत्वचाश्वेतहै जिसमें चर्मदलनामकरोग उत्पन होताहै चौथी त्वचा (ताम्रवर्ण) तांबेके सदृश रंग वाली उसमें श्वेत कुष्ठ उत्पन्न होताहै, पांचवीं त्वचा छेदनी कहती है जिसमें सब प्रकार के कुष्ठ उत्पन्न होतेहैं छटवीं त्वचा रोहिणी कहातीहै उसमें गंडमाला फोड़े आदि रोग उत्पन्न होतेहैं सातवीं त्वचास्थूला कहाती हैजिसमें विद्रधि रोग उत्पन्न होता इन सातों त्वचाओं की मुटाई जौके समान होती है ।

अब ३ दोष लिखते हैं —

१ वात २ पित्त ३ कफ ये तीन दोष हैं और कोई २ इन्हें मल भी कहते हैं इन तीनों में वायु प्रबल है, पित्त कफ पंगुहै, इसलिये वायु सर्व वस्तुओंका विभागकर नसों द्वारा सर्वत्र शरीर में पहुंचा देती हैं, ये प्रत्येक (वात पित्त कफ) पांच पांच प्रकार के हैं, और न्यारे २ स्थान में रहतेहैं, प्रथम वायुका स्थानादि बतातेहैं, १—वायु रजोगुणमयी शीतल सूक्ष्म, हलकी और चंचल है; यह मलके स्थानमें, कोठे में अग्नि स्थानमें हृदय म और कंठमें इन पांचों स्थानोंमें रहती है, ये तो वायु के ५ स्थान हैं, और साधारण प्रकार से वायु सर्व देहमात्र में रहती हैं जिसके पांच जुदे जुदे नाम हैं अर्थात् १ गुदा में अपानवायु, २ नाभि में समान वायु ३ हृदय में प्राणवायु, ४ कंठमें उदान वायु, और ५ सब शरीरमें व्यान वायु रहती है ॥ अथ पित्त स्वरूपादि प्रारम्भः ॥ पित्तउष्ण (गरम) २ पतला, पीला सतोगुणमयी. कडुआ तीखा और दग्ध होनेसे खट्टा होता है, अग्नि स्थान में तिलप्रमाण अग्नि रूप होके रहता है त्वचामें रहके कांतिकारक है नेत्रोंमें रहके सबको दिखलाता है, प्रकृति में रहके सबको पाचन करता है; व रसका लोह बनाता है हृदय में रहके बुद्धि आदि उत्पन्न करता है, ये पित्तके पांच स्थान हैं. १ पाचक २ भ्राजक ३ रंजक ४ आलोचक ५ साधक ये पांच नाम हैं ॥ अथ कफ स्वरूपादि प्रा० ॥ २ कफ--चिकना, भारी, श्वेत, पिच्छिल, (चांवलों के गाढे मांड समान) ठंडा तमोगुणयुक्त, मीठा और दग्ध होनेसे कटु होजाता है. यह एक आमाशय २ मस्तक ३ कंठ ४ हृदय और ५ संधियों में रहता है, ये कफके मुख्य स्थान हैं और साधारण भाव से शरीर मात्र में रहता हुआ देहको स्थिर

और सब अंगों को कोमल करता है १ क्लेदन, २ स्नेहन, ३ रसन ४ अवलंबन ५ श्लेष्मा ये पांच कफके नाम हैं. स्नायु नसें शरीर में मांस, हाड़. मेद इनके बांधने वाली स्नायु नसें कहाती हैं. मर्म स्थान जीवको धारण करने वाले जो स्थान सो मर्म स्थान कहाते हैं. ।

नसें—जो संधिको बांधने वाली, त्रिदोष और सप्त धातुओं को बहानेवाली हैं सो नसें कहाती हैं ।

धमनीनाड़ी- जिसके द्वारा रस और पवनका बहाव हो सो धमनी नाड़ी कहाती है.

मांसपिंडी—इस शरीर में जो मांसकी गांठ है सो मांसपिंडी कहाती है ।

कंडरी- सबसे बड़ी नसें जो सब अंगको फैलनें और सिकुड़ने देती हैं सो कंडरा कहाती हैं ।

छिद्र—२ नाक के, २ नेत्र के; २ कानके १ मुख १ लिंग १ गुदा और एक मस्तक ये दश छिद्र हैं परन्तु स्त्रियोंके २ स्तन और एक गर्भाशय मे ऐसे तेरह छिद्र है एवं इस शरीरमें रोम रोम में असंख्य छिद्र हैं ।

नाभिके बांई ओर फुफ्फुस और प्लीहा (तिल्ली) है तथा दाहिनी ओर यकृत है । फुफ्फुस, उदानवायुके आधारको फुप्सकहतेहैं

प्लीहा-रक्तको बहाने वाली नसों के मूलको प्लीहा कहते हैं ।

यकृत-रंजक (पित्तका स्थान) के पास जो रक्त का स्थान उसे यकृत कहते हैं ।

नाभिके वाम भागमें अग्न्याशयपर जो तिलहै वह जल बहाने वाली नसों मूलकाल है यही तिल प्यास को रोकता है ।

कुक्षिमें दो गोले हैं जिन्हें वृक्क कहते हैं ये दोनों पेटके मेदको पुष्ट करते हैं.

वृषण (पोते)ये वीर्यको बहाने वाली नसोंके अधार हैं--ये पराक्रम देनेवाले; गर्भको उत्पन्न करने वाले वीर्य मूत्रके घर; और हृदय, मन चित्त अहंकार और बुद्धिके स्थान हैं,

नाभि—धमनी नाड़ी आदि नसोंका स्थान है, नाभिकासमान वायु सब धातुओंके संयोगसे संपूर्ण शरीरको पुष्टकरता है तथा नाभिका पवन हृदयकमलका स्पर्श करके कंठद्वारा नाकसे बाहर निकलता और आकाश में विष्णुपद के अमृतसे युक्त हो मुख नासिका द्वारा पुनः शरीरमें प्रवेश करताहै सो इसी पवन सेसर्व शरीर तथा जीवको प्रबलता पहुँचती है ॥

इति श्री नूतनामृतसागरे उत्पत्तिखण्डे शारीरकनिरूपणे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥



अथ अवस्थादिक्रम।

वयस्तु त्रिविधं बाल्यं मध्यमं वार्धकं तथा ॥
ऊनषोडशवर्षस्तु नरो बालो निगद्यते ॥ १ ॥
मध्यं षोडशसप्तत्योर्मध्यमं कथितं बुधैः ॥
ततस्तु सप्ततेरूर्ध्वं वृद्धो भवति मानवः ॥ २ ॥ मा०प्र०
कौमारं पंचमाब्दांतं पौगंडं दशमावधिः ॥
कैशोरमापञ्चदशाद्यौवनंतु ततःपरम ॥ ३ ॥ मा०प्र०

भाषार्थ—अवस्था तीन प्रकार की होतीहैं १ बाल्यावस्था २ मध्यावस्था वृद्धावस्था ॥ जन्म से १६ वर्षपर्यंत बाल्याव-

१६ से ७० वर्ष तक मध्यावस्था और ७० से पश्चात् सर्व वृद्धावस्था जानो।

बाल्यावस्था में भी—जन्म से ५ वर्ष पर्यन्त कौमार संज्ञा ५ से १० वर्षतक पौगंड संज्ञा १० से १५ वर्षतक कैशोर संज्ञा और १५ पश्चात् यौवनादि संज्ञा ग्रंथान्तरमें लिखी हैं। इसी प्रकार स्त्रियों के जन्म से ८ वर्षपर्यंत कन्या संज्ञा ८ से ११ वर्ष पर्यंत गौरी संज्ञाः ११ से १६ वर्ष पर्यंत बाली संज्ञा १६ से २० वर्ष पर्यंत तरुणी संज्ञा, २० से ५५ वर्ष पर्यंत प्रौढा संज्ञा और ५५ के पश्चात् वृद्धा संज्ञा लिखीं है।

अब हम इसके आगे शरीर की गति आदिकाक्रमअमृतसागरके २० वे तरंगके लेखानुसार यहां लिखते, हैं।

जन्मसे १० वर्षपर्यन्त कोमलता, २० वर्ष पर्यंत वृद्धिपन, ३० वर्ष पर्यंत शरीरकी मुटाई, ४० वर्ष पर्यंत बुद्ध्यागमन (बुद्धि आना) ५० वर्ष पर्यंत त्वचाकी दृढता रहती है, ६० वर्ष पर्यंत नेत्रोंमें ज्योति रहती है, ७० वर्षपर्यंत शरीर में वीर्य रहताहै, तत्पश्चात् ८० वर्षपर्यंत शरीर में वीर्य क्रमशः न्यून होता नष्ट हो जाता है, ९० वर्षतक ज्ञान रहता है, १०० वर्ष तक भाषण, हस्त पादादि में कुछ बल और मल मूत्रादि त्यागका ज्ञान रहता है ११० वर्षपर्यंत कुछ भाग मात्र ज्ञान रहताहै. और १२० वर्षपर्यंत शरीर में प्राणमात्र रहताहै जो शरीर निरोगी रहे तो उक्त क्रम रहताहै परन्तु रोगयुक्त होने से १० वर्ष में उक्त प्रमाणानुसार किंचित्त घटना होती जाती है, एवं शास्त्र प्रमाणानुकूल मनुष्यकी आयु १२० वर्ष की है, और भी—शुभकर्म करना सत्य बोलना देव ब्राह्मण वेदादि की निन्दा न करना, ब्रह्मचर्य

ला

पूर्वक वीर्य धारण करना, परोपकार करना, वृद्ध पुरुषोंको सर्वदा नमन करना, सच्छास्त्रावलोकन (उत्तम शास्त्रोंके अवलोकन से) आयुर्वेदोक्त (ऋतुचर्या, दिन चर्या, रात्रिचर्यानुसार) रहना और पथ्यापथ्य, आहार बिहारादि पर पूर्ण ध्यान रखनेसे मनुष्य पूर्ण आयु को प्राप्त होताहै तथा उक्त आचरणों से विरुद्ध कर्म करने से मनुष्य की अल्पायु होजाती है क्योंकि विरुद्ध आहार विहार से मनुष्य को रोग उत्पन्न होते हैं और उनमें पथ्यापथ्य पर पूर्ण ध्यान न रखने से वह रोग साध्यसे याप्य और याप्य से असाध्य होके इस शरीरको नाश करदेते हैं इसलिये मनुष्य को अपनी शरीरकी रक्षाके लिये आयुर्वेदोक्त रीत्यनुसार अवश्य चलना चाहिये क्योंकि धन्वंतरि महाराज ने सुश्रुत में १०१ मृत्यु लिखी हैं जिनमें १०० आगन्तुक मृत्युहैं जो कि प्रयत्न करनेसे दूर होजातीहैं और एक काल संज्ञक मृत्युहै जो ब्रह्मादि देवों को भी आयुष्यके अंतमें नष्टकर देती है इस पर कोई प्रयत्न नहीं चलता, अतएव प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि जहां तक यह शरीर रोग रहित रहे जहां तक वृद्धावस्था प्राप्त न होवे जहांतक इन्द्रियों में शक्ति न्यून न होवे और जब तक आयुका क्षय न होवे तब तक अपनी आत्माके कल्याणार्थ तपश्चरण योगाराधनादि सत्कर्मों को करले क्योंकि योगाराधन तपश्चरणादि सत्कर्मों से आगे हमारे मार्कण्डेय आदि महर्षियोंकी भी आयु वृद्धि को प्राप्त हुई है इसलिये मनुष्य देहको प्राप्त होके अवश्य धर्मका संग्रह करना चाहिये क्योंकि इस देहके साथ केवल धर्मके व्यतिरिक्त अन्य कोई भी वस्तु नहीं जाती इसलिये स्वधर्म का त्याग कदापि न करना चाहिये।

एकोत्तरं मृत्युशतमथर्वाणः प्रचक्षते ।

तत्रैकः कालसंयुक्तः शेषास्त्वागंतवः स्मृतः ॥ १ ॥
तथा सत्यपि तैलादौ दीपो निर्वापयेन्मरुत् ।
एवमायुष्यहीनेऽपि हि सन्त्यागंतुमृत्यवः ॥ २ ॥ इ. सु.

अथ वात प्रकृतिवाले पुरुष के लक्षण ।

छोटे बाल, कृश, (दुबला) और रूखा शरीर, बाचाल चंचल मनहो और आकाशीय स्वप्न आवें उसे बातप्रकृति जानों ।

अथ पित्तप्रकृति- तरुणावस्थामें श्वेत बाल होजांय बुद्धिमान हों, पसीना अधिक आवे क्रोधी हो और स्वप्न में तेज दीखे सो पित्त प्रकृति होता है।

कफप्रकृति- गम्भीरबुद्धि स्थूलअंग चिकने बाल बलवान् होवे और स्वप्न में चल स्थान देखे सो कफ प्रकृति है ।

निद्रालक्षण- जिस मनुष्यको कफ और तमोगुण अधिकहो उसे मूर्च्छा और निद्रा आतीहैं यदि बात पित्त और रजोगुण अधिक होतो चक्र और संदेह होवे कफ बात और तमोगुण अधिक हे तो तंद्रा (अध खुली आंख) होती हैं यदि बल नष्ट होगया हो तो ग्लानि आती है तथा दुःख अजीर्ण और थकावट से भी ग्लानि होतीहै और निर्बलतासे उत्साह नहो तो आलस्य आताहै

इति श्रीनूतनामृतसागरे उत्पत्तिखण्डे अवस्थादिक निरूपणे पञ्चमस्तरंग॥ ५ ॥



सूचना।

इस विचार खण्डमें अनेक वैद्यक ग्रन्थोंसेविचार विचारके" नूतनामृतसागर"के उपयोगी ऐसे साररूपी विचार लिखगयेहैं कि जिनसे विचार पूर्वक जो वैद्य गण चिकित्सा का प्रचार करेंगे तो अवश्यही रोगियोंका सुधार होकर सर्व सुखागार आरोग्यता का प्रसार होगा इसकी इक्कीस तरंगेहैं जिनमेंसे प्रथम तरंगमें वैद्यसे शकुन पर्यंत ९ विचार हैं द्वितीयमें नाडीसे रोगी पर्यंत १२ विचारहैं तृतीय में यंत्र विचार, चतुर्थमें धात्वादि शोधन विचार, पंचममें मान विचार षष्ठमें युक्तायुक्त विचार. सप्तममें औषधि क्रिया विचार, अष्टम में दीपनादि विचार, और नवम में एक विंशतिपर्यंत लघु निघंटु (जिसमें मुख्यौषध नामगुण) विचार वर्णन किया गया है।

यद्यपि हमने इसे लघुनिघंटु नाम दियाहै परंतु यह बृहन्निघंटु के सदृश काम देनेवालाहै, क्योंकि वर्तमान कालमें जिन औषधादि वस्तुओंका विशेष उपचार होरहाहै उनके मुख्य नाम गुण तथा उपकार उत्तम प्रकार से निर्धारित करके प्रदर्शित किये गये हैं विशेषकर आशाहै कि यह विचारखंड भी केवल इसी ग्रन्थकानहीं परंच अन्य वैद्यक ग्रन्थोंको भी विशेषतः उपकारी होगा।

श्लोकः॥

शुद्धां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणापुस्तकधारिणीम भयदांजाड्यान्धकारापहाम्॥
हस्तेस्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां।
वन्दे तां परमेश्वरी भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥ १॥



अथ विचारखण्डः २।



वैद्यविचारः ।

तत्रादौ वैद्यलक्षणम्,

गुरोरधीताखिलवैद्यविद्यः पीयूषपाणिः कुशलः क्रियासु ॥ गतस्पृहो धैर्यधरः कृपालुः शुद्धोऽधिकारी भिषगीदृशः स्यात् ॥ १ ॥ वैद्यजीवनेऽप्युक्तमिदम्

भाषार्थ- अब वैद्यके लक्षण लिखते हैं सत्यवक्ता, गुरुसे निघंट निदान चिकित्सा आदि समग्र वैद्यविद्या पढाहुआ, अमृत के समान हाथवाला. (अर्थात् जहां औषधिदे वहां यशकोही प्राप्तहो). दवा देनेमें पूर्ण चतुर. निर्लोभी धैर्यवान् दयावान् सदा पवित्रता से रहनवाला निष्कपटी और आलस्यरहित" इन लक्षणोंसे जो युक्तहो सो सद्वैद्य कहाता है. सो उक्त वैद्यसेही औषधि लेना चाहिये अन्यसे नहीं ॥ १ ॥ यह वैद्यजीवन में लिखा है ।

निषिद्धो वैद्यः ॥

कुचेलः कर्कशः स्तब्धः कुग्रामी स्वयमागतः ॥
पंच वैद्या न पूज्यन्ते धन्वंतरिसमा अपि ॥ २ ॥

इत्युक्तंभावप्रकाशे;

भाषार्थ-जिसके मैले तथा फटे हुए वस्त्र और आचरण भी खोटेहो १ जिसका स्वभाव अत्यन्त क्रोधयुक्तही रहे, जो अति गर्वी हो, जो छोटे तुच्छ गांवमें रहनेवाला हो, जोबिना बुलाये आपही आवे. येपंच वैद्य यदि धन्वन्तरिजी के समान हों तो भी पूज्य तथा अंगीकार करने के योग्य नहीं हैं ॥ २ ॥ यह भावप्रकाश में लिखा है ।

मूर्खं वैद्यादौषधं नांगीकरणीयमित्युक्तं च वैद्यजीवने ।

औषधं मूढवैद्यानां त्यजन्तु ज्वरपीडिताः ॥

परसंसर्गसंसक्तं कलत्रमिव साधवः ॥ ३ ॥

भाषार्थ-रोगीको चाहिये कि चाहे जैसे ज्वर आदि रोगसेपीडित होपरन्तु मूर्ख वैद्यके हाथसे कदापि भूलकेभी औषधिनखावे क्यों कि मूर्खकी औषधि से आरोग्य होना तो दूर है, परन्तु रोगवृद्धि तथा प्राणहानि होना कोई आश्चर्य नहीं, इसलिये जसे उत्तमपुरुष व्यभिचारिणी स्त्रीको त्यागनकर देते हैं, ऐसेही मूर्ख वैद्यको रोगी भी त्यागन कर देवे ॥ ३ ॥ यह वैद्यजीवनमें लिखा है ।

राजदण्डयोग्यावैद्याः ।

औषधं केवलं कर्तुं यो जानाति न चामयम् ।।

वैद्यकर्म स चेत्कुर्याद्वधमर्हति राजतः ॥ ४ ॥ भा० प्र०

भाषार्थः जो वैद्य केवल औषधिही करना जानताहो औररोगको निदान पूर्वक न पहिचानताहो तो राजाको चाहिये किअपनेराज भरमें उसे औषधि न देने देवै यदि देवे तो यथोचित पूर्णदंडदेवे।

इति वैद्यविचार : समाप्त ॥ ४ ॥

अथ वैद्यमुख्यकर्मविचारः ।

तत्र चिकित्साफलमाह ।

क्वचिदर्थः क्वचिन्मैत्री क्वचिद्धर्मः क्वचिद्यशः

कर्माभ्यासः क्वचिच्चेति चिकित्सा नास्ति नि-

ष्फला ॥ ५ ॥ भावप्रकाशः ।

भाषार्थ--अब वैद्यको जिन मुख्य कर्मोंका विचार करना चाहिये सो लिखते हैं—प्रथम तो वैद्य इस बात पर पूर्ण ध्यान देवे कि चिकित्सा की हुई कभी निष्फल नहीं होती. क्योंकि कहीं

तो औषधि देनेसे धन मिलता है कहीं मित्रताही होतीहै कहीं धर्म होता है कहीं, केवल यशही प्राप्त होता है और यदि यह कुछ भी न हो तो वैद्यकर्मका अभ्यास तो बनाही रहता है इसलिये वैद्य चिकित्सा करने से कभी न हटे ॥ ५ ॥

चिकित्स्यस्य रोगिणो लक्षणमाह

निजप्रकृतिवर्णाभ्यां युक्तः सत्वेन चक्षुषा ॥ चिकि,
त्स्यो भिषजा रोगी वैद्यभक्तो जितेन्द्रियः ॥ ६ ॥
आयुष्मान्साध्यो द्रव्यवान्मित्रवानपि ॥
चिकित्स्यो भिषजा रोगी वैद्यवाक्यकृदास्तिकः । ७ ।

भाषार्थ--अब वैद्य कैसे रोगीको औषधि देवे और कैसे को न देवे सो लिखते हैं-अपनी प्रकृति और वर्णसे युक्तहो नेत्रादि कर्मेन्द्रियोंकी शक्ति युक्तहो, वैद्यकोईश्वर भावमानताहोजितेन्द्रिय हो (अर्थात् मिथ्या आहार विहार न करे) ऐसे रोगीको वैद्य औषधि देवै ॥६॥ एवं जो रोगी आयुयुक्त, बल युक्त द्रव्ययुक्त मित्रयुक्त, अज्ञाकारी (वैद्यके कहनेके अनुसार चलने वाला) विश्वासी (वैद्यका पूर्ण विश्वास रखने वाला)और साध्य रोग युक्त हो तो औषधि दे अन्यथा नहीं देवे ।

अथ चिकित्स्यः ।

चंडःसाहसिको भीरु कृतघ्नो व्यग्र एव च ॥
शोकाकुल मुमूर्षुश्च विहीनः करणैश्च यः ॥ ८ ॥
वैरी वैद्यविदग्धश्च श्रद्धाहीनश्च शंकितः ॥
भिषजामविधेयाः स्युर्नोपक्रम्याभिषग्विदा ॥९॥ भावप्रकाशः

भावार्थ--जोरोगी क्रोधीहठी कृतघ्न (किये उपकारको न मान स्त्री प्रकृतिवाला शोकित किसीप्रकार (कारण) सेमरने

की इच्छा करने वाला निर्बल (इन्द्रियोंके बलसे हीन) वैद्यविरोधी अर्द्धवैद्य संशययुक्त और श्रद्धाहीन हो वैद्यको चाहियेकि ऐसेरोगीको कदापि औषधि न देवै ॥८॥ यह भावप्रकाश में लिखाहै

दर्शनस्पर्शनप्रश्नैःरोगिणो रोगनिश्चयम् ।
आदौ ज्ञात्वाततः कुर्याच्चिकित्सां भिषजांवरः॥९॥

भाषार्थ–रोगीको देखके, स्पर्श करके (छूके) और सब वृतान्त पूछके रोग को निश्चय करने के पश्चात् श्रेष्ठ वैद्य का चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १० ॥

देशं बलं वयः कालं गुर्विणी गदमौषधम् ॥ वृद्धवै-
द्यमतं ज्ञात्वा चिकित्सा मारभेत्ततः ॥ १२ ॥ ग्रन्थान्तरे ॥

भाषार्थ इसी प्रकार १ देश विचार २बलविचार ३अवस्थाविचार ४(पुरुष तथा गर्भिणी स्त्रीको) रोगविचार५कालविचार ६ दूतविचार ७ शकुनविचार ८ नाडीविचार ९ नेत्र विचार १०जिह्वा विचार ११ मूत्रविचार १२ स्वप्नविचार १३ औषधि विचार १४अर्थ विचार १५ कर्मविचार १६ अग्निबल विचार १७ (रोगीका साध्यासाध्य विचार १८पथ्यापथ्य विचार १९ और औषधि अनुपानाचार इत्यादिको शोचके वृद्ध वैद्य अर्थात् सुश्रुत चरक आदिप्राचीन मुनियोंके मतको विचार (जान) के वैद्य चिकित्सा करे ॥११॥

अथ देशविचार ।

भूमिदेशस्त्रिधानूपो जांगलो मिश्रलक्षणः ॥ १ ॥

भाषार्थ–इस भूमिपर तीन प्रकार के देश हैं १ अनूपदेश २जांगल देश और ३ मिश्रदेश (साधारणदेश) अब इनके पृथक् पृथक् लक्षण लिखते हैं ।

१ अनूपदेश-जहां सदैव बहुतसा जल बहता रहै पर्वत हों कफ तथा बादीके रोग विशेष उत्पन्न होतेहों उसे अनूपदेश जानों

२जांगलदेश-जहां थोड़ा जल तथा वृक्षभी हों और बादीकी विशेषता हो उसे जांगलदेश जानना चाहिये

३ मिश्रदेश जहां शीत उष्ण और वर्षा समान होने से बात पित्त और कफभी तुल्यही हों उसे साधारण देश (मिश्र)कहतेहैं

जो मनुष्य जिस देशमें उत्पन्न होताहै उसकी प्रकृति उसी देशके अनुसार होतीहै इसलिये वैद्य प्रथम देशविचार करके जिसकोजिस देशमें जोजो हितकारी औषधिहै उन्हींकाप्रचारकरे अन्यथानहीं ऐसा भावप्रकाश और वृद्ध वाग्भट्टमें लिखाहै। इतिदेशविचार॥

काल विचार ।

काल अर्थात् समय भी ३ प्रकारका है १ शीतकाल २उष्णकाल ३ वर्षाकाल, इन तीनों कालों का विचार इसप्रकार है कि:—

१ यदि शीत कालमें यथोचित ठंडसे न्यूनाधिक ठंडपड़े अथवा गर्मी होने लगेतो रोग उत्पन्न होंगे, २उष्णकालमें समयकीमिति (प्रमाण) से न्यूनाधिक उष्णताहो अथवा शीतपड़नेलगे तो रोगउत्पन्नहोंगे, ३इसीप्रकार वर्षाकालमें उससमयकी योग्यतासे न्यूनाधिक (कम बढ़) वर्षाहो अथवा बिल्कुल वर्षानहो तोभी रोग उत्पन्न होंगे वैद्यको इस बातका पूर्ण विचार करना चाहिये ।

इति काल विचारः ।

अवस्था विचार,

अवस्था के कई भेदहैं परन्तु मुख्य अवस्था तीनही प्रकारकीहैं बाल्यावस्था २तरुणावस्था वृद्धावस्था १ बाल्यावस्थामें कफ, तरुणावस्थामें पित्त और ३वृद्धावस्थामेंवायुकी वृद्धिरहतीहै, इसलिये

वैद्य की अवस्था का विचार करके उपचार करना चाहिये।

इति अवस्था विचार।

रोग विचार।

रोगविचार ३ प्रकार से किया जाता है, १ देखकर, २ छूकर, ३ पूछकर १ जैसे कमला रोग जिसे कमल तथा पीलियेकारोग कहते हैं, ऐसे ही अनेक रोग जो देखने से ही ज्ञात होजाते हैं।

२-ज्वर आदि कई रोग रोगी के शरीर के छूनेसे ज्ञात होतेहैं ३-और उदरशूल (पेट दुखना) पार्श्वशूल (पसली दूखना) मस्तक पीड़ाबवासीर, उपदंश (गर्मी) प्रमेह (परमा) चित्तभ्रम (होलदिल) और भूतादिबाधाइत्यादि अनेकरोग पूछनेसेही यथार्थ ज्ञात होतेहैं

इसलिये वैद्य उक्त तीन प्रकारोंमें से जिस रोगका जिस प्रकार से निश्चय होसके करै, तत्पश्चात् उस रोगका निदानकरे, कि यहरोग कितने प्रकारका है उनमेंसे किसके लक्षण मिलते हैं इसका विचार करके फिर औषधिका उपचार करे॥ इति रोग विचार॥

काल ज्ञान विचार।

काल ज्ञान विचार—उसे कहतेहैं जिसमें रोगीके मरण जीवन का निश्चय होजाता है।

१—जिस रोगीको रात्रिमें दाह हो और दिनको शीत (जाड़ा) और कंठमें कफका घरीटा होता वह रोगी अवश्य मृत्युको प्राप्तहो

२—जिस रोगीकी नाककी नोंक ठंडी हो और शरीरमें शूल चलै वह रोगी निश्चय मरे।

३—जिस रोगीकी कांति, बल, लज्जा आदि नष्ट होजावें तथा स्वभाव क्रोधीकासा होजावे वह रोगी६मासकी अवधि में मरजावे।

४जिस रोगीकीगति भंग होजावे, शरीरका रंग पलट जावे और गंध दुर्गंधिका ध्यान न रहै वह रोगी मृत्युको प्राप्त होता है।

५--जिस रोगीको वृक्ष वा पेड तथा डालियों में अग्निके सूक्ष्म विभाग (चिनगारियां) दिखाई देवें वह ६ मास में मरजावै।

६--जिस रोगी को पसीना किंचित् कभी न निकले और काम देवसे हीन होजावै वह तीन मास में मौतको प्राप्त होवै।

७—जिस रोगीको कानके छिद्र मूंदने पर सुनाई नहीं देवै वह अवश्य मरे ॥

८ जिस रोगीके नेत्रदेह और मुखकावर्ण बदलजावै सोनिश्चयमरे

९--जिस रोगीको अपनीही जीभ और नाककी अनी तथा दोंनों भौंहका मध्य भाग दृष्ट न पड़ै वह रोगी अवश्य मरे।

१०—जिस रोगीके नेत्र लाल और मुख वर्ण कुछका कुछही होजावै वह निश्चय मरे।

११--जिस रोगी की इन्द्रियां अपने विषयको ग्रहण न करें (जैसे नेत्ररूप देखना न चाहैं, कान शब्द न सुने; जीभ रस को न जाने) इत्यादि तो वह अवश्य मरे।

१२—जिस रोगीकी वाणी बोलने से थकित होजाव और शक्ति हीन होजावै, वह निश्चय मरे ॥

१३—जिस रोगी को कांच तथा जलमें अपनी परछाईं (छाया) न दीखे वहभी मरे।

१४–जिस रोगीका मुख लाल कमलकी नांई होजावे जिह्वा (जीभ) काली होजावे और शरीरमैंपीड़ा उत्पन्नहो वह निश्चयमरे

१५—जिस रोगीको आश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, स्वाती, मूल, पूर्वा फाल्गुनी पूर्वाषाढ,पूर्वा भाद्रपदा, भरणी ये नक्षत्र रवि,शनि मंगल ये वार तथा चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, इन तिथियों में रोग उत्पन्न हो वह अवश्य मृत्यु बस होवे।

१६—जिस रोगीके कांधे कँपने लगे वहभी अवश्य मरै।

१७—जिस रोगीको दूसरे मनुष्यकी पुतली (आंखकाचमकता हुआ तारा) में अपना स्वरूप न दीखे वह निश्चय मरे।

१८—जिस रोगीका सूर्योदयके समय दाहिना तथा सूर्यास्तके समय बांया स्वर सर्वदा चले वहरोगी अवश्य मृत्युकोप्राप्तहोवेगा इत्यादि वैद्य को कालज्ञानका विचार भी अवश्य करना चाहिये

अथ दूत विचार।

वैद्यको बुलानेके लिये काना, लंगडा, नकटा और मूर्ख दूत न भेजना चाहिये. वरन चतुर. उत्तम वर्णमाला, उत्तम चेष्टा वाला सुखी निर्मळ वस्त्रादि धारण किये हो ऐसे दूतको रथादि सवारी पर वैठाकर तथा कुछ सुन्दर फल भेट के लिये देकर भेजना चाहिये। इस बातपर रोगी तथा उसके घरके लोगों को पूर्ण ध्यान रखना चाहिये।

वह दूत जब वैद्यके घर पहुँचे तब अपनी नासिका के स्वर को देखे जिस ओरको स्वर चलता हो वैद्यके उसी ओर जाके खड़ा होवे और फल भेंट करदेवे, वैद्यभी उस दूतको देखकर विचार करे, यदि काना लंगडा आदि निषिद्ध लक्षण वाला हो तो समझ कि रोगीका आरोग्य होना दुस्तर है, तथा श्रेष्ठ गुण शुभ ण वाला होतो रोगी आरोग्य होजायेगा, ऐसा निस्सन्देह ार उसके साथ रोगीके घर जावे।

अथ शकुन विचार।

जिस समय वैद्यको बुलाने के लिये दूत जावे उससमयइसबातपर पूर्ण ध्यान देवे जो सामने जल आदि शीतल पदार्थ मिलेंतो उसका फल अच्छा नहीं है जो सामने अग्नि आदि उष्ण पदार्थ मिले तो उसका फल अच्छा है जब वैद्य के घर पहुँचे तो वैद्य दूरसेपूछ लेवे

आते समय तुझे क्या (उष्ण अथवा शीत) पदार्थ मिलाथा इसी प्रकार वैद्य जब रोगीके घर जावे तबभी विचारे जो जल आदि शीतल पदार्थ सन्मुख मिलें तो फल उत्तम है और अग्नि आदि उष्ण पदार्थ मिलैंतौ शकुनफल नष्ट जाने । इति शकुन विचार ॥

नाडी विचार ।

पुंसो दक्षिण हस्तस्य स्त्रियो वामकरस्यतु । अंगुष्ठ मूलगो नाडी परीक्षेत् भिषग्वरः ॥ १ ॥ अंगुली भिस्तु तिसृभिर्नाडी मवहितः स्पृशेत् ॥ तच्चेष्टय सुखं दुःखं जानीयात्कुशलोऽखिलम् ॥ २ ॥ (भाव प्रकाश)

भावार्थ-पुरुषके दक्षिण हस्तकी और स्त्रीके वामहस्तकी नाडी (जोकि अंगूठेके नीचे जीवकी साक्षीरूपा चलती है) वैद्यवरको देखनी चाहिये अब नाडी देखनेकी रीति दर्शाते हैं ।

वैद्य एकाग्र चित्तसेसावधान होके रोगीके अंगूठेके नीचेकीनाडी पर अपनी तर्जनीआदि तीनों अंगुलियोंको संधिरहित धरै रोगी के हाथको किंचित् भी न हिलने देवे पश्चात् उस नाडीकीचेष्टा (दशा गति चाल से जीव के सर्व दुःख सुख जानै ॥ २ ॥ जिस प्रकार बीणाका तार संगीत कर्ता (राग जानने वाला) को सर्व राग प्रदर्शित करता है तिसी प्रकार नाडी भी सद्वैद्योंको सुख दुःखादि शरीर के समग्र वृतान्त भाषित कर देती है ।

प्रश्न—क्या कारण है कि पुरुष के दक्षिन और स्त्रीके वाम हस्त की नाडी देखते हैं ?

उत्तर-कूर्मोवै देहिनामस्मिन् नाभिस्थानेसदा स्थितः स्त्रीणामूर्ध्वमुखः पुंसामधोवक्त्रः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥

तस्यैव दक्षिणे भागे नाडी ज्ञेया भिषग्वरैः ॥
अनेन कारणेनैव नारी पुंसो र्व्यतिक्रमः ॥२॥

अर्थात् देहधारी मात्रके नाभिस्थान में एककूर्म (कच्छप-कछुवा) रहताहै सो वह स्त्रीयोंके तो ऊर्ध्वमुख (ऊपरको मुख करके) रहताहै परंतु पुरुषोंके शरीरमें अधोमुख (नीचे को मुख करके) रहताहै सो उस कच्छप के दक्षिण भागमें नाड़ी देखना चाहिये इसका क्या सिद्धान्त हुआ कि स्त्रियोंका जो बायां हाथहै वही उस [कच्छप] का दाहिना अंग रहेगा क्योंकिउसकीस्थिति स्त्रियों के पेटमें ऊर्ध्वमुख है और पुरुषोंका जो दाहिना हाथहै वहीउसका भी दाहिना अंगही रहेगा क्योंके वह पुरुषोंके नाभिस्थलमें अधोमुख है इसलिये कच्छपके दक्षिनभाग अर्थात् पुरुषों के दक्षिण और स्त्रियोंके वामहस्त का नाड़ी देखना चाहिये ॥ २ ॥

प्र० कैसे पुरुष अथवा स्त्रीकी नाडी देखना और कैसकी नहीं देखना चाहिये ?

उ०—तत्काल स्नान किया हुआ तत्काल भोजन किया हुआ शरीर में तेल मलवायाहुआ, सोताहुआ, दौडताहुआ भूखप्यासा, कामातुर और मलमूत्रकवेगयुक्तपुरुषतथा स्त्रियोंकीनाडीनहींदेखनाचाहिये क्योंकि उक्तकारणभीवासेरोगका यथार्थज्ञाननहींहोताइसलिये इनसेव्यातीरिक्तशांति औरस्वच्छ दशावालेकीनाडीदेखनाचाहिये जिसप्रकार वैद्य हाथकीनाडी देखेउसप्रकार शास्त्रानुसार पांव की नाड़ी भी देखनी चाहिये, क्योंकिजैसेरत्नपरीक्षक (जौहरी) अपनी बुद्धिके प्रभाव तथा अभ्यासके बलसे सच्चेझूठेहीराआदि रत्नों की परीक्षा करलेताहै तैसेही वैद्यकशास्त्र के अभ्यास से अपनी बुद्धिबलसे विचार पूर्वक नाडी द्वारा रोगी के रोग सुख दुःखादिकी परीक्षा वैद्य को भी करनी चाहिये ।

प्र०-नाडी किस प्रकार देखनी चाहिये?

उ०—अंगूठे के नीचे जीवनके साक्षीरूपा नाडी पर धरीहुई अँगुलियोंमेंसे पहिली अंगुलीके नीचे वायुकी दूसरी अंगुलीके नीचे पित्तकी और तीसरी अंगुली के नीचे कफकी नाडी चलती है जिनमेंसे—जो नाडी सर्प तथा जोक की गतिके समान टेढ़ी चलती हो उसे वायुकी जानो।

२ काकतथा मेंढकके समानकूदतीहुईशीघ्रचलेंतोउसेपित्तकीजानो

३-राजहंस बतक. मोर कबूतर कमेडी [कावर जंगली मैना] यद्वामुर्गोंकी भांति मंद चलतीहै, वह कफकी नाडी जानो।

४ सर्पऔर हंसकी गतिके समान चले उसे वात कफ की (मिली) हुई जानो॥

५ बंदर मेंढक औरहंसकीगतिसे चले उसे पित्त कफकी जानो

६,[1]ठकोला पक्षीके समान ठोकर देवै उसे सन्निपातकी जानो

७मंद टेढी व्याकुल और ठहरके चले उसेभी सन्निपातकी जानो

८.जिस मनुष्य के शरीर में ज्वर का कोप हो उसकी नाडी उष्णता से शीघ्र चलती है।

९ जिस रोगीकी नाडी एकसी समान भावसे स्थान पर चलै वह रोगी नहीं मरे

१०.कामातुर और क्रोधी पुरुषकी नाडी शीघ्रता से चलतीहै,

११.चिन्तावाले पुरुषकी नाडी क्षीण चलती है।

१२ भयातुर (किसी प्रकार से डरे हुए) पुरुष की नाडी अत्यंत ही क्षीण चलती है।

---

१ अर्थात् वह पक्षी जो काठ में छेद करता है सो जैसे यह छेद करते समय अपनी चोंचको बार बार वेग से कूटता, फिर बंद होता, फिर कूटता है इसी प्रकार नाडी भी चलते चलते बंद होजावे और फिर वेगसे चलने लगे,

२ यह वात नाडी सूक्ष्म होती हुई मनुष्य को मार डालती है।

१३-मादग्नि और धातुक्षीण पुरुषकी नाड़ी अतिमंद चलती है,
१४-रुधिर विकारवालेकी नाडी उष्णतायुक्त भारी चलतीहै,
१५-जिसके पेटमें आमाश (आंव) हो उसकी नाड़ी अति भारी चलती है।
१६-भूखे मनुष्य की नाड़ी हलकी और शीघ्रतासे चलती है।
१७-भोजन करने पर मनुष्य की नाड़ी धीरे चलती है ।
१८-मल गिरने पर मनुष्यकी नाड़ी अत्यन्त शीघ्र चलती है।
१९-सुखयुक्त पुरुषकी नाड़ी धीरे और बलपूर्वक चलती है।
२०-इसी प्रकार नाड़ी परीक्षा के अनेक भेद हैं, सो बुद्धिमान सद्वैद्यको अपनी बुद्धिसे शास्त्रोंके प्रमाणानुसार स्त्री पुरुषकीनाड़ी परीक्षा करनी चाहिये, जैसे योगाभ्यासी योग मार्ग से ब्रह्म को जान लेते हैं, तैसेही श्रेष्ठ वैद्य को भी नाडी के अभ्यास से शरीर का समग्र वृत्तांत जान लेना चाहिये ।

नेत्र विचार

१ जिस रोगी के नेत्र रूखे धूम्रवर्ण (काला और लाल मिला-हुआ)-अथवा कुछ ललाई लिये हुएहों, भीतर कुछ जलकी झलक मारते हों और वह रोगी उन्मत्त के समान देखताहो तो उसपर बादीका अधिक वेग जानना चाहिये अर्थात् ऐसे नेत्र बादी वालेके होते हैं ।

२-जिस रोगीके नेत्र हलदी के समान पीले, लाल तथा हरे हों दीपक न देखसके और जलते हों तो पित्तका अधिक वेग जानो अर्थात् पित्तवाले के नेत्र ऐसे लक्षणयुक्त होते हैं ।

३ जिस रोगी के नेत्र चिकने, जलसे भरे हुए श्वेत ज्योतिहीन और बलयुक्त हों तो कफका वेग अधिक जानो ।

४-जिन नेत्रोंमें उपरोक्त नियमानुसार दो दोषोंके लक्षण मिलते

हों उन्हें दोषयुक्त और ३ तीन दोषके मिलते हों उन्हें त्रिदोषीय जानो,

५ त्रिदोष (वात, पित्त कफ) के कोपमें रोगीके नेत्र भीतरको घुसजाते हैं उनसे पानी बहने लगता है, अथवा बीच मे मुदे हुए किंवा कोरोंपर खुलेहुए रहतेहैं: त्रिदोषके लक्षणयुक्त नेत्र रोगीको नष्ट करने (मारने) में कुछ न्यूनता (शेष)नहीं रखते हैं,

इस लिये वैद्यको अवश्य चाहिये कि रोगीकी परीक्षा नेत्रद्वारा करे ऐसा भावप्रकाश में लिखा है :

जिह्वापरीक्षा।

जिस–रोगीकी जीभ नीली; कुछ हरेपन को लिये हुए तथा खरखरी और रूखी हो तो वात का कोप जानो।

२ जिस रोगीकी जीभ लाल या कुछ कुछ श्यामतायुक्त लाल हो तो पित्तका कोप जानना चाहिये।

३—जिस रोगीकी चिकनी गाली और श्वेत जीभ हो तो कफका कोप जानो।

४-यदि दो आदि दोषोंके लक्षण मिलेंतो दो दोष युक्त जानो।

५-जिस रोगाकी जिह्वा चारो ओरसे जली हुईसी यथा काली और टेढ़ी पड़गई होतो त्रिदोषका कोप जानना चाहिये उक्त नियमानुसार वैद्य जिह्वा का विचार करे।

मूत्र परीक्षा

चार घड़ी रात्रि अवशेष रहे (अंग्रेजी घंटासे प्रात कालके४और ४॥ साढ़ेचार बजेके मध्य तब रोगीकोकांच तथा कांसे (फूल) के पात्रमें मुताके उस मूत को ढका रहने देवे सूर्योदय होने पर उसे श्वेत कांच के पात्र में डाल कर वैद्य परीक्षा करे।

१—यदि मूत्र जलके समान पतला, रूखा, अधिक और नील वर्णका हो तो रोगी को बादी का विकार जानों।

२—यदि लाल कुसुमके समान अथवा टेसूके फूलके समान पीला और थोड़ा होतो पित्त किंवा गर्मी का विकार जानना चाहिये।

३-यदि गाढ़ा श्वेत और चिकना हो तो कफके विकारयुक्त जानों

४—जिसका मूत्र सरसोंके तेलके सदृशहो उसे बात पित्तसे युक्त रोगी जानों ५ जिसको कालाऔर बुदबुदे युक्त मूत्र हो तो सन्निपात रोग जानों ६--लघुशंका करते (मूतते) समय जिस रोगीके मूत्रकी लाल धारा उतरे उसे दीर्घ रोगी जानो ७--लघुशंका के समय जिसकी काली धार हे वह रोगी मरजावैगा॥

८-जिसके मूत्रमें बकरीकेसदृश गंधआवे उसेअजीर्ण रोग जानों

९-जिसकामूत्र उष्ण (गरम) लालतथा पीला हो उसे ज्वर रोग जानों १०--जिसका मूत्र कुएके जल सदृश स्वच्छ हो उसे निरोग जानों उक्त नियमानुसार मूत्र परीक्षा करने के पश्चात् उसी मूत्र को ४ घड़ी तक धूप में रक्खो फिर उसपर कपड़े तथा रुईसे तेल की बूंद टपका कर नीचे लिखी रीति से परीक्षा करो।

१--यदि वह तेलकी बूंद मूत्र में डालते ही फैल जावै तो रोगी को साध्य जानो. वह रोगी शीघ्रही आरोग्य होगा।
यदि वह बूंद (तेलकी) मूत्रमें फैले नहीं और वैसीही स्थिर रहै तो रोगीको कष्टसाध्य जानों कठिनाई से अच्छा होगा।

२—यदि बूंद मूत्र में डूब जावै अथवा चक्रवत् चहुंओर फिरने लगै तो रोगी असाध्य है निश्चय मरजावैगा।

४—यदि तेलकी बूंदमें छिद्र पड़जावै अथवा खड्ग वा हंडया धनुषाकार बन जावै तो वह रोगी निश्चय मरेगा।

५—यदि रोगीके मूत्रपर तेलकी बूंद डालनेसे ताल व हंसकम

हाथी छत्र चमर अथवा तोरणका आकार बनजावै तो वह रोगी आरोग्य होजावैगा इन युक्तियों से वैद्य मूत्र परीक्षा करै ॥

❀ स्वप्न परीक्षा ❀

रोगीको चाहिये कि सद्वैद्यके सिवाय अपने अशुभ स्वप्न का वर्णन किसी दूसरे से न करै और प्रातःकाल उठतेही स्वशक्त्यनुसार हवन. अन्न, वस्त्र. पुस्तक. छत्र. पात्र. स्वर्ण भूमि आदिक दान करै तथा उत्तम वेदमंत्र या महामृत्युञ्जयआदिकके जपकरावै तौ खोटे स्वप्न का फल सर्व शान्त होजावै ॥

१–यदि रोगी स्वप्नमें नग्न शीश मुंड. लाल या काले वस्त्रधारी नकटे, कनफटे; काले; आयुध तथा फांसी हाथमें लिये मारतेहुए मनुष्यों को देखै तो वह अच्छा न होगा।

२–यदि रोगी स्वप्न में भैंस, गधे. या ऊंटकी सवारी कर के दक्षिण दिशा की ओर गमन करै तो वह अच्छा न होगा।

३–यदि रोगीस्वप्नमेअपनेकोजलमेडुबता हुआ अग्निमें जलता हुआ सिंहादि से अपना भक्षण, दीपक बुझाना. तेलतथा मदिरा पान, लोहधारण; पक्वान्नभक्षण और कुए में गिरता हुआ इन लक्षणों से युक्त देखै तो अपना असाध्य रोग समझे।

४–यदि रोगी स्वप्नमें. राजा याचक मित्र. ब्राह्मण. गो अग्नि तीर्थादिकोंका देखै तो शीघ्र आरोग्य होजावेगा।

५–यदि रोगी स्वप्न में कीचड़ से बाहर निकलजावै शत्रुओंको जीतै महल या रथपर चढ़ मांस मीन फल खावै अगम्यास्त्रीसेमैथुन करै अपने शरीरको विष्ठाका लेपकरे रोवै अपनी मृत्यु देखैतथा कच्चा मांस खावै तो वह शीघ्रही आरोग्य होगा।

६ जिसरोगीकोस्वप्न में जोंक, सर्प, भौंरे, और मच्छर काटें तो

शीघ्र आरोग्य हो इसी प्रकार अच्छे मनुष्यको भी यह स्वप्नआवे फल यथोचित जानना चाहिये, वैद्य उक्त नियमोंसे रोगी का स्वप्न पूछ कर विचार करे ।

❁ औषधि विचार ❁

वैद्यको चाहिये कि औषधिकेगुणको विचार कर रोगी को उसी रोगके अनुसार औषधि देवै. यदि रोग अधिक होतो औषधि अधिकदेवे और थोड़ाहोतोऔषधि थोड़ीदेवै. औषधिकाहीन, मिथ्या अति योग न होने देवे क्योंकि ऐसा होने से रोगकी अधिकता होजाती है. इस लिये औषधि को यथार्थ विचार करके देना चाहिये ।

१-हीनयोग वैद्यक ग्रंथोंमेंलिखे प्रमाणानुसार नहीं वरन उस प्रमाणसे अति न्यून करके औषधि मिलना यह हीन योग है ।

२-मिथ्यायोग-वैद्यक ग्रंथोंमें कुछ और लिखा और वैद्यने कुछ अन्य ही औषधि का उपयोग किया. यह मिथ्या योग है ।

३-अतियोग-वैद्यक ग्रंथोंमें लिखे प्रमाण से अत्यन्त अधिक मिला देना यह अतियोग है ।

❁ अर्थ विचार ❁

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ये पांचों पांच इन्द्रियों से सम्बन्ध रखते हैं अर्थात् १ शब्द कानोंसे २ स्पर्श त्वचासे ३ रूप नेत्रों से ४रस जिह्वा से, और गंध नासिका से सम्बन्ध रखते हैं; उक्त विषयोंका ज्ञान उक्तेन्द्रियोंसेही होताहै सो उनको यथार्थ प्रमाणानुसार रखने से शरीर ठीक रहताहै यदि हीन या मिथ्या किंवा अतियोग हुआ तो शरीर रोगयुक्त होजाता है जैसे—

१—कानोंको सुननेकी सामर्थ्य होते हुए थोड़ा या अधिक अथवा कुछ का कुछ सुनना.

२– स्पर्श करनेकी सामर्थ्य होतेहुए थोडा या अधिक अथवा कुछका कुछ स्पर्श करना ,

३–देखनेकी सामर्थ्य होते हुए अधिक अथवा कुछका कुछ देखना ।

४–स्वाद लेनेमें सामर्थ्य होतेहुए थोडा या अधिक अथवाकुछ अन्यहा स्वाद लेना ।

५ सुगन्ध लेनेमें सामर्थ्य होतेहुए थोडा या अधिक अथवा कुछ अन्यही सुगन्ध लेना ऐसे कारणोंसे पुरुष रोगयुक्त होजाता है वैद्य इस पर ध्यान दे कि रोगी इन पांचोंका यथार्थ रीतिसे वर्ताव रक्खे तथा अन्य सबजनोंको उक्त नियत पूर्वक अपना वर्ताव रखना चाहिये ।

कर्म विचार ।

कर्म तीन प्रकारके हैं, अर्थात्१ कायिक २ वाचिक ३ मानसिक

१–कायिक–जो काया(शरीर) सेकियेजावें सोकायिककहातेहैं,

२–वाचिक जो मन (वाणी) से किये जावें सो वाचिक ,

३–मानासिक जो मन (अन्तःकारण) से किये जावें,

उक्त कामोंका भी हीन, मिथ्या और अतियोग न होना चाहिये, क्योंकि ऐसा होनेसे रोगग्रस्त हो जावेगा जसे—

१–कायिक कर्म अपनी काया (देह) की शक्तिसे न्यूनाधिक तथा अन्यही करे ।

वाचिक कर्म-अपनी वाणी कीशक्तिसे न्यूनाधिक तथाअन्यहीकरे

३मानासिक; अपने मनकी शक्तिसे न्यूनाधिक अथवा अन्यहीकरे तो ऐसा करनेसे रोगी होगा और उक्तकर्म तत्तत् (अपनीअपनी) शक्ति अनुसार करे तो मनुष्य सर्वदा रोग राहित रहेगा वैद्यको रोगीके कर्मविचार पर पूर्ण ध्यान देना चाहिये ॥

अग्निबलविचार

अग्नि पांच प्रकारकी होतीहै अर्थात्१ मन्दाग्नि,, २तीक्ष्णाग्नि ३ विषमाग्नि. ४ समाग्नि, ५ भस्माग्नि।

१ मदाग्नि कफप्रकृतिवालेको मन्दाग्नि रहतीहै वह कफरोगों को उत्पन्न करतीहै सो ठीक नहीं है।

२तीक्ष्णाग्नि पित्त प्रकृतिवालेको तीक्ष्णाग्नि होती सो वह खाये हुए पदार्थको पाचन करतीहै परन्तु गर्मी (उष्णता) के रोगोंको उत्पन्न करने वाली है।

३विषमाग्नि वात प्रकृतिवालेको विषमाग्नि होती है, यह कभी अन्नको पाचन करताहै और कभी नहीं करता इस प्रकारबादी के रोगोंको भी उत्पन्न करतीहै।

४ समाग्नि सब खाये हुए पदार्थको उत्तम प्रकारसे यथायोग्य पचा देती है. जिस मनुष्यकी समाग्नि होतीहै वह सर्वदा सुखी रहता है यह श्रेष्ठ है।

५ भस्माग्नि इससे भस्मक रोग उत्पन्न होता है, किसी औषधादि से शरीरका भीतरी कफ अत्यन्त न्यून होजावै औरपित्त अग्निरूप बढता जावे तो वायुकी प्रेरणासे महातीव्र अग्नि होकर भस्माग्नि होजाती है, सो यह अच्छी नहीं हानिकारक है, क्यों कि भस्माग्निवाले पुरुषको नियतकालपर भोजन, पान प्राप्त न हुआ तो वह प्यास, पसीना, दाह, मूर्च्छा आदि उत्पन्न करके मनुष्यको निधन (नष्ट) करदेती है. इसलिये वैद्य अग्निबल विचार कर चिकित्सा करे; अन्यथा की हुई चिकित्सा निष्फल हो जाती है।

साध्यासाध्यविचार।

साध्यलक्षण–जिस रोगीकी प्रकृति ठिकाने हो, अग्नितीव्रहो

उपद्रव युक्त रोग न हो रोग एकही दोषसे उत्पन्न हो इत्यादि लक्षणयुक्त रोगीको वैद्य साध्यजाने और औषधि देवे ।

असाध्यलक्षण–जिस रोगीको रात्रिमें नींद न आवे, कंठमें कफ घरीवे. शरीरमैंदाहहो, नाडी मंदचले बाणी (बोलनेसे) थकित होजावे नेत्रादि समग्र इंद्रियांअपनेअपने विषयसे रहितहेजावें (उद्योग छोडदेवें) अग्नि मंद पड जावे. प्रकृति बिगडजावेनेत्रलाल होजावें,श्वासबढे.हृदयेंमशूलचले. तद्राहो (अधमिची आंखें अर्थात उनींदीसा होना) हिचकी उठे, निर्लज्जहोजावें प्यास अधिक लगे अधिक सोवे ओर चिकनापनलियेहुए पसीना निकलैइत्यादिलक्षण युक्त रोगीको वैद्य असाध्य समझे ऐसेरोगीकाबचनाकठिनहै इस लिये वैद्य ऐसे रोगीको औषधि न देवे यदि देवे तो पूर्ण सोच विचारके नहीं तो व्यर्थही अपशयका भागी होगा ।

इति साध्यासाध्य विचार ।

रोगीको जिस रोगपर जैसे पथ्ययोग समझे वैसे करावे और कुपथ्य न होनेदे क्योंकिपथ्यसेरोगी का रोग बिनाऔषधिभीशांतहो जाताहै औरकुपथ्यसे औषधि सेवन करने परभी कुछ नही होता है देखिये वैद्यजीवनमें यह लिखा है ।

पथ्ये सति गदातस्य किमौषधनिषेवणैः ॥ पथ्येऽ
सति गदातस्य किमौषधनिषेवणैः ॥वैद्यजीवनेह्युक्तम्

इति पथ्यापथ्यविचार ।

अनुपान विचार

वैद्यको चाहिये कि चूर्ण, गुटिका, अवलेह, हिम क्वाथ घृत. तेल आसव और भस्मआदिजिसअनुपानसेजिसरोग पर वैद्यकशास्त्रोंमें लिखाहो उसीप्रकार देवे जिससे रोगशीघ्र शांतहोजावे और बिना

विचार ऐसा न करै कि चाहै जिस वृक्षकी जड़ चाहै जिस वस्तु के साथ पीसकर चाहै जिस रोगपर देनेसेही काम रक्खे फिर आगे जोहोगा सो होगा (इच्छित कार्यकरे) ऐसा बिना पढे लिखे और सद्गुरुकीशिक्षा पायेबिनाजो वैद्य बनकेऔषधि करने लगते हैंवेमहाब्रह्मघाती होतेहैं औरइसलोकमें अपकीर्ति प्राप्त करमरनेपर कुम्भीपाक नरकमें रहतेहैं इसलिये सर्वजनोंको इस बात पर पूर्ण ध्यान रखना चाहिये।

रोगीविचार

१–उत्तम लक्षणयुक्तवैद्यदेखकर औषधि लेवै२–जिससमय और जिस अनुपानके साथ वैद्य औषधि देवैयथोचितलेवे ३ पथ्यसेरहै ४ परिचारक सेवक भी चतुर रक्खै क्योंकि–१सद्वैद्य, २ योग्यौषधि, ३ चतुर सेवक,४ जितेन्द्रिय तथा पथ्यसे चलनेवाला रोगी येचारबातें यदि पूर्णरूपसे यथोचित मिलजावें तो कष्ट साध्य रोगभी साध्य होकर शीघ्रआरोग्यहोजाता है।

इति नूतनामृतसागरे विचारखण्डे नाडीविचारादिनिरूपणे नामद्वितिय स्तरंगः ॥ २

यंत्रविचार।

तत्रादौ बालुकायंत्रम्।

भाण्डेवितास्तिगंभीर मध्य निहतकूपिकं ॥ कूपिकाकण्ठपर्यन्त बालुकाभिश्च पूरितम ॥ १ ॥ भेषजं कूपिकासंस्थं वह्निना यंत्र पच्यते ॥ बालुका यंत्रमेतद्धि यत्र तत्र बुधः स्मृतम्ः २ ॥ रसप्रदीपेह्युक्तम् ॥

१ यस्य कस्य तरोर्मूलं येनकेन च पेषणं यस्मै कस्मै प्रदातव्यं यद्वातद्वा भविष्यति ॥ १ ॥

२ प्राय श्चित्तं चिकित्सा च ज्योतिषं धर्मनिर्णयम् ॥ विनाशास्त्रेण यो कुर्यात् तमाहुर्ब्रह्मघातिनम् ॥ २ ।

भाषार्थ-१ एक बीता गहरी मट्टीकी काली हांडीमें दृढ कांचकी शीशी रखके उसशीशीके गलेतकहांडीमेंरेतभरदेओराजिस औषधिको आगदेनाहो सोपा-ले उस शी-ी में भरे तदनन्तर उसे हांडीको भट्टी पर चढाकर लिखे प्रणाम और समय पर्यंत आगदेवे इसे बालुकायंत्र कहतेहैं ॥

दोलायंत्रम् ।

निबद्धमौषधं सूतं भूर्जे तत् त्रिगुणाम्बरे ॥
रस पोटलिकां काष्ठ दृढ बद्धवा गुणेन हि । १ ॥
संधान पूर्ण कुम्भान्तःस्था लम्बिनसंस्थितम् ।
अधस्ताज्ज्वालये दग्निं तत्तदुक्तक्रमेण हि ॥ २ ॥
दोलायंत्रमिदंप्रोक्तस्वदनाख्य तदेव हि॥ रसप्रदीपेप्युक्तम्

भाषार्थ-जो औषध करनाहो उससे तिगुणा बोझका कपडाउसपर लपेटकर (अथवा उस वस्तु को वस्त्र के तीन लपेटे लगावे) उसकी पोटली बनाकर एकलकडीके मध्यमें इस युक्तिसे लटकावे कि जिसमें वह घडे जिस पात्रमें कांजी आदि पदार्थ उस वस्तुकेधोनेकेलिये भरा रहताहै, के बीचोंबीच अधरमें लटकती रहे और जिस पदार्थसे शुद्ध करना हो वहउस घडेके मुंहसे कुछ कमभरके उस घडेको भट्टी पर रक्खो और लिखे प्रमाण आगदो, इसे दोलायंत्र कहते हैं ।

साम्बुस्थाली मुखे बद्धे वस्त्र स्वेद्य निधाय च ॥
पिधाय पच्यते यंत्रं तद्यंत्रे स्वेदन स्मृतम् ॥ १ ॥ र० स०

बहुधा साधारण कांच आग लगतेही फूट जाता है परन्तु उक्त कामके लिये एक जुदेही प्रकारका कांच बनाया जाता है जिसकी शीशी आंचसे नहीं तड़कती और समय पर्यन्त आग सहन करती है.

भाषार्थ-जल युक्त घटके मुखपर वस्त्र बांधकर उसमें (जो शुद्ध करना होसो) औषधि रखके उसके ऊपर दूसरा पात्र रखदो अब उस घड़े का मुंह बंद करके उस यंत्रको लिखे प्रमाणानुसार भट्टी पर आंचदो; इसे स्वेदन यंत्र कहतेहैं।

विद्याधरयंत्रम्,

अथ स्थाल्यां रस क्षिप्त्वा निदध्यात्तन्मुखोपरि ।
स्थालीमूर्ध्वमुखीं सम्यक् निरुध्य मृद्र मृत्स्नया ॥ १ ॥
ऊर्ध्वस्थाल्यां जलं क्षिप्त्वा चुल्ल्यामारोप्य यत्नतः ।
अधस्ताज्ज्वालयेदाग्निं यावत्प्रहरपंचकम् ॥ २ ॥
स्वांगशीतास्ततो यंत्रमदगृह्णीयाद्रसमुत्तमम् ॥
विद्याधराभिधं यत्रमेतत्तज्ज्ञैरुदाहृतम् ॥ ३ ॥ प्र०र०)

भाषार्थ-एक घड़ेमें रस (अथवा जो वस्तु रखना हो सो) धरके उसके मुँहपर दूसरे घड़ेका पेंदा जमाओ दोनोंको चिकनी मिट्टी में लपेटी हुई कपड़ेकी पट्टीसे भली भांति बंदकरदो तदनंतर ऊपर वलि घड़ेमें पानी भरके भट्टीपर चढ़ादो वैद्यकशास्त्रानुसार उसे पांच पांच प्रहर (पन्द्रह घंटे) पर्यंत लगातार आंच देकर जबवह स्वतःसर्वशीतल होजावे तब घड़ेमें रक्खी हुई वस्तु को निकाल लेवे इसे विद्याधर यत्र कहते हैं।

भूदरयंत्रम्

वालुकाभिः समस्तांगं गर्ते मूषां रसान्वितां ।
दीप्तोपलैः संवृणुयाद्यंत्रं भूधरनामकम् ॥ १ ॥

भाषार्थ-भूमिमें गढ़ा खोद उसमें एक शीशी रख उसे गले तक वालुसे भरदेवे जिसमें वह दृढ होजावे तदनंतर दूसरी शीशी में रस अथवाजो वस्तु शोधन करनाहो सो रखकर उसके मुखपरवस्त्र

अथवा धातुकी डाट (जिसमें छोटे२ छेद हों) लगादेवै फिरइसें दूसरे शीशेकी पहिले (घड़ेमें धरेहुए) शीशेके मुंहसेमुह मिलाकर मिट्टी आदिसे दृढ़ करके उसी घड़ेमेंधरदे और ऊपरकीशीशी पर आरने उपले रखकें ऊपर तक दाबदे पश्चात् लिखे प्रमाणानुसार आँच देवे; जब स्वांग शीतल होजावे तव नीचेके शीशे में जो कुछ पदार्थ पतला होकर गिराहो उसे निकाल लेवे इसे मूधर यंत्र कहते हैं ।

डमरूयंत्रम् ।

यंत्रडमरुसंज्ञं स्यात्तत्स्थाल्योर्मुद्रतमुखम् ॥

भावार्थ–दो मिट्टीके घडोंकामुख परस्पर जोड़केकपड़मिट्टीसे बंद करदे नीचेके घड़ेमें जो वस्तु धरना हो सो धरके आग लगावे और ऊपरके घड़ेके पेंदे में पानी भरा चपटा धरे अथवा मिट्टी की किनारी ऊपरकी तलीपर बनाके उसपर कपड़ा धरदे और कपडेपर पानी छोडता जावे इसी यंत्रके द्वारा ऊपरकेपात्रमें नली लगाकर अर्क भी उतार सकते हैं, इसे डमरू यंत्र कहते हैं

गुजपुटम्

सपादहस्तमानेन कुण्डे निम्ने तथायते ।
वनोपलसहस्रेण पूर्ण मध्ये विधारयेत् ॥ १ ॥
पुटनद्रव्यसंयुक्तां कोष्टिकांमुद्रितां मुखे ।
अर्धार्धानि करण्डानिचार्द्धा-यापारिनिक्षिपेत् ॥ २ ॥
एतद्गजपुटं प्रोक्तं ख्यातं सर्वपुटोत्तमम् ॥

भावार्थ–सवाहाथ (३० अंगुलका एक शंकु) बनाके उसीके प्रमाण सवा सवा हाथ लंबा चौंडा गहरा गढ्ढा खोदके उसमें १००० जंगली गोवरी (आरने कंडा) में से आधे

नीचके अर्ध कुंडमभरदोऔरजोवस्तुजलानाहोउसेसंपुटकरके उसमें धरो फिरआधी ऊपली ऊपरसे ढांकके अग्नि लगादो जबस्वांगस्वतः आपहीठंडी होजावेतव वह संपुटनिकाललो इसी प्रकारजिसभस्ममें जितनी आंच देनीहोवे तितनी बार उक्तवत करते जाओ, इसेसर्वो त्तम गजपुट कहतेहैं.यह सर्वरसप्रदीप तथा भावप्रकाशमेंलिखाहै।

इति नूतनामृतसागरे विचारखण्डे यंत्रविचार निरूपणं नामतृतिय स्तरंगः ॥

अथ धात्वादि संशोधन विचार।

तत्र सप्तधातवः।

स्वर्णतारं भियं ताम्रं नागं वंगं मनोरमं ॥
स्वर्णाङ्ग जसदं लोहं सप्तते धातवः स्मृताः ॥

अथोपधातवः।

माक्षिकं तुत्थकं तालंनीलांजनमथाभ्रमक् ॥ मनः शिला च रसकं प्राहुः सप्तोपधातवः ॥ २ ॥ अनुपानद०

भाषार्थ—१सोना, २चांदी, ३ तांबा. ४सीसा; ५रांग,६ जस्ता, और७ लोहा येमुख्य सात धातुहैं और (तांबा×जस्ता=पीतल (तांवा+रांगा=कांसा) तांवेमें जस्ता मिलानेसे पीतल और रांगा मिलाने से कांसा ये संयुक्त धातु भी बनती हैं।

१सोनामक्खी,२ नीलाथोथा, ३हरताल, ४ सुरमा, ५ अभ्रक ६मैनाशिल और ७खपरिया , ये सात उपधातुयें कहाती हैं।

अब उक्तधातुओ के शोधन की बिधि लिखते हैं।

जो धातु सोधना है उसे बारीक बारीक पत्रकरो और तैयार कर उन्हे १ तेल ; २ छाछ (मठा) ३ गोमूत्र , ४ कुलथीका- काढा और ५ कांजी । इन पांचों वस्तुओं में क्रमशः सात सातअथवा तीन तीन बार बुझाओ; इनमें से १ रांगा , २ सीसा

जस्ता.इन तीनों को गलाके तेल आदि उक्त पांचों पदार्थोंमें बुझाके पुन तीनवार आक के दूधमें बुझानेसे ही शुद्ध होजाते हैं ।

सूचना—इन्हें गलाके बड़ी युक्तसे बुझाना चाहिये, क्योंकि ये उड़कर शरीर को जला देते हैं शुद्धि शार्ङ्गधर तथा अनुपान मंजरी में लिखा है ।

तांबेका विशेष शोधन उक्त पांचों वस्तुओंमें तांबेको सात सात बार बुझाके १ सेहुंड (थूहरका दूध) २ गायका दूध;३ इमली का पानी४नीबूका रस ५ दाखका पानी६ मधु (शहत) और ७ भूकंद (जिसे जमींकंद भी कहते हैं, का रस पुनः इन सातों पदार्थों में सात सात बार बुझाओ तो तांबा शुद्ध होजावैगा ।

२ सीशेका विशेष शोधन- पूर्वोक्त(तेल छाछ आदि)वस्तुओंसे शुद्ध करके १ घीकुमारी पाठे (ग्वारपाठा का रस और २ त्रिफलाका क्वाथ पुनः इन दोनों वस्तुओंमें गलाके सात ७ बार बुझाओ तो शीशा पूर्ण शुद्ध होगा ।

३ रांगेका विशेष शोधन—शीशेका शोधन रीत्यनुसार जानो

४ जस्ताका विशेष शोधन—शीशेकी रीतिपर ही है ।

५ लोहेका विशेष शोधन—लोहेको तांबेकी रीतिपर शुद्ध करके पुनः त्रिफलाके क्वाथमें सातवार बुझाओ तो पूर्ण शुद्ध होजावेगा

६ सोने का विशेष शोधन ।

७ चांदीका विशेष शोधन-छाछ आदि वस्तुओं में बुझाय देनेसे होजाता है ये स्वतः शोधित हैं इसलिये इनको अधिक शोधन की आवश्यकता नहीं ।

❁ इति धातुशोधन विचार ❁

❁ अब उपधातुओं के शोधने की रीति देखो ❁

१ सोनामक्खी शोधन—तीनभाग सोनामक्खीमें १एक भाग सैंधानमक डालकर जंभीरी अथवा बिजौरे के रस के साथ कढ़ाई में रखके आग दो और लोहेकी कलछी से घोटते जाओ जब कढ़ाई

अग्नि से लाल होजावे तब उतार के शीतल होजाने पर निकाल लो।

२रूपामक्खी शोधन--१ककेड़ा २ मेढ़ासिंगी३अथवा जम्भीरी केरसमें घोटकेसूर्यकी तीक्ष्णतापमरक्खें रूपामक्खीशुद्ध होजावेगी

३नीलाथोथाशोधन-नीलथोथसेंबराबर बिल्लीका मिष्टाऔर ४ भाग सुहागालेकर तीनोवस्तु मधुम खरलकरो फिरसम्पुट करके जँगली ऊपलेकी आग दो ऐसातीनबारकरनेसे नीलाथोथा शुद्ध होजावेगा

४हरतालशोधन हरतालको १ त्रिफलाका क्वाथ २ कांजा ३ भूरा कुष्मडाका रस ४ और तेल इन पदार्थों में पृथक २ दोलायंत्र से एक प्रकारकी आंच देओ अथवा चूना के जलमें ४ चार प्रहर पर्यंत दोलायंत्र से स्वेदन करो तो हरताल शुद्ध होजावेगा।

५ सुरमा शोधन--सुरमाको जम्भीरीके रसकी पुट देके १ दिन भर धूपमें सुखादेओ तो सुरमा शुद्ध होजावेगा।

६अभ्रकशोधन-अभ्रकको अग्निमेंतपाकेगौकेदूधम बुझाओ फिर चौलाईका रस तथा इमलीकी खटाईमें आठ पहर (एकदिनरात) भिगो रक्खो अभ्रकशुद्ध होजावेगा।

७मेनशिल शोधन-मनशिलको बकरीके मूत्रमें दोलायन्त्र से तीन दिन पकाकर गर्म खपरा (मिट्टीके बरतनका टुकड़ा या करछली या तवापर कुछ समयतक रक्खो तो शुद्ध होजावेगा।

८ खपरिया शोधन--खपरियाको मनुष्यके मूत्र अथवा गौ मूत्र में दोलायन्त्र से ७ दिन पकाओ तो शुद्ध होजायगा॥

❋ इति उपधातु शोधनविधि ❋

रत्नशोधन १ सूर्यकांति आदि मणि मोती तथा मूंगाको जाईके रसमें दोलायन्त्र से एक प्रहर पर्यंत आंच दो अथवासम्पूर्ण वक्रांतादि रत्नमात्रको भटकटैयाकी जड़में लुगदी बांधकर रक्खो तथा कुल्था के काढेमें दोलायन्त्र से तीन दिनतक पकावे सर्व रत्नमात्र (चाहे सो रत्न) शुद्ध हो जावेंगे।

भाषार्थ-मान (तोल) के जाने बिना औषधादि पदार्थोंके बनानेकी युक्ति सिद्ध नहीं होसक्ती इसलिये अब हम कई प्रकार के मान लिखते हैं

प्रथममानजोकि अमृतसागर केऔषधि प्रयोगमें आया है
८आठ रत्तीकी=१ मासा
३ तीन मासे = १ की टांक
४चार टांक = १ तोला
३तीनतोले= १ टका , २ पैसा
१८ अठारहटका= १सेर जिसके ५४तोले और स्थूलरीतिसे रुपये होते हैं
४०चलीससेरका=१ मन यह मन कच्चा कहलाताहै क्योंकि १८ टकेके सेरसे है प्राचीन अमृतसागरकेग्रन्थकर्तामहाराज श्रीप्रतापसिंहने यही १८ (टकेका) कच्चा मनमानाहै औरआधुनिकप्रमाणसे२८ टकेका पक्का सेरमानकर४० सेरका मन मानाहै इस लियेयहपक्का मनकहाताहै इति प्रथममान

अथ द्वितीयमागधमानम् ।

चरकस्य मतं वैद्यैराद्यैयस्मान्मतं ततः ॥
विहाय सर्वमानानि मागधं मानमुच्यते ॥ १ ॥

भाषर्थ-शेषावताररूप चरकमुनि राज ने मागधीमान को मुख्य जाना है इसलिये सब प्राचीन वैद्योंने भी इसीको स्वीकार कियाहै हमभी अन्य गौण मानोंको छोड यहां मागधी मानको ही लेतेहैं भावप्रकाश तथा शार्ङ्गधरमें भी लिखा गया है

दूसरा मागधीयमानः

३० परमाणुका = त्रसरेणु इस वशी भी कहते हैं
६छः वशीकी=१ मरीचि जो अति सूक्ष्म होती है
६ मरीचि= १ राई
३राई= १ सर्षपअर्थात्सरसों

८ आठ सरसों का=१ यव. जौ
४ यव=१ गुंजा (गुमची चिरमु)
६ छः गुंजा=१ मासा
(हेम=धात्य)
४ चार मासे=१ शाण जिसके व्यवहारमें ३मासे होतेहैं इसको "निष्क" धारण और 'टंक, भी कहते है ।
२ टंक= १ कोल जिसके व्यवहार मे छः मासे होते हैं, कोलके, क्षुद्रम–वकट और द्रक्षण' ये नाम भी हैं ।
२ कोल= १ कर्ष, यह कर्ष मागधीय मान से १६ माशे और व्यवहारी मान से १ तोले का होता है, इसके १ पाणीमानिना २ अक्ष, ३ पिचू, ४ पाणितल, ५ किंचितपाणि, ६ तिंदुक; ७ बिडाल, ७ परढक, ८ शोडाशिका, ९ करमध्य, १० हंसपद ११ सुवर्ण १२ कवलग्रह, और १३ उदुम्बर., ये नाम भी हैं ।
२ कर्ष= १ अर्द्धपल. जिसे 'शुक्ति और अष्टमिका, भीकहतेहैं
२दो शुक्ति–१पल, यह पलमागधी, मानसे ५ तोले और व्यवहारी मानसे ४ चार तोले का होता है, इसके" १ मुष्टी, २ आम्र, ३ चतुर्थिका, ४ प्रकुंच, ५ षोडशी, ६ बिल्व. ये नाम भी हैं ।
२ दो पल=१ प्रसृती (प्रसृती भी कहते हैं) मागधीयमानसे १० तोले और व्यवहारी मानसे ८ तोले की होती है ।
२ प्रसृती= १ अंजली, इसे=१ कुडब, २ अर्द्धशराव और ३ अष्ट मान भी कहते हैं; मागधीय मानसे२० तोले और व्यवहारीय मान से १६ तोले की होती है, इसलिये इसको एक पाव जानो ।
२ कुडब= १ मानिका, इसे शराव और अष्ट पल भी कहते हैं. इसलिये उस ॥ (आधसेर) का समझना चाहिये ।
२ शराव= १ प्रस्थ इसे १ सेर भर जानो ।
४ प्रस्थ=१ आढक, जिसे भाजन और कासपात्र भी कहते हैं इसमें ६४ पल होते हैं इसे ४ चार सेर का जानों ।

४ आढक=१ द्रोण, इसके १ कलश; २ नल्वण ३ उन्मान और ४ घटराशि, ये नाम भी हैं।

२ द्रोण =१शूर्प (कुंभ) जिसके ६४ शराव तथा ३२ सेर होतेहैं

२ शूर्प=१द्रोणी (वाहगोणी) इसमें १२८ शराब तथा ६४ सेरहैं

४ द्रोणी= १ खारी जिसमें ४०९६ चारसहस्र छयानवे पल तथा २५६ सेर होते हैं।

२००० दो सहस्र पलका= १ भार होता है।

१०० शत पलकी=१तुला होती है. हम ऊपर ४ तोले(व्यवहारी) का एक पल लिख आये हैं इसलिये ५ सेर (पक्के जो आजकल चलते हैं) की. तुला हुई और २००० पल के एक भार और १०० पलका एक तुला इसलिये २० तुला का भार हुआ. अब उक्त गणनानुसार ढाई मन (पक्की जो आजकल अंग्रेजी तोले तथा व्यवहार में चलता है) का भार जानो॥ इति

३ तृतीय कलिंगमानम् ।

यतो मन्दाग्न्यो ह्रस्वा हीनसत्वा नराः कलौ॥ अत स्तु मात्रा तद्योग्या प्रच्यते सुज्ञसंमता ॥ १ ॥ भा. प्र.

भाषार्थ- कलियुगी मनुष्य ह्रस्वाङ्ग, मन्दाग्नि, तथा निर्बल होतहैं अतएव उनके योग्य मात्राकी योजना करनेके लिये कलिंगमान लिखते हैं. इस मानानुसार मात्रा की योजना सर्व सद्वैद्यों को मान्य है. तीसरा कालिंगमान ।

१२ श्वेत सरसोंका=१ यव

२ यव= गुंजा,

३ गुंजा= १ वल्ल ।

७ या ८ गुंजा=१ मासा

४ मासे=१ टंक (शाण)

६ मासे= १ गद्यान.

१० मासे=१ कर्ष ।

४ कर्ष= १ पल. जिस-

में १० शाण या टंक होते हैं ४ पल= कुडव होता है. इसके आगे प्रस्थादि का मान पूर्वोक्त मागधीय रीत्यनुसार (जहां कामपड़े तहां) ही लैना चाहिये.

इति नूतनामृतसागरे विचारखण्डे मानविचार निरूपण नाम पञ्चमस्तरंग ॥ ५ ॥

औषधियुक्तायुक्तविचार

नवान्येवहि योज्यानि द्रव्याण्यखिलकर्मसु ।
विना विडंग कृष्णाभ्यां गुडधान्यघृत माक्षिकैः ॥१॥

भाषार्थ—अब औषधियों के युक्त तथा अयुक्त विचारोंकालिखना अवश्य है. क्योंकि युक्तायुक्त विचारके बिना कोई औषधि यथार्थ फलदायनी नहीं होती है, सब कार्योंमें औषधि नवीन ही डालना चाहिये परन्तु १ वायविडंग, २ पिप्पली, ३ धनियां, ४ गुड, ५ मधु और ६ घृत ये छः पदार्थ सब वस्तुओं में पुराने (१ वर्ष से नीचे के नहीं) ही डालना चाहिये ।

२–१ गुडवेल. २ कुडे की छाल, ३ अडूसा, ४ कोंहला ५ शतावरी, ६ असगंध ७ खिरेंटी ८ बड़ी सौंफ और ९ प्रसारणी (अर्थात् चांदवेल जिसे पूर्वकी ओर गंधमदाली भी कहते हैं, ये नौ पदार्थ जिसऔषधिमें उपयोगकरो उसमें सर्व दागीलेही डालो गीले जानकर दूने मत डालो इनके लिये यही नियम है ।

३–उक्त औषधियोंके अतिरिक्त अन्य औषधियां समस्त कार्योंमें नवीन तथा सूखी ही डालना चाहिये यदि गीली हो तो सूखी के लिखिते प्रमाण से दूना डालो ।

४–जहां औषधि भक्षणके लिये समय न लिखाहो वहां औषधि भक्षणकाल प्रातः कालही जानो. तथा जिस औषधिका अंग स्पष्ट न लिखाहो वह उसकी जड़ लैना और जिस औषधिका प्रमाण

न लिखा हो वहां सर्वौषधि समान भागसे लैना इसी प्रकार जहां पात्रका नियम न लिखा हो तो वहां मिट्टी का वर्तन ही जानों.

५-यदि किसी प्रयोग में एक ही औषधि दो वार लिखी हों वहां लिखित प्रमाण से द्विगुण लैना चाहिये ।

६-जहां "चन्दन" मात्र लिखाहो जाति न लिखीहो तौ आशय अवलेह घृतादि स्नेहमें प्रायःश्वेतचन्दन डालो, परंतु क्वाथ तथालेप में रक्त चन्दनहीं डालो । ७-अत्यन्त बड़े वृक्षों (जैसेनामादि) के जड़की छाल लैनाचाहिये परन्तु छोटेकोमलवृक्षों (जैसे कटियाली गोखरू) की जड़ अथवा पंचांग लो ८-बड़ आदि वृक्षों की छाल लो, तथा खैर आदि वृक्षों का सार लो, और महुआ बबूल आदिकी अन्तर छाल लैना चाहिये ९-तालीश, तेजपात पान तुलसी, सोनामक्खी और भंग, इत्यादि के पत्रलो तथा त्रिफला सुपारी आदिक फलही लैना चाहिये और पलास गुलाब, सेवती आदि अनेक वृक्षों के पुष्प ही लैना योग्य है ।

१० कवच अरीठा कमलगट्टा, जायफल कालीमिर्च, इत्यादि के बीज लो, अर्क थूहर बड़ और गूलर, इत्यादि का दूध ही उपयोगी होता है. ११ यदि किसी स्थान में कोई औषधि न मिले तौ तत्समान गुणवाली अन्यौषधिभी मिलाकर काम निकाललैना चाहिये जैसे अतीसके अभावमें नागरमोथा अमलवेतके अभाव में चूका या चनाखार, कस्तुरीके अभावमें जावपत्री ऋद्धिके अभाव मे वेल और वृद्धि के अभाव में नागवेला उपयोग करसक्ते हैं ।

१२-इसीभांति मेदाके अभाव में असगन्ध महामेदाके अभाव में प्रसारणी, काकोली तथा क्षीरकाकोली न होतौ शतावरी, जीवक के अभाव में गिलोय और ऋषभक न मिलने पर वंशलोचन का उपयोग करके काम चला सक्ते हैं ।

१३–इसीप्रकारसे जायपत्रीके अभावमें लौंग, तगरके बदलेकूट, मौलशिरी न हो तौ कमलकन्द चित्रक न होनेपर दंतीमूल मधुके अभावमें पुरानागुड़ स्वर्णभस्मके न मिलनेपर लोहसार केशर न हो तौ कुसुम्भा और मोतीकी भस्मके अभवमें सीपीकाचून इसी तरह औरभी औषधियों का बिचार करके अपनी बुद्धि के अनुसार वस्तु न मिलेतौ अन्य वस्तुकी योजना से काम निकालसक्ते हैं इसका विशेष विस्तार देखना हो तौ निघंटुप्रकाश देखो।

१४–इसी प्रकार विचारपूर्वक जोवस्तु युक्तकरने योग्यहो उसे ही युक्त करो परन्तु अयुक्त की योजना कदापि न करो।

१५-और भी इस बातपर पूर्ण ध्यान दैना चाहिये कि काष्टादि औषधि १२ मास पश्चात् वीर्यहीन (निकम्मी) होजातीहैं जिनमें से चूर्ण दो मास घृत तथा तेल ४ मास और गुटिका अवलेह; तथा पाकादि १ वर्षपीछे निरुपयोगी होजातेहैं, परन्तुआसव, तथा स्वर्णादिभस्म और रसायन ये जितने पुराने होतेजावेंउतने ही अधिक गुणदायक होते हैं ॥ इति युक्तायुक्त विचार ॥

❁ औषधि भक्षण काल विचार ❁

भेषज्यतुव्यवहरेत प्रभातेप्रायसो बुधः ॥
कषायांश्च विशेषण तत्र भेदस्तु दर्शितः ॥१॥
ज्ञेय पंचविधःकालो भेषैज्यग्रहणे नृणाम् ॥
किंचित् सूर्योदये जाते तथा दिवस भोजने ॥
सायंतने भोजने च मुहुश्चापि तथानिशि॥शार्ङ्गधरे

भाषार्थ–१विशेषकरके रोगी प्रातःकालही औषधि भक्षणकरै जिसमें भी औषधिका अंगरस कल्क क्वाथ फांट और हिम ये तो प्रात प्रात कालही भक्षण करनेचाहिये २–मनुष्योंकोऔषधि भक्षणके लिये५कालहैं अर्थात्–सूर्योदय होनेपर. २दिनको भो.

जन करनेके समय, ३ सायंकालको भोजन करनेके समय के, ४वारंवार ५ रात्रिमें. ये पांच काल जानो, १--पित्त या कफके कोपपर, पित्तपर. विरेचन करानेके लिये, २कफपर वमनके लियेऔरवातादि दोषको स्नेहादि योगसे पतला करनेके लिये इत्यादिविकारवाले रोगी को बिना भोजन किये [निराहार - भूखा] प्रातःकालही औषधि सेवन [भक्षण=खिलाना] चाहिये।

४-यदि गुदासम्बन्धी अपानवायु कोपित हुआ हो तो भोजन करनेसे कुछही पहिले औषधि भक्षन करना ५ -- यदि अरुचिरोग हुआ हो अनेक प्रकारके रुचिकारक अन्नादि और उत्तमोत्तम भक्ष्य भोज्य लेह. चोष्य, पदार्थोंके साथही औषध दो.

६ जो नाभिका समानवायु कुपितहुआहो अथवा मंदाग्निहो तो अग्नि प्रदीपनी औषधि भोजनके साथ मिलाके खिलाओ।

७ जिसका समस्त शरीरव्यापक व्यानवायु कुपित हुआ हो उसे भोजन करनेके पश्चात् औषधि भक्षण कराना चाहिये.

८--हिचकी तथा आक्षेप तथा रोगमें और वायु कफकेकोपमें भोजनके पूर्व अन्त दोनों समयमें औषधिदेना ९ कंठसंबंधी उदान वायुकेकोपसे स्वरभंग आदि रोग उत्पन्नहों तो सायंकाल के भोजन करनेके समय [घृतादिसे युक्त करने] प्रत्येक ग्रासपर (चटनी के समान) औषधि खिलाना चाहिये.

१०--जो हृदयस्थित प्राणवायु का कोप हो तो विशेषकर सायंकालके भोजनान्तमें औषधि भक्षण कराईजावे, ११- तृषा, वमन हिचकीश्वास और विषदोष इत्यादि रोगोंमें अन्न सहित अथवा रहित वारंवार औषधि दो,

१२--ठुड्डी (दाढी) के ऊपर अंगके रोगोंमें, [जैसेकर्णरोग नेत्र

६ क्योंकि ऐसा खाने से वह औषधि भोजन के साथ उत्तम प्रकार से मिलजाती है

रोग, मुखरोग, नासिकारोग इत्यादि] तथा बढेहुयेवातादि दोषों को न्यून करनेके लिये और अतिक्षीण रोगोंकोघटाने के लिये रात्रिके समय पाचन व शमनरूप औषधि अन्नरहितदेनाचाहिये

इन नियमोंसे औषधि सेवन के पांच जुदे कालहैं सो वैद्य को चाहिये कि. रोगका निश्चय कर समय विचार से औषधदेवे

रोग, ओषधि और समयके विवेकसे रहितइच्छित प्रमाणसेही चिकित्सा नहीं करना चाहिये ।

इति नूतनामृत सागरे विचार खण्डे युक्तायुक्त विचारादि निरूपणं नामषष्ठस्तरंग ॥ ६ ॥

औषध क्रिया विचार ।

अथातःस्वरसः कल्कःक्वाथश्च हिमफांटको ॥
ज्ञेयाः कषाया, पंचेते लघवः स्युर्यथोत्तरम् ॥१ ॥

भाषार्थ--१स्वरस, २ कल्क, ३ क्वाथ, ४ हिम और ५ फांटये पांचों क्वाथके सदृशहीहैं, इनमें एकसे एक उत्तरोत्तर हलके हैं,

क्रिया-जो वनस्पति अग्नि तथा कीट आदिसे दूषितनहो उसे लाके तत्क्षण कूटो और वस्त्रसे निचोडके रस निकालो यह स्वरस [अथवा अंगरस] कहाता है.

२-क्रिया--४चार पल सूखी औषधी लेके चूर्ण करो उसचूर्णको मृत्तिकाके पात्रमें ८ पल पानी के साथ डालकर८ प्रहार भीगनेदो तदनन्तर वस्त्रसे निचोडलो यह दूसरे प्रकार का स्वरस है.

३ क्रिया-सूखी औषधि लेकेऔषधि से अष्ट गुणापानी लो य दोनों मृत्तिकाके पात्रमें डाल के आंच से औटाओ चतुर्थांश रहनेपरना छानलो यह स्वरसका तीसरा प्रकार है,

मात्रा-प्रथम प्रकारसे बनेहुएस्वरसकीमात्रा२तोलकीलेना और मधु; समान ना हीं

क्यों कि वह भारी होताहै दूसरे प्रकारसे वनेहुए स्वरसकी मात्रा४ तोलहै. तीसरे स्वरसकी मात्रा भी ४ तोले की जानों।

युक्त करनेकेपदार्थोंका प्रमाण-मधु शक्कर गुड जवाखार. जीरा नोन, घृत. तेल और चूर्णादि पदार्थ ६ मासे मिलाना चाहिये.

कल्कविधि,

क्रिया गीली औषधिको चटनी केसदृश वारीकपीसो. तथासूखी औषधिको जल के संयोगसे चटनी के समान वारीक पीसो उसे कल्क [प्रक्षेप और आवाप] भी कहतेहैं मात्रा कल्क की मात्रा का प्रमाण १ तोले भरका है,

युक्तपदार्थ प्रमाण-कल्कमें मधु घृत तैल मिलानाहो तो मात्रासे द्वगुण मिलाओ, शक्करगुड़मिलानाहोतो तुल्यऔरदूधतथापानी आदि द्रवपदार्थ मिलानाहो तोमात्रासे नौगुना मिलाना चाहिये,

२ क्वाथ विधि।

क्रिया-१[पलचार तोले]औषधि को कुछ कुछ कूटके उससे१६ गुना जलकेसाथ मृत्तिकाके घटमें डालो उसे आगपर चढ़ाकेमंद२ आगदो. इस घटकामुख बंद मतकरो नहींतो वहक्वाथ यथार्थगुण दायक न होगा, जब वह औटते२अष्टमांश रहजावै तब उतारकर चीनी या कांच या चांदी या पाषाण या मृत्तिका के पात्रमें छान लो इसे क्वाथ [शृत- कषाय और निर्यूह] भी कहते है।

मात्रा क्वाथकी मात्रा १ पल प्रमाण उत्तम तीन अक्ष प्रमाण मध्यम और अर्द्धपल प्रमाणकी निकृष्ठ कहाती है।

हि युक्तपदार्थप्रमाण-क्वथमेंशक्करडालनाहोतोक्वाथकेप्रमाण सेवा रद्विरोगमेंचौथाई पित्तरोगमें अष्टमांशऔरकफरोगमेंषडिशांशडालो

१२

१ तोले से चार तोले पर्यंत औषधि हो तो १६ गुणा जललो ४ तोले से कुडव प्रमाण पर्यंत औषधिहोतों अष्टगुण जललो और कुडवसे उपरांत प्रस्थ प्रमाण औषधिहो तो चतुर्गुण जललेना चाहिये ऐसा भाव प्रकाशमें लिखा है।

यदि मधु मिलाना होतो उक्त प्रमाणसे विपरीत डालो और जीरा गूगल. जवाखार, सैधव, शिलाजीत. त्रिकुट हींग(सोंठ, मिर्च, पीपल) आदिक पदार्थ क्वाथमें डालना हो तो ४ माशे डालो।

रोगीको चाहिये कि प्रसन्न चित्त पूर्वक कांचादिक पात्रमें क्वाथ लेके कुछ कुछ उष्णका ही पीकर पात्रको भूमि पर उलटा डाल देवे यदि वैद्यकी आज्ञा होतो ऊपर से ताम्बूलादि खावे।

४ हिमविधि।

क्रिया-चार तोले औषधि कूटके चौबीस तोले पानी के साथ मृत्तिकाकेपात्रमें रातभर भीगनेदो प्रातःकालछानलोइसेहिम(ठंडा क्वाथ) कहते हैं मात्रा-हिमकी मात्रा आठ तोले प्रमाण की है।

युक्त पदार्थ प्रमाण-हिम में जो वस्तुएं मिलाना होवें तो क्वाथ के प्रमाणानुसार ही मिलाना चाहिये।

५ फांट विधि

क्रिया-१पल औषधिका महीन चूर्ण बनावे मृत्तिकाके घडे में१ कुडव (जोव्यवहारी मानसे पावभरका होताहै)पानीडालकेचूल्हेपर चढ़ावे जब वह औटनेलगे तब औषधिका चूर्ण डालके कुछ काल पीछे उतारकर कपड़ेसे छानलेवें इसेफांट (तथाचूर्णद्रवभी) कहतेहैं

मात्रा-फांटकी मात्रा आठ तोले की होतीहै युक्त पदार्थ प्रणाम फांटमें मधु शक्कर और गुड़ आदि पदार्थ मिलना हों तो क्वाथ विधि में लिखे प्रमाणानुसार मिलाओ।

क्रिया-अत्यंत सूखी औषधिको कूटकेकपड़छान करो,उसेही चूर्ण [रज. क्षोदभी] कहते हैं. मात्रा-चूर्ण की मात्रा१ तोले की लेना चाहिये। युक्तपदार्थ प्रमाण-चूर्ण में गुड़ मिलाना हो तो समान मिश्री, चूर्णसे दूनी पकाई हुई हींग. अनुमान माफिक और मधु अथवा कोई अन्य चिकना पदार्थ मिलाना हो तो भी दूना दे

मिलाओ दूध गोमूत्र पानी आदि द्रव पदार्थ हो तो चूर्ण से चतुर्गुण (चौगुणा) मिलाओ यदि नीबूके रसादि का पुट देना हो तो रसमें चूर्णका पूर्ण रूप से भीग जाना चाहिये ।

७ अवलेह विधि ।

क्रिया-औषधियोंके क्काथादिको पुनः पात्रमें डाल के औटाते२ गाढा करना अर्थात् वहपदार्थ चाटनेके योग्यहो जावे उसे अवलेह (लेह) भी कहतेहैं. अवलेहकी मात्रा१पलकी होतीहै शुष्क पदार्थ प्रमाण अवलेहमें शक्कर डालना होतो औषधिके चूर्ण से चौगुनी मिलाना, गुड डालना होतो द्विगुण और दूध. गोमूत्र, जल आदि द्रव पदार्थ डालना होतो चूर्ण से चौगुना डालना चाहिये ।

८ गुटिका विधि ।

क्रिया-गुड या शक्कर अथवा गूगलकी चाशनी लेके, याबिना चाशनी लियेही: किंवा पानी या दूध अथवा मधुमें वैसेही चूर्ण डालकर गोली बांध लेना इसे गुटिका कहते हैं ।

१ गुटिका; २ वटी, ३ मोदक, ४ वाटिका; ५ पिंडी. ६गुड़ और ७ वर्ति ये सात नाम गुटिका के पर्याय वाचक हैं ।

मात्रा-जिस प्रकरणमें जैसे लिखाहो वैसा जानो परन्तु सर्वतः काष्ठादि चूर्णकी बनी हुई गोलीकी १ तोलेकी मात्रा होतीहै ।

शुष्कपदार्थ प्रमाण-शक्कर में गोलियां बनाना होतो चूर्ण से चौगुनी शक्कर लो यदि गुड में बनाना होतो चूर्ण से दूना गुडलो मधु या गूगल मिलाना होतो चूर्ण के तुल्य लो और दूध आदि द्रवपदार्थ मिलाना होतो चूर्ण से दूना मिलाना चाहिये ।

९ घृत तैलविधि ।

क्रिया-जिन पदार्थोंका घृत या तेल बनाना होतो प्रथम उनका कल्क (ऊपरका विधिमें देखो) बनाके उससे चौगुना घृत या तेल

[जो कुछ बनानाहो] के साथ दोनों पदार्थों (कल्क औरतेलयाघी) की मिट्टीके चिकने पात्रमें या कढाई में डालदो और उसीमेंदूध.गो मूत्रादि पदार्थ। जो लिखेहों) डाल घृतकर वह पात्र चूल्हेपरचढादो अब आगदतेश्केवल घृत या तेल शेष रहजावे (कल्क दूध आदि पदार्थ जलजावे.(तब उतारके छानलो यही घृततेल प्रस्तुतहोगया

मात्रा–इनकी मात्रा १ पल की होती है।

युक्त पदार्थ प्रमाण–इसमें दूध, दही गोमूत्रादि पदार्थ डालनाहो तो घृत तेलसे चौगुनाडालनाचाहिये, इस विषयका विशेषविस्तार देखनाहो तो शार्ङ्गधर तथा चरक सुश्रुतादि प्राचीन ग्रन्थोंमेंदेखो

आसव तथा अरिष्ट विधि ।

क्रिया–जल तथा अन्य द्रवपदार्थों के साथ पात्र में औषधियां डालकर उसका मुँह बन्द करदो और भूमिमें गाड़ के पक्ष तथा मास पश्चात् निकालो यह आसव या अरिष्ट कहाता है।

आसव बनाने की क्रिया जुदी है।

मात्रा–इनकी मात्रा १ पलकी होती है।

युक्तपदार्थ प्रमाण–इन दोनोंमें जहां जलादि द्रवका प्रमाणनहीं लिखा होतो१द्रोण द्रवकेसाथ १.तुला गुड़डालो उसीमें गुड़से आधा मधु और गुड़से दशमांश औषधियोंका चूर्ण डाल। और यदि सब वस्तुओंका प्रमाण लिखाहो तो लेखानुसार ही लेना योग्यहै आसव औरअरिष्टकी भिन्नता–जिसमें औषधियांजुदीऔरकेवल स्वच्छ जल जुदा डालकर उक्त रीत्यनुसार सिद्ध कियाहो सोतो "आसव". कहाता है और जिसमें प्रथम जलकेसाथ औषधियोंको क्वाथ बनाकर डाला हो सो अरिष्ट कहाता है इसके विशेषभेद शार्ङ्गधरादि वैद्यक ग्रन्थों में देखो।

पुटपाक विधि ।

क्रिया–जिस औषधिका पुटपाक करके रसनिकालना होतो प्रथम

उसके ऊपर बड़ या जामुनके पत्ते लपेटकरऊपरसे कालीमिट्टीका दो अंगुल मोटा लेप चढादो, फिरइसपिंडको तीक्ष्ण अग्निमेंदवादो जब यह अंगारके समान लाल होजावे तब निकालकर (ठंडाहोने पर) मिट्टी पत्रादि अलगकरके औषधि निकालकर रसनिकाललो

मात्रा-पुटपाक विधिसे निकाले हुए रसकी मात्रा १ पलकी है.

युक्त पदार्थ प्रमाण पुटपाक विधि से निकाले हुए रसमें मधु आदि पदार्थ एक कर्ष प्रमाण डालना चाहिये ।

१२ मंथ विधि ॥

क्रिया-४पल ठंडे जलमें औषधि का एक पल चूरा डालके मृत्तिका के पात्र में उसका मथन (जैसा मक्खन निकालने को दही मथा जाता हैं) करो इसको मंथनजल कहते हैं ।

मात्रा-इसकी मात्रा २ पलकी होती है।

क्षीरपाक विधि ।

औषधिके प्रमाण से अष्ट गुण दुग्ध और चौगुना जल इनतीनों को मिलाकर ओटाओ ओटाते २ जब पानी जल कर दूध मात्र रह जावे तब उतार लो इसे क्षीर पाक कहते हैं; उपयोग-यह आमांश शूलको नष्ट करता है.

१४ तण्डुजल विधि ।

१ पल प्रमाण कूटे हुए अष्टगुण जलके साथ वर्तन में डालके आंचदो, पीछे छानलो. अथवा कुछ काल पर्यंत भिगोकर छान लो इसे तण्डुजल कहते हैं पूर्वोक्त मुख्य और यह गौण है ।

१५ उष्णोदक विधि ।

सेरभर जल तपावै, जब कुछ तप जावै, या आधा रह जावे अथवा चौथाई रहे किंवा अष्टमांश बच रहै तब उतार लेवै ये एकसे एक उत्तरोत्तरसे लाभ दायक होगें ।

उपयोग यह जल कफ, आमवात. मदबुद्धि, कास, श्वासऔर ज्वरको दूर करता है और बस्तिको शोधन करने वाला है,

१६ कांजी बनाने की विधि.

मृत्तिकाके नवीन पात्रमें सरसोंका तेल चुपड कर निर्मल उष्ण जल राई जीरा सैंधव हींग सोंठ (थोडीसी) छाछऔरकुछ बडे (पक्वान्नविशेष) डालदो और इस पात्रका मुंह बंदकर के तीन दिन तक रहने दो जब वह उवलआवे तब कांजी कहावेगी)

मात्राविचार—हम उपरोक्त लेखमें स्वरस,कल्क, क्वाथ, हिम, फांट, चूर्ण.अवलेह, गुटिका, घृत, तेल, आसव; पुटपाक. मंथ. क्षीरपाक. तण्डुलजल, उष्णोदक, और कांजी इत्यादिका वर्णन करके प्रत्येक की मात्रा का भी ग्रंथानुसार वर्णन रक चुके हैं तथापि सद्वैद्य, काल, ज्वरागिन- अवस्था बल, प्रकृति देश और विकारादिको बुद्धि तथा शास्त्रोक्त आधारोंसे विचार कर औषध की मात्रा देवे । इसलिये शार्ङ्गधरमें लिखा है ।

स्थितिर्नास्त्येव मात्रायाः कालमग्निं वयो बलम्
प्रकृतिं दोष देशौचदृष्ट्वा मात्रां प्रयोजयेत् शा ख १ श्लो

यह सब औषधक्रियाविचार भावप्रकाश तथा शार्ङ्गधरादि वैद्यक ग्रंथोंमें विस्तारपूर्वक लिखी है ॥ इति औषधिक्रियाविचारः ।

इति नूतनामृत सागरे विचार खण्ड औषधक्रिया विचार ।
निरुपण नामसप्तमस्तरंगः ॥ ॥

औषधदीपनपाचनादि विचार।

पचदामं वह्निकृच्च दीपनं तद्यथा मिशिः ॥
पचत्यामं न वह्निं च कुर्याद्यत्तद्धि पाचनम् ॥
नागकेशरवद्विद्याच्चित्रो दीपनपाचनः ॥ ११ ॥

अब हम दीपन पाचन आदि औषधियों को विचार उदाहरण सहित लिखते हैं,

१ दीपनपाचन जो औषधि आमको न पचावै और अग्निकोदीप्त करे वह दीपन कहातीहै, जैसेबडीसोंफ, तथा आमको पचावै और अग्निको प्रदीप्त न करेसो पाचन कहातीहैजैसे" नागकेशर और पाचन कहाती है जैसे चित्रक।

२संशमन-जो औषधि शरीरकेवातादिदोषोंको न बिगाडे और न उनका शोधनकरै किन्तु अपनी पूर्वदशा परही यथास्थितरहने देवे और शरीरमें बिगडेहुए दोषको शमन (ठीक=समान=यथा योग्य) करदेवे वह संशमनऔषधि कहातीहैजैसे " नीमगिलोय (अर्थात् गुरच=अमृता)

अनुलोमन-जोऔषधिवातादि दोषोंको पचाके परस्पर बँधेहुओंको पृथक् करके मूलद्वारसे बाहर निकालदेअथवा मलमूत्रकी बद्धता (रुकाव) को पचाके गुदाद्वारा कोठेको शुद्धकरदेवे वह अनुलोमन कहातीहै जैसे हरीतकी हर्रा।

स्रंसन- जो औषधि कोठेके वातादि दोष तथा मलमूत्र को (अपने नियम काल परही पचने वाले हैं) पाक न होने पर भी बलपूर्वक गुदाद्वारा बाहर निकाल देवै स्रंसन औषधि कहाती है जैसे किरमाल (किरवारा) की गिरी।

५भेदन-जो औषधि वातादि दोषसे बद्धाबद्ध (बँधेहुए तथा न बंधेहुये) मलमूत्रको खण्ड २ कर गुदा द्वारा बाहरकरदे सो भेदन कहाता है जैसे कुटकी।

६ रेचन--जो औषधि पेटमें के पक्वापक्व (पके हों चाहें नहीं) अन्नादितथा वातादि दोषोंको पतले कर गुदाद्वारसे बाहरनिकाल दे सो रेचन कहाती है जैसे निसोत

७वमन - जो औषधि विनापकेहुये वाततथापित्तको बलात्कारसे

मुखद्वारा (उलटी कराके) बाहर निकालदे, वह वमनकारक औषधि कहातीहै" जैसे मैनफल" जिसे मैनर भी कहते हैं ।

८ संशोधन-जो औषधि अपने स्थानमें वातादि दोष तथा मलसंचयको ऊर्ध्वाकर्षणसे (ऊपरकी ओर खींचकर) मुख नाक कानादि द्वारा अथवा अधः आकर्षण (नीचेकी ओर खींचकर) से गुदा या मूत्रद्वारा बाहर निकालदे सो संशोधन कहातीहै जैसे देवदाली जिसे कूकड़वेल और दवडोंगरी भी कहते हैं ।

९ छेदन-जो औषधि परस्पर (एक से एक) मिलेहुए कफादि को अपनी प्रबलतासे भिन्न भिन्न करदेवे सो छेदन कहाती है जैसे यवक्षार तथा मिर्च. पिप्पली शिलाजीत इत्यादि ।

१०-लेखन जो औषधि रसादि ७ धातु तथा वातादि दोष किंवा वमनको शोषण करके पतलेकरदतीहै सो लेखन कहाती है जैसे "मधु" उष्णजल वच आदि ॥

११ ग्राही-जो औषधि अग्निको प्रदीप्तकर आमादिको पाचन और स्वयं उष्णवीर्य होनेके कारण जलरूप कफादिदोष तथाध नु मलकाआकर्षण करै सो ग्राही कहाती जैसे "सोंठ" जीरा गज पिप्पली इत्यादि ।

१२ स्तम्भन-जो औषधि रूखापन शीलता. कटुता हलकापन और पाचन इन गुणोंसे वायूत्पादक [वातउत्पन्न करनेवाली] हो सो स्तम्भन कहातीहै. जैसे नागरमोथा, बेलकी कोमल गिरी; मोचरस कुडाछाल; इत्यादि ।

१३रसायन-जो औषधि बुढापे व रोगोंको दूर करने वाली हो सो रसायन कहातीहै. जैसे नीम. गिलोय. हर्र. गूगल इत्यादि

१४ वाजीकरण- जो औषधि धातु वृद्धिकरके स्त्रीसे प्रीतिबढावै सो वाजीकरण कहातीहै जैसे; शतावरी; कवांच बाजःदूधः मिश्री

१५ धातुवर्द्धिनी- जो औषधि वीर्यको बढातीहै वह धातुवर्द्धि

नी कहातीहै, जैसे "असगंध, मूसली शक्कर, शतावरी. इत्यादि

१६ धातुचैतन्य-जो औषधि धातुको चैतन्य तथा उत्पन्न करने वालीहै सो धातुचैतनी कहातीहै, जैसे दूध उर्द आंवला भिलावाकी बीजा (मिंगी) इत्यादि ।

१७वाजीकरण-विशेषता-धातुचैतन्य कारिणी स्त्री, धातु रेचक बड़ी कटियालीके फल,धातुस्तम्भनके जायफल धातुशोषणकारिणी हरीतकी (हर) और धातुक्षय कालिंग (तरबूज) है सो वाजी करणमें भी उक्त बातोंकी विशेषता पर वैद्य पूर्ण ध्यान देवे ।

१८सूक्ष्म-जो औषध शरीरमें रघ्रोंद्वारा प्रवेश हो सके सो सूक्ष्म कहाती है जैसे सैंधव मधु नीम तैल इत्यादि ।

१९व्यवायी-जो औषधि पेटमें पहुंचतेही (पचनेके पूर्व) सर्वत्र व्यापक होजावै पश्चात् पचे सो व्यवायी कहाती है जैसे भांग, अफीम आदि ।

२०विकाशी-जो औषधि शरीरकी संधियोंके सर्वबंधको (ढीले) करदे उसे विकाशी कहतेहैं जैसे सुपारी कोदव इत्यादि ।

२१मादक-जो औषधि तमोगुण प्रधानहोके बुद्धिको बिगाड़ दे सो मादक नशालाने वाली कहाती है जैसे मदिरा (मद्य दारू शराब, ब्रांडी इत्यादि ।

२२ प्राणहारक जो एकही औषधि पूर्वोक्त(१ व्यवायी२विकाशी ३ सूक्ष्म ४ छेदन ५ मादक और ६ आग्नेयी (दीपन इन छः हो औषधियोंके गुणयुक्त हो सो प्राणहारक (जीवान्तक) कहाती है, जैसे वत्सनाग विष इत्यादि ।

२३ प्रमाथी-जो औषधि अपने प्रभावसेमुख कान कानादि छि-

---

१ जिसे योगवाही भी कहते है परन्तु यही [प्राण नाशक] विष सुयोगी औषधियों के अनुपानादि से संबाधित होकर अमृत तुल्य गुणदाता होजाते है । परंतु सद्गुरुकी शिक्षा बिना विषको अमृतबना लेना असंभवही है, इसे सद्गुरुकी शिक्षा लैनी अवश्य है ॥

द्रोंके कफादि दोषोंके संचयको दूर करदे सो प्रमाथी कहाती हैं जैसे " काली मिर्च. वच " इत्यादि.

२४ अभिष्यंदी— जो पदार्थ अपने पिछ्लेपन अथवा जड़ताके कारण रस वाहिनी नाडियों को रोकके शरीरको जकड़देवे सो अभिष्यंदी कहाती हैं जैसे दही इत्यादि।

यदि इस विषय को विस्तार पूर्वक देखना होतो शार्ङ्गधरके प्रथम खण्डमें चौथा अध्याय देखो विस्तीर्ण रूपसे लिखाहै.

इति नूतनामृतसागरे विचारखण्डे औषधाना दीपनपाचनादिनिरूपण नामाष्टमस्तरंग. ॥ ८ ॥

लघुनिघण्टु
अथातमुख्यौषनामगुणविचार.

सर्वं कायेन संसाध्यं तस्यायंस्थितिकारणम् ।
आयुर्वेदोपवेदस्तु कस्य न स्यात्सुखावहः ॥ १ ॥
तत्रापि पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्यनामगुणा गुणाः ।
अतस्त एव वक्ष्यन्ते तज्ज्ञानं हि क्रियाक्रमः ॥ २ ॥

भाषार्थ—धर्म. अर्थ, काम और मोक्ष ये सब कार्यसे ही सिद्ध होते हैं और कायाकी स्थितिका मुख्य कारण आयुहै अर्थात् जब तक आयुहै तबतक काया रहती है;मनुष्य आयुर्वेदोक्त मर्यादानुसार चलनेसे पूर्णायुको प्राप्त होसक्ताहै. इसलिये आयुर्वेदोपदेश किसको सुखदायक नहींहै?(सर्वप्राणि मात्र को सुखदाता है) सो उस आयुर्वेदकी शिक्षामें (१निघंटु२निदान३चिकित्सा)मुख्यतीन अंगहैं जिसमें प्रथम निघण्टुहै क्योंकि जबतक वैद्यको वस्तुओं के नाम और गुणादिको ज्ञान न होगा तब तक वह चिकित्सा

१जो पदार्थ कुछ बुदबुदेयुक्त, चिकठा, खट्टा कोमल फूला हुआ अ कफकारी हो सो पिच्छिल कहाता है।

क्या कर सकेगा ? इसी लिये हम यहां मुख्य औषधियों के मुख्य२ नाम गुण संक्षेपसे लिखतेहैं ।

१ हर्र- इसे हर्डे भी कहतेहैं इसके शिवा आदि अनेक नाम है यह सात प्रकारकी होतीहैं परन्तु बड़ी और छोटी जिसको फारसी में हलेलःज़र्द और हलेलःजंगी कहतेहैं यह एक वृक्ष का फल है सो सर्द मुल्कमें होताहै, जिसमें से सर्व कार्यमें ग्रहण करने योग्य विजया नामकी हर्र होती है. जो नवीन चिकनी दृढ़ और विशेष बोझल हो (जो पानीमें डालते ही डूब जावे) सो अति गुणकारी होती है.

हर्र—रूखी.उष्ण हलकी और रसीली है यह श्वास कास प्रमेह बवासीर (उदररोग,कृमिरोग:संग्रहणी. कबजियत्त) विषम ज्वर गोला पेटका अफरा, फोड़े, वमन; हिचकी, खाज, हृद्रोग, कामला (पीलिया) शूल और प्लीहा (तापतिल्ली) इत्यादि रोगों को दूर करतीहै इसमें खट्टा और मीठा रसहै सो वादी को. कसैला रस है सो पित्तको ओर कडुआ तथा तीखा रसहैं सो कफ को नाश करता हैं हर्डों में उक्त पांचों रस हैं ।

२आंवला-इसके धात्री फलादि अनेक नामहै यह पुष्टाई करताहै इसमें लगभग हर्ड के समान ही गुणहैं परन्तु विशेष करके रक्त पित्तको जीतने वालाहै यह अपने खट्टे रससे वादी. मीठे तथा ठंडे रससे पित्त और रूखे तथा कसैले रससे कफ का नाश करता है उक्त पांचो रस आंवले में होते हैं ।

३ बहेड़ा-इसके. विभीतकादि अनेक नाम हैं यह खाने उष्ण और लगाने में शीतल है कासश्वास को दूरकरताहै रूक्ष है नेत्रोंको आरोग्यप्रद है.बालोंको बढाताहै,इसकी गुठली कुमादक है,पानीमें पीसकर इसे लगाने से दाहको मिटाती

४अरूसा -इसके"वासा 'आदि अनेक नाम है, बादी

उत्पन्न करताहै. कटुहै. कफ पित्त, रुधिर, श्वास, कास, ज्वरउलटी प्रमेह कुठ और क्षयी इन सबको दूर करने वाला है.

५ त्रिफला—[२ भागहर्ड. ६ भाग बहेडा, १२ भाग आंवला] त्रिफला, उक्त प्रमाणानुसार त्रिफला बनताहै. इसके वरा आदिभी नामहै यह कुष्ठ, प्रमेह,रुधिरविकार, कफ औरपित्तको दूरकरताहै, नेत्रांकी ज्योति वढाता है और हृदय को बल देता है.

६ गिलोय—इसके गुडूची आदि नामहै, यह कडवी. हलकीप, चनेक समय मीठी; रसीलो, कब्ज करने वाली, कसैली और उष्ण है, यह वलवर्द्धक, जठराग्निको प्रदीपक कामला कुष्ठ; वादी; रुधिरप्रकोप, ज्वर. और उल्टी इन सबों जीतती है ।

७ वेल-इसके. लक्ष्मफिल आदि अनेक नाम है. यह ग्राही [मलको रोकनवाला] कसैला. उष्ण, दीपन, पाचन, हलकी चिकनी और तीक्ष्णहै बल कारक हृदयका हितकारकहैं, बेल कीगिरी] भीतरका गूदा, वायु. कफ, त्रिदोषज्वर, संग्रहणी शूल और आम नाशक है ८ गोखरू—इसके 'त्रिकटका' आदिअनेक नामहै यह ठडी और स्वादिष्ठ है यह वस्तिको शुद्ध करता, प्रमेह;श्वास. कास रुधिर प्रकोप, पथरीहृद्रोग और वादी को दूर करता है.

९बडी कटाई-इसके भटकैटयासिंहा आदि अनेक नामहैंयह उष्ण ग्राही और पाचनी है हृदयको वल देती कास श्वास ज्वर कुष्ठ कफ,वदी शूल और मन्दाग्नि को दूर करताहै

१ छोटी कटाई--इसे श्वेत कटाई भी कहते हैं; इसके लक्ष्मण आदि अनेक नाम हैं; यह उष्ण; रूखा; दीपनी और पाचनी है; कास, श्वास ज्वर, कफ वायु पीनस पार्श्वशूल और हृद्रोगको दूर करती है

११ मुलहटी-इसे मीठी लकडी भी कहतेहैं इसके मधुयष्टी' आदि अनेक नामहै यह भरी और ठंडी है यह बल करती हैं प्यास उलटी और पित्तका नष्ट करने वाली है ।

१२ एरंड-इसके "दीर्घदंडआदि" अनेक नाम हैयह दो प्रकारकाहै पहला- जिसका झाड बड़ा फल छोटा और रंग श्वेत होता है, दूसरा जिसका झाड़ छोटा, फल बडा और रंग लाल होताहै, यह मीठा, भारी और उष्ण है, शूल- सूजन. कटिपीडा मूत्राशयपीडा, शिरपीडा, ज्वर, बढ़ीहुई श्वास, कफ, अफरा कास; कुष्ट, आम और .बादी को दूर करने वाला है फल उष्ण. स्वादिष्ट. भेदन. क्षारयुक्त और बादीको जीतने वाला है श्वेत तथा रक्त एरंड दोनों के गुण तुल्यही हैं.

१३ जवास-इसके यवासा. दुर्लभा" आदि अनेक नाम है मीठा तीक्ष्ण और पित्त, कफ तथा रुधिर को दूर करने वाला है

१४ मुण्डी-जिसे लोकमें बहुधा 'गोरखमुण्डी भी" कहतेहैं इसके भिक्षु आदि अनेक नामहैं, यह तीक्ष्णहै. बुद्धिको बढातीहै, उपदश कृमि आर पांडु आदि रोगों को दूर करती है,

१५श्वेतलटजीरा-जिसे" ऊगाभी' कहते हैं इसके " अपामार्ग आदि नाम हैं, यह तीक्ष्ण. दीपनहै, कफ. वायु, दाह; बवासीर उरद रोग, खाज और अपत्वका दूर करता है,

१६रक्तलटजीरा::यह रुखा है कफऔररक्तपित्तको नष्ट करताहै

१७जयपाल-इसके" दंतावीज" आदिअनेकनामहैं.यहचिकना रेचनकारक [दस्तलानेवाला] हैं. पित्तओर कफको दूर करता है

निसोत-यह दो प्रकार की होती है १ श्वेत २ काला इन दोनोंके नामगुणादि पृथकपृथक हैं परन्तु विरेचन (जुलाब)केलिये विशेष करके काली निसोथ ही ग्रहण की जाता है

१९कुटकी-इसके तिक्ता आदि भी नामहैं यह पचने के समय कड़वी हे तीखी. रुखा हलका और ठंडा है यह कृमि, दाह, पित्त. कफ और ज्वरको दूर करता है .।

२०नाम-इसके पिचुमंद आदि अनेकनामहै, यह ठंडा, हलका. ग्राही (दस्त रोकनेवाला) औरपचनेमें कडुआहैं; अग्निवातकोउत्पन्नकरता तथा व्रण (फोडे) पित्त, कफ, उल्टी कुष्ट, प्रमेहओरमुँसे बहते हुए पानीको बंद करता है।

२१ चिरायता-यहदोतीन प्रकारकाहोताहै इसके " किरातादि " अनेक नामहैं यह वादी को उत्पन्न करता सन्निपात ज्वर, श्वास; कास. पित्त, रुधिरकोप और दाहको दूर करता है स्वभाव में रूखा ठंडा तीखा और हलका है।

२२इन्द्रयव-इसके इन्द्रयव आदि भी नामहैं यह संग्राही ठंढा और कडुआ हैं तीनों दोष ज्वर अतीसार कुष्ठ और रुधिरयुक्त ववासीर को दूर करता है।

२३मननफल-जिसे " मनर " भी कहते है कोइ मदनफल आदि नाम हैं यह उष्ण वमनकारक, कफ और शोथको दूर करता है

२४मंढाशृंगी-इसके " मेषशृंगी आदि नाम हैयहवादी को उत्पन्न करता है खांसी- पित्त और कफको खोती है.

पुनर्नवा-जिसे " मारवाड " देशमें " साटी,, भी कहते हैं इसके दो भेद १ श्वेत २ लाल यह उष्ण और मीठाहै शोथ. कफ और उदरोग आदिको दूर करता है,

२६ असगंध-इसके " अश्वगंधादि अनेक नामहैं यह कसेलाउष्ण व रसायन है बलबढ़ता तथाबादी कफ आदिरोगोंकोदूरकरताहै

२७ शताबरी-दो प्रकारकी होतीहै छोटी और बढी यहमीठी और ठंडीहै. वीर्य तथा दूधकोबढाती औरकईरोगोंदूरकरतीहै,

२८ मालुकांगनी-इसके "ज्योतिष्मती,, आदि नामहैं; यह कडवी और तीखी है बादी कफादि रोगों दूर करती है।

२९ देवदारु इसके सुरद्रुम आदिनाम भी है यह उष्ण हलका

और कडुवा है. अरुचि ज्वर, शोथ, आम. हिचकी खाज कफ
और बादी को दूर करता है ॥

२०पुहकरमूल-इसके 'पुष्कर' आदि अनेक नामहैं यहकडुवा
तीखा और उष्ण है, वायु. कफ. ज्वर. शोथ, अरुचि श्वासऔर
पार्श्व शूलका दूर करता है ।

२१ काकडाशृंगी-इसके शृंगीआदि नाम भी हैं. उष्ण है
हिचकी, उलटी. श्वास,कास, कफ, क्षयी और ज्वर आदि रो
गोंको दूर करता है ।

२२ कायफल-इसके "कट्फल" आदि अनेक नाम हैं यह वा
दी, कफ, श्वास और प्रमेहादि रोगोंको दूर करती है ।

२३ भारंगी-इसके "भार्गी" आदि अनेक नाम हैं उष्णहै बा
त कफ, ज्वर श्वास कास आदि रोगोंको दूर करताहै.

२४ नागरमोथा-इसके 'मुस्ता' आदि अनेक नामहैं यह ठंडी, सं
ग्राही, तीखा, दीपन और पाचनहै. ज्वरादि रोगोंको दूर करताहै

२५ हल्दी-इसके हरिद्रा आदि कई नामहैं, यह उष्ण औरश्लेष्म
है पित्त; प्रमेह आदि रोगोंको दूर करताहै रंगको सुन्दर बनातीहै

२६ भांगरा-इसके "भृंगराज आदि नाम हैं. यह कफ, वात,
कुष्ट, नेत्ररोग शिररोग आदि अनेक रोगोंको दूरकरताहै, उष्णहै;

२७ पित्तपापडा-इसके "पर्पट" आदि अनेक नाम हैं;यह
पित्त, रुधिरकोप, शिर घूमना प्यास; कफ, ज्वरदाहको दूर करता
है वादीको उत्पन्न करता है और ठढाहै,

२८अतीस-इसके "अतिविष"आदि अनेक नाम हैं यह उष्ण
और पाचन है; तथा कफ पित्त और अतिसारको जीतता है ।

२९लोद-इसके रोध्र आदि नाम हैं यह ठंडा और रेचक (दः
स्तावर) है ज्वर अतीसार और रुधिरकोपका दूर करता है ।

४०मूसली—इसके खालिना आदि अनेक नाम है यह मीठी, भारी; उष्ण वीर्य; रसायनी और पुष्टिकारीहै गुदा और वायुके रोगों को दूर करती है।

४१ कवांचबीज-इसके" कपिकच्छु" आदि अनेक नाम हैं, यह बहुत पुष्ट, मिठी, बलवर्द्धक. वीर्य वर्द्धक भारी और वाजीकरणहै

४२ भीलावा-इसके" भल्लातक" आदि अनेकनामहैं यह कसैला और उष्णहै, वीर्य उत्पन्नकरता, वायु कफ उदररोग, आध्मान कुष्ट मूलव्याधि, संग्रहणी गुल्मज्वर, कृमि और मन्दाग्निको दूरकरताहै

४३ ब्राह्मी-इसके" सरस्वती" आदि बहुतनाम है; यह ठंडी, रेचक (दस्तलानेवाली) और मीठीहै, बुद्धि और स्मृतिको बढाती. ज्वर पांडु रोग तथा कुष्ट आदि रोगोंको दूर करती है,

४४ गोभी इस के गोजिह्वा;; आदि नाम है, यह ठंढी और संग्राही है, वायु को उत्पन्न करती. हृदयको बल देती, पित्त. प्रमेह ज्वर और कास आदि रोगोंको दूर करती है।

४५ चिरमी इसको" गुंजा,, आदि भी कहतेहैं यह बालोंको बढाती बलकी वृद्धिकरती और पित्त कफनेत्ररोग खुजली, फोडे रोगों को दूर करती है।

४६ तालमखाना-इसका" इक्षुर आदि नामहैं, यह ठंडा. भारी और पुष्ट है. वात और रुधिर के रोगो को दूर करती हैं;

४७ आक-इसके दो भेद हैं श्वेत और रक्त इसके" अकाव अर्क, अकडा. आदि अनेक नामहैं, उष्ण है. प्लीहा(तापतिल्ली) शूल वात (पलाटकीपीडा) कुष्ठ खुजालव्रण. गुल्म' अर्श (बवासीर कफ कृमि और उदरपीडा इन सब रोगों को दूरकरती है,

४८ धतूरा इसके धतूर कितव आदि नामहैं यह मादक(नशा करनेवाला) और उष्ण है. अग्निको बढाता कुष्ठ आदिरोगों को दूर करता।

४९ घीकुमारी इसके " ग्वारपाठा, कुमारी, आदिअनेक नामहैं यह ठंढीहै यकृत् प्लीहा; कफज्वर गांठ विस्फोटक रक्तरोग और चर्म रोग को दूर करती हैं ।

५० भंग–इसके भांग गांजा आदि अनेक नाम है यह उष्ण ग्राहिणा और मादक है आग्निका दीपन करता है ।

५१काशनी–इसके (कम्बनी) शोण फलनी आदि नामहै यह दूधको वढाती मस्तकपीडा और त्रिदोषकी दूर करती है

५२ दूब–इसके दूर्वा आदि नाम हैं यह पित्तदाह औररुधिर कोपको शांतकरतीहे दूब दो तीन प्रकार को हैं परंतु ये तीनों प्रायः शीतलही हे ।

५३ बास–इसके बंश वणु आदि नामहैं यह ठंडे हैं पित्त कफ दाह, शोथऔर रुधिरकोपको दूर करताहे बांसको करील जो कि बांसकेडांडेमेसे निकलताहे भारीहै कफकोउत्पन्न करता औरबादी पित्तको दूर करताहे बांसकी जड उष्णहे यहबादीकफकोदूर करतीहे" ५४ खशखशः इसके तिलमें उरई खश तिल आदि अनेक नामहैं यह भारीशोषक रूखा और संग्राहीहै (बादीकोजीतताहै) ५५ अफीम–इसके" आफु अहिफेन आदि नाम हैं यहमादक शोषक और संग्राहीहै कफ का दूर करताहे बादी और पित्तको उत्पन्न करता है

इति नूतनामृत सागरे विचारखण्ड अभयादिवर्णन निरूपणनामनवमस्तरगः ॥ ९ ॥



५५ सोंठ–इसके शुंठी विश्वौषध आदिनामहैंयह चिकना कटु; उष्ण भोजनमें हलकीरुचिकर पाचनी और पुष्टहैआमबात कफ बादी संग्रहणी वमनश्वास कास शूल हृदयरोग श्लीपद शोथ, सूजन; मूलव्याधि. अफराऔर उदररोगको दूर करताहैं ।

५७अदरख–जिसे आर्द्रक, शृंगवेर आदि भी कहते हैं यह भेदन.दीपन और सब गुणोंमें शुंठी के समान है।

५८कालीमिर्च-इसके गोलमिर्च, मिर्च; वाल्लिज आदि नामहैं, यह कडवी, तीक्ष्ण दीपन. उष्ण और रूखी है, कफ बात श्वासशूल और क्रमिको नष्ट करती और पित्तको उत्पन्न करतीहै; यहसूखी कालीमिर्च के सदृश है;हरी गीली मिर्च के गुण इससे भिन्न हैं:

५९पीपल–इसके पिप्पली कृष्णा कणा आदि नाम हैं यह दीपन अत्युष्ण चिकनी कडवी हलकी और रेचक है, पचने में स्वादिष्ट बल बढ़ाती है पित्त उत्पन्न करती है कफ बात श्वास कास ज्वर और उदर पीडा को दूर करती है।

६० पीपलामूल–इसके, कणामूल षड्ग्रन्थिक आदि नाम हैं, यह कटु उष्ण पाचन हलका दीपन और रूखा है; कफ बात और उदर पीडाको शान्तकरता है।

६१ चित्रक–इसके हुतभुक् व्याल आदि नाम हैं यह रूखी और पाचन है संग्रहणी शोथ अर्श आदि रोगों को दूर करतीहै

६२ सौंफ–इसके शातपुष्पा घोषा आदि नाम हैं यह हलकी दीपनी; उष्ण है ज्वर कफ बात, और शूलादि रोग नाशक है।

६३मेथी–इसके मथिका आदि नामहै. यह दीपनी और उष्णहृदयको बल देतीविष्टाके क्रमिशूल गोलाकफ औरवायुकोनष्टकरतीहै

६४अजमोद–इसके अत्युग्रगंधा मोदा आदि नाम हैं, यह कटु तीक्ष्ण उष्ण दीपन और पुष्ट है मलको बांधता है कफ बात नेत्र रोग क्रमिरोग और उल्टी आदि रोगों को दूर करता है।

६५ जीरा–इसके तीन भेद हैं १शुक्लजीरा २ कृष्णजीरा३कालिका जो आजकल१ सफेदजीरा २ स्याहजीरा और ३ कलौंजी

नामोंसे पुकारे जातेहैं; इन तीनों के गुण समान, जीरा--रूखा कडुआ, उष्ण, दीपक और संग्रहीहै पित्तको उत्पन्न करता; वायु कफ अफरा; उल्टी और मुख से बहते हुए पानी को बंद करता है इसके" जीरकं जरिणं" ये भी नाम हैं।

६६ अवायन-इसके" जवानी, दीप्यक " आदि नामहैं यह तीक्ष्ण, उष्ण,,कटु, हलकी और पाचनी है, रुचिको बढाती बात कफ अफरा, गुल्म, शूल, और कृमिरोगको दूर करती है।

६७बच-इसके" उग्रगंधा. षड्ग्रन्था,, आदि नामहैं. यह उष्ण तीखी और कटु है, वमन लाती, स्वरको सुन्दर करती, मिरगी कफोन्माद, भूतबाधा. शूल और बादी इन रोगों को दूर करतीहै

६८ वायविडंग-इसके विडंग, जंतुहनन आदि नामहैं, यह कटु तीखी हलकी रूखी और उष्ण हैं, अग्निको बढाती. शूल; अफरा उदर रोग, कृमि, बायु, कफ और बिबंध को दूर करती है।

६९ धानियां-इसके' धना धान्यक,, आदि नामहैं. यह कषैला चिकना और पुष्ट नहीं है.परन्तु पाचन और हलकाहै,मूत्र नाशक हृदयको बल देता. रेचन को बंद करता. त्रिदोष नाशक, श्वास कास. रुधिरकोप,प्यास. अर्श और कृमिरोग को दूर करता है.

७० हींग-इसके" हिंगु वाल्हीक" आदि नाम हैं यह उष्ण, पाचन तीक्ष्ण और पित्त वर्द्धक है. कफ बात. गुल्म. अफरा और कृमिरोगको जीतता है।

७१ बंशलोचन-इसके' वंशज. वैष्णवी,आदि नामहैं; यह ठंडा और मीठा है. प्यास क्षयी. ज्वर,. श्वास, कास, पित्त रुधिर कोप और कामला इन रोगों को दूर करता है।

७२ सैंधानोंन-इसके सैंधव सिंधुज आदि नाम हैं यह ठंडा

दीपन पाचन और चिकना है. त्रिदोष को दूर करता है।

७३ साचरनोन-इसके "सौवर्चला" आदि नामहैं, यह उष्ण हलका और अग्नि प्रदीप है, अन्न पर रुचि बढ़ाता, शुद्ध डकार लाता रेचन कराता अफरा और उदरशूल को नष्ट करता है।

७४ सुहागा इसके "टंकण" आदि नामहैं; यह रूखा उष्णऔर अग्निकारकहै. कफको दूरकरता और पित्तको उत्पन्न करत है.

७५-७६ सर्वक्षार-जितने क्षारमात्रहैं, वे सर्व अग्नि सदृश उष्णहैं पाचन और भेदन हैं वीर्य और दृष्टि को नाश करते, रक्त पित्तको पैदा करते, रेचनाविबंध" दस्त बंध होना,, अफरा.पीनस. यकृत प्लीहा,कफ,आमअर्श.गुल्म और ग्रहणी रोगों को दूर करता है।

इति नूतनामृतसागरे विचारखण्डे शुण्ठ्यादि निरूपण नामदशमस्तरंगः ॥ १० ॥

७७ कपूर-इसके कर्पूर, स्फटिक. चन्द्र आदि नाम हैं. यह शीतल पुष्ट,लेखन और हलकाहै नेत्रों को गुणकारक है. कफ दाह.दाद और बिगडे हुए मुखके स्वाद को दूर करता है।

७८ कस्तूरी-इसके मृगमद.वेद मुख्या. आदिनाम हैं यह उष्ण कटु और वीर्योत्पादना है कफ, शीत, उल्टी, शौचदुर्गंध और बादी को दूर करती है।

७९ श्वेतचन्दन इसके चंदन तिलपर्ण आदि नाम है. यह ठंडा रूखा, हलका. तीखा और कडुवाहै प्रसन्नता कारक बलवर्द्धक कफ. प्यास, पित्त. दाह और रुधिर कोपको दूर करता है।

८० रक्तचन्दन-इसके रहिष्ट, लोहित, आदि नाम हैं, यह शीतल, भारी मीठा और पुष्ट है नेत्रों को गुण करता, प्यास रुधिर, पित्त ज्वर फोडे और विषको नष्ट करता है।

८१ केशर इसके कुंकुम-चारु आदि नाम हैं, यह उष्ण और

कटुहै, शिरके रोग, फोडे और कृमि आदि रोगोंको नष्ट करती. वलको बढाती और रंगको सुन्दर बनाती है ।

८२जायफल–इसके जातिफल, जातिमृत आदि नामहैं; यह उष्ण; हलका, दीपन और पाचन है हृदयको बल देता. स्वर को उत्तमबनाता, कफ, वात, उल्टीकृमि, पीनस और खांसीकोमिटाताहै

८३जायपत्री इसके जातिपत्र जातिपर्ण आदि नाम हैं; यह हलकी और उष्ण है, कफ, कृमि आर विषको दूर करती है ।

८४लोंग–इसके लवंग, चंदनपुष्प, शिखिर, आदि नामहैं यह हलकी, उष्ण, दीपन और पाचनहै, नेत्रोंको गुण करती हृदयकोबल देती, शूल, अफरा, कफ श्वास, कास उल्टी और क्षयनाशक है ।

८५छोटी इलायची–इसके एला, त्रुटि आदि नामहैं, यहकफ श्वास, कास, अर्श और मूत्रकृच्छ्र आदि रोगोंको दूर करती हैं ।

८६दालचीनी-इसके त्वच वरांग, आदि नामहैं यह. उष्ण हलकी और स्वादिष्ट हैं, पित्तोत्पादक. हृदामय वस्तिरोग, बादी अर्श पीनस, कृमि और मूत्ररोग को दूर करती हैं ।

तेजपात–इसके "पत्र दलाह्व" आदि नामहैं, यह उष्ण और हलका है. कफ और बातको नष्ट करता हैं ॥

८८नागकेसर-इसके नाग आदि नामहैं, यह उष्ण हलकी आम पाचक, दुर्गंध, कुष्ठ विसर्प, कफ पित्त और विष नाशक हैं ।

८९तालीसपत्र–इसके तालीस. धात्रीपत्र आदि नाम हैं यह उष्ण हैं, श्वास, कास, कफ, और वायु आदि रोगों को मिटाती है

९०खस[1] इसके उशीर उरई आदि नाम हैं, यह शीतलपाचन

१ ऐसी पदार्थ है जिसको बहुधा उष्ण ऋतु मे पंखे, पर्दे और टिट्टियां आदि बनाई जाती हैं॥

और स्तम्भनहै, कफ. पित्त, प्यास रुधिर विष विसर्प दाह; शोथ और फोडों को नष्ट करता है.

९१ गूगल—इसके गुग्गल शाल नियास आदि नाम हैं यह उष्ण रेचक दीपनरसायन (नया होतो) बलकारकऔर (पुराना) लेखन है टूटीहुई आस्थि [हड्डी] कोजोड़ता, हृदयको बल देता, कफ, वात फोड़े, प्रमेह, रुधिर बवासीर, शोथ. गांठ; गंडमाला और कृमि रोगको मिटाता है।

९२ चौक—इसके चोर आदि नाम हैं यह ठंढी है कफादिक को नष्ट करता है।

९३ कचूर—इसके शुठी पलाशी आदि नाम हैं यह उष्ण और दीपन है कुष्ठ अर्श ब्रण कास स्वास गुल्म वात कफ और कृमि रोग को मिटाता है॥

९४ पद्माख— इसकेपद्मकाष्ठ पद्मक आदि नाम हैं यहठंडाहे दाह बिस्फोटक. कुष्ठ, श्लेष्मा, रुधिरकोप, और पित्त नाशक है।

९५ गोलोचन इसके गोरोचन गोरी आदि नाम है यह ठंडा है इसलिये रुधिरकोपको मिटाता और गिरतेहुएगर्भको बचाता है

९६ कमल—इसके पद्म नलिन अरविंद आदि नाम हैं यह ठंढा है कफ पित्त दाह और प्यासको दूर करता है।

९७कमलगट्टा—इसके पद्मबीज पद्माक्ष आदि नामहैं यह ठंडा ग्राही और बलकारक गर्भ स्थापन करता कफ वात को - ढाता पित्त रुधिर और दाहको दूर करता हैं।

९८सिंघाड़ा—इसके शृंगाटक जल फल आदि नाम है यह ठंडा भारी स्वादिष्ट ग्राही और बलकारक है वीर्य बादी और कफको उत्पन्न करता पित्त रुधिरकोप और दाह को शांत करता है

९९गुला— इसके कुंजिका भद्रतरुणी कुंज सेवती पाटल

आदि नाम हैं, यह ठण्डा, संग्राही और हलकाहै हृदयको बल देता वीर्य उत्पन्न करता तीनों दोष और रुधिरकोपको जीतता रंग को सुन्दर करता और दुर्गंधको दूर करता है ॥

१०० तुलसी–इसके तुलसिका सुरसा आदि नामहैं यह उष्ण तीक्ष्ण कडवी और दीपनी है दाह और पित्तको उत्पन्न करता कुष्ट, कफ, वात और पार्श्वशूल आदि रोगोंको दूर करता है

१०१ सोना–इसके "सुवर्ण, कंचन" आदि नामहैं यह ठण्डा पुष्ट बलकारक भारी रसायन मीठा लेखन तीक्ष्ण और कसैलाहैं, कांति वर्द्धक विषोन्माद त्रिदोष ज्वर और शोक नाशक है ।

१०२ चांदी–इसके "रूपा, रूप्यक, रजत" आदि नामहैं, यह ठण्डी रेचक रसायन, लेखन कसैली, खट्टी.(पचनेकेसमय)मीठी और चिकनी है. वात पित्तको हरण करती. धातुको बढाती और तरुणाई को स्थिर रखता है.

१०३ अभ्रक- इसके "स्वच्छ" आदि नामहैं यह ठण्डी और बल-प्रद है कुष्ठ प्रमेह और त्रिदोष दूर करता है.

१०४ गंधक -- इसके,,गंध सागंधिक' आदि नाम हैं यह उष्ण है कुष्ट क्षयी कफ वात आदिको दूर करता है ।

१०५ पारा–इसके पारद आदि नाम हैं यह उष्ण है कृमि और कुष्ट आदि रोगोंको दूर करता है ।

१०६ गेरू–इसके गैरिक, रक्तपाषाण आदि नामहैं यहदाह पित्त, कफ, रुधिरकोप कफ हिचकी विष और उल्टीको दूरकरती तथा नेत्रों को गुण कारक है ॥

१०७ नीलाथोथा–इसके हरियाथूथा तुत्थ आदि नाम हैं ।

यह लेखन और भेदनहै, कुष्ठ, खुजाल, विष, कृमि और कफ आदि को दूर करता है।

१०८ सुरमा इसके सौवीर आदि नाम हैं यह ठंडा और नेत्रोंको हितकारी है; कफ बात और पित्तको शमन करता है।

१०९ शिलाजात इसके शिलाजतु आदि नाम हैं यह उष्ण और कटु है. मूत्राघात प्रमेह बवासीर, कुष्ठ, उदररोग, पांडुरोग क्षयी और श्वास, कास आदि रोगनाशकहै इसका विधिपूर्वक निकालाहुआ सत्व निर्बलताको नाश करके वीर्यको बढाता है;

११० रसोत इसकेरसांजन आदि नाम हैं यह उष्ण और कटु है, कफ, मुखविकार, नेत्र विकार और फोडोंको दूर करता है।

१११ फिटकरी-इसके स्फटिका आदि नामहैं, यह कसैली और उष्ण, पित्त कफ फोडे चित्र और विसर्प इत्यादि रोगों को नाश करता है।

११२ मोती-इसके मौक्तिक आदि नाम हैं, यह शीतल मीठा और पुष्ट है विषाद रोगों को नष्ट करता है।

११३ शंख इसके कम्बु आदि नाम हैं यह शीतल नेत्रों को हित करता शूल पित्त कफ और रुधिरको नष्ट करता है।

इति नूतनामृतसागर विचार खण्डे सुवर्णादिवर्गनिरूपण नामद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

११ बड-इसके बटबृक्ष बट रक्तपाद आदि नाम हैं यह शीतल और ग्राही कफ पित्त और फोडे को दूर करता इसका दूध वीर्य को दृढ करता और बलको बढ़ाता है ॥

११५ पीपल-इसके श्यामल अश्वत्थ, आदि नाम हैं यह ठंडा है कफ पित्त रुधिरकोपको दूर करता है।

११६ गूलर -इसके उदुम्बर जन्तुवृक्ष आदि अनेक नामहै यह

शीतल और भारीहै रंगको स्वच्छकर पित्तकफ और रुधिरकोप नाशकहै इसका दूध पुष्टहै, शोथतथा रक्तज ग्रन्थिको बैठाता है,

११७लसोढ़ा-इसके ल्हसेवा श्लेष्मान्तक कर्बुदार आदि नाम हैं यह कुछ उष्ण और पुष्ट है कफ छाले विस्फोटक व्रण विसर्प कुष्ट वादी पित्त और रुधिर कोपको जीतता है।

११८ खैर-इसके खदिर आदि नाम है यह शीतल है दांतों को गुण करता, कृमि, ज्वर, फोड़े. कुष्ठ, शोथ, आम, पित्त रुधिर. पांडु, और कफको नष्ट करता है, इसका गोंद, मीठा और वीर्य उत्पन्न करता, इसका सार जिसे खैरसार कहते है बल प्रद है, बिगड़ा हुआ मुख, कफ और रुधिरको जीतता है.

११९बबूल-- इसके बसूर, बबूल किंकराल, आदि नाम हैं. यह ग्राहीहै कफ कुष्ठ कृमि, विष और रक्तपित्तको जीतता है.

१२० पलाश-इसके" छिवला, किंशुक, किर्मी. खकरा" आदि नामहै. यह उष्ण; दीपन और पुष्टहै. व्रण. गुल्म ग्रहणी अर्श; कृमि इत्यादि रोगों को शमन करता और टूटी हुई हड्डी को जोड़ताहै, इसका पुष्प शीतल और ग्राही; कफ, पित्त और रुधिरजन्य कष्ट दूरकरता है, इसका फल हलका और उष्ण है; प्रमेह अर्श और कृमिरोगको मिटाता है ॥

१२१ धवा-इसके ' धावडा, धव और नादितरु" आदिनाम हैं यह ठंडाहै; प्रमेह, पांडु, रुधिर, पित्त और कफको दूर करता है,

१२२सेमर-इसके" शाल्मली ' आदि नामहै. यहठंडा औरपौ, ष्टिकहै, रुधिर औरपित्तको जीतताहै, यह तीन चार प्रकार काहै;

१२३ शमी इसको मारवाड प्रांतमें" खेजडी कहते हैं, इसके सुंगा आदि नाम हैं; यहठंडा और हलकी है. श्वास कुष्ट अर्श

और कफको दूर करताहै, इसका फलरूखा है. पित्तको उत्पन्न करता और केशों (बालों) का नाशक है।

इति नूतनामृतसागरे पत्रादिवर्गनिरूपणं नाम त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३

१२४मुनक्का-इसके द्राक्षा, मधुफल. गोस्तनी आदि नाम हैं, यह ठंडा; भारी, नेत्रों को गुणकारक, बल वर्द्धक, रेचन, शुद्धि कराक, प्यास, ज्वर, श्वास, उल्टी वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र. रक्तपित्त, संमोह, दाह. शोष, मदात्यय, और आमदोष नाशक है

१२५अंगूर-यह कच्चा द्राक्षही है, खट्टा और भारीहै मुनक्का (पक्का द्राक्ष) के गुण के समान ही इसके भी गुण हैं पर यह रक्तपित्तको उत्पन्न करता है।

१२६ किशमिश-इसके "अबीजा-लघुद्राक्ष" आदि नाम हैं यह गोस्तनी द्राक्षके समानही गुणवाली है परन्तु प्रायःइसमें बीज नहीं रहते ऐसा भावप्रकाश पूर्वखंड प्रथम भाग में लिखा है

१२७जंगली दाख-यहभी द्राक्ष के भेदमें ही है हलका और कुछ खट्टा रहता है,कफ और अम्लपित्तको उत्पन्न करता है।

१२८आमवृक्ष इसके आम्र. चूत आदि नामहैं. ग्राही है, यह प्रमेह. रुधिर, कफ. पित्त और फोडों को दूर करता है।

१२९कैरी-आम का कच्चा फल [अंबियां] यह अत्यन्त खट्टी और रूखी है, त्रिदोष तथा रुधिर कोपको जीतती है।

१३०आम-आम का पक्का फल मीठा, पौष्टिक, चिकना, भारी ठंडा और रुचिकारक, यह हृदय को सुख देता, बल को बढ़ाता, बादी को दूर करता. वर्ण को सुन्दर बनाता, पित्त को शांत रखता, मांस को बढाता और वीर्य को बढाता है।

---

१ अबीजान्या स्वल्पतरा गोस्तनी सदृशा गुणैः । अबीजा ईषद्दीर्घा किसमिश इति लोके ॥ इत्युक्ते भावप्रकाश-पूर्वखण्डे प्रथम भागे ॥

१३१अमचूर-कच्चे आमको सुखा के जो अमचूर बनाया जाता है सो भेदन है, कफ और बादीको बढाता है ॥

वृक्षमें पका. घास में पका, पत्तोंमें पका, अधपका; खट्टा मीठा युक्त केवल आम का रस. दूध शक्कर आदि पदार्थों से योजित इत्यादि प्रकार से आम के उपयोग में उसके गुण कुछके कुछही एक दूसरे से भिन्न होजातेहैं, यह आमका विषय संक्षिप्तता से वर्णन कियाहै यदि पूर्ण रूपसे विस्तार देखना होतो राजानिघंटु या भावप्रकाश में देखो ।

१३२जामुन-इसके जम्बूफल आदि नाम हैं वह स्वादिष्ठ विबंधक और भारी है, छोटी जामुन दाह को नाश करती और रुचिको बढाती है. इसके दो भेदहैं १ राजजम्बू, २ क्षुद्रजम्बू फल जिसे राज जामुन औरकट जामुन भी कहतेहैं राज जामुन बडी और कटजामुन छोटी होतीहै. गुणमें समान ही है ।

१३३नारियल—इसके नारिकेल श्रीफल आदि नाम हैं यह ठंडा है बिलम्ब से पचता मूत्राशय को शुद्ध करता रुधिर दाह बात पित्तको दूर करता है कच्चे नारियल का दूध ठंडा हलका और दीपन है वीर्यको बढाता और बलको उत्पन्न करता है ।

१३४केला-इसके कदलीफल रम्भाफल आदि नाम हैं यह शीतल. बिबन्धक. भारी. चिकना और कफोत्पादक है। पित्त रुधिर; प्यास दाह घाव. क्षय और बादी को जीतता है ।

१३५अनार-इसके दाडिम आदि नाम हैं. यह दीपन है? भोजन पर रुचि वर्द्धक, बल कारक है. यह दो प्रकार का है. १मीठा.२खट्टा मीठा अनार त्रिदोष को और खट्टा बादी तथा रुधिर को दूर करता है ।

१३५ बादाम– इसके बादाम, सुफल आदि नाम हैं यह उष्ण और चिकना है, बलको बढाता, वीर्य को उत्पन्न करता और बादी को दूर करता हैं।

१३६ पिस्ता– इसके निकोचक, चारु फल आदि नाम है, यह उष्ण, भारी, पौष्टिक, बादी नाशक और पित्त वर्द्धक है॥

अंजीर– इसके गज्जल आदि नाम हैं, यह शीतल और स्वादिष्ट है, पित्त रुधिर और बादी को जीतता है।

१३८ मीठा नीबू– इसके निम्बुक आदि नाम हैं, यह स्वादिष्ट और भारी है; बादी पित्त रक्त, शोष, अरुचि, तृष्णा, वमन, विषजन्य रोगों और जी मिचलाना आदि रोगों को दूरकरताहै।

१३९ खट्टानीबू– यह खट्टा, हलका, पाचन और दीपन है, बादी को जीतता है।

१४० इमली– इसके अम्लिका चुक्रिका, आदि नाम हैं कच्ची इमली भरी है, बादी को दूरकरतीऔर पित्त, कफ रुधिर-प्रकोप को वढ़ाती है पक्की इमली दीपन उष्ण, रूखी, रेचक और कफ, वात, नाशक है, सूखी इमली बल कारक और हलकी है, श्रम भ्रांति और प्यास आदि को दूर करती है, (भाव प्रकाश)

१४१ सुपारी–इसके क्रमुक, पूग; पूर्गीफल आदि नाम हैं, यह भारी, ठंडी, रूखी, कषैली, दीपनी और रुचिकारक है, कफः पित्त नाशक, मूर्छा कारक और मुखकी विरसता को सुधारती है।

१४२ पान– इसके ताम्बूली तांबूलबल्ली, नागिनं और नागरवेल पत्र आदि नाम है, यह उष्ण, हलकी, तीक्ष्ण; कषैला, रेचक और रुचिकारक है कामदेव रुधिर बल और पित्त को बढाता कफ मुखदुर्गंध मल बादी और श्रमको दूर करता है।

१४२ चूना-इसे चूर्ण भी कहतेहैं; कफ और बात नाशक है।

१४४ कत्था-इसके खदिर, खैर आदि नाम हैं यह कफ, पित्त को दूर करता है।

इति नूतनामृतसागरे विचार खँडे द्राक्षादिवर्णनं० चतुर्दशस्तरंगः॥ १४॥

१४५ कुम्हडा-इसके कूष्मांड, कोहला आदि नाम हैं, यह ठंडा और भारीहै, पित्त वात, और रक्तको जीतता हैं।

१४६ ककडी-इसके कर्कटी. खीरा, आदि नाम हैं यह ठंडी और रूखी है, पित्तको दूर करती है।

१४७तरबूज-इसके कालिंग, कतीरा, कलीदा आदि नामहैं यह ठंडा भारी और ग्राहीहै, पित्त और वीर्यको नाश करताहै (पका हुआ कुछ) उष्णता लाता, (क्षारयुक्त होने से) पित्तको उत्न्न करता और कफ, बातको दूरकरताहै. बिशेषकर इसके अधिक खाने से नपुंसकता प्राप्त होती है।

१४८ घियातुरई- इसके राजकोशातकी, मिष्टा, गिलकिया रिसआ आदि नाम हैं. शीतलहै, ज्वर कफको दूर करता और बादी को उत्पन्न करती है।

१४९ बडी तुरई-इसके महाकोशातकी आदि नाम हैं, यह पित्त और बादी को दूर करती है।

१५० भांटा- इसके बृंताक, वार्तिक, बैंगन आदि नाम है यह उष्ण. तीक्ष्ण. दीपन और हलका है, पित्त को उत्पन्न करता वीर्य को बढाता, हृदय को बल देता, कफ और बादी को दूर करताहै, श्वेत बैंगन उक्त गुण से अनुकूल ही है. परन्तु बवासीर वाले का गुणा है।

१५१ करेले — इसके कारवेल कठिल्ल, आदि नाम हैं, यह

ठंडा, हलका, भेदी और तीक्ष्ण है, पित्त, रुधिर, कमला पांडु, कफ, प्रमेह और कृमिरोगको दूर करता है,

१५२ ककोडा इसके "ककोंटक" आदि नामहैं. यह करेलाके समान गुणकारीहै. कुष्ठ और अरुचिको दूर करता है,

१५३ चौलाई-इसके तंडुलीया. मेघनाद आदि नाम हैं; यह ठंढी, हलकी और रूखीहै. पित्त कफ; रक्तको बढाती है,

१५४ फाग-इसके भृंगी सूक्ष्मपुष्प आदि नामहैं; यह रेचन विबंधक और ठंढाहै, रक्त. पित्त, और कफको दूर करता है, यह मारवाड देश में उत्पन्न होता है।

१६५ परबल-इसके पटोल. पांडुक आदि नामहै यह चिकना, उष्ण, पाचन और हलका है. हृदय को बल देता, अग्निको दीप्त करता, वादी, रुधिरकोप, ज्वर. त्रिदोष और कृमि को दूर करता है,

१५६ गाजर-इसके गृजन कटुक आदि नामहैं. यह तीक्ष्ण उष्ण, दीपन, हलकी और संग्राही है रक्त, पित्त बवासीर, संग्रहणी कफ और बादी को दूर करती है।

१५७ मूली-इसके मूलक, हरितदंती आदि नामहैं. यह उष्ण हलकी और पाचन है रुचि वर्द्धक. वात कराकीत्रिदोष श्वास कास, नेत्ररोग और कंठरोग पीनसको नष्ट करती है,

१५८ मुगना-इसके शाभांजन, शिग्रु. सर्जना सहजना आदी नामहैं, यह उष्ण और हलका है कफ बादी को जीतता है इसकी फली मीठी है पित्तको दूर करती है।

१५९ लहसन-इसके उग्रगंधा लसुन आदि नामहैं यह चिकना उष्ण पाचन रेचक और भारी है, टूटी हुई हड्डी को जोडता पित्त और रुधिर कारक कफ श्वास कास, गुल्म ज्वर, अरुचि

शोथ, प्रमेह, अर्श कुष्ठ शूल और बादी को दूर करता है.

१६० कांदा–इसके पलांडू दुर्गंध आदि नामहैं इसका प्रसिद्ध नाम पियाजहै, यहभी लहसन के सदृश गुणकारी है. पर उतना उष्ण नहीं कफको उत्पन्न करता है.

१६१ सूरन–इसके कंदल, सूरण भूकंद जमीकंद आदि नाम हैं यह दीपन रूखा कसेला कटु विषहरा और रुचिकारक है, खुजली को उत्पन्न करताहै कफ अर्श (बवासीर गुदारोग) को दूर करता है.

इति नूतनामृतसागरे वि० कूष्माण्डादिवर्ग निरूपणं नाम पंचदशस्तरंगः १५

१६२ शीतलजल–इसके पानी जीवन नीर आदि नाम है यह ठंडा हृदयको बल देता पित्त विष भ्रम दाह अजीर्ण परिश्रम. उलटी मद [उन्मत्तता] मूर्छा और मदात्ययको दूर करताहै परन्तु उदररोग कंठरोग नूतनज्वर संग्रहणी, पीनस आध्मान. हिचकी, गुल्म विद्रधी, कास, प्रमह, अरुचि श्वास पांडु वादी पश्वशूल आर स्नेह (घृत खोपरादि चिकना वस्तु खाके) में शीतल जल लाभकारी नहीं । वरन अति हानिकारक है वर्षा तालाव कूप नदी झिरना और बावडी आदिके जलका गुण न्यारा न्यारा है इसका बिस्तीर्ण वर्णन राजनिघण्टु में देखो ।

१६३ उष्णजल–जो अग्नि से उष्ण किया जाताहै वह दीपन पाचन हलका और उष्ण है मूत्राशयको शुद्ध करताहै पसलीकी पीडा पीनस, अध्मान, हिचकी, वादी और कफको दूर करताहै रोगीको उष्णजल पिलानेसे कुछ हानि नहीं क्योंकि पानीप्राणिमात्रका जीवनमूल है बहुधा वैद्य रोगी को पानी देना वर्जित करते है यह पूर्ण भूल है प्रत्येक रोगी पर किसी में ठंडा और

किसीमें उष्ण किसीमें औषधि से ज्योति आदि नाना प्रकारके अनुपान से प्रति रोग में रोगी को जल देनाही चाहिये, नहीं तो वह मोह को प्राप्त होकर प्राण त्याग देवेगा।

१६४ दूध–इसके दुग्ध, प्रस्रवण, क्षीर, पय, आदि नाम हैं. यह ठंडा, मीठा चिकना, रसायन जीवन और भारी है. बल बुद्धि वीर्यको बढ़ाताहै, वादी पित्तको हरता, रक्तविकार श्वास क्षयीअर्श और भ्रमको दूर करता है. बालक वृद्ध दुर्बल और विषयासक्त पुरुषों के लिये तो अतिही लाभदायक है, उपरोक्त गुण साधारण दशासे वर्णन किये गये, यदि तुमको गौ भैंस भेड़ी बकरी हथनी ऊंठनी घोड़ी आदि पशुजाति तथा स्त्रीके दुग्ध के गुण पृथक् विचारना हो तो बृहन्निघंटु देखो।

१६५ दही–इसके "दधि" आदि नाम हैं यह उष्ण दीपन चिकना, कषेला ग्राही और पचने के समय खट्टाहै, पित्त रुधिर शोथ और कफको उत्पन्न करता मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय (सर्दीनाक बहना) शीतांग, विषमज्वर, अतिसार अरुचि और दुर्बलत्वको दूर करता है, मीठा दही वादी और पित्तको जीतता है, खट्टा दही पित्त रुधिर और कफ उत्पन्न करता है, दही चार प्रकार का है १ मीठा २ खटमिठा, ३ खट्टा और ४ अति खट्टा इन सबों के गुण जुदे जुदे हैं, यह तो दहीका सामान्य विवरण हमने लिख दिया विशेष देखना हो तो बृहन्निघंटु आदि ग्रंथ देखो।

१६६ मही–इसके छाछ मठा तक्र आदि नाम हैं, यह ग्राही (दस्त रोकने वाला) कषैला खट्टा मीठा दीपन हलका शीतोष्ण (मौतदिल) बलाढ्य रूखा और तृप्तिकारक है, वादी शोथ विष उलटी पसीना विषमज्वर पांडु मेद रोग ग्रहणी अर्श मूत्र ग्रहण (पथरी का रोग) भगंदर प्रमेह गुल्म अतिसार शूल

प्लीहा, कफ कृमि, चित्र कुष्ठ और तृष्ण आदि रोगोंको (तत्तद्रो गानुकूल अनुपान से) दूर करता है,

१६७ मक्खन–इसके " हैयनगवीन, नवनीत माखन, मस्का" आदि नाम हैं. यह हलका ठंडा, मीठा, ग्राही कुछ कषैला और खट्टाभी और पौष्टिक है; पित्त, वायुको हरता. अग्निको बढाता नेत्रको ज्योति देता. क्षयी अर्श फोडे और खांसी को नष्ट करताहै उक्तगुण तत्क्षणी मक्खनके हैं, यही मक्खन बहुकाल पश्चात भारी हो जाता, मेदको उत्पन्न करता. शोथको दूर करता बालकोंके लिये तो विशेषकर पुष्ट और बल देकर अमृत के सदृश गुणदाता होता है. केवल दूध से निकला मक्खन अति चिकना ठंडा ग्राही, मीठा और बलाढ्य होता है, नेत्रों को अति हित करता और रक्त पित्तको जीतता है

१६८ घी–इसके " आज्य; हवि घृत" आदि नाम हैं यह रसायन,मीठा, भारी; ठंडा दीपन और चिकना है; नेत्रों को ज्योति देता, विषको हरता, वादी, पित्त. उदावर्त. ज्वर उन्माद शूल अफरा आदिको दूर करता. कांति. पराक्रमको बढाता कफको उत्पन्न करता है,

१६९ तैल–इसके " तैल आदि नाम हैं यह उष्ण भारी पौष्टिक, मीठा और बलवर्द्धक है रंगको स्वच्छ करता कफ; वायु रक्त पित्त, कान योनि मस्तक और नेत्र पीडा नाशक है ।

१७० मदिरा–इसके" मद्य. हाली सुरा" आदि नाम हैं यह रेचक (दस्तलानेवाली) रोचक (रुचिबढाने वाली दीपन विदाही (दाह उपजाने वाली) तीक्ष्ण और मादक हैं. मलमूत्र को उत्पन्न करती कफ वादी को दूर करता (विधि पूर्वक भोजनके साथ पीवे तो लाभ दायक. विपरीत क्रियासे पीवे तो) रोगों को उत्पन्न करती और अतिशय पीवे तो विषसदृश हानिकारक होती है.

१७१ गोमूत्र–यह शुद्ध, तीक्ष्ण रूखा, दीपन. हलका, कटु और भेदी है, पित्तको उत्पन्न करता हृदय को बल देता बादी अर्श गोला कफ कृमि कुष्ठ पांडु अफरः विष शूल और अरुचि को दूर करता है।

इति नूतनामृतसागरे विचार खंडे जलादिवर्गगुनि० नाम षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

१७२ मिश्री–इसके शिता आदि नाम हैं, मीठी भारी और ग्राहिणी है। बलको बढाती पित्त और बादी दूर करती है।

१७३ मधु– इसके शहद आदि नाम हैं, यह ठंडा हलका और मीठा है कुष्ठ अर्श कास पित्त रक्त कफ प्रमेह प्यास उल्टी दाह और अतीसार आदि रोगोंको दूर करताहै यह चार प्रकारका होता है, जिसमें प्रत्येकके गुण एक दूसरेसे जुदे हैं इस विषय में अधिक बोध चाहो तो राज निघंटु देखो।

१७४ गुड़– नया गुड़ भारी स्वादिष्ट रेचक है बात पित्त अग्निको बढाता है मूत्र रक्तको शुद्ध करता है।

१७५ शक्कर– इसके शर्करा खांड चीना बूरा आदि नामहैं, यह मीठी पौष्टिक और रुचिकारक है. शुद्ध होनेसे मिश्री के समान गुण देती बलको बढाती और कफको उत्पन्न करती है

इति नूतनामृतसागरे वि० शितादिवर्गनिरूपणं नाम सप्तद० ॥१७॥

१७६ चांवल–इसके तण्डुल शालि आदि नाम हैं. यह ठंडा और हलकाहै पित्तको नष्ट करता मूत्र और कफको उत्पन्न करता है, ये कई प्रकारके होतेहैं पर साधारण प्रकारसे इसके उक्तगुणहैं।

१७७ गेहू–इसके गोधूम आदि नाम हैं यह मीठा ठंडा और भारी है वात पित्त को नष्ट करता और कफ तथा वीर्य को उत्पन्नकरताहै।

१७८ दाल-जिन अन्नों के समान दो दल होजाते हैं उन्हें वैदल कहते हैं, जिन अन्नों से दाल बनाई जाती है वे बहुधा वादी को उत्पन्न करनेवाले होतेहैं सर्वथा दाल वादी को उत्पन्न करती, कफ पित्तको नष्ट करती और मल, मूत्रको बद्धकरती है।

१७९ मूग-इसके मुद्ग आदि नाम हैं यह ठंडा हलका और ग्राही है, कफ पित्तको नष्ट करता है।

१८० उर्द- इसके, माष आदि नाम हैं यह उष्ण और पौष्टिक है, बादी को नष्ट करता, पित्त, कफको उत्पन्न करता और वीर्य को बढ़ाता है।

१८१ चना- इसके चणक आदि नाम हैं। यह ठंडा है रक्त पित्त कुष्ठ और कफको नष्ट करता और वादीको उत्पन्न करताहै

१८२ तिल-इसके तैलफल आदि नाम हैं, यह ठंडा ग्राही भारी है वादी को नष्ट करता कफ पित्तको उत्पन्न करता है।

१८३ जौ इसके यव आदि नाम हैं, यह मीठा और ठंडाहै, पित्त कफ और रुधिरको नष्ट करता है,

इति नूतनामृ० विच खण्डे तण्डुलादिवर्गनिरूपणं नाम अष्टादशस्तरंगः १८

१८४ खिचडी-इसके कृशरा आदि नामहै यह भारी पौष्टिक ग्राही है, विलम्बसे पचती है कफ पित्तको उत्पन्न करती है वादी को नष्ट करता है, चांवल दालके संयोगको खिचडा कहते हैं।

१८५-खीर इसके क्षीर क्षिप्रा आदि नामहै यह पौष्टिक और भारी है. विलंबसे पचती है बलको बढाती वीर्यको उत्पन्न करती मलको रोकती पित्त रक्त प्यास अग्नि और बादीको नष्ट करती है. दुग्ध में डालकर चांवल चुराये जाते हैं सो खीर है।

१८६ घेवर-इसके घृतपूर आदि नाम हैं यह भारी हैं,

हृदय को बल देता पित्त-वादीको दूर करता और प्राणोंको पोषण करता बलको बढाता घाव को भरता है ।

१८७मालपुआ-इसके अपूप आदि नाम हैं, यह भारी है हृदयको बल देता पित्त और बादी को दूर करता है ।

१८८लप्सी-इसे लप्सिका भी कहते हैं यह भारी है वादी पित्तको नष्ट करती है ।

१८९-फैनी इसके फेनिका पुटिनी आदि नाम हैं यह हलकी है वात पित्तको दूर करती है ।

१९०लड्डू-इसके मोदक आदि नाम हैं यह बल कारक है विलंबसे पचताहै पित्त और बादी-को दूर करता है ।

१९१जलेबी-इसके कुण्डलिका आदि नाम हैं यह पौष्टिक है कांति बल देती है हृदयको प्रौढ करती है धातुको बढाती और इन्द्रियों को तृप्त करती है ।

१९२सत्तू जिस अन्नका हो उसी के सदृश गुणकारी परन्तु विशेष करके यहप्यास दाह उल्टीको दूर करताहै विशेषभेद राजनिघंटु में देखो ॥

१९३घुंघरी-यह भारी रूखी है बादी को उत्पन्न करती है गेंहू चना आदि अन्नको बिना पीसेही उष्ण जलमें चुरा लेने से घूंघरी बनतीहै ।

१९४चुडवा-इसके चूरा पोहा आदि नाम है यह भारी बल कारक है वादीको दूर करता कफको उत्पन्न करता है उबाले हुए धानको कूटकर बनाते हैं ।

१९५धानी-यह रूखी रेचन विवंधक भारीहै कफको दूर करतीहै धानयव आदि अन्नको भाडमें भूनकर धानी बनाते हैं ।

१९६लाही-इसके लाजा लाई आदि नाम हैं यह हलकी

ठंडी है बलकारक है पित्त कफ उल्टी अतिसार दाह रुधिर प्रमेह और प्यास को दूर करती है।

इति नूतनामृतसागरे विचारखण्डे कुशरादि वर्गनिरूपणं नाम एकोविंश०॥१०॥

१९७द्व्यार्क-(दो आंकडा)श्वेत आक लाल आक

१९८द्विकन्हेर-(दो कन्हेर) श्वेत कनेर, लाल कनेर,

१९९द्विक्षार-(दो खार) सज्जीखार. जवाखार.

२००त्रिफला-(तीन फल) हर्र, बहेड़, आंवला.

२०१त्रिकुट-(तीन कटु) सोंठ, मिर्च (काली) पीपल.

२०३त्रिजात-(तीन जात) इलायची, दालचीनी तेजपात.

२०४त्रयक्षार-(तीन क्षार) सज्जी जवाखार सुहागा.

२०५चतुर्जात-(चार जात) इलायची, दालचीनी. तेजपात नाग केशर.

२०६चतुरबीज—[चारदाने] काला जीरा. मेथी अजवान असाली (हाला)

२०७चतुरुष्ण—(चार उष्ण) सोंठ, मिर्च.पीपल, पीपल मूल.

२०८चातुराम्ल—(चार खटाई) अम्लबेत, इमली, जंमीरी नीबू।

२०९बलाचतुष्टय [चार बला] बला, नागबला. अतिबला महाबला ॥

२१०लघुपंचमूल—[छोटे पांच] शीलपर्णी, पृष्ठपर्णी बडी कटियाली, छोटी कटियाली, गोखरू,

२११बृहत्पंचमूल-[बडे पांच] वेलकी गिरी, हरणामूल; पाटलीमूल. काश्मरीमूल. स्योंकनाकमूल।

२१२पंचकाल—(पांच कोल) पीपल पीपलामूल, चित्रक सोंठ, चव्य।

२१३पंचक्षीरवट—[पांच दूधके वृक्ष] न्यग्रोध उदुंबर, अश्वत्थ, पारिस, प्लक्ष।

२१४पंचाम्ल-[पांच खटाई] अम्लवेत, इमली, नीबू बिजौरा।

२१५पंचलोन-[पांचनमक] साम्हर, सेंधा, सोंचर समुद्रीय, बिड॥

२१६पंचगव्य-[गौके पांच रस] गोमूत्र गोबर, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत।

२१७पंचामृत- [पांच अमृत] गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत मधु, शर्करा।

२१७षडुष्ण-[छैः उष्ण] पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ मिर्च।

२१९सप्तोपविष [सात उपविष] अर्कदुग्ध, थूहरदुग्ध कलिहारि, दोनों कन्हेर; धतूरा कुचला वत्सनाग।

२२०अष्टवर्ग-[आठ वर्ग] जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि वृद्धि।

२२१क्षाराष्टक—[आठ खार] पलास, थूहर इमली, सज्जी अधाझारा [अपामार्ग] आंकडा, तिलनाल, यव इन सबों का खार।

१२२नवविष—वत्सनाग, हारिद्रक, सकुक, प्रदीपनसौराष्ट्रिक, शृंगक, कालकूट, हालाहल, ब्रह्मपुत्र।

२२३नवरत्न—हीरा, पन्ना, माणिक, नीलमणि, पुष्पराग गोमेद, वैडूर्य मोती मूंगा.

२२४ दशमूल—पंच लघुमूल और पंच बृहन्मूलके योगसे दश मूल बनाहै ।

२२५ दशांगधूप-५० भाग शिलारस ५० गूगल ४ चंदन ४ जटामांसी ३ लोबान ३ राल ३ नशीर २ नख १ भीम सेनी कपूर और एक भाग कस्तूरी इन सब पदार्थोंके एकत्र कोदशांग कहतेहैं इसी प्रमाण से चाहे जितना बनाओ ।

२२६ निद्रा-- नींदसेसुख होता है श्रम दूरहोकर नेत्रों को लाभ पहुंचताहै ग्रीष्म ऋतुके व्यातिरिक्त अन्य कालमें दिनको सोना वर्जित हैं क्यों कि दिनको सोनसे प्यास शूल हिचकी अजीर्ण और अतिसारादि रोग उत्पन्न होते हैं शरीर भारी हो जाताहै और आलस्यकी वृद्धि होतीहै यदि किसी कारणसे रात्रिकोजा गरण हुआ होतो दिनको सोने से कुछ हानि नहीं भोजनकेपीछे सोने से कफ और पुष्टताकी वृद्धि होकर बादी दूर होती है ।

२२७ दंतधावन-दतौन करनेसे मुख शुद्धहोकर अरुचिदुर्गन्ध मल कफ पित्त नष्ट होते हैं परन्तु मदातुर कृश थनित [दंत तालु दन्तरोग हिचकी उलटा शिर पीडा मूर्छा और मुखशो थसे] रोगी इन पुरुषों को दंतौन नहीं करना चाहिये कुल्ले करा

२२८ मुखप्रक्षालन-मुखको ठंडे पानी के धोनसे रक्त पित्त शोष मुखकी कीलें आदि रोग नष्ट होते हैं।

२२९ हस्तपादप्रक्षालन--हाथ पांव धोनसे नेत्रोंकाज्योति बल उत्साह बढता है और श्रम नष्ट होता है,

२३०गण्डूष-कुल्ले करने से मुखशोथ दन्तरोग स्वरघात औ, ष्ठरोग जिह्वाका कडापन और रक्तवात आदि रोग नष्टहोते हैं !

२३१ अभ्यंग-उवटन करनेसे बलबढताहै सुखहोताहै वर्णस्वच्छ

होता-पुष्टता वढती और धातु समहोकर बादीके रोग दूर होते हैं

२३२ गर्दन तेल आदि मलनेसे, पुष्टता- बल बढता श्रम बादी दूर होती और निद्रा आती है।

२३३ क्षौर-बाल बनानेसे नख केशादि ठीक होते हैं सिर और नेत्ररोग दूर होकर सुदरता, पवित्रता. तथा विशेष बृद्धि होती है

१३४ शिरोभ्यंग मस्तकमें तेल डालनसे केश स्वच्छ रहते हैं नेत्रोंको बल पहुंचता है कर्णरोग अनुग्रह दूर होता हैं और धातु पुष्ट होती है ज्वर विरेचन और, अजीर्णमें शिरोभ्यंग मतकरो।

२३५ स्नान-करनसे बात श्रम मल खुजाल अपवित्रता नष्ट होती बल रुचि प्रफुल्लिता वढती है परन्तु अतिसार ज्वर कर्ण शूल बादी आध्मान अरोचक अजीर्ण और भोजन के पीछे स्नानका निषेधहै शिरपर उष्णजल पडनेसे नेत्रों में गर्मी होती है

२३६ चन्दन तिलकधारण-करनेसे प्यास मूर्च्छा दुर्गंध श्रम बादी दूर होकर शाभा तेज प्रीति उत्साह और बलकी बृद्धि होती है

२३७ पुष्पधारण करनेसे कान्ति काम उत्साह शोभाका वृद्धि होती और दुर्गंधिजन्य रोग नष्ट होते है इसी प्रकार उत्तम वस्त्र रत्न भूषण जानो।

२३८ अंजन-लगानेसे नेत्रनिर्मलनिरोगी. रहते ज्योति व शोभा बढती परन्तु रात्रिमें जागे हुए थकित ज्वरातुरको तथा उल्टी होने भोजन करके और शिर धोनेके पश्चात अंजन काजल और सुर्मा आदि लगाना वर्जित है।

२३९ उष्णीषधारण- पगडी डुपट्टा टोपी आदिके धारणसे सिर केश स्वच्छ रहते है बादी और धूपसे रक्षण होता है।

२४० पादत्राण--पनही पहिनेनेसे पांव कंटकादिसे रक्षित रहतेहैं सुख होता है नेत्रोंको गुण होता और आयुष्यकी बृद्धि होती है

२४१ छत्र–छाता लगानेसे बलबढताहै नेत्रोंको सुख होताहैवर्षा तथा ग्रीष्मका त्रास नष्ट होता है ।

२४२ व्यजन–पंखेकी हवा लेनेसे उत्साह, बल और सुख प्राप्त होताहै उष्णता और मच्छरादि जीवोंके क्लेशसे रत्राण होता है

२४३ यष्टि—लकडी छडी लाठी आदिक धारण से उत्साह, स्थिरता ढिठाई और बळ बढताहै सर्पश्वान आदि दुष्ट जीवोंका भय निवृत्त होताहै वृद्ध निर्बल और प्रज्ञाचक्षु (नेत्रहीन अंधे) लोगोंके लिये तो मानो यह दूसरी पांवही है ।

२४४ व्यायाम–कसरत अनेक प्रकारकी है जिसमे १ दंड २ बैठकें ३ कसरत ये तीन मुख्य हैं व्यायाम करनेसे शरीर में आरोग्य, पाचन, बल, मांसमें दृढ़ता, पुष्टता, तीक्ष्णता, उत्साह तरुणाई और साहस प्राप्त होताहै व्यायामी पुरुषोंको दूग्ध घृत बादाम आदि चिकने पदार्थ खानेको मिलैंतो अतिलाभहो वसंत वर्षा और शीतमे अधिक तथा इनसे व्यतिरिक्त ऋतुओंमें थोडा व्यायाम करनाचाहिये अधिक व्यायामसेकास ज्वर और वमनयें रोग होतेहै शरीर थकजानेपर कंठग्रीवा ललाट आदि में पसीना आनेपर व्यायाम त्यागदेना चाहिये भोजन मैथुन और मार्ग गमन करने पर तत्क्षण व्यायाम मत करो अतिकृश काम श्वास क्षयी रक्तपित्त शोषरोगयुक्त पुरुषको व्यायाम करना वर्जित है अंग्रेजी व्यायाम से पहिले तो चपलता रहतीहै परन्तु वृद्धावस्था में हड्डियोंके जोड जोड ढीले पडजातेहैं

२४५ बलनाशक-१दुर्गंधित मांस मांस वृद्धा (३५ वर्षसे अधिक बयवाली) स्त्री ३ बालार्क ४ नवीन दधि५प्रभातकालिके मैथुन ६ निश दिवस निद्रा अथवा भूख सोना ये छः पदार्थ बल तथा प्राणनाशक हैं ।

२४६ बलकारक-१ नवीन मांस, २ तत्काल बनाया हुआ उष्ण अन्न,बाला (१६ से २५ वर्ष तक की वय वाली) स्त्री ४ दुग्धपान, ५ घृत युक्त उत्तम पदार्थ भक्षण. ६ उष्ण जल स्नान ये छः पदार्थ शीघ्रही शरीर को बल दायक तथा रक्षण कर्ता होते हैं

२४७ तुलना-चांवल से आठ गुणा अधिक बलदायक आटा आटेसे अष्टगुण अधिक दूध,दूधसे अष्टगुणमांस. माँससे अष्टगुण घृत और घृत से अष्टगुण अधिक बलदाता तेल है,उक्त पदार्थ तो भक्षण करने से उपरोक्त लिखित गुणदाता होते हैं,परन्तु तेलवर उक्त गुण भक्षण में नहीं किन्तु मर्दन में है,अधिक तेल खाना तो हानिकारक है।

सूचना-हम अपने ऋतु निघंटु में मुख्य२ औषधों के नामगुण और उपयोग संक्षेप सेलिख चुके हैं,इस विषय का पूर्ण विस्तार देखना चाहोतो राजनिघंटु सुश्रुतआदि बृहद्ग्रंथ देखो औरगुरु शिक्षा से प्राप्त करो स्थानाभाव अवकाश न्यूनता तथा ग्रन्थ दीर्घता के भय से विशेष लिखना योग्य न समझा गया।

इति नूतनामृतसागर विचारखंडे उपयोगि वौ० निरूपणं नाम एकविंशतितरंगः ॥ २१ ॥

ऋतुचर्या, दिनचर्या,रात्रिचर्या, ।

ऋतुचर्या दिनचर्या रात्रिचर्या तथैवच ।
नेत्रवाहुमित भंगे कथ्यते हि मया क्रमात् ॥ १ ॥

भाषार्थ-अब हम इन २२ वे तरंग में ऋतुचर्यादिनचर्या और रात्रिचर्या यथाक्रमानुसार वर्णन करते हैं।

षड्तुचर्याविचार-वर्ष के १२महीनों में १मार्गशीर्ष पौष २माघ

ऋतु २ माघ फाल्गुन शिशिरऋतु ३ चैत्र वैशाख बसंत ऋतु, ४ ज्येष्ठ आषाढ ग्रीष्मऋतु, ५ श्रावण भाद्रपद वर्षाऋतु और ६ आश्विन कार्तिक शरदऋतु ये छै ऋतुयें रहती हैं।

षड्ऋतत्रिदोषसम्बन्ध-१ ग्रीष्मऋतु में वातका संचय वर्षा में कोप और शरदऋतु में शान्त रहतीहै २वर्षामें पित्तका संचय शरद में कोप और हिमऋतुमें शांति रहतीहै इसीप्रकार शिशिरमें कफका संचय वसंतमें कोप और ग्रीष्ममें शांति रहतीहै यह वात पित्त कफका संचय कोप और आहार विहार से होते हैं इस लिये इन दोषों के प्रकोप कर्त्ता आहार बिहारादि की ओर ध्यान रखना चाहिये सो नीचे लिखे अनुसार जानो।

१ वात प्रकोप-कटु तीक्ष्ण कषेली रूखी हलकी थोड़ी वस्तु और बासी (रात्रिका रहा हुआ) अन्न भक्षण संध्याकालिक मैथुन शोक भय परिश्रम मेघाच्छादन प्रहार, अन्न जल परित्याग काम देव जागरण अजीर्ण १४ वेगों के प्रतिरोध और जलमें तैरने से वायु कुपित होती है और उसके यत्न से शांत होती है।

२ पित्त प्रकोप-तिल्ला, कांजी मद्य, दही मछली कटु तीक्ष्ण नोंन खटाई के भक्षण, शरद ऋतुमें धूपमें भ्रमण, क्रोध, मैथुन, विदाही पदार्थ भक्षण, उपवास तृषा क्षुधावरोध और अजीर्ण के करने से मध्याह्न तथा अर्द्ध रात्रिमें शरदऋतु के समय पित्त कुपित होता है और उसके यत्नों से शांत होता है।

३ कफ प्रकोप-दही दूध नवीनान्न शीतलजल खटाई नोंन घी तिल भारी वस्तु मछली और मीठी वस्तु भक्षण, दिवस निद्रा, अग्नि मांद्य और प्रातःकाल ही भोजन करने से कफ कोपको प्राप्त होता है और उसके यत्न से शमन होता है इसलिये इन आहार विहारों पर सदैव पूर्ण ध्यान रखना चाहिये।

१ हिमऋतु आहार विहार–गो तथा भैंसका नवीन घी, गुड सोंठ युक्त हरें, मीठा दही, तिल गेहूं उर्द और मिश्री आदि मिष्ट पदार्थ खाना नमक मिलाकर तैल मर्दन करना, निर्वात स्थान में रहना और नवीन उष्ण ऊनका वस्त्र पहिरना चाहियें ।

२ शिशिरऋतु आहार विहार–पीपली युक्त हरें काली, मिर्च अदरख, नवीन घी, सेंधा नोंन, उत्तम गुड़, दही खाना और पूर्वोक्त हिमऋतु लिखित आहार विहार सेवन करना चाहियें ।

३ वसंतऋतु आहार विहार–इसऋतुमें कुपित कफ रोगोंको पैदा कर अग्नि को मंद कर देता है इसलिये इस ऋतुमें मधुयुक्त हरें भ्रमण चित्रकचूर्ण तथा कफ हारी पदार्थ सेवन करना चाहिये ।

४ ग्रीष्मऋतु आहार विहार ग्रीष्म ऋतुमें सूर्य अपनेतेजसेप्राणि मात्रका बल हर लेताहै इसलियें खश आदिके पर्दे लगे हुएशीतल स्थानमें तथा वृक्षोंकी सघन छायामें फुहारे आदिके समीपनिवास करना गुड़संयुक्त हरें मधुर भोजन दाख क्षार श्रीखंड (सिखरण) सत्तू मिश्री अनार आदि का रस चिकने और शीतल पदार्थों का भक्षण जलक्रीड़ा. खशके पंखो की पवन, चंदन कपूरादि का लेपन. दिनमें निद्रा और सुगंधित पुष्पों का सेवन करना चाहियें परन्तु इस ऋतु में कटु, तीक्ष्ण, नोंन, खटाई, विदाही पदार्थ मद्य श्रम और घूमना ये हानिकारक हैं ।

५ वर्षाऋतु आहारविहार–इस ऋतुमें वायुका कोप होताहै इस लिये सेंधव युक्त हरें, चिकनी वस्तु, नों ,खटाई, चांवल, यवसोंठ मिर्च;पीपल, पीपलामूल, चित्रक और सेंधवयुक्त दही भक्षण, उष्ण जल, कूपजल; स्वेत वस्त्र; भ्रमण, हलका भोजन और विरेचन करना चाहिये, परन्तु दिनका सोना, श्रम, धूप, तालाव का जल, दही, बनमें निवास और विशेष मैथुन ये हानिकारक हैं ।

६ शरदऋतु आहार विहार–शरदऋतु में पित्त कुपित होती है इस लिये मिश्री मिली हरैं. मिश्री साठी चांवल, मूँग, सरोवर का जल और औटे हुए दूधका सेवन करना चाहिये. परन्तु तीक्षण वस्तु, नोन खटाइ मद्य पान, धूपमे घूमना, पूर्व दिशाकी पवन लेना और दिनको सोना ये व्यवहार हानिकारक है ।

विशेषतः–उक्त ऋतुचर्याके नियानुसार व्यवहार करने से ऋतु जन्य व्याधिका भय नहीं रहता पुरुषोंको चाहिये कि इन नियमोंसे ऋतुपर्यन्त निर्वाह न करसकें तो प्रत्येक ऋतुके आन्तिम, दिनतक तो अवश्यही नियमको निवाहें और आठवें दिनसे अग्रिम ऋतु चर्या के अहार विहारकी ओर ध्यान देकर बर्ताव करें तो सदैव रोग रहित रहकर ऋतुजन्य व्याधियों के चक्र से विमुक्त होवेगें ।

दिनचर्या विचार–इसमे दिन भरके व्यवहार की विधि लिखेंगे तुमको चाहिये कि ४ घडी रात्रि शेष रहे निद्रा त्यागते ही परमब्रह्म परमात्मा का ध्यान करके शय्या से उठकर मल त्याग करो । मल मूत्र त्यागके लिये रात्रि को दक्षिण की ओर दिनको उत्तर की ओर मुख करके बैठना उत्तम होगा,तदनंतर मूल द्वार और लिंगेन्द्रिय को जलसे धोकर हाथ पांव को मिट्टी से शुद्ध करो और जल६ कुल्ल करके मोरछली आदि सीधे वृक्षकी १२ अंगुल लम्बी तथा हाथ की कनिष्ठ अंगुली समान मोटी दतौन के अग्रभाग की कुंचीसे दात और उसकी फाकों से जिह्वा को निर्मल करो और शीतल जलके१२कुल्ले करके शीतल जलसे ही मुख धोओ फिर सेंधा नोन कुछ सोठ और सिके जीरे के महीन चूर्ण को दांतों में घिसकर मुंह धोडालो तो ऐसे नियमसेमुख रोग तथा मुख दुर्गन्धि कदापि नहोगी फिर शरीर में नारायणादि तेलका मर्दन करके उसकी चिकनाईमिटाने के लिये बेसन(च-

नेकेआटे) आदिके उबटनेसे शरीरको स्वच्छ करलो और शक्ति अनुसार व्यायाम (कुस्ती. दंड, वैठक, मलखंब आदि कसरत) करके श्रम हरणके लिये कमर के नीचे तो अधिक उष्ण और कमरके ऊपर कुनकुने (कुछ उष्ण , जलसे शरीरको धोओ और भली भांति स्नानकरके शरीर को पोंछ डालो फिर संध्योपासन अग्निहोत्र गायत्री मंत्रादिक जाप करके देव, गौब्राह्मणगुरु आचार्य माता, पिता और अतिथि आदिको नमन करो और स्वशक्त्यानुसार अन्न वस्त्र सुवर्णादिक का दान श्रद्धा भक्ति समेत देकर मध्याह्न समय बलि वैश्वदेव (अग्निसे बने हुए पक्वान्न की आहुति) करो यदि उस समय भाग्यवशात् कोई अभ्यागत आ पहुंचेतो उसे सादर भोजन कराके कुटुम्बसहित आप भोजनकरो रसोईका स्थानएकांतमें प्रकाशित और चहुंओरसे मंदमंद स्वच्छ पवनप्रवाहित तथा भोजनके पात्रादिभी सुन्दर और स्वच्छ रक्खो भोजन करनेके,समय माता पिता वैद्य मित्र और पाककर्ता के व्यातिरिक्त किसी अन्य को समीप न रहने दो क्यों कि भोजन पर ऐसे कुटुम्बीजन तथा मोर चकोर वानर और मुर्गी की दृष्टिके व्यतिरिक्त अन्न की दृष्टिपात योग्य नहीं उससे हानि होती है,

भोजन करनेके समय प्रथम नोनयुक्त अदरक केदोतीन टुकड़े खाकर मधु चिकना हितकारी पदार्थ मूंग चांवल घृतयुक्त गेंहू कीराटेउत्तम शाकपात्रादिके साथ धीरे२ खाओ और अन्त में रुचिपूर्वक मिश्री युक्त दूधपीकर नियमानुसार जलपीओ क्योंकि भोजनके आदिमें जलपीनेसे मन्दाग्नि तथा भोजन के अंत में अचानक जल पीने से वह जल विषसदृश होता है इस लिये भोजन के मध्य में थोड़ा पानी धीरे धीरे पीना चाहिये जिससे

अन्न पचकर अजीर्ण और विकार निवृत हो जावे, अजीर्ण दशामें पीनेसे अन्न पचता है अन्न पचनेपर पीनेसेशरीर में बल बढता है और रात्रिके अंतमें जल पीनेसे सब विकार दूरहोते हैं इसलिये भोजनके दो घंटा पश्चात् ठंडा जल पुनः पीना चाहिये इस प्रकारसे भोजन कर हाथ मुंह धोकर सन्तुष्ट होओ ।

भोजनके पीछे १ अगस्त्य २ कुंभकर्ण३ शनैश्चर ४ वड वानल और ५ भीमसेनका स्मरण करने से उत्साह बढकर भक्षितान्न पचकर शरीरहल्का होताहै, क्योंकि ये ऐसे बलवानप्रतापी और दीर्घ आहारी थे कि जो आहार करते सो तुरन्त पच जाता था इसी प्रकार तुम्हारा अन्न भी पाचन करेंगे ।

तदनंतर सुन्दर ऋतुयोग्य वस्त्र सुगंधितमाला पहिनकर पान खाओ और शीतल व्यंजन से पवन लेकर शीतल छायामें इधर उधर टहलो या सुंदर शय्यापरकुछ काल सीधे चितयावायेंकरवट लेटकर निद्रालो, क्योंकि पीठके बल सोनेसे बल और बायें करवट सोनेसे आयु बढाती है, या १०० पेंड टहलो क्योंकि भोजन करके किसी कार्यवश बैठ रहने से शरीर भारी होता है सीधी खाटपरही लेट रहने से अन्न नहीं पचता और दौडने वाले के साथ तो मानों मृत्युही दौडती है अर्थात् काल आता है इस लिये भोजन के अंतमें उपरोक्त नियमों पर ध्यानदेकर गौकी छाछ तथा शिखरण आदि का सेवन करो और संध्या समय १ भोजन२मैथुन ३ अध्ययन और ४ निद्रा ये चार कार्य मतकरो क्योंकिसंध्याके भोजन में रोग मैथुनसे भयंकर सन्तान अध्ययनसे आयुक्षयऔर निद्रासे दरिद्रता होती है किन्तु संध्या समय ईश्वराराधन यह सर्वोत्तम कार्य सबको करना योग्य है ।

रात्रिचर्याविचार–इसमें रात्रिके अहार विहारादिक वर्णनकरेंगे

तुमको चाहिये कि अपने सायंकालिक सर्व कृत्योंसे निपटने पर रात्रिके प्रथम प्रहरमें [उक्त नियमानुसार] भोजन करके सुन्दर स्थानमें शय्यापर शयन करो ग्रीष्मऋतुमें बाहर चांदनीमें सोना सुखदाई होता है क्योंकि चांदनी कामवर्द्धनी और दाहहारिणी होतीहै पश्चात् स्वशक्त्यनुसार सुन्दर रूपवती नवयौवना स्त्री से सम्भोग करो हम भोगविधान भी लिखते हैं।

संभोगके कुछ काल पहिले और पीछे गौ तथा भैंसका औटाया हुआ मिश्रीयुक्त दूध रुचिपूर्वक पीकर मैथुनको तत्पर होओ क्यों कि दुग्ध तत्क्षण बलदाता तथा बलवर्द्धक है,

मैथुन विधान—हिम तथा शिशिर ऋतु में अपनी शक्ति पूर्वक नित्य प्रति वारंवार स्त्रीसंग से भी हर्ष बढकर रोग तथा बलहानि नहीं होती परन्तु बसन्त और शिशिर में तीसरे दिन शक्त्यनुसार मैथुन करना चाहिये क्योंकि अन्यथा करने से शरीर रोगग्रस्त होकर बलक्षय हो जावेगा वर्षामें पन्द्रहवें दिन स्त्रीसंग करो नहीं तो बलरहित होकर रोग सहित होजाओगे शीत ऋतु में रात्रि, ग्रीष्म में दिवस और वर्षा में रात्रि या दिनको मेघगर्जनाके समय स्त्री संग करो तो कदापि रोग न होगा।

और भी सुनो १ रजस्वला २ रोगयुक्त ३ वृद्धा ४ जिसेकाम देव न जगताहो ५ मलीनतायुक्त रहनेवाली ६ गर्भिणी (७मासके उपरांत गर्भवाली) और ७ उपदंशरोगग्रस्ता इन सात दशाओंकी स्त्रीसे मैथुन मतकरो नहीं तो रोगग्रस्त हो जाओगे।

तथा—१ भयातुर २ अधैर्यवान ३ क्षुधित ४ रोगी ५ तृषित ६ बालक ७ वृद्ध और ८ मलमूत्रके वेगयुक्त दशामें मैथुन मतकरो

१ सद्यः बलहरा नारीसद्यो बलकरं पयः। स्त्रियं गच्छेत्पयः पीत्वा भुक्त्वा तां चपुन पिवेत् ॥ १ ॥इत्युक्तं ग्रन्थान्तरे ।

बहुत मैथुन मत करो न तो तुमको १ शूल २ खांसी ३ विषमज्वर ४ क्षीणता ५ क्षयी और ६ वातज पक्षाघातादि रोग हो जावेंगे

मैथुन के पीछे स्नान करके मिश्रीयुक्त उष्ण दुग्ध मिष्टरस और आसव पीओ और पंखसे मंद२पवन लेकर शयन करो,दिनकोबहुत सोने और रात्रिको अधिक जागनेका प्रसंग मत लाओ५घडीरात रहे (४ अ) प्रातःकाल ८ अँजुली शीतल मिष्ट जल पान करो तो सर्व रोग दूर होकर पूर्णायु पाओगे, यहसब भावप्रकाश और शार्गंधर में लिखाहै इन नियमों पर चलनेसे सुख पूर्वक आयु व्यतीत करके निरोगी बन रहोगे ।

इति नूतनामृत-सागरे विचारखण्डे ऋतुचर्या दिनचर्या रात्रिचर्या निरूपण नाम द्वाविंशतितमस्तरंगः ॥ २१ ॥

स्नेहादीनां विचारश्च मनुजानां हिताय च ।
रामनेत्रमिते भङ्गे लिख्यते हि यथाक्रमात ॥ १ ॥

भावार्थ–अब हम इस २३ वें तरंगमें स्नेह, वमन, विरचन हर्रे सेवन बस्तिकर्म, धूम्रपान औररक्तमोचनादि क्रमसे वर्णन करतेहैं

स्नेहविचार–१घृत, २ तेल, ३ वसा (चर्बी) और ४ मज्जायें चारों स्नेह (चिकनाई) पौष्टिक होते हैं ।

स्वेदनविचार–१ ताप, २ उष्ण, ३ उपन और ४ द्रवस्वेद ये चारों स्वेद (पसीना) उत्पन्न करने वाले हैं ।

१ तापस्वेद–बालु (रेत) नोंन, वस्त्र, हाथ ढक्कन और अंगीठीकी उष्णतासे सेककर पसीना निकालने को तापस्वेद कहते हैं।

२ उष्णस्वेद–लोह अथवा ईट आदिको तपाकर उसके सेक से

१ सवितुः समुदयकाले प्रसृती सलिलस्य पिबेदष्टौ । रोग जरा परिमुक्तो जीवेत् वर्षशतं साग्रम् ॥ १ ॥

पसीना उत्पन्न किया जावै उसे उष्णस्वेद कहते हैं, तापस्वेद और उष्णस्वेद इन दोनों के सेकसे कफजन्य विकार दूर होते हैं।

३ उपनाहस्वेद—ताप और उष्ण दोनों के योगसे पसीना पैदा किया जावै उसे उपनाहस्वेद कहते हैं।

४ द्रवस्वेद—शरीर को वस्त्रसे ढांककर खटाई या बातनाशक औषधोंके जलसे सिंचन कर पसीना पैदा किया जावैं उसभवस्वेद कहते हैं. ये चारों स्वेद बातरोगों को भी दूर करने वाले हैं।

५ महाशाल्वस्वेद—कुल्थी, उर्द गेंहू, असली, तिल सरसों. सौंफ देवदारु, सम्भालु. जीरा. अरंडबीजी अरंडमूल, रास्ना. शोभाञ्जनमूल इन सबों को नोन युक्त कांजी या खटाई से महीन पीसकर गरम करलो और शरीर के वातग्रस्त अवयव पर सहता२ लेप करो तो सर्व बातरोग दूर होवेंगे।

वमनविचार—भक्षित अन्न तथा शरीरके मलको मुखद्वारा (उल्टी करके निकालदेनेको वमन कहते हैं) शरद बसंत और वर्षाऋतुमें मनुष्य मात्रको वमन लेना योग्य है क्योंकि इससे कफरोग हृद्रोग विषदोष; मंदाग्नि, श्लीपद, कुष्ठ, विसर्प; प्रमेह अजीर्ण, भ्रम, कास श्वास पीनस मृगी, उन्माद, अतिसार तथा नाक तालु, ओष्ठ, कानका पकाव, जिह्वारोग, पित्तरोगकफरोग, मेदोवृद्धि, शिरोग्रह पार्श्वशूल, अरुचि और तात्कालिका ज्वर ये सब रोगनष्ट होवेंगे

वमनवर्जन—तिमिर (रतौंधी) गुल्म, उदररोग, निर्बलता, प्रहार मेदोरोग, स्थूलरोग. उदावर्त बातरोग इन रोगोंसे ग्रसित दुर्बल, वृद्ध. क्षुधित मनुष्य और गर्भिणी स्त्रीको वमन न देना चाहिये।

वमनक्रिया—१पतली तेज (भेदडी) रावडी में दूध या छाछ या दही मिलाकर भरपेट खिलादो और ऊपर सेंधानोन या मधु या वच मिलाकर उष्ण जल पिलाके गलेमें अंगुली चलाओतो वमन

हो, तथा२ः कुटकी मेनफल, फिटकरी तमाखू नीम या किसी अन्य तीक्ष्ण वस्तुका चूर्ण उष्णजलके साथ पिलाओ तो वम होगी बमन के पश्चात् शुद्ध जल से कुरले कराके जिह्वापर जीरा आदि लगादो और बिजौरा (तरंज) आदि उत्तम वस्तु खिलाकर सुगंधित द्रव (अतर) सुंघाना चाहिये ।

विरेचन विचार-उक्त रीतिसे वमन कराके कफरोग पचने तक पाचक औषधिदो फिर शरद या बसंतमें विरेचन दो तो जीर्णज्वर मलसंग्रह, बातरक्त, भगंदर अर्शपांडु, उदररोग, गुल्म हृद्रोग योनि रोग अरुचि, उपदंश, प्रमेह, विशूचिका, नेत्ररोग, कृमि शूल, कुष्ठ, कर्णरोग, नासिकारोग शिरोग्रह, शोथ और मूत्राघात ये सब रोग दूर होवेंगे. यदि किसी रोगकी निवृत्ति विरेचनसे ही होनी सम्भव होतो अनियमित कालपर भी विरेचन दे सक्ते हैं ।

विरेचनवर्जन-वालक, वृद्ध. क्षीण, भयातुर. श्रमयुक्त; नवीना ज्वरयुक्त तृषित, स्थूल-प्रहारयुक्त- मन्दाग्नि, मेदोरोग, बालक तथा चिकने या रूखे शरीर वाले मनुष्य तथा गर्भिणी और प्रसूता स्त्री को विरेचन मत दो ।

विशेषतः- बात प्रकृति वाले को तीक्ष्ण. पित्तवालेको को मल और कफ प्रकृति वाले को मध्यम विरेचन देना चहिये ।

विरेचकपदार्थ-दाख; दूध, हर्रे आदि कोमल, निसोत, कुटकी किरमाला आदि मध्यम और थूहर का दूध, चोख, दात्यूणी. जमालगोटा और इच्छाभेदी रस ये तीक्ष्ण पदार्थ हैं ।

विरेचन क्रिया बिरेचनदेनेके पांच सातादिनपहिलेसे२ टंकसोना मक्खी; १टंक जीरा, २टंक सौंफ २ टंक दाख; २टंक गुलाबपुष्पऔर १०टंक भर शक्करका तीनपाव पानी औटाकर पावभर रहजानेपर छानके १ दिन पिलाओ तो मल पचकर शुद्ध रेचन होता रहेगा

१ इसे मुञ्जि कहते है ॥

इसपर घृत युक्त चांवलों की खिचड़ी को छोड़ और कुछ मत खिलाओ फिर पांचवें दिन १० टंक सौना मक्खी १० टंक निसोत १० टंक गुलकंद, २ टंक जीरा, ५ टंक सौंफ, १० टंक शक्कर, इन सबोंको जलमें औटाकर दो चार दिन तक पिलाओ तो विरेचन होगा, जो ३० विरेचन हों उत्तम २० हों तो मध्यम और १० हों तो हीन विरेचन जानो।

(षड्ऋतुविरेचन—१ वसंत में सौनामक्खी, निसोत, गुलाब पुष्प; सौंफ जीरे का विरेचन शक्कर के साथ दो २ ग्रीष्म में मिश्री के साथ निसौत का विरेचन दो ३ वर्षा में मधुके साथ निसोत पीपली, द्राक्ष और सोंठ का विरेचन दो, ४ शरदमें मिश्रीके साथ निसौत, धमासा, नागरमोथा, द्राक्ष, नेत्रवाला, मुलहटी चन्दन और सौनामक्खी का विरेचन दो. ५ हेमन्त में उष्ण जलके साथ निसौत, चित्रक. पाठ, चोख, वच और सौनामक्खी का विरेचन दो ६ शिशिर ऋतुमें मधुके साथ निसौत. पीपली, सोंठ. सेंधानोन और सौनामक्खी का विरेचन देना चाहिये।

विरेचनार्थ अभयादिमोदक—हरेंकीछाल, मिर्च, सोंठ, वायविडंग आंवला, पीपली, पीपलामूल. तज. पत्रज, नागरमोथा, ये सब समान इन सबोंसे त्रिगुणी दात्युणी, इन सबोंसे अष्टगुणी निसोत और इन सबोंसे छः गुनी मिश्री इनको महान पीसकर मधु के साथ२ टंक प्रमाणकी गोलियां बनालो और१गोली प्रातःकाल ठंडे जलके साथ दो तो उष्णजल न पीनेतक विरेचन होतेही रहेंग जो इनमें विरेचन होजावें तो विषमज्वर; मन्दाग्नि पाण्डु; कास; भगदर, प्रमेह राजयक्ष्मा, अर्श, कुष्ठ नेत्र, विकार, गंडमालाउदर

१ अभयादि मोदक मे औषधों के संयोग का प्रमाण हमने अमृतसागर से ही लिखा है इसका यथार्थ निश्चय शार्ङ्गधर से करलो।

रोग वातरोग, आध्मान,मूत्रकृच्छ,अश्मरी तथा जंघा और कटि की पीडा ये विकार दूर होकर तारुण्यता प्राप्ति होवेंगी ।

विशेषतः-विरेचन (जुलाब) देनेपर रोगीके नेत्र शीतल जलसे धुलाओ,सुगंधसुँघाओ, पानखिलाओ और निर्वात स्थानमें रक्खो। परन्तु स्नान और पीने के लिये उष्ण जलका ही उपयोग करो ठंडा जल मत दो नहीं तो रोगीकी नाभि कुक्षिमें शूल,मलावरोध वायु शरण का अभाव, पित्तरोग शरीरमें भारीपन, दाह, अरुचि अध्मान, चक्र और वमन ये विकार होवेंगे यदि इनमें से कोई विकार उत्पन्न होता दृष्टि पड़े तो पाचन देकर शुद्धकरलो तो सर्व रोग दूर होकर क्षुधा बढेगी और शरीर हल्का होजावेगा ।

दुष्टविरेचनशमन-यदि प्रमाणितसे विशेष विरेचनहो तो मूर्छा गुदभ्रंश[कांच निकलना]शूल और अतिसार आदि रोग उत्पन्न होतेहैंइसलिये विशेष विरेचनहोतो शीघ्रशीतलजलमे स्नान कराके चांवल मिश्री,मधु सिखरण, दही, पष्टीतण्डुल, मसूर और मिश्री युक्त बकरीके दूधको सेवन कराओ तो विरेचन स्तंभित होजावेगा।

शुद्धविरेचनलाभ-यदि विरेचन यथार्थ रूपसे होजावे तो मन प्रसन्न वायुशरण. बुद्धि निर्मल तथा क्षुधा और बलवर्द्धक होगा।

षड्ऋतु हरें सेवन विधि-१ ग्रीष्मऋतु में हरें समान गुड़के साथ २ वर्षामें २हरें सैंधानौनके साथ, ३ शरदमें ३ हरें मिश्री के साथ ४ हिम में ४ हरें सोंठ के साथ ५ शिशिरमें ५ हरें पीपल के साथ और ६ बसंत ऋतुमें ६ हरें प्रति दिन मधु के साथ सेवन कराते रहो तो ऋतुजन्य विकार न होकर समस्त रोग नष्टहोवेंगे

वस्ति कर्मप्रकार- जिसको वातप्रकोपसे मलमूत्रका रुकाव होगया हो तो उसकी इन्द्रिय या गुदा मे वस्ति कर्म करना चाहिये यह

पिचकारी स्वर्ण या जस्ताआदि धातुओं की नली औरबकरेके अंड कोषकी थैलीके संयोग से शुंडाकार बनाई जातीहै जो १वर्षसे ६ वर्षकी अवस्थातक ६अंगुल, सात वर्ष से १२ वर्षपर्यंत ८अंगुल और १२ वर्ष पश्चात् १२ अंगुल लंबी रखनी चाहिये यदि उक्त नियमसे न्यूनाधिक करनाहो तो वैद्यअपनी बुद्धिसेविचारकरले-

बस्तिक्रिया-जिस रोगीको बस्ति कर्म करना हो उसे चिकना और अधिक भोजन मत कराओ किन्तु हलका भोजन देकरउष्ण जल पिलाओ औरकुछकालइधर उधर टहलाकरमलमूत्रत्यागनेके पीछे बायें करवटके आधारसे सुलादो,तब बाई जांघ लंबी और दाहनी ऊंची करके गुदामें पिचकारीको लगाओ,इस समय तुम [वैद्य] पिचकारीको घी लगाकर बायें हाथसे पकडो और दाहने हाथसे खींचकर ३० ताली बजानेया१०० तककी गिनती मुँहसे गिननेतक पिचकारी मारते जाओ,परन्तुपिचकारी मारते समय रोगी और वैद्य दोनो जमुहाई खांसी और छींकसे बचे रहैं.पि चकारी मार चुकने पर रोगीकोदोनो पांव पसारकर सीधा सुला दो तदनंतर चतुराईसे दोनों पांवकी अंगुलियां खिंचवाके औंधा सुलादो और कूलोंको मसलकर सोने दो इसी प्रकार ३ दिनके अंतरसे आठवो दिनतक अनुवासन औरपश्चात् निरुहबस्तिदो बस्तिकर्मवाले रोगीको उष्ण जलसे स्नान कराओ,दिनको न सोने दो और अजीरण तथा कुपथ्यसे सदा बचाते ही रहो।

अनुवासनबस्तिवर्णन-जिसमें घृत,तेलआदि स्निग्धपदार्थोंसे पिचकारी मारी जातीहै उसेअनुवासनबस्ति कहतेहैं उसीकाएक भेदमात्राबस्तिभीहै शीत और बसंत ऋतु में दिनको तथा ग्रीष्म वर्षा और शरद ऋतु में रात्रि में अनुवासन बस्ति देना चाहिये

अनुवासनयोग्य तेल-गिलोय एरंडकी जड कणगजेकी जड

भारंगी अडूसा रोहिस शतावरी, सहजना, काकलहर ये सबटके २ भर और जौ [यव] उर्द, असाल बेरकी जड और कुल्थी येसबसेरसेर भर लेकर सबको ६४ सेर जलमें औटाओ और चतुर्थांश रहने पर उसीमें ४ सेर मीठा तेल डालकर पकाओ फिरसर्वरसादिक जलकर तेल मात्र रह जानेपर छानकर इसमेंसे १टकेभर तेलकी पिचकारी सौंफकेजल और सेंधनोन के साथदोतो सर्व वातरोग दूरहोंगे यह अनुवासन वस्तिदेनेपरमलाशयथापक्काशयमजलयुक्तस्नेह रखकर मूत्राशय मसलनेपर भी गुदाद्वारा नानिकले तो निरूहवास्ति या विरेचन करदोतो वायुसरणतथामलद्राव होकरशरीर शुद्धहोजावेगा

अनुवासनबस्तिवर्णन भस्मक, कास श्वास, क्षयीरोग तथाभय युक्त मनुष्यों को अनुवासन मत कराओ

निरूहबस्तिवर्णन—जिसमें औषधियों के जलकी पिचकारी मारी जाती है उसे निरूह वस्तिकहतेहैं, उसका एक भेद उत्तमवस्तिभी हैं; सामान्य रीतिसे इसके और भी अनेक भेदहैं-

निरूहबस्ति योग्य जिसका अधिक चिकना शरीरहो, हृदयमें चोट लगीहो, शरीर क्षीणहो, तथा अध्मान, छर्दि, हिक्का, अर्श, श्वास, कास उदरोग, शोथ आतिसार, विषूचिका, उदावर्त, वातरक्त विषमज्वर, मूर्च्छा तृषा, मूत्रकृच्छ, अश्मरी, मन्दाग्नि, शूल अम्ल पित्त, हृद्रोग औरपादरोगयुक्त मनुष्यको निरूहवास्ति देनेसे उसके समस्त रोग नाश हो जावेंगे, इसका प्रमाण सवापैसे भरका है, अनुवासनवास्तिकी क्रियासेही निरूहबास्तिभी दो चारबार दो विशेषतः केवल बातविकारवालेको स्नेहयुक्त. पित्तवालेको दूध युक्त और कफविकार वालेको कषेले या कडवे रस तथा मूत्रादि युक्त निरूहबस्ति देना चाहिये; परन्तु सुकुमार बालक औरवृद्ध को तो मृदु वास्तिही देना योग्य है।

१ उत्क्लेदनवस्ति—अरंडकी बीजी महुआ, पीपली, सेंधानोंन

बच और झाऊ वृक्ष की छाल के क्वाथ से पिचकारी मारो इसे उत्क्लेदन वस्ति कहते हैं।

२दोष हरवस्ति सौंफ मुलहटी, बील और इन्द्रयवको कांजी और गोमूत्रमें पीस बस्ति दोतो सर्वदोषदूरहों इसे दोषहर बस्ति कहतेहैं

३लेखनबस्ति — त्रिफलाका काथ मधु गोमूत्र, और जवाखार को मिलाकर बस्ति दो इस लेखनवस्ति कहते हैं

४ शोधनबस्ति—हर्र, किरमाला आदि विरेचन पदार्थों से जलसे बस्ति करो, इसे शोधन बस्ति कहते हैं।

५ शमनबस्ति—प्रियंगुपुष्प, मुलहटी, नागरमोथा, रसौत इन सबको दूधमें पीसकर बस्ति दो इस शमन बस्ति कहते हैं।

६ बृंहणबस्ति—पौष्ठिक औषधोंका क्वाथ, मिष्टद्रव, घृत मांसरस इत्यादिकी बस्ति दो इसे बृंहणवस्ति कहते हैं.

७ पिच्छिलबस्ति—बेरके पत्ते. शतावरी: ल्हेसुवे, मोचरस इन सबोंको दूधमें पकाके वह दूध मधुके साथ बस्ति में दो, इसे पिच्छिल बस्ति कहते हैं,

८ निरूहवस्ति—आधसेर मधु; आधसेर घी और थोडासा सेंधानोन इन तीनोंकी मथकर २ दिनके अंतरसे पांच सात दिन तक पिचकारी मारो, इसे निरूहवस्ति जानो।

९ मधुतैलबस्ति—अरंडमूलके क्वाथमें मधु और मीठा तेलटके भर सोंफ. १ पैसेभर और सेंधानोन अधेले भर डालकर मथोऔर इसकी बस्ति करो तो मेद. गुल्म प्लीहा, कृमि और मलके समस्त रोग दूर होकर बल बढ़ेगा।

१० स्थापनबस्ति—मधु घृत दूध तेल ये चारों पैसे पैसे भर सेंधानोन और झाऊवृक्षके वक्कलका रस अधेले २ भर इन सबों को एक जीव करके पिचकारी मारो इसी स्थापनवस्ति कहते हैं.

११ सिद्धबस्ति–पिप्पली पिप्पलामूल, चव्याचित्रक, सोंठ और मुलहटीके क्वाथमें मधु, तेल और सेंधानोन डाल कर औटाओ और इसकी पिचकारी मारो इसे सिद्ध बस्ति कहते हैं।

१२ फल बस्ति–गुदामें बाहर और भीतर घी लगाकर अंगूठेके समान मोटी और बारह अंगुल लम्बीकड़ी पिचकारी गुदामेंआधी चलाकर मारो इसे फलबस्ति कहते हैं बस्तिकर्म समस्त बात रोगोंका नाश करताहै।

धूम्रपानविचार—१शमन २ बृंहण ३ रेचक ४ कासघ्न ५ वमन कर्ता और ६ व्रणधूम छः प्रकारसे धूम्रपान होता है।

धूम्रपानवर्णन--भय श्रम दुःखदंतरोग. रात्रिजागरण तालुरोग दाह प्यास उदररोग शिरोग्रह वमन अध्मान प्रहार प्रमह पांडु क्षीणतारोग वाले मनुष्य बालक बृद्ध औरगर्भिणी स्त्री इन सबों को धूम्रपान करना कदापि योग्य नहीं है

धूम्रपानगुण- धूम्रपान करनेसे बात और कफके रोगेशांत होते इंद्रियां और मन प्रसन्न रहते हैं केश और दंत दृढ होते हैं

षड्विधा धूम्रपान वर्णन--इलायची आदिका धुआं समन शर आदिका बृंहण, ३ तीक्षन औषधोंका रेचन ४ मिर्च आदिका धुआं कासघ्न (कसहर्ता) ५ चर्म आदिका धुआं वमनकर्ता और ६ नीम यां वंच आदिका धुआं [जो व्रण आदिको दियाजाताहै] सो व्रणधूम कहाता है ॥

अपराजितधूम- मोरपंख. नीमके पत्ते, कटियालीके फल, हींग मिर्च. छड कपास.बकरके बाल सांपकी कांचली,बिल्ली की विष्टा और हाथी का दांत इन सबका महीन पीसकर घृत के संयोग से धूनी दे तो भूत, प्रेत.पिशाच राक्षस और डाकिनी आदि सर्व दोष तथा ज्वर दूर हो।

माहेश्वरधूप-हींग, देवदारु, घृत, बिल्वपत्र, गोडस्थि, कुटकी सरसों, नीमके पत्ते, सिर के वाल, सांपकी कांचली, बिल्लीकीविष्टा गोशृंग, मैनफल, दोनों कटियाली, कपास, आटेकी भुसी, बकरे के रोम, चंदन, मोरपंख, और बकरी के मूत्र सबों को महीन पीस कर धूनी दो तो भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, सांप, चुड़ैल राक्षस और सर्व ज्वर आदि नष्ट हों।

रक्तमोचनविचार-मनुष्यकेशरीर में रक्तके कारण बहुधाविकार हुआ करते हैं इसलिये रोगी के शरीरमे से रुधिर अवश्य निकल वाये और शरद ऋतु में तो प्रत्येक मनुष्य को रक्त निकल वाना चाहिये जिससे रक्त विकार न होने पावेंगे।

शुद्ध रक्तस्वरूप-जो रक्त मिष्टरस लाल वर्ण, शीतोष्ण, भारी चिकना और गंधयुक्त हो उसे शुद्ध रक्त जानो।

दुष्टरक्तलक्षण-जब शरीरका रक्त बिगड़ जाता है, तब शरीरमें पीडा, पाक, दाह, मंडल (चकते) खाज, फुंसी, शोथ और गर्मी के अनेक विकार उत्पन्न होते हैं।

रुधिरवृद्धिलक्षण-जब शरीर में रक्त बहुत बढ जाता है तब अंगमें भारीपन, मेदवृद्धि, निद्राधिक्यता, दाह नसोंमें भारीपन और नेत्रोंमें ललाई छा जाती है।

रक्तक्षीण-जब शरीरको रक्त विशेष क्षीण हो जाता है तब खट्टे, मीठे, पदार्थोंके भक्षणमें विशेष इच्छा, मूर्छा, रूखापन और नसोंमें शैथिल्य प्राप्त होजाताहै।

१ वातदूषितरक्तविचार-लालवर्ण, फेन युक्त, हढ, धारा निकलते समय सूक्ष्म और वेगवत्ता हो तथा शरीर में चटके उठें तो विचार लो कि रक्त वादी से बिगड़ा है।

२ पित्तदूषितरक्तविचार-रक्त पीला या काला नीला या हरा रंग लिये हो, उष्णता स्थिरता और दुर्गंधियुक्त हो तथा जिसपर

मक्खी और चींटियां न लगें तो विचारो कि यह रक्त पित्तसे बिगड़ा है, ।

३ कफ दूषित रक्तविचार—जो शीतल, चिकनी, भारी, गेरुये मांसिग्रंथि सदृश तथा अधिक और मंदगामी रक्त होतो विचार लोकि यह रक्त कफसे बिगड़ा है ।

४ त्रिदोष दूषितरक्तविचार—पूर्वोक्ततीनों दोषोंके अनुसार कांजी के समान वर्णका रक्त होतो यह रक्त सन्निपात से विगड़ा है

५ विष दूषित रक्त विचार—काला तथा कांजी या वीर बहूटींके सदृश, विशेष दुर्गंधियुक्त रक्त नासिकासे गिरे जिसके शरीरमेंकुष्ट शोथ; दाह, औरपाक होआवे तो विचारो कि रक्तविषसे बिगडाहै।

रक्तमोचनयोग्यरोगी-शोथ. दाह व्रण, फुंसियां, अंगपाक, शरीरका रक्त वर्ण, वातरक्त; व्यवाई. स्तनरोग, भारीपन रक्त नेत्र, तंद्रा, नासिकाविकार; मुखरोग प्लीहा गुल्म, विसर्प. विद्रधि छाले, शिरोग्रह, उपदंश और वात पित्त इन रोगों युक्त रोगीका रुधिर, सिंगी या जोंक या तुम्बी या छुरे (उस्तरे) या फस्त द्वारा निकलवा देना चाहिये ।

रक्तमोचनवर्जन—क्षीण. जारकर्मयुक्त. नपुंसक. भयातुर, अर्श. शोथः पांडु उदरव्याधि, कास श्वास- छर्दि आतिसार. पसीनायुक्त विरेचनादि पंचकर्महीन. १६ वष से न्यून और ७० वर्षसे अधिक वयका पुरुष और गर्भिणी तथा प्रसूती स्त्री इनका रक्त मत निकल वाओ. यदि कोई रोग रक्तमोचन से ही नष्ट होना संभव होतो जोंक लगाकर रक्त निकलवाना ठीक होगा,

विशेषतः—विषदूषित रक्त फस्द या छुरे से और बातपित्तकफ दूषित रक्त हो तो सिंगी या जोंक या तूमडीसे निकल वाना, चाहिये, जोंक जहां लगाई जातीहै वहांसे१ हाथ, सिंगी या तूमडी बारह अंगुल छुरा १ अंगुल पर्यंत और फस्द खुलवाने से

सर्व शरीर मात्र का दुष्ट रुधिर निकलकरशरीर शुद्ध हो जाता है परन्तु ऐसा होने पर भी क्षुधित' निद्रित, मूर्छित, भ्रमित मदोन्मत्त और मलमूत्र के वेगयुक्त मनुष्यका रक्तमोचन शीतकाल में कदापि मतकराओ, यदि पूर्वोक्त जलों का आदि उपायों से रक्त भली भांति निकले तो उस स्थान पर कूट, सोंठ, मिर्च, पिप्पलीऔर सेंधेनोनका चूर्ण मसलोतो वहांसेपूर्णरूपसेरक्तस्राव होगा, रक्तमोचनके समयविशेष शीततथा विशेष उष्णताका समयबचाकर सम शीतोष्णकालमें रक्तमोचनकराओऔर रोगीका हलका भोजनदो.

रक्तस्तम्भनोपाय -यदि सीर छुडाने पर रक्तस्राव बंद न होतो लोद, रार, निसोत. जौगेंहू.धावडेकीछाल गेरू, सांपकीकांचली रेशमकीराख और सांभरका खाल इनका महीन चूर्ण उस सीरके मुखपर लगाओ और जल्दी से शीतल उपाय करो तो रक्त बंद होजावेगा, यदि सीर छुडाने की नस नाडीपरे होतोउसेदागदोया खारलगाओअथवा कषैली वस्तुका लेपकरो, यदि बायें अंड कोशपर शोथ होतो दहिनेहाथ के अँगूठेके नीचकीनसकोदागदोया दाहिनेहाथ की सीरछुडादो औरजा दाहिनेअंडकोषपर शोथहोतो बाँये हाथके अँगूठेके नीचे की नसको दागदो या बायेंहाथकीसीर छुडादो तो शोथउतरजावेगा, तथा विषूचिकासे रोगग्रसित मनुष्यके पार्श्वभागपरदागदोतोविषूचिका (महामारी) दूर होजावेगी सीरोद्भव व्यथा यदिसीर खुलवाने में अधिकरुधिर निकल जावे तो वहरोगी नेत्ररहित. अर्द्धांग वात. तिमिर तृषा शिरोग्रह, कास श्वास, हिचकी. दाह, और पांडु आदि किसी रोगसे युक्तहोकर अत्यंत रुधिर निकल जानेपर प्राणरहित भी हो जाता है इसी लिये वैद्यको विचारके साथ रक्त मोचन करवाना चाहिये

तथा शमन-यदि दैवात् रुधिर निकलनेस रोगी क्षीणहो जावे

तो उसे साठी चांवल की खीर या दूध दे तथा मांसाहारी को मृगमांस या बकरे का मांसरसका पीडा शांत होकर शरीरहल्का और मन प्रसन्न होनेपर्यंत सेवन कराते रहो, विशेष रुधिर निकल कर शोथ आ जावे तो उसे उष्ण घीसे सेंको या अन्य उपचार करो तो शोथ मिटकर पीडा शांत होजावेगी.

रक्तमोचन वर्जित कर्म—रक्तमोचन कराने वाले रोगीको मैथुन, क्रोध, शीतल जलस्नान बाहिरी वायु, एक स्थानपर बैठे रहना दिनको सोना खारी खट्टा और कडवी वस्तु खाना, चिंता, विशेष भाषण और अजीर्णपर भोजन करना शरीरमें पूर्ण बल प्राप्तहोने तक कदापि ये कर्म न करने दो ।

इति नूतनामृतसागरे विचारखण्डे स्नेहवमन विरेचनहर्र सेवन बस्तिकर्म धूम्रपान रक्त मोचन वर्णन।निरूपणं नाम त्रयोविंशतितमस्तरँगः ॥ २३ ॥

इति विचारखण्ड ॥ २ ॥

सूचना ।

इस तृतीय खण्डमें सर्व रोगोंका निदान उत्तम प्रकार से वर्णन किया गया है इसालिये इसकी निदानखण्ड संज्ञा दी गई है, इसके ४४ तरंग हैं जिन मे प्रथम तरंग मे निदान पंचक, द्वितीय में रोगों के १४ प्रकार तथा शरीरस्थ १४ वेगों के प्रतिरोध से रोगोत्पत्ति का दर्शाव, तृतीय तरँग में शिवजी की कोपाग्नि द्वारा ज्वरका प्रादुर्भाव तथा सन्निपातादि और अवशिष्ट तरँगो में सम्पूर्ण रोगों की लक्षणोत्पत्ति यथाक्रम से वर्णन की गई है जिनकी सूचना यहां न देने का मुख्य कारण यह है कि जिस जिस तरँग में जो रोग वर्णित हैं उनका वृत्तान्ततरंग के प्रथम श्लोक से ही ज्ञात होजावेगा. विशेषतः जहां कहीं उक्त श्लोक में आदि तथा प्रभृति शब्द की योजना दृष्टि पडे वहां पाठक गण ऐसा विचार लेवे कि इस तरंग में श्लोकोक्त रोगों से भी कुछ विशेष रोग हैं ।



अथ निदान खण्डः ३.



❋ निदान पंचक ❋

रोगज्ञानार्थेभवादौ यत्नकार्यो भिषग्वरैः ॥
सति तस्मिन् क्रियारंभः पुण्यायययशसेश्रियै ॥ १ ॥ सु०
रागमादौ परीक्षेत ततोऽनंरमौषधम् ॥
ततःकर्मभिषक् पश्चात्ज्ञानपूर्वसमाचरेत् ॥ २ ॥ भा. प्र

भाषार्थ–प्रथम वैद्यको रोग जाननेके लिये प्रयत्नकरना चाहिये क्योंकि जो रोग निश्चय होने पर चिकित्साका प्रारम्भ करता है वही पुण्य, यश और सम्पत्यादिकको प्राप्त कर सकता है अन्यथा नहीं ऐसा सुश्रुतमें लिखा है तथा भावप्रकाशमें भी लिखा है कि वैद्य प्रथम रोग की परीक्षा करके उसी रोगयोग्य औषध विचारे फिर रोग और औषधका यथार्थ जान उपाय करे यदि इसके नियम विरुद्ध करे तो उसके समान दुष्ट पातकी और हिंसक दूसरा कौन होगा ।

अथ रोगज्ञानार्थपंचोपायमाह

निदान पूर्वरूपाणि रूपाण्युपशयस्तथा ॥
संप्राप्तिश्चेति विज्ञानं रोगाणां पंचधा स्मृतम् ॥ १ ॥ भा०

भाषार्थ–१ निदान, २ पूर्वरूप, ३ रूप, ४ उपशय, और ५ सम्प्राप्तिये पांच विधान रोगज्ञानके लियेहैं जिनसे वैद्य रोगको पहिचान सके उक्त पांचों विषयका स्पष्टी करण नीचे करते हैं

१निदान–१ निमित्तहेतु, २ आयतन, ३ प्रत्यय, ४ उत्थापन

और ५ कारण ये निदान के पर्याय नाम हैं रोग होनेके कारण को निदान कहते हैं,

२ पूर्वरूप-जिस चिह्नसे से उत्पन्न होनेवाले रोग (पहिलेही) जान पड़ जावें उसे पूर्वरूप कहते हैं, यह भी दो प्रकारका है ? सामान्य पूर्वरूप जो कि दोषोंके कारणसे अप्रसिद्ध (गुप्त) रहताहैजेसे ज्वरमें श्रम होना और दूसरा विशेष पूर्वरूप जिसमें वातादि दोष स्पष्टता से दर्शित हो जाते हैं, जैसे वातज्वरकेआ दिमेंजमुहाई और अंगमर्दन होना,

३ रूप पूर्वरूपकी प्रसिद्ध होनेपर उस [पूर्वरूप) कोहीरूप कहतेहैं अर्थात् जिससेरोग स्पष्टतापूर्वक जान पड़ेसो रूपकहता है इसके संस्थान, व्यंजन, लिंग लक्षण, चिह्नः और आकृतिनाम भीहै

४ उपशय-१ हेतुविपरीतकारी; २ व्याधिविपरीतकारी ; ३ हेतुव्याधिविपरीतकारी, ४ हेतुविपरीतअर्थकारी ५ व्याधिविपरीतअर्थकारी और ६ हेतुव्याधिविपरीतअर्थकारी, औषधी अन्नऔर विहारकी सुखकारक योजनाको उपशय तथा सात्म्य और इनकी दुःखकारक योजनाको अनुपशय तथा असात्म्य कहते हैं,

उपशय और अनुपशय दोनोंके अठारह अठारह भेद(दोनों के ३६) हैं १ हेतुविपरीतकारी औषधि. हेतुविपरीतकारीअन्न ३ हेतु विपरीतकारी विहार ४ व्याधीविपरीतकारी औषध, ५ व्याधिविपरीतकारीअन्न, ६ व्याधीविपरीतकारीबिहार, ७ हेतुव्याधिविपरीत कारी औषध८ हेतुव्याधिविपरीतकारी अन्न. ९ हेतुव्याधिविपरीत कारी बिहार. १० हेतुविपरीतअर्थकारी औषध ११ हेतुविपरीत अर्थकारी अन्न. १२ हेतुविरीत अर्थकारी विहार, १३ व्याधिविपरीत अर्थकारी औषध; १४ व्याधिविपरतिकारी अन्न, १३ व्याधिविपरीतअर्थकारी, विहारा १६ हेतुव्याधिविपरीत अर्थकारीऔषध

१७हेतुव्याधिविपरीत अर्थकारी अन्न और १८ हेतुव्याधिविपरीत अर्थकारी विहार ये १८भेद उपशायके और इसी प्रकार इन्हीं नामों के१८भेद अनुपशय के होकर ३६हो जाते हैं

अब उक्त अठारह भेदोंको उदाहरणों के द्वारा दृढ करते हैं

१हेतुविपरीतकारीऔषध- जिसका शीतहेतु (कारण) है ,ऐसे कफज्वर तथा शीतज्वरमें सुंठि आदि उष्णौषध जो कि शीत को नाश करके सुखकारी हो सो हेतुविपरीतकारी कहाती है

२हेतुविपरीतकारी अन्न- श्रमजनित वातज्वरमें कुछ उष्णता लिये हुए मधुरतायुक्त स्निग्ध [चिकना] भात आदि श्रमहर और सुखकारक जो अन्नहैं. सो हेतुविपरीतकारी अन्नकहाते हैं

३हेतुविपरीतकारी बिहार- दिनकेशयनसे बढे हुए कफको शमनकारक रात्रिको जागरण आदिजो व्यवहारहै सो हेतुविपरीत कारी विहार कहाते हैं.

४व्याधिविपरीतकारी औषध- जैसे आतिसारमें पाठादि स्तम्भकतथा सुखकारक औषध व्याधिविपरीतकारी औषधकहातेहैं

५ व्याधिविपरीतकारी अन्न-जैसे अतिसार रोगमें मसुर आदि स्तम्भक तथा सुखकारकअन्न व्याधिविपरीतकारी अन्नकहातेहैं.

६ व्याधिविपरीतकारी बिहार- जैसे उदावर्त रोगमें बलात्कारसे [कांख कांखकर]अघोवायुको निकालना इत्यादिकार्योकोव्याधि विपरीतकारी विहार कहते हैं।

७ हेतुव्याधिविपरीतकारी औषध जैसे वात शोथरोग में इस रोगकी नाशक दशमूल आदि औषधको हेतुव्याधिविपरीत कारी औषध कहते हैं।

८ हेतुव्याधिविपरीतकारी अन्न -जैसे कफ तथा ग्रहणीमें इन

रोगोंके नाशक सुखकारकतक्र (मठा)तथा नद्युक्त मूंगादिलघु अन्न हेतुव्याधिविपरीतकारी अन्न कहाते हैं ।

९हेतुव्याधिविपरीतकारी विहार- जैसे घाममें विचरनेसे जो दाह दाहयुक्त पित्तज्वर उत्पन्न हुआ तो उसपर जल सिंचित खश की टट्टी लगेहुए शीतलस्थानमें कोमल शय्यापर लेटना आदि पित्तज्वर नाशक तथा सुखदाई कार्योंको हेतुव्याधि विपरीतकारी विहार करते हैं

१०हेतुविपरीत अर्थकारी औषध-जैसे पित्तप्रधान से पकेहुए शोथपर पित्तकारक उष्ण अर्कमूलादिका लेप लगादेना जो हेतूक विपरीतकार्यको करे,ऐसी क्रियाको हेतुविपरीत अर्थकारी औषध कहते हैं ।

११ हेतुविपरीत अर्थकारी अन्न- जैसे पित्तशोथपर दाहकारक अन्नका उपयोग इसे हेतुविपरीअर्थकारी अन्न कहते हैं ।

१२ हेतुविपरीत अर्थकारी विहार -जैसे वातोन्मादमें त्रास देने वाले विहार [त्रास देना] वातनाशक तथा सुखकारक होन से हेतुविपरीत अर्थ कारी विहार कहाता है ।

१३ व्याधिविपरीतअर्थकारी औषध-जैसे कफमें मैनफल आदि वांतिकारक पदार्थ जो कि व्याधिसे विपरीत कार्य करनेवाला हो सो व्याधिविपरीत अर्थ कारी औषध:कहातीहै ।

१४ व्याधिविपरीतअर्थकारीअन्न-जैसे अतिसार रोगमें दुग्धआदि रेचक अनभक्षणपदार्थ व्याधिविपरीतअर्थकारी अन्न कहाते हैं

१५ व्याधिविपरीत अर्थकारी विहार-जैसे वमन होते समयमुख में और भी अंगुष्ठ आदि डालकर वमन करना इसे व्याधिविपरीत अर्थकारी विहार करते हैं ।

१६ हेतुव्याधिविपरीतअर्थकारी औषध---जैसेअग्निदग्धपरउष्ण अगर[चंदन्न]आदि औषधिकोलेप जो हेतु तथा व्याधि दोनों के

विपरीत अर्थ को करने वाले हैं सो हेतुव्याधि विपरीत अर्थकारी औषधि कहावेगी।

१७– हेतुव्याधि विपरीत अर्थकारी अन्न–जैसे मदात्यय (मतवाली दशा) में मद्यादि पीने कराना, इसै हेतुव्याधि विपरीत अर्थकारी अन्न (भक्षण) कहते हैं।

१८ हेतुव्याधि विपरीतअर्थकारी विहार–जैसे व्यायामजन्य मूढ बात [कसरत करने से उत्पन्नहुई जो बादी] पर जलमें तैरना इत्यादि ऐसे कार्यको हेतुव्याधि विपरीत अर्थकारीविहार कहतेहैं ये अठारहों उपचार सुखकारक होने से उपशय तथा यही औषधि, अन्न और विहार दुःखकारक होनेसे १८ अनुपशय कहाते हैं, ऐसेही सद्वैद्य को देश काल अवस्था का विचार भी करना चाहिये।

५ सम्प्राप्ति–बिगडे हुए बात, पित्त और कफ अपने स्थानको छोड अंग प्रत्यंगोंमें फैलकर रोगोत्पत्ति करते हैं उस [उत्पत्ति] को सम्प्राप्ति तथा आगति भी कहतेहैं इसे सम्प्राप्ति के १ संख्या २ विकल्प, ३ प्राधान्य, ४ बल और ५ काल ये पांच भेद हैं।

१ संख्या–जैसे ८ प्रकारका ज्वर, ६ प्रकारका अतिसार आदि यह जो प्रत्येक रोगकी संख्या लिखो है इसे संख्यासंप्राप्ति कहतेहैं

२ विकल्प – जिस रोग में वातादि तीनों दोष मिश्रित हों इसदोषसमूह में निश्चय किया जावै कि कौन कौनका, कितना २ अंश है तो इस अंशांश कल्पना को बिकल्पसम्प्राप्तिकहते हैं।

३ प्राधान्य–जो रोग स्वतंत्र हो उसे प्रधान तथा परतंत्र हो उसे अप्रधान कहते है, जैसे ज्वर स्वतन्त्र होने से प्रधान, तथा उसके उपद्रव परतंत्र होने से अप्रधान है इस प्रकार बिषय के निश्चय को प्राधान्य सम्प्राप्ति कहते हैं।

४ बल-- जिस रोगमे निदान पूर्वरूप और रूप आदि सम्पूर्ण अंग हों वह बलवान रोग तथा जिसमें उक्त अंग नहो सो निर्बल रोग कहाता है उक्त विषयके निश्चय को बलसम्प्राप्ति कहते हैं।

५ काल --वात पित्त और कफ के समय आदि को निश्चय करना इसे काल सम्प्राप्ति कहते हैं।

यह सर्व विषय विशष विस्तृत भाव से माधव निदान तथा सुश्रुत आदि ग्रन्थोंमे लिखा है सो वैद्य प्रथम निदानादि पंचो; पायों द्वारा रोगका पूर्ण निश्चय करलेवै ।

रोगों के भेद ॥

रोगस्तु दोषवैषम्य्य रोग सात्म्यमरोगता ॥
रोगादुःखस्य दातारो ज्वरप्रभृतयोहिते ॥ ४ ॥ भा॰प्र॰

भाषार्थ—वात, पित्त और कफकी न्यूनाधिकताको रोग तथा इनकी समता को आरोग्य कहते हैं ज्वर आदि रोगही दुःखदेने वाले हैं इस लिये हम प्रथम रोगों के १४ भेदों को दर्शाते हैं जिनकी परिभाषा आगे लिखेंगे ।

१ सहजरोग, २गर्भजरोग, ३ जातज्ञातरोग,४पीडा जनितरोग, ५ कालरोग, ६ प्रभावजरोग, ७ स्वभावजरोग, ८ देशजरोग,९ आगंतुकरोग,१० कायिकरोग . ११ अंतररोग, १२ कर्मजरोग, १३ दोषजरोग और १४ कर्मदोषजरोग ।

१ सहजरोग—माता पिता के वीर्य दोष से सन्तान को जो रोग होवे सो सहजरोग कहाता है ।

२ गर्भजरोग-बालक गर्भसेही कुबड़ा, पंगुला, छःउंगलीयुक्त तथा किसी अंगमें हीन उत्पन्न हो सो गर्भजरोग कहाता है।

३ जातज्ञातरोग--बालकु गर्भस्थ होने पर माता के मिथ्या

आहार विहार से बालक को मूकता आदि रोग हों उन्हें जातज्ञात रोग जानो।

४ पीडा जनित रोग-शस्त्र प्रहार आदि से जो अस्थि भंगादि रोग उत्पन्न हुए सो पीडा जनित रोग कहाते हैं।

५ काल रोग-शीत, उष्ण और बर्षाऋतु में जलवायु के विपर्यय से जो रोग उत्पन्न हो सो काल रोग कहाता है।

६ प्रभावजरोग-इष्टदेव, गुरु, तपस्वी और वृद्धादिक शाप तथा ग्रहों की प्रतिकूलता से उत्पन्न हो सो प्रभावज रोग कहाते हैं।

७ स्वभावजरोग-भूख प्यास और बृद्धापनादि के कारण से जो उत्पन्न हुए सो स्वभावज रोग कहाते हैं।

८ देशजरोग-किसी देश में मनुष्य काले भूरे तथा लाल रंग लिये उत्पन्न होते हैं इसी प्रकार किसी देश में कोई रोग विशेषता पूर्वक होता है।

९ आगंतुक रोग--क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष और भूतादि बाधा से जो रोग उत्पन्न हो सो आगंतुक रोग कहाते हैं।

१० कायिक रोग--ज्वर आदि विषरोग पर्यंत जो मुख्य रोग हैं सो कायिक रोग कहाते हैं।

११ अंतर रोग-चित्त भ्रम (हौल दिल) आदि विकारों को अंतर रोग कहते हैं

१२ कर्मजरोग-इस जन्म के ब्रह्महत्यादि पाप तथा पूर्व जन्म के दुष्कर्मों से जो उत्पन्न हो सो कर्मजरोग कहाते हैं।

१३ दोषजरोग-वात, पित्त और कफसे जो उत्पन्न हो सो दोषज रोग कहाते हैं।

१४ कर्मदोषजरोग-ब्रह्महत्यादि पाप तथा वात, पित्त, कफ, इन दोनों कारणों से जो रोग उत्पन्न हो सो कर्मदोषजरोग कहाते हैं।

उक्त समग्र रोगों के दो भेद और भी किये हैं अर्थात् १ साध्य, २ असाध्य, असाध्य के पुनः दो भेद कहते हैं अर्थात् १ साध्य २ कष्टसाध्य ।

१ साध्य—जो थोडेही यत्न से शमन होजावै ।

२ कष्टसाध्य— जो बहुतेक यत्न करने पर कठिनतासे शान्त हो

२-असाध्य के भी दो भेद कहते हैं अर्थात १ याप्य, २ असाध्य

१ याप्य-रोग पर जब तक औषधि चलती रही तथा पथ्य से बर्ताव रहा तब तक रोग दबा रहा और ज्योंही आषधि सेवन छोडकर कुपथ्य हुआ कि वहीं रोग पुनः उत्पन्न होगया ।

असाध्य—जिस रोग पर कोई भी औषधि गुण न करै और अन्त में वह रोग शरीर को नष्ट कर देवै ।

उक्त भेदोंके व्यतिरिक्त रोग के और भी अनन्त भेद हैं जिनको ईश्वरही जानते हैं परन्तु सद्वैद्य को चाहिये कि अपने शास्त्र तथा बुधिबल से उनसब भेदों को इन चौदह भेदों के अंतर्गतही समझ लेवे। रोगों की उत्पत्तिका दूसरा कारण तथा विभेद और भी सुनो

इस शरीर में निम्न लिखित चौदह वेगहैं मनुष्यको उचितहैकि किसी वेगको निष्कारण उत्पन्न न करै और जो जो वेग स्वयं उत्पन्न हो उसे न रोके तथा उस वेग जनित कार्यको अवश्य करै तो शरीर सदा निरोग रहैगा, यदि वेगको उत्पन्न करै या स्वयं उत्पन्न हुए वेग को रोकै तो शरीर अवश्य रोगयुक्त होजावेगा।

१ अधोवायु वेग, २ रेचन (मल) वेग, ३ मूत्रवेग, ४ डकार वेग, ५ छींक वेग, ६ तृषा वेग, ७ क्षुधावेग, निद्रा वेग ९ खांसीवेग १० श्रमजनित श्वास वेग, ११ जमुहाईवेग, १२ अश्रु वेग, १३ वमन वेग और १४ काम वेग ।

इन प्रत्येक के रोकने से जो २ हानि प्राप्त होती तथा रोग उत्पन्न होते सो दर्शित करते हैं।

अधोवायुवेग-रोकने से गोला, पीड़ा, अफरा, उदर पीड़ा आदि रोग उत्पन्न होकर अधोवायुका निःसरण उत्तम प्रकार से नहीं होता इसलिये अधोवायु रुकने से मूत्र कृच्छ्र, बद्धकोष्ठ, नेत्र रोग और हृदय पीड़ा आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

२ मलवेग-रोकनेसे हाथ, पांव, मस्तक, हृदय आदि में पीड़ा उत्पन्न होकर वायुका ऊर्ध्वगति और अधोवायु का प्रति बन्ध तथा उदावर्त और पीनस रोग उत्पन्न होते हैं और अधोवायु प्रतिबन्ध लिखित हानियां भी होंगी।

३ मूत्रवेग-रोकनेसे अंगमें फूटन मूत्र विबन्ध (पथरीका रोग) और मल प्रतिबन्ध लिखित रोगभी उत्पन्न होते हैं।

४ डकारवेग-रोकने से अरुचि, शरीरकंपन, हृदयकी रुकावट, अफरा, खांसी और हिचकी आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

५ छींकवेग-रोकने से सीस में पीडा, शरीरकी सब इन्द्रियों में दुर्बलता, ग्रीवास्तम्भन (गर्दन जकड जाना) मुख में टेढ़ापन आदि व्यथा उत्पन्न हो जाती हैं।

६ तृषावेग-रोकनेसे मुखशोष (मुँहसूखना) समग्र अंगमें फूटन बधिरपन, (बहराहोना) मोह, भ्रम और हृदय में पीडा होतीहै।

७ क्षुधावेग-रोकनेसे सब अंग टूटना, भोजनपर अरुचि, समग्र वस्तुओं पर ग्लानि; शरीरमें, कृशता [दुबलापन] बांई तरफ का शूल चलन, भ्रम, बिना श्रम किये श्रम होना सब इन्द्रियों में शिथिलता होकर शरीर का वर्ण बदल जाताहै।

निद्रावेग-रोकने से मोह, मस्तक और नेत्रों में भारीपन आलस्य जमुहाई और अंगों में पीडा होती है।

९ खांसीवेग–रोकनेमें अन्नपर अरुचि, हृदय रोग, श्वास रोग शोषरोग हिचकी उत्पन्न होकरवही(खांसी) रोगविशेष होताहै ।

१० श्रमजनित श्वासवेग–रोकनेसे गोला, हृदयरोग और मोह उत्पन्न होता है ।

११ जंभुहाईवेग–रोकनेसे मस्तककी पीडा, इन्द्रियोंमें दुर्बलता और मुख तथा ग्रीवा में टेढ़ापन होजाता है ।

१२ अश्रुवेग–रोकने से पीनस, गोला, अरुचि, नेत्ररोग, मस्तक पीडा, हृदयमें पीडा ग्रीवा में पीडा उत्पन्न होतीहै ।

१३–वमनवेग रोकनेसे रक्तवात, रक्तपित्त, कोढ नेत्र रोगपामा (खुजली) श्वास, खांसी, ज्वर हृदय पीडा सूजन, मुखपर श्याम छाया और कीलें ये रोग उत्पन्न होते है ।

१४ कामवेग–रोकनेसे प्रमेह, शुक्रविरोध (सुजाक) लिंगेन्द्रिय में पीडा तथासूजनाचित्तभ्रम और अरुचि इत्यादि रोगउत्पन्न होते हैं.

ज्वराधिकारः ॥

यतःसमस्तरोगाणां ज्वरो राजेति विश्रुतः ।
अतो ज्वराधिकारोऽत्र प्रथमं कथ्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थ–सब रोगों का राजा ज्वर है इसलिये पहिले यहां ज्वर का अधिकार लिखते हैं ।

ज्वरस्य प्रथम-मुत्पत्तिमाह ।

दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिश्वाससंभवः ।
ज्वरोऽष्टधापृथग्द्वन्द्वसंघातागन्तुजःस्मृतः ॥ २ ॥ सु.

भापार्थ–दक्षप्रजापतिके अपमानमें क्रोधितहोकर श्रीमहादेवजी ने निजश्वासमज्वरको उत्पन्न किया सो ज्वरआठप्रकारका है अर्थात् १ वातज्वर २ पित्तज्वर ३ कफज्वर ४ वातपित्तज्वर, ५ वातकफज्वर, ६ पित्तकफज्वर, ७ सन्निपातज्वर और ८ आगंतुक ज्वर ।

मूर्ति पश्चोक्ता सुश्रुतने ॥

रुद्रकोपाग्निसम्भूतः सर्वभूतप्रणाशनः ॥
त्रिपाद्भस्मप्रहरणस्त्रिशिराःसुमनोहरः ॥३॥
वेघाघ्रचर्मवसनः कपिलामाल्यविग्रहः ॥
पिंगेक्षणोह्रस्वजंघोबीभत्सोवलवानलम् ॥४॥
पुरुषोलोकनाशार्थमसौज्वरइतिस्मृतः ॥५॥
अन्यच्च–ज्वरस्त्रिपाज्जस्त्रिशिराःषड्भुजोनवलोचनः ॥
भस्मप्रहरणोरुद्रःकालान्तकयमोपमः ॥६॥

भाषार्थ–नीचे ज्वरके अवयव देखो, इस ज्वरके ३ चरण३ मस्तक ९ नेत्र ३ भुजा और २ ह्रस्व [छोटी] जांघेंहैं ज्वर शृंगार–कुछ ललामी लिये हुये पीलावर्ण और पीलेही नेत्रहैं व्याघ्रचर्मके वस्त्र पहिने भस्म रमाये गलमें माला डाले ऐसी भयावनी मूर्तिको धारणकिये सर्व प्राणमात्रको नष्ट करनेके लिये श्री शंकरजी की कोपाग्निसे ज्वर उत्पन्न हुआ है।

चित्र २

पृथगदोषःप्रभूतानांज्वराणां हियथाक्रमात् ॥
तरंगेप्रथमेचात्रनिदानंकथ्यतेमया ॥ ७ ॥

भाषार्थ -वातादि पृथक२दोषोंसे उत्पन्न भये जो वात पित्त और कफज्वर तिनकानिदान इस प्रथमतरंगमें यथाक्रमसेकहतेहैं

ज्वरप्राप्ति–जब वात पित्त और कफ मनुष्य के मिथ्या आहार विहारके कारण रसमें प्राप्तहोकरउस [रस] को बिगाड देते और अग्निबाहर निकाल कर शरीरको तप्तकर देतेहैं तब इस दशावाले मनुष्यको ज्वर प्राप्त हुआ कहते हैं।

१ जिनका निवास नाभि और स्तनोंकेमध्य आमाशय [आंवस्थान] में रहते हैं।

ज्वरमात्रके सामान्यलक्षण—शरीरउष्ण होना,पसीना निकलनों क्षुधा मंद होना.अंगजकड़ना. मस्तकमें पीडा होना और हाथपैर फूटना ये सब लक्षण संगही हों तो ज्वर प्राप्त हुआ जानों ।

१ वातज्वरका पूर्वरूप—जमुहाई आना औरहाथपाँवमेंपीडाहोना

२ पित्तज्वरका पूर्वरूप किसी कार्यमें चित न लगना और नेत्र जलना ॥

कफज्वरकापूर्णरूप—अन्नसे अरुचि और शरीर भारी होना, उक्तलक्षण तत्तत् ज्वर आनेके पूर्वही मे प्रकट होजाते हैं ।

१ वातज्वरलक्षण—शरीर कंपने लगेज्वरका विषम (न्यूनाधिक कभी आनेः कभी सूक्ष्म) वेग होवे, नींद और छींकका अभाव शरीरमें रूखापन, मस्तक और अंग में पीडा, जिह्वा का स्वाद न पहिचानना, रेचनकी रुकावट, पेटमें शूल, अफरा, आदिपीडा हो, और जमुहाई विशेष आवे तो वातज्वर जानों ।

२ पित्तज्वरलक्षण—नेत्रों में दाह हो, मुख खट्टाहोजावे, प्यास अधिक लगे,मूर्छा (चक्कर,गश्त) आवे, शरीर अति उष्णहो.ज्वरका विशेष वेगहो,रेचक द्रव (दस्तपतला) हो. वमन हो निद्रा न आवे,मुख सूखे या पकजावे, पसीना आता हो मलमूत्र और नेत्र पीले पड़ गये हों तो पित्त ज्वर जानो ।

३ कफज्वरलक्षण—अन्नपररुचि न हो.शरीर भारीहोजावे;रोम खड़े होजावें. मूत्र और नख श्वेत होजावें. निद्रा अधिक आवे शरीर ठंडा सा हो अर्थात् हाथपांवतो जलसेधोनेकेसदृशशीतल और शेष देह किंचित् उष्ण होजावे, मुख मीठाहो ज्वरका विशेष वेग न रहे आलस्य अधिक आवे, श्वास कास आवे नाक बहै तथा कफ जन्य मलसे नाक रुक जावे तो कफज्वर जानो ।

इति नूतनामृ० निदानखंडेवातादिज्वरत्रयः निदाननिरूपणं नामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

द्वन्द्वज्वर.

द्वन्द्वदोषप्रसूतानां ज्वराणां च यथाक्रमात् ॥
तरंगे द्वितीये चात्र निदानं लिख्यते मया ॥

भाषार्थ- वातादि दो दो दोषों से उत्पन्न हुए जो द्वन्द्वज वात पित्त, वातकफ और पित्त कफ ज्वर तिनका निदान इस दूसरे तरंग में लिखते हैं ॥ १ ॥

४ वातपित्तज्वरलक्षण-मूर्छा आना, निद्रा का अभाव, मस्तक में पीडा, कंठ और मुख सूखके वमन होना, रोमांच खडे होना अन्न पर अरुचि, अन्धेरी आना, अंगमें पीडा, जमुहाई और प्रलाप (बकवाद) ये वात पित्तज्वर के लक्षण हैं ।

५ वातकफज्वरलक्षण- खांसी, अन्नपर अरुचि, संधियों में पीडा, मस्तक पीडा, नाक का वहाव, शरीर से अत्यन्त थकाव कंप और भारीपन नींदका अभाव पसीनों का बहाव श्वास पेटमें शूल हंसकी सी नाडी गति धूसर (धुंवेका रंग) श्वेत चिकना किंवा सुरमेका जैसा मूत्र मलभी काला या चिकना हो नेत्र धूसर हो मुखका स्वाद कषैला या मीठा जीभ काली अथवा श्वेत और (गीलापन) को लिये हो, कंठ में कफसे घर्राटा चले और शरीर ठंडा हो जावे तो वात कफज्वर जानना चाहिये ।

६ कफपित्तज्वरलक्षण-मुख और जिह्वा कफके युक्त हो. तंद्रा (आधे नेत्र खुले और आधे बंद) मोह खांसी अन्नपर अरुचि प्यासकी अधिकाई बारंबार दाह और ठंढ, शरीर और हृदयमें पीडा, मूर्छा भूलने लगे, शरीर जकडासा जाना पडे. नाडी हंस या मेंडकके सदृश चले, मूत्र कुछ ललाई लिये हुए श्वेत और चिकना हो, मलभी ललामी पर हो नेत्र मेंडक के वर्ण

सदृश हों मुख मीठा और कभी कभी कडुआभी हो और जिह्वा लाल या श्वेत हो तो पित्तकफज्वर जानो इन सबका निदान श्रीतिमिरभास्कर में लिखा है ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे वातादिद्वन्द्वज्वर वर्णन नाम द्वितीयस्तरंगः ॥२॥

सन्निपातज्वर ।

गुणदोषैः प्रभूतस्य सन्निपातज्वरस्य हि॥
तरंगे तृतीये चात्र निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थ–त्रिदोषसे उत्पन्न जो सन्निपातज्वर तिसका निदान इस तृतीय तरंग में लिखते हैं ॥ १ ॥

सन्निपातज्वरकारण–जोमनुष्य अतिचिकना. मीठा. खट्टा तीखा और रूखा भोजन करे, रुचिसे विपरीत भोजन करे, मलिन, जल पीवे क्रोधवती,रोगयुक्त स्त्रीसे संभोग करे बिगड़ा हुआ या कच्चा मांस खावे,तथा शीतोष्ण,देश और काल के विरुद्ध व्यवहार रक्खे तो उसे सन्निपात ज्वर उत्पन्न हो जावेगा ।

लक्षण–जिसको क्षणमें दाह और क्षणमें ठंड लगे, स्वभाव बदल जावे, इन्द्रियां अपने२ धर्मको त्याग दें शरीर की हड्डी, (हड्डियोंका जोड)और मस्तक में विशेष पीडाहो, नेत्रों से आंसू बहे,नेत्र काले या लाल होजावें,कानोंमें विचित्रशब्द और पीडा जान पडे,कंठमें कांटे पड जावें.तंद्रा.मोह.कास,श्वास,भ्रम और अन्नपर अरुचि होजावे,प्रलाप करने लगे.जिह्वा काली;खर दरी या (कठोर)हो जावे. रुधिर युक्त कफ निकले. दिनको निद्रा आवे, रात्रिको निद्रा न आवे, पसीना कभी अधिक और कभी बंद हो जावे , रोगी अकस्मात् नाचना. गाना, रोना हंसना किंवा मस्तकादि अवयव हिलाना ऐसे ऐसे कार्य करने लगे प्यास वारंवार लगे,हृदय मे पीडा हो मल मूत्र थोडा बहुत

हो या पुर्णही रुकजावे,शरीर कृश हो. कंठ में कफका घरौंटा चले मूक हो जावे, ओष्ठ तथा इन्द्रियां पक जावें, पेट भारी हो, नाडी की गति महामंद शिथिल सूक्ष्म और टूटीसी हो. मूत्र हलदी के सदृश पीला, रक्तके समान लाल तथा काला हो जावे और मल भी श्वेतयुक्त श्याम तथा शूकरमांसवत हो जावे. जिसमें उपरोक्त लक्षण हो उसे सान्निपातज्वरग्रसित जानो.

वेग तथा बल—ऊपरोक्त लक्षणधारी सन्निपातज्वर और काल (मृत्यु) में कुछ भेद नहीं है. जो वैद्य इस ज्वरसे विजय पावे (इसका हटावे, दूर करे, रोगीको आरोग्य करे) उससे अधिक प्रतापी कौन होगा? [कोई नहीं.]

रोगी उस वैद्यको (जिसने उसे सन्निपातरूपी अजगर के मुँहसे बचाया) जो कुछ देवे सो थोडाही है, रत्न, सुवर्णादि असंख्य द्रव्य तो क्या वरन अपनी आत्मा भी सर्वदा वैद्यकी सेवामें अर्पण कर देवे तोभी उसके ऋण से उऋण नहीं हो सकता क्योंकि उसने कालसेही बचाया है.

चरक.सुश्रुत और वाग्भटके मतसे तो उक्त प्रकारका ही सन्निपात है परन्तु अन्य ग्रंथोंके मतसे ऋषियोंने इसके ५२ भेद कथन किये हैं जिनमेंसे १३ प्रकार तो मुख्यही हैं अर्थात् १ संधिग. २अंन्तक.३रुग्दाह;४चित्तभ्रम,५शीतांग,६तंद्रिक.७कंठकुब्ज. ८कर्णक ९भग्ननेत्र,१० रक्तष्ठीवी.११ प्रलाप १२ जिह्वक और १३ अभिन्यास ।

---

१ सन्निपातस्य कालस्य कश्चिद्भेदो न वर्तते । चिकित्सको जयेत् यस्तु यस्तस्मात् प्रतापवान् ॥ १ ॥

२ त्रिदोषजगरग्रस्तं मोचयेयस्तु वैद्यराट् । आत्मापि तस्मै दातव्यः किम्पुनः कनकादिकम् ॥ १ ॥ वैद्यजीवने [illegible] ।

सन्निपातावधिबल—अर्थात हर प्रकारका सन्निपात अपने जुदे जुदे नियत कालपर्यंत भोगवान रहतेहैं जिनमेंसे १ संधिग ७ दिन, २अन्तक १० दिन, ३रुग्दाह २० दिन, ४ चित्तभ्रम ११ दिन, ५शीतांग १५ दिन, ६ तांद्रिक २५ दिन, ७ कंठकुब्ज १३ दिन ८ कर्णक ९० दिन (३मास), ९भग्ननेत्र ८ दिन, १० रक्तष्ठीवी १० दिन, ११प्रलाप १४ दिन, १२ जिह्वक १६ दिन, और १३ अभिन्यास सन्निपात १५ दिवसतक रहताहै सो सन्निपातमें कोई भी उपद्रव उठआवे तो रोगीको तत्काल नष्ट होनेमें विलम्ब नहीं लगता इसलिये सद्वैद्य उपद्रव शमनपर पुर्ण ध्यान रक्खे)

सन्धिगसन्निपातज्वरलक्षण—जिस रोगी की गांठ गांठ सन्धि (सन्धि) पर अधिक शुल चले, शरीर सूज जावे, पेट भारी हो, शिथिल अंग हो, बल नष्टहो, वायु तथा कफका अतिकोप हो और निद्रा न आवे तो सन्धिग सन्निपात जानो ।

२ अन्तक सन्निपात ज्वरलक्षण—शरीरमें अत्यन्त दाह हो, देह कम्पायमान होनेलगे, मस्तक इधर उधर पटके श्वास कास और हिचकी आवे, प्रलाप करे और वस्तुज्ञान न रहे तो अन्तक सन्निपात जानो ।

३ रुग्दाहसन्निपातलक्षण—जोरोगी प्रलाप करे, शरीरमें अति दाह हो, उदरमें शुल चले, शरीर व्याकुल हो और प्यास अधिक लगेतो रुग्दाह जानो ।

४चित्तभ्रमसन्निपातलक्षण—रोगीको भ्रमहो, मंदगति औरमोह होवे, विक्षिप्त(पागल)के समान नेत्र होकर बका करे नाचै, गावै, हँसे और श्वास अधिक आवे तो चित्तभ्रम जानो ।

५शीतांगसन्निपातलक्षण—समग्र शरीर हिम (वर्फ) के समान ठंढा होवे उस रोगी को शीतांग सन्निपात हुआ जानो ।

६ तान्द्रिकसन्निपातलक्षण–रोगीको तंद्रा अधिकहो ज्वरवेग से चढ़े प्यास अधिक लगे, जिह्वा काली पड़कर खरदरी हो जावे श्वास चले, अतिसार दाह और कानमें पीडा होतो तान्द्रिक सन्निपात जानों।

७ कंठकुब्जसन्निपातलक्षण–मस्तक दुखे, दाह पीड़ा अधिक हो शरीर अत्यंत तप्तहो, कंठरुककर सूखजावे. शरीर में पीडा होकर बकने लगेतो कंठकुब्जसन्निपात जानों(यह कष्टसाध्यहै)

८ कर्णिकसन्निपातलक्षण-शरीरमें ज्वरहो, कानके नीचे शोथ (सूजन) हो श्वास चले. शरीर कंपे,प्रलाप करे पसीना निकले कंठ सूखे,प्यास लगे और मोह भय हो उसे कर्णिक सन्निपात जानो कर्णिक सन्निपातके लक्षण अमृतसागर में नहीं है इस लिये चक्रपाणिदत्त के मतानुसार लिखे हैं।

९ भग्ननेत्रसन्निपातलक्षण–रोगीकी स्मरणशक्ति नष्ट होजावे ज्वरका अधिकवेगहो, नेत्र टेढ़े तथा चंचल होजावें. शरीर कंपे भ्रमहो, और प्रलाप करने लगे तो भग्न नेत्र सन्निपात जानो।

१० रक्तष्ठीवीसन्निपातलक्षण–मुखद्वारा थूकके साथ रक्तगिरे प्यास अधिक लगे मोह उत्पन्न हो, श्वास अधिक चले, पेटमें शूल उठे, अफरा भ्रम और वमन होतो रक्तष्ठीवी सन्निपात है

११ प्रलापसन्निपातलक्षण–शरीर कम्पित हो. विशेष प्रलाप करे; देह विशेष उष्ण हो,दाह अधिक हो ज्वरका वेग तीक्ष्ण हो श्वास चले अंगमें विकलता (बेचैनी, तलमलाहट) हो और रोगी संज्ञाहीन होजावे अर्थात् बेसुध (जो मनुष्यादिक नहीं पहिचाने) तो प्रलाप सन्निपात जानों।

१२ जिह्वकसन्निपातलक्षण. श्वास चले ताप अधिक हो जिह्वा

यह दुःसाध्य है॥

कठोर (करडा) पड जावे तथा जिह्वामें कांटे पडकर रोगी मूक [गूंगा] बहरा और बलहीन हो जावे तो जिह्वक सन्निपात जानो

१२ अभिन्यासंसन्निपातलक्षण-निद्रा न आवे, छाती अधिक हो; शरीर कांपे, मस्तक की चेष्टा बिगड जावे, गद्गदवाणी हो जावे, जिह्वा काष्ठके समान(कठिन)हो जावे और सर्वेन्द्रियां अपने अपने विषय त्यागदें तो अभिन्यास सन्निपात जानो ।

इति नूतनामृ० निदानखंडे सन्निपातज्वरभेदवर्णन नामतृतीयस्तरंगः ३ ॥

आगन्तुकज्वर

आगन्तुप्रभृतीनां ज्वराणांहि यथाक्रमात् ॥
तुर्ये तरंगे वै चात्र निदानं लिख्यते मया ॥१॥

भाषार्थ—अब हम इस चतुर्थ तरंगके आदिमें यथाक्रमसे आगन्तुक आदि ज्वरों का निदान लिखते हैं ॥ १ ॥

१ शस्त्रप्रहार, २ भूतबाधा, ३ काम, क्रोध, शोक भयकी अधिकता ४ विषभक्षण और ५ शाप इन कारणों के द्वारा जो ज्वर उत्पन्न हुआ हो सो आगंतुकज्वर कहाता है ।

१ शस्त्रकीचोटसेउत्पन्नहुआआगंतुकज्वर—शस्त्रप्रहारसे उत्पन्न पीडा बादी को कुपित करती है सो बादी रुधिरको बिगाड के चोट लगे हुए स्थानपर अत्यंत पीडा, सूजन; तथा शरीर के बलको बदल देती है उक्त लक्षण धारण कर ज्वर उत्पन्न हो सो शस्त्रकी चोटसे उत्पन्न हुआ जानो ।

२ भूतादि बाधासे उत्पन्नहुआ आगंतुक—शरीरमें उद्वेग (त्रास दुःख गडबड, हडफूटन) होवे, कभी हँसे कभी रोवे कभी कम्पायमान हो प्रलाप करे और चित्त स्थिर न रहे तो उक्तज्वर जानो

१ यह कष्ट साध्य है २ यह अभिन्यास सन्निपात महा असाध्य,मृत्यु रूप है इसके आराम पाना ईश्वर कृपा तथा सद्वैद्य के हाथ है ।

३ काम, क्रोध, शोक, भयको अभिघातसे उत्पन्न हुआ इसके ५ भेद हैं।

क-कामज्वर-(पुरुषको) होतो भोजन में अरुचि, मनमें दाह निद्रा, लज्जा, बुद्धि धैर्य आदिका नाश, हृदयमें पीडा उठे केवल सम्भाग में ही ध्यान लगा रहे और श्वासोच्छ्वास (सांस भरनी) करेतो उस पुरुष को कामज्वर हुआ जानो।

ख-कामज्वर-(स्त्रीको) होतो मूर्छा, समग्र अंगमें मरोडे प्यास, नेत्रों में चपलता, स्तनमर्दन करानेकी इच्छा विशेष हो, पसीना निकले, हृदय में दाह हो, भोजनसे अरुचि, लज्जा निद्रा और धैर्यका नाशहो उस स्त्रीको कामज्वर हुआ जानो।

ग-क्रोधज्वर-शरीरमें कम्पन, शिरमेंपीडा तथा उक्त पित्तज्वर के सदृश लक्षण हों तो क्रोधज्वर जानो।

घ-शोकज्वर-(जिसे 'मानसीज्वर' संज्ञा भी दीहै) पुत्र, मित्र स्त्री आदिके वियोगसे, धनहरणमें और राजादि बलिष्ठ पुरुषों के तिरस्कारसे मानसीज्वर उत्पन्न होताहै इसमें रोगीको शोक अधिक हो, अतिसार हो और सब वस्तुओं से ग्लानि होजातीहै।

ङ-भयज्वर-प्रलाप करे, अतिसार हो, चित्त स्थिर न रहे और भोजन से अरुचि होजावे तो भयज्वर जानो।

४ विषआदि भक्षणसे ज्वर-स्थावर तथा जंगमविष खानेसेजो ज्वर उत्पन्न हो उसमें रोगीके मुखपर श्यामता छाजातीहै; अतिसार भोजनमें अरुचि और प्यास अधिक लगतीहै, मूर्छा और सब शरीर में सुई छेदनके सदृश पीड़ा होतीहै, उक्त लक्षण अमृतसागरमें नहीं लिखेहैं अतएव हमने माधवनिदान से लिखेहैं।

---

१ संखिया वत्सनाग हरताल आदि भक्षण से २ सर्प बिच्छू आदि विषयाले जीवों के काटने से।

५ शापज्वर-गुरु,माता,पितादिके तिरस्कार करने के फलसे उनका शाप करनेसे जो ज्वर हो सो शापज्वर कहाता है. इसज्वरमें हृदफूटन होकर शरीर विकल होताहै औरशेष लक्षण सब ज्वर के सदृश होजाते हैं. इति आगंतुकज्वर।

विषमज्वरोत्पत्ति-मनुष्यको ज्वर आके छूटगया हो, पश्चात् किसी प्रकार के कुपथ्यसे वात दि अल्प दोषकुपित होके विषम व्यतिरिक्त रुधिरादिकषट् धातुओं में से किसी धातुमें प्राप्त होके विषमज्वरको उत्पन्न करते हैं

विषमज्वरलक्षण-शरीरको शीत वा उष्ण करके चाहे जब ज्वरका वेग हो आवे और यह वेग कभी न्यून और कभी अधिक होता रहे तो इसे विषमज्वर जानो

विषमज्वरके ५ भेद हैं-अर्थात् १ संतत, २ सतत, ३ अन्येद्यु, ४ तृतीयक और ५ चतुर्थक।

१ संततविषमज्वर-जो ज्वर ७ या १० अथवा १२ दिन पर्यंत निरंतर एकसा बनारहे फिर अपनी अवधिपूर्ण होने पर शांत हो सो संततज्वर कहाता है, संतत = निरंतर = सदैव = सदा नित्य = प्रत्येक काल।

२ सततज्वर-जो ज्वर रात्रि दिन (८ प्रहर, २४ घंटे) में दो बार चढे तो सततज्वर कहाता है।

३ अन्येद्यु-जोज्वरएक दिनके अंतरसे आवेसो अन्येद्युकहाता है इसे इकतरा (एकतरा) भी कहतेहैं,जो एक दिन चढ़ता और एक दिन शांत रहता है।

तृतीयक-जो ज्वर तीसरे दिन चढे सो तृतीयक कहाता है इसे तिजारी भी कहते हैं जो एक दिन चढ़ता और दो दिन रहता है।

चतुर्थक-जो ज्वर चौथेदिन चढ़ैसो चतुर्थक कहाताहै, इसे चौथैयाभीकहतेहजो एक निदचढना और तीन दिनशांतरहताहै

जीर्णज्वर-ज्वर अपनी आरम्भ तिथिसे ७ दिनतक तरुण, १४ दिन पर्यन्त मध्य २१दिन पर्यन्त प्राचीन और २१ दिनकेपश्चात् वही जीर्ण ज्वर कहाने लगता है, रोगीके शरीर में ज्वर१ दिन रह कर देह दुर्बल तथा रूखी होजावै क्षुधा न लगै, और पेट में सदा भारीपनही बना रहै तो उसे जीर्णज्वर जानो,

अजीर्णज्वर-बारम्बार द्रव रेचन (पतले दस्त) हो खट्टी डकार आवै, वमनकी इच्छा (जीमिचलाना) हो और उदरमें पीडा रहै तो उसे अजीर्णज्वर जानना चाहिये।

दृष्टिज्वर-जमुहाई अधिक आवै उदरमें पीडाहोवै हाथ पांवमें फूटन होवै और शरीर निशक्त होजावै तो दृष्टिज्वर जानो।

रुधिर प्रकोपज्वर- अंगमेंफूटनहोवै, मुखसेश्वासचलेशरीरमेंशिथिलतातृषा और मूर्छाहो और पेटफूलैतो रुधिरप्रकोज्वर जानो

मलज्वर-जिसमें मुखशोष, दाह, भ्रम मूर्छा वमन, हिचकी उदरशूल और शीशपीडा हो उसे मलज्वर कहते हैं।

कालज्वर-ज्वरका वेग अधिकहो, ऊर्ध्व (ऊपरको) श्वासचलै शरीरकी कांति नष्ट हो, पसीना अधिक निकले, शरीर शिथिल हो, नाडी अपना स्थान छोड देवै और समस्त इन्द्रियां अपना२ कर्तव्य छोड देवें तो काल (मृत्यु) ज्वर जानो।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे आगंतुकादिज्वर लक्षण निरूपणं नाम चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

ज्वरोपद्रव।

ज्वरस्योपद्रवाणां च श्वासादीनां यथाक्रमात् ॥
तरंगे पञ्चमे चात्र वर्णनं क्रियते मया ॥ १ ॥

भाषार्थ :-इस पांचवें तरंग में ज्वर के श्वास आदि उपद्रवों का वर्णन करते हैं ॥१॥

श्वासो मूर्छाऽरुचिश्छर्दि स्तृष्णा तीसार विड्ग्रहाः॥ हिक्का कासा ऽङ्गदाहाश्च ज्वर स्यो पद्रवादश॥२॥ भा.

भाषार्थ—ज्वर के १० उपद्रव १ श्वास, २ मूर्छा ३ अरुचि ४ वमन (उलटी)५ तृषा ६ अतिसार, ७ विड बंध [मलकी रुकावट),८हिचकी ,९ कास और १० अंगमें दाह ये ज्वर के दश उपद्रव हैं ऐसा भाव प्रकाश में लिखा है

ज्वर कुटुम्ब—१प्यास ज्वर की स्त्री ,२श्वास कास दोनों पुत्र ३हिचकी वमन दोनो कन्या,४ अतिसार भ्राता.५ अरुचि बहिन (भगिनी) विड्बंध (मल रुकना) भानजा ७ अफरा श्वशुर और ८ मूर्छा दासी है सो इस कुटुम्ब में जो बलाढ्य हो उसका यत्न वैद्य प्रथम करे क्योंकि कुटुंबी होने से ये सब ज्वर के रोगी के महा अपकारी (हानि करने वाले) ही हैं ।

ज्वरमुक्तस्य लक्षणमाह ॥

देहो लघुर्व्यपगतक्लममोहतापः पाकोमुखे करणसौष्ठवमव्यथत्वम्॥स्वेदक्षयः प्रकृतियोगिमनोन्नलिप्साकण्डूश्चमूर्ध्नि विगतज्वरलक्षणानि ॥१॥भा. प्र.

स्वेदो लघुत्वं शिरसः कण्डूपाको मुखस्य च ॥ क्षवथुश्चान्नकांक्षाचज्वरमुक्तस्यलक्षणम् ॥ २ ॥सुश्रुते

भाषार्थ-अब ज्वर छुट गयेके लक्षण लिखतेहैं रोगीकाशरीर

१ ज्वर के रहतेही श्वास आदि अन्य विकार पैदाहोके निज प्रबलता से उस ज्वरका यत्न होने में बाधक होवें (यत्न होने ही न देवें सो ज्वरोपद्रव कहाते हैं ।

हलका पड जावे२ मस्तक में खुजली चले; ३ ओंठोंपरपपडी पर जावे अर्थात् मुख पक जावे. ४इन्द्रियां अपने अपने विषय को स्वीकार करलेवें ५ समस्त शरीर में पसीना निकलने लगे; ६ (भूख) बढजावै; ७छींके आने लगें; ८शुद्धरेचन (दस्तसाफ) होने लगे और९ शरीर की सर्व व्यथा दूर हो जावे तब वैद्य निश्चय विचार लैवे कि इस रोगीका ज्वर छूटगया ।

इति नूतनामृत सागरे निदानखण्डे ज्वरोपद्रव निरूपणं नाम पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

अथातिसारः ॥

षड्विधास्यातिसारस्य वातादेर्हि यथाक्रमात् ॥
षष्ठेतरंगे वै चात्र निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः इस छटवें तरंग में वातादि छः प्रकार के अतिसार का निदान यथाक्रम से लिखते हैं ॥ १ ॥

मैदा (गेहूंका आटा कपडसे छानाहुआ)आदिक भारी पक्वान्न अति चिकने पदार्थ, रूखे अति उष्ण पदार्थ, तथा, विष, ऐसे ऐसे पदार्थ भक्षण से भोजन करके (विनापाचनहुए) ही पुनः भोजन करनेसे और मलके वेगको रोकनेसेअतिसार पैदाहोताहै

अतिसारसम्प्राप्ति—उक्त कुपथ्य करनेसे मनुष्यके शरीर में मल वृद्धि को प्राप्त होके उदराग्नि को शांत करता, तब शरीर स्थित रसादि जल विष्ठा से मिलके पतला मल रूप होता है और अधोवायु के वेगसे बारम्बार गुदामार्ग द्वारा निकलने लगता है इस बाधाको अतिसार कहतेहैं।

अतिसार भेद-६प्रकारकाहै अर्थात् १ वायुजन्य २ पित्तजन्य ३ कफजन्य,४ सन्निपातजन्य, ५शोकजन्य और६ आमजन्य.

७[अतिसारपूर्वरूप-पहिलेसेही हृदय,नाभि गुदा; उदर औरपेडू

पीडा हो, अंगमें फूटन होने लगे गुदाकी अपान वायु रुकजावै बद्धकोष्ठ(दस्त न लगना)तथा अफरा होजावे और अन्नन पचे तो जानो कि इस मनुष्य को अतिसार विकार उत्पन्न होगा।

१ वातातिसार—मल कुछ ललामी को लिये, हो मल में फेन (फस्क) मिलाहो, मल रूखा हो, बार २ थोडा२ उतरै, मल कुछ आमयुक्त हो और उतरते समय पेडू फोथे और उदरके मध्यके स्थान)में पीडा हो वातातिसार जानो।

२ पित्तातिसार—मल पीला, लाल नीला, पतला तथा दुर्गंधित हो गुदा पक जावें. शरीर में पसीना निकले प्यास लगे. दाह और मूर्छा हो तो पित्तातिसार जानना चाहिये. यदि अधिक लवण वस्तु खानेमें आवें तो पित्त बढकर रुधिर को बिगाड देता है तब रुधिर युक्त मल गिरने से रक्तातिसार कहता है यह पित्तातिसार से पृथक नहीं वरन उसी का भेद है।

३ कफातिसार— जिसमें मल चिकना, श्वेत, गाढा शीतल, दुर्गंधित और किंचित दुख पूर्वक गुदाद्वार से निकले और शरीर भारी हो जावे तो कफातिसार जानो।

४ सन्निपातातिसार—रोगी का मल शूकर के मांसवत् होवै, नेत्रोंमे तंद्रा होवे मुख सूखे प्यास अधिकलगे भ्रम तथा मोहहो और उपरोक्त लिखित वात पित्त कफातिसार के लक्षणहो तो सन्निपातातिसार जानो।

शोकातिसार—जिस पुरुषके पुत्र मित्र स्त्री तथा धनादिनाशहो जावें उसका शोकसे आहार अल्प होजाताहै तब शरीरका सब

---

१ यह अतिसार असाध्यहै, जो तरुणावस्था वाले पुरुष को होवै तो चाहै दैवे कृपासे बचभी जावै परन्तु निर्बल वृद्ध तथा बालकको होतो बचना कठिन है

२ इसीका एक भेद भयातिसार भी है जो भयातुर दशामे उत्पन्न होता है

तज अन्नयाशयमें प्राप्तहोकररुधिरको बिगाड देताहै औरबिगडा हुआ रुधिर विष्ठयुक्त अथवा केवलभी होकर गुंजा रस(चिरमिठी) सदृश बडे कष्टपूर्वक गुदाद्वारा बाहर निकलता है उक्त लक्षण शोकातिसार के हैं

आमातिसार—पुरुषको प्रथम के भोजनका अजीर्ण हो और उसीपर कोई गरिष्ठवस्तु औरभी खानेमे आवे तबउसकेबात पित्त कफ कोठेमें प्राप्त होके धातुसमूह तथा मल को बिगाड देते हैं तब आमातिसार होताहै रोगीके पटेमे मरोड उठे शूल चले दुर्गन्धित तथा अनेक वर्णयुक्त मल हो मलके साथ आमभी आवे तो आमातिसार जानो. परीक्षा यह है कि आम श्वेत और चिक्कनी होती है जो ऐसे रोगीके मलको जलमे डालो तो आम नीचे जम जावेगी और मल जल पर तैरता रहैगा

७ मुर्रा अतिसार—यहभी अतिसार का सप्तम भेदहै कुपथ्यी पुरुषको बादी बढकर कफयुक्त होकर मुर्रा उत्पन्न करती है मुर्रा होनेसे पेटमे पीडा होकर गुदद्वारसे अति कष्टपूर्वक मल निकलता है इसके चार भेद हैं अर्थात्१ वातज २ पित्तज, ३ कफज और ४रक्तज ।

१ वातज—जिसमें अति पीडापूर्वक मल उतरेसो बात से है

२पित्तज—जीसम अति दाह जलन पूर्वक मल उतरे सो पित्तसे है

३कफज— जिसमे कफयुक्त मल हो सो कफसे है

४ रक्तज—जिसमे रक्तयुक्त मल हो सोरक्त से जानो

अतिसारकेअसाध्यलक्षण—शूकरक मांसवत्मलहो प्यास दाह अरुचि,श्वास हिचकी पार्श्वशूल और मूर्छा प्राप्तहोजावे किसी कार्यमें मन नहीं लगे गुदा पकजावेअग्नि नष्ट होजावे ज्वरबना

रहै, मूत्र बंद होजावै और शरीरका बल नष्ट होजावै तौ यह रोगी बचना दैववशही जानो उसके संरक्षणकी आशा नहीं है, अतिसारमुक्तलक्षण- जिसरोगीको मल बिना मूत्रही उत्तम प्रकारसे होने लगे अपानवायु न रुके वमन गुदाद्वारा उत्तम प्रकारसे संसर्ग हो क्षुधा लगे और कोठा हलका पडजावे तो अतिसार नष्ट हुआ जानो । इत्यतिसार ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे अतिसार उत्पत्तिलक्षण निरूपण नाम षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

संग्रहणी.

पृथग्दोषैः समस्तैश्च चतुर्धा संग्रहणीगदः ॥
तरंगे सप्तमे चात्र निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भावार्थः-वात, पित्त कफ तथा सन्निपात से यह चार प्रकार संग्रहणी रोग होताहै सो इस सातवें तरंगमें उक्तरोग का निदान लिखते हैं ।

संग्रहणीरोगोत्पत्ति अतिसार निवृत्त होनेपर अथवा मध्यमेंभी जो मन्दाग्निवाला पुरुष अहित पदार्थोंका सेवनकरै तो उसकेकुपथ्यरूप आहारसे अग्नि पुनः दूषित होके ग्रहणी नामकी कला[1] को बिगाड देती है तब वह बिगडी हुई ग्रहणी कला कच्चे अन्नको ग्रहण और पक्के अन्नको गुदद्वारा निकाल देतीहै तब संग्रहणी उत्पन्न होतीहै और इसलिये इसका नामभी संग्रहणी है ।

संग्रहणीलक्षणोत्पत्ति-संग्रहणी चारप्रकारकी होती है अर्थात् १ वातज २ कफज ३ पित्तज और सन्निपातज, सो इन कारणों से दूषित होके वह ग्रहणीकला खाये हुए बहुतेरे आहारको कच्चा

१ जो कि आमाशय और पक्वाशय के मध्य अन्नादिको ग्रहण (पकडने धारण) करने वाली छटवी कला है.

(बिना पाचन) हुआ हो तथा पचेहुएको पीडा और दुर्गंधयुक्त (कभी पतला और कभी गाढा) बाहर निकालदेतीहै इसे संग्रहणी कहते हैं उक्त लक्षणहों तो संग्रहणी रोग उत्पन्न हुआ जानलो.

१ वातजसंग्रहणीकारण–जो मनुष्य वातज पदार्थों का विशेष भक्षण करे, मिथ्या आहार बिहार करे और अति मैथुन करेतो वादी कुपति होके जठराग्निको बिगाड देतीहै तब वातज संग्रहणी उत्पन्न होती है ।

वातजसंग्रहणीलक्षण–खायाहुआ आहार क्लेशसे पचे, कंठसूखे भूख न लगे, प्यास अधिक लगे, कानोंमें (भन भन) शब्द हो, पार्श्व, जांघ और पेडू (नाभिका तलस्थल) में पीडाहो, कभी कभी शरीरभरमें सुईसी चुभे हृदयमें पीडाउठे शरीरकृश होजावे जिह्वामें स्वाद न रहे, मीठे आदि नाना भांतिके पदार्थ खाने की इच्छा होवे, भोजन किये हुए आहारके पचनेपर पेटफूले अथवा भोजन करनेसेही जीवको सुखहो अन्यथा नहीं; भोजनके पीछे पटमें गोला या प्लीहा (ताप तिल्ली) की शंका रहे इसमें बारम्बार मरोडे युक्त क्लेशपूर्वक अप शब्द करताहुआ झागसहित दस्त होवे और श्वास कासभी होतो वातसंग्रहणी जानो ।

२पित्तजसंग्रहणीकारण–जो पुरुष उष्ण वस्तुका अधिक सेवन करे मिरच आदि (चरपरे) खट्टे और खारे पदार्थ विशेष खावे तो उसका पित्त दूषितहोकर जठराग्नि को बुझा देता है सो उसका कच्चाही मल निकलने लगता है तब पित्तजसंग्रहणी होती है ।

लक्षण–कच्चामल नीलपीले वर्णयुक्त पानी सहत गुदाद्वारसे निकले. खट्टी डकार आवें. हृदय और कंठमें दाहहो, प्यासलगे और अरुचि हो जावे तो पित्त संग्रहणी जानो ॥

३ कफजसंग्रहणीकारण–जो पुरुष भारी. चिकनी. शीतलवस्तु

खावे तथा भोजन करके सो जावै (निद्रालेवे) उस पुरुषका कफ कुपित होके जठराग्निको नष्ट कर देती है ।

लक्षण—अन्न क्लेशसे पचे,हृदयमें पीडा, वमन और अरुचिहो, मुख मीठा रहे, खांसी पीनस, पेटमें भारीपन और मीठी डकार आवैं स्त्रीभी प्रिय न लगे; आमयुक्त मल उतरे, बल रहितहो शरीर पुष्ट दृष्टि पडे और आलस्य अधिक आवे तो कफ संग्रहणी रोग जानो ।

४ सन्निपातसंग्रहणीलक्षण—जिसमें वात, पित्त और कफ तीनों संग्रहणीके लक्षण मिलें सो सान्निपातसंग्रहणी जानो इसी सन्निपात संग्रहणीका एक नाम" आमवातसंग्रहणी भी है ।

आमवातसंग्रहणीलक्षण—पतली,श्वेत, चिकनी, आमयुक्त,अधिक मल होवे,दस्त होते समय विशेषपीडाहो,कटिमें पीडा होती ही रहे कुछ दिनपर्यंत अच्छा रहे परन्तु दस पन्द्रह दिन तथा महिने पीछे वैसाही होने लगे, अथवा अनुदिनही होतारहे आंते शब्द करती रहे आलस्य आता रहे; शरीर दुर्बल हो जावे,पेटमें पीडा होती रहे दिनको तो यह रोग कुपित हो पर रात्रिको शान्त रहे सो आमवातसंग्रहणी जानो ।[1]

संग्रहणीका एक भेद " घटीयंत्र भी " है ।

घटीयंत्रलक्षण शरीर सूना रहे; दोनों पार्श्वमें शूल चले,पेटमें शब्द हो और शेष लक्षण संगृहणीकेही होतो उसे घटीयंत्रजानो[2] विशेषतः-संगृहणीके साध्यासाध्य लक्षण अतिसारके साध्यासाध्य लक्षण (जो पूर्व लिख चुकेहैं) केही समान जानो ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे संग्रहणी उत्पत्ति लक्षण निरूपणं नाम सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

---

१ यह असाध्य है   २ यह भी असाध्य है

अर्श,

अर्शांसि षट् प्रकाराणि सम्भवन्ति यथा नृणाम् ।
तरंगे चाष्टमे तेषां निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भावार्थः-मनुष्यों को छः प्रकारके अर्श (बवासीर) होते हैं, जिनका हम आठवें तरंगमे निदान लिखते हैं,

अथार्शरोगोत्पत्ति-मनुष्योंके मूलद्वार (गुदा) में शंखकी नाभिके सदृशआकार अंगुलप्रमाणकी त्रिवली (तीन चक्र) हैंअर्थात

१ ऊपर के भागमें प्रवाहिनी नामकवली है जोकि में, पवनादिको बाहर निकालती है,

२ मध्य भागमें-सर्जनी नामक वली है जो मल, पवनादिको छोड़ती हैं,

३ अंतभागमें-एक वलीहै जो मल, पवनादिक छूटने पर गुदाको पूर्ववत् ढक देतीहै त्रिवलियोंमें अर्श रोग होता है. यदि वलीमें मस्से हों तो साध्य तथा मध्य भागस्थ वलीमें होतो कष्टसाध्य और जो ऊपर की वलीमें हो तो असाध्य होता है अर्श रोग छः प्रकारका है अर्थात् १ वातज, २ पित्तज, ३ कफज, ४ सन्निपातज, ५ रक्तज और ६ सहज ।

अर्शोत्पत्तिकारण-वात, पित्त और कफोत्पादक उष्ण चिकनी और मीठी वस्तुओंके विशेष खाने से तथा त्रिदोषकारी मिथ्या आहार विहारादि करनेसे उक्तदोष कुपित होकर त्वचा,मांस और

१ लोग इसे साधारण प्रकारसे दो भागोंमें विभाजित करते हैं अर्थात् १ खूनी जिसमें रुधिर गिरे और २ बादी जिसमें न गिरे, पर पीड़ा होवे, खुजली चले और टहक उठे सो बादी जानो ये दोनों इन्हीं छः हो भेदों में है कुछ पृथक नहीं हैं

२ जो आहारविहारादिके विपर्ययसे नहीं पर माताके उदरसेही उत्पन्न हो जाती है। सहज = सह + ज) = (सह = संग + ज = उत्पन्न हुआ) = (संग + उत्पन्न हुआ) = शरीर के साथ ही उत्पन्न हुआ अर्शरोग

भेदको बिगाडेदतेहैं, तबगुदाकीत्रिवलियोंमें मांसके अंकुर(मस्से) उत्पन्न होतहैं, इसीको अर्श मूलव्याधि तथा बवासीरभी कहते हैं

अर्शकापूर्वरूप-जिस पुरुषकोपूर्ण रूपसे अन्नका परिपाक न हो, अन्न कुखसें रहै बद्धकोष्ठहो. मदाग्नि पड जावे, डकार अधिक आवें, शरीर कृश होवेः उदरफूल जावे और अंगमें हट फूटन होतो इसे बवासीर किंचित्कालपश्चात् अवश्य ही होगी ;

१ वातार्शलक्षण-जिसकी गुदामें सूखे. सुई चुभानेके समान पीडा युक्त. काले या नीले रंगवाले खरदरे या कठोर, तीक्ष्ण या फटे हुए मुख वाले छोटे बेर. कपासपुष्प. सिरस पुष्पयाकदंब पुष्पाकृति मस्सेहोवें, शिर, पार्श्वभाग, कंधे.कटि,हृदय.जंघा और पेडूमें पीड़ा विशेषहो,छींक,डकार और क्षुधाका अभावहो जावे कास,श्वास, मंदाग्नि; शब्दभ्रम, गोला प्लीहा और उदररोगहो तो उस पुरुषको बादीकी बबासीर जानो;

२ पित्तार्शलक्षण-गुदामें मोटे, काले, नीलेलाल,पीले तथारक्त रंगके मस्से हों; मस्सोंमें सेउष्ण महीन रुधिरकीधारा गिरेतदनंतर वेगसे कोमलहो जावें. जोकके सदृश मुख हो, शरीरमें दाह,ज्वर और पसीनेका वेगहो मूर्छा, तृषाऔर अरुचि विशेष हो, मल पतला- नीला या लाल हो और त्वचा नेत्र पीले पड जावें तो उस पुरुषको पित्तार्श जानो ।

३ कफार्शलक्षण-गुदामें गाढे,मन्दमन्द पीडा युक्त; ऊंचे, भारी कफसे लिपटे हुए, खुजाल युक्त, पेडूमें [नाभिके नीचे] अफरा होवे, कास, श्वास हृदयपीडा, अरुचि पीनस, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र शिरःपीडा शीतलांग मदाग्नि, बमन और आमवात ये रोगहों कफसे युक्त मल गिरे शरीर पीला पड जावे और मस्सों से रुधिर न गिरे तो कफार्श जानो ।

४ सन्निपातार्शलक्षण–जिसमें वात, पित्त औरकफार्श तीनोंके लक्षण हों उसे सन्निपातार्श कहते हैं.

५ रक्तार्शलक्षण–गुदामें चिरमिठी के वर्ण सदृश मस्से होवें उन मस्सोंमेंसे अति उष्णता लिये रुधिरकी दीर्घ धारा बहे मल गाढा और कष्टपूर्वक उतरे, रुधिर अधिक गिरनेसे शरीरका वर्ण मेंढक सदृश होजावे, बल. वर्ण, उत्साह और पराक्रम नष्टहो जावे, शरीररूखा और कृश पडजावे और अधोवायुउत्तमप्रकारसे न हो तो रक्तार्श जानो.

यदि मस्सोंसे रुधिर पतला तथाफेनकेसदृशगिरे. कटिगुदामें जांघों में पीडा होवे शरीर दुर्बलहो जावे तो वातरक्तार्श जानो और श्वेत. चिकना, भारी, ठंडा मल हो. मस्सोंसेगाढातथाउष्ण रुधिरकीधार गिरे और गुदामें सदा कफसा लगा जान पडे तो कफ रक्तार्श जानो.

६सहजार्शलक्षण–माताके रजदोष और पिताकेवीर्यदोषो से सहजार्श होता है. जिसकेलक्षणवातादिदोषोंकेमिलापसेनिश्चयकरना चाहिये परन्तु विशेष ये होते हैं. सहजार्शके मस्से अति कठोर, पांडुवर्णयुक्त, अंतर्मुख (मुखभीतरकी ओर). कभी प्रत्यक्ष, कभी अंतर्गत (कभीतो देखनेमें आते और कभी नहीं दीखने रहते हैं) शरीर की नसें न्यारी दीखती हैं, शरीर कृश, वीर्य क्षीण, अल्पहार, क्रोधी, अल्प संतान मन्दाग्नि, अरुचि, मस्तक नेत्र. कान, रोगयुक्त और मन्द स्वर (महीनशब्द) होतो उस पुरुषको सहजार्श जनना चाहिये,

असाध्यार्शलक्षण जिसे रोगी को ववासीर के साथही शोथ

१ विशेषता यह है कि उक्त छः भेदोंमेंसे पित्त और रक्तार्शको खूनी और इन दोनोंसे अन्य ब[illegible] वादीमें गणना किये जाते हैं

अतिसार, वमन, हडफूटन, तृषा, ज्वर अरुचि, मंदाग्नि और हृदयशूल होकर गुदा पकजावै तो उसे महासाध्य (विशेषनाशक) जानो उक्त लक्षणधारणीय असाध्य अर्शमें रोगी निश्चयमृत्युग्रस्त होजावेगा।

चर्मकीलरोग—यहभी अर्शरूप कहाहै अर्थात् गुदाके सिवाय किसीभी शरीरके अवयवपर मस्सेहों उसे चर्मकीलरोग कहतेहैं।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्ड अर्शरोगोत्पत्तिलक्षणनिरूपणंनामाष्टमस्तरंगः ॥८॥

मन्दाग्निभस्मकाजीर्ण।

मन्दाग्निभस्मकाजीर्णप्रभृतीनां रुजां क्रमात् ॥
तरंगे नवमे चात्रानिदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः—अबहम इसनवमतरंगमें मन्दाग्नि भस्मकऔरअजीर्णादि रोगोंको यथाक्रमसे लिखते हैं,

मन्दाग्निरोगोत्पत्ति—मनुष्योंकी चारप्रकारकी जठराग्नि होतीहै अर्थात् १ मन्दाग्नि, २ तीक्षण, ३ बिषमाग्नि और ४ समाग्नि

मन्दाग्नि-कफप्रकृतिवालेको कफाधिक्य मन्दाग्नि होती है।

२ तीक्ष्णाग्नि—पित्तकी प्रकृतिवाले पुरुषको पित्ताधिक्य से तीक्ष्णाग्नि होती हैं

३विषमाग्नि—वातज प्रकृतिवालेको वाताधिक्यसे बिषमाग्नि होतीहै.

४समाग्नि-जिस पुरुषकी प्रकृतिमें वात, पित्त औरकफइनतीनो दोषोंकी सामान्यदशा रहती है, उसे समाग्नि कहते हैं

१ मन्दाग्निलक्षण योग्य आहार (थोडी भी)उत्तमता पूर्वक न पचे मस्तक और उदरमें बोझ(वजन) रहेऔर शरीरमें टडफुटन होती हो तो मन्दाग्नि है।

इसी प्रकार अर्शरोगनासिका में होताहै।

२ मन्दाग्नि वालेको बहुधा रोगदशा रहती है।

२ तीक्ष्णाग्निलक्षण–जिसको अधिक से अधिक भोजन करने पर भी पाचन होजावे उसे तीक्ष्णाग्नि जानो।

३ विषमाग्निलक्षण कभी तो भोजन पाचन होजावे, तथा कभी न पचे, पेट फूले शूल चले, पेट भारी रहे पेट म शब्द होता रहे और अतिसार होतो विषमाग्नि जानना चाहिये।

समाग्निलक्षण–प्रमाणित भोजन उत्तमप्रकार से पाचन होजावे तथा विशेषभी पच सके, अजीर्णदशामें भी पच सके, भारी पदार्थ भक्षण से अजीर्ण नहो क्षुधा लगती रहे, यदि किसी कार्यवशात् क्षुधाका वेग रुके तोभी रोग न होतो उसे समाग्नि जानो, पूर्वोक्त तीनों अग्नियों से यह उत्तम है।

भस्मकरोगोत्पत्तिकारण–तीक्ष्णादि वस्तु के विशेष भक्षण और रूखे अन्नके सेवनसे कफ न्यून होकर बादी और पित्तको वृद्धिगत करता है तब वह पित्त तथा वात पवन की प्रेरणा से अग्नि बढ़ाकर भस्मकरोग उत्पन्न कर देता है।

भस्मकरोगलक्षण–जो खाया जावेसो भस्म होजावे, दाह, मूर्छा उत्पन्न हो और खाया हुआ पदार्थ तो क्या परन्तु समग्र धातुयें भी भस्म हुईसी जान पडे तो इसे भस्मक रोग जानो।

अजीर्णरोगोत्पत्ति–अतिशय जलपान, विषमान्न, मलमूत्र वेग प्रतिबंध, दिवस निद्रा और रात्रि जागरणसे अजीर्ण रोग होताहै

अजीर्णरोगलक्षण–पथ्य, हलका समयानुकूल और यथोचित भोजनभी पाचन न हो, आठों प्रहर चित्तमें ईर्षा, भय, क्रोध लोभ

१ तीक्ष्णाग्निवालेको पैत्तिक रोग विशेष होते हैं।

२ विषमाग्नि वालेको वातिक रोग विशेष होते हैं।

३ समाग्नि वाला पुरुष बहुधा सुखी (रोगरहित) रहता है।

४ यह रोगी का प्राणान्तकही है।

५ भोजन करने पर तुरन्त पुनः भोजन करना।

हीनता तथा कोई अन्य विकार बनाही रहै और वांछित भोजन अंग में न लगे उस पुरुष को अजीर्ण रोग उत्पन्न हुआ जानो।

अजीर्णरोगसामान्यलक्षण- मन में ग्लानि शरीरमें भारीपन पेटमें अफरा और चित्तमें भ्रमरहे, अधोवायु वच्छता से न निकलें बद्ध कोष्ठ हो और बारंबार द्रवरेचन (पतला दस्त)हो तो समान्य अजीर्ण जानो.

अजीर्णरोग ६ प्रकारका होता है. अर्थात् १ आमाजीर्ण, २ विदग्धाजीर्ण ३ विष्टब्धाजीर्ण, ४ रसशेषाजीर्ण ५ दिनपाकी अजीर्ण और ६प्राकृताजीर्ण. इनकी परिभाषा नीचे देखो

१आमाजीर्ण-जिस में खाया हुआ कच्चाही अन्न गुदाद्वार से बाहर निकल जाता है. यह कफ से उत्पन्न होता है.

२.विदग्धाजीर्ण - पित्त से उत्पन्न होता है. जिसमें भक्षितान्न जल जाता है,

३विष्टब्धाजीर्ण-- वायुसे उत्पन्न होता है, जिस में भक्षितान्न विष्टब्ध (बंधना, दृढहोना, होकर उदर में पीडा उत्पन्न होता है

४रसशेषाजीर्ण-जिसमें खाया हुआ अन्न उत्तम रीतिसेपाचन होके रसरूप हो जाता है और वह द्रवरूपी मल गुदाद्वार से बाहर निकलता है।

५दिनपाकी अजीर्ण-इसमें भक्षण किया हुआ अन्न ८पहर [दिनरात्रि]में पाचन होता है अर्थात १ बार भोजन करने से ही दिनभर भूख न लगकर दूसरे दिन क्षुधा लगे.इस में पीडा नहीं होती सो निर्दोष है

६प्राकृताजीर्ण- जो कि नित्यही रहता है जिसकी शांतिकेलिये शतपद गमन [सौ डग चलना] अथवा वामांगशयन] बांयेकरो-

१ इसे सामान्य जीर्ण भी कहते हैं, यह वैकारिक नहीं होता ॥

इसे सोना अर्थात् सोते समय अपनी दाहनी बाजू ऊपर और बाईं बाजु नीचे रखकें सोना इत्यादि उपायहैं. अबइन्हीके लक्षणवर्णन करते हैं।

१ आमाजीर्ण लक्षण-शरीर भारी हो. वमनकी इच्छा रहे जैसे भोजन किया हो वैसी डकारें आवें और कच्चाहीमल उतरे तो आमाजीर्ण जानो।

विदग्धाजीर्ण लक्षण- भ्रम, प्यास. दाह और पसीना होवे धूम्रयुक्त खट्टी डकार आवें और उष्णता सम्बन्धी अनेक रोग उत्पन्न होवें तो विदग्धाजीर्ण जानो।

३ विष्टब्धाजीर्णलक्षण-पेटमें शूल चले पेट फूलजावे मल और अधोवायु रुक जावे सर जकड़ जावे और बादीके बहुत रोग हुआ करें तो विष्टब्धाजीर्ण जानो।

रसशेषजीर्ण अन्नपर अरुचि होवे हृदय में पीडा होवे और शरीर तथा पेट भारी होवे तो रसशेषाजीर्ण जानो।

५ दिनपाकी अजीर्णलक्षण- अन्नपर अरुचि, आलस्य और सर्व शरीर में भारीपन होवे तो दिनपाकी अजीर्ण जानो,

६ प्राकृताजीर्णलक्षण-मनमेंग्लानि, भारीपन विबंध (कबजियत) भ्रम होवे, अधोवायु और मल अवरोधित होवे तथा मल की बारबार प्रवृत्ति होवेतो सामान्याजीर्ण जानो।

अजीर्णके उपद्रव-मूर्छा, प्रलाप. वमन, मुख से लारका बहाव शरीरमे शैथिल्यता और चित्तमें भ्रम ये अजीर्णउपद्रवहैंसोजिस रोगीको उक्तउपद्रव उत्पन्न हो जावें निश्चय कालवश होगा जो मनुष्य अजीर्णमें भी पशुकेसमान भोजन करताही जावे उसेअनेकानेकरोग उत्पन्न होतेहैं क्योंकि अजीर्ण समस्त रोगोंका मूल कारणहो है अजीर्ण गया कि रोगभी गया,

अजीर्णमें स्वल्प आम दोषो से बंदहोके भी अग्निमार्गको नहीं रोकती इसलिये अजीर्णमें भी क्षुधा लगती है. उस कच्ची भूखमेंभी जो पुरुष अविचारसे भोजन करता ही जावे तो उपद्रवोंके उठाव (वेग)से नष्ट होजावेगा, इत्यजीर्णनिदानम्

विषूचिकारोगोत्पत्तिकारण-प्रथम जिस पुरुषके मन्दाग्निसे आम जीर्णहो उसी पर अतिगरिष्ठ वस्तुखाई जावे तोविषूचिकारोगहोगा

विषूचिकारोगलक्षण-जिस अजीर्णमें अंगमें वायु रहके सुईछेदने कीसी पीडा होवे. मूर्छा आवे, अतिसार होवे वमनआवे तृषलगै पेटमें शूलचल भ्रमहोवे, पेरऐंठे पगफूटन हो जमुहाई आवे दाहहो. शरीरका वर्ण पलट जावै, कम्पन लग जावे और मस्तक में पीडा होवेतो विषूचिका रोग जानना ।

विषूचिकाकेउपद्रव-यदि विषूचिकामें निद्रा न आवे कोई वस्तु प्रिय न लगे शरीर , कम्पायमानहो. मूत्र रुक जावे और संज्ञा न रहे तो वह रोगी अवश्य मृत्युको प्राप्त हो जावेगा ।

अलसरोगोत्पत्तिकारण-वायुजन्य विष्टब्धाजीर्णसे अलसरोग उत्पन्न होता है ।

अलसरोगलक्षण-जिस रोग में पेटतथा कूखें अधिकफूले आंतोंमें शब्द होवे, रोगी अति विकल दशामें होवे पवन [श्वास]नीचेको जानेसे रुकके ऊपरकीओर कूख हृदयखंडादि स्थानोंमें प्राप्त होवे मल मूत्र और अधो वायु रुक जावे तृषा आदिकलगे और डकार अधिक आवे तो उसे अलसरोग जानो ।

विलंबिकारोगोत्पत्ति-विदग्धाजीर्ण द्वाराबिलंबिका रोग उत्पन्न होता है ।

१ जिसे लोकमें बहुधा महामारी, मरी गोली तथा सपटे की बीमारी कहते हैं इसी को उर्दू भाषावाले हैजा और अंग्रेजी वाले कालरा कहते हैं इसका शीघ्रोपाय न किया जावेतो इससे रक्षा पाना दैववशही जानो ॥

बिलम्बिकारोगलक्षण-जिसमें भोजन किया हुआ अन्न कफ और वायुसेदूषित होके ऊपर नीचे न जा सके अर्थात् न तो वमन होके मुख द्वारा निकले न मल द्वार से मल होके निकले वरन बीचमें ही रहके क्लेश देवे इसेही बिलम्बिकारोग जानो।

बिषूचिका, असल और बिलम्बिका तीनों के संयुक्तोपद्रव-जब इन रोगों में रोगीके दांत नख, और ओठ काले पड़ जावें, संज्ञा न रहे वमन प्रचारित रहे, नेत्र भीतर को घुस जावें, घर घर शब्दोच्चारण होवे और शरीर की सब संधियां ढीली पड जावें तो वह रोगी अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।

अजीर्णरोग निवृत्ति लक्षण-डकार शुद्ध आने लगे, शरीर में उत्साह बढे; मल; मूत्र और अधोवायु का सरण भली भांति होने लगे, शरीर में हलकापन आजावे और क्षुधा, तृषा भलीभांति प्राप्त होजावे तब अजीर्ण रोग नष्ट हुआ जानना चाहिये।

इतिनूतनामृतसागरे निदानखण्डे मदात्ययादि रोगाणां लक्षणनिरूपणं नाम नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

कृमि,

पांडोः कृमे कामलाया निदानं च यथाक्रमात ॥
हलीमकस्य रोगस्य द्विभूधौ लिख्यते मया॥ २ ॥

भाषार्थः-कृमि, पांडु कामला, और हलीमक रोगका निदान हम इस-दशवें तरंग में यथा क्रम से लिखते हैं।

कृमिरोगोत्पत्ति-कृमिदोप्रकारकीहोतीहैं अर्थात् १ शरीरकेबाहर और दूसरी भीतर, फिरभी मल, कफ, रक्त और विष्ठा से उपजकर

१ कोई २ ग्रन्थों में इसका नाम दंडालस कभी दिया है, इसकी चिकित्सा बड़ी कठिनाई से होती है॥

कृमि चार प्रकार की हैं अर्थात् १ विष्ठासे लटें, २ पानीसेजुआं३चा मजुआं और ४ लीखादि पेटकी कृमिहै सो केंचुएके सदृशहोतीहैं

कृमि उत्पत्ति—अजीर्ण में भोजन, मीठा, खट्टा, द्रव पदार्थका विशेष सेवन, व्यायाम का अभाव दिनको निद्रा और विपरीत अहार बिहारादि के करने से पेटमें कृमि होती है ।

कृमिलक्षण ज्वर चढे, शरीर निवर्ण होजावे पेट में शूल चलै हृदयमें पीडा होवे तथा भ्रम, अरुचि और अतिसार जिस मनुष्य को होजावै उसे अवश्य कृमिरोग उत्पन्न हुआ जानो ।

पांडुरोगोत्पत्ति—पांडु रोग के ५ भेद हैं अर्थात् वह पांच कारणोंसे उत्पन्न[१] होता है, १ वात, २पित्त; ३ कफ; ४ सान्निपात और ५ मृतिका भक्षण—सो अधिक श्रम, दिनको निद्रा, और खटाई तथा तीक्ष्ण वस्तुओंके विशेष भक्षण से वात, कफ तीनों कुपित होकर रुधिर को बिगाड देते हैं, जिससे त्वचा पीली पड जाती है इस को पांडु रोग कहते हैं ।

पांडुरोगकापूर्वस्वरूप—त्वचा फटने (चर्राने लगे) पीडा होवै मृत्तिका भक्षण पर इच्छा दौडे, नेत्रों पर कुछ सूजन होवे पीला पडजावे और अन्न पाचन न होवे तो उसे पांडुरोगी जानो

वातपांडुलक्षण जिसको त्वचा नेत्र मूत्र रूखे काले या लाल होजावें, शरीर में कम्प, तथा पीडा होवे, पेट फूला रहे और आमादिक होवे तो वातपांडु जानो ।

पित्तपांडुलक्षण—जिसकी त्वचा, नेत्र, मूत्र पीले हों शरीर में दाह, प्यास और ज्वर रहे और मल पतला हो जावे उसे पित्त पांडुरोग जानो ।

---

१ ये सब प्रकार मिलकर और भी इनके विस्तार रूप से २१ भेद किये हैं इसके समस्त भेदों का ज्ञान होना होतो माधवनिदान देखो ।

कफपांडुलक्षण–मुखसे कफ गिरे,शरीरपर शोथ, तन्द्रा. आलस्य तथा बोझ हो.त्वचा,नेत्र मूत्र, श्वेत होजावें तो कफ पांडु जानो ।

सन्निपातपांडुलक्षण–ज्वर,अरुचि,हृदयपीडा.वमन,तृषा विकलता क्षीणता और इन्द्रियों का विषय त्यागहोतो सन्निपात पांडु जानो ।

मृतिकाभक्षणपांडुरोगोत्पत्ति–मिट्टी खाने से एकही दोष कुपित होकर पांडुरोग उत्पन्न होताहै, कषली मिट्टी खानेसे वायु.खारीमृत्तिकासे पित्त तथा मीठेसे कफ कुपित होकर सप्तधातु और भक्षित आहार को रूखा करदेती है और आपतो परिपाक नहीं होती परन्तु नसोंको फुलाकर रसादि बहाने वाली नाडियों के छिद्रों को भरके रसादि का बहाव बन्द कर देतीहै तब शरीर का बल, अन्तःकरण की शक्ति देहकी कांति और जठराग्नि नष्ट होजाती है इससे उक्त रोग उत्पन्न होता है ।

मृत्तिकाभक्षण पांडुरोगलक्षण–त्वचा पीत वर्ण हो, शरीर विवर्ण हो. तन्द्रा, आलस्य, कास,श्वास.शूल, अर्श. अरुचि. नेत्र, पेर, इन्द्रिय आदि पर शोथ. पेटमें कृमि. अतिसार और कफ तथा रक्त से युक्त मल ये लक्षण हों तो मृत्तिका लक्षण पांडु रोग जानो ।

पाडुमात्रके असाध्यलक्षण–शरीर का रुधिर नाश होजावे, शरीर का रंग श्वेत सा दीखे दांत. नख,नेत्र.पीतवर्ण होजावें सर्व पदार्थ पीले ही दृष्टि पडें तो जानो कि यह पांडुरोगी अवश्य ही मृत्यु बस हो जावेगा ।

कमला रोगोत्पत्ति–जो पांडुरोगी अत्यन्त उष्ण पित्त कारक वस्तु का भक्षण करै तो उसका पित्त. रुधिर और मांस दुग्ध होकर कामला रोग उत्पन्न होता है ।

---

१ इस पर वैद्य की चिकित्सा करना व्यर्थ ही है क्योंकि आरोग्य तो होता ही नहीं फिर क्या लाभ ॥

कामलारोगलक्षण–जिसके नेत्र, त्वचा, नख, मुखादि हलदी के समान पीले पड जावें, मल, मूत्र, रक्तवर्ण को लियेहों, शरीरका वर्ण पीले मेंढक सा होजावे, इन्द्रियां निर्बल दशा में होजाव, दाह, अन्न से अरुचि अन्न पाचन और शरीर में क्षीणत्व (दुर्बलता) हो जावें तो कामला रोग जानना चाहिये ।

हलीमकरोगके विषयमें– यदि पांडु रोगी पुरुषकी त्वचाकावर्ण हरा, धूसर, काला, पीला, होजावे बल उत्साह से रहित होजावे तंद्रा, मंदाग्नि, जीर्ण ज्वर रहे कामोदीपनी शक्ति न रहे अंग पीडा, दाह तृषा. अरुचि और भ्रम ये लक्षण हों तो हलीमक रोग जानों ।

इति नूतनामृ० निदानखंड कृमिमूत्ररोग लक्षण निरूपणं नाम दशमस्तरंगः ॥१०॥

रक्त पित्त, रोग राट शोष

निदानं रक्तपित्तस्य रोगराटशोषयोस्तथा ।
उच्यामृतांकभिते चास्मिन् तरंगे लिख्यते मया ॥१॥

भाषार्थ–रक्तपित्त, रोगराट् (राजरोग) और शोष इन रोगोंका निदान इस ११ वें तरंग में लिखते हैं ।

रक्त पित्तपोरोत्पात्ती घाम में भ्रमण, श्रम मार्ग गमन, मैथुन शोक उष्ण. तीक्ष्ण, कटु, नमक तथा खटाई के भक्षण इन कार्यों की अति बहुतायत होने से पित्त दग्ध होके शरीरस्थ रुधिरको दग्ध कर देता है तब वह रुधिर ऊर्ध्वमार्ग (नाक, नेत्र, कान, मुख) तथा अधोमार्ग (लिंग, योनी, गुदा) से निकलताहै अथवा जो रुधिर अत्यन्त ही कुपित हो जावे तो सर्व देहके रोम द्वार से भी निकलता है उसे रक्तपित्त कहते हैं ।

रक्तपित्तका पूर्वरूप अंगमें पीडा, शैथिल्यता, शीतलता को

१ हलीमकभी पांडुका भेदही है जो वात पित्त कोप से उत्पन्न होता है ।

अभिलाषा,कंठ तथा मुखसे धुआं निकलता हुआ जानपड़े वमन रुधिर मुखमें आवै और जमुहाई तथा श्वासमें तप्त लोहेके सदृश गंध आवै तो बिचारलो कि इसे रक्त पित्त होगा।

रक्तपित्तभेद-यह रोग १ कफ २ वात ३ पित्त और ४ सन्निपात से उत्पन्न होनेके कारणसे चार भागोंमें विभाजित किया गया है।

कफजरक्तपित्तलक्षण- जो रक्त गाढा कुछकफयुक्त पाडुवर्णचिंकना तथा मयूरके चंदोवेके समानवर्णवाला होतो कफरक्तपित्त जानो

वातजरक्तपित्तलक्षण--जो रक्त श्यामता लिये फेनयुक्त, पतला और रूखा होतो वातरक्तपित्त जानो।

पित्तजरक्तपित्तलक्षण -जो रक्त लाल पीला खैर आदिके क्वाथ समान या काला गोमूत्रसमान वमलीसमान चिकना अंगारे समान धूम्र और सुरमेके रंग समान होतो पित्तज रक्तपित्त जानो.

सन्निपातजरक्तपित्तलक्षण--जिसमें तीनों दोषों के लक्षण युक्त मिलते हों उस सन्निपातजरक्त पित्त जानो।

रक्तपित्तके साध्यासाध्यलक्षण--जो रुधिर नाक; नेत्र कान और मुख इन ऊर्ध्व द्वारोंसे गिरैतो साध्य योनि गुदादिअधो द्वारोंसे गिरैतो याप्य और दोनों मार्गोंसे प्रचलितहोजावै सो असाध्यजानो

रक्तपित्तके उपद्रव—दुर्बलता, श्वास,कास, ज्वर,वमन,मादकता पाडुता, दाह मूर्छा, भोजन पर अति दाह सर्वदा अधैर्य हृदय में अति पीड़ा तृषा, मलद्रवदशामें हो, मस्तकमें ताप, थूकमें दुर्गंधि अन्नपर अरुचि और अन्नका अपचन ये रक्तपित्तके उपद्रव है इनसे युक्त रोगी को ईश्वरही बचावै।

रक्तपित्तकेदुर्लक्षण-यहरोग बृद्धतथा रोग क्षीण पुरुषको प्राणहारकही है जो इस रोगमें रोगीको आकाशभी लालरुधिर समानदीखने लगे अथवा नेत्र रुधिरवत् लाल हो जावें और सर्वत्र रुधिर सदृश दीख पड़े तो वह अवश्य निधन [मृत्यु]को प्राप्त होवेगा

राजरोगोत्पत्ति-मल, मूत्र अधोवायुका अवरोध वीर्यकी क्षीणता साहस, अधिक[1] गरिष्ट तथा विषमाशनसे[2] राजरोग होताहै यहत्रिदोषरूपही है परन्तु कफप्रधान माना है सो कफ वात और पित्त से कुपित होके रससंचारके मार्गको रोकलेतेहैं तबरक्तादिका बढ़ाव बंद होनेसे सूखता जाताहै अथवा विशेष मैथुनसभी (वीर्य क्षीण होनेसे वायु कुपित होके मज्जाको सुखाय अस्थ्यादि (हाड) पर्यन्तको क्षय करता है तब वह मनुष्य दिन प्रति क्षीण शरीर होकर सूखने लगता है ऐसे कारणसे राजरोग उत्पन्न होता है

राजरोगभेद यह रोग ५ प्रकारका होता है अर्थात् १ वातज २ पित्तज, ३ कफज, ४ सन्निपातज, और ५ प्रहारज, इस रोगके राजक्षय, शोष, और राजयक्ष्मा ये नामभी हैं शोष ६ प्रकारका है,

राजरोगपूर्वरूप—कास, श्वास, अंगपीडा, खांसीद्वारा कफपतन तालूसुखाव, वमन, अग्निमंद मादकता, पीनस, नाक का बहाव निद्राका आधिक्यता श्वेत नेत्र, मांस, भक्षणेच्छा और मैथुनेच्छा इनकी विशेषता हो तो राजरोग होगा जानो ।

राजरोगलक्षण—कांधे तथा पार्श्वभागमें पीडा हो हाथ पांवों दाह हो और सर्वांगमें ज्वर रहे तो राजरोग जानो ।

तथा भोजनमें अरुचि, ज्वर, काश, श्वास थूकके संग रुधिर का संसर्ग और शब्द में घरघराहट हो तो राजरोग जानो

वातराजरोगलक्षण-स्वरभंग [बोलनेमें घर्राटा] शूलऔर क्रोध तथा पार्श्व भागमें संकोच [खिंचाव] होतो वातज राजरोगजानो

पित्तजराजरोगलक्षण-ज्वर दाह अतिसार और मुखसे रुधिर पतन होतो पित्तजराज रोग जानो ।

---

१ अपनी शक्तिसे अधिक परिश्रम करना इसे कहते हैं ।

२ भोजनपर पुनः भोजन, कभी अधिक, कभी थोडा, कभी अबेरा कभी सबेरे इस प्रकार जो भोजन किया जावे सो विषमाशन कहाता है.

कफजराजरोगलक्षण-मस्तक में भारीपन, भोजन में अरुचि, खांसी और गला (गलापडना) लगजावे तो कफजराजरोगजानो।

सन्निपातजराजरोगलक्षण-जिसमें उक्त वात पित्तऔर कफइन तीनों के लक्षण हों उसे सान्निपातज राजरोग जानो।

हृदयप्रहारराजरोगलक्षण-सिरमेंपीडाहो, मुखमेंसे व मनमें रुधिर गिरे और शरीर रूखा पडजावे तो हृदयकी चोटसे यहराजरोग उत्पन्न हुआ जानो।

असाध्यराजरोगलक्षण-जिसरोगीके नेत्रश्वेत पडजावें अन्नपर अरुचिहोवे औरश्वास प्रमेह तथामूत्रकी अतिवृद्धिहोतो वहरोगी अवश्य मरजावे, यदि असाध्य राजरोगपर सद्वैद्य उत्तम प्रकारसे चिकित्सा करै तथा रोगी तरुण, द्रव्यवान् और पथ्यधारी होतो १००० दिन पर्यंत रहकर पश्चात् मर जावेगा।

साध्यराजरोगलक्षण-रोगीज्वररहित हो, बलयुक्तहो,वैद्यकीदी हुई औषधि कटुहोवे तो भी उसे अमृतसदृश स्वीकार करलेअति तीव्र क्षुधा लगे और पुष्ट होतो उसे साध्य जानो।

शोषरोगोत्पत्ति-यहराजरोगकाही एकभेद है छः प्रकारसे उत्पन्न होता है अर्थात् अधिक स्त्री प्रसंग, २ अधिक शोक ३ जरा, ४ अधिक मार्गगमन, ५ व्यायामादि अति श्रम और ६ हृदय में चोट लगने से यह शोषरोग होता है।

१ अधिक स्त्रीप्रसंगसे उत्पन्नहुए शोषरोगके लक्षण लिंगेन्द्रिय और पोतोंमें पीडाहो, मैथुनशक्ति नरहे, शरीर पीला पडजावेचिंताग्रस्त रहे शरीर शिथिलसा बना रहे; सब धातुएं क्षीण होते २ केवल अस्थिमात्र रह जावे तथा राजरोगके लक्षणभी युक्तहोतो स्त्रीप्रसंगकी अधिकता से उत्पन्न हुआ शोषरोग जानो।

---

१ ये दोनों मद्य शब्द हैं, २ जरा वृद्धावस्था बुढापा तृतीयावस्था।

२ शोकजशोषरोगलक्षण-इसके लक्षण उक्त लक्षणोंसेही मिलते हैं विशेषता यही है कि इसमें वीर्यक्षय नहीं होता।

३ जरा शोषलक्षण शरीर कृश होजावे, वीर्य, बल बुद्धिकाक्षय होवे, शरीर कम्पायमानहो, भोजनमें अरुचिहो शब्दमें घरोंटाहो, कफ बढजावे, देह भारी पडजावे पीनस होजावे, अंगसूखा हो जावे तो जराशोष रोग जानो।

४ अधिकमार्गगमनशोषरोगलक्षण- अंगशिथिलहोकर भूंजासा होजावे रूखापन आजावे सर्वांग स्पर्शज्ञान रहित होजावे तृषा स्थान [कंठ मुखादि] सूखता रहेतो मार्गगमन शोषजानो।

श्रमजशोषरोग लक्षण-उक्त लक्षण होकर हृदय चोट लगने के लक्षण भी हों तो श्रमजशोष रोग जानो।

६ हृदयप्रहारजशोषरोगलक्षण अधिक भार आदिउठानेसेहृदय में धक्का [चोट बैठकर तथा अति मैथुन करके रूखे पदार्थ भक्षणसे यहरोग उत्पन्न होताहै तब उस मनुष्यके ये लक्षण होते हैं अर्थात् हृदय, पार्श्व तथा कटिमें पीडा, अंग सूकना कम्पबल वीर्य रुचि और अग्निकी न्ययूनता पीले कफयुक्तखांसी कभी २ खांसीमें रक्तभी आना रुधिरयुक्त वमन व मूत्र ज्वर अतिसार और सबको अतिकृपण अनाथ सदृश दृष्टि पडेतो हृदयमें चोट लगकर अति गम्भीर व्रणद्वाराशोषरोग जानो।

इति नूतनामृतसागर निदानखण्डे रक्तपित्त राजरोगादिलक्षणनिरूपणं नामैकादशस्तरंग ॥ १ ॥

कांस, हिक्का, श्वास.

अथकासस्य हिक्काया श्वासस्यापि यथाक्रमात्
तरंगे द्वादशे चास्मिन् निदानं लिख्यते मया ॥१॥

भाषार्थः-इस बारहवें तरंग में अब हम कास, हिक्का और श्वास का निदान यथाक्रम से लिखते हैं।

कासरोगोत्पत्ति-मुखमें धुआं तथा धूलिका प्रवेश, रूखे अन्नका भक्षण, भोजन में कुपथ्य, मल, मूत्र; तथा छींकका प्रतिरोध, और चिकनाई या मूली आदि वस्तु खाकर जल पीनेसे खांसीकारोग उत्पन्न होता है, यह रोग प्राण वायुसे युक्त होके कंठस्थ उदान वायु को लेता हुआ दोनों को बिगाड देताहै, तब कंठका बिगाडा हुआ उदान वायु मनुष्यके कंठ से कांसे(फूल) के फूटे पात्र के समान शब्द मुख द्वारा बडे वेगसे बाहर निकालताहै यही कास रोग है, यह पांच प्रकार से होता है अर्थात् १ वात, २ पित्त ३ कफ ४ प्रहार ५ क्षयी से उत्पन्न होता है, इन पांचों प्रकारोमें एक से दूसरे उत्तरोत्तर, बलाढ्य हैं जैसे वात से पित्त, पित्त से कफ, कफ से प्रहार और प्रहार से क्षयी का कास बलाढ्य होता है।

कासरोगका पूर्वरूप-गले में कांटे पडना. कंठके भीतर खुजली चलना और भोजन न किया जावै तो जानो कि कासरोग होगा।

वायुकासरोगलक्षण-हृदय, कनपटी. मस्तक, उदर और पार्श्वमें शूल चले, मुख निस्तेज होजावे, पराक्रम, बल तथा स्वर नष्ट होजावे, भोजन करते समय कंठमें व्यथा हो, सूखी खांसी चलै और बोलने में टूटा हुआ शब्द निकले तो वातकास जानो।

पित्त कासरोगलक्षण-हृदय में दाह ज्वर मुख में फीकापन, मुख सूखन. प्यास लगना कटु वमन होना और शरीर पीला पड़ जाना ये लक्षण हों तो पित्त की खांसी जानो।

कफकास रोग लक्षण-मुख कफ से लिपटा रहै, मस्तक में पीडा हो भोजन में अरुचि रहे, शरीर भारी हो, कंठमें खुजली चले और मुखसे थूक में कफके डल्ले आवें तो कफकास जानो।

प्रहारजकासोत्पत्ति–अति मैथुन, बोझ उठाना मार्ग गमन, मल्लयुद्धादि करना घोड़े, हाथी आदि पर चढ़के दौड़ना और रूखे पदार्थों के खाने से वायु कुपित्त होकर हृदयमें चोट लगाती हुई खांसी उत्पन्न करती है।

प्रहारजकासलक्षण–प्रथम सूखीखांसी तदनंतर खखारके साथ रुधिर आवे, कंठअस्थि सांधियों में पीडा, ज्वर,शूल, श्वास प्यास और कबूतरके सदृश घर घर शब्द होतो प्रहारज कासरोग जानो

क्षयी कासरोगोत्पत्ति–कुपथ्य, बिषमाश, अति मैथुन, मल-मूत्रावरोध और अति शोक से मनुष्यों की अग्नि मन्द होकर बात पित्त और कफ कुपित होता है तब उस मनुष्य को क्षयी होकर कास उत्पन्न करता है।

क्षयीकासरोगलक्षण–शरीर क्षीण हो दाह, ज्वर, मोह हो, सूखी खांसी चले, देह दुर्बल होता जावे,रक्त मांसकी हीनताहो जावे और खखार में पीव गिरे तो असाध्य क्षयी कास जानो।

कास मात्र के असाध्य लक्षण–बात पित्त तथा कफकी खांसी साध्य और प्रहारज तथा क्षयी की खांसी असाध्य जानो,जो यह रोग बृद्धावस्था में उत्पन्न हो तो असाध्य ही है।

हिक्कारोगोत्पत्ति–उष्ण वातज भारी रूखा तथा बासी वस्तु भक्षण, मुख में धूल का प्रवेश, श्रम,मार्ग गमन और मल मूत्र का वेग रोकने से हिचकी रोग पैदा होता है।

हिक्का की परिभाषा–वायु दोनों ओरकी पसली तथा दांतोंको क्लेश देती हुई बड़े शब्दयुक्त होकर ऊपर चढ़ती है औरप्राणों को त्रास देतीहुइ मुखसे भयंकर शब्द निकालताहै उसे हिक्का कहते हैं,वायु और कफके संयोग से ५प्रकार की हिक्का होती हैअर्थात् १ अन्नजा,२ यमला, ३ क्षुद्रा, ४ गम्भीरा और ५ महती

हिक्काका पूर्वरूप-कंठ,हृदय भारी हो, मुखकषैला हो औरकुक्षि (कूख)में अफरा होतो अनुमान करलो कि इसे हिक्कारोग होगा

१ अन्नजाहिक्का लक्षण-अयुक्त पूर्वक अधिक अन्न भक्षण तथा अधिक जल पान से वायु कुपित होके उर्ध्वगामी होती है इसे अन्नजा कहते हैं।

२यमलाहुचकीलक्षण-कुछ समय के अंतर से दो दो हुचकी आकर सीस और ग्रीवा को कम्पित करें उसे यमला जानो।

३क्षुद्राहिक्कालक्षण-जोकंठ तथा हृदयकी संधिसे उत्पन्न होके बेर२ [समयका अंतर देकर] मंद २ चलै उसे क्षुद्रा हिचकीजानो

४ गम्भीर हिचकीलक्षण-जोहिचकी नाभिस्थान से भयंकरता पूर्वक उठके विशेष पीडा तथा उपद्रवों के साथ उत्पन्न होती है।

महतीहिचकी लक्षण-जो सर्व मर्मस्थानों को पीडित और शरीर को कम्पित करता उठै सो महती हिचकी जानो।

हिक्काका असाध्य लक्षण रोगीको हिचकी चलते समयशरीरमें कम्प आवें उर्ध्वदृष्टि हो, अँधियारी आजावे, शरीरक्षीणहो, छींक अधिक आवें और भोजनमें अरुचिहोजावेतो असाध्यहिक्काजानो

श्वासरोगोत्पत्ति-जिन वस्तुओंके भक्षणसे हिक्कारोग उत्पन्न होता है बहुधा उन्हीं से श्वास रोग भी होता है,यहभी पांच प्रकार का है अर्थात् १ महाश्वास, २ ऊर्ध्वश्वास, ३ छिन्नश्वास ४ तमकश्वास और ५ क्षुद्रश्वास।

श्वासरोगपूर्वरूप- हृदय में पीडा, शूल,अफरा, मलमूत्रावरोध मुख बेरस [निरस] और कनपटी में पीडा होतो जानो कि अब श्वास उत्पन्न होगा।

श्वासरोगस्वरूप-सर्व शरीर में भ्रमणकारी कफसे मिलकेसमस्त

१ बहुधा इन लक्षणों युक्त गम्भीर और महती हिचकी हुआ करती है।

नसों को रोक देवे और वायुका बहाव बंद होकर, श्वास (दम) चल उठे इसे श्वास रोग कहते हैं।

महाश्वास लक्षण-मनुष्य श्वास से दुःखित हो मतवाले वृषभके समान निरंतर ऊंचे स्वर से श्वास खींचे; श्वास का शब्ददूरपर्यंत सुनाई देवे नेत्र कायरता युक्त होवें. संज्ञाहीन होजावे, मुख फट जावै. नेत्र फट जावे. बोलने में असमर्थ हो, अति दीन जैसा दृष्टि पडे तो महाश्वास जानो।

ऊर्ध्वश्वासलक्षण--श्वास ऊपरको लेवे और वह श्वास नीचे नहीं आवे, मुख कफ युक्त होजावे, नेत्र ऊपरको चढ़कर घबराहट युक्त हो जावे. मोह और ग्लानि हो तो ऊर्ध्व श्वास जानो।

३ छिन्नश्वास लक्षण-सर्व शरीरके पांचों वायु प्राण अपान समान उदान और व्यानमें पीडित टूटी हुई श्वास लेवे; क्लेशित हुआ श्वास न ले; मर्मस्थान टूटे, अफरा होजावे पसीना निकले नेत्र फट जावें. श्वास लेते समय नेत्र रक्तवर्ण होजावें संज्ञा नरहे और शरीर का वर्ण विपर्यय होजावे, तो छिन्न श्वास जानो।

४तमक श्वासकालक्षण-शरीरकापवन उलटाघूम केनसोंकोरोक दे दाब ग्रीवा शिरको पकडके कफउपजाताहै वह कफ कंठमें जाके घुर घुर शब्द करताहुआ प्राणान्तक श्वासका उपजाताहै जिसकेवेग से रोगीको ग्लानिप्राप्तहोती, रोगीकी अग्निरुकजातीहै, श्वासलेने के समय मोह होता है, कफ से अति दुख पाताहै गलेकाकफमुखद्वारा बाहर निकलनेपर एक या दोघडीसुखसे वीतती है औरभाषणभी कर सकता है सोता है तभी श्वास आजाती है निद्रानहीं आती बैठनेमें भी चैन नहीं पडता है. उष्णता प्रिय होतीहैनेत्रोंपरशोथ आजाता है ललाट पर पसीना होजाता है मुखमूखता हैलुहारकी भाथी (धोंकनी) सदृस श्वास आती है वर्षाकी पवन मधुरऔर

१ ये तीनों महा असाध्य हैं, इनसे रक्षा देव करता ही है,

शीतल वस्तुओंसे श्वास वृद्धि पाती है ये लक्षण जिस रोगीके हों उसे तमकश्वास जानो.

५ क्षुद्रश्वासलक्षण-रूखी वस्तु खाने और परिश्रम से क्षुद्रश्वास उत्पन्नहोताहै. यहश्वास खाने पीनेकी गतिको नहीं रोकती. इद्रियों को विशेष पीडाभी नहीं देती. किन्तु श्वास मात्र चलती है।

श्वासका साध्यासाध्य निर्णय- क्षुद्रश्वास प्रथम अवस्थामें साध्य परन्तु विशेषकरके तरुणावस्थामें बलाढ्य पुरुषको साध्यही है तमकश्वास कष्टसाध्यहै; परन्तु महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास और छिन्न श्वास ये तीनों महा असाध्य और प्राणहारकही जानो ।

इतिश्रीरामचन्द्रकृते रामामृतसागरे निदानखण्डे कासाहिक्का श्वासरोगलक्षणनिरूपणम् नामद्वादशस्तरंगः ॥ १ ॥

स्वरभंग. अरोचक, छर्दि

स्वरभेदारोधकयोश्छर्दश्चात्र यथाक्रमात् ॥
तरंगे रामचन्द्रे हि निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भावार्थ-अब हम इस तेरहवें तरंगमें स्वरभंग अरोचक और छर्दि इन रोगोंका निदान यथाक्रमसे वर्णन करते हैं ।

स्वरभंगरोगोत्पत्ति दीर्घ स्वरमें भाषण, पठन. विषभक्षण और कंठमें किसीप्रकारकी चोट लगजानेसे वातादि दोषकुपित होनेके कारणसे कंठसे शब्द करने वाली नाडियोंमें स्थिर होके स्वरको भंग करदेते है, सो यहस्वर भंगरोग छः प्रकारका होताहै अर्थात् १ वात. २ पित्त. ३ कफ ४ सान्निपात, ५ शरीरकी स्थूलता और ६ क्षयीरोगसे स्वरभंग होता है,

वातस्वरभंगलक्षण-जिसकेनेत्र-मुख.मल और मूत्र श्याम हो गर्दभसदृश टूटा हुआ शब्द निकले तो वात स्वरभंग जानो।

पित्तस्वर भंगलक्षण--नेत्र.मुख.मल.मूत्र पीले हो और बोलनेके समय कंठम दाह होतो पित्तका. स्वरभंग जानो ।

कफस्वरभंग—सदा कंठ कफसे रुका रहे, क्लेशके साथ मंद बोलना बने और रात्री के समय कफ अधिक बढ़जावे तो कफ स्वरभंग जानो।

सन्निपातस्वरभंग—जिसमें बात पित्त, कफ तीनों के लक्षण युक्त हों तो उसे सन्निपातस्वरभंग जानो।

स्थूलतास्वरभंग गलेके भीतरही भीतर बोले, शब्द स्पष्ट न जान पढे, बिलंबसे शब्द निकले और प्यास अधिक लगे तो स्थूलता स्वर भंग जानो।

क्षयीस्वरभंग—जिसके बोलते समय मुखसे वाफ [वाष्प] निकले उसे क्षयीस्वरभंग जानो।

अरोचकरोगोत्पत्ति--शोक क्रोध मोह, लोभ भय दुर्गंध ग्लानिकारक भोजन और ग्लानिकारक रूप देखनेसे त्रिदोष कुपित्त होके अरोचक [अरुचि करनेवाला] रोग उत्पन्न करते हैं॥

अरोचक रोग ५ प्रकार का है अथात १ वात २ पित्त ३ कफ ४ सन्निपात और ५ क्लेशादिसे उत्पन्न होनेवाला।

वातरोचकलक्षण-मुख कषेला रहे हृदयमें शूल रहे और अन्न पर रुचि न रहे तो वातारोचक जानो।

पित्तारोचकलक्षण—मुखकडुवा, खट्टा; उष्ण निरस यासलोना रहे शरीर में दाह और मुखशोष होता पित्तारोचक जानो।

कफारोचकलक्षण- मुख मीठा तथा चिकना रहे शरीर भर में बद्धकोष्ठहो, मुखसे लार गिरे, शरीर के प्रत्यवयवमें पीडाहोऔर भोजन की ओर जीव नहीं चलैतो कफारोचक जानो।

सान्निपातारोचकलक्षण-जिसमें त्रिदोषके युक्त लक्षण मिलेहों उसे सान्निपातारोचक जानो।

यह अच्छा नहीं हानिकारक है।

शोकारोचकलक्षण—क्षुधा न लगे, मुखसे खाया नजावे अर्थात् मुखमें ग्रास इधर उधर घूमने लगे तो शोकारोचक जानो ।

अरोचकरोगकापूर्वरूप मुखमें अन्नादि पदार्थका लिया हुआ ग्रास कुछभी स्वाद न देखावे तो जानो कि अरोचक होगा । भुक्तद्वेषलक्षण—जिसपुरुषको भोजनके देखतेही तथा भोजनका नाम लेतेही अतिशय ग्लानि होकर चित्त खिन्न होजावे और भोजनकी रुचि किंचिन्मात्र भी न रहे उसे भुक्तद्वेष रोग जानो यहभी अरोचका एक भेदही है ॥

छर्दिरोगोत्पत्ति—अधिक पतली चिकनी ग्लानिकारक वस्तु जल्दी २ भोजन दुर्गंधि, दुर्गंधित स्थानावलोकन उदरमें कृमिमें और स्त्रियोंको गर्भ धारणसे वात पित्त कफ कुपित होके अंगों को पीडित करते हुए मुखकी ओर दौड़ते हैं तब भक्षित पदार्थ मुखद्वारा निकल जाता है इसे छर्दि, वमन, उलटी छांटनी तथा उछाल रोग कहते हैं ।

छर्दिरोगके ५ भेद हैं अर्थात् १ वात २ पित्त३ कफ ४ सन्निपात और ५ ग्लानिकारक पदार्थ के सेवन से उत्पन्न होता है ।

छर्दिरोगका पूर्वरूप—प्रथमही खट्टा कडुवा रस हृदयमेंआवे डकार न आवे मुखसे लार गिरे मुखसे वारंवार खट्टा पानी निकले मुख कडुवा रहे अन्न जलपर रुचि न चाहै तो जानो कि इसे कुछ कालमें अवश्य वमन होगा ।

वातछर्दिलक्षण-हृदय पसली,, मस्तक, नाभिमें पीडा मुख शोष स्वर भेद;डकारमें उच्चस्वर निकले,फेन-काले रंगयुक्त कषला बडे वेग से अति क्लेशपूर्वक वमन होतो वातछर्दि जानो ।

पित्तछर्दिलक्षण--मुखशोष मूर्छा तृषा अन्धेरा और चक्कर आवें तालु नेत्र उष्ण हों और हरे तथा लाल रंगकी उष्ण उलटी हो तो पित्तछर्दि जानो ।

कफछर्दिलक्षण -तंद्रा, भोजन में अरुचि, शरीर में भारीपन होवे मुख मीठा हो, नींद न आवे और चिकना, मीठा; गाढा, कफयुक्त वमन हो तथा वमन होते समय सर्व रोम खडे होजावे तो कफछर्दि जानो ।

सन्निपात छर्दिलक्षण- शूल, अपच (पचे नहीं)अरुचि, दाह श्वास प्रमेह इत्यादि समस्त रोग निरंतर रहै और सलौना खट्टा नीला यथा लाल गाढा उष्णवमन हो तो सन्निपातछर्दि जानो

ग्लानिछर्दिलक्षण-जिस ग्लानिकारक पदार्थ के संसर्गसे उलटी हुई हो उसीका वारवार स्मरण बना रहे तो ग्लानिछर्दि जानो;

विशेषत-ग्लानिछर्दि में भी त्रिदोषका निर्णय पूर्वोक्त रीत्यनुसार ही करना चाहिये छर्दि के साध्या साध्य लक्षण तथा उपद्रवोंको विशेष जानान चाहो तो चरक सुश्रुतादिक ग्रंथ देखो ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे स्वरभेदारोचेकाछर्दिरोगलक्षण निरूपणं नाम त्रयो दशस्तरंगः ॥ १ ॥

तृषा, मूर्छा मदात्यय :

अथास्मिंश्चतुर्दशेऽत्र तरंगे च तृषामूर्छा मदात्ययादीनाम् रोगाणांहि निदानं विचार्य लिख्यते मया यथा संख्यम् ॥ १ ॥

भाषार्थ -अब हम इस चौदहवें तरंगमें यथाक्रमसे तृषा, मूर्छा और मदात्यायादि रोगों का निदान लिखते हैं ।

तृषारोगोत्पत्ति-बल श्रम, बलनाशसे बढाहुआ पित्त वायु से मिलके तालुमें प्राप्त होता है इस लिये जलप्रसारणी नस रुककर तृषा उत्पन्न होता है तृषारोग सात प्रकार का है अर्थात् १वायु २पित्त, ३कफ४ शस्त्रप्रहार, ५ बलनाश, ६ आम (आंव) और ७ भोजन करने से उत्पन्न होता है

तृषारोगका स्वरूप-निरंतर जल पीनेपरभी तृप्ति न होवे, जल पीनें मेंही चित्त लगा रहे तो तृषारोग उत्पन्न हुआ जानो।

१ वायुतृषालक्षण-मुख उतर (कांतिरहित हो) जावे कनपटी और मस्तक में पीडा होती रहै, नसें रुक जावें. मुख का स्वाद जाता रहै और शीतल जलपान से तृषा बढ़े तो बाततृषा जानो

२ पित्ततृषालक्षण-मूर्छा, भोजनपर अरुचि, दाह, नेत्र, रक्त• मुख शुष्क हो जावे, ठंडी वस्तु प्रिये लगे,मुख कटु होजावे, शरीरमें ज्वर रहे और मल. नेत्र पीतवर्ण होजावें तो पित्ततृषा जानो

३ कफतृषोत्पत्ति-कफद्वारा जठराग्निकी रुकावट होकर जल प्रसारणी नसों का शोषण होता है तब कफतृषा उत्पन्न होकर ये लक्षण होजाते हैं।

कफतृषालक्षण-रोगी तृषासे पीडित होताहै,अधिक निद्रा आने लगती है शरीर बोझल होजाता है, मुख मीठा रहकर प्रतिदिन सूखता जाता है ये लक्षण कफतृषा के हैं,

४ शस्त्रप्रहारतृषा-शस्त्रादिक की चोट लगने से शरीरावयवोंमें रुधिर प्रवाह होने के कारण अधिक पीडा होने से वारंवार तृषा लगे उसे शस्त्र प्रहार तृषा जानो।

५ बलनाशकतृषालक्षण-क्षीणता होकर हृदय में पीडा होवे, कफ बढ जावे,मुखशोष हो और अधिक जलपान करने परभी तृषा न मिटे तो क्षीणता की तृषा जानो।

६ आमतृषालक्षण-क्षीणताकी तृषाके लक्षणही इसके लक्षण हैं।

७ भोजनतृषालक्षण--चिकना, खट्टा खारा, भारी अन्न अधिक खाने से जो तत्काल तृषा लगे उसे भोजन तृषा जानो

तृषारोगोपद्रव-मुखका ज्वर मंद पड जावे, कंठ तालु सूख जावें ज्वर,मोह,कास, स्वास होंतो इन उपद्रवोंसे बचना कठिन ही है

मूर्छारोगोत्पत्ति–क्षीणता, अति कुपथ्य; मलमूत्रावरोध. प्रहार से बाहिरी इन्द्रियों (नेत्र. कर्ण आदि) तथा मनोस्थान में त्रिदोष प्रवेश होनेसे संज्ञाप्रवाहणी नसों को रोक देते है, तव अन्धेरी प्राप्त होकर वह मनुष्य काष्ठसदृश पृथ्वीपर गिर पड़ताहै, उसे सुख दुःखादिका बोध नहींरहता,इसे वैद्य मूर्छा तथा मोहभी कहते हैं. मूर्छारोग छः प्रकारका है अर्थात १वात, २पित्त, ३ कफ ४ रुधिर ५ मद्यपान और ६ विषभक्षण से होता है, परन्तु उक्त छःहों प्रकार में पित्त प्रधान रहता है ।

मूर्छासामान्यस्वरूप–कुपथ्यी.पराक्रमहीन, क्षीणतायुक्त और मद्यप पुरुषके अज्ञानका मुख्य हेतु पित्तारूप तमोगुण बढके ज्ञानरूप सतोगुणऔररजोगुणको आच्छादित करदेताहै तबदशोंइद्रियों में त्रिदोषका प्रवेशहोकेज्ञानवाही नसेंभी आच्छादित होजाती हैं अत एव ज्ञाननाशक बढे हुए तमोगुणके वेगमें मनुष्य बेसुधि होकर पृथ्वीपर गिरपडताहै इस दशामें प्राप्त होके वहमूर्छित कहाता है

मूर्छाका पूर्वरूप हृदयमें पीडा होवै. विशेष जम्भाई आवे मनमें ग्लानिहो और संज्ञा नष्ट होकर चित्त भ्रांतिसी जान पडे तो अनुमान करो कि किंचित् कालमें इस पुरुषको मूर्छा आवेगी,

वातमूर्छालक्षण–प्रथम आकाशका वर्ण काला,नीला या लाल सा दीखे तदनंतर अन्धकारमें प्रवेश हुआसा जान पडे. अल्प- कालमें पुनः ज्ञानयुक्त होजावे शरीर मे कम्प हडफूटन, हृदय में पीडा शरीर कृशतायुक्त और शरीरकी त्वचा लाल तथा धूसर [धूमके] रंग सदृश दृष्टि पडे तो बात मूर्छा जानो ।

पित्तमूर्छालक्षण–प्रथम आकाशका वर्ण लाल हरा तथा पीला दृष्टि पडकर मूर्छा आजावे तदनन्तर पसीना आने पर संज्ञा- युक्त होवै तृषा लगे शरीर सन्तप्त हो जावे नेत्रोंका रंग लाल

तथा पीला पड जावे; मुखसे टूटते हुए [अस्पष्ट] अक्षरनिकलें और शरीर पीला पड जावे तो पित्तमूर्छा जानो.

कफमूर्छालक्षण— प्रथम आकाश मेघा च्छादितसा दीख पडे पश्चात् मूर्छा आवे फिर कुछ काल पश्चात् संज्ञा प्राप्त होवे शरीर पर जान पडेकि मैंने कुछ चर्म या गीला वस्त्र बोझलसा ओढ़ा है मुखसे लार गिरने लगे, वार बार थूके तो, कफ मूर्छा जानो

सन्निपातमूर्छालक्षण—उक्त तीनो दोषोंके लक्षणयुक्त हों तो सन्निपातमूर्छाजानो; सो सन्निपातकी मूर्छा मनुष्यको अपस्मार [मिरगी]के समान गिरादेतीहै परन्तु मिरगीमें रोगीकी भयानक चेष्टा हो जाती है और सन्निपातमूर्छा में यह दशानहीं होती यहमूर्छा ६ प्रकारकी मूर्छासे भिन्नहोनेसे मूर्छामें नहींगिनी जाती.

रक्तमूर्छालक्षण—जिसको रक्त देखतेही अथवा दुर्गन्धमात्र सेपृथ्वी आकाश भरमें अन्धकाररूप दृष्टि पडे फिर घबरा कर मूर्छा हो आवे,नेत्र तन जावें और भली भांति श्वास न आवे तो रक्त मूर्छा जानो,

मद्यमूर्छालक्षण-अधिक मद्यपानसे मनुष्य कुछका कुछ बकता हुआ धरणीपर गिर पडे, संज्ञाहीन होके [जब तक मद न उतर जावे] हाथ पैर पीटता हुआ भूमिपर पडा रहता है और तृषा अधिक लगे तो मद्य मूर्छा जानो।

विषमूर्छालक्षण—शरीर कम्पित हो निद्रा अधिक आवे प्यास विशेष लगे संज्ञाहीन होजावे मुख काला पड जावे, और अतिसार होकर भोजनसे अरुचि होजावे तो विषमूर्छा जानो.

विशेष :—मनुष्यजिस प्रकार मूर्छासे अचेत होजाताहै तैसेही भ्रम, तंद्रा, निद्रा और सन्याससमेंभी संज्ञाहीन होजाता है। इन चारोंके लक्षण मूर्छा से भिन्न रहते हैं अतएव जुदे प्रकर्ण में लिखेंगे तथापि ये मूर्छा के भेदही हैं,

भ्रमलक्षण-रजोगुण और वातपित्तके संयोगसे भ्रम होताहै, तन्द्रालक्षण-तमोगुण और वातकफके संयोगसे तंद्रा होतीहै. और दशों इन्द्रियां खेदित होकर अपने अपने विषयों को त्याग देती हैं तब निद्रा आती है ।

सन्यासलक्षण-त्रिदोषके वेगसे मनुष्यकीनाडी, देहऔरमनकी क्रिया नष्ट होकर निर्बल पुरुषको सन्यासरोग उत्पन्न करताहैतब रोगी पीडित होकर काष्ट तथा मृतक सदृश पडारहताहै इसकी चिकित्सा शीघ्र करनाचाहिये नहींतो मरने में कुछ विलंब नहींहै

मदात्ययरोगोत्पत्ति-अति विरुद्ध नियमसे मदिरा [मद्य, दारु ब्रांडी शराब] पान करेतो मदात्ययरोग उत्पन्न होताहै क्योंकि जो गुणागुण विष में हैं वेही मद्य में होतेहै, यदि मद्य युक्तिसे सेवन किया जावेतो अमृत समान लाभदायक होगातथाअयुक्तसे विषसदृश प्राणनाशक होता है. जैसे नियत समयपर परमित अहार करनाहै मनुष्यको रोगहित बलवीर्य युक्त रखता है और कुसमय अप्रमाण से भक्षितान्न रोग कारक तथा शरीर नाश कहा जाताहै तैसेही बिष और मद्यभी युक्ति से रक्षक तथा अयुक्तिसे भक्षक होता है, अतएव जिन लोगोंका जातिमें मद्यपान से कुछदोष न होवे तो वे निम्नलिखित शास्त्रोक्तनियमोसे पानकरें तो मदात्ययरोग न होगा शरीर आरोग्य रहैगा. परंतु जिनके लिये मद्यपान शास्त्रादिक से वर्जितहै वे उसके गुणोंकी ओर ध्यान देके कदापि इच्छा न करें नहीं तो स्वधर्मसेच्युत होकर अंतमें नरक वासी होंगे अतएव मनुजी आदि ऋषियों की आज्ञा है कि जो मद्यपान करने वाले भी मद्यका त्याग करदें तो महा पुण्यफलके भागी होकर स्वर्गगामी होंगे.

मद्यपानविधि-प्रातःकाल स्नानादि करके प्रसन्न चित्तसे २ टं के भर उत्तम मद्यपान करो, फिर मध्याह्न कालमें उत्तम भोजनादि के साथ चार टके भर द्यम पिओ. इतनंतर सायकाल कोभी प्रथम प्रहरमें भोजनके साथ आठ टके भर पीओ और उत्तमोत्तम फल, दुग्ध मलाई आदि पदार्थ भक्षण करो तो सदा तरुण रह कर काम, तेज, बल बुद्धि स्मृति और हर्षादि नित्य प्रतिवृद्धि गत होंगे और जो अन्यथा पीओगे तो बल बुद्धि, तेज. स्मृति-हर्ष लज्जा और संज्ञाहीन तथा मदात्यय रोग, आलस्य. प्रलापादि से पूरित होकर शरीर का नाश हो जावेगा।

मदात्ययरोगोत्पत्ति-क्षुधित, सर्वदा अनियमित कालः प्रमाणहीन अधिकता. क्रोध, भय, तृषा, श्रम, निर्बलता, मलमूत्रकावेग खट्टे पदार्थ और उष्णतासे पीडित दशा इन बातों के मिलाप से जो मदिरा सेवन करोगे तो मदात्यय, परमद पानाजीर्ण तथा पानविभ्रम रोग होंगे मदात्यय रोगके चार भेद हैं १ वात, २ पित्त ३ कफ और ४ सन्निपात मदात्यय।

वातमदात्ययलक्षण हिचकी, श्वास, शिर कम्प, पार्श्वशूल निद्राभाव और अति प्रलाप [अनर्थ वाक्य कथन करे तो वात मदात्यय जानो।

पित्तमदात्ययलक्षण-अति तृषा दाह ज्वर पसीना मोह, अतिसारहो, चक्करआवे और शरीरहरा पडजावे तो पित्तमदात्ययजानो

कफमदात्ययलक्षण-अरुचि. खट्टा तथा सलोने भक्षितपदार्थ, युक्त वमन हो तन्द्रा शरीरमें भारीपन होतो कफमदात्यय जानो

सन्निपातमदात्ययलक्षण-जिसमें वातपित्त कफ तीनोंके लक्षण मिश्रित हों उसे सन्निपातमदात्यय जानो

परमदरोगलक्षण-पीनस, सीस, अंगमें पीडा शरीरमें भारीपन

मुख स्वादका नाश मलमूत्रकी रुकावट तंद्रा अरुचि प्यास हो तो परमदरोग जानो ।

पानाजीर्णलक्षण–पेट अधिक फूले वमन हो दाह उठे और अजीर्ण हो तो पानाजीर्ण जानो ।

पानविभ्रमरोगलक्षण–शीश हृदय अंगमें पीडा हो कफ थूकै मुखसे धूआं निकले मूर्च्छा हो वमन आवे ज्वर चढै और मद्य तथा मिठाई पर अरुचि हो तो पानविभ्रमरोग जानो ।

मदात्ययके असाध्य लक्षण– रोगीको नीचे का ओष्ठ लटजावे शरीर ऊपर ठंढा होजावें हृदय में अतिदाहहो मुखमें तैलकीगंध आवे जीभ दांत काले पड जावें नेत्र काले लाल या पीले पड जावें हिचकी आवें ज्वर चढे वमन होवे पार्श्वशूल उठे खांसी चले और चक्कर आवे तो असाध्य मदात्यय रोग जानो ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे तृषामदात्यादिरोग लक्षण निरूपणं नाम चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

शरोंषधीधवे चास्मिन् तरंगे हि यथाक्रमात् ॥
दाहान्मादरुजोर्नूने निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः–अब हम इस १५ वें तरंगमें दाह और उन्मादरोग का निदान यथाक्रम से लिखते हैं ।

दाहरोगोत्पत्तिकारण–१ पित्त २ दुष्ट (विकारी) रुधिरवृद्धि ३ कोठेमें शस्त्रादिकी चोट ४ मद्यादिपान, ५ तृषावरोध ६ धातु क्षय और ७ मर्मस्थान में प्रहार लगनेसे दाहरोग उत्पन्न होताहै यह रोग उक्त सात कारणों से उत्पन्न होकर उक्त सातही बिभागों में बिभाजित किया गया है ।

१ पित्तदाहलक्षण—सर्व लक्षण रोगीके शरीर में पित्तज्वरकी नाईं उपस्थित हो तो पित्तदाह जानो.

२ रुधिर बृद्धिदाहलक्षण-सर्व शरीरमें दाह लगजावै; शरीरसे धुआं निकले, शरीर और नेत्रोंका वर्ण तांबे के समान लाल हो जावें. मुखसे रक्तकी गंध आवे और सब अंग अग्नि समान जलने लगें तो दुष्ट रुधिर वृद्धिदाह जानो।

३ कोठेमें शस्त्रकी चोटसे उत्पन्न दाहका लक्षण- कोठा रुधिर से भरा रहे; शरीर में अति दुःसह दाह उठे तो उक्त दाह जानो: यह असाध्य प्राणान्तक है।

४ मद्यपानदाहलक्षण-मद्यमानकी उष्णता पित्त और रक्त मे बढी हुई त्वचामें प्राप्त होके भयंकर दाह उत्पन्नकरतीहै जिससेसर्व शरीर अत्युष्ण हो जाता है इसे मद्यकी दाह जानना चाहिये.

तृषावरोधदाहलक्षण--प्यास रोकने से शरीरकी जल सम्बन्धी [रस रक्त आदि]धातुयें क्षीण होकर पित्तकी उष्णता बढजाती है इसलिये शरीर भीतर बाहरसे दग्धहोकर मनुष्य अचेतहोजाता है तब उसका कंठ, तालु आदि सूखकर जीभ बाहर निकलकेतड फड़ाने लगता है इन लक्षणोंसे युक्त हो तो तृषावरोधदाह जानो.

६ धातुक्षयदाहलक्षण—रोगी मूर्छा, तृषायुक्त होकर सूक्ष्म स्वर होजावे और उठते बैठते तथा कार्यशक्ति न रहे तो धातुक्षय दाह जानो. इस दाह से बचनाभी दुर्लभही है।

७ प्रहारजदाह—शिर, हृदय, मूत्राशय आदि मर्मस्थान में चोट लगकर दाह उत्पन्न हो तो प्रहारजदाह जानो॥

दाहके असाध्य लक्षण-ऊपरसे शरीर शीतल और रोगी के हृदयान्तर में अत्यन्त दाह हो तो असाध्य जानो।

उन्मादरोगोत्पत्तिकारण—प्रकृतिविरुद्ध पदार्थ, अपवित्र भोजन

और धतूरा, भागविषादि भक्षण,देवता, गुरु,ब्राह्मण. तपस्वी राजा आदिका अपमान. भय तथा हर्षकी अधिकयतासे मनुष्यका मन बिगडकर वातादि दोष युक्त होजाता है, तब मनुष्यकी स्मरण शक्ति नष्ट होकर वह उन्मत्त [मदयुक्त, दिवाना. गहला, पागल खपती] होजाता है ।

उन्मादरोगभेद- यहरोग ६ प्रकारका होताहै अर्थात् १ वात. २ पित्त. ३ कफ. ४ सन्निपात. ५ शोक, ६ विषोन्माद.

उन्मादस्वरूप—क्षीण पुरुषके विरुद्ध अहार से त्रिदोष दूषित होकर बुद्धिके स्थान (हृदय) को बिगाड देते हैं और मनःप्रवाहणी नाडियोंमें प्राप्त होकर मनुष्यके मनको कार्याकार्य बिचार रहित कर देते हैं वह पुरुष [पागल] उन्मत्त कहाता है ।

उन्मादरोगका पूर्वरूप- बुद्धि ठिकाने न रहे. शरीरकापराक्रम नष्ट हो जावे धैर्यता जाती रहे दृष्टि स्थिर न रहे भली भांति वार्तालाप न कर सकै. हृदय सूना पड जावे तो अनुमान करो कि उसे उन्माद रोग होगा ।

वातोन्मादलक्षण--रूखी या शीतल वस्तु भक्षण और बिरेचन की विशेषतासे धातु क्षीण होकर वादी बढजाती है तब उस मनुष्यका हृदय बिगडकर स्मरण तत्काल नष्ट होजाता है, जो वह मनुष्य निष्कारणही हँसे नाचें. गावे, रोवे हाथ और मुखसे वानर की सी चेष्टा दिखावे, शरीर कठोर, काला या लाल होजावे और भोजन पचने पर यह रोग भी बढे तो वातोन्मादजानो.

२पित्तोन्मादलक्षण—अजीर्णपर भोजन करने तथा कडुवाखट्टा याउष्णपदार्थ खानेसे बढाहुआ पित्तहृदयको बिगाडकर उन्मादरोग उत्पन्न करताहै तब वह मनुष्य किसीकी बात नहीं मानता,नग्नहो जाता मारनेलगता इधर उधर भागता शरीरपीलापडजाता, उष्ण

वस्तु की इच्छा करता और मुख पीला पड़ जाताहै जिस रोग के ये लक्षण हों उसे पित्तोन्माद जानो ।

३ कफोन्मादलक्षण-जो मनुष्य अधिक खाकर श्रम नहींकरतें उनके पित्त सहित कफ बढकर हृदयमें प्रवेश होजातेहैं औरचित्तके बिगाड से बुद्धि, स्मृति नष्ट कर मनुष्य को उन्मत्तकर देतेहैं जो रोगी अल्प भाषण करे क्षुधारहित हो जावे स्त्रीसे अरुचि और मुखादिक श्वेत होजावे तो कफोन्माद जानो ।

४ सन्निपातोन्मादलक्षण-उक्त तीनों (वात पित्त,कफ) दोषों के लक्षण हों तो सन्निपात [त्रिदोष] उन्माद जानो ।

५ शोकोन्मादलक्षण-राजा. प्रबल शत्रु चोर अथवा सिंहादिक भयंकर जीवों के भय धन बन्धु [पुत्र कलत्र भ्रातादि] का बिछोह मैथुनके लिये इच्छित स्त्रीकी अप्राप्ति और कामशान्ति में बाधा पडनेके कारण शोक और दुःख होकर उन्मादरोग होता है जो रोगी विचित्र बात करने लगे, मनका अभिप्राय यथार्थरूपसें प्रदर्शित करने की संज्ञा न रहे कभी गावे कभी हंसें और कभी रोवै तो शोकोन्माद जानो ।

६ विषोन्माद लक्षण-नेत्र लाल हों दीन हो जावें शरीर का बल तथा इन्द्रियो की कांति नष्ट हो जावे और मुख श्याम पड़ जावे जो ये लक्षण हों तो विष भक्षण का उन्माद जानो इससे बचना दुर्लभ है ।

उन्माद रोगके असाध्य लक्षण-जो रोगी नीचा मस्तक या ऊंचा मुख रक्खे शरीर का बल और मांस नष्ट होजावें निद्रा न आवे वरन् जगताही रहै तो वह उन्माद रोगी मर जावेगा, इति षड्विध उन्माद रोग निदान समाप्त । [२३]

अब हम इसके अनंतर भूतोन्मादादि ब्रह्मराक्षसोन्माद पर्यन्त १६ विशेष उन्मादों का निदान लिखते हैं ।

भूतोन्मादलक्षण--भूत लगे हुए रोगी की चेष्टा वाणी पराक्रम और ज्ञानाज्ञान यथास्थित न रहकर विचित्र ढंगका ही रहता है परन्तु मनुष्यत्व से कुछ विरुद्ध ही नहीं होजाता है ।

२ देवोन्मादलक्षण--जो रोगी सब बातों से संतुष्ट पवित्र और ब्रह्मण्य[शीलस्वभावादि ब्राह्मणके नवगुणयुक्त] रहे सुन्दरपुष्पोंकी माला और गंध चंदनादि पदार्थ धारण करता रहे नेत्र न मीचे बिना पढ़े भी संस्कृत गद्य पद्य भाषण श्लोक और वार्ता करने लगे शरीर का तेज बढता जावे और अन्य लोगों को इच्छित बरदान देने लगे तो शरीरमे देवता प्रवेश होनेका उन्माद जानो

असुरोन्माद लक्षण-रोगीके शरीर में पसीना न निकले ब्राह्मण गुरु देवतामें दोष बतावे दृष्टि कुटिल हो जावे किसी प्रकार के कहनेका भय न लगे कुमार्गमें प्रीति बढ़े किसी वस्तुसे तृप्ति न हो भोजनादि में दुष्टात्मा हो तो असुर प्रवेश का उन्माद जानो ।

४ गंधर्वोन्मादलक्षण दुष्टात्मा हो, पुष्पवाटिका में निवास स्वीकार करे गाना बजाना नृत्य में प्रीति हो अल्पभाषी हो आचार[1] में मन लगा रहे तो गन्धर्वोन्माद जानो ।

५ यक्षोन्माद लक्षण-नेत्र लाल हों मलिनतथा रक्तवस्त्र धारण करें अपना अभिप्राय न कह सकै; तेजयुक्त हो शीघ्रतासे चले. सहन शीलहो और किसको क्यादूं ऐसा कहता रहेतो यक्षोन्माद जानो[2]

६ पितृजोन्मादलक्षण--जो मनुष्य दर्भ (डाभ एक प्रकार की

१ शिष्टजन महात्माओंने जो रीति स्वीकार की हैं सो आचार कहाता है.

२ यक्षोन्माद और गन्धर्वोन्मादके लक्षण पूर्वामृतसागरमें समानही लिखे थे परन्तु वे परस्पर जुदे हैं अतएव हमने यक्षोन्मादलक्षण माधवनिदानसे लिखेहैं ।

घांस)कुश पर अपने पित्रों को सर्वदा पिंड देतारहे शांत स्वभाव हो दाहिने कांधे पर अंगोछा धरके पित्रों के अर्थ तर्पण करता रहे सदा पितृ भक्तिमें लगा रहे और मांस तिल गुड क्षीर आदिके भक्षण की इच्छा रक्खे तो पितृजोन्माद जानो ।

५ सर्पोन्मादलक्षण–सर्प ग्रह गृहीत मनुष्य कभी सर्प के सदृश लोट जावे, कभी सर्पके सदृश जीभसे गलफरा चाटे क्रोधकरे गुड दुध मधु, क्षीर इनके भक्षण की इच्छा करे तो सर्पोन्माद जानो।

८ राक्षसोन्मादलक्षण–जो मांस, रक्त तथा मद्यकी इच्छा करे, निर्लज्जता, निष्ठुरता, शूरता, क्रोध, अपवित्रता बलकी विशेषता हो और रात्रिमें विचरता रहे तो राक्षसोन्माद जानो ।

९ पिशाचोन्मादलक्षण ऊपरको हाथ किये रहे, मनमानी बकवाद करे शरीर में दुर्गंधि अपवित्रता, लालच चंचलता रहे बहुत सोवै उद्यान (निर्जनवन) में निवासकी इच्छा करे रोता हुआ नाना प्रकारकी चेष्टा करे तो पिशाचोन्माद जानो ।

सूचना—ये नौ उन्माद निदान ग्रन्थों से लिखे हैं अब इसके आगे पूर्वामृतसागर से लिखते हैं ।

१ सतीदोषोन्मादलक्षण--निश्चल मन न रहे निस्सन्तान होजावै सती का इतिहास (प्राचीन कथा) सुनाने की रुचि करै मौन होजावै, यदि बोलै तो वरदान देवै, पवित्रता पूर्वक उत्तम वस्तुओं में मन लगावे तो सतीदोषोन्मादलक्षण जानो ।

२ क्षेत्रपालदोषोन्मादलक्षण--मुख और नाकसे रुधिर गिरे माथे में स्मशानकी भस्म डाले खोटे स्वप्न देखे पेट और सन्धियों में पीडा हो चित्त स्थिर न रहे तो क्षेत्रपालदोषोन्माद जानो ।

---

१ [illegible] पूर्वामृतसागर में नहीं था इसलिये माधवनिदान से लिखा है।

३ [1]देव्युन्मादलक्षण– पक्षाघात हो शरीर और रुधिर सूखजावे, मुख और हाथ पांव टेढे हो जावें, क्षीण देह हो जावे और स्मरण का अभाव होजावे तो देव्युन्माद जानो ।

४ कामनउन्मादलक्षण–कांधे और मस्तक भारी रहें,मन स्थिर न रहै, क्षीणांग हो, नाक, आंख, हाथ और पांव में दाह हो; वीर्य न्यून पडजावे, शरीर सूखकर सुई चुभाने के समान पीडा हो तो कामन (जादू) का उन्माद जानों ।

५ शाकिनीडाकनी दोषोन्मादलक्षण–सर्वांग में पीडा हो, नेत्र बहुत दूखें मूर्छाहो, शरीर कँपै, रोवै हंसे, प्रलाप करे, भोजन में अरुचि, स्वर भंग हो, शरीर का बल और क्षुधा नष्ट होजावे, ज्वर चढै, चक्कर आवे तो डांकनी [डाकन] दोषोन्माद जानो,

६ प्रेतोन्मादलक्षण–जो मनुष्य प्रात काल ही घरसे उठ उठकर भागे, कुवाच्य भाषण करे, बहुत चिल्लावे, शरीर कँपै,रोने खाने पीनेसे अभाव हो और लम्बी २ श्वासें छोडे तो प्रेतोन्माद जानो

ब्रह्मराक्षसोन्मादलक्षण–देव, ब्राह्मण, गुरुसे द्वेष रक्खे, आप स्वयं वेदवेदान्तादि से ज्ञाता हो, स्वयं अपने शरीर को पीडित करे नाश न करे तो ब्रह्मराक्षसोन्माद जानों

सूचना–ये सातों उन्माद पूर्वामृतसागर से लिखे हैं परन्तु माधव निदान में नहीं लिखे गये हैं ।

उन्मादरोगके असाध्य लक्षण–नेत्र फटे से होजावें, सदा इधर उधर घूमता रहै,मुखसे फेन गिरै, निद्रा अधिक आवे, खडे२ ही कम्प आकर गिर पडे तो असाध्योन्मादरोग जानो ।

उन्मादप्रवेशकाल–१उक्त लक्षणयुक्त उन्माद पूर्णमासीको होतो

[1] देव्युन्माद–देवी उन्माद जिसे मारवाड में विजासनी देवी अथवा माथल्या भी कहते हैं ।

देवोन्माद, संध्यासमय हो तो भूतोन्माद तथा असुरोन्माद अष्ट-मी को हो तो गन्धर्वोन्माद प्रतिपदाको होतो क्षयोन्माद, अमाव-स्याको होतो पित्रोन्माद, पंचमीको हो तो सर्पोन्माद, चतुर्दशी की रात्रिको हो तो राक्षसोन्माद तथा पिशाचोन्माद जानो।

उन्मादनिवृत्तिकाल-जो जो तिथि और समय जिस२ उन्माद के प्रवेशका कहा गया है वही२ काल उनके बलिप्रदान तथा शमन का भी जानना चाहिये।

शंका-आपने देवोन्मादादि में यह दर्शित किया कि मनुष्य के शरीरमें उनका प्रवेश होता है तो शरीरमें समाते हुए वे हमको दीखते क्यों नहीं है, प्रवेश हो तो दीखना चाहिये।

समाधान-सुनियेगा ! जिसप्रकार दर्पण या जलमें तुम्हारे शरी-रका प्रतिबिम्ब, शरीरमें शीतोष्णता औरकांतिमाणि तथा सूर्यमुखी काचमें सूर्यकिरण प्रवेश होते दृष्टि नहीं पडतीहैं परंतु यथार्थमेप्रवे-शित होकर अग्निको उत्पन्न करतीहै और तुम्हारेशरीरकाबिम्बभी तुम ज्योंका त्यों देखते हो, तिसी प्रकार देवग्रहादि भी मनुष्य के शरीरमें प्रवेश होते हुए नहीं दीखते, परन्तु प्रवेश होके उन्माद को उत्पन्न कर नाना प्रकार की चेष्टा दिखाते हैं।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे द्वाहोन्मादरोगलक्षण निरूपणं नाम पंचदशस्तरंगः ॥ १५॥

अपस्मार. वातरोग,

अपस्मारस्य रोगस्य वातजानां यथाक्रमात्।
रसौषधीशो भंगेऽस्मिन् निदानं लिख्यते मया॥१॥

भाषार्थः-अब हम इस सोलहवें तरंगमें मृगी और वादीसे पैदा होने वाले रोगों का निदान यथाक्रम से लिखते हैं।

अस्मार (मृगी) रोगोत्पत्तिकारण-चिन्ताशोक आदिसे कुपित हुए बात, पित्त कफ हृदयकी नसोंमें प्राप्त होके स्मरणमात्रकोनष्ट कर देते हैं इस दशाको लोकमें मृगीरोग कहते हैं ।

अपस्मार भेद-यह रोग चार प्रकार का है अर्थात् १ बातज, २ पित्तज, ३ कफज और ४ सन्निपातज.

अपस्मारपूर्वरूप हृदय कम्पे,शून्य होजावे. पसीना निकलेएक ध्यान लग जावे,मूर्छा आजावे, निद्रा न आवे और ज्ञान नाशहोतो अनुमान करो कि इस मनुष्यको अपस्मार रोग उत्पन्न होगा,

अपस्मारसामान्यरूप-अन्धकारमें प्रवेश हुआसा जानपडे, नेत्र घूमजावे, शरीर मटके [हिले] हाथ ,पैर और अंगफेंकता हुआ मूर्छित होकर धरणीपर गिर पड़े तो अपस्मार हुआ जानो ।

१ वातापस्माररोगलक्षण-कम्प आवे, दांत किरकिरावे मुखसे फेन गिरे श्वास वेगसे चले, काले पीले से कुछ आकार से रोगी की दृष्टिमें आवे तो वादी मृगी जानो.

२ पित्तापस्मारलक्षण-मुखसे पीला फेन गिरै त्वचा मुख नेत्र पीले पडजावें, तृषा अधिक लगे सर्वांग उष्ण होजावे पीलासा दीखे और समस्त जगतमात्र में अग्नि व्याप्त देखे तो पित्त की मृगी जानो

३ कफापस्मारलक्षण-मुखसे श्वेत फेन गिरे शरीरकी त्वचा,नेत्र मुख श्वेत हो जावे; जाडा लगे रोमांच हो आवे और सब जगत् में श्वतेही श्वेत से पदार्थ दृष्टि पड़े तो श्लेष्मिकापस्मार जानो ।

४ सन्निपातापस्मारलक्षण-पूर्वोक्त तीनों दोषों के लक्षण हों तो सान्निपात [त्रिदोषज] मृगी जानो ।

असाध्यापस्मारलक्षण-भौंहें चढ़ जावें और नेत्र फिर जावें तो असाध्यापस्मार जानो. यह रोगी मर जावेगा ।

अपस्मारप्राप्तकालनिर्णय- १२ वें दिन वातापस्मार, १५ वें दिन पित्तापस्मार और ३०वें दिन कफापस्मार होता है. परन्तु उक्त नियमसे कुछ न्यूनाधिक कालमें भी हो सक्ते हैं जिस प्रकार नियत कालमें भी उत्पन्न होनेहार वनस्पति अन्नादि भीआगेपीछे उत्पन्न हुआ करते हैं वैसेही मृगीभी कभी२ अपने सूचित कालसे आगे पीछे होती है परन्तु उसका समय पूर्ण विपर्यय नहीं होता है.

वातव्याधिरोगोत्पत्तिकारण- कषैले, कडुवे, तीक्ष्ण, रूखे पदार्थ खानेसे ठंडा वासा भोजन करने से परिश्रम मैथुन धातुक्षीणता शोक, भय, मांसक्षीणता, वमन, विरेचन, आमदोष, मलमूत्रादिवेगावरोध, वृद्धपन लंघन, जलक्रीडा, और प्रहार इनकी विशेष प्रबलता से, तथा वर्षाऋतु, व तीसरे प्रहर व १प्रहर रात्रि शेष रहने के समय बलवान वायु कुपित होने से शरीर की खाली नसों में प्रवेश होकर (एक तथा सर्वांग मे रहने वाले) रोगों को उत्पन्न करती है जिनके निम्न लिखित चौरासी भेद हैं।

शुद्ध नाम	व्यवहारी नाम.
१ शिरोग्रहरोग.	मस्तक का दुखना.
२ अल्पकेशरोग,	छोटे बाल रहना.
३ जृम्भादिकरोग,	अधिकजमुहाईआना
४ हनुग्रह रोग,	ठुड्डी न हिलना.
५ जिह्वास्तंभरोग.	जीभ न हिलना,
६ गद्गदरोग	अटककर बोलना,
७ अल्पमषणरोग,	धीरे धीरे बोलना
८ मूकरोग.	गूंगापन.
९ प्रलापरोग.	कुछका कुछ बोलना.
१० वाचालरोग,	अधिक बोलना.
११ निरसरोग.	जिह्वाका स्वाद नष्ट होना.
१२ बधिररोग.	बहिरापन.
१३ कर्णनाद.	कानोंमें घर घर शब्द होना
१४ त्वक्शून्यरोग	शरीर को स्पर्शज्ञान न रहना,
१५ अर्दितरोग.	मुखएकओरटेढ़ा होना
१६ मन्यास्तम्भरोग-	ग्रीवा न मुड़ना
१७ बाहुशोषरोग,	भुजा सूख जाना,
१८ अपबाहुक रोग.	भुजा न मुड़ना
१९ चांचितरोग.	
२० विश्वाचीरोग	उंगलियों के नीचे सुन्नाल.

शुद्ध नाम,	व्यवहारी नाम,
२१ ऊर्ध्ववातरोग,	अधिक डकार आना
२२ आध्मानरोग,	अफरा (पेटफूलना)
२३ प्रत्याध्मानरोग,	नाभिसेपटतकफूलना
२४ वाताष्ठीलारोग,	नाभि के नीचे गुठली होना,
२५ प्रत्याष्ठीरोग,	नाभिके नीचे पीडा-युक्तगुठली,
२६ तूनीरोग.	गुदा और लिंगकी पीडा.
२७ प्रतितूनीरोग.	मूत्राशय की पीडा,
२८ विषमाग्निरोग.	अनियमित पाचन शक्ति,
२९ आटोपरोग,	पेटकी नसो का तनाव
३० पार्श्वशूल रोग,	पसली दुखना,
३१ पृष्ठशूलरोग	पीठ की पीडा,
३२ बहुमूत्ररोग	अधिक मूत्र होना
३३ ?स्तवातरोग,	मूत्र रुक जाना,
३४ बलहृद्धता,	कठिनमल होजाना,
३५ मलविरोध.	मल न उतरना.
३६ गृध्रसीरोग;	मंदगति हो जाना,
३७ कलायखञ्जरोग.	कंपित गतिहोना.
३८ खञ्जरोग,	लंगडापन
३९ पंगुरोग;	पंगुलापन;
४० क्रोष्टुशीर्षकरोग.	घुटने की पीडा.
४१ खल्लीरोग,	पाच हाथ मुड जाना.
४२ वातकंटकरोग,	मुसओं की पीडा.
४३ पाददर्परोग,	झिनझिनी,
४४ पाददाहरोग.	पांवोमें जलन पडना.
४५ आक्षेपरोग.	शरीर डुगना (डुलना)

शुद्ध नाम.	व्यवहारी नाम.
४६ दण्डकरोग.	काष्ठसदृश
४७ वाताक्षेपरोग,	वातसे शरीर डुगना,
४८ पित्ताक्षेपरोग,	पित्तसे शरीर डुगना,
४९ दंडापतानकरोग.	सूखे काष्ठ समान पडे रहना.
५० आमिघातक्षेपकरोग,	शरीर डुगने चोटसी लगना.
५१ अंतरायमरोग,	नेत्रोंका खिचाव
५२ बाह्यायामरोग,	पीठकी नसो का खिचाव,
५३ धनुर्वात.	शरीर कमान के समान होजाना.
५४ कुब्जकरोग,	कुबडापन.
५५ अपतन्त्ररोग,	शरीर के झुकाव सहित नेत्र फटना,
५६ अपतानरोग.	केवल नेत्र फटना
५७ पक्षघातरोग,	लकुवा मार जाना
५८ अभिलाषित्र रोग,	
५९ कम्परोग,	शरीर कंपना,
६० स्तंभरोग,	शरीर जकडना,
६१ व्यथारोग,	शरीर चटकना,
६२ लोदरोग.	
६३ मेदोरोग.	मेदका बढाव.
६४ स्फुरणरोग,	अंग फरकना.
६५ रूक्षता,	रूखापन,
६६ श्यामतारोग,	कालापन.
६७ क्षीणतारोग.	दुबलापन.
६८ शीतलारोग	शरीर ठंडा रहना,
६९ रोमाञ्चरोग.	पुलकित शरीर होना
७० अंगमर्दरोग,	हडफूटन होना,
७१ अंगविभ्रमरोग.	अंगभ्रांति.

चर्चित, अभिलाषितऔरलोद इन दोनोंरोगोंकेव्यवहारीनाम नहीं पाये जाते हैं।

शुद्ध नाम	व्यवहारी नाम.
७२ स्नायुसंकोच,	नसोकासिमिटजाना
७३ अंगशोषरोग	शरीर सूख जाना,
७४ भपरेग	हरना,
७५ उन्मादरोग	पागलपन,
७६ मोहरोग,	असावधानी
७७ निद्रानाश,	नींद न आना
७८ स्वेदाभाव.	पसीना न निकलना,

शुद्धनाम	व्यवहारी नाम.
७९ बलक्षीण	निर्बलता. नाताकती,
८० वीर्यनाशरोग,	धातु क्षीण होना,
८१ स्त्रीधर्मरोग,	स्त्रीको मासिक रजःप्राप्ति
८२ गर्भनाशरोग.	गर्भ गिर जाना,
८३ अश्रम,	विना श्रम थक जाना,
८४ श्रमनाशः	थकावट दूर होना,

ये चौरासी प्रकार के वातरोग हैं जिसमें से मुख्य २ के निदान लक्षण आगे लिखते हैं।

शिरोग्रहरोगलक्षण–कुपित हुआ वातरक्तमें प्रवेश होके मस्तक के धारण करनेवाली नसोंको रूखी, पीडायुक्त और काली करके मस्तकको जकड देताहैं इसे शिरोग्रहरोग कहतेहैं यह असाध्य है

अल्पकेशरोगलक्षण—रोमकूपस्थ वायु कुपित होके उस स्थान (बालोंके रंध्र, छिद्र) की नसोंको निर्बल कर देताहै इसलियेयहाँ थोडे बाल निकलते है, इसे अल्पकेशरोग कहते हैं इस रोग में मुख्य कारण निर्बलता ही है।

जृम्भाधिकरोगलक्षण-प्रथममुखकी एकश्वासको मुखहीमेंपीसकर तदनंतर उसी श्वासको मुखद्वारा बाहर निकालनेको जमुहाईकहते हैं और जमुहाई की बहुतायतको जृम्भाधिक रोग कहते हैं.

हनुग्रहरोगलक्षण-दंतोनके चीरसे जिह्वाको अधिक घिसनेसे अधिकचवेलाखाने और किसीप्रकार चोटलगनेसे डाढीकी जडमें रहनेवालावायुकुपित होके मुखको खुलाया मूंदाहीरखदेताहैतबउस मनुष्यके खाने बोलनेमें अतिकष्ट पडताहै इसे हनुग्रहरोग कहतेहै

१ इस रोगका निदान पूर्वामृतसागर में नहीं लिखाहै परन्तुहमने स्थाननामाकृतकैश्च लिंगै शेषान् विनिर्दिशेत् ॥ इस श्लोकके आशयसेलिख दिया है

जिह्वास्तंभरोगलक्षण--शब्दको प्रवृत्त करने वाली नसोंमें रहने वालीवायु कुपित होनेसे जीभकोखींचकरस्थिर [जैसीकीतैसी] रख देती है तब मनुष्य खाने पीने बोलने में असमर्थ हो जाता है इसे जिह्वास्तंभ कहते हैं ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे अपस्मारव्याधिरोगलक्षणनिरूपणं नाम षोडशस्तरंगः

वातोद्भवरोगाः

अंगे चास्मिन्लिख्यते सप्तचन्द्र रोगाणांवै कारम्
वातजानाम् ॥ मान्यान् ग्रथान्सु श्रुतादीन् विचार्य
ज्ञाने येषां सान्ति वैद्या सुवैद्याः ॥ १ ॥

भाषार्थ--अब हम इस सत्रहवें तरंगमें वातरोग (वादीसे उत्पन्न होनेवालेरोगों) का निदान माननीय सुश्रुतादि ग्रथोंका विचारके लिखते हैं जिन वातरोगोंका पूर्वज्ञानहोने से वैद्य [सुवैद्यसुंदरवैद्य सब वैद्योंमें पूज्य, सत्कारपात्र) होजाता है किंवा जिन सुश्रुतादि प्राचीन ग्रन्थोंके बोध से वैद्य सुवैद्य हो जाता है ।

त्वचाशून्यरोगलक्षण--जिसपुरुषको शीत, उष्ण, कोमल कठोर आदिका स्पर्श ज्ञान नष्ट होजावे उसे त्वचाशून्यरोग जानो.

अर्दितरोगलक्षण-अत्यन्तदीर्घशब्दसे बोलने कठिन पदार्थ खाने जम्भुहाईलेतें समय हँसने, ऊंची नीचीगर्दनकरके सोने मस्तकपर अधिक बोझः उठाने इत्यादि करणोंसे मस्तक नाक ओंठ ठुड्डी ललाट और नेत्रकीसंधियोंमें रहनेवाली वायुकुपित होनेसे मुखको किसी ओर टेढा करके अर्दितरोग उत्पन्न करताहै जिससे ग्रीवा सहित मुख टेढा होकरमस्तक हिलतारहताहै बोला नहीं जाता नेत्रादिक विकृत होजातेहैं और मुख जिस ओर टेढ़ाहो उसी ओर

को गर्दन,ठुड्डी दांत और पार्श्वशूलमें भी पीडाहोतीहै जिसरोगी को ये लक्षण हों उसे अर्दितरोग जानो, यह रोग तीन प्रकार का है अर्थात १ वातज, २ पित्तज और ३ कफज,

वातार्दितरोगलक्षण- लारअधिक गिरे, शरीरमें अधिक पीडा हो शरीर कम्पित हो, शरीर फरके ठुड्डी न मुडे और ओंठ सूज जावेंतो वातार्दित रोग जानना चाहिये ।

२ पित्तार्दितलक्षण—मुख पीला पडजावे, ज्वर चढे और तृषा अधिक लगे तो पित्तार्दित रोग जानो ।

३ कफार्दितरोगलक्षण-अधिक मोह हो कंठ शीश गर्दन इसे तीनों स्थानमें शोथहो और तीनों अंग स्तब्ध होजावैं तो इन्हे कफार्दित रोग जानो ।

असाध्यार्दितरोगलक्षण क्षीणपुरुषजिसकी पलकें न लगें बोली स्पष्ट बूझ न पडे जीभ नाक नेत्रसे जलबहतारहे, कंपतारहे और जो ३ वर्षसे अधिक अवधि होगई होतो यह नहीं सुधरेगा ।

मन्यास्तम्भरोगलक्षण—दिनमें अधिक सोने और अधिक बैठे रहने से विकार को प्राप्त हुआ कफ वायुसे मिलके ग्रीवाको नहीं मुडने देता इसे मन्यास्तंभरोग कहते हैं ।

बाहुशोषरोगलक्षण-कांधेमें रहनेवाला वायु कुपित होनेसे भुजा स्तब्ध होकर सूख जाती है इसे बाहुशोष रोग कहतेहैं।

अपबाहुरोगलक्षण—भुजाकी नसों में रहने वाली वायु कुपित्त होनेसे नसोंको संकुचित (इकट्ठी) करके भुजाको स्तम्भित कर देती है इसे अपबाहुक भुजास्तंभ रोग कहते हैं ।

विश्वाचीरोगलक्षण—हाथकी अंगुलियोंके नीचे खुजाल चलैं तथा भुजाके पीछे खुजली-होकर भुजाको निरुपयोगी कर देवे तो विश्वाचीरोग जानो ।

ऊर्ध्ववातरोगलक्षण-कुपथ्य सेवनसे अधो वायु कुपितहोके कफ युक्तहोकर वारवार डकार उत्पन्न होता है इस ऊर्ध्ववात कहते हैं,

आध्मानरोगलक्षण-पेटमें अफराचढजावे. पीडाहो, मूलद्वारकी पवन (वायुसरण) बंद हो जावेतो अध्मान रोग जानो ।

प्रत्याध्मानरोगलक्षण-पार्श्वभाग तथा हृदयपर तो अफरा न हो केवल नाभिस्थानसे पेटमात्र पर ही अफरा होतो प्रत्याध्मानरोग जानो ।

वाताष्ठीलीरोगलक्षण-नाभिके नीचे अचल या सजल गुल्लीके सदृश गाल ऊपरको ऊंची, इधर उधर नीची और दृढ एकगठाव (गांठ उत्पन्न होती है जिससे मलमूत्र रुकजाताहै इसे वाताष्ठीली रोग कहते हैं ।

प्रत्यष्ठीलारोगलक्षण-वहीवातष्ठीलापीडायुक्त, मलमूत्रतथा अधोवायुप्रतिबंधकऔरपेट में, छद्रि रोग हो तो प्रत्यष्ठीलारोगजानो

तूनीरोगलक्षण-मलमूत्राशयमें रहनवाला वायु कुपित होकर गुदा और लिंगेन्द्रियमें पीडा उत्पन्नकरे उसे तूनीरोग कहते हैं

प्रतितूनीरोगलक्षण-गुदा और लिंगमें रहनेवाली वायुगुदा और लिंगको पीडा करती हुई पेडू (नाभिके तलेके स्थान) में पीडा उत्पन्न करे उसे प्रतितूनी रोग कहते हैं ।

त्रिशूलरोगलक्षण-कटि (कमर) की तीनों हड्डी पीठकी तीनों हड्डी और बांस में पीडा उत्पन्न हो उसे त्रिकशूल जानो ।

बस्तिवातरोगलक्षण-मूत्राशयमें रहनेवाला वायु कुपित होनेसे मूत्रको रोकके नाना प्रकारकेरोग उत्पन्नकरे उसेबस्तिवातकहतेहैं

१ पीठकी समस्त सूक्ष्म अस्थियोंकी धारण करिणी दीर्घास्थि (बडीहड्डी) जिसे पीठकी बांसभी कहते है ॥

२ बस्तिवातमें या तो मूत्र बूंद २ करके उतरता है या पूर्ण रूपमें बंदही हो जाताहै इसलिये चिकित्साखंडमें दोनों प्रकारकी चिकित्सा वर्णन की गई है ।

गृध्रसीरोगलक्षण यह रोग पहिले कूल्हे फिर क्रमशः कमर पीठ, जांघें,घुटने, पिंडरी और पांवमें प्राप्त होकर पैरोंको जकड दे,सुई चुभाने के सदृश वेदना करे तथा कम्पनं करे ओर पांवकी गति मंद कर देता है ये लक्षण हों तो गृध्रसी रोग जानो यह दोप्रकार का होता है अर्थात १ वात और २ वातकफसे उत्पन्न होता है,

१ वातगृध्रसीरोगलक्षण-अधिक पीडा हो,शरीर टेढा होवे,जांघ घुटने और संधियोंमें स्तम्भतथाफूटन होतो वात गृध्रसी रोगजानो

२ वातकफगृध्रसीरोगलक्षण-शरीर भारी होजावे, अग्निमंद पड जावे और मुख से लार अधिक गिरै तो वातकफ गृध्रसी रोग जानना चाहिये।

इति नूतनामृतसागरे निदानवातरोग,लक्षणनिरूपणंनाम सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

पागे ऊर्ध्वरोगः

हेतुं गदानां हि समीरजानां पियूषसिन्धौ लि-
खितं पुराणे ॥ मया लिखाम्यत्र यथाष्टच-द्धे
लोकोपकाराय सुभाषयाहम् ॥ १ ॥

भाषार्थः-अब हम इस अठारहवें तरंगमें वातोद्भव रोगों का निदान प्राचीनामृतसागर की पद्धति से मनुष्यों के लाभ के लिये सुन्दर नागरी भाषा में लिखते हैं।

खंजरोगलक्षण-कमरमें रहनेवाली वायु जांघोंकी नसोंकोपकड़ के १ पांवको स्तम्भित करदेती है उसे लंगडापन कहते हैं।

पंगुरोगलक्षण-कमरमें रहनेवाली वायु जांघोंकी नसोंका ग्रहण करके दोनों जांघों की नसोंका नाश कर देती है तब मनुष्य चलनेसे असमर्थ होजाता है उसे पंगुरोग कहते हैं।

कलायखंजरोगलक्षण-संधियोंकी जोडनेवाली नसें ढीली पड

जाने से मनुष्य कम्पित होकर लंगडाते हुए चलता है उसे कालखंजरोग कहते हैं।

क्रोष्टुशीर्षकरोगलक्षण-घुटनोंमें वादी और रक्तावकारसेसोथ होवे. विशेष पीडा होवे और घुटने शृगल (स्यार) मस्तक सदृश कठोर होजावें तो क्रोष्टुशीर्षकरोग जानो।

खल्लीरोगलक्षण-पैर पिंडरी जांघ और पहुंचे मरोडे खा जावें तो खल्लीरोग जानो।

वातकंटकरोगलक्षण-ऊंचे नीचे स्थानमें पांव रखनेस श्रम जान पडे और पांवकी गांठियामें पीडा हो तो वात कंटकरोग जानो

पाददाहरोगलक्षण-वात, पित्त और रक्त तीनों युक्त होकर पादतल (पगतली तलुआ) में दाह [जलन] उत्पन्न करते हैं उसे पाद दाह कहते हैं।

पादहर्षरोगलक्षण-दोनों या एक पांव झनझन करके सोजावें और दाबने झटकन देने से पुनः पूर्ववत् जग उठे [झनझनाहट मिटकर अच्छे होजावें]उसेपादहर्ष (झिनझिनीचढना) रोगजानो

आक्षेपकरोगलक्षण-वायु कुपित होके रक्तप्रसारणी वस नाडियों में प्राप्त होता है तब बारम्बार चलित होके शरीरको हिलाता है उसे आक्षेपकरोग कहते हैं।

विशेषतः-चोट लगने से वायु कुपित होकर आक्षेप उत्पन्न हुआ हो तो साध्य और अन्यथा कारणसे होतो असाध्य जानो

अंतरायामरोगलक्षण-पैरकी अंगुली एडी पेट हृदय छाती और गलेमें रहनेवाला वायु वेगयुक्त होकर नसोंकेसमूहकोखींच लेती है तब मनुष्यके नेत्र ठुड्डी और पसुली स्तब्ध होकरमुखसे आपही आप कफ गिरता और दृष्टिभ्रमसे आगे के धनुषाकार बना हुआ दीखता है जो ये लक्षण हों तो अन्तरायामरोगजानो

वाह्यायामरोगलक्षण जिसप्रकार अन्तरायाम में वायु आगे की नसोंमें प्राप्त होकर आगेको झुका देती, उसीप्रकार वाह्यायाममें वायु पीछेकी सब नसोंमें निवास करता हुआ कुपित होकर पीछे को नवा (झुका) देता है, जिसमें कमर, पसुली और जांघों की नसें टूट जावें उसे असाध्य वाह्यायाम जानना चाहिये।

धनुस्तम्भरोगलक्षण-जिसका शरीर धनुष [कमान] के सदृस होजावे; शरीरका वर्ण पलट जावे, मुख मुंद [बंध] जावे, देह शिथिल होजावे, चैतन्यता नरहे और पसीनाभी निकलेतोधनुर्वात जानो, इस रोगमें रोगीके जीनेकी १० दिनकी अवधि होती है

कुब्जकरोगलक्षण-वायु कुपित होके हृदय या पीठको ऊंची करके अधिक पीडा करती है उसे कुब्जकरोग कहते हैं।

अपतंत्ररोगलक्षण-वातल वस्तुके सेवनसे वायु कुपितहोके अपने स्थानको छोडदेती और हृदयमें प्राप्त होके शिर और कनपटी में पीडा उत्पन्न करती है, और रोगीका शरीर कमानकासा नव(झुक) जावे, रोगी मोहको प्राप्त हो; अत्यन्त कष्टपूर्वक ऊपरको श्वास लेवे, नेत्र फटे रह जावें, या मिचजावे कंठमें घरर शब्द होने लगे और संज्ञा नष्ट होती जावे तो अपतंत्ररोग जानो।

अपतानकरोगलक्षण-नेत्र फट जावें, संज्ञाहीन हो जावै; कंठमें कफकाघरांटा चले, संज्ञा आनेसे चैतन्य होकर संज्ञाहीनपर पुनः मोहितहोकर चैतन्यताका अभाव होजावे येलक्षण होतो अपतानकरोग जानो यह असाध्य रोग स्त्री को गर्भपात और पुरुषको अधिक रुधिर निकलनेसे तथा अत्यन्त चोट लगने से होता है।

पक्षाघातरोगलक्षण-किसी कारणसे वायु कुपित होके मनुष्यके अर्ध शरीरको ग्रहण करलेती और शरीर की मोटी तथा मध्यम नसोंको सुखाकर संधियोंके बंधन ढीले करदेती है तब मनुष्य का

अर्धांग [एक ओरका] पक्ष अर्थात् नाक, कान.आंख हाथपांव शिथिल होकर बेकाम तथा अचेत होजाता है इसे पक्षाघातरोग कहते हैं, जिस प्रकार अर्धांग शिथिल होता है उसी प्रकार सर्वांग भी शिथिल होजाता है इस रोगके १ पित्तवातपक्षाघात और २ कफवातपक्षाघात ये दो भेद हैं. कोई कोई आचार्य इसे एकाङ्ग रोग, कोई पक्षवधरोग और लोकमें बहुधा लकवा रोग कहते हैं.

पित्तवातपक्षाघातलक्षण शरीरके भीतर बाहर दोनों ओर दाह हो और मूर्छा आवे तो पित्तवातपक्षाघात जानो।

कफवातपक्षाघातलक्षण -शरीर भीतर तथा बाहरसे शीतलसा जान पडे, अंग पर सूजनहो और देह भारी हो तो कफवात-पक्षाघात जानो।

पक्षाघातअसाध्यलक्षण-यदि केवल वायुसे पक्षाघात हो तो कष्ट साध्य और गर्भिणी स्त्री प्रसूता स्त्री, बालक, वृद्ध; क्षीण पुरुष घायल मनुष्य और जिसके शरीर से रुधिर निकल गया हो; शून्य शरीरवाले को पक्षाघात हो तो असाध्य जानो।

निद्रानाशरोगलक्षण- कटु तीक्षण आदि पदार्थ भक्षण. चिंता और कामादिका वेग रोकने से वायु कुपित होकर निद्राको नष्ट कर देती है तब मनुष्यको लेटे रहनेपरभी निद्रा नहीं आती ये लक्षण हों तो निद्रानाशरोग जानो।

सर्वांगकुपितवातलक्षण—समस्त अंगभरकी वायु कुपित होकर देहभरमें पीडा उपजावे तो सर्वांगकुपितवात जानो.

त्वग्गतकुपितवायुलक्षण त्वचामें रहनेवाली वायु कुपित होने से त्वचा रूखी. फटी हुई, शून्य पतली काली पीडायुक्त लाल होकर खिंचती हुई. जान पडे और त्वचा का रस शोषण होजावे तो त्वग्गतवायु कुपित हुई जानो।

रक्तगतकुपितवायुलक्षण–रक्तस्थ वायु कुपित होने से अंग में संतापसहित तीव्र पीड़ा पैदा होवे, शरीर का वर्ण कुरूप होजावे, अरुचि होवे, शरीरमें फोडे फुंसी होकर देह काली पडजावे और भोजन करके शरीर जकडजावे तो रक्तगत वायु कुपित हुआजानो।

मांसमेदोषगतकुपितवायुलक्षण–शरीर जकड कर भारी होजावे और दंडा तथा मुक्की के प्रहार समान पीडा हो तो मांस मेदोगत वायु कुपित जानो।

अस्थिमज्जागतकुपितबातलक्षण–हड्डी और पांवों में पीडा हो संधियोंमें शूलचले, मांस. बल, और निद्राका अभाव होकर समस्त शरीरमात्रमें निरंतरपीडा होती रहे तो हड्डी तथा मज्जा (चिकना फेन, शरीरस्थ सप्त धातुओंमें चतुर्थधातु) की वायु कुपितजानो.

शुक्रगतकुपितवायुलक्षण–पुरुषकावीर्य स्त्री प्रसंगके समय शीघ्र पात होजावे या देर तक पात न हो और स्त्रीकागर्भ नियतकालसे पूर्व गिर जावे या देर तक प्रसवोत्पत्ति न हो तथा वीर्य औरगर्भ में कुछ दुष्ट विकार उत्पन्न हो तो वीर्यस्थ वायु कुपित जानो।

कोष्ठगतकुपितवायुलक्षण–मल मूत्र रुकजावे, उदरपीडा, हृदय शूल, अर्श, गुल्म, और पार्श्व शूल उत्पन्न हो तो कोष्ठगत वायु कुपित हुआ जानो।

आमाशयगतकुपितायुलक्षण-हृदय, पार्श्व, नाभि में पीडाहो तृषा लगे, मुख, कंठ, सूख जावे डकारें अधिक आवें और विषूचिका उत्पन्न हो तो आमाशय की वायू कुपित हुई जानो।

पक्वाशयगतकुपितवायुलक्षण–आंतोंमें शब्द हो, पेटमें शूल हो पीठ में पीडा हो, मल मूत्र कष्ट से उतरे और अफरा हो तो पक्वाशयस्थ वायुका कोप जानो।

गुदास्थकुपितवायुलक्षण–मल मूत्र रुक जावे, उदर शूल और

आध्मान (अफरा) हो, जांघ, पीठ और पार्श्वभागमें पीडाहोऔर पथरी रोग हो तो मूलद्वार (गुदा) की वायु कुपित जानो ।

हृदयगतकुपितवायुलक्षण–हृदय में पीडा हो तो हृदय की वायु का कोप जानो ।

कर्णादिइन्द्रिस्थवायुकुपितलक्षण–कर्णादिक इन्द्रियकी शक्ति नाशको प्राप्त होतो इन्द्रिस्थ वायु का कोप जानो ।

शिरोगतकुपित वातलक्षण—शरीर की नसों में तडक उठ कर नसों का गोल बंध जावे (इकट्ठी हो जावें (तो शिरस्थवायु का कोप जानो ।

संधिस्थवातकुपितलक्षण–शरीर की संधियों (जोडों) में शूल चले और तडक उठे तो संधिस्थवात का कोप जानो ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखडे वातराग लक्षण निरूपणं
नामाष्टादशास्तरंगः ॥ १८ ॥

वातोद्भवरोगः ।

नोक्तं येषां वातजानां पुराणेऽमृतसागरे ।
नन्दसोमे तरंगे तन्निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः–अब हम इस १९ वें तरंगमें उन रोगोंका निदान वर्णन करते हैं, जिनका निदान पूर्वामृतसागर में नहीं लिखा गयाहै ।

स्नायुकुपितवातलक्षण–शिरा नामक रक्तप्रसारणी नसों से अन्य नसों में प्राप्त हुआ कुपित वायु सर्वांग रोगको और किसी एक ही बिशेष अंगकी नसों में प्राप्त होने से एकांग रोग को उत्पन्न करता है इसे स्नायुगत कुपति वात जानो ।

दंडापतानकरोगलक्षण—शरीर की नसोंमें कफ युक्त कुपित वायू प्राप्त होने से मनुष्य दंडे के समान जड़ रूप होकर पड़ा रहता है उसे दंडापतानक रोग कहते हैं ।

व्रणायामरोगलक्षण—मर्म स्थान के कोठेमें कुपित हुआ वायु प्रवेश होने से सब देह में फैल के शरीर को नवा (झुका) देता हैं उसे व्रणायाम कहते हैं।

जिह्वास्थितमूकादिरोगलक्षण-कफयुक्त वायु कुपितहोके जिह्वा की शब्दसारणा नसोंको घेरलेतीहै तब दोषोंको न्यूनाधिकतासें जिह्वामेंमूक, मिन्मिन औरगदगद रोगउत्पन्नहोजाताहै सोजिनमें सर्वतोभाव भाषा बंद होजावै सो मूकरोग, नासिका स्वरसे बोले सो मिन्मिन रोग और हकला के बोले सो गदगद रोग जानो॥

कम्पवात रोग लक्षण—जिसमें सब अंग और शिर कंपता रहे उसे वेपथु और कम्पवात कहते हैं।

अनुक्त वातरोग सग्रहार्थमाह

स्थाननामानुरूपैश्च लिंगैः शेषान्विनिर्दिशेत्॥
सर्वेष्वेतषु संसर्गः पित्ताद्यैरुपलक्षयेत्॥ १॥

भाषार्थः-अवशिष्ट वातरोगों का निदान तथा उनके स्थान के नाम रूप चिह्न और उक्त समस्त बात रोगों में पित्तादि के संसर्ग ये सब अपनी बुद्धि से जानो।

पित्तकफयुक्त पंचवायुके कार्य—१पित युक्त प्रवायु हो तो वांति और दाह होय,कफयुक्त हो तो दुर्बलता, शैथिल्यता. झपकीऔर मुख स्वाद रहित होगा, २ उदानवायु पित्तयुक्त होनेसे दाह मूर्छा भ्रम और घबराहट होय, कफयुक्त होतो पसीनेका अभाव,रोमांच मंदाग्नि और शीतलता होगी, ३समानवायुपित्त युक्त होतोशरीर में दाह, उष्णता. मूर्छा और पसीना आवेगा, कफ युक्त होतो

---

१ अटकने अटकते बोलना, एक अक्षर को अनेक बार उचारना, जैसे पानी कहने के लिये प प प प पा पानी कहकर कठिनाई पूर्वक पानी शब्द का उच्चारण करना।

रोमाञ्च होकर मल मूत्रकी रुकावट होजावैगी, ४ अपानवायुपित्त युक्त होवै तो दाह, उष्णता औरमूत्र लाल होगा, कफ युक्तहोतो शरीर के तल भाग में भारीपन औरजाडा लगेगा, ५ व्यानवायु कफयुक्त होनेसे शोथ, शूल और शरीर जककर डंडेकेसमानरह जावैगा. पित्तसे रहनेसे दाहऔरघबराहट होकर हाथपांव पटकैगा

पञ्च विधस्य प्रकृतस्य वायोः कार्य लिङ्ग माह,

अव्याहत गतिर्यस्यस्थानस्थः प्रकृतौ स्थितः।
वायुस्यात सोऽधिकं जीवेद्वीतरागाःसमाःशतम्१॥

भावार्थः—अब पांचों प्रकारकी वायुके कार्य और चिह्न लिखतेहैं जिस मनुष्यकी पंचवायु शरीर में अपने स्वभाव व स्थानानुकूल स्थित रहकर किसी प्रकार से अवरोधित न होवें वह मनुष्य सौ वर्ष पर्यन्य रोगरहित जीवैगा क्योंकि शरीरस्थवायुके विकारसेही प्राणीरोग युक्त होके पूर्ण आयु नहीं भोगने पाते हैं, इसबातपर प्रत्येक वैद्य और मनुष्यों को पूर्ण ध्यान देना चाहिये उक्त १०० वर्ष की आयु प्रमाण कलियुग के मनुष्यों का है इस लिये ही मनु महाराज ने अपनी मनुस्मृति में लिखा है ॥

आरोगाः सर्वसिद्धार्थश्चतुर्वर्षशतायुषः
कृतत्रेतादिषुह्येषमायुर्ह्रसतिपादशः। म १ अ, ८३श्लोक

अन्यच्च—शतायुर्वैपुरुषः ।इति श्रुतेः
शतशब्दोऽत्र बहुत्वपरःकलिपरोवा।

भावार्थः— मनुष्यों की आयु सतयुगमें४०० वर्ष, त्रेतायुग में ३०० वर्ष द्वापरयुगमें २०० वर्ष थी और अब कलियुग में १०० वर्षकीहैं आयुके उक्तानिश्चित वर्षोंसे अधिक आयुभोगनेके लियेमुख्य कारण

स्वधर्ममें तत्पर रहना और अल्पायु होनेका मुख्य कारण स्वधर्मसे च्युत होकर अधर्म सेवन करना हीहै क्योंकि अधर्मसम्बन्धी कार्य करने से रोगोत्पत्ति और रोगोत्पत्ति होनेसे आयु नष्ट होजातीहै.

सूचना—इस तरंगमें जो रोग निदान लिखेहैं वे पूर्वामृतसागर में नहीं थे परन्तु हमने माधवनिदान ग्रंथोंसे लेके लिखे हैं,

इति नूतनामृत सागर निदानखण्डे अनुक्त बालरोग लक्षणानिरूपणं नामैकोनविंशतितमस्तरंग ॥ १९ ॥

अरुस्तं मादि पित्तक रोगः।

भगेऽग्रनेत्रे रोगाणामूरुस्त भामवातयोः ॥
पित्तजानां श्लेष्मजानां निदानं लिख्यते ॥ १ ॥

भाषार्थः—इस बीसवें तरंगमें ऊरुस्तम्भ, आमवात, पित्तरोग कफ रोगों का निदान लिखते हैं,

ऊरुस्तम्भरोगोत्पत्ति—शीतल, उष्ण, भारी, या चिकनी वस्तु अधिक क्षुधा या अल्पाजीर्ण में खाने, दिनको शयन और रात्रि के जागरणसे वायु कुपित होके पित्तको बिगाड देती है तब दोनों जांघे स्तंभित होकर सूनी होजाती और मनुष्य हलने चलने से असमथ हो जाता है।

ऊरुस्तम्भपूर्वरूप—निद्रा, अरुचि, छर्दि रोमांच अधिक हो, ध्यान लग जावे, कुछ ज्वरांश हो और दोनों जाघों में पीडा हो तो ऊरुस्तम्भ होगा।

ऊरुस्तम्भरोगलक्षण—दोनों पांव सो जावें, पीडाहो, पांव कठिनाईसे उठे, दोनों जांघोंमें पीडाहो, दाहहो, पृथ्वीपर रखते समय विशेष पीडाहो, शीतोष्ण तथा स्पर्शज्ञान न हो, गतिनाशहोजावे

१. धन्वतरजीने सुश्रुत में इसी ऊरुस्तम्भको महा वात व्याधिरोग नाम दिया है इस लिये हमने उपरोक्त लक्षण सुश्रुतोक्त लिखे हैं।

दधि भक्षणसे मंदाग्निसे दिनमें सोनेसे और अधिक बैठे रहने से कफ कुपित होता है तथा प्रभात समय भोजन किया पश्चात् और बसंतऋतुमें भी कफ कोपको प्राप्त होता है तब इसके प्रकोप से आगे लिखित २०प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं ।

रोगनाम	रोगनाम
१ मुख मीठा रहना	१२मन्दाग्नि
२ कफ से लिप्त रहना	१३ रेचनाधिक्यता (बहुत दस्त होना)
३मुख से लार गिरना	१४ श्वेत मल उतरना
४ अधिक निद्रा आना	१५ मूत्राधिक्यता (बहुतपेशाब उतरना)
५ कंठमें घरांटा चलना	१६ श्वेत मूत्र (सफेद पेशाब होना)
६कटु रसकी इच्छा	१७ वीर्याधिक्यता
७उष्णताकी इच्छा	१८ निश्चलता (जडत्व)
८बुद्धिजडता(अक्कुकुंदहोजाना)	१९ शरीर में भारीपन
९ स्मरणशक्तिकी अल्पता	२० शरीर में शीतलता
१० आलस्याधिक्यता(सुस्ती)	
११ क्षुधाका अभाव (भूख न लगना)	

कफके प्रकोपसे ये २० प्रकार के रोग उत्पन्न होत हैं ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे ऊरूस्तम्भ आमवात पित्तरोग कफरोग । लक्षण निरूपणं नाम विंशतितमस्तरंगः ॥ २० ॥

वातरक्तशूलादिरोगाः

निदानं वातरक्तस्य शूलादीनां यथाक्रमात् ।
एक विंशतिमे भंगे रोगाणां लिख्यते मया॥ १ ॥

भाषार्थ—अब हम इस २१ वें तरंग में वातरक्त और शूल आदि रोगों का निदान यथाक्रम से लिखते हैं ॥

वातरक्तरोगोत्पत्ति–नोंन, उष्ण वस्तु, सडा हुआ मांस, मूंगके बडे, कुलथी; उर्द, शाक, मांस मछली दही और अन्य विरुद्ध वस्तु खाने मद्य और कांजी पीने, अजीर्ण दशा में भोजन करने हाथी, घोडा ऊंटपर आरूढ होने दिन को निद्रा लेने और क्रोध करने की विशेष अधिकता से सुकुमार और सुखग्राही पुरुषों को वातरक्त रोग उत्पन्न होता है ।

वातरक्तपूर्वरूप–पसीना किंचित् न निकले या बहुतही निकले शरीर काला पडजावे, शरीर का स्पर्श ज्ञान नष्ट होजावे, अल्प प्रहार पर विशेष पीडा हो, समस्त संधियां ढीली पड जावें, अधिक आलस्य आवे, शरीरमें फुन्सी बहुतहों, घुटने, जांघ, कमर हाथ पैर में पीडा विशेष ही हो शरीर भारी पडजावे, देह शून्य होजावे, देहमें दाह हो वर्ण विपर्यय (रंग बदल जाना होजावे । और शरीरपर लाल चटें पडजावें तो जानो कि वातरक्त पैदाहोगा

वातरक्तस्वरूप– सब शरीर का रक्त दग्ध होकर दोनों पांवोंमेंसे चूने (टपकने) लगताहै इसे वातरक्त कहतेहैं इसके ५ भेद अर्थात् १ वाताधिक, २ पित्ताधिक, ३ कफाधिक, ४ रक्ताधिक और ५ सन्निपात की आधिक्यता से उत्पन्न हुआ वात रक्त जानो ।

१ वाताधिकवातरक्तलक्षण–पांवों में अधिक शूलहो पांवपर कुछ शोथभी हो, पांवके तलुवे, चर्म या कोर रूखी और कालेपडजावें चौबीसोंनाडी और अंगुलियोंकी संधियोंमें संकोचहो शरीर जकड कर कंपे और सूना पड जावेतो वाताधिक्य वातरक्तजानो ।

२ पित्ताधिक्य वातरक्तलक्षण–शरीरमें दाह, मोह, मूर्च्छा, मद, तृषा, पसीनेका बहाव स्पर्शासहन, पीडा, शोथ पकाव और उष्णताकी विशेषता हो तो पित्ताधिक्य बारक्त जानो ।

३ कफाधिक्यवातरक्तलक्षण–शरीरमें शूल (कुकरी) भारीप–

शून्यता, चिकनाहट, शीतलता और कंडुत्वकी आधिक्यता हो तो कफाधिक वातरक्त रोग जानो ।

४रक्ताधिकवातरक्तलक्षण—शरीरपर शोथ, पीडा.ललाई, चमक कंडूत्व [खुजलाहट] हो तो रक्ताधिक बातरक्त जानो ।

५सन्निपातवातरक्तलक्षण—जिसमें पूर्वोक्त त्रिदोष के लक्षण एकत्र दृष्टि पडें उसे सन्निपातरक्त जानो ।

हस्त वातरक्त लक्षण—जैसे पांवकी पगथली. तैसेही हाथकी हथेली में भी फुन्सी होकर अंत में सर्व शरीर भरमें होजाती है। इसे हस्तरक्त कहते हैं।

वातरक्त असाध्या लक्षण—पांवके तलवों से घुटनों तक सर्वत्र फुन्सियां होजावें शरीर फटने और चूने लगे. बल मांस और जठराग्नि की हीनता होजावे तो असाध्य बातरक्त जानो यह रोग १ वर्षकी अवधि तक याप्य रहता है ।

वातरक्तोपद्रव-निद्राका अभाव, अन्नपर अरुचि, श्वास शिर-पीडा. शिरमें वेदना. मांसका गलना, फुन्सियोंका पकना, अंगुलियों में टेढापन या गलाव, तृषा, ज्वर. मोह, कम्प, हिचकी और व्योची ये वातरक्त के उपद्रव हैं।

शूल रोग भेद—यह रोग आठ प्रकार का है अर्थात् १ बात २पित्त३ कफ, ४ सन्निपात ५ आमरस [कच्चा रस] ६ बात कफ ७ कफपित्त और ८ बात पित्त का शूल ।

वातशूलरोगोत्पत्तिकारण—घोडे आदि पशुओंपर आरूढ होकर दौडने, मैथुन, जागरण जलपान, भीगा हुआ अन्न, सूखा मास, विरुद्ध पदार्थ भक्षण करने, मल मूत्र और वायु रोकने और शोक लंघन हास्यकी अधिक्यता से वायु कुपित होकर हृदय पीठ. पार्श्व भाग और रोम कूपमें शूल रोग उत्पन्न करता है ।

१ वातशूललक्षण-संध्यासमय बदली (बद्दल) होनेपर या शीत कालमें उक्त हृदयादि स्थानमें शूल चलने लगे, चलते२ बार बार रुकजावै, मलमूत्र रुकजावै और अति पीडा होतो वातशूलजानो

२ पित्तशूलोत्पत्ति कारण-खारी तीखी उष्ण खट्टी वस्तु काली मिर्च तिल खली कुल्थीके विशेष खाने कांजी मदिरा, आसव के विशेष पान श्रम, मैथुन, क्रोध और धूपमें घूमने की अधि कयता से कुपित होकर शूल उत्पन्न करता है।

पित्तशूल लक्षण—तृषा दाह मूर्छा, भ्रम क्रोध विशेष हो मध्याह्न, अर्द्धरात्रि, ग्रीष्मऋतु और शरदऋतु में शूल अधिक चले और नाभिपर अधिक पसीना आवे तो पित्तशूल जानो।

कफशूलोत्पत्ति कारण- अनूपदेशज पशु का मांस मछली खोवा (मावा) पेडा, मैदेके पक्वान्न विशेष खाने, और दूध गन्ने (ईख) का रस, मधुर रसके विशेष पान से कफ कुपित होकर शूल उत्पन्न करता है।

कफशूललक्षण—हृदयमें पीडा, वमन होने की इच्छा खांसी, भोजन में अरुचि उदर और मस्तक में भारी पन मलमूत्र का रुकाव होवे भोजन करने पर अधिक पीडा और प्रात काल या बसतऋतु में चले तो कफशूल जानो।

४ सन्निपातशूलरोगोत्पत्तिकालक्षण—पूर्वोक्त तीनों दोषों के कारण और लक्षण हों तो सन्निपात शूल जानो।

५ आमशूलरोग लक्षण—अफरा, वमन, शरीर में भारीपन, मूत्राशय में गुडगुडाहट हृदय में जकड़ापन होवे लार गिरै और कफशूल के सर्व लक्षण मिलें तो आमशूल जानो।

६ वातकफशूल लक्षण—पेडू, हृदय, कंठ और दोनों पार्श्वभाग में शूल चले तो वात कफशूल जानो।

कफपित्तशूललक्षण–कुक्षि, हृदय और नाभिस्थान में शूल चले तो कफ पित्त शूल जानो।

८ पित्तवातशूललक्षण–दाह और ज्वरयुक्त शूल चले तो पित्त वात शूल जानो।

द्रष्टव्य–शूलरोगके औरभी विशेष भेदहैं परंतु हमने प्राचीनामृतसागर में लिखित भेदोंकेही लक्षण लिखे हैं जिन्हें विशेष भेद देखनाहोवे सुश्रुतादि ग्रन्थदेखें इसी शूलके तीन उप भेद औरसुनो

परिणामशूलरोगोत्पत्तिकारण–उपरोक्त लेखानुसार केवल इस में कुपित वायु कफ पित्तसे मिलकर शूलको उत्पन्न करता है।

परिणामशूललक्षण–भोजन करने के पश्चात् शूल उठे तो परिणाम शूल जानो।

अन्नद्रवशूललक्षण–भक्षित भोजन पचे या न पचे पर शूल सदैव रहे, पथ्य करनेपर भी शांत नहो तो अन्नद्रव शूल जानो।

जरत्पित्तशूललक्षण–भोजन पाचन होते ही शूल उठे उसे जरत्पित्तशूल जानो।

शूलरोगोपद्रव–तृषा, मूर्छा अफरा, अरुचि शरीर में भारी पन श्वास कास हिक्का और उदर में विशेष पीडा होना ये शूल के सर्वोपद्रव हैं।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे वातरक्त शूलरोगलक्षण
निरूपणं नामक विंशतितमस्तरंग ॥ २१ ॥

उदावर्त-आनाह।

उदावर्तस्य रोगस्य चानाहस्य यथाक्रमात्॥
द्वाविंशेऽस्मिन्तरंगे हि निदानं लिख्यते मया॥१॥

भाषार्थ–अब हम इस २२ वें तरंग में उदावर्त और आनाह रोगका निदान यथाक्रम से लिखते हैं।

उदावर्तरोगोत्पत्ति कारण—१अधोवायुवेग, २मलवेग, ३ मूत्रवेग ४ जमुहाईवेग, ५ अश्रुवेग, ६ छींकवेग, ७डकारवेग, ८ वमन वेग, ९ कामवेग, १० क्षुधावेग, ११ तृषावेग १२ श्वासवेग, और १३ निद्रा वेग इन तेरह वेगों के प्रतिरोध से १३ प्रकार का उदावर्त रोग उत्पन्न होता है।

अधोवायुवेगावरोधोदावर्तलक्षण—मलमूत्ररुकजावे अफराचढ़े गुदा मूत्राशय, लिंगेंद्रिय में पीडाहो तथा अन्य वादी के अनेक उदर रोग हों तो अधोवायु (सरण)रोकने का उदावर्त जानो-

२मलवेगावरोधोदावर्तलक्षण-पेटमें गुडगुड शब्दहो, शूल उठे पेडूमें पीडाहो, मल न उतरे, डकार अधिक आवें और मुखसे मल निकल आवे तो मल रोकने का उदावर्त जानो।

३ मूत्रावरोधोदावर्तलक्षण—मूत्राशय, लिंगेन्द्रिय में शूल हो, मूत्र कष्टसे उतरे, मस्तक में पीडा हो, आमाशय के अभावपरभी पेडूमें अफराहो तो मल रोकने का उदावर्त जानो।

जृम्भावरोधोदावर्तलक्षण—गर्दन और कंटरुकजावे शिरोग्रह हो, जमुहाई अधिक आवें, नाक, कान, आंखोंमें अधिक पीड़ा हो और वादी के अनेक रोग हों तो जमुहाई रोकने का उदावर्त जानो।

५अश्रुअवरोधोदावर्तलक्षण—आनंद और शोक दो दशामेंअश्रु पात होतेहैं, जो किसी भी दशामें आंसू रोके तो शिरभारीऔर नेत्ररोग होंगे ये लक्षणहों तो आंसू रोकने का उदावर्त जानो।

६छींकावरोधोदावर्तलक्षण—ग्रीवा न मुरके, मस्तकमें शूल चले आधाशीशी हो और सब इन्द्रियां दुर्बल होजावें तो छींक रोकने का उदावर्त जानो।

७उद्गावरोधोदावर्तलक्षण कंठ और मुख भोजन करने पर भी

भारी रहे, मोह और अधोवायु सरण नहीं और वायुके विकार हों तो डकार का वेग रोकने का उदावर्त जानो।

८वमनावरोधोदावर्तलक्षण—मच्छरादि जीवोंके काटने सदृश ददोरा (दाफड) होजावे. शरीरमें खुजाल चले अन्नपर अरुचि मुखपै छाया, शोथ पांडुरोग, ज्वर, कुष्ट. हृदयपीडा और विसर्प हो तो वमन रोकने का उदावर्त जानो।

९कामावरोधोदावर्तलक्षण—पेडू, गुदा, पोते और लिंगेन्द्रिय में पीडा हो, मूत्र रुक जावे, उपस्थेन्द्रिय से वीर्य आपही गिरने लगे शर्करा [पथरी] नेत्र विकार और शोथ रोग हो तो वीर्य रोकने का उदावर्त जानो।

१०क्षुधावरोधोदावर्तलक्षण—हाथ पांवमें फूटन, तंद्रा, क्षीणता दृष्टिमंदता, अरुचि और विना श्रम किये ही थकावट हो तो भूखका वेग रोकने का उदावर्त जानो।

११तृषावरोधोदावर्तलक्षण—कंठ और मुख सूख जावे, श्रवणेन्द्रिय मंद पड़ जावे और हृदय में पीडा हो तो प्यास रोकने का उदावर्त जानो।

१२श्वासावरोधोदावर्तलक्षण—परिश्रम से उत्पन्न हुई श्वास रोकने से हृदय में पीडा, मोह और पेट में गोला उठता है, ये लक्षण हों तो श्वास रोकने का उदावर्त जानो।

१२निद्रावरोधोदावर्तलक्षण—अधिक जमुहाई आवै, हडफूटन होवै, नेत्र भारी हो जावें, शिर भारी होकर तन्द्रा हो तो नींद रोकने का उदावर्त जानो।

उदावर्तसम्प्राप्ति—रूखे, कसैले, कडुवे भोजन से कोठेकी वायु कुपित होकर उदावर्त रोग उत्पन्न करती है।

उदावर्तके सामान्य या विशेष लक्षण—उक्त कारणसे वायुकुपित

होके मल मूत्र, वायुसरण, आंसू, कफ और मेद प्रसारणी नाडीतथा मलमूत्रकोभी ऊर्ध्वगामी करदेताहै तब हृदयतथा पेडू के शूल और उबकाई (वमनेच्छा) से मनुष्य विकल होकर बडे कष्ट पूर्वक मल मूत्र और अधोवायु का त्याग करताहै और उस रक्तरोगकेलक्षण पूरक श्वास, कास, दाह, मोह, तृषा, ज्वर, वमन, हिचकी, मस्तक रोग, मनोभ्रम श्रवणभ्रम (कानों में भनभनाहट सुनाई पड़ना) और प्रतिश्याय (नाक वहना जुकाम) तथा अन्य - बहुतेरे बात विकारभी उत्पन्न होते हैं ॥

उदावर्तासाध्यलक्षण—जो उदावर्त वाला रोगी, तृषा, क्षीणताशूल और क्लेशसे विकल हो तथा मुखसे मल गिरने लगे तो वह पूर्ण रोग ग्रसित होगया उसका बचना दैववशातही जानो।

आनाहरोगोत्पत्तिकारण—आंव किंवा मल उदरमें क्रमसेसंचित होनेपर कुपित वायुसे बँध जाते हैं (सूखके दृढ होजाते हैं) तब मूलद्वारसे वह दृढमल यथार्थ सुगमता पूर्वक न निकल ने के कारण पेट फूलकर तन जाता है इसे आनाह (अफरा) रोग कहते हैं।

आमानाहरोगलक्षण—तृषा, शिरोग्रह, आमाशयमें शूल. शरीर में भारीपन, हृदय में पीड़ा उबकाई प्रतिश्याय और डकारोंका अभाव हो तो आंवका अफरा जानो।

मलानाहलक्षण—शरीर और कनपटी जकड जावें मल मूत्र रुक जावे, मूर्छा श्वास आवे. पक्काशय में शूल चले मल युक्त उलटी हो और अलसरोगोक्त लक्षण होंतो पक्वाशय में मलके संग्रह का आनाह जानो।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे उदावर्तानाहरोगलक्षण निरूपण नाम द्वाविंशतितमस्तरंगः ॥ २२ ॥

गुल्मरोग

अथ पञ्चविधस्यात्र गुल्मरोगस्य हि क्रमात्॥
त्रयोविंशे तरंगऽस्मिन् निदानं लिख्यते मया ॥१॥

भावार्थ–अब हम इस २३ वें तरंग में ५ प्रकार के गुल्म रोग का निदान क्रम से लिखते हैं।

गुल्मरोगोत्पत्ति कारण–आहारविहारकी विरुद्धतासे बात पित्त और कफ कुपित होकर पुरुष तथा स्त्रियोंके मूत्राशयसेहृदयपर्यंत गोलेके आकारकी एक गांठ (नस समूल) उत्पन्न करदेतेहैं इसी को गुल्मरोग कहते हैं, यह गुल्मरोग १ बात, २ पित्त ३ कफ ४ सान्निपात और ५रुधिर से उत्पन्न होता है

गुल्मरोगस्थान–दोनोंपार्श्वशूल हृदय नाभि और पेडू मूत्राशय इनमें से किसी एक स्थानमें गुल्मरोग उत्पन्न होता है।

गुल्मरोगसंप्राप्ति–हृदय और मूत्राशयके मध्य एक गोल गांठ होकर फिरने लगे या स्थिर रहजावे दिन प्रति उसका आकार बढता जावे अन्न पर अरुचि हो मल मूत्र कष्ट से उतरे वायु बढ जावे, आंतों में शब्द होवे, अफरा चढे और पवन ऊर्ध्व गति को प्राप्त हो जावे तो गुल्मरोग उत्पन्न हुआ जानो।

१ वातगुल्मोत्पत्तिकारण–रूखा अन्न भक्षण, विषमासन बैठके मलमूत्रावरोध, शोच, प्रहार, मल क्षीणता, लंघन, विरुद्ध चेष्टा और अपनी अपेक्षा विशेष बलवान पुरुषसे मल्लक्रीडादि युद्ध करने से वातका गुल्म होता है।

बातगुल्मलक्षण–गोला कभी न्यून और कभी अधिक पीडा देवे अधोवायु निकले नहीं, मल न उत्तरे, मुख और कंठसूखे, शरीरकी कांति (वर्ण) काली पडजावे, शीतज्वर चढे, हृदय, कूख और पार्श्व

भागमें पीडा हो, भोजन पचनेके पीछे पीडा अधिक और भोजन करनेपर घट जावे रूखे, कषैले और कडवे पदा भक्षणसे पीडा की अधिकाई होतो वादी से उत्पन्न हुआ गुल्मरोग जानो।

२ पित्तगुल्मोत्पत्तिकारण—कडुवा, तीक्षण और उष्णरस सेवन मद्यपानकरने, क्रोधकरने, धूपमें बैठने, अग्नि तापने, चोट लगने, रुधिर बिगडने और आंवके वढावसे पित्तगुल्म होता है

पित्तगुल्मलक्षण—शरीरमें ज्वर, तृषा, दाह व्रण होवे, पसीना अधिक निकले, भोजन करते समय और गोलोंके हाथ लगने से अत्यन्त पीडा हो तो पित्तगल्म जानो।

३ कफगुल्मोत्पत्तिकारण—शीतल, भारी, चिकनी वस्तु खाने दिनको सोने और बैठे रहने से कफगुल्म उत्पन्न होता है।

कफगुल्मोत्पत्ति—शीतज्वरचढे, शरीरमें पीडा, भोजनपर अरुचि, अंगमें भारीपन, खांसी और मुख सेकडुवे, खट्टे रसयुक्त वमन हो तो कफका गुल्म (गोला) जानो.

४ सन्निपातगुल्मोत्पत्तिकारण—पूर्वोक्त तीनों दोषोंके कोपसे सान्निपातगुल्म होता है।

सन्निपातगुल्मलक्षण—पूर्वोक्त तीनों दोषोंके लक्षण हों तो सान्पिातगुल्म जानो।

५ रुधिरगुल्मोत्पत्तिकारण—यह रुधिरगुल्म पुरषको नहीं वरन स्त्रीकेही होताहै, नव मासके पूर्व कच्चा गर्भ गिरने,कुपथ्यभक्षण और मिथ्या अहारविहार करनेसे गर्भके ऋतुसमयअथवा बिना ऋतुहीवायुकुपितहोकररक्तकासंग्रह करके गुल्मको उत्पन्न करताहै

रुधिरगुल्मलक्षण—स्त्रीके उदरमें पीडा उठे,दाह चले. शूल होवे, वह अवयवरहित गोला पेटमें चारों ओर घूमे, पित्तगुल्मके सर्व चिह्न हों और गर्भ धारणके सदश सर्व लक्षण दृष्टि पडें तो रुधिर गुल्म जानो.

विशेष द्रष्टव्य—वैद्यको चाहिये किइस (रुधिरगुल्म) का निश्चय १० दस मास पूर्ण होनेपर करे क्योंकि रुधिरगुल्म और गर्भ धारणके समानही लक्षण होतेहैं ईश्वरकी विचित्र गति है नजाने गुल्मका विश्वासकरके यत्न कियाजावै और गर्भ होतो पूर्णअनर्थ होजावैगा इसलिये १० मास गर्भसे बालोत्पत्ति की अवधि तक ठहरे जो गर्भ हो तो बालक उत्पन्न होगाही और नहो तो फिर गुल्मरोग की चिकित्सा आयुर्वेदोक्त रीतिसे करे ।

१ गुल्मरोगकेअसाध्यलक्षण—जोगुल्मक्रमशः बढताहुआ समस्तउदर में व्याप्त होकर धात्वन्तरमें प्राप्तहोजावे, नसोंसे लिपटा हुआ कछुएका आकार होजावे, दुर्बलता, अरुचि, उबकाईखांसी उलटी, बिकलता, तृषा, ज्वर, तंद्रा और प्रतिश्याय ये उपद्रव उत्पन्न करे तो असाध्य गुल्म रोग जानो ।

२ रोगीके हृदय, नाभि, हाथ, पांवपर सूजन चढे, ज्वर, श्वास, वमन और अतिसारकी वृद्धि होतो वह रोगी निश्चयकाल वश प्राप्त होगा ।

३ रोगीके शूल, तृषा, अन्नपर द्वेष होजावे और गुल्म की गांठ अकस्मातगुप्त प्रकट होती जावे तो इस रोगीका कुशलसे-रहना असंभव ही जानो ।

इतिनूतनामृ ० निदान खंडेगुल्मरोगलक्षणानिरूपणंनामत्रयोविंशतितमस्तरंगः ॥२३

यकृत; प्लीहा; हृद्रोग,

यकृत्प्लीहाहृद्गदानां तरंगे ऽस्मिन् यथा क्रमात् ॥
समुद्रलोचनामिते निदानं लिख्यते मया ॥ १

भाषार्थः-इस चौबीसवें तरंगमें यकृत, प्लीहा और हृद्रोगका निदान यथाक्रम से लिखते हैं ।

यकृत्प्लीहान १र-यकृत और प्लीहा शरीरकेअंगहैं, हृदयकेनीचे दक्षिण पार्श्वभागमें यकृत् और वामपार्श्वमें प्लीहा रहताहै.प्लीहा रोग नसोंके बहावका मुख्य स्थान है इसका रोगी अतिक्लेशपात्र होता है,यकृत् और प्लीहामें केवल दाहिने बायेंकाही अंतर है इस लिये उन दोनोंकी लक्षणोत्पत्ति तथा चिकित्साभी समतुल्यही है. हम प्रथम प्लीहाको दर्शाते हैं।

प्लीहारोगोत्पत्तिकारण-मनुष्य के उष्ण वस्तु तथा दही आदि कफकारी पदार्थ भक्षण करने से रुधिर या कफ बढ़कर प्लीहा को बढ़ा देते हैं,

प्लीहारोगकीसम्प्राप्ति-मंदज्वर,मंदाग्नि होकर बलनाश होजावे शरीर में कुपित कफ पित्तके लक्षण होजावें और शरीर पीतवर्ण होजावे तो प्लीहा (पिलही) उत्पन्न हुआ जानो, यह रोग वात,२ पित्त,३कफ और ४ रुधिर से उत्पन्न होता है.

१वातप्लीहालक्षण-पेटमें नित्य अफरा रहा करे, उदावर्तरोग हो और पेटमें शूल चले तो बादी का प्लीहा जानो।

२पित्तप्लीहालक्षण-ज्वर,तृषा, दाह,मोह हो और शरीरका वर्ण पीला पड़जावे तो पित्तका प्लीहा जानो

३कफप्लीहालक्षण-पेटमें मंद २ पीड़ा हो, प्लीहा हार्ड पड़े, भारी हो,शरीरमें बोझ जान पड़े और भोजनमें अरुचि हो तो कफप्लीहा जानो।

४रुधिरप्लीहालक्षण-सर्व इन्द्रियां शिथिल होजावें शरीर का वर्ण विपरीत होजावे.अंग भारी हो;पेट लाल हो और भ्रम, दाह मोह हो तो रुधिरप्लीहा जानो.

१प्लीहा वही रोग है जिसे मारवाड़ी भाषामें फिया- बुन्देलखण्डी भाषा में सपरा और उर्दू भाषामें तापतिल्ली कहते हैं।

असाध्यप्लीहालक्षण–जिसमें पूर्वोक्त तीनों दोषोंके लक्षण हों वह असाध्य है।

यकृद्रोग–इसकी उत्पत्ति लक्षणादि सब प्लीहाके समानही हैं इसी लिये प्रथम यकृद्रोग के विषय में कुछ न लिखा।

हृद्रोगोत्पत्तिकारण–उष्ण,खारी, कषैली, खट्टी तीक्ष्णके अधिक भक्षण,अधिक श्रम,हृदयमें चोट अति चिंता और मलमूत्रावरोधक कारणसे हृद्रोग उत्पन्न होता है यह रोग१वात,२पित्त,३कफ,४सन्निपात और५कृमि इन पाँच कारणोंसे उत्पन्न होताहै हृद्रोगसामान्यस्वरूप–भोजनका रस प्रथम हृदयमें प्राप्त होकर त्रिदोषकी प्रेरणासे बिगड़ जाता है तब छाती में अत्यन्त पीड़ा उत्पन्न होती है वैद्यलोग हृद्रोग कहते हैं।

वातहृद्रोगलक्षण–हृदयमें पीड़ा फैल जावे,सुई चुभाने, दही मथन,आरीसे चीरने, कुल्हाडीसे फाड़ने या हाथसे चीर डालने के सदृश पीडा होवे तो बादीका हृद्रोग जानो।

पित्तहृद्रोग लक्षण–तृषा; दाह. घबराहट.मूर्छा. मुखसे कुछ दुर्गंधहो मुख सूखे हृदयमें चूसनेके समान पीड़ा हो और मुखसे धुआं निकले तो पित्तका हृद्रोग जानो।

कफजहृद्रोगलक्षण–हृदय भारी हो.मुखसे कफ गिरे.भोजनमें अरुचि हो शरीर जकड़ बंद हो जावे. हृदयमेंकफजमजावें,मुख मीठा रहे अग्नि मन्द हो जावे तो कफका हृद्रोग जानो।

सन्निपातजहृद्रोगलक्षण–जिसमें उक्त कहे हुए तीनों दोषोंके लक्षण दृष्टि पड़ें और तीव्र सुई छेदनेके सदृशपीड़ा होतो सन्निपातका हृद्रोग जानो।

कृमिजहृद्रोगलक्षण–रोगीको खाज. उबकाई थुकी(थूकनेकी इच्छा)शूल.हृदयमें पीड़ा.नेत्रों के साम्हने अँधियारी भोजनपर

अरुचि, नेत्रोंमें धूसर या काला रंग होजावे, मुख सूखे और अंग में सुई छेदनेके समान पीडा हो तो कृमिका हृद्रोग जानो।

हृद्रोगके उपद्रव—क्लोम (तृषास्थानकी ग्लानी) और भ्रम हो मुख सूखे और कफकृमिके सब उपद्रव हों तो हृद्रोगकेउपद्रवजानो

इति नूतना मृ० निदान० यकृत्प्लीहा हृद्रोग निरूपणंनाम चतुर्विंशस्तरंगः २४

मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात।

मूत्रकृच्छ्रस्य रोगस्य मूत्राघातस्यवक्रमात्॥
तरंगेवाणनेत्रेऽस्मिन्नूनिदानंलिख्यतेमया ॥ १ ॥

भाषार्थः—इस पचीसवें तरंग में मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात रोगों का निदान यथाक्रम से लिखते हैं।

मूत्रकृच्छ्ररोगोत्पत्ति—तीक्षण, रूखा कच्चा अन्न खाने, जलचर जीवोंका मांस भक्षण करने, भोजनपर पुनः भोजन करने, अजीर्ण होने, परिश्रम होने, मद्य पीने, नृत्य करने घोडे आदिकी आरूढि (सवारी) करने से मनुष्य के मूत्राघातरोग उत्पन्न होताहै।

यह रोग १ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४-सन्निपात होनेके कारण आठ प्रकार का है।

मूत्रकृच्छ्ररोगके सामान्यलक्षण—वात, पित्त, कफ अपने अपने कारणों से कुपित हो मूत्राशय में प्राप्त होकर मूत्रमार्ग में पीडा करते हैं. तब मूत्र अति कष्ट पूर्वक चिनक चिनक कर उतरता है मूत्र का रुकाव तो थोडा परन्तु पीडा अधिक होता है. जो ये लक्षण होने लगें तो मूत्रकृच्छ्र हुआ जानो।

१ वात मूत्र कृच्छ्र लक्षण—जांघ, लिंगेन्द्रिय, मूत्राशय और मूत्राशय की सन्धियों में पीडा होवे, थोड़ा थोड़ा मूत्र बारम्बार उतरे तो वातमूत्रकृच्छ्र जानो।

२ पित्तमूत्रकृच्छ्रलक्षण–पीला या लाल तथा अत्यंत उष्ण मूत्र लिंगेन्द्रिय से बडी। तडक पूर्वक उतरे तो पित्तमूत्रकृच्छ्र जानो।

३ कफमूत्रकृच्छ्रलक्षण–मूत्राशय और लिंगेन्द्रिय दोनों भारी हों, दोनों में शोथ हो, मूत्र में फेन आजावे और मूत्र कष्ट से उतरे तो कफमूत्रकृच्छ्र जानो।

सन्निपातमूत्रकृच्छ्रलक्षण–तीनों दोषों के समस्त लक्षण दृष्टि पडें तो सन्निपातमूत्रकृच्छ्र जानो।

५ प्रहारजमूत्रकृच्छ्रलक्षण–मूत्र रुकजावे और वातमूत्रकृच्छ्रके समस्त लक्षण हों तो चोट लगने का मूत्रकृच्छ्र जानो. इससे बचना दैववशात् है।

मलावरोधमूत्रलक्षण–मल के वेग रोकने से वायु कुपित होकर मूत्राशय और पेट में अफरा करता है जो जांघों में पीडा हो और कष्ट से उतरे तो मलावरोधमूत्रकृच्छ्र जानो।

७शुक्रावरोधमूत्रकृच्छ्रलक्षण–मूत्राशय और लिंगेन्द्रिय में शूल चले, वीर्यमिश्रित मूत्र अति कष्टपूर्वक उतरे तो वीर्य रोकने का मूत्रकृच्छ्ररोग जानो।

८ पथरीमूत्रकृच्छ्रलक्षण–पथरी और शर्करा (रेती) ये दोनों मूत्रस्थान [पोतों] में रहताहै पथरी पित्तसे पकती, बादीसेसूखती और कफसे घिसती हुई रेतीरूप होकर मूत्रमार्गसे निकलनेके समयमूत्रको रोकती है तब रोगी के हृदयमें पीडा, शरीर में कम्प कुक्षि में शूल, मन्दाग्नि और मूर्छा होती है ये लक्षण हों तो पथरीका मूत्रकृच्छ्र जानो. यह अति दारुण है।

मूत्राघातरोगोत्पत्तिकारण कुपथ्य करने से वात, पित्त, कफका प्रकोप होकर मूत्राघातरोग उत्पन्न होताहै. यहरोग[१]वातकुण्डलि.

१ मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्रमें विशेष अन्तर नहीं- मूत्रकृच्छ्र में मूत्र थोडा रुकता पर पीडा अधिक होतीहै और मूत्राघातमें मूत्र अधिक रुकता पर पीडा थोडी होती है अर्थात् एक दूसरे से विपरीत है ॥

का,२ अष्ठीला, ३ वातबस्ति, ४मूत्रातीत, ५ मूत्र जठर, ६ मूत्रोत्संग, ७ मूत्राक्षय, ८ मूत्रग्रंथि, ९ मूत्रशुक्र, १० उष्णवात, ११ मूत्र सादा, १२ विडविघात और १३ बस्तिकुण्डली ऐसा १३ प्रकारका है.

१ वातकुण्डलिकालक्षण—रूखी वस्तुखाने और मूत्रकृच्छके धार जैसे वायु मूत्राशयमें प्राप्त होकर पीडा करता, मूत्रकीनसोंमें विचरता हुआ कुपति होता है, तब कफ मूत्रके छिद्रको रोकदेताहै और वायु कुडलाकर होकर लिंगेन्द्रियके मुखमें रहता है इसलियेमनुष्य थोडा २ अत्यन्त पीडापूर्वक मूततहै जो ये लक्षण हों तो वातकुण्डलिका जानो यह असाध्य है. रोगीका बचना कठिन ही है.

२ अष्ठीलारोगलक्षण—मूत्राशयमें अफरा हो, गुदासे वायु सरण न हो गुदा में वायुकी दृढ पत्थरसदृश गांठ पडजावे;मल न उतरे और अति पीडा हो तो अष्ठीलारोग जानो।

३ वातबस्तिलक्षण—मूत्र का वेग रोकने से मूत्राशय में वायु प्राप्त होकर मूत्र प्रसारणी नसोंके मुख रोक देती है, जो मूत्र न उतरे, कूख तथा मूत्राशयमें पीडा हो तो बस्तिवात जानो, यह अति कष्टकारी रोग होता है।

४ मूत्रातीतलक्षण—जो मनुष्य मूत्रको विलम्ब तक रोके रहे पश्चात् मूत्र वेगसे न उतरे, मन्द धारासे हो तो मूत्रातीत जानो

५ मूत्रजठररोगलक्षण—मूत्रका वेग रोकने से गुदाकी अपान वायु उदरको पवन से भरके नाभि के नीचे अफरा और अत्यन्त पीडा उत्पन्न करे तो मूत्रजठररोग जानो।

६ मूत्रोत्संगलक्षण—पेडू या लिंगेन्द्रियकी नसों में प्राप्त हुए मूत्रको रोक रखनेसे मूत्रके संग थोड़ा थोड़ा रुधिर पीडायुक्त या निष्पीडा हो गिरने लगे तो मूत्रोत्संगरोग जानो।

७ मूत्रक्षयरोगलक्षण—अति श्रमसेशरीर रूखा होकर मूत्राशयमें

रहनेवाले वात पित्त कफ मूत्रको नष्ट करदेतेहैं;तव अतिदाह और पीडापूर्वक किंचित् मूत्र उतारता है इसे मूत्रक्षयरोग कहते हैं।

८मूत्रग्रंथिलक्षण–मूत्राशय में अकस्मात् छोटी सी स्थिर अति दृढ आंवले के समान गोल बातकी गांठ उत्पन्न होजावै तो मूत्रग्रंथि जाने।

९ मूत्रशुक्ररोगलक्षण–मूत्रके वेगसमय स्त्रीसे मैथुन करने को प्रवृत्त हो तो पुरुषकी वायु शुक्रस्थान को भ्रष्ट कर मूत्रस्राव (पेशाब कर चुकने) के पूर्व या पश्चात् भस्म के पानी के सदृश वीर्यको गिराती है इसे मूत्रशुक्र कहते हैं।

१० उष्णवातरोगलक्षण–स्त्री प्रसंग, और धूपकी अधिक्-तासे पेडू में रहनेवाले बात, पित्त पेडू लिंगेन्द्रिय और गुदाको दग्ध करते हुए अति कष्ट पूर्वक हल्दी के समान पीतवर्ण या-रुधिरसंयुक्त रक्तवर्ण मूत्र उतरने देवे तो उष्णरोग जानो।

११ मूत्रसादरोगलक्षण–कुपथ्य के कारण मूत्राशय की बात पित्त और कफ बिगडकर मूत्रको अत्यन्त कष्टपूर्वक उतरने देते हैं. तब रोगीका शरीर सूख जावे, पीला, लाल श्वेत गोरोचनस-मान. रक्तसमान या चूनासदृश और गाढा तथा थोडा मूत्रउतरे तो मूत्रासादरोग जानो।

२ विड्विघातरोगलक्षण–अति रूखा अन्न खाने से दुर्बल मनुष्य होकर अति कष्टपूर्वक मलयुक्त मूत्र छोडे और मूत्रकी दुर्गंधि मलसदृस आवै तो विड्विघातरोग जानो।

१३ बस्तिकुण्डलीरोगलक्षण–विशेष वेगपूर्वकदौडने,लंघनऔर श्रमकी दीर्घता तथा किसी प्रहार प्रकारसे मूत्राशयमें गांठ पडके गर्भके समान निश्चल हो जावे, शूल और दाह हो गांठ दवानेसे बूंद२और विशेष दबानेसे मूत्रकी धारा गिरने लगे तथा शस्त्रकी

चोट लगने के सदृश दीर्घ पीडा हो तो वस्तिकुंडलिका रोग जानो यह असाध्य है इससे बचना देववशात् है।

विशेषतः—वात कुण्डलिका से वस्ति कुंडलिका पर्यंत जो ऊपर १३ विकार लिख आये हैं ये तेरहों मूत्राघातके ही विशेष भेद हैं।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे मूत्रकृच्छ्रमूत्राघातरोगोत्पत्ति लक्षणनिरूपणं नाम पँचविंशतितमस्तरंगः ॥ २५ ॥

अश्मरी; प्रमेह, पिडिका।

अश्मरीमेहपिडिकागदानां च यथाक्रमात्।
रसपक्षमिते भंगे निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः अब हम इस छब्बीसवें तरंग में अश्मरी, प्रमेह, और पिडिका रोग का निदान यथाक्रम से लिखते हैं।

अश्मरी (पथरी) रोगोत्पत्तिकारण—मूत्राशय में बहता हुआ वायु मूत्राशयके,मूत्र, पित्त और कफको सुखाकर क्रम क्रमसेपथरी को उत्पन्न करताहै,जैसे गौके हृदय (पित्ते) अन्तर स्थान में गोरोचन बढजाताहै तैसे ही मनुष्य के पथरी बढ़ जाती है, यह तीनों दोषों के कोप से होती है कुछ एक से ही नहीं।

अश्मरी पूर्व रूप—पेट फूले,लिंगेन्द्रिय, मूत्राशय और अंत्र-स्थान (अंडकोश) आदिमें अत्यन्त पीडा हो हृष्ट पुष्ट बकरे के समान गंध मूत्र की आवे मूत्रकृच्छ्र, ज्वर और अरुचि प्राप्त हो तो पथरी होने वाली जानो।

अश्मरीसामान्यरूप—नाभि, सीवन, मूत्राशय, मस्तकमें अत्यन्त पीड़ा हो मूत्रकी धारा एकसी बंधी हुई नहीं किन्तु टूटती २ हुई गिरै, मूत्र मार्ग रुक जावे पथरी से मूत्र मार्ग खुल जाने पर सुख पूर्वक पीडा और मूत्र मार्ग बंद हो जाने पर दीर्घ वेदना पूर्वक लाल मूत्र उतरे तो पथरी का प्रवेश हो चुका जानो

अश्मरीभेद—यह रोग १ बात, २ पित्त ३ कफ, और ४ वीर्यावरोध से उत्पन्न होकर चार प्रकार का है परन्तु चारों के साथ कफका संसर्ग सदैव बना ही रहता है ।

१ बातश्मरीलक्षण—लघु शंका (मूत्र) करत समय इन्द्रिय और नाभिमें पीडाके मारे चिल्ला उठे रेचन होजावे काम्पित होवे मूत्र बूंद बूंद उतरे दांत चाबने लगे और कांटे युक्त श्याम रंग की पथरी हो तो बादी की पथरी जानो ।

२ पित्ताश्मरीलक्षण—पेडू के पके हुए फोड़ेके समान वेदना और उष्णता हो, भिलावे के बीज सदृश आकार हो और पथरी का रंग पीला लाल या काला हो तो पित्तकी पथरी जानों ।

३ कफाश्मरीलक्षण—पेडू शीतल या भारी रहने पर पीडा अधिक पथरी चिकनी, गिलगिली, श्वेत और मुरगी के अंडेके बराबर हो तो कफकी पथरी जानो ।

शुक्रावरोधाश्मरीलक्षण-मैथुन करनेकी योग्यावस्था में (वीर्य पूर्ण रूपसे भर चुकनेपर) प्राप्त होनेपर भी किसीप्रकार से वीर्य को रोककर पात न होने देवे तो वह (वीर्य) वायुकी प्रेरणा से मूत्राशय और अंडकोष के बीच में हो सूखकर पथरी उत्पन्न करदेता है जो पेडू में शूल चले, अंडकोष पर शोथ, मूत्र में पीडा और वीर्य का अभाव होजावे तो वीर्य की पथरी जानो ।

उपभेद-यही शुक्राश्मरीलिंग और अंडकोषका मध्य भाग दबाने से वायुकी प्रेरणाद्वारा रेती के सदृश बारीक होकर मूत्र के साथ गिरतीहै तब शर्करा और परमाणु रूपहोकर गिरतीहै तब सिकता कहलातीहै जब वायु अनुलोम गतिमें होती है तब तो यह पथरी

पथरी कुछ ऊपर दीखती नहीं परन्तु सद्वैद्य शस्त्र क्रिया से इसे निकाल सकते हैं उक्त विधि से निकाली हुई पथरियों की परीक्षा तथा निरीक्षण करने से उपरोक्त वर्णित लक्षण तथा आकार निस्सन्देह प्रत्यक्ष देखे गये हैं ।

मूत्र मार्गसे एक साथही निकल जाती है परन्तु वायु प्रति लोम होनेसे पुनः एकत्र होकर बंद रहती है तब यह (पथरी) मूत्र प्रवाहिणी नाडियों में जमकर उपद्रवों को उत्पन्न करती है।

अश्मरी उपद्रव-निर्बलता, अंग शैथिलल्यता, कृशता, कुक्षिशूल अरुचि, पांडुवर्ण, उष्णता, तृषा उलटी और हृदय में दबाने के सदृश पीडा ये पथरी के उपद्रव हैं, इन्हें प्रथम दबाके पश्चात् मूल रोग दबाना चाहिये।

असाध्याश्मरीलक्षण—नाभि और अंडकोशमें शोथ हो, मल मूत्र रुकके विशेष पीडा होता पथरी शर्करा या सिकता इस रोगीको नष्ट कर देवेंगी, इनसे बचना दुर्लभ ही जानो।

प्रमेहोत्पत्ति—बैठे रहना, सोते रहना, श्रम न करना मैथुनकरना धूपमें फिरना नवीन जल या मद्यपान करना, दही भेडियों का मांस गुड आदि मिष्ट पदार्थ, कफकारी पदार्थ, विरुद्ध भोजन, उष्ण भोजन और खट्टा या कडुवा रस खाना; इन कामों की आधिक्यता होनेसे मनुष्यको प्रमेह (परमा) रोग उत्पन्न होताहै सो यह रोग बात, पित्त और कफ के प्रभेद के कारण २० प्रकार का है इन प्रभेद का स्पष्टीकरण दर्शाते हैं।

१ बातप्रमेह सम्प्राप्ति—अपनी अपेक्षा क्षीण कफ पित्तकी क्षीणता के कारण मूत्राशय के शुद्ध मांस स्नेह [वसा] मज्जा और शरीरके रसको वायु [मूत्राशयकी] नसों के मुख में स्थित करके ४ प्रकार का प्रमेह उत्पन्न करती है।

२ पित्त प्रमेह सम्प्राप्ति—उष्ण पदार्थों से कुपित हुआ पित्त

---

१ वात पित्त और कफकी पथरी तो बाल वृद्ध युवा सभी को होता है परन्तु शुक्राश्मरी केवल तरुण पुरुषको ही (जो पूर्ण वीर्य पूरित हो गये हों) होता है शर्करा और सिकता ये दोनों शुक्राश्मरी के भेद हैं।

मूत्राशयके भेद, मांस और शरीरके रसको दूषित करके ६ प्रकार का प्रमेह उत्पन्न होता है।

३ कफ प्रमेह सम्प्राप्ति—स्वीकारणीय कुपित हुआ कफ मूत्राशय के भेद मांस और शरीर के रसको दूषित करके १० प्रकार का प्रमेह उत्पन्न करता है।

बात प्रमेहान्तर्गत भेद—१ बसा प्रमेह, २ मज्जा प्रमेह. ३ मधु प्रमेह और ४ हस्ति प्रमेह ये बात से होते हैं।

२पित्तज प्रमेहान्तगर्तभेद—१क्षार प्रमेह, २नील प्रमेह ३ कालप्रमेह, ४हारिद्रप्रमेह, ५मांजिष्ठ प्रमेह और६रक्तप्रमेह ये पित्तसे होते हैं

३ कफप्रमेहान्तगर्तभेद १ उदरप्रमेह. २ इक्षुप्रमेह, ३ सांद्र प्रमेह, ४ सुरा प्रमेह, ५ पिष्टप्रमेह, ६शुक्रप्रमेह, ७ सिकताप्रमेह. ८ सीत प्रमेह, ९शनैः प्रमेह १० लाला प्रमेह ये दस कफसे होते हैं।

विशेष भेद—१ पूय प्रमेह, २ तक्र प्रमेह, ३ पिडिकाप्रमेह, ४शर्करा प्रमेह, ५ घृत प्रमेह और ६ अति मूत्र प्रमेह ये ६ तरहके प्रमेह उक्त प्रमेहों से व्यतिरक्त हैं क्योंकि पूर्वोक्त २० चरक, सुश्रुत वाग्भट और भावप्रकाश के मतसे तथा उपरोक्त ६ प्रमेह आत्रेय मतसे निश्चित किये गये हैं अतएव २६ प्रकार भी हो सकते हैं,

साध्य प्रमेह निर्णय—१ वायु से दूषित मज्जादि सर्व शरीर व्यापी गंभीर धातुओं के होने से बात प्रमेह असाध्य. २ दोष और दूष्यों के विषमपनसे पित्त प्रमेह याप्य. ३ दोष और दूष्यों के समान यत्न होनेसे कफ प्रमेह साध्य होता है।

प्रमेह पूर्वरूप—जीभ तालु और दांतों में अधिक मैल जमे, हाथ पांव में दाह हो, तृषा अधिक लगे, मुख मीठा बना रहे और देह चिकना होजावे तो अनुमान करलो कि प्रमेह उत्पन्न होगा।

बात पित्त और कफ ये दोष तथा रस मांसादि दोषो से नष्ट होने वाले पदार्थ दूष्य कहाते हैं।

प्रमेहसामान्यलक्षण—अत्यन्त गाढा या अत्यन्त पतला मूत्र उतरे तो जानो कि प्रमेह उत्पन्न हो चुका है।

१ वातप्रमेहान्तर्गत भेद लक्षण।

१वसाप्रमेहलक्षण—मूत्र के साथ वसाभी गिरे, मूत्र का रंग कुछ कुछ नीलवर्ण हो तो वसा प्रमेह जानो।

२ मज्जाप्रमेहलक्षण—मज्जा (हाडकी गूदे) क सदृश अथवा मज्जायुक्त मल उतरे तो मज्जा प्रमेह जानो।

३ मधुप्रमेहलक्षण—कषैला या मधुके समान मीठा और सूखा मूत्र उतरे तो मधु [क्षौद्र] प्रमेह जानो।

४ हस्तिप्रमेहलक्षण—वेगरहित और स्निग्ध [चिकनाहट] सहित तथा अवरोधयुक्त मतवाले हाथी के समान मूत्र उतरे तो हस्ति प्रमेह जानो।

पित्तप्रमेहान्तर्लक्षण।

१ क्षारप्रमेहलक्षण--खार के पानी सदृश मूत्रका वर्ण होजावे और इन्द्रियोंमें खार सदृश जलन होवे तो क्षार प्रमेह जानो।

नीलप्रमेहलक्षण- जिसके मूत्रका रंग नीलके समान होजावे उसे नील प्रमेह जानो।

३कालप्रमेहकेलक्षण--जिसके मूत्र का रंग काला (स्याही सदृश) हो जावे उसे कालप्रमेह जानो।

४हरिद्रप्रमेहलक्षण--जिसके मूत्रका रंग हल्दी के समान पीला

---

१ शुद्ध मांसका मिश्रण, चिकना घृत समान पदार्थ जिसे उर्दू भाषा में चर्बी कहते हैं॥

२ प्रमेह का कोई भी भेद बहुत दिनों तक निरौषध रहले और कुपथ्य व्यवहार से मधुप्रमेह होजाता है यह महा असाध्य है॥

३ इसके लक्षणानुसार तो कालप्रमेहकी अपेक्षा स्याम प्रमेह नामही कहा होता क्यों कि कालशब्द मृत्युबोधक होनेसे उसका अर्थ मृत्यु प्रमेह होजावेगा।

हो जावे और अति कटु तथा दाहयुक्त मूत्र उतरे तो हारिद्रा प्रमेह जानो ।

५ मांजिष्ठप्रमेहलक्षण—मजीठ के रंग सदृश मूत्रका रंग होजावे और मूत्रकी दुर्गंधि आवे तो मांजिष्ठि प्रमेह जानो ।

रक्तप्रमेहलक्षण—मूत्रका रंग रक्त सदृश अत्यन्त दुर्गन्धियुक्त उष्ण और नमकयुक्त हो तो रक्त प्रमेह जानो ।

३ कफप्रमेहान्तर्गत भेदलक्षण.

१ उदकप्रमेहलक्षण—निर्मल, शीतल, श्वेतवर्ण, चिकना, गाढा औरगंधरहित जलसदृश तथा बहुत मूत्रउतरे तो उदकप्रमेहजानो ।

२ इक्षुप्रमेहलक्षण—ईखके सर समान अत्यन्त मीठा मूत्र उतरे, जिसपर चींटी या मक्खी आ बैठें उसे इक्षुप्रमेह जानो ।

३ सांद्रप्रमेहलक्षण—बासे पानी के सदृश गाढा मूत्र उतरे तो सांद्र प्रमेह जानो ।

४ सुरा प्रमेहलक्षण—मदिरा के समान गंधित, निर्मल, गाढा, बहुत मूत्र उतरे तो सुराप्रमेह जानो ।

५ पिष्टप्रमेहलक्षण—चांवलके आटे मिले जलके समान, गदला गाढा और श्वेत मूत्र उतरे, लघुशंका के समय पीडा होकर रोमांचित होजावे तो पिष्टप्रमेह जानो ।

६ शुक्रप्रमेहलक्षण—वीर्य के सदृश या वीर्य मूत्र उतरें तो शुक्र प्रमेह जानो ।

७ सिकताप्रमेहलक्षण—वीर्यके कणको लिये हुए मूत्र उतरें उसे सिकता प्रमेह जानो, सिकता रेती या बालू ।

८ शीतलप्रमेहलक्षण—बारंबार शीतल [ठंडा] और बहुत मूत्र उतरे उसे शीतलप्रमेह जानो ।

९ शनैःप्रमेहलक्षण—जो शनैः शनैः (धीरे धीरे रह रह कर) मन्द धारासे और थोड़ा२ मूत्र उतरे तो शनैःप्रमेह जानो ॥

१० लालाप्रमेहलक्षण-लार (मुँहका थूक, चिकना जल) के सदृश तार चलता हुआ मूत्र उतरे तो लाल प्रमेह जानो।

१ वातप्रमेहोद्रव-उदावर्त रोग होजावे, शरीर में पीडा हो, हृदय कांपे, सब रस भक्षणेच्छा रहे पेटमें शूल हो, निद्रा न आवे शरीर सूख जावे और श्वास, खांसी होतो वात-मेहक उपद्रव हैं,

पित्तप्रमेहोपद्रव-पेडू और इन्द्रियमें शूल हो; पोते फटने लगें, ज्वर, मोह; तृषा, मूर्छा, अतिसार हो और खट्टी डकारें आवें ये पित्त प्रमेह के उपद्रव हैं।

३ कफप्रमेहोद्रव-अन्न पाचन न हो, भोजन में अरुचि हो; वमन हो, निद्रा अधिक आवे- खांसी चलै और पीनस का रोग हो ये कफ प्रमेह के उपद्रव हैं इन्हें प्रथम दवाओ फिर चिकित्सा करो।

अत्रेयमतनिर्मितषट् विधप्रमेहलक्षण.

१ पूयप्रमेहलक्षण-राध (पीव) के सदृश मूत्र उतरे या पीपके समान गंध उठे तो पूयप्रमेह जानो।

२ तक्रप्रमेहलक्षण—छाछ (मठे) के समान मूत्र उतरै या मूत्र में मठे की गंध आवै उसे तक्र प्रमेह जानो।

३ पिडिकाप्रमेह—जिसके मूत्र में वीर्य की डली (डेला) गिरे उसे पिडिकाप्रमेह जानो।

४ शर्कराप्रमेहलक्षण—मूत्र शक्कर तथा मिश्री के समान मीठा और मिश्री के सदृश वर्ण धारी हो तो शर्करा प्रमेह जानो।

५ घृतप्रमेहलक्षण—मूत्र का वर्ण और स्वाद घृत के समान हो जावे तो घृत प्रमेह जानो।

६ अतिमूत्रप्रमेहलक्षण—रात्रि दिन क्रमशः अधिक मूत्र उतरे और रोगी भी क्रमशः निर्बल होता जावे तो अतिमूत्रप्रमेह जानो।

प्रमेहके असाध्य लक्षण--वात. पित्त और कफ के प्रमेह अपने

अपने उपद्रवयुक्त हो जावें तथा प्रमेहपर पिडिका प्राप्त होजावें तो महा-असाध्य होगया इस रोगीका वचना असम्भव जानो।

प्रमेहयुक्तलक्षण-जिस रोगी का मूत्र निर्मल, पानी के सदृश पतला कडुआ और तीक्ष्ण हो उसका प्रमेह नष्ट हुआ जानो। विशेषदृष्टि—जिस रोगी का शरीर हल्दी के सदृश पीला और मूत्र रुधिरके समान लाल होजाता है उसे बहुतसे वैद्य भ्रमसे रक्त प्रमेह जानते हैं सो रक्त प्रमेह नहीं वह रक्त पित्त का कोप जानो यह भी रक्त प्रमेह का एक विभेद ही है।

अनेक आचार्यों का ऐसा मत है कि रजोधर्मसे स्त्रियों के अनेक रोग दूर होजातेहैं इसलिये उन्हें प्रमेह नहीं किन्तु प्रदर होताहै,

पिडिकारोगोत्पत्तिकारण—प्रमेह रोगपर विशेष कालतक औषधादि उपचारनहोनेसे संधि, मर्मस्थान और मांसल (शरीर में चूतड जांघ आदि मांस भरे) अवयवों में पिडिका उत्पन्न होती है यह रोग १ शराविका, २ कच्छपिका, ३ जालिनी, ४ विनता, ५ अलजी, ६ मसूरिका, ७ सर्षपिका, ८ पुत्रिणी ९ विदारिका और विद्रधि ऐसा, १० प्रकार का है।

१ शराविका पिडिकालक्षण-फुन्सी ऊपरसे ऊंची और बीच में गढ्ढा हो तो शराविका जानो ॥

२ कच्छपिकालक्षण-शरीर के पुष्ट स्थानमें सरसों के समान, दाहयुक्त और कछवेके आकारकी फुन्सी हो तो कच्छपिका जानो,

३ जालिनीलक्षण- मांसके समूह में दाहयुक्त फुन्सी हो तो जालिमी पिडका जानो।

४ विनतालक्षण पीठ पर या पेट पर दाह युक्त बड़ी बड़ी फुन्सी हों तो विनता पिडिका जानो।

५ अलजीलक्षण-पीडा युक्त, लाल या काली फुन्सी हों, और बहुत फटें तो अलजी पिडिका जानो।

मसूरिकालक्षण—मसूर के बराबर और मसूर के रंग समान लाल रंग की फुन्सी हों तो मसूरिका जानो।

७ सर्षपिकालक्षण—सरसों के प्रमाण और सरसों के रंग सदृश फुन्सी हों तो सर्षपिका जानो।

८ पुत्रिणीलक्षण—बडी फुन्सियों के चहुं ओर बारीक बारीक बहुतसी फुन्सी हों तो पुत्रिणी जानो।

९ विदारिकालक्षण—बिदारीकंद के समान गोल और उसी के रंग के समान रंगवाली फुन्सी हों तो विदारिका जानो।

१० विद्रधिपिडिका लक्षण—ये फुन्सी छः प्रकार की होती हैं जिनका निदान आगे लिखेंगे।

आत्रेयमतानिर्मितापीडिका लक्षण.

१ वातपिडिका लक्षण—काली फुन्सी हों, शरीर कांपने लगे लघुशंका करने में शूल हो और रोगी विकल होजावे तो वात पिडिका जानो।

२ पित्तपिडिकालक्षण—लाल या काली, फुन्सी युक्त दाहहो तो पित्तपिडिका जानो।

३ कफपिडिकालक्षण—फुन्सी श्वेत, मोटी, शीतल और शोथ-युक्त हों तो कफपिडिका जानो।

४ सन्निपातपिडिकालक्षण—उक्त तीनों दोषोंके लक्षण हों तो सन्निपातपिडिका जानो

पिडिका के उपद्रव-तृषा. खांसी. मोह. हिचकी. मदज्वर. विसर्प और मर्मरोग होवे तथा मांसका संकोच (खिंचाव) हो यह पिडिका के उपद्रव जानो।

असाध्यपिडिकालक्षण-गुदा. हृदय, मस्तक. कंधे औरमर्मस्था-

नों में फुन्सियां होजवें तथा मंदाग्नि वाले को पिडिका रोग हो जावे तो असाध्य जानो ।

विशेषतः—यह रोग विशेष कर प्रमेह वाले रोगीके ही होता है परन्तु मेद बिगडने बिना प्रमेह भी उत्पन्न हो जाता है ।

इति नूतनामृतसागरे निदान खण्डे अश्मरी प्रमेह पिडिका लक्षण निरूपणं नाम षड्विंशतितमस्तरंगः ॥ २६ ॥

मेद. अतिस्थूल, कार्श्य उदररोग,

मेदो रोगस्य स्थूलस्य कार्श्यस्यचोदरस्यवै ॥
मुनि पक्ष मिते भंगे निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भावार्थः—अब हम इस २७ वें तरंग में मेद.अतिस्थूल. कार्श्य और उदर रोग का निदान यथाक्रम से लिखते हैं ।

मेदारोगोत्पत्तिकारण—अत्यन्त परिश्रम करने बैठे रहनेदिनको सोने, कफकारक पदार्थ खाने, और घृत तथा मधुरान्नका भोजन करने से मेद (चर्बी) बढकर समस्त धातुओं का मार्ग रोकदेती है तब अन्य धातुयें पुष्ट नहीं होने पाती, अतएव मेद वृद्धि-वाला पुरुष सर्व कार्यों के करने में अशक्त होजाता है ।

मेदोवृद्धिसम्प्राप्तिलक्षण—क्षुद्र श्वास, तृषा, मोह निद्राधिक्यता अकस्मात् श्वासावरोध शरीर में पीडा तथा शैथिल्यता, छींकें आना पसीना न निकलना, शरीर दुर्गंधि, निर्बलता और मैथुं-नाशक्तता होजावे तो मेदोवृद्धि हुई जानो, सर्व प्राणिमात्र को मेद रहती ही है परन्तु विशेष वृद्धि होने पर उक्त लक्षण होकर बहुधा पेट बढ जाया करता है ।

मेदोवृद्धिद्वाराजठराग्निवृद्धिकारण—मेदसेवायुसंचारमार्गरुकनेसे वायु कोठेमें विशेष विचरता हुआ जठराग्नि को दीप्त अहार को शुष्क करता है इसलिये भोजन किया हुआ अहार पचकर पुनः

क्षुधा प्राप्त होतीहै यही व्यतिक्रम कुछकाल पर्यन्त चलनेसे उसमनुष्यको अनेक भयंकर रोग पैदा होतेहैं,जैसे अग्नि पवनकी सहायता से प्रज्वलित होकर बनको भस्म करदेती है तिसीप्रकार उदरकी अग्नि और वायु मिलकर मेदोरोगी को दग्ध कर देती हैं।

विशेषतः-मेद अत्यन्त बढजाने पर वातादि दोष अकस्मात् घोरोपद्रव उत्पन्न करके रोगी का प्राण नष्ट कर देते हैं।

अतिस्थूललक्षण-मनुष्यके शरीरमें मेद और मांस विशेषबढजानेसे उसके कूले, पेट और छाती बहुत भारी होजातेहैंबलबृद्धि, उत्साह जाते रहैं,यह मोटा तो मर्यादा से बाहर होजाताहैपरन्तु अशक्त रहता है उसे स्थूल कहते हैं, यह मेदोरोगकाही भेदहै।

कार्श्यरोगोत्पत्तिकारण-बातकारक और रूखे पदार्थोंके खाने लंघन,मैथुन,श्रम,भय;धनपुत्रादि नाश और चिन्ता इनकी अधिकतासे मनुष्यको कार्श्य(कृशता.दुवलापन,क्षीणता)रोग होताहै।

कार्श्यरोगसम्प्राप्ति लक्षण-कूले पेटकी पसुली, गर्दन सूखती जावें; नसें दीखने लगें,शरीरमें हड्डियां और चर्ममात्र शेषरहजावें और दुबलाहोजावें तो कार्श्यरोग पैदाहुआ जानो इसी क्षीणतासे प्लीहा, खांसी. क्षयीरोग. गुल्ह. अर्श, उदररोग, संग्रहणी, आध्मान इत्यादि रोग भी उत्पन्न होते हैं।

विशेषतः-अनेक मनुष्य दीखनेमें तो अत्यन्त कृशहैं परन्तुउनके शरीरमें मेदका भाग अति न्यून और वीर्यकाभागविशेषहोनेके कारण वे मैथुनादि कृत्यतथा स्त्रीको,गर्भधारण करानेमेंअपनी प्रबलतासे समर्थ रहतेहैं उन्हें क्षयीरोग युक्त न जानो औरअनेक मनुष्योंके शरीरमें मेद भाग विशेष रहनेसे वे देखनेमें तो पुष्टजान पडते हैं परन्तु वीर्यांश न्यून रहने से मैथुन तथा अन्य कृत्योंमें भी बलहीन और असमर्थ रहते हैं उन्हें क्षीणरोगयुक्त जानो।

कार्श्यरोगअसाध्यलक्षण-जो मनुष्य स्वतः स्वभावसे क्षीण हो मंदाग्नि होजावे और शरीर बलहीन होताजावे तो असाध्यजानो उदररोगोत्पत्तिकारण-मन्दाग्नि मअजीर्ण मलिनान्न, क्षीरमत्स्यादि भोजन, मलसंचय और कुपथ्यादि कारणोसे वात, पित्त, कफ संचित होकर पसीना तथा जलको बहानेवाली नसों को रोकदेते हैं तब प्राणवायु जठराग्नि और अपानवायु दूषित होकर उदररोग पैदा होता है. यद्यपि समस्त रोग जठराग्निकी मंदता से होते हैं तथापि उदररोग तो प्रायः मन्दाग्नि से ही उत्पन्न होता है।

उदररोगसामान्यलक्षण-अफरा. गमनशक्तिका अभाव शरीरमें दुर्बलता, अग्निमांद्य, अंगशैथिल्यता,हडफूटन, तन्द्रा अधोवायु और मलावरोध हो तो उदररोग जानो यह रोग १ वात २ पित्त. ३ कफ. ४ सन्निपात ५ प्लीहा. ६ बद्धगुदा. ७ क्षाति और ८ नलकी भिन्नता के कारण आठ प्रकार का है।

वातोदरलक्षण-हाथ,पांव,नाभि और कुक्षमें सूजनहो,कुक्ष पार्श्व(पसली/पेट.कटि और पीठमें पीडा हो,सन्धियों में फूटने की सी वेदना हो,सूखी खांसी शरीरमर्दन,नाभिकेनीचे भारीपन. मलावरोध और पेट में गुड २ शब्द हो शरीरकी त्वचा नख. और नेत्रकालेयालाल या धूसरवर्ण होजावेंतो बादीका उदररोगजानो

२ पित्तोदरलक्षण-ज्वर, मूर्छा, दाह, तृषा.मुखमें कटुपन, भ्रम, अतिसार हो, त्वचा पीली, पेटपर हरापन, पेटकी नसें पीली या ताम्र वर्ण दृष्टि पड़ें, पसीना तथा उष्णता से पेट में जलन पडे धूम्रयुक्त डकारें आवें त्वचा कोमल तथा पकीसी जान पडे तो पित्त का उदर रोग जानो।

कफोदररोगलक्षण-शरीरमें शिथिलता,भारीपन और शोथ होजावे,निद्राधिक्यता,अन्नपर,अरुचि,श्वास,कास,औरपेट भारी

वमन होनेकीसी इच्छाहो, अन्नपर अरुचिहो, पेटमें गुडगुडाहट, हो, शरीर तथा पेट ठंडा, चिकना और श्वेत नसों से पूरित होजावे तो कफसे उदररोग हुआ जानो ।

सन्निपातोदरलक्षण—उक्त तीनों दोषोंके लक्षण संयुक्त हों तो सन्निपातोदरजानो, माधवनिदानमें इसीसन्निपातोदरकोही दुष्योदर करके माना है जिसका कारण और लक्षण आगे देखो ।

दुष्योदरकारण—जिस मनुष्य को दुष्ट स्त्रियां वशीकरणके लिये अपने या किसी सिंहादिक पशुके नख.होममूत्र, विष्ठा या आर्तव [रजोधर्म होनेके समय योनिस्रवाही रुधिर] को अन्नमें मिश्रित करके खिलादेवे तथा कोई शत्रुविषयुक्त अन्नपानादि भक्षण करा देवे या संयोगज विष [जैसेसमभाग घृत और मधुयुक्त होनेसे विषरूप होजाता है इसे संयोगज विष कहते हैं] किंवा मलिन जल आदि पीनेमें आजावैतो उक्तकारणोंसे वात, पित्त, कफ, तथा रुधिर समस्त शरीर में कुपित होके उदररोगको उत्पन्न करते हैं वह उदररोग शीत. वायु तथा दुर्दिन [जिस दिन सूर्य मेघों से आच्छादित हो] में विशेष प्रकोपको प्राप्त होता है ।

दुष्योदरलक्षण—रोगी के शरीर में जलन हो, मूर्छा आवे, दुबला होजावे. प्यास अधिक लगे और अंग का रंग पीला पड़ जावै तो दुष्योदर जानो ।

५ प्लीहोदरलक्षण—दाहकारक तथा कफकारक पदार्थोंके विशेष

---

१ जो कुभार्या तथा अन्य दुष्ट स्त्री अपने पति या अन्य जनको किसी की कुशिक्षा किंवा स्वेच्छासे ही वशीकरणार्थ उक्त कार्य करती है सोइससे कुछ वह वशीभूत नहीं होता वरन केवल धर्म और आरोगता भ्रष्ट होकर शरीर नाश होते हैं और वह कार्य साधक (स्त्री) ऐसा महान दुष्ट कर्म करके इस लोक तथा पर लोक मे अपराधपात्र होकर नरक भुक्ता होती है ।

सेजनसे रुधिर कुपित होकर कफसे प्लीहा को बढाता है. तब बांये पार्श्वभाग में पीडा, मंदाग्नि, जीर्णज्वर और कफ पित्त के अन्यरोग उत्पन्न होकर वह मनुष्य बलहीन होता जाता है ये लक्षण हों तो प्लीहोदर जानो ।

विशेषतः—जो दाहिने पार्श्वभाग में पीडा होके उक्त समस्त लक्षण हों तो यकृतोदर जानो, यहप्लीहोदरकाही विशेष भेदहै ।

६ बद्धगुदोदरलक्षण—बिना पके अन्न भक्षणसेपेटकीमहीनआंतें रुककर वातादिदोषसहितमलका संग्रह होजाता है, वह मल थोड़ा थोडा अत्यंत कष्टपूर्वकगुदाद्वारसेबाहर निकलता तथाहृदय और नाभिकेबीचमें पेट बढजाताहै. ये लक्षणहों तो बद्धगुदोदर जानो

७ क्षतोदरलक्षण—कांटाकंकर रेती आदि छेदक वस्तु अन्नके साथ खाने से पक्वाशय में प्राप्त होकर आंतको छेदन करदेती हैं तब उस घायलआंतसे गुदाद्वारा बहुतमाद्रवभाग स्राव होकरपेट बढ जाताहै और शूल उठकर चीरनेके समान पीडा होती है. ये लक्षण हों तो क्षतोदर जानो, इसीको परस्रावीभी कहते हैं ।

८ जलोदरलक्षण—घृतादि स्नेहवस्तु पानकरने, वास्तिकर्म करने रेचन जुलाब लेने और वमन करनेके पश्चात् शीघ्रही शीतल जल पीनेमें आजावे तो जलके बहनेवाली नसें दूषित होकर चिकनाई से लिपटी हुई क्रमर से बढके जलोदरको उत्पन्न करतीहैं जिस रोगीके पेट पर नाभिके आस पास चिकनाहट और गुलाई हो- जावे, शरीर कम्पित हो, रोगी के पेटमें शब्द और क्लेश हो तो जलोदर जानो, इसे दकोदर भी कहते हैं ।

उदररोगसाध्यासाध्यनिर्णय—ये समस्त आठोंप्रकारके उदररोग

---

१ जिस प्रकार पखाल (मसक) भरा हुआ इधर उधर हिलने से शब्द होता है तिसी प्रकार जलोदर वाले रोगी का पेटभी मशक की नाई तना हुआ चिकना हिलता हुआ और शब्दमय होजाता है ॥

उत्पन्न होतेही कष्टसाध्यहै, बलवान पुरुषको जलोदर न होनेतक उदररोग कुछ कालका हो तो यत्न या ईश्वरेच्छा से साध्यभी हो जा सक्ते हैं बद्धगुदोदर उत्पन्न होने से १५दिनतक साध्य तथा १५दिन पश्चात् असाध्य होजाता है, परन्तु क्षतोदर और जलोदर तो उत्पन्न होतेही असाध्यही होते हैं।

उदररोगके असाध्यलक्षण–रोगीके नेत्रोंपर सूजन होवे उपस्थेंद्रिय टेढी होजावे, शरीरकी त्वचा गल जावे, रक्त मांस और जठराग्नि क्षीण होजावे, पार्श्वास्थि(पसलियोंकी हड्डी)टूटीसी टेढी हो जावे, अन्नपर अरुचि शरीरपर शोथ और अतिसारहोजावे तथा रेचन[दस्त]होनेके पश्चात् पुनःपेट पूर्ववत् फूलकर भर जावे तो असाध्योदररोग जानो. इससे बचना दैववशात्ही है॥

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे मंदाग्नि काश्यरोग-उदररोग लक्षण निरूपण नाम सप्तविंशतितमस्तरंगः॥ २७ ॥

शोथ, अण्डवृद्धि, वर्ध्म,

शोथवृद्धिवर्ध्मरुजां तरंगेऽत्र यथाक्रमात् ॥
वसुनेत्रमिते भंगे कारणं वर्ण्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः–अब हम इस अठ्ठाईसवें तरंगमें शोथ, अंडवृद्धि और वर्ध्मरोगोंका निदान यथाक्रमानुसार वर्णन करते हैं.

शोथरोगोत्पत्तिकारण वमन, विरेचन, ज्वर, पाण्डुरोग, लंघनसे दुर्बल होकर मनुष्य खारे, खट्टे, तीक्ष्ण, भारी पदार्थ, दही आदि कच्चे पदार्थ. मृत्तिका, शाकपात्र तथा मैदा आदि विरुद्धदूषितऔर विषयुक्त अन्न खालेवे, अर्शरोग बहुत दिनोंका होजावे पेटमें आमांश बढ जावे गर्भस्थानमें चोट लगजावे, अनियमितकालमें गर्भ गिर जावे, तथा विरेचनादि, पंच कर्म मिथ्योपचार पूर्वक किये

जावे तो शोथरोग पैदा होता है, सो यह रोग १वात,२पित्त, ३कफ, ४वातपित्त,५वातकफ, ६कफपित्त ७सन्निपात, ८प्रहार और९विषके अन्तर के कारण से ९प्रकारका होता है, या रोग शोथ सूजन नाम से बहुधा कहा जाता है।

शोथरोगपूर्वरूप—नेत्रादिक से तीव्र उष्णता होवे,नसें तनवें पीडितहोवें,शरीरभारीपडजावे और जिसअंगमेंसूजनआनेवाली हो उस अंगमेंभी कुछ बोझसाजानपडेतो शोथ उपजानेवालाजानो

शोथरोगोत्पत्ति स्वकारणीय दूषित वायुदूषित रक्त,पित्त और कफको बाहरकी नसोंमें प्राप्त करके अपना (वायु) संचारबंदकर लेती है तब चर्मके नीचे मांस ऊंचा होजाता है इसे शोथ कहतेहैं

शोथसामान्यलक्षण शरीर भारी, चित्त विकल, ऊंचा संतप्त और रोमांचित होजावे,वर्णविपर्ययता शरीरका रंगचित्रसा हो जावे और नसें महीन पडजावें तो शोथरोग पैदा हुआ जानो।

१वातशोथरोगलक्षण—जो शोथ चर(एक अंगसे दूसरेअंगपर होजाने वाला होवे,शरीरकीत्वचा कठोर लाल या काली, शून्य (सुनीस्पर्शबोधहीन),रोमहर्ष और पीडायुक्त होवे, निष्कारणही न्यूनाधिक्य होजावे,दबानेसे दबकर पुनःऊंचा होजावे,रात्रिको न्यून और दिनको अधिक बलिष्ठ रहे तो वातशोथ जानो।

२पित्तशोथलक्षण जो शोथ स्पर्शमें कोमल गंधयुक्तहो,त्वचा का वर्ण लाल या पीला होजावे, भ्रम, ज्वर, स्वेद(पसीना) तृषा मेद और रक्त नेत्रहों; शोथ में दाह और छूने से पीड़ा तथा पाकयुक्त हो तो पित्तशोथ जानो।

३कफशोथलक्षण—जो श्वेत,भारी,स्थिर हो, अन्नपर अरुचि निद्रा उलटी और अग्निमांद्य हो,लार गिरे.शोथ दबानेसे दबजावे रात्रिको विशेष वेग तथा दिनको न्यून होजावेतो कफशोथ जाने

४ वातपित्तशोथ लक्षण–जिसमें बात और पित्त दोनों के लक्षण दृष्टि पड़ें उसे वातपित्तशोथ जानो।

५ वातकफशोथलक्षण–जिसमें बात और कफ दोनोंके लक्षण दृष्टि पड़ें उसे वात कफ शोथ जानो।

६ कफपित्तशोथलक्षण–जिसमें कफ और पित्त दोनोंके लक्षण दृष्टि पड़ें उसे कफपित्तशोथ जानो

७ सन्निपातशोथ लक्षण— जिसमें वात, पित्त और, कफ तीनों के लक्षण दृष्टि पड़ें उसे सन्निपातशोथ जानो।

८ क्षजक्षोथलक्षण–चोट लगने. शस्त्रप्रहार होने, शीत पवन, लगने, दधि भक्षण करने. भिलावा, कौंचकी फली के रुआं या जर्मकिद आदि पदार्थ लगने से जो शोथ होता है वह शरीर में चहूं ओर फल जाता है. लाल रंग और दाहयुक्त होता है और बहुधा पित्तशोथ के लक्षणोंमें से मिला हुआ होता है ये लक्षण हों तो चोट का शोथ जानो।

९ विषजशोथलक्षण–विष वाले जीवों के मल, मूत्र. वीर्यादि स्पर्श या उनकी डाढ, दंतादि लगने तथा विषैले वृक्षकी पवन लगने किंवा मनुष्यादिके दांत,डाढ. नखादि लगनेसे जो शोथ होता है वह शरीरमें अधिक फैलता और दाहयुक्त होताहे ये लक्षण हों तो विषका शोथ जानो।

शोथोपद्रव–श्वास तृषा, छर्दि (वमन), भोजन में अरुचि, शरीरमें दुर्बलता और ज्वर हो तो रोगी का बचना दुर्लभ है, अतएव ऐसे रोगीका यत्न करना ही निष्फल है!

साध्यासाध्यनिर्णय–जो शोथ पेडू (मूत्राशय) स्तन पर्यंतहो वह कष्टसाध्य और शरीरमात्रपर शोथ होतो असाध्यहै पुरुषको जो शोथ पांवसे चढ़कर मुख पर्यंत आवै तथा स्त्रियों का मुखसे

चढ़कर पश्चात् पांव तक आवै सो भी असाध्य है, परन्तु गुह्य स्थान (योनि,लिंग, गुदा) पर उत्पन्न हुआ शोथ तो पुरुष स्त्री दोनों के लिये असाध्यही जानो।

अंडवृद्धिरोगोत्पत्ति–यह रोग १ वात २ पित्त ३ कफ ४ रुधिर ५ मेद. ६ मूत्र ७ अंत्र इन कारणोंसे उत्पन्न होकर सातही विभागोंमें विभाजित किया गया है. इनमें से मूत्र और अंत्रज ये दोनों वातसेही उत्पन्न होते हैं परन्तु इनमें केवल हेतु भेदमात्र है यह वही रोग है जिसे वृद्धि और लोक में बहुधा गोई बढ़ना, भी कहते हैं।

अंवृडद्धिसामान्यलक्षण–स्वकारणीयकुपित अधोगामी वायुस्व स्थानसे चलकर जांघोंके ऊपर और पेडूके नीचे (जांघ औरपेडू के मध्य) एक ओरकी संधियोंमेंसे अंडकोशमें प्राप्त होके अंडकोष की आधारभूत नसों को पीडित करती हुई अंडकोश (गोई) का आकर बड़ा कर देती है इसे अंडवृद्धि कहते हैं.

१ वातांडवृद्धिलक्षण–अंडकोश पवनमेंसे भरा हुआ लुहारकी धौंकनी या पखाल [मशक] के समान जान पड़े रूखा हो और निष्कारणही पीडा हो तो वातांडवृद्धि जानो।

२ पित्तांडवृद्धिलक्षण–अंडकोश पकेगूलरफल समान दाहयुक्त पाकयुक्त और शोथयुक्त हो तो पित्तसे अंडवृद्धि जानो।

३ कफांडवृद्धिलक्षण–अंडकोश ठंडा भारी चिकना कठोर, पीडा और खुजालयुक्त हो तो कफकी अंडवृद्धि जानो।

४ रक्तांडवृद्धिलक्षण अंडकोशकाले फोडेसे व्याप्त औरपित्तांड वृद्धिके लक्षणयुक्त होतो रुधिरकी अंडवृद्धि जानो।

५ मेदांडवृद्धिलक्षण–अंडकोश कोमल तथा तालफलसदृशहो

और कफज अंडवृद्धि के लक्षण जान पडे तों मेद से उत्पन्न हुई अंडवृद्धि जानो ।

६ मूत्रांडवृद्धिलक्षण—चलनेके समय अंडकोश जलभरी पखाल (मशक)के सदृश तना हुआ शब्दमय नीचे लटकाहुआ पीडायुक्त और कोमलहो तथा मूत्र कष्टसे उतरेतौ मूत्रसे अंडवृद्धिजानोजो मनुष्य मूत्रवेगकोबहुत दिनतक रोकाकरे उसेयह अंडवृद्धिहोतीहै

७ अन्त्रांडवृद्धिलक्षण—वायुप्रकोपकारी आहार, मलमूत्रावरोध शीत जलमें तैरना, युद्धमें पदसंचारी.बोझ उठाना,मार्गगमनअंग को एढ़ाटेढ़ा करना,भयोत्पादक कार्य करना तथा अन्य वायुकोप कारीकार्योंकेकरनेसेवायुशरीरकी छोटी आंतोंको द्विगुणकरकेउनके स्थानसे नीचेके भागमें प्राप्त होतीहै और पेडू, जांघऔरकमरकी संधिरूपवंक्षणस्थानमें प्राप्तहोकर गांठसदृशशोथको उत्पन्न करती है जब इस शोथकाउपाय बहुतकालतक नहीं होता तब अंडकोश प्राप्तहोकर अफरा, शूलऔर मूत्रावरोधके साथ अंडवृद्धिउत्पन्न होजातीहै इस अन्त्रजांडवृद्धिको युक्तिसे दबाओ तो घुण२शब्द होताहुआ पेटमें जाता और छोडनेसे पुनःअंडकोश फूलजाताहै इन लक्षणोंसे युक्त हो तो अंत्रजांडवृद्धि जानो ।

अंडवृद्धिके असाध्यलक्षण—वायुका संचय अधिक होनेसे आंतें और अवयव मिलके अंत्रजांडवृद्धि होती है सो जो यह वातांडवृद्धि के लक्षणसदृश हो तो असाध्य जानो ।

वर्ध्मरोगोत्पत्ति—कफकारक, दाही पदार्थ या भारी अन्न या सूखा, दुर्गंधित मांस भक्षणतथा पित्तकारी मिथ्या बिहार स्त्रीसंगादिकी विपुलता) से सपित्त या केवल वायुकुपित होकरवंक्षण (मूत्राशय और जंघास्थलका संधिस्थान)में गठान के समान शोथ उत्पन्न करता है उसे वर्ध्मरोग कहते हैं ।

वर्ध्मरोगसम्प्राप्तिलक्षण-उपरोक्त गठान होकर शरीरमें ज्वर शूल और शिथिलता हो तो वर्ध्मरोग जानो।

विशेषतः--इसी वर्ध्म को लोक में बदभी कहते हैं अनुमान करते हैं कि या तो वर्ध्मका अपभ्रंश होकरही बद शब्द बन गया है. या यावनी भाषाके बद शब्द से (जिसका अर्थ बुरा है) बना है क्योंकि इस रोग से वह मनुष्य बद या बादी या अपशयको प्राप्त होता है।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे शे.थांड बृद्धिवर्ध्मरोगलक्षण निरूपण नामाष्टाविंशतितमस्तरंगः २८॥

गलगंड, गंडमाला, अपची, ग्रंथी, अर्बुदरोग,
गलगंडादिरोगाणामर्बुदस्ययथाक्रमात् ॥
अंकनेत्रे तरंगेऽस्मिन् निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः—अब हम इस उन्तीसवें तरंग में गलगंड, गंडमाला. अपची. ग्रंथी, और अर्बुद रोगोंकानिदान यथाक्रमसेवर्णनकरतेहैं

गलगंडरोगोत्पत्ति—वात, कफ और मेद गले के स्थान में दूषित कर गले की दोनों ओर स्थित होके अपने चिह्नों युक्त गलगंड रोग करते हैं।

गलगंडरोगसामान्यलक्षण—जिस मनुष्यके गलेमें अंडकोशके समान दृढशोथ होकर लटके वह शोथ बडाहो या छोटा उसे गलगंड रोग जानो, यह रोग १ वात, २ कफ और ३ मेदकी भिन्नता के कारण तीन प्रकार का है।

१ वातगलगंडरोगलक्षण-जिसमें पीडा अधिक होगलेकीनसें काली या लाल हों, कठोर हों; विलम्बसे बढें, शोथ नहीं पके मुख निःस्वाद रहे और कंठ तालु सूखते रहें उसे वातगलगंड जानो,

२ कफगलगंडरोगलक्षण–गले में अंडकोश के समान लटकता हुआ, स्थिर, भारी, शीतल, खुजालयुक्त और अल्प पीडादायक शोथ हो, जो बिलम्बसेही बढे और बिलम्बसेहीपके; रोगीकामुख मीठा और कंठ तालुकफसे लिपटे रहेंतो कफकागलगंडरोगजाने।

३मेदगलगंडरोगलक्षण–जो शोथ चिकना. पीला कोमलस्वरूप पीडायुक्त, अति कटु होकर गलेकी संधिमें तुम्बडीकेसमानलटका रहे, जड में पतला और रोगी के देहानुसार न्यूनाधिकहो रोगी का मुख चिकना और गलेमेंही बोले तो मेदगलगंड जानो।

गलगंडरोगके असाध्य लक्षण–रोगीका श्वास बडे कष्टसे आवे सर्वांगकोमलहो, रोगउत्पन्न होनेसे१वर्षबीतजावे भोजनमेंअरुचि हो शरीर क्षीण होजावे, शब्द (स्वर) स्पष्ट न निकले तो असाध्य गलगंड जानो, ऐसे रोगीकी चिकित्सा करना ही व्यर्थ है।

गंडमालारोगोत्पत्तिलक्षण मेद और कफकेकारण मनुष्यके गले या कांख या ग्रीवा या पेडूयाजांघकी संधियों (वंक्षणस्थानों)में बेरयाआंवलेके समानदृढगठानेंहोजातासोगंडमालावहातीहैं

अपचीरोगोत्पत्तिलक्षण–उपरोक्त(गंडमाला) रोगकीगठानेंही बहुत पुरानी होनेपर पककर पीव बहने लगती एक अच्छीहोती दूसरी होजाती, उसमें बिलम्ब अधिक होता,येलक्षणहोंतोअपची रोग जानो, यहगंडमाला का ही एक अवस्था भेद है।

अपची के असाध्यलक्षण–पार्श्वशूल, कास ज्वर और वमन-युक्त अपची हो तो असाध्यरोग जानो।

ग्रंथिरोगोत्पत्ति–वात. पित्त और कफके कोपसेमांस. रक्त, मेद और नसें दूषित होकर गोल ऊंची और शोथयुक्त गठानेंउत्पन्न होती हैं इसे ग्रंथिरोग कहते हैं. यहरोग १ वात. २ पित्त ३ कफ ४ मेद और ५ नसोंकी कारण भिन्नतासे ५ प्रकारकाहै

१ बातजग्रंथिलक्षण—जो गठान प्रथम त्वचा (चर्म) खींचकर बडी होवे पश्चात् उसमें काटने. छेदन. उठाकर फेंकने. मथन करने और फोडने के समान पीडा हो गांठ काली कोमल और पखाल (मशक) के समान तनी रहै तथा फूटने पर उसमेंकेवल निर्मल रक्त निकले ये लक्षण हों तो बातजग्रंथि जानो ।

२ पित्तजग्रंथिलक्षण—गठानमें अत्यन्त दाह-धुआ निकलतासा हो सिंगी लगाने के समान पीडा जान पडे पक कर फूटने पर पीला या लाल या लाल पीला पीव अथवा अत्यन्त दुष्ट रुधिर प्रवाह हो तो पित्तग्रंथि जानो ।

३ कफजग्रंथिलक्षण—जो गठान ठंडी रोगोंके रंगसे मिलतीहुई अल्प पीडाकारक विशेष कडूं [खुजाल] युक्त-पत्थरसी दृढ (कडी)-बहुतकालसे. पकने या बढनेवाली और फूटनेपर सफेद और गाढी पीव वहै तो कफकी गठान जानो ।

४. मेदजग्रंथिलक्षण—जो गठान रोगी का शरीर मोटा होनेसे बडी और दुर्बल होनेसे छोटी, चिकनी, अधिक कडूयुक्त, अल्प पीडायुक्त हो और फूटने पर खल्ली [ढेप] या घी के समान मेद (चर्बी) निकले तो मेदकी गठान जानो ।

५शिराजग्रंथिलक्षण—जो निर्मल पुरुष सबलोंके सदृश व्यायामादि करै तो ऐसे अशक्तिज कार्यों से वायु संकोपित होकर नसोंके समूहको संकोचित, पीडित और सुखा करके गोल ग्रंथि उत्पन्न करती है, उक्त लक्षण हों तो नसों की ग्रंथि जानो ।

साध्यासाध्यग्रंथिलक्षण—शिरजन्यग्रंथि पीडा सहित, चंचलहो तो कष्टसाध्य और पीडारहित. अचल, ऊंचा हो तो असाध्य अथवा मर्मस्थान हो तो असाध्यही जानो ।

---

१ स्थूल रीतिसे गाल, गला, कंधा. हृदय शरीर की संधियों पीठ और गुदाके निकटवर्ती स्थानको मर्मस्थान स्थान कहते हैं ।

अर्बुदरोगोत्पत्तिकारण-जोमनुष्य थोड़ा अन्न और अधिकमांस भक्षण करे उसके वात,पित्त,और कफदूषित होकर रुधिरमांसको बिगाड देतेहैं तब सर्व शरीर या किसी एक विशेष भागमें एकबडी गोल,स्थिर, अल्पपीड़ायुक्त,दृढ बालवाली, विलम्बसेबढनेवाली और पकनेवाली एक गठान ऊंचीसी होतीहै जिसे वैद्यकशास्त्रज्ञ लोग-अर्बुदरोग कहते हैं यह रोग १ रक्तार्बुद और २ मांसार्बुद दो प्रकार का होता है

१रक्तार्बुदलक्षण-स्वकरणीय कुपित पित्त,रक्त और नसोंको संकुचिततथा पीडित करके मांसपिंडको ऊंचा करताहै तब वहव्रण कुछपककर स्रवितहोता तदनंतर मांसके अंकुरोंसे अच्छादितऔर वृद्धिगत होकेउसमेंसेनिरंतररुधिरबहतारहताहै इसे रक्तार्बुदकहते हैं.यह रक्तार्बुद असाध्य होताहै क्योंकिइससे रक्तकाक्षय औरउप- द्रवोंसेपीडित होनेके कारण रोगीकाशरीर पाण्डुवर्णयुक्तहो जाताहै

२मांसार्बुदलक्षण-मनुष्यके शरीरमें मुष्टिप्रहार आदिसप्रहारित स्थानका मांस दूषित होकर शोथ उत्पन्न करताहै शोथपीडार- हित,चिकना, पाकरहित; पत्थरसदृशकठोर, अचल और देहके वर्ण सदृश होकर हो तो मांसार्बुद जानो यहभी असाध्य ही है।

अध्यर्बुद तथा द्विर्बुदअन्तर-एक वार अर्बुदरोग होकरपुनः उसीस्थानपर हो उसे अध्यर्बुद और जो एकसाथ या दोदोषोंकी प्रकोपसहचर्यतासे हो उसे द्विअर्बुदरोग जानो. यहभी असाध्य तथा अर्बुदका भेदही है.

अर्बुदानिष्पाककारण- अर्बुदरोगोंमेंकफऔर मेदकी आधिक्यता होनेसे तथादोषोंकी स्थिरता व ग्रंथि रहनेसे और भावसे भी अर्बु दरोगका व्रण नहीं पकता.जो अर्बुद रक्त तथा पित्त सम्बन्धी होता है वह भी नहीं पकता है,

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे गलगंडगंडमालापचीग्रन्थ्या र्बुदरोगलक्षण निरूपणं नामैकोनत्रिंशत्तरंगः ॥ २९ ॥

श्लीपद, विद्रधि.

रोगस्यश्लीपदस्यात्रीवद्रधेश्च यथाक्रमात् ॥
तरंगेऽत्रबृहद्भानौ निदानं कथ्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थ–अब हम इस ३०वें तरंगमें श्लीपद और विद्रधि रोगोंका निदान वर्णन करते हैं।

श्लीपदरोगोत्पत्तिकारण- छहोंऋतुओंमेंतालावादिक का पुराना जलपीनेसे या विशेष शीत देशोंमें विशेष निवास करनेसे या जिन देशोंमें सदा पुराना पानी बनारहता है वहां निवास करने से श्लीपदरोग उत्पन्न होता है।

श्लीपदसामान्यलक्षण–स्वलक्षण प्रकटकारक वातादि दोषोंसे पांवमें मेद और मांसका आश्रयभूत जो शोथ हो उसेश्लीपद रोग कहते हैं, इस रोगमें कफ प्रधान है।

तथापेडू और जंघ स्थलकी संधियोंमें पीडायुक्त औरज्वरसहित शोथउत्पन्नहोकेपश्चात् क्रमशः पांवपर उतर आवे उसे शोथकहतेहैं विशेषतः-अनेक अचार्योंका यह मतभी है कि यहरोग हाथ पांव, नाक, कान, आंख, लिंग और ओष्ठमें भी होता है यह रोग वात;१पित्त२कफ३और४ सन्निपातकी जुदाईसे चार प्रकार का है,

१वातश्लीपदलक्षण-काला, रूखा, फटाहुआ, अत्यन्तपीडायुक्त और विशेष ज्वर सहित होतो वायुका श्लीपद जानो।

२पित्तश्लीपदलक्षण–जो श्लीपद पीला, दाहयुक्त, ज्वरसहित और कोमल हो तो पित्त श्लीपद जानो।

३कफश्लीपदलक्षण–जो चिकना, श्वेत या पांडुवर्ण- भारी और

श्लीपद यहवही रोग है जिसे लोकमें हाथीपांव कहते हैं यह रोग कलकत्ते की-ओर बंगाल प्रदेशमें बहुधा पाया जाता है।

स्थिर हो उसे कफ का श्लीपद जानो, इसके लक्षण पूर्वामृत-सागर में नहीं लिखे हैं।

४ सन्निपातश्लीपदलक्षण-जो अनेक छिद्रयुक्त, बांबी (सर्प छिद्र) के समान हो और चूने (बहने) लगे उसे सन्निपात श्लीपद जानो, यह असाध्य है।

श्लीपद असाध्यलक्षण-जो श्लीपद मधुरादिकफकारक आहार और दिवस शयनादि मिथ्या बिहारोंसे उत्पन्न हुआहो. रोगीकी प्रकृत कफ सम्बन्धी हो श्लीपद से पानी झरने लगे जो ऊंची या खाज युक्त हो और त्रिदोषज चिह्न दृष्टि पडे तो असाध्य जानो

विद्रधि रोग-यह रोग दो प्रकार का है अर्थात् १ वाह्यविद्रधि २ अंतर विद्रधि।

वाह्यविद्रधिरोगोत्पत्तिकारण-अस्थि निवासी बात पित्त, कफ, स्वकारणोंसे कुपित होके त्वचा, मांस और मेदको दूषित करतेहैं तब धीरे २ गहन (गहरे) मूलवाला, पीडायुक्त गोल या लम्बा शोथ चर्मपर उत्पन्न होता है उसे विद्रधि रोग कहते हैं, यह रोग १ बात, २ पित्त ३ कफ, ४ सन्निपात, ५ क्षतज और ६ रक्तज छः प्रकार का है।

१ बातजविद्रधिलक्षण जो शोथ लाल या काला, कभी छोटा कभी वडा, अति पीडायुक्त और जिसका बढ़ना तथा पकना ही विचित्र ढंग से हो उसे बादी की विद्रधि जानो।

२ पित्तजविद्रधिलक्षण-गूलरके पके फल सदृश कुछ कालापन लिये पीला रंग हो, ज्वर दाह युक्त हो, शीघ्रही पके और बढ़े तो पित्तजविद्रधि जानो।

३ कफजविद्रधिलक्षण-जो सराव (सर्वा, सकोरा,) के आकारका हो पांडुवर्ण, ठंडा, खुजली युक्त, चिकना, अल्प पीडायुक्तहो बढ़ने और पकने में शीघ्रता करे तो कफकी विद्रधि जानो।

विशेष लक्षण—वातज से पतली, पित्तज से पीली और कफज विद्राधि से श्वेत पीव निकलती है ।

४ सन्निपात विद्रधिलक्षण—नाना प्रकारकी पीडाहो, पीब वहै, घडे सदृश ऊंची शोथ हो, जो कभी घटै और कभी बढै और इसी प्रकार पकै तो सन्निपात विद्राधि जानो ।

५ क्षतजाविद्राधिलक्षण—पत्थर या लाठीकी चोट लगै या किसी शस्त्रादि की मारसे घाव पड जावै उस पर कुपथ्य करने से घावकी गरमी वायुसे बढकर रक्तसहित पित्तको कुपित करदेती है तबतृषा दाह और ज्वर युक्त विद्राधि उत्पन्न होकर पित्त विद्राधि केलक्षण धारण कर लेती है ये लक्षण हों तो क्षतज(चोटकी) विद्राधि जाना

६ रक्तजा विद्राधिलक्षण—फोडे श्याम हों पर स्थान का धूसरवर्ण हो, तीव्र, दाह, ज्वर पीडा और पित्तज विद्राधि के लक्षण हों तो रक्तजाविद्राधे जानो ।

वाह्यविद्रधिसाध्यासाध्य निर्णय जो विद्राधि नाभिस्थानके ऊपर होतीहै,पककर फूटनेके समय उसका मुंह भीतरकी ओर होकेफूटे तो उसमें से पीव ऊपर मुख द्वार से बाहर निकलती है जो विद्राधि नाभि स्थान के नीचे होती है पक कर फूटने के समय उसकामुँह भीतरकी ओर होके पीव नीचे गुदा द्वार से बाहर निकलती है । जो विद्राधि नाभि में ही होती है उसकी पीव मुख या गुदा दोनों मार्ग से बाहर निकलसकती है । इसलिये नीचे की ओर गुदामार्ग से पीव निकले तो वह रोगी साध्य मुख द्वारा पीव किकले तो वह रोगी मर जावैगा । अर्थात् नाभि स्थानके तले की विद्राधि साध्य और ऊपर के स्थान में हो तो असाध्य है । नाभि में ही विद्राधि होकर उसका बहाव ऊपर को हो तो असाध्य और नीचे को हो तो साध्य जानो ।

विशेषतः–जो विद्रधि हृदय, नाभि और पेडूमें होतो असाध्य तथा इनसे व्यतिरिक्त स्थानमें होकर मुख बाहर की ओर को होके फूटे तो साध्य जानो, इसके कच्चे पन, पक्के पन और विदग्धत्वको शोथ की नाईं विचार लो ।

अंतरविद्रधिरोगोत्पत्तिकारण कुपथ्यके कारण बात पित्त और कफ मिलेहुए न्यारे २ कुपित होकर शरीर के भीतर कोठे में एक गोलाकर, बांबी के समान ऊंची गांठ उत्पन्न करते हैं इसे वैद्य अन्तरविद्रधि (भीतर रहने वाली विद्रधि) कहते हैं ।

अंतरविद्रधिस्थान-यह रोग १ गुदा, २पेडू के मुख ३ नाभि ४ कुक्षि [कूख] ५ वंक्षण [पेडू और जंघा का संधिस्तान] ६ हृदय और तृषास्थन के बीच ७ प्लीहा या यकृत ८ हृदय. ९ नाभि के दक्षिण भाग और १०तृषाके स्थान में उत्पन्न होती है इनके लक्षण पूर्वोक्त वाह्यविद्रधि के सदृश वातादि दोषोंपरही अवलम्बित नहीं वरन स्थान विशेष से लक्षण भी विशेष होगयेहैं

१ गुदाविद्रधिलक्षण–भली भांति पवन का सरण न होकर अधोवायु का अवरोध होजावे तो गुदाकी विद्रधि जानो ।

२ पेडू विद्रधिलक्षण–मूत्रकृच्छ्र हो तो पेडू की विद्रधि उत्पन्न हुई जानो ।

३ नाभिविद्रधिलक्षण–हिचकी अधिक आवै और अफरा रहै तो नाभि में विद्रधि उत्पन्न हुई जानो ।

४ कुक्षिविद्रधिलक्षण–कुक्षि में वायु का कोप हो तो कूखकी विद्रधि जानो ।

५ वंक्षणविद्रधिलक्षण–कटि (कमर) में पीडा हो तो वंक्षण की विद्रधि जानो ।

६ हृदयतृषा स्थानमध्यवर्ति विद्रधि लक्षण–पार्श्व संकोचन और पार्श्वशूल हो तो उक्त विद्रधि जानो ।

७प्लीहाविद्रधिलक्षण-श्वास रुककर निकलेता प्लीहाविद्रधिजानो
हृदय विद्रधिलक्षण-सर्वांगमें पीडा होकर अंग जकड जावै और खांसी चलै तो हृदय की विद्रधि जानो।

९ नाभिके दाक्षिणभागज विद्रधि लक्षण-श्वास का रोध हो तो नाभि की दाहिनी ओर विद्रधि जानो।

१० तृषास्थानजाविद्रधि लक्षण-तृषा अधिक लगे और जल पीने पर भी तृप्ति न हो तो तृषास्थान में विद्रधि हुई जानो।

अंतरविद्रधिसाध्यासाध्यनिर्णय-विद्रधि रोग में अफरा, वमन तृषा, हिचकी और पीडा आधिक हो तो असाध्य जानो वहरोगी मर जावैगा, जो विद्रधि कच्ची, वायुजन्य बडी या छोटीऔरमर्म स्थान में हो तो कष्टसाध्य और सन्निपात की विद्रधि असाध्य होती है जो सन्निपातज विद्रधि हृदय, नाभि और पेडू में होकर रुकजावै और मुँह के समान हो तो असाध्य जानो।

विशेषतः-जिस प्रकार अंतरविद्रधिहोतीहै तिसी प्रकार शरीर के भीतर मांस और रुधिर का एक गोला भीहोताहै इनमेंपरस्पर यही भेद है कि विद्रधि पकता है पर यह गोला पकता नहीं है।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे श्रीपदविद्रधिरोगलक्षण
वर्णनं नाम त्रिंशस्तरंगः ॥ ३० ॥

व्रण शोथ व्रणरोग

व्रण शोथस्य व्रणस्यह्यग्निदग्धस्य च क्रमात्।
चन्द्रराम्रतंरंगेऽस्मिन् निदानंकथ्यते मया ॥१॥

भाषार्थः-अब हम इस २१ वे तरंग में व्रणशोथ व्रण और अग्नि दग्ध. रोगका निदान क्रमानुसार वर्णन करते हैं।

व्रणशोथरोगोत्पत्तिकारण-शरीर के किसी एक देश (स्थान)में

शोथ हो उसे व्रणका पूर्वरूप जानो. यहशोथ छः कारणों से अर्थात् १ वात, २ पित्त, ३कफ, ४सन्निपात, ५ रक्त और ६ आगन्तुक (चोट) से होता है जिसके लक्षण शोथ निदानमें कहआये हैं।

विशेषलक्षण–वातज व्रणशोथ विषम (कहींकच्चा कहींपक्का) पित्तज व्रणशोथ शीघ्र पकता, कफज व्रणशोथ विलम्ब से पकता तथा रक्तज और आगन्तुक व्रणशोथ शीघ्रही पकता है।

अपक्वव्रणशोथलक्षण–जिस व्रणशोथ में पीडा उष्णता और सूजन थोडी हो, रंग त्वचा के रंगसे मिलता हो और छूने से कठोरता हो तो कच्चा व्रणशोथ जानो।

पकते हुए व्रणशोथ लक्षण–व्रणशोथमें अग्निसदृश जलन पडे क्षारके पकने समान पके, चीटी काटने या छेदने या शस्त्र मारने या हाथमें भीतर दबाने या दंडा मारने या सुई चुभाने या मुखसे चूसने या अंगुलीसे फाडनेके या बिच्छू काटने के सदृश वेदनाहो किसी एक भागमें दाह हो, वर्णविपर्यसे (रंग तब्दील) होजावे और सोते बैठते किसीभी प्रकारसे शांत न हो व्रणशोथ फूलकर पखाल के समान होजावे और ज्वर, तृषा, अरुचि ये उपद्रव होजावें तो निश्चय करो कि व्रणशोथ पकरहा है।

पक्वव्रणशोथलक्षण–व्रणशोथकी पीडा, ललाई, ऊंचाई न्यून पड़जावे, उसपर सलवट पडजावे, बारंबार पीडा और खुजालउठे उपद्रवोंकी शांति हो, त्वचा फटीसी जान पडे और अँगुली दबाने से पीब इधर उधर घूमने लगे तो व्रणशोथ पकाजानो।

विशेषत–चाहे एक दोषजन्य व्रणभी हो परन्तु उसके पकने के समय तीनोंदोष मिलकर उसे पकातेहैं अर्थात वातसे पीडा, पित्त से पकाव और कफसेपीबबनतीहै तथा अनेक विद्वानोंका यहमतभी है कि कालन्तरसे बढाहुआ पित्त अपनी प्रबलतासे वात और कफको वश करके रक्तको पचाता है तब व्रणशोथ पकता है।

पीव भरे हुए व्रणशोथमें दोष–जिस प्रकार घास के डेरेमें लगी हुई अग्नि वायुकी प्रेरणा से प्रज्वलित होकर बलात्कारसे घासको जला देतीहै वैसेही पके व्रणशोथ में रही पीव भी उस स्थान के मांस और नसोंका नाश कर देती है इसलिये चाहिये कि पके हुए व्रणशोथ में से पीव अवश्य निकाल देवे।

विशेषतः–जो वैद्य कच्चे, पकते हुए और पक्के व्रणका पक्वापक्व निश्चय न कर सके और वैद्यककी जीविका करनेलगे उस चोर सदृश और कच्चे व्रणको फोड डाले तथा पक्केको न फोडे उस अविचारी वैद्यको चांडाल के समान जानना चाहिये।

व्रणरोगोत्पत्तिकारण–शारीरिक और आगन्तुक दो कारणोंसे उत्पन्न होकर यह रोग उक्त दोही प्रकारका है. वातादि दोषों से उत्पन्न हो सो शारीरिक और शस्त्रादि के प्रहार से उत्पन्न हो सो आगन्तुक व्रण कहाता है

शारीरिकव्रणोत्पत्ति–शारीरिक व्रण मुख्य चार कारणोंसे १वात २पित्त,३कफ, ४ रक्तसे उत्पन्न होता है परन्तु रक्त के सम्बन्ध से द्विदोषज और त्रिदोषज होनेके कारण गौण रीतिसे ८प्रकार का हो जाता है अर्थात् ५ वातपित्त, ६ वातकफ ७ कफपित्त और ८ सन्निपात (त्रिदोषज)

१ वातव्रणलक्षण– जो व्रण स्थिर, कठोर, अल्पस्रावित, दीर्घ पीडित, फूटनयुक्त, धूसर या श्यामवर्ण और सुई चुभाने कीसी पीडा करे उसे वादी का व्रण जानो।

२ पित्तव्रणलक्षण–जो व्रण तृषा,मोह,ज्वर,दाह, आर्द्रत्व (गीलापन) पीवमें दुर्गंधियुक्त हो और चर्म फटे तो पित्त व्रण जाने

१ आमं विदह्यमानं च सम्यक् पक्वं च लक्षण। जानीयात्स भवेद्वैद्य शेषास्तस्करवृत्तयः॥ १॥ यश्छिन्नत्त्यामनज्ञानाद्यश्च पक्वमुपेक्षते श्वपचाविव मन्तव्यौ तावनिश्चितकारिणौ॥ २ इत्युक्तं माधवाचार्येण।

३ कफव्रणलक्षण–जो व्रण विशेष गिलविला (कोमल),भारी चिकना, अचल, श्वेतवर्ण, अल्प आर्द्र और अल्प पीडायुक्त हो उसे कफसे उत्पन्न जानो।

४ रक्तव्रणलक्षण–जिस व्रण का रंग लाल और रक्तही रक्त बहा करे उसे रुधिरसे उत्पन्न हुआ जानो।

५ वातपित्तजव्रणलक्षण–जिसमें वात और पित्त दोनोंके लक्षण दृष्टि पडें उसे वातपित्त व्रण जानो।

६ वातकफजव्रणलक्षण–जिस व्रणमें वात और कफ दोनों के लक्षण हों उसे वातकफज व्रण जानो।

७ कफपित्तजलक्षण–जो कफ और पित्त दोनों के लक्षणों से युक्त हो उसे कफपित्तका व्रण जानो।

८ सन्निपातव्रणलक्षण–जिसमें वात, पित्त, कफ तीनों दोषोंके उक्त वर्णित लक्षण हों उसे सन्निपात का व्रण जानो।

विशेषतः–उक्त समस्त व्रणों के दो भेद हैं १ दुष्ट व्रण और २ शुद्ध व्रण उनके लक्षण ये हैं।

१ दुष्टव्रणलक्षण जिससें निकलती हुई पीव या रक्तमें सडनेकी दुर्गंधि आवे, बहुत ऊंचा हो, बहुत पुराना होगया हो और शुद्ध व्रण के लक्षणोंसे सर्व विरुद्ध लक्षण हों उसे दुष्ट व्रण जानो।

शुद्धव्रणलक्षण–जो जिह्वा के समान कोमल और उसीकेसदृश अरुण वर्णयुक्त हों, पीडा और पीवका वहाव न हो और सर्व प्रकार से सुन्दर व्यवस्था हो तो शुद्धव्रण जानो।

भरते हुए व्रणके लक्षण–किनारे कपोत वर्ण (धूसर और पांडु वर्णका संयोग कबूतर का सा रंग) होजावे, पीव आदि बहाव युक्त; स्थिर और मांस के अंकुर निकल आवे तो जानो कि यह व्रण भरने लगा है।

भरितव्रणलक्षण–पीवका बहाव बंद हो. गांठ, सूजन या पीडा कुछ न हो तो जानलो कि यह व्रण भली भांति भर गया है।

सुखसाध्यव्रणलक्षण–जो व्रण त्वचा और मांस से उत्पन्न हुआ हो, मर्मस्थानमें न हो, तरुण पुरुषको,उपद्रवरहिततथा हेमवन्त, शिशिर और बसत ऋतु में उत्पन्न हुआ हो उसे सुखसाध्य (सुख पूर्वक अच्छा होजाने वाला) जानो ।

कष्टसाध्यव्रणलक्षण–जिसमें सुखसाध्य व्रणके उक्त लक्षण कुछ भी न हों तथा कुष्ठी, विषभक्षक, शोषरोगी, मधुप्रमेहयुक्त पुरुषको और व्रण में व्रण उत्पन्न हो तो उसे कष्टसाध्य व्रण जानो ।

असाध्यव्रणलक्षण सुखसाध्यव्रणोक्त समस्त लक्षणरहित असाध्य होताहै, वातादि दोषज व्रणोंमें से वसा (चर्बी)मेद (केवल चर्बी). मज्जा (हड्डियोंके भीतरकागूदा) और मस्तुलिंग (मस्तकके भीतरकाकमास) ये शरीरान्तर्गत पदार्थ बहतेरहें तोअसाध्य जानो, ये लक्षग आगंतुक व्रणमें हों तो साध्य होताहै जिन व्रणोंमें से मदिरा या अगर या जाई पुष्प या कमल या चंदनया चम्पाके पुष्प सदृस दिव्य सुगंध आवै. मर्मस्थानमें न होनेपरभी मर्मस्थान की सी पीडाहो,भीतरसे जले और बाहरसे ठंडा हो या बाहरसे जले तो भीतर से ठंडाहो रोगीकामांस बलक्षीण होजावे और श्वास, कास क्षय अरुचिकारक पीडाहो तो असाध्यजानो जिन व्रणोंमे से पीव या रक्त बहता रहै, मर्मस्थान में हों और शोस्त्रक्त विधिसे उपचार करनेपर भी कुशल न हो तो असाध्य जानो. उपरोक्त लक्षण धारणीय असाध्य व्रण हैं सद्वैद्यको उचित हैं कि जो यशकी इच्छा होतो ऐसे असाध्य रोगोंपर चिकित्सा करने को कदापि हाथ न उठावे ।

आगंतुकव्रणोत्पत्तिकारण–असि [तलवार] बाण [तीर] तो

मेर (भाला) छुरी चाकू आदि नाना प्रकार के तीक्ष्णधार मुखवाले शस्त्रअस्त्रोंकेप्रहारसे शरीरकेनानाभागोंमेंअनेकाकृतिके घाव उत्पन्न होते हैं उन्हें आगंतुक व्रण कहते हैं, ये व्रण पृथक पृथक संज्ञासे ६ प्रकारके १ छिन्नव्रण, २ भिन्नव्रण ३ विद्धव्रण, ४ क्षतव्रण, ५ पिच्चितव्रण और ६ घृष्टव्रण हैं,

१ छिन्नव्रणलक्षण–शस्त्रके लगनेके सीधा या तिर्छा कटे, घाव लम्बाहो, एक भाग कटकर सब गिर पड़े या न भी गिरे उसे छिन्नव्रण जानो।

२ भिन्नव्रणलक्षण–बर्छी, भाला (बाण) खड्ग (तलवार) या सींगके अग्रभाग के लगने से कोष्ठ विदीर्ण होके कुछ थोडासाही रक्त बहनेपर वह कोष्ठ (कोठे) का स्थान भर जावे और रोगीके ज्वर, दाह, तृषा, मूर्छा, श्वास, आध्मान, अरुचि रक्तनेत्र मूत्र और अधोवायुका अवरोधमुख मुलद्वार और मूत्रमार्गसे रुधिरप्रवाह, मुखमें तप्त लोहसदृशगंधि शरीर में दुर्गंधि; हृदय और शूल हो तो भिन्नव्रण जानो।

विशेषतः–यदि कोष्ठस्थानसे बहा हुआ रुधिर आमाशयमेंएकत्रितहुआहोतो मुखवमनद्वारा रुधिर गिरे, पेट अधिकफूले और शूलचले और जो वही रुधिर पक्वाशयमें इकट्ठा हुआहोतोपेट भारीहो और शरीरका तलभाग विशेष ठंडारहे ये बातेंपूर्वामृतसागरमें नहीं थी इसलिये हमनें माधवनिदानसे लिखी हैं।

३ विद्धव्रणलक्षण–जो वारीक नोंकवाले कांटे आदिसे आशय विना जो अंग छिदकर वह कांटेकी अनी उसीमें रहे या निकल जावे उसे विद्धव्रण कहते हैं।

---

१ स्थानान्यामाग्निपक्वानां मूत्रस्य रुधिरस्य च। हृदुकः फुप्फुसश्च कोष्ठ इत्य भिधीयते॥१॥ इत्युक्त कोष्ठस्थानमाधवाचार्येण.

४ क्षतव्रणलक्षण–जो बहुत कटाभी न हो और छिदाभी न हो पर छिन्न और भिन्न व्रणके लक्षणोंमें मध्यवर्तीहोतथा।शरीरमेंविषमता (टेढापन) लियेहो उसे क्षतव्रण जानो. पूर्वामृतसागरमेंइसके लक्षण नहीं लिखे हैं ।

पिच्चितव्रणलक्षण–जो अंगके गिरपडने यादब जानेकी चोटसे हड्डीसहित चिपटकर फैलजावे [चपटा होजावे]औरउससेमज्जा और रक्त बहने लगे उसे पिच्चतव्रण जानो ।

घृष्टव्रणलक्षण–जो अंगकेघषण (रगड) या, किसी प्रकारके प्रहारसे ऊपरका चर्म छिल जावे, उसमें दाह उठे लासेकेसदान कुछरक्तामिश्रितरसजलबहनेलगे उसे घृष्टव्रण जानो,

सशल्यव्रणपरीक्षा–जो व्रणकाला या धूसर; शोथितऔरछोटी छोटी फुनसियोंसे युक्त हो. बारंवार ठहरके रक्त निकले व्रणका मांस कोमल और पानीके बुलबुलेके समानऊंचा तथापीडायुक्त हो उसे सशल्यवृग जानो. अर्थात् उसके भीतर कांटा या किसी तीर आदिकी अनी रह गई है ।

कोष्ठभेदलक्षण–जोआणदिशस्त्रत्वचाकाभेदन कर नसोंको भी भेदनकरें यानभी करें औरकोष्ठस्थानमें रह जानेसेपुर्वोक्तभिन्नव्रण दर्शितउपद्रवोंको उत्पन्न करेंतो जानो कोई अनी रहगई है ।

असाध्यकोष्ठभेदलक्षण–पांडुवर्ण हो, हाथ पांवमुख और श्वास शीतल पड जावे, नेत्र लाल होआवेंऔरपेटफूलजावेतो असाध्य कोष्ठभेदजानो.सद्वैद्यकोयशाकीइच्छा होतोइसपरचिकित्सा न करे

मर्मप्रहारलक्षण–भ्रम, प्रलाप; [बकना] पतन [गिर पडना.] विचेष्टन [इधर उधर लोटपोट होना] ग्लानि [घबराहट] उष्णता शैथिल्यता मूर्छा, डकार और वातज आक्षेप आदि तीवृरोग होवें, वृणसे मांस धोतन सदृश रक्त बहे और

सब इंद्रियां अपना अपना कार्य परित्याग कर देवें तो विचारकरो कि १ मांस, २ संधि, ३ शिरा, ४ स्नायु, ५ अस्थि इनपांचोंमेंसे किसीके मर्मस्थानमें व्रण (घाव) होगया है।

२ मर्मरहितशिरादिविद्धलक्षण—जो शिरा बाण आदिसे कटगई या छिदगई हो तो बीरवहूटी के वर्णसदृश बहुतसा रक्त बहे और रक्त के बहावसे वायु कुपित होकर आक्षेपादिअनेक रोग हों तो जानो कि शिरामें मर्मस्थान छोडकर अन्त घावलगा है.

स्नायुविद्धलक्षण—घावजन्य पीडासे रोगीकेकूबड निकलआवें सर्वाङ्गउपाङ्गसहितशरीर शिथिलहोजावे सर्व, कार्य करनेसे असमर्थ होजावे अति पीडायुक्त घाव बहुतादिनोंमें भरेतो स्नायुछिदी या कटी हुई जानो.

३संधिविद्धलक्षण—शोथका बढाव, घोर पीडा, बलक्षय, गाठोंमें फूटन या सूजन और संधियोंके कार्योंका उपराम होजावेतो जानों कि शरीरकी कोई चल या अचल संधि छिदगई है।

अस्थिविद्धलक्षण—सर्वकाल वेदना होनेसे कभी और कहींभी सुख न मिले उसकी अस्थि [हड्डी] छिन गई जानो।

शिरादिमर्मस्थानलक्षण—जिस जिस स्थान में घाव लगा हो उसीके अनुसार तथा पूर्वोक्त भ्रम प्रलाप आदि लक्षणही जानो।

५ मांसमर्मविद्धलक्षण—मर्मताडितमांसकापांडुवर्ण, वर्णविपर्यय उसस्थानपर स्पर्श ज्ञानरहित होजावेतो मांसके मर्मस्थानमें चोट लगी जानो.

व्रणोपद्रव-१विसर्प, २पक्षाघात; ३ शिरास्तंभ, ४ अपतानक,

१ एक प्रकारका कीड़ा यहुंधा वर्षाऋतुमें निकलता है इसकी त्वचा लाल मखमल के समान होती है साधारण भाषामें गोकुलगाय और मारवाड प्रांत में सावन की डोकरी नामसे विख्यात है

२ माधस्त्वमेतानि विभावयेच्च लिंगानि मर्माण्यभिताडितेषु ।' इति माधवः ।

५ मोह ६ उन्माद ७ व्रणपीड़ा, ८ ज्वर, ९ तृषा, १० हनुग्रह, ११ कास, १२ वमन, १३ अतिसार, १४ हिचकी १५ श्वास और १६ कम्प ये व्रणके सोलह उपद्रव हैं ।

अग्निदग्धउत्पत्तिकारण– अग्निदग्धदोप्रकारसे होताहै अर्थात् १ अग्निसेही जलकर, २ अग्नितप्त घृतादि स्निग्धपदार्थ और लोहादि धातु पदार्थसे जलकर सो यह चार प्रकार का है अर्थात् १ प्लुष्ट, २ दुर्दग्ध, ३ सम्यग्दग्ध और ४ अतिदग्ध ।

१ प्लुष्टलक्षण– जो अंग अग्नि से जलकर कुछ औरही प्रकार का हो जावे उसे प्लुष्टदग्ध जानो ।

२ दुर्दग्धलक्षण–जले हुये अंगमें अति दाह, अति पीडा, फोडे होजा य और विलम्बसे विश्राम होता दुर्दग्ध जानो ।

३ सम्यग्दग्धलक्षण जलाहुआ अंग ताम्रवर्ण, अतिदाह और पीडायुक्त तथा स्थिर होजावे तो सम्यग्दग्ध जानो ।

४ अतिदग्धलक्षण–त्वचा और मांस सर्व दग्ध होकर शरीरसे पृथक होजावें, शिरा, स्नायु, संधिस्थानादि सर्व दग्ध होकर अंकुर शरीरमात्रमें पीडा, दाह, ज्वर, तृषा और मूर्छा होजावे, वर्णवि पर्यय होकर अंकुर (भराव खिलखसे) आवे तो अतिदग्ध जानो ।

विशेषतः-शरीर अग्निमें जलनेसे जहांतहां फूलकर पानीसाभर आता है जिसे फफोला कहते हैं ।

इति नूतनामृ० निदानखंडे व्रणशोथव्रणादिघरोगाणां लक्षणनिरूपणंनामै कत्रिंशत्तरंगः ॥३१॥

भग्नरोग, नाडीव्रणरोग,

निदानं भग्नरोगस्य यथा नाड़ीव्रणस्य च ॥

त्रैत्रामतरंगेऽस्मिन्लिख्यते हि यथाक्रमात् ॥ १ ॥

भाषार्थ—अब हम इस ३२ वें तरंग में भग्नरोग और नाडी-व्रणका निदान यथाक्रम से लिखते हैं ।

भग्नरोगोत्पत्तिकारण—यह रोग सामान्य रीति से दोप्रकारका है अर्थात् १ संधिभग्न जिसमें हड्डी जोड परसे उखड़ जाती है और दूसरा कांडभग्न जिसमें हड्डी बीचमें से टूट जाती है इनमें से प्रथम संधिभग्नके छः भेद अर्थात् १ उत्पिष्ट, २ विश्लिष्ट, ३ विवर्तित, ४ तिर्यग्गतः ५ क्षिप्त और ६ अधः है ।

संधिभग्नसामान्यलक्षण—अंग फैलाने समेटने इधर उधर फिरने उठने बैठनेमें अत्यन्त पीडा हो किसीके पास बैठना या अंगस्पर्श करना न सुहावे तो जानलो कि किसी हड्डीका जोडउखड़गया है.

१ उत्पिष्टसंधिभग्नलक्षण-दो हड्डियोंका जोड उखड़ जाने से स्थानके चहुं ओर शोथ होकर रात्रिको अधिक पीडा होतो उत्पिष्ट संधिभग्न जानो ।

विश्लिष्टसंधिभग्नलक्षण—दो हाड्डियों का जोड उखड़ जाने से उस स्थानके आसपास शोथ होकर निरंतर (रात्रिदिन) अत्यंत पीडा होतो विश्लिष्टसंधिभग्न जानो ।

३ विवर्तिसंधिभग्न लक्षण—जोड उखड हुए स्थान में सर्वदा शोथयुक्त पीडा और पार्श्वभाग (पसुली) में तीव्र वेदना हो तो विवर्तितसंधिभग्न जानो ।

४ तिर्यग्गतसंधिभग्नलक्षण—तिर्यग्गत संधिके टूट जाने या उखड जानेसे उस स्थानमें अत्यन्त तीव्र पीडा होती है ।

५ क्षिप्तसंधिभग्नलक्षण—जंघास्थलमें कभी अधिक और कभी न्यून पीड़ा होती है उसे क्षिप्तसंधिभग्न कहते हैं ।

६ अधःसंधिभग्नलक्षण—संधिकी हाड्डियों में परस्पर घर्षण और नीचेकी ओर पीडाहो उसे अधःसंधिभग्न जानो ।

कांडभग्नभेद—कांडभग्नके १२ भेदहैं अर्थात् १ कर्कट २ अश्व कर्ण ३ विचूर्णित, ४ अस्थिछल्लिका, ५ पिच्चित. ६ कांडभग्न ७ अतिपतित. ८ मज्जागत, ९ स्फुटित, १० वक्र, ११ छिन्न १२ द्विधाकर ये टूटी हुई हड्डियों के १२ भेद हैं।

१ कर्कटकांडभग्नलक्षण—दोनों ओरसे हड्डी दबकर बीचमें ऊंची होजावे उसे कर्कटकांडभग्न जानो।

अश्वकर्णकांडभग्नलक्षण—जो हड्डी चिपट या टूटकर घोडे के कानके समान होजावे उसे अश्वकर्णकांड भग्न जानो।

३ विचूर्णितकांडभग्नलक्षण—जो हाड भीतरका भीतरही चूर२ होकर हाथसे चूरा जान पडे उन्हें विचूर्णितकांड भग्न जानो

४ अस्थिछल्लिकाकांडभग्नलक्षण—हड्डी के कोई भाग का छिलका निकल जावे उसे अस्थिछिल्लिकाकांडभग्न जानो।

५ पिच्चितकांडभग्नलक्षण—जो हड्डी दबकर किसी प्रकार से पिचक जावे उसे पिच्चितकांडभग्न जानो।

६ कांडभग्नलक्षण—जिस हाडकी नली टूट जावे उसे कांड-भग्न जानो।

७ अतिपातितकांडभग्नलक्षण—सब हाड मात्र टूटकर जुदा हो जावे उसे अतिपातिता कांडभग्न जानो।

८ मज्जागतकांडभग्नलक्षण—हाड टूट जाने से मज्जा बाहर को निकल आवे उसे मज्जागतकांडभग्न जानो।

९ स्फुटितकांडभग्न लक्षण—जिस हाडके टुकडे हो जावें उसे स्फुटितकांडभग्न कहते हैं॥

१० वक्रकांडभग्नलक्षण—जो हाड किसी चोटसे टेढा होजावे उसे वक्रकांडभग्न कहते हैं।

११ छिन्नकांडभग्नलक्षण—जिस हाड के छोटे छोटे टुकडे हे जावें उसे छिन्नकांडभग्न जानो।

१२ द्विधाकरकांडभग्नलक्षण-१ भागका हाड अच्छा बचकर उसीके दूसरे भागका हाड चूरा२ होजावे उसे द्विधाकरकांडभग्न जानो. ये कांडभग्नके भेद पूर्वामृतसागर में नहीं लिखे हैं. अतएव हमने माधवनिदान से लेकर लिखे हैं।

कांडभग्नसामान्यलक्षण अंगशैथिल्यता,शोथ, ठनका,छिन्नस्था नमें दबानेसे शब्द, स्पर्श,असह्यता, सुई छेदनसदृश पीडा. अंग फडकना और सर्वत्र सुखकी अप्राप्ति हो तो हड्डी टूटी जानो.

भग्नरोगकष्टसाध्यलक्षण-रोगी स्वल्प अहारी हो, कुपथ्य करे, वातलप्रकृतिवाला हो, और ज्वर अतिसारादि उपद्रव हो जावें तो रोगीका बचना कष्टके साथ होगा ।

भग्नरोगके असाध्यलक्षण-रोगीकाकपालफूटजावे,कमरकी हड्डी टूट जावै किसी स्थानकी संधि खुल जावे,हड्डी नीचेको उतरआवै जावें पिचक जावें, ललाट,स्तन, गुदा.कनपटी पीठ और मस्तक इनमें से कोई भाग फूट जावे तो असाध्य भग्नरोग जानो,

दूषितभग्नरोगके असाध्यलक्षण-हाड जोडने के समय ठीक २ न जुडे,यदि ठीक जुडाभी हो तो यथार्थ गठन से न बांधा जावे या भली भांति बंधनेपरभी किसी प्रकार का धक्का लगजावे तथा ऐसी क्लिष्ट दशा में मैथुन किया जावे तो ऐसे कारणों के प्रसंगसे भग्नरोग दूषित होकर असाध्य होजाता है वैद्यको उचित है कि ऐसे रोगीको असाध्य जानकर छोड देवे.

भग्नरोगदशा-नाककान नेत्रकी हड्डियांकोमल होनेसेनवजाती हैं इनका नव जानाही भग्न है, नलीकी हड्डी फूट जातीहैकपाल जांघ और कूलेकी हड्डियां टुकडे २ होजातीहैं दांत टूटजातेहैं। हाथके पहुंचे. दोनों पसुली, पीठ छाती पेट गुदा और पांव इन स्थानोंमें जो गोल चक्रवत कंकणकृति चक्र हैं वेभी टूट जाते हैं

और फुन्सी की आकृति ऊंटकी गरदन के समान हो तो पित्तज उष्ट्रग्रीव भगंदर जानो।

३कफज पारिश्रावी भगंदर लक्षण–फुन्सी के स्थान में अधिक खुजाल चले, पीडा थोडी हो, फुन्सी का रंग श्वेत हो और उसमें सदा पीव बहा करे तो कफजश्रावी भगंदर जानो।

४सन्निपातजशंबुकावर्त भगंदर लक्षण- फुन्सी में अनेकप्रकार की पीडा हो, नानाप्रकार का वर्ण हो, सदैव पीव बहाकरे फुन्सी गौके थनके आकारकी हो और उसका छिद्र घोंघेके घेरके समान घुमता हुआ हो तो सान्निपातजन्य शंबुकावर्त भगंदर जानो।

५क्षतजउन्मार्गि भगंदर लक्षण–गुदाके समीप किसी प्रकारकी चोट लगकर बहुत दिनों तक कुछ उपाय न किया जावै तो वह घाव बढ़ता हुआ गुदा तक पहुंच जाता है, यदि फिर भी कुछ उपाय न करो तो उसमें कृमि पड़कर नानाप्रकार के छिद्र कर देते हैं ये लक्षण हों तो उन्मार्गि भगंदर जानो।

असाध्य भगंदर लक्षण–यह सर्वथा अति कष्टसाध्यही है तथापि त्रिदोषज और क्षतज तो महा असाध्य ही है तथा भगंदर से ही अधोवायु, मल वीर्य, मूत्र और-कीडे निकलने लगें तो वह रोगी इस रोगसे नष्ट हो जावेगा।

उपदंशरोगोत्पत्तिकारण किसीप्रकारकी हाथकी चोटलगना नख या दांत लगना, लिंगको स्वच्छता पूर्वक न धोना, हस्तमैथुनकरना मिथ्या आहार विहार करना, मैथुन करना और रोगयुक्त योनि के दोष इन कारणों से लिंग में १वात,२पित्त ३ कफ, ४ रक्त और ५ सन्निपात ये पांच प्रकार के उपदंश होते हैं।

१वातोपदंशलक्षण-लिंगेन्द्रियमें सुईचोंटनके या चीरनेकसमान पीडाहो लिंग फरके और श्यामवर्णके छालेहों तो वातोपदंशजानो

२ पित्तोपदंशलक्षण—लिंगमें दाह हो और पीले रंग के बहुत बहने वाले छाले हों तो पित्तका उपदंश जानो।

३ कफोपदंशलक्षण—लिंगमें खुजाल चले, सोथहो, श्वेत रंगके बडे बडे छाले हों और उनमें से सर्वदा गाढा पीव बहता रहे तो कफोपदंश जानो।

४ रक्तोपदंश लक्षण—जिसके छाले मांस के सदृस हों उसे रक्त का उपदंश जानो, यह एक पित्तोपदंशका ही भेद है।

सन्निपातोपदंशलक्षण—नाना प्रकारकी पीडा, नाना प्रकार की पीवका बहाव और पूर्वोक्त दोषों के समस्त लक्षण हों तो सन्निपातोपदंश जानो।

उपदंशके असाध्य लक्षण-लिंगका मांस बिखर जावे, कीडे पड जावे, सर्व लिंग गलजावे, केवल अंडकोषमात्र रहजावे तो असाध्य उपदंश जानो, तथा यह रोग होने पर सावधानी से यत्न न करके विषयासक्तही बना रहे तो कुछ दिनों में लिंग सूजकर कीडे पड जावेंगे और पककर दाह होगी तब लिंग गलकर गिर जाने से वह रोगी मृत्यु को प्राप्त होजावेगा।

लिंगवर्तिरोगलक्षण—लिंगके अग्रभागपर चमडेके नीचेकोसंधिमें धान्य के अंकुर या मुर्गे की चोटी या कुल्थी कमलपत्र के सदृश मांसके अंकुर निकलकर दाह और सुई चुभनेके समान पीडाकरते हैं, प्यास लगती और सुई इन्द्रिय चूने लगती है इसे लिंगवर्ति तथा लिंगार्श भी कहते हैं।

विशेषतः-सुश्रुतमें लिखाहै कि उपदंशरोग स्त्रियों को होता है परन्तु उन्हें मासिक रजोधर्म होनेसे पुरुषों के समान प्रत्यक्ष प्रगट होता नहीं दिखाई देता है।

शूकरोगोत्पत्तिकारण-जोमूर्खमनुष्यअविचारसे लिंग वृद्धिकेहेतु

१ यह वही रोगहै जो लोकमें गर्मी और उंदूभाषामें आतशकके नाम से है॥

औषधियोंकी पट्टी तथा लेपादि करते हैं. उन्हें लिंगमें १८ प्रकारका शूकरोग होता है अर्थात् १ सर्षपिका, २ अष्ठीलिका, ३ ग्रंथित; ४ कुंभिका, ५ अलजी ६ मृदित ७ सम्मूढपिडिका. ८ अवमंथ ९ पुष्करिका १० स्पर्शहानि ११ उत्तमा १२ शतपोनक १३ त्वक्पाक १४ शोणितार्बुद १५ मांसार्बुद १६ मांस पाक १७ विद्रधि और १८ तिलकालक ।

१ सर्षपिका लक्षण–लिंग पर किसी प्रकारकी सरसोंके समान श्वेत फुन्सियां हों उसे सर्षपिका जानो ।

२ अष्ठीलिका लक्षण–लिंग पर किसी प्रकार से कडी और पीडा युक्त फुन्सियां हों उसे अष्ठीलिका जानो ।

३ ग्रंथितलक्षण–लिंगपर गठानसी होजातीहै उसे ग्रथितजानो

४ कुंभिकालक्षण–लिंगपर जामुनकी गुठली सदृश फुन्सी हो जावे उसे कुंभिका जानो ।

५ अलजीलक्षण–लिंगपर जामुनकी गुठली सदृश फुन्सी हो उन्हें अलजी जानो ।

६ मृदितलक्षण–लिंगको शूकरोग की दशामें दवाने से सूजन हो आती है उसे मृदित जानो ।

७ सम्मूढपिडिका लक्षण–लिंग दोनों हाथसे दवाया जावे तो उससे फुन्सियां होजाती हैं उन्हे सम्मूढपिडका जानो ।

८ अवमथलक्षण–लिंगमें किसी कारणसे बडी २ सघन फुन्सियां होकर कफ रक्त विकार से पीडा और रोमांच होता है उसे अवमंथ कहते हैं ।

९ पुष्करिका लक्षण–लिंगकी सुपारी पर रक्त पित्त प्रकोप से बहुत मिलीहुई फुन्सियां होजाती हैं उन्हें पुष्करिका कहते हैं ।

१० स्पर्शहानि लक्षण–जो इन्द्रिय पीडा के मारे हाथ आदि का स्पर्श (छूना) न सह सके उसे स्पर्शहानि कहते है ।

११ उत्तमालक्ष—अजीर्ण तथा रक्तपित्त के प्रकोप से इन्द्रिय पर मूंगया उर्दकेसमान लाल फुन्सियांहो आतीहैं उन्हें उत्तमा कहतेहैं

१२ शतयोनकलक्षण—रक्तवात के कोपसे लिंगपर अनेक छिद्र पड जाते हैं उन्हें शतयोनक कहते हैं।

१३ त्वक्पाक लक्षण—तीनों दोषोंके प्रकोपसे इन्द्रिय पककरदाह होती और उसकी पीडासे शरीरमें ज्वरहोताहै,उस त्वक्पाककहतेहैं

१४ शोणितार्बुद लक्षण—इन्द्रिय पर काली या लाल फुन्सी हो कर पीडा होती है उसे शोणितार्बुद कहते हैं।

१५ मांसार्बुद लक्षण-इन्द्रिय पर कठोर फुन्सी होती हैं सो मांसार्बुद जानो।

१६ मांस पाक लक्षण—त्रिदोष के प्रकोप से इन्द्रिय का मांस बिखर के पीडायुक्त हो जाता है उसे मांस पाक जानो।

१७विद्रधिलक्षण—सन्निपात के प्रकोप से लिंगपर जो फुन्सियां उठती हैं उन्हें विद्रधि कहते हैं।

१८ तिलकालक लक्षण—त्रिदोप के प्रकोपसे इन्द्रिय पर काली या लाल तथा अन्य रंगोंकी विषहरी फुन्सी होकर पकती और उन में से पीव बह कर इन्द्रिय गल जाती है उसे तिलकालक कहते हैं।

शूकरोगकेअसाध्यलक्षण—१ मांसार्बुद, २ मांस पाक, ३ विद्रधि और ४ तिलकालक ये चारों पिछले शूकरोग उत्पन्न हुए सो फिर शरीर के साथ ही नष्ट भी होते हे असाध्य हैं परन्तु पहिले १४ शूकरोग कष्ट साध्य होते हैं।

इतिनूतनामृतसागरे निदानखंडे भगंदरोपदंशलिंगवर्ति शूकरोगाणां लक्षणनिरूपणं नाम त्रयस्त्रिंशस्तरंग. ॥३३

कुष्ठरोग

निदानं कुष्टरोगस्य विवर्णो येन जायते।
नराणां वेदरामेऽस्मिन् तरंगे वर्ण्यते मया ॥१॥

भाषार्थः—अब हम इस ३४ वें तरंग में मनुष्य के वर्ण विदूषक कुष्ठरोग का निदान यथाक्रम से वर्णन करते हैं।

कुष्ठरोगोत्पात्ति कारण—विरुद्ध अहार विहार, पतली चिकनी वस्तुभक्षण, मलमूत्रावरोध, अमितापन विशेष भोजन शीतोष्णका विचार न रखना, श्रम, घाम में फिरना, भय धूप, श्रमकी विकलतापर तत्काल जलपान, अजीर्ण पर भोजन वमन विरेचनपर कुपथ्य नवीन जलपान दही मछली खटाई नमक उर्द मूली तिल गुड औरपिसा हुआ अन्न भक्षण, दिन को निद्रा, स्त्रीसंग ब्राह्मणादिका तथा नाना प्रकार के पापोंसे मनुष्यके तीनों दोष कुपितहोकर सप्त धातुओं के बिगाडके अठारह प्रकारके कुष्ठ उत्पन्न करते हैं

अष्टादशकुष्ठभेद—१कापालिक, २ औदुम्बर. ३ मंडल ४ ऋक्षजिह्व ५ पुंडरीक, ६ सिध्म (विभूति तथा सेहुआ) ७ काकण, ८ एक कुष्ठ, ९ गजचर्म, १० चर्मदल ११ किटिभ १२ वैपादिक १३ अलस, १४ दाद, १५ पामा, (खुजली) १६ विस्फोटक, १७ सातारु और १८ विचर्चिका (ब्योची) इनमें से पहिले ७ महाकुष्ठ और पिछले ११ साधारण जानो।

कुष्ठरोगपूर्वरूप—जिस स्थानका चर्म अतिचिकना या खरदराहो विशेष पसीना निकले या निकले नहीं, रंग बदल जावे, दाह, खाज शून्यता; सुई, चोंटनेकेसदृशपीड़ा, ददोरा, विनापरिश्रमथकावटऔर व्रण होजावे व्रणमें शूल उठे व्रण शीघ्र पैदा होकर बहुत कालतक रहे व्रण भर आवे और उनके मिटजाने पर भी वह स्थान खरदरा बना रहे, उसी पूर्व स्थान पर सूक्ष्म कारण से हीं पुनः व्रण हो

आवे, रोमांच होवे और रक्त काला पड जावे तो जानो कि इस स्थान पर कुष्ठरोग उत्पन्न होगा ।

कुष्ठसामान्य लक्षण—पूर्व जन्म के पापों से मनुष्यकीबुद्धिभ्रंश होकर कुपथ्य कराती है इस कुपथ्य से त्रिदोष कुपित होकर शरीरकी नसोंमें प्राप्त होकर शरीर की त्वचा रक्त मांसको दूषित करके त्वचा का रंग बदल देते हैं सो कुष्ठ कहाता है ।

विशेषतः-बात प्रकोपसे कापालिक, एककुष्ठ, पित्तप्रकोपसे औदुम्बर, कफ प्रकोपसे मंडल, बात पित्त प्रकोपसे विर्चिका.ऋक्षजिह्व बात कफ प्रकोपसे गजचर्म; किटिभ, सिध्म,अलस,वैपादिक,पित्त कफ प्रकोपसे दाद, सतारु,पुंडरीक,विस्फोटक पामा.च दल,और तीनों दोषोंके प्रकोपसे काकडकुष्ठकी उत्पत्ति होती है ।

१ कापालिक लक्षण—शरीरकी त्वचा, काली. लाल फटी हुई रूखी; कठोर ,सूक्ष्म होकर अधिक पीडा हो उसे कापालिक कुष्ठ जानो,यह कुष्ठ विषम इसलिये कठिनाई से दूर होवेगा ।

२ औदुम्बर लक्षण—त्वचामें दाह, ललाई और खुजाल विशेष हो रोम पीले पड जावें और त्वचा गूलर के पक्के फल सदृश होजावे उसे औदुम्बर कुष्ठ कहते हैं ।

३ मंडल लक्षण—त्वचा श्वेत या लाल या चिकनी हो जावे.

ऋक्षजिह्वलक्षण—जो कुष्ठ किनारों पर लाल और बीचमें पीला पन लिये काला हो, कर्कश और पीडायुक्त हो तथा रीछकी जिह्वा के आकार का हो सो ऋक्ष जिह्व कुष्ट कहाता है ।

५ पुंडरीकलक्षण—त्वचा कमलकी पखुरी सदृश ललाई लिये हुए श्वेतवर्ण की हो उसे पुंडरीक कहते हैं ।

६ सिध्मलक्षण-श्वेत या ताम्रवर्ण और सूक्ष्म हो जावे, खुजाल चलै और कुष्ट क्रमशःफैलता जावै उस सिध्मकुष्ट जानो ।

७ काकलक्षण—त्वचा गुंजाके समान बीचमें काली और आस पास लाल हो, पके नहीं पर पीडा अधिक हो तो काकणकुष्ठजानो

८एककुष्ठ लक्षण—त्वचा में पसीना न आवे और मछली के टुकडे के समान बडी होजावे सो कुष्ठ कहाता है।

९ गजचर्मकुष्ठलक्षण त्वचा हाथी के चमडे के समान मोटीहो जावे उसे गजचर्म कहते हैं।

१० चर्मदलकुष्ठलक्षण—त्वचा का वर्ण लाल हो, शूल खाज और फोडों से पूरित हो, फट जावे और वस्त्रका स्पर्श भी सहन न कर सके उसे चर्मदलकुष्ठ कहते हैं।

११ किटिभलक्षण—त्वचा सूखे हुए व्रण के समान काली और कठोर हो उसे किटिभकुष्ठ जानो।

१२ वैपादिकलक्षण—हाथ पांवका चर्म फटकर दरार पड जावें और पीडा देवें उसे वैपा िक (बिवाई)कहते हैं।

१३ अलसलक्षण—त्वचा में खुजाल युक्त बड़ी बड़ी फुन्सी हो जाती हैं उन्हें अलसकुष्ठ कहते हैं।

१४ दद्रुकुष्ठलक्षण—त्वचापर ऊंची, लाल खुजाल युक्त फुन-सियां होजाती है उन्हें (दाद) कहते हैं. इसीका एक भेद कच्छदाद है जो हाथ- पांव कुले और कांखों में होती है।

१५ पामालक्षण—त्वचा पर छोटी छोटी खुजाल युक्त चेपऔर दाह सहित लाल और अनेक फुन्सियां होती हैं उसे पामा (खुजली) कुष्ठ जानो।

१६ विस्फोटक लक्षण—त्वचा में काली लाल तथा छोटी फुन्सियां हो जाती है उन्हें विस्फोटक कुष्ठ कहते हैं।

१७ सतारुकुष्ठलक्षण—त्वचा में लाल, काली और दाह युक्त फुन्सियां होवें उसे सुतारुकुष्ठ जानो।

१८ विचर्चिकालक्षण–हाथ पांवकी त्वचापर खुजालयुक्त काली तथा चेपयुक्त फुन्सियां हों उन्हें विचर्चिका कहते हैं ।

रसधातुगतनिर्णय रसधातुगत कुष्ठसे कुरूप, शरीर रूखा, गर्म शून्य, रोमांच और पसीनेकी विशेषता होतीहै, रक्तगत कुष्ठ से शरीरमें खाज और पीवकी विपुलता होतीहै, मांसगत कुष्ठसेव्रणकी वृहत्ता, मुख सूखना, कठोर फुन्सियां होना, सुई चुभाने के सदृश पीडा, चर्म फटना और घावकी अचलता होती है, मेदोगत कुष्ठसे हाथोंका टेढापन चलनेमें अशक्ति, अंगोंकाफूटना, घावों का फैलाव तथा रसरक्तमांसगत कुष्ठके लक्षण भी होते हैं, अस्थि और मज्जागतकुष्ठसे नाक बैठजाना, नेत्रोंमेंललाई, स्वरभंग और व्रणोंमें कीडे पड जाते हैं वीर्यगत कुष्ठसे पूर्वोक्त छः हों धातुगत कुष्ठ के लक्षण होते हैं, जो पुरुषके वीर्य और स्त्रीके रज दोनों में कुष्ठ की प्रविष्टि हो तो उनके संतान भी कुष्ठयुक्तही होवेंगे ।

कुष्ठसाध्यलक्षण जो कुष्टवातकफसे होकर त्वचारक्त और मांसमेंही रहै तो साध्य, द्वन्द्वजन्य होकर मेदतक होजावे तो याप्य और त्रिदोषजन्य होकर मज्जातक पहुंचे कृमि पडजावें, मंदाग्नि और दाह होजावे तो असाध्य जानो. तथा जो कुष्ठ वीर्य तक जा पहुंचे बिखर जावे चूने लगे स्वर भंग होजावे और वमन विरेचनादिक पंचकर्म भी अपना प्रभाव न दिखा सकें उसे महा-असाध्य जानो; यह गलितकुष्ठ प्राणनाशकही है ।

कुष्टभेद श्वित्र तथा किलासलक्षण–श्वित्र श्वेत और किलास कुछ कुछ लाल होता है, ये पकने पर बहते नहीं, रक्त मांसऔर मेदमें रहते हैं पर विशेष पीडा नहीं देते ये दोनों त्रिदोषजही होते हैं इनकी सम्प्राप्तिकारण कुष्टके समानही जानो ।

श्वित्रकिलासकेसाध्यासाध्यलक्षण–श्वित्रमें रोम श्वेत होजावें,

उनकी श्वेतता भी महीनही हो, चिह्न एक दूसरेसे न मिलेहों नवीन हों. अग्निदग्धसे उत्पन्न न हुआ हो तो यह श्वित्र साध्य तथा जो, योनी, लिंग, हथेली, तलुवे, ओष्ठमें हुआ हो प्राचीन (बहुकालिक) हो तो असाध्य श्वित्र जानो और किलास कुष्ट तो सर्वथा असाध्यही होता है ।

स्पर्शजन्यरोग इस प्रसंगपर स्पर्शसे उत्पन्न होने वाले रोग जैसे १ कुष्ट, २ शोष ३ ज्वर, ४ राजरोग, ५ नेत्रपीडा (आंख आना) ६ शीतलाभी लिखते हैं, ये छःहों रोगवाले रोगीके शरीरसे शरीर भिलाने एक ठांव भोजन करने, एक ठांव सोने, एक दूसरेके वस्त्र बदलकर पहिनने; दूसरेका लगाया हुआ अवशिष्ट चंदनादि लेप लगाने और मैथुन से निरोगी को भी उत्पन्न होजाते हैं, इसलिये सबको इनका बचाव रखनाही योग्य है ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे कुष्ठरोगलक्षण निरूपणं नाम चतुस्त्रिंशस्तरंगः ॥ ३४

शीतपित्त, उदर्द, कोढ. उत्कोढ अम्लपित्त विसर्परोग

शीतपित्तादिरोगाणामम्लपित्तविसर्पयोः ।
पञ्चरामामिते भंगे निदानं लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः—अब हम ३५ वें तरंग में शीतपित्त. उदर्द कोढ, उत्कोढ अम्लपित्त और विसर्प रोगोंका निदान क्रमानुसार लिखते हैं,

शीतपित्तोदर्द कोढोत्कोढरोगोत्पत्तिकारण—शीतल पवन के स्पर्शसे कफ और वात कुपित होके पित्तसे मिलती हुई भीतर रक्त और बाहर चर्ममें फैलकर शीतपित्त, उदर्द कोढ और उत्कोढको उत्पन्न करते हैं ।

तथा पूर्वरूप—तृषा, अरुचि, उबकाई मोह (घबराहट) अंग में शैथिल्यता भारीपन और नेत्रों में ललाई ये लक्षण दृष्टि पडें तो विचार लो कि अब उक्त रोग उत्पन्न होनेवाले हैं ।

शीतपित्तलक्षण–चर्म बर्रैयों के काटने के समान ददोरे होकर उनमें खुजाल; सुई चुभने की सी वेदना, वमन, ज्वर और दाह हो तो उसे शीतपित्त जानो इसमें वादी प्रधान है ।

उदर्दलक्षण–जो ददोरे बीचमें गहिरे, किनारोंपर ऊंचे, ललाई युक्त और खुजाल सहित हों उन्हें उदर्दरोग जानो, यह रोग शिशिर ऋतुमें कफकी विशेषता से होता है ।

कोढलक्षण–आतेहुए वमनको रोकनेसे पित्त कफ कुपित होकर त्वचा पर खुजलयुक्त लाल लाल ददोरे उत्पन्न करते हैं उन्हें कोढ़ कहते हैं ।

उत्कोढलक्षण–जो यही कोढ़ विशेष कालपर्यंत रहे तो उसी को उत्कोढ कहते हैं ।

अम्लपित्तसामान्यकारण–रूखी, खट्टी कटु, उष्ण वस्तुओं के लक्षणसे पित्त कुपित होकर अम्लपित्तरोग को पैदा करता है ।

अम्लपित्तरोगोत्पत्तिलक्षण–अन्न न पचे बिना श्रम थकावटहो वमन हो खट्टी डकार आवें, शरीर भारीहो हृदय तथा कंठमेंदाह हो और भोजन पर अरुचि हो तो अम्लपित्त प्राप्त जानो, यह रोग १ ऊर्ध्वगामी २ अधोगामी दो प्रकार का है ।

ऊर्ध्वगामीअम्वलपित्तलक्षण–जो हरा, पीला, नीला, काला निर्मल तथा मांसजलसदृशाचिकना, दृढ कडुवा, खारी, तीखाकफयुक्त और बहुत सी वमन करे तो मुखसे निकलने वाला अम्लपित्त जानो

अधोगामीअम्लापित्तलक्षण–नाना प्रकार के वर्णयुक्त मल उतरे दाह, मूर्छा, वमन और मोह होवें हृदय में पीडा शरीरमें ददोरे शरीर में ज्वर, भोजन में अरुचि, कंठ, कुक्षि हृदय, हाथ और पांवमें दाह होकर बहुत डकार आवें तो उस मूलद्वार से निकलने वाला अम्लपित्त जानो ।

वातयुक्ताम्लपित्तलक्षण–शरीर में कंप, मूर्छा, प्रलाप, चिमचिमाहट, पीड़ा, शूल, मोह और रोमहर्ष होकर अंधेरा तथा चक्कर आवें तो अम्लपित्त में वातका संसर्ग जानो ।

कफयुक्ताम्लपित्तलक्षण–थूकमें कफ, शरीरमें भारीपन अरुचि, ठंड, वमन, निस्तेज (कांतिरहित) निर्बलता, खुजाल होकर निद्राकी बहुतायत हो तो अम्लपित्तमें कफका संसर्ग जानो ।

अम्लपित्तसाध्यसाध्यलक्षण–यहरोग नवीन दशामें साध्य मध्य दशामेंयाप्य और प्राचीनदशामें कुपथ्य होनेसे असाध्य होजाताहै.

विसर्परोगोत्पत्तिकारण–नोंन खटाई और उष्ण वस्तुके विशेष भक्षणसे १ वातज, २ पित्तज ३ कफज ४ सन्निपातज ५ वातपित्तज, ६ वातकफज, और ७ कफपित्तज, एवं सात प्रकार के विसर्परोग उत्पन्न होते हैं ।

विसर्परोगसामान्यलक्षण–उपरोक्त कारणों से त्रिदोष कुपित होकर शरीर के रक्तादिसप्त धातुओंको दूषितकरकेत्वचापर छोटी छोटी फुन्सियों के मण्डलको फैला देते हैं इसालिये इस रोग को विसर्परोग कहते हैं ।

१ वातविसर्पलक्षण–अपने कारणोंसे वात कुपित होकरशरीरमें कहीं भी छोटी२फुन्सिय उत्पन्न करता है तब शरीरमें वातज्वर के समस्त लक्षण, शोथ, पीडा और खुजाल होकर वे फुन्सियां फटने लगती हैं ये लक्षण हो तो वातका विसर्प जानो ।

२ पित्तजविसर्पलक्षण–स्वकारणों से पित्त कुपित होकर शरीमें छोटी बडी, लाल फुन्सियां करके फैला देता है तब शरीर में पित्तज्वर के समस्त लक्षण होते हैं उसे पित्तविसर्प कहते हैं ।

३ कफजविसर्पलक्षण–स्वकारणीयकुपित कफ शरीर में छोटी मोटी खुजालयुक्त तथा चिकिनी फुन्सियों को फैलाकर कफज्वर के सर्व लक्षण दर्शाता है उसे कफविसर्प कहते हैं ।

४ सन्निपातजाविसर्पलक्षण-स्वकारणीयकुपितसन्निपात शरीर में छोटी बडी तीनों दोषोंके लक्षणयुक्त फुन्सियां पैदा हो और फैलें और सन्निपात ज्वरके लक्षण होंतो उसे सन्निपात विसर्प जाने,

वातपित्तजाग्निविसर्पलक्षण-स्वकारणों से वात पित्त कुपित होकर शरीरमें छोटी बडी अग्निकेवर्णसदृश लाल फुनसियांपैदा करके फैला देते हैं तव शरीरमें वात पित्त ज्वर लक्षण वमन मूर्छा अतिसार तृषा भ्रम, अंगपीडा, हडफूटन, अंधेरी, अरुचि, दाह श्वास, हिचकी विकलता होतो और विसर्पस्थानका चर्म काला नीला अथवा लाल होजाता, संज्ञा और निद्राका भाव रहता और मन देहादि बिगड जाते हैं ये लक्षण हों तो पित्त वातजाग्निविसर्प जानो। यह महा असाध्य है।

६ वातकफजग्रंथिविसर्पलक्षण-विशेषररक्तवाले मनुष्यका कफसे सूखाहुआ वायुकुपित होकर कफ और त्वचा, शिरा, स्नयुम।सगत रक्तको दूषित करके शरीरपर लम्बी छोटी, गोल, मोटी खरखरी और लाल आदि गठानों की मालासी पैदा करताहै तव रोगीको ज्वर, श्वास, कास, अतिसार, मुखशोष, हिचकी, मोह, वांति मूर्छा विवर्णता, अंगफूटन और मंदाग्नि ये विकार होते हैं ये लक्षण हों तो वातकफजग्रंथिविसर्प जानो।

७ कफपित्तजकर्दमविसर्पलक्षण-स्वकारणीयकुपित कफपित्तसे कर्दमविसर्प उत्पन्न होकर शरीरमें जकडाव, निद्रा तंद्रा शिरोरुक शौथिल्यता, विकलता, प्रलाप अरुचि भ्रम मन्दाग्नि मूर्छा हड फूटन तृषा भारीपन आममिश्रितमल नासिकादि छिद्रोंकापकाव सर्व शरीरमें काली लाल मैली चिकनी भारी शोथयुक्त विशेष पीव युक्त फुन्सियां होकर फैलना, कम्प आना, शरीरकी नसों का निकलना और मृतकके समान दुर्गंधि का आना ये लक्षण होजाते हैं उसे कर्दमविसर्प कहते हैं।

क्षतजविसर्पलक्षण–शस्त्रादिकी चोट लगने से बात कुपित होकर रक्त औरपित्तको बिगाडदेताहै इसलिये शरीर में कुल्थीकेसमान फुनासियां उत्पन्नहोकरपश्चात्वही फुन्सियां फोडेकी आकृतिमेंहो जातीहै तब फुनासियोंमें शोथ शरीरमें ज्वर और काला रक्तपड जाता है ये लक्षण हों तो क्षतज (चोट लगनेका) विसर्प जानो

विसर्पोद्रव-रोगीके शरीरमें ज्वर अतिसार वमन तृषा अरुचि साध्य सन्निपातजऔर क्षतज तथा काले रंगकापित्तजाविसर्पअसाध्य और मर्मस्थानमें उत्पन्न हुआ विसर्प अतिकष्टसाध्य होता है

इति नूतनामृतसागरे निदानखंड शीतपित्तोदर्दकोठाकादम्लपित्तरोगाणं लक्षण निरूपणं नाम पंच त्रिंशस्तरंग: ॥ ३५ ॥

स्नायुरू विस्फा टक मसूरका फिरंगवात

निदानं लिख्यते स्नायु विस्फोटकं मसूरिका
फिरंगेवातरोगाणां भंगे सरधनंजयः ॥ १ ॥

भाषार्थ–अब हम इस छत्तीसवें तरंगमें स्नायुक विस्फोटक मसूरिका और फिरंगवात रोगोंका निदान यथाक्रमसे लिखतेहैं

स्नायुरोगोत्पत्तिकारण-मलीनजलपानऔर दुष्टान्न खानेसेवायु कुपितहोकर हाथया पांवके किसी भागमें फफोलायाशोथउत्पन्न करके उसे फोड डालताहै तब उस स्थानकी नसोंको कुपित पित्त सुखाकर तांतकेसमान तारको उत्पन्नकरता और कुपित वायु को बढाताहै तिससेंइसस्नायुरोगवाला रोगीअत्यंत क्लेशगृस्तरहताहै

जब तक वह धागा (तार) उस स्थान से समस्त बाहर न निकले तब तक वैद्य उसे स्नायु तथा लोकमें नहरुआ और मारवाड़ देशमें माला रोग कहते हैं।

विस्फोटकरोगोत्पत्तिकारण- कडुवी, खट्टी तीखी, उष्ण दाह कारक, रूखी, खारी वस्तुके विशेषसेवन, अजीण भोजनपर भोजन करने धूपमें फिरन और ऋतुके विपर्ययेसे तीनों दोषकुपितहोकर शरीरकी त्वचा में प्राप्त होते हैं तब रक्त मांस आर अस्थि को दूषित करके प्रथम ज्वर और फिर उसी ज्वरके साथही शरीरमें भयंकर विस्फोटक रोगके फोडोंको उत्पन्न करते हैं।

विस्फोटकसामान्यरूप- शरीरमें कहीं कहीं अथवा सर्वत्र रक्त पित्तसे तथा अग्नि से जलान के समान फफोले होजाते हैं उन्हें विस्फोटक रोग जानो।

१ वातजाविस्फोटकलक्षण—फोडोंमें पीडा शरीर में ज्वर तृषा हडफूटन शिरोग्रह और फफोलों का रंग काला सा हो तो वातजविस्फोटक जानो।

२ पित्तजविस्फोटकलक्षण—शरीर में दाह ज्वर पीडा तृषा फफोलोंका पकावतथा बहाव और वर्ण नारंगी (संतरा) केसमान हो तो पित्तका विस्फोटक जानो।

३ कफजाविस्फोटकलक्षण—शरीरमें वांति अन्नपर अरुचि भारीपन खुजाल व्रणोंकी कठोरता पांडुवर्ण निर्वेदना और विलम्बसे पकाव होतो कफजाविस्फोटक जानो।

४ द्वंद्वजाविस्फोटक—वातपित्तजविस्फोटकमें तीव्र वेदना होतीहै
५ कफपित्तजविस्फोटकमें—खाज दाह ज्वर और वांति होती है
६ वातकफजविस्फोटक में— खाज आलस्य भारीपन होता है

७ सन्निपातजाविस्फोटकलक्षण- फफोले बीचमें गहरे किनारोंपर ऊंचे कठोर और अल्पपाकी हों शरीरमें दाह, तृषा मोह, वांति मूर्च्छा वेदना ज्वर प्रलाप कम्प और तंद्रा ये लक्षण हों तो त्रिदोष का विस्फोटक जानो।

८ रक्तजविस्फोटकलक्षण—जो फफोले घुंघची (गुंजा) के समान हों उसे रक्तजविस्फोटक जानो इसके कारणभी पित्तजविस्फोटक के समानही होते हैं, यह अनेक यत्नोंसे भी नहीं मिटता।

१ विस्फोटकउपद्रव—इस रोग में हिचकी श्वास अरुचि तृषा आलस्य शरीर में वेदना विसर्पज्वर और उबकाई आना ये उपद्रव हैं

विस्फोटकसाध्यासाध्यलक्षण—एकदोषजविस्फोटकसाध्य द्वंद्वज कष्टसाध्य और त्रिदोष तथा उपद्रवयुक्तहो उसे घोर असाध्यजानो

मसूरिकारोगोत्पत्तिकारण—कढु, खट्टा, नोंन खारा, विरुद्ध भोजन दुष्टान्न मटरका साग खाने, भोजन पर भोजन करनेजल पवनके विकार तथा सूर्यादि ग्रहोंके प्रकोपसे तीनों दोष कुपित होकर रक्त के संयोग से मसूराकृति फुन्सियां उत्पन्न करते हैं इसे वातजविस्फोटक जानो।

मसूरिकापूर्वरूप—ज्वर, कडु अंगमर्दन अरुचि चित्त भ्रम त्वचा पर शोथ नेत्रमें ललाई होकर शरीर का वर्ण विगड जावे तो जानो कि इसे मसूरिका निकलेगी।

१ वातजमसूरिकालक्षण—मसूरिका की फुन्सियां कालापनलिये लाल रूखी कठोर तीव्र पीडायुक्त और विलम्बसे पकनेवाली हो संधि हाड और अंगुलियों के पेरोंमें फूटन हो शरीरमें कास कम्प विकलता तृषा और अरुचि हो तथा जीभ तालु और ओष्ठ सूख जावें तो बादीकी मसूरिका जानो।

२ पित्तज मसूरिकालक्षण—जो लाल पीला श्वेत कोमल शीघ्र पकनेवाली पीडायुक्त फुन्सियांहों तो पित्तसे उत्पन्न हुई मसूरिका जानो इसके रोगी की प्यास दाह अरुचि मुखनेत्रोंको पकना तीव्र अन्न न पचना और फूटा हुआ मल होना ये लक्षण होते हैं।

१ इनमें विस्फोटकरोग लोक में शीतला माता दवा आदि नाम से प्रख्यात और मसूरिका बोहरी माता यां छोटी माता के नाम से प्रख्यात हैं।

३ रक्तजमसूरिकालक्षण–इसके लक्षणभी पित्तजा के समान ही होते हैं केवल इसमें अंग फूटन विशेष होती है।

४ कफजामसूरिकालक्षण–रोगी के मुखसे कफ गिरे, अंग गीला सा रहे सिरमें पीडा हो शरीर भारी हो, अरुचिहोउबकाई, तंद्रा आलस्य हो, श्वेत, चिकना अति मोटा खाज मंद वेदना युक्त और चिरपाकी फुंसियां हो तो कफकी मसूरिका जानो।

५ त्रिदोषजालक्षण–जो नीले रंगकी चिपटी हुई बीचमें गहरी पीडा युक्त. बहुत दिनों में पकने वाली फुंसियां हों जिनमें से दुर्गंधित पीव बहता रहै उसे त्रिदोषज जानो।

६ चर्ममसूरिकालक्षण–कंठ रुक जावे. अरुचि. तंद्रा. प्रलाप. और विकलता हो तो मसूरिका होती है।

७ रोमांतिकमसूरिकालक्षण–जो रोम कूपके समान ऊंचा लाल कास और अरुचियुक्त फुंसियां हों तोरोमांतिक मसूरिकाजाने इनके प्रथम ज्वर आताहै और यहकफ पित्तके बिकारसेहोतीहैं

८ सप्तधातुगतमसूरिकालक्षण–जो पानी के बुलबुलों केसदृश फुंसियां पैदा हों और फूटने पर पानी निकले तो रसगत ,जो लाल, शीघ्रपाकी, पतली त्वचा वाली, अति दोषयुक्तफुंसियों के फुटने पर रक्त बहे तो रक्तगत, जो कठोर, चिकनी, मोटी त्वचा वाली, चिरपाकी फुंसियां शरीर में शूल,विकलता, खाज ,मूर्च्छा दाद और तृषा करें तो मांसगत, जो गोल कोमल कुछ ऊंची घोर ज्वरयुक्त चिकनी और बडी२ फुंसियां, शरीर में पीडा. विकलता और संताप करें तो मेदागत, जो छोटी२ शरीरकेवर्ण समान, रूखी चिपटी कुछ ऊंची फुन्सियां होकर मोह, पीडा विकलता, मर्मस्थान पर छेदने की सी पीडाऔर हाडों में भौरेके काटने की सी वेदना हो तो अस्थि तथा मज्जागत और पकने के समान चिकनी फुन्सियां होकर पीडा आलस्य बिकलता

मोह, दाह और उन्माद हो तो शुक्रगत मसूरिका जानना चाहिये

मसूरिकासाध्यासाध्यलक्षण–रक्त पित्त, कफ और कफ पित्तजा तथा रक्तगत मसूरिका साध्य, बात पित्तजा और बात कफजा को कष्ट साध्य तथा त्रिदोषजा मेद अस्थि मज्जा और शुक्रगता मसूरिका को असाध्य जानो, जो मसूरिका वाले रोगीको कास हिचकी, मोह, तीव्र ज्वर, प्रलाप. विकलता, मूर्छा, तृषा दाह और चक्कर आके मुख से रक्त गिरे. कंठ से घुर घुर शब्द और श्वास बहुत चलै तो असाध्य मसूरिका जानो।

मसूरिकाके उपद्रव–मसूरिका निकलने पर रोगी के पांव, जांघ पहुंचे और कन्धोंपर शोथ आजावै तो यह दुश्चिकित्स्य दारुणहैं

फिरंगबातरोगोत्पत्तिकारण–उपदंश रोगयुक्ता स्त्रीसेमैथुनकरने सउपदंश रोगीके मूत्रपर लघुशंका करनेसे उपदंश रोगीके साथ भोजनादि संसर्ग से बात कुपित होकर फिरंग बातको पैदाकरता है, अथवा क्षीण पुरुष अत्यन्त मैथुन करे तो त्रिदोष कुपित होकर आगन्तुक संज्ञक फिरंगबातको उत्पन्न करते हैं।

फिरंगबातसामान्यलक्षण–१ जो शरीरमें चींटी काटनेके सदृश ददोरे आकर पीठ और जांघमें पीडा तथा शोथ हो तो जानो कि अभी फिरंगवात शरीरकी संधि और नसोंमें प्रवेश हुआ है, २ जो लिंगेन्द्रिय पर थोडी फुन्सियां और फटने के चिन्ह हों तो जानो कि फिरंग बात त्वचा परही है ३ जो ये सब लक्षण होकर बहुत काल तक रहैं तो जानो कि अब फिरंगवात त्वचाके बाहर और भीतर दोनों ओर प्राप्त होगई ह।

फिरंगबातके उपद्रव–शरीर क्षीणता, बलनाश, अग्निमांद्यऔर मांस, रुधिर नष्ट होकर हड्डी मात्र रहजावै तथा नाक गल जावे तो इन उपद्रवों से युक्त रोगीका बचना हरिहरही है।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे स्नायुरुग्विस्फोटकमसूरिका
फिरंगवात लक्षणनिरूपणं नाम षट्त्रिंशस्तरंग ॥ ३६ ॥

क्षुद्ररोगः ।

अजागलिकादिक्षुद्राणांरोगाणांचयथाक्रमात् ॥
तरंगेमुनिरामेऽस्मिन् निदानं लिख्यते मया ॥१॥

भाषार्थः-अब हम इस सैंतीसवें तरंग में अजगलिका आदि रोगों का निदान यथा क्रम से लिखते हैं ।

१ अजगालिकालक्षण-कफ बात के प्रकोप से शरीर पर चिकनी शरीर के वर्ण सदृश, पीडा रहित मूंग के प्रमाण की जो फुन्सियां हों उन्हें अजगालिका जानो ।

२ यवप्रक्षालक्षण-कफ बात के प्रकोप से यवके समान, बडी गठीली फुन्सियां मांस में होजाती हैं उन्हें यवप्रक्षा कहते हैं ।

३ अंत्रालजीलक्षण-कफ, बातके प्रकोप से भारी सीधी, ऊंची मंडलाकार और पीवयुक्त फुन्सियां हों सो अंत्रालजी कहाती हैं.

४ बिवृतालक्षण-फटे हुए शिरवाली, विशेष दाहयुक्त. गूलर के पके फल सदृश मंडलाकार फुन्सियां हों उन्हें विवृता जानो ।

५ कच्छपिकालक्षण-कफ बात के प्रकोप से कछुवे के समान पांच छः भयकर गांठें होतीहैं उन्हें कच्छपिका कहते हैं ।

६ वल्मीकलक्षण-कुपथ्यकरने से कंधे बगल हाथ पांव और गले में बांबी के समान ऊंची पीडायुक्त विसर्पकी सी गांठ उत्पन्न होकर बढें. तदनंतर उनमें से अनेक मुखद्वारा पीव बह तो वल्मीक जानो ।

७ इन्द्रवृद्धलक्षण-कमल गट्टे के आकार की फुन्सी होती है उसे इंद्रवृद्ध कहते हैं ।

८ गर्दभिकालक्षण-बात पित्तके प्रकोपसे मंडलाकार गोल ऊंची लाल और पीडायुक्त फुंसियां होती हैं उन्हें गर्दभिका कहते हैं ।

पाषाणगर्दभिकालक्षण-दाढकी संधिमें शोथयुक्त. स्थिर. मंद पीडित और चिकनी फुंसियां हों उन्हें पाषाण गर्दभिका जानो ।

१० पनसिका लक्षण - कान के बीच में विशेष पीडायुक्त और स्थिर फुंसियां बात कफसे होती है उन्हें पनसिका कहते हैं ।

११ जालगर्दभलक्षण—पित्त प्रकोपसे जोशोथ प्रथम थोड़ा पीछे फैलता हुआ निष्पाक और दाहज्वरकारकहो उसेजालगर्दभजानो

१२ इरवेल्लिका लक्षण—सन्निपात प्रकोप से शिरमें गोल विशेष पीड़ा और ज्वर युक्त फुन्सियां होतीहैं उन्हें इरवेल्लिका जानो ।

१३ कक्षालक्षण- पित्त के प्रकोप से बांह कांख कंधे और पसुलियों में पीडा और फफोले युक्त काला फोडा हो सो कक्षा (कांख बिलाई) कहाती है ।

१४ अग्नि रोहिणी लक्षण—त्रिदोष के कोपसे मांस को विदीर्ण करने वाले अन्तर्दाह ज्वर कारक प्रज्ज्वलित अग्नि के समान फफोले होते हैं उन्हें अग्नि रोहिणी जानो इसका रोगी ७ या १२ या १५ दिन में मर जावेगा ।

१५ चिप्पलक्षण—बात पित्त नख के समीप मांस में रह कर अपने दाह से नख को पका देते हैं उसे चिप्प कहते हैं ।

१६ कुनख लक्षण - जो तीनों दोषों की अल्पता से चिप्परोग होवे उसे कुनखरोग कहते हैं इसमें नख नहीं रहने पाता ।

१७ अनुशयीलक्षण—पांव के ऊपर या भीतर पकने वाला, अल्प शोथयुक्त रंगमें देहके समान जो फुन्सी होतो अनुशयी कहाती है

१८ विदारिकालक्षण—त्रिदोष से विदारी कंद के समान गोल और लाल फुन्सी कांख या कमर की सांधि में होती हैं सो विदारिका कहाती है ।

१९ शर्करालक्षण—कफ मेद मांस और वात नसोंमें प्राप्त होकर १ गांठ उत्पन्न करते हैं जिसमें से फूटने पर मधु या घृत या वसा [चर्बी] के समान पीव बहता है तब स्राव होने से पुनः बात

कुपित होकर शरीर के मांसको सुखाके के छोटी२ रेतके कण के समान फुन्सियां उत्पन्न करता है उस शर्करा कहते हैं।

२० शर्करार्बुदलक्षण—यदि शर्करासेही अनेक रंगोंका दुर्गंधित रक्त बहने लगे तो उसीको शर्करार्बुद कहते हैं।

२१ पाददारिकालक्षण—अधिक चलनेसे वायु कुपित होकर पांव रूखे कर देती है तब पांवकी एडीमें पीडायुक्त दरारें पडजाती हैं उन्हें पाददारिका (ब्यवाई) कहते हैं।

२२ कदरलक्षण—पांव हाथ में कांटा या कंकरी चुभने से बेरके समान गांठ पड जाती है उसे कदर (चांईया,टांकी) कहते हैं।

२३ अलसलक्षण—पांव भीगे रहने से या दुष्ट कीचड लगने से अंगुलियों की सांधिमें चर्म सडकर दाह और खुजाल आती है उसे अलस (खरवात) कहते हैं।

२४ इन्द्रलुप्त लक्षण—रोम कूपमें रहनेवाला पित्त वातके संयोगसे बढ़कर वालोंको झडा देता है,तदनंतर कफ रक्तके संयोगसे रोम कूपोंको रोककर दूसरे रोम उत्पन्न नहीं होने देता इसे इन्द्रलुप्त (चांद) कहते हैं।

२५ अरुंषिकालक्षण—कफ रक्त और कृमके कोपसे मस्तकपर अनेक मुखवाले व्रण होते हैं उन्हें अरुंषिका कहतेहैं।

२६ पालितरोगलक्षण—शोक,क्रोध और परिश्रमकी विशेषता से शरीर में उष्णता और पित्त बढ़कर तरुणावस्था में केशों को पका देते हैं उसे पलित कहते हैं।

२७ न्यच्छलक्षण—जो बडा या छोटा,काला या धूसर पीडारहित मंडल शरीर के किसी भी स्थानमें हो उसे न्यच्छ कहते हैं

२८,माषलक्षण—वात के प्रकोपसे शरीर पर वेदनारहित,उर्द के समान कासा,ऊंचा मांसका अंकुर हो उसे माष (मसा) कहतेहैं।

२९ तिलकालकलक्षण—जो पीडारहित, काले तिल समान, चर्म के समान मंडल हो उसे तिलकालक (तिल) कहते हैं।

३० उग्रगंधालक्षण—जो कफरक्त के प्रकोपसे त्वचा पर काला, चिकना, पीडा राहित मंडल शरीर के साथ ही उत्पन्न हो उसे उग्रगंधा (लहसन) कहते हैं।

३१ लिंगवर्तीलक्षण—इन्द्रिय के मर्दनतथाचोटलगनेसेविचरता हुआ वायू लिंगेंद्रियके चर्मका उलटके सुपारी के नीचे एक लम्बी गड्डे सहित गांठको उत्पन्न करता है उसे लिंगवर्ती कहतेहैं।

३२ अवपाटिकालक्षण-लघुछिद्र योनिवाली रजस्वलाधर्म रहित स्त्रीसेमैथुनकरनेसे. हस्तमैथुनसे लिंगेन्द्रियके बंदमुखकोबला त्कार से खोलनेसे, लिंगको दवाने या मसलने से और निकलते हुए वीर्यको रोकनेसे लिंगको मूचनेवाला चर्म बहुधा फट जाता है उसे अवपाटिका कहते हैं।

३३ निरुद्धप्रकाश लक्षण—वातप्रकोपसे लिंगका चर्म लिंग केअग्र भाग ,सुपारी पर चिपट जाता है तब वह मस्तक और मूत्रमार्ग दानों बंद होकर मूत्रकी धारा धीरे२ पीडारहित गिरता है और लिंगका मस्तक खुलता नहीं उसे निरुद्धप्रकाश कहते हैं।

३४ मणिरोगलक्षण - निरुद्धप्रकाश होनेके कारण पश्चात् पीडा रहित महीन मूत्रधारा और मूत्र निकलने का छिद्र चौडा हो जाय तो मणिकरोग जानो।

३५ वृषकच्छुलक्षण—जो पुरुष लिंग और अंडकोष को धोकर स्वच्छ नहीं रखता उसके कफरक्तकोपसे अंडकोषका मैल पसीनेके योगसे फूलकर खाज होतीहैऔर यही खाज कुछ कालमें फोडेहोकर उनमें से पीव और पानी बहने लगताहै उसे वृषणकच्छुरोगकहतेहैं

३६ निरुद्धगुदलक्षण—मलकावेग रोकनेसे गुदामें रहनेवालीवायु

मल निकलनेके छिद्रको रोककर छोटा कर देती है तब मल बडी कठिनाई से उतरता है उसे निरुद्धगुद कहते हैं।

३७ गुदभ्रंशलक्षण—रूखे तथा दुर्बल पुरुषके कांपने (खांसने, कूलने) और अतिसार से गुदा बाहरको निकल जाता है उसे गुदभ्रंश (रेचनकाल में कांछ निकलना) कहते हैं।

३८ शूकरदंष्ट्रलक्षण—जो लाल किनारे वाला, त्वचा को पकने वाला, दाह कण्डू तीव्र पीडा और काला शोथ हो उसे शूकर दंष्ट्ररोग कहते हैं।

इति, नूतनामृतसागरे निदानखंडे क्षुद्ररोगलक्षण निरूपणं नाम सप्तत्रिंशत्तरंग ॥ ३७ ॥

शिरोरोग नेत्ररोग

बसुवैश्वानरे भंगे कारणं च शिरोरुजाम् ॥
तथाहि नेत्ररोगाणां कथ्यतेऽत्र यथा क्रमात ॥ १ ॥

भावार्थः—अब हम इस ३८ वें तरंगमें शिरोरोग और नेत्ररोगों का निदान यथाक्रम से लिखते हैं।

शिरोरोगोत्पत्तिकारण—१ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ सन्निपात ५ रक्त, ६ क्षीणता ७ कृमि, ८ सूर्यावर्त, ९ अनंतवात, १० शंखक ११ अर्द्धावभेद इन ग्यारह कारणोसे ११ प्रकारके शिरोरोग होतेहैं

१ वातजशिरोरोगलक्षण-मनुष्यकेमस्तकमें निष्कारणही अत्यन्त पीडा होकर दिनको न्यून और रात्रिको अधिक होने लगे और शिरको बांधने या तपाने से पीडा शांत हो जाया करे तो वादी का शिरोरोग जानो।

२ पित्तजशिरोरोगलक्षण—मस्तक फूटजावे, अग्नि सदृश जलन पड़े, नेत्रोंमें भी पीडा और नाकमें जलन पडकर रात्रिको शीतके कारण पीडा कुछ शांत होजावे तो पित्तका शिरोरोग जानो

३कफजशिरोरोगलक्षण- मस्तक भीतर कफसे भरा हुआ जड (भारी)ठंडा हो, नेत्र, नासिका आर मुख पर शोथ हो तो कफका शिरोरोग जानो।

४सन्निपातजाशिरोरोगलक्षण जिसमें पूर्वोक्त तीनों दोषों के लक्षण हों उसे त्रिदोषसे उत्पन्न हुई मस्तककी पीडा जानो।

५रक्तजाशिरोरोगलक्षण-पित्तज शिरोरोग के समस्त लक्षण होकर मस्तक हस्तस्पर्श मात्र भी सहन न कर सके तो रक्तका शिरोरोग जानो।

६क्षयजाशिरोरोगलक्षण-मस्तकमें रक्त,वसा, कफ और वायुकी न्यूनता होनेसे छींक आती और शिर तपकर अति वेदना होती है उसे क्षयज शिरोरोग जानो।

७कृमिजाशिरोरोगलक्षण-मस्तक में सुई चुभानके समान या कीडे काटने के समान पीडा और जलन होकर शिर फडके और नासिका के मार्गसे रक्तयुक्त पीवका विशेष बहाव हो तो कृमि का शिरोरोग जानो।

८सूर्यावर्ताशिरोरोगलक्षण-सूर्योदय होतेही मस्तक में मंद मंद पीडा उत्पन्न होकर सूर्य के तेजोवृद्धिके साथ१नेत्र भौंह और शिरकी पीडाभी मध्याह्न कालतक बढतीजावे और मध्याह्न पश्चात् सूर्यके तेज सदृश क्रमशः न्यून होकर सूर्यास्त तक सब पीडा शांत हो जावे तो सूर्यावर्त शिरोरोग जानो।

अनंतवातशिरोरोगलक्षण-वात, पित्त कफ दूषित होकर ग्रीवा, नेत्र भौंह और कनपटी में अत्यंत पीडा करते हैं, डाढ स्तम्भन, कपोल (गाल) का फडकन, संचाल नेत्ररोग उत्पन्न करके शिरमें अत्यन्त वेदना उत्पन्न करते हैं उसे अनंतवात शिरोरोग कहते हैं।

१० शंखकशिरोरोगलक्षण—वात, पित्त, कफ; दूषित होकर कन पटीमें तीव्र वेदना दाह और लाल वर्ण युक्त शोथ उत्पन्न करके मस्तक और गलेको रोक देते हैं उसे शंखकशिरोरोग कहते हैं इसका यत्न ३ दिनके भीतर करलो न तो हरिहरही है ।

११ अर्द्धावभेद शिरोरोग लक्षण—रूखी वस्तुका विशेष सेवन भोजनपर भोजन, अतिमैथुन, मलमूत्रावरोध, श्रमव्यायामकी विशेषता और पूर्वकी वायु सेवनसे केवल वायु या कफ सहितवायुकुपित होकर बलिष्ठ होजाती और ललाटके आधे भागको ग्रहण करके उस भागकी ग्रीवा भौंह, कनपटी, कान नाक और उस आधे ललाटमें शस्त्रसे काटने या चीरनेके समान वेदना करताहै उसे अर्द्धावभेद (आधाशीशी) शिरोरोग कहते हैं, यह रोग विशेष वृद्धिगत होने से कान या नेत्रों को नष्ट कर डालता है ।

१ नेत्ररोगोत्पत्ति कारण—धूपसे तपा हुआ पानी में प्रवेश करे दूरकीवस्तु अधिक देखाकरे, दिनको शयनकरे; रात्रिकोजगे नेत्रमें पसीना, धूरिया धुआं प्रवेश होनें, वमन अधिक होने. तथा वमन आंसू. मलमूत्र अधोवायुके वेग रोकने. पतले अन्नके सेवन करने शोक तथा क्रोध करने, मस्तक के कूटने अति मद्यपान करनेऋतु विरुद्ध अहार बिहारके करने, क्लेश प्रद कार्यों के करने अति मैथुन तथा रुदन करने और अत्यन्त महीन वस्तुओंको देखने, इन कारणों से वातादि दोष कुपित होके नेत्रों में अनेक प्रकारके रोगों को उत्पन्न करते हैं ।

२ नेत्रमण्डलमान—नेत्रमडल अढाई अंगुल या अपने अंगुष्ठके उदर प्रमाण होता है, इसमें शार्ङ्गधरके मतसे ९४ सुश्रुतके मतसे ७६ और अनेक आचार्य तथा चरक के मतसे ७८ रोग होते हैं जिनकी संख्या निम्न लिखित क्रमानुसार जानो ।

३ नेत्ररोगसंख्या–१४ दृष्टिमें ४ नेत्रके काले भागमें ११ श्वेत भागमें, २१ नेत्र भागमें,२ नेत्र पक्ष्मोंमें, ९नेत्रसंधिमें, १७समस्त नेत्रमात्र में इस प्रकार ७८ नेत्ररोग हैं

दृष्टिवर्णन–नेत्र मंडलकी काली पुतलीमें मरसूकी दाल समान एक प्रकाशित तारा है, वह तारा पंचमहाभूतोंसे उत्पन्न तेजरूप यह तारा नेत्रगोलकमें पलांडु(कांदा प्याज)के छिलके कतुल्य ४ पटल (झिल्ली)पैदा कर देताहै जिससे सब नेत्र आच्छादित होतारहताहै इस पटलके अंतर्गत जल और रुधिरके आधारभूत जो देखने की शीतल शक्ति है उसे दृष्टि कहते हैं ।

५पटलवर्णन–दृष्टि का प्रथम पटल तेज और जलके आधार दूसरा मांसके आधारतीसरा तेज जल मांस मेद और अग्निके आधार और चौथा केवल तेजाधार है ।

६ प्रथमपटलादिगतदोष वर्णन–प्रथम पटलमें दोष प्राप्त होनेसे वस्तुका यथार्थ रूप नहीं दीखता,दूसरे पटलमें दोष प्राप्त होनेसे मक्खी मच्छरके समूह उड़ते से दिखाई देवें दूरकी वस्तु समीप और समीपकी दूर दिखाई देती है, दृष्टि भ्रम से विह्वलित रहती यहांतक कि सुईका छिद्रभी कठिनाई से दीखताहैतीसरे पटलमें दोष प्राप्त होनेसे ऊपरकी वस्तु दीखती पर नीचेकी नहीं वस्तु समूह भी नहीं दीखता किन्तु सन्मुख वस्त्रकी ओटसी होआती है कान नाक, नेत्र यथार्थ नहीं पर विचित्र डौलकेही दीखते हैं यदि इसी पटल (३परदे) में विशेष दोष हो जावे तो नीचेकी ऊपर और ऊपरकी वस्तु नीचे दृष्टि पडती हैं, यदि नेत्र पार्श्व (बगल) में दोष प्राप्त होजावें तो दाहनी और बांई ओरकी वस्तु नहीं दीखती, यदि नेत्रोंकें चहुं ओर दोष प्राप्त होजावेंतो व्याकुलतासे नेत्रोंमें चकचौंधी आजातीहै यदि दृष्टि मध्यगतदोष

हों तो बड़ी वस्तु छोटी दीखती है, यदि समस्त दृष्टिगत दोष हों तो दाहनी बाई ओर की वस्तुएँ एककी दो दोकी तीन और अधिक होतो असंख्यात दृष्टि पडती हैं, चतुर्थ पटल में दोष प्राप्त होने से आंखकी पुतली नीले कांच के समान होकर विशेष दोष से सूर्य चंद्र, नक्षत्र आकास विजली आदि निर्मल तेजोमय चीजोंको भी भली भांत नहीं देख सक्ती किन्तु ये सब भ्रमतेसे ही दीखते हैं

७ द्रष्टिरोग—द्रष्टिमें १ वातज लिंगनाश, २ पित्तज लिंगनाश, ३ कफजलिंगनाश, ४ सन्निपात जलिंगनाश, ५रक्तजलिंगनाश। ६परिम्लायिलिंगनाश, ७ पित्तविदग्ध दृष्टि ८ कफविदग्ध दृष्टि ९ घूमदर्शी, १० ह्रस्वजात्य, ११ नकुलांध्य और १२ गंभीर दृष्टि बाहर तथा दो आगन्तुक लिंगनाश जो कि एक निमित्त से और दूसरा अनिमित्त से होता है इस प्रकार चौदह रोग होते हैं

८षड्विधलिंगनाश लक्षण—सर्व वस्तू भ्रमित, मैली, टेढी और लाल दृष्टि पड़ेंतो १ वातजलिंगनाश, सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, अग्नि इन्द्र धनुष, बिजली ये सब भ्रमते हुए नीले द्रष्टि पडें तो २ पितजलिंगनाश, नेत्रों में जल भरा रहकर सर्व वस्तुएँ श्वेत तथा चिकनीसी दृष्टि पड़ें तो ३ कफजलिंगनाश, जिसमें पूर्वोक्ततीनोंदोषोंके लक्षण मिलें तथा वस्तुके आकार नाना प्रकार के छोटे बडे और तेजरूप दृष्टि पडें तो४सन्निपातजलिंगनाश, जिसे प्रत्येक पदार्थ लाल श्वेत काले, या पीले दृष्टि पडें तो ५ रक्तज लिंगनाश, और जिसे दशों दिशा पीली अनेक सूर्योंका उदय; जुगनुओंसे तथा अग्निसे व्यास वृक्ष दृष्टि पडें तो ६ परिम्लायिलिंगनाश जानो ।

विशेषतः—वातसे गुलाबी पित्तसे पीतता युक्त, नील याशुद्धनील वर्ण, कफके श्वेत रक्तसे लाल सान्निपातसे अद्भुतरंग और परिम्ला

१ परिम्लायि—मूर्छित पित्त से जो लिंग नाश होता है वह परिम्लायि कहाता है;

यिसे लाल तथा धूसर वर्ण लिंगनाशरोग होने से दृष्टि पड़ता है इति षड्विधलिंगनाश (तिमिर) लक्षण

९ लिंगनाशनेत्र मंडललक्षण-वातज लिंगनाशमेंनेत्रके भीतर लाल, कठिन और चंचल, २ पित्तजलिंगनाश में नेत्र के भीतर नीला या कासके समान तथा पीला,३कफजलिंगनाशकमेंनेत्रके भीतर बड़ा चिकना, शंख या कुंदपुष्प अथवा चन्द्र समान श्वेत वर्णका, चंचल श्वेतबिन्दुयुक्त. ४ सान्निपातजलिंगनाश में नेत्रके भीतर तीनों दोषों के उपरोक्त लक्षण युक्त तथा चित्र विचित्र रंग का ५ रक्तजलिंगनाशक में नेत्र के भीतर लाल और ६ परिम्लायि लिंगनाशक में नेत्र के मोटे कांचके समान अरुण या नीला मंडल होता है, इति लिंगनाशे नेत्रमंडल लक्षण ।

१० पित्तविदग्धदृष्टिलक्षण-७मिथ्या आहार विहारादिसे पित्त दूषितहोकर नेत्रोंको पीत करदेताहै, जिससे सर्ववस्तु पीलीहीपीली दीखती है इसे पित्तविदग्धदृष्टिरोग जानो इस रोगमें प्रथम तथा दूसरे परदेमें पित्तरहता है औरइस पित्तके तृतीय पटलमेंप्राप्तहोनेसे दिनको नहींदीखता और रात्रिको चन्द्रमाकी शीतलतासे पित्तकी अल्पता होनेके कारण दीखने लगता है इसे दिवांध (दिनौंधी) रोग कहते हैं यहभी पित्तविदग्धदृष्टि रोगको एक भेदहै ।

११कफविदग्धदृष्टिलक्षण-८दृष्टिकफदूषित होनेसे मनुष्य को सब रूप श्वेतही दीखते हैं इसे कफविदग्ध दृष्टिरोग जानो और जब वही कफ तीसरे पटलमें जाता है तब रात्रिको नहीं दीखता और दिनको सूर्य तेजसे कफ न्यून होनेके कारण दीखता है इसे नक्तान्ध (रतौंधी) कहते हैं यह भी कफविदग्ध दृष्टिका एक भेदहै,

२धूम्रदर्शीरोगलक्षण-शोकज्वर, श्रम और शिर रोग से दृष्टि पीडितहोकर सबपदार्थ धूम्ररूप दीखतेहैं इसेधूमदर्शी रोगकहतेहैं।

१०ह्रस्वजात्यरोगलक्षण–दिनको बडारूप भी अत्यन्त क्लेश से छोटासा दीखै और रात्रिको यथार्थ दीखता ह्रस्वजात्यरोगजानो:

११ नकुलान्धरोगलक्षण–दोषों से दूषित दृष्टि होके नकुल (मुंगस) की दृष्टिसमान चमके, और उस मनुष्य को दिन को चित्र विचित्र दीखै तो नकुलाध्यरोग जानो।

१२ गंभीरदृष्टिलक्षण–वायु दूषित दृष्टि विरूप होकर अति पीडापूर्वक भीतरसे सिकुडती जावै उसे गंभीरदृष्टि जानो।

१३ आगंतुकनिमित्तजलिंगनाशलक्षण–जो मस्तक पीडासेंतथा अभिष्यंदके लक्षणों करके निश्चय कियाजावे उसे आगंतुक निमित्तजलिंगनाश जानो।

आगंतुकनिमित्तजलिंगनाशलक्षण–जिस मनुष्य की देव, ऋनु, गंधर्व बडे सर्प और सूर्य इनके देखनेसे दृष्टि दूषितहोकर प्रत्यक्षतामें सुन्दर तथा निर्मलभीरहै औरउसे कुछ न दीखपडैतो आगंतुकनिमित्तजलिंगनाश जानो, ये १४ रोग निगाह में होते हैं।

वाग्भट्टके मतसे लिंगनाशका लक्षण–लिंगनाशरोगको लोकमें नजला तथा मोतिया बिंदभी कहते हैं यह मोतिया बिंद कच्चा और पक्का ऐसे दो प्रकार का होता है।

कच्चा मोतियाबिंद–कुछ २ धूंधरसा दीखै, नेत्र में पीडा हो और सर्व लक्षण पक्के मोतियाबिंद से विरुद्ध निगाह पडें तो कच्चा मोतियाबिंद जानो।

२पक्कामोतियाबिंद–पुतलीपर दही तथा मठे के समान बूंदहोकर उसे कुछ भी न दीख पडे और नेत्रों में किसी प्रकार की पीडा न हो तो पक्का मोतियाबिंद जानो।

अथ श्यामभागरोगाः

नेत्रके श्यामभागमें १ सव्रणशुक्र, २ अव्रणशुक्र, ३ अक्षिपाकात्यय और ४ अजकाजात ये चार रोग होते हैं।

सव्रणशुक्रलक्षण-नेत्रके काले भागपर सुईसे कियेहुए छिद्र समान गहरी फूली पडकर जिसके उष्ण अश्रुपात होतेरहें उसेसव्रणशुक्र कहतेहैं यदि वह फूली पुतलीसे दूरगांठ तथा पीडा और बहुस्रावरहितहो तौसाध्यइससेव्यतिरिक्तहोतोअसाध्यजानना चाहिये

२ अव्रणशुक्रलक्षण-नेत्र दुखनेसे काले भागमें फूली उत्पन्न होके चूसने समान पीडायुक्त तथा शंख चन्द्र, कुन्दपुष्प अथवा मेघके समान होतो उसे अव्रणशुक्र जानो यद्यपि अव्रणशुक्र साध्य है परन्तु जो फूली दूसरे पटलादिमें प्राप्त होकरमोटी,बडी और बहुत कालकी होतो कष्टसाध्य जानो, और फूली के बीच में छिद्रसा होकर चहुंओर से मांस घिर आवे तथा संचारी मलीन नसगत, दृष्टिनाशक,द्वितीय पटलके किनारेपरलाल और बहुत दिनों की हो तथा नेत्र से उष्ण अश्रुपात हो तथा नेत्रमें तथा मूंगके समान फुन्सी हों और तीतरके पंख के समान वर्ण और मूंगके आकार वाली फूली हो तो अव्रणशुक्र असाध्य जानो ।

३आक्षिपाकात्ययरोगलक्षण-नेत्रकेकाले भागपर चहुंओरसे श्वेत वर्ण होजावे उसे आक्षिपाकात्ययरोग कहते हैं, यह त्रिदोषज हो तो असाध्य अन्यथा कष्टसाध्य जानो ।

४अजकाजातलक्षण-बकरीकी मेंगनीके समान,पीडायुक्तलाल फूली होकरकाले भागको ढककर बढे और उसमें से लाल तथा चिकने आंसू बहते रहें तो अजकाजातरोग जानो ॥

अथ श्वेतभागरोगाः ।

नेत्रके श्वेत भागमें १ प्रस्तार्यर्म, २ शुक्लार्म, ३ रक्तार्म, ४ अधिमांसार्म, ५ स्नाय्वर्म ६ शुक्तिका, ७ अर्जुन, ८पिष्टक, ९ शिराजाल १० शिरापिडिका और ११ बलासग्रथित ये ग्यारहरोग होते हैं,

१ प्रस्तार्यर्मलक्षण-नेत्र के श्वेत भाग में पतला; विसर्पी काला या मंडल हो उसे प्रस्तार्यर्म रोग जानो ।

२ शुक्लार्मलक्षण-नेत्र के श्वेत भागमें श्वेत और कोमल मण्डल होकर बहुत दिनोंमें बढ़े उसे शुक्लार्म रोग जानो ।।

३ रक्तार्मलक्षण-नेत्रके श्वेत भागमें मांस संचयसे लाल कमल सदृश तथा कोमल मंडल हो उसे रक्तार्म कहते हैं ।

४ अधिमांसार्मलक्षण-नेत्रके श्वेत भागमें विस्तृत, कोमल, मोटा लाल मिश्रित श्याम लाखी) मण्डल होतो अधिमांसार्मजानो ।

स्नाय्वर्मलक्षण-नेत्रके श्वेत भागमें स्थिर विस्तृत, मांसयुक्त और सूखा मंडल हो उसे स्नाय्वर्मरोग जानो ।

६ शुक्तिकालक्षण-नेत्रकेश्वेतभागमें काले और सीपके आकार मांससमान बिन्दु हों तो शुक्तिकारोग जानो ।।

७ अर्जुनरोगलक्षण-नेत्रके श्वेतभागमें शशेके रक्तसदृशबिन्दु हो उसे अर्जुनरोगलक्षण जानो ।।

८पिष्टकलक्षण-वातकफकेकोपसे नेत्रके श्वेत भागमेंआटेकेसमान मांस ऊंचा होकर मैलदर्पण सदृश दृष्टिपडेउसेपिष्टकरोगजानो

९ शिराजाललक्ष-णनेत्रके स्वेतभागमें कठोर नसोंसे बनाहुआ विस्तृत लाल जाला (फन्दासा) हो उसे शिराजालरोग जानो.

१०शिरापिडिकारोगलक्षण-नेत्रके स्वेतभागमें श्याम मंडलके समीप स्वेतनसोंसे अच्छादित जो फुनसियांहों उसेशिरापिडिका रोग जानो ।।

११ बलासग्रथितरोगलक्षण-नेत्रके स्वेतभागमेंकांसके पात्रवर्ण सदृश पानीके बूंदकी आकार और कठोर चिह्नहों उसे बलासग्रथित रोग जानो ।   इति श्वेतभागरोगाः

अथ वर्त्मस्थानरोगाः नेत्रमार्ग में १ उत्संगिन पिडिका २ कुं

भिका, ३ पोथकी. ४वर्त्मशर्करा. ५ अर्शोवर्त्म. ६ शुष्कार्श, ७अं-जना, ८ बहुलवर्त्म, ९ वर्त्मबधंक, १० क्लिष्टवर्त्म. ११ वर्त्मकर्दम. १२ श्यामवर्त्म, १३ प्रक्लिन्नवर्त्म. १४ अक्लिन्नवर्त्म, १५वातहर्षवर्त्म १६ वर्त्मार्बुद. १७ निमेष, १८शोणितार्श. १९ लगण्य. २० बिस वर्त्म और २१ कुंचन ये इक्कीस रोग कहते हैं ॥

१ उत्संगिनीपिडिकालक्षण—पलकके भीतर मुखवाली लाल छोटी छोटी फुनसियोंके मध्य जो खाज युक्त एक बडी फुन्सी बाहरको ऊंचीसी दृष्टि पडे उसे उत्संगिनीपिडिका जानो।

२ कुंभिकालक्षण—पलकके किनारेपर कुम्हडे के बीजके समान श्वेत और स्रवाहिनी फुन्सी हों उसे कुंभिका जानो ये दोनों त्रिदोष से होती है।

३ पोथिकालक्षण—पलकमेंलाल सरसोंके बीजसमान भारी बहने वाली खाजयुक्त और पीडाकारिणीफुन्सियांहोंउन्हेंपोथिकाजानो

४ वर्त्मशर्करालक्षण—पलकमें कठिन तथा दूसरी छोटी फुन-सियों से युक्त जो बडी फुनसी हों उसे वर्त्मशर्करा जानो।

५ अर्शवर्त्मलक्षण—ककडीके बीज समान, नुकीली, चिकनी किंचित पीडायुक्त फुनसियां हों उन्हें अर्शवर्त्म जानो ॥

६ शुष्कार्शलक्षण—पलक के भीतर लंबी, अंकुरवाली, कर्कश कठिन, दारुण.दुःखदायिनी फुन्सी हों उसे शुष्कार्शरोग जानो.

७ अंजनालक्षण—पलकमेंसुईचुभानेके समान अल्प पीडायुक्त लाल. कोमल और दाहवाली जो फुन्सी हों उसे अंजना जानो।

८ बहुलवर्त्मलक्षण—पलकमें चहुं ओरसे चर्मके रंगकी स्थिर फुनसियां से जो व्याप्त हो जावे उसे बहुलवर्त्मरोग जानो।

९ वर्त्मबधरोगलक्षण—पलकमें खाज तथा अल्पवेदनायुक्त शोथ होनेसे नेत्रों को पूर्ण रूपसे न ढक सके उसे वर्त्मबंधरोग जानो।

१० क्लिष्टवर्त्मलक्षण–पलकमें अकस्मात् किंचित,वेदना, ललाई और कोमलता होजावे तो उसे क्लिष्टवर्त्मरोग जानो।

११ वर्त्मकर्दमलक्षण–क्लिष्टवर्त्मरोगको ही पित्त युक्त रक्त दूषित करके नेत्रोंको कीचड(गीड) हीमें किये रहे उसे वर्त्मकर्दम जानो

१२ श्यामवर्त्मलक्षण-पलक बाहर भीतर सें काले और वेदना युक्त सूजे रहें उसे श्यामवर्त्मरोग कहते हैं।।

१३ प्रक्लिन्नवर्त्मलक्षण–पलक बाहर पीडारहित औरशोथ युक्त होकर भीतर अधिक कीचडयुक्त रहें उसे प्रक्लिन्नवर्त्मरोग जानो.

१४ अक्लिन्नवर्त्म लक्षण–जिसका पलक निष्पाक, निष्पीडित दशा में भी धोने से या धोने परभी बारम्बार चिपक जावे उसे अक्लिन्नवर्त्मरोग जानो।

१५ वातहतवर्त्म लक्षण–जिसकी पलककी संधि ढीली होनेसे पलक भली भांति नेत्रों के खोलने और मूंदने में असमर्थ होकर ज्योंकी त्यों रह जावें उसे वातहतवर्त्म जानो।

१६ वर्त्मार्बुदलक्षण-पलक के भीतर पीडा रहित, टेढी मोटी लाल एक गठान होती है उसे वर्त्मार्बुद रोग कहते हैं।

१७ निमेषरोगलक्षण–पलकको खोलने तथा मूदनेवाली नस-निवासी वायु पलकमें प्राप्त होकर उनको बारम्बार चलाते रहता है उसे निमेषरोग जानो।

१८ शोणितार्शलक्षण–पलक के अंत में मांसका कोमल लाल अंकुर बढ़कर काटनेपर भी बढजाता है उसे शोणितार्श जानो।

१९ लगणलक्षण–पलक में छोटे बेरके समान.पाकरहितकठोर निष्पीडित, कंडूयुक्त जो चिकनी गठान हो उसे लगणरोगजानो

२० विसवर्त्मलक्षण–त्रिदोषकोप से पलक के ऊपर शोथ उत्पन्न होकर उस पलक पर कमलनाल के समान अनेक छिद्र होजातेहैं जिनसे पानी बहता रहता है उसे विसवर्त्म जानो।

२१ कुंचनलक्षण–त्रिदोष पलक को संकोचित करके मनुष्यको देखने से अशमर्थ कर देते हैं उसे कुंचनरोग जानो

पक्ष्मरोग–नेत्रके पक्ष्म (पांखों) में १ पक्ष्मकोप और २ पक्ष्मशात ये दो रोग होते हैं।

१ पक्ष्मकोपलक्षण–बात कोपसे पलकके रोम नेत्रों में घुसकर बारंबार घिसने से श्वेत या काले भाग में शोथ होकर प्रायःरोम झड जाया करते हैं इसे पक्ष्मकोप कहते हैं।

२ पक्ष्मशातलक्षण–पित्त कोपसे पलकके रोम झडकर खुजाल और दाह उत्पन्न हो जिसे पक्ष्मशातरोग कहते हैं।

सन्धिरोग–नेत्रकी संधिमें १ पूयासलक. २ उपनाह. ३ पैत्तिक श्राव ४ कफश्राव, ५ सन्निपात. ६ रक्तश्राव, ७ पर्वणी ८ अलजी और ९ जन्तुग्रन्थी ये नवरोग होते हैं।

पूयालसकलक्षण–नेत्रकी पुतली की संधि में शोथ होकर पके और टोंचने के समान पीडा होकर दुर्गन्धित पीव निकले उसे पूयालसकरोग जानो।

उपनाहलक्षण–नेत्रकी संधिमें क्वचित पकनेवाली खाजयुक्त पीडारहित और बडी गांठ हो उसे उपनाहरोग जानो।

३ पित्तश्रावलक्षण–आंसू मार्गोंसे नेत्रोंकीसंधिमें वातादिदोष होने से अपने लक्षणों युक्त नेत्रश्राव उत्पन्न करते हैं इसके १ पित्तश्राव२कफश्राव, ३रक्तश्राव, और ४ सान्निपातश्राव ये चार भेद हैं, जिसमें नेत्रकी सन्धि से हल्दी समान पीला उष्ण या केवल जल के समान झिरता है उसे पित्तश्राव जानो।

४ कफश्रावलक्षण–जो श्वेत, गाढा, चिकना. बहता रहे सो कफश्राव जानो।

५ रक्तश्रावलक्षण–जो बहुत सा उष्ण रक्त बहता रहे सो रक्तश्राव जानो।

६सन्निपातस्रावलक्षण-संधि पककर अति दुर्गंधित पीव बहै उसे सन्निपात स्राव जानो ।

७पर्वणीलक्षण-जो नेत्र संधिमें लाल, दाह और पाक युक्त पतली तथा गोल सूजन हो उसे पर्वणी रोग जानो ।

अलजी लक्षण-यदि पर्वणी सफेद और काले भाग के मध्य (सन्धि) में हो तो अलजीरोग जानो ।

९जन्तुग्रन्थीलक्षण-पलक तथा पक्ष्मके मध्य (सन्धि) में कीड़े उत्पन्न होकर खुजाल चलाते हैं तथा वे फिरते हुए नेत्रों को बिगाड देते है इसे जंतुग्रन्थी रोग जानो.

समस्त नेत्ररोग-सब नेत्र में १ वाताभिष्पंद, २ पित्ताभिष्पंद, ३कफाभिष्पंद, ४ रक्ताभिष्पंद, ५ वाताधिमन्थ, ६ पित्ताधिमन्थ, ७कफाधिमन्थ, रक्ताधिमन्थ, ९ सशोथपाक, १० अशोथपाक, ११हताधिमन्थ. १२ वातपर्याय, १३ शुष्काक्षिपाक, १४ अन्यतोवात, १५ अम्लाध्युषित, १६ शिरोत्पात और १७ शिरोहर्ष ये सत्रह रोग होते हैं ।

१ वाताभिष्पंदलक्षण-नेत्रों में सुई टोंचने समान पीडा जडता कर्कराहट रूखापन, कीचड और ठंडे आंसुओं का बहाव होकर रोमांच हों और शिर तप्त हो तो वाताभिष्पंद (वादी से नेत्र दुखने आये) जानो ।

पित्ताभिष्पंदलक्षण-नेत्रों में पक कर दाह, ठंडे पदार्थों की इच्छा, धुआं निकले ऐसी पीडा और उष्णआंसुओंका विशेष बहाव होकर नेत्र पीलेहों तो पित्ताभिष्पंद (पित्तसेनेत्रोंका दुखना) जानो

३ कफाभिष्पंदलक्षण-उष्ण पदार्थों पर प्रीति, नेत्रोंमें भारीपन, शोथ कडू, चिकना ठंडा होकर चिकना कीचड आवै तो कफाभिष्पंद जानो ।

१ अभिष्पंदको लोकमें आखें आई कहतेहैं

२४ कफकर्णार्बुद, २५ रक्तकर्णार्बुद, २६ मांसकर्णार्बुद, २७ मेदकर्णार्बुद और २८ शिराकर्णार्बुद, ये अठ्ठाईस कर्णरोग कहे हैं परन्तु कर्णपालीमें १ परिपोटक, २ उत्पन्न, ३ उन्मंथ, ४ दुखवर्धन और ५ परलेहिन ये पांच रोग विशेष होते हैं ।

१ कर्णशूललक्षण—कानमें कुपित वायु प्रविष्ट होकर शूल उत्पन्न करती है इसे कर्णशूल जानो ।

२ कर्णनादलक्षण—कानमें वात प्राप्त होनेसे उन मनुष्योंको भेरी मृदंग और शंख आदि अनेक शब्द सुनाई पडते हैं उसे कर्णनाद रोग जानो ।

३ बाधिर्यलक्षण-शब्दज्ञाना छिद्रमें कफयुक्तया केवल वायुप्रवेश होनेसे उस मनुष्यको शब्द सुनाई नहीं पड़ता इसे बाधिर्यरोग कहते हैं यह बहरेपनका रोग बाल या वृद्धावस्था में होकर बहुतकालतक रहने से असाध्य हो जाता है यत्न से भी अच्छा नहीं होता

४ कर्णक्ष्वेडलक्षण-कानमें पित्तकफयुक्तवायु प्राप्त होके बांसुरी कासा शब्द करता है उसे कर्णक्ष्वेडरोग कहते हैं ।

५ कर्णस्रावलक्षण-मस्तकमें चोट लगने या कानमें जल भर जानेसे तथा कर्णविद्रधि पकनेसे कानमें पीव बहा करती है इसे कर्णस्राव कहते हैं ।

६ कर्णकण्डूलक्षण-कफयुक्तवायु कानमें प्राप्त होकर खाज उत्पन्न करती है उसे कर्णकण्डू कहते हैं ।

७ कर्णगूथलक्षण-पित्तकी उष्णतासे कानमें कफ सूखने से मैल अधिक निकले उसे कर्णगूथ जानो ।

८ कर्णप्रतिनाहलक्षण-जब वही कर्णगूथ तैलादिकके योग से पतला होकर नाक मुखमें प्राप्त होजाताहै उसे कर्णप्रतिनाहकहते हैं. इसीसे अर्द्धावभेद (आधाशीशी भी) हो जाती है ।

९ कृमिकर्णलक्षण—कानमेंकीडेपडके या वग, पतग; कनखजूरा आदिप्रवेशहोके जब फडफडातेहैं तब अत्यन्त वेदना व्याकुलता और कुरकुराहट होती है और उनका फडफड़ाना बंद होने पर पीडा न्यून हो जाती है उसे कृमिकर्णरोग जानो।

१० आगंतुककर्णव्रणलक्षण—कानमें किसीप्रकारकी चोट लगने से व्रण होकर रक्तपीव आदि बहेउसे आगंतुककर्णव्रण जानो।

११ दोषजकर्णव्रणलक्षण—कानमें वातादि दोषोंसे व्रण उत्पन्न होकर लसे रक्त पीव आदि बहे तो दोषजकर्णव्रण जानो।

१२ कर्णपाकलक्षण—पित्तकोपसे कान पककर उससे गाढीपीव बहे तो कर्णपाक जानो।

१३ पूतिकर्णलक्षण—कान पककर गंधआवे या उससे दुर्गंधित पीव बहे तो उसे पूतिकर्ण रोग कहते हैं।

१४ वातकर्णशोथ १५ पित्तकर्णशोथ १६ कफकर्णशोथ और १७ रक्तकर्णशोथ—इन चारों के लक्षण सूजे हुए कानको देखकर पूर्वोक्त शोथरोग जानो.

१८ वातकर्णार्श, १९ पित्तकर्णार्श, २० कफकर्णार्श, और २१ रक्तकर्णार्श—इन चारों के लक्षण कानमें अर्श (मसा) देखकर पूर्वोक्त अर्शरोगके समान जानो।

२२ वातकर्णार्बुद, २३ पित्तकर्णार्बुद. २४ कफकर्णार्बुद, २५रक्तकर्णार्बुद, २६ मांसकर्णार्बुद २७मेदकर्णार्बुद और २८ शिराकर्णार्बुद इन सातोंके लक्षणकानमें गठान देखके पूर्वोक्त अर्बुदरोग के समान जानलो ये समस्त २८ रोग कानके भीतर होते हैं।

१ परिपोटकरोगलक्षण—कानकीकोमल लोलकके छिद्रको शीघ्र बढाने से वहां शोथहोकर चर्म छिलजाता है तब वहां पीडा और कुछ श्यामतायुक्त लाल रंग होता है उसे परिपोटक जानो.

२उत्पातकलक्षण—लोलकके छिद्रमें भारी आभूषण के पहनाने या किसी प्रकारके खिंचावसे लोलक में शोथ, दाह, पाक और पीडा उत्पन्न होता है उसे उत्पातक कहते है.

३ उन्मथलक्षण—बलात्कार (जबरी) से कान बढाने से कफयुक्त कुपित बात वहां प्राप्त होकर शोथ और खाज उत्पन्न करता हैं उसे उन्मथ कहते हैं।

४ दुःखवर्द्धनलक्षण-कानकी लोलक कर्णवेधके समय अनुचित छिदेनेसे पककर पीडित हो उसे दुःखवर्द्धन रोग जानो।

परिलेहिनलक्षण—कफरक्त के कोपसे लोलकपर सरसों समान फुनसियां होकर खाज, दाह और पाक उत्पन्न कर देती हैं उसे परिलेहिन कहतेहैं. इति कर्णरोग निदानम्।

नासापाक—नाकमें १ पीनस २ पूतिनश्य ३ नासापाक ४ पूय रक्त ५ क्षवथु ६ क्षवतुभ्रंश ७ दीप्त ८ प्रतिनाह ९ प्रातिश्राव, १० नासाशोथ १५ पांच प्रतिश्याय २२ सप्त नासार्बुद २६ चार नासार्श ३० चार नासाशोथ और ३४ चार नासारक्तपित्त ये चौंतिस रोग होते हैं।

१ पीनसरोगलक्षण—कफकोपसे नाकमें श्वास न आकर नाक रुक जावे और सूखकर धूआं निकलता रहे और जिसे सुगन्ध दुर्गंधका ज्ञान न हो उसे पीनसरोग कहते हैं।

२पूतिनश्यलक्षण—कफ पित्त और रक्तके दग्ध होनेसे गलेंऔर तालुमें वायु बढकर मुखरों नासिकासे दुर्गंध निकलने लगती है उसे पूतिनश्य कहते है।

३ नासापाकलक्षण—नासास्थित पित्त दूषित होकर नाकमेंफुनसियां उत्पन्न करता है उस नासापाकरोग कहते हैं।

४ पूयरक्तलक्षण-वातादि दोषके प्रकोप या ललाटके चोटसेना सिका द्वारनरक्तमिश्रित पीप वहा करताहै उसे पूयरक्तकहते हैं।

५ क्षवथुलक्षण–कुपित पवन नाकके मर्मस्थानकोदूषित कर कफ युक्त होकर विशेष छींक उत्पन्न करतेहैं इसे छींकरोगकहतेहैं और मिरची, राई, नास आदि तीक्ष्ण वस्तुओं के सूंघने से या सूर्यकी ओरदेखनेसे या बत्ती, तृण आदि नाकमें चलानेसे जोछींक आवे उसे आगंतुक क्षवथुरोग जानो, यहभी क्षवथुका हीभेद है,

६ क्षवथुभ्रंशलक्षण–पित्त से नाक का कफ दग्ध होकर छींकें नहीं आवें तो क्षवथुभ्रंश जानो।

७ दीप्तरोग लक्षण–पित्त कोपसे नाक में दाह होकर धुआं निकला करे उसे दीप्त रोग कहते हैं।

८ प्रतिनाहलक्षण–वातयुक्त कफ नाकका छिद्र रोककर श्वास नहीं आने देता उसे प्रतिनाह कहते हैं।

९ प्रतिश्राव लक्षण–नाक से गाढ़ा पीला या श्वेत कफ गिरे उसे प्रतिश्राव कहते हैं।

१० नासाशोषलक्षण-वात, पित्त तथा कफके कोप से नाक सूखकर श्वास न आवे तो नासाशोष रोग जानो।

अथ प्रतिश्यायरोगोत्पत्ति-पीनसरोगहोनेपर यत्न न कियाजावे तो उसके बढावसे प्रतिश्यायरोग पैदा होता है यह १वातज, २ पित्तज, ३ कफज, ४ सन्निपातज, और ५ रक्तज होने से पांच प्रकार का होता है।

प्रतिश्याय पूर्वरूप-छींकआवे,मस्तक भारी होवे,रोमांचहो, अंग जकड़जावे ये उपद्रव हों तो जानो कि प्रतिश्याय उत्पन्न होया।

वातजप्रतिश्यायलक्षण– नाकभारी रहकर थोड़ा २ बहै कंठ तालु और ओष्ठ सूखकर कनपटी में सुई चोंटने समान पीड़ा और स्वरभंग होजावे तो वातज प्रतिश्याय जानो।

२ पित्तजप्रतिश्यायलक्षण-नाकसे ताता और पीला कफ गिरकर

स्वरभंग होजावे वह रोगी कृश पांडुवर्ण. संताप युक्त और उष्णता से पीडित होकर उसके नाक से धुआं सा निकले तो पित्तज प्रातिश्याय जानो ।

३ कफजप्रतिश्यायलक्षण-नाकसे श्वेत, ठंडा और बहुतसा कफ गिरकर नेत्रोंपर सूजन आजावे, मस्तक भारी तालु तथा ओष्ठोंमें खुजाल हो मनुष्य श्वेत सा दीखे तो कफजप्रातिश्याय जानो !

४ सन्निपातजप्रतिश्यायलक्षण—प्रातिस्याय होकर पक्का या कच्चा ही मिटजावे तथा तीनों दोषों के पूर्वोक्त लक्षण हों तो सान्निपातज प्रातिश्याय जानो ।

५रक्तजप्रतिश्यायलक्षण—नाकसे रक्त गिरे नेत्र लाल होजावें श्वास औरमुखसे दुर्गंधि आवे, सुगंधि दुर्गंधिकाज्ञाननहींनरहे छाती में प्रहार करनेके सदृश पीडा हो तो रक्तजप्रतिश्याय रोग जानो

६ दुष्ट प्रातिश्यायलक्षण-बारम्बार नाक बहै तथा सूख जावे, और बंद होजावें पुनः खुल जावे, श्वास में दुर्गंधि आवे, गन्ध ज्ञान न होतो दुष्टप्रातिश्याय जानो । यह कष्ट साध्य होजाते हैं

असाध्यप्रतिश्यायलक्षण-आलस्य वश होकर प्रातिश्यायका यत्न न करे तो प्रातिश्यायमात्र असाध्य होजाते हैं ।

विशेषतः-यदि प्रतिश्याय से नाकमें श्वेत, चिकना और छोटा कृमि उत्पन्न होजावे तो शिरोरोग. बाधिर्य, नेत्ररोग. शोथ, अग्निमांद्य और कास ये रोग उत्पन्न होजाते हैं ।

२२ सात नासार्बुद—२६ चार नासार्श, ३० चार नासा शोथ और ३४ चार नासारक्तपित्त इन उन्नीसों के लक्षण इन इनके निदानोक्त जानो । इति ३४ नासारोग निदान ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे कर्णरोग नासारोग लक्षण निरूपणं नामैकोनचत्वारिंशत्तरंगः ॥ ३९ ॥

मुखरोगोत्पात्त

क्रमान्मुखामयानां हि दृष्ट्वा ग्रथाननेकशः॥
चित्वारिंद् तरंगेऽत्र निदानं कथ्यते मया ॥ १ ॥

भावार्थः—अब हम इस चालीसवें तरंग में वैद्यक के अनेक ग्रन्थों को देखके मुखरोगों का निदान यथाक्रम कहते हैं।

अनूपदेशज जीवोंके मांस भक्षणसे, दूध,दही उडद आदि के आधिक्य सेवन से त्रिदोष कुपित होकर मुखरोग उत्पन्न करते हैं।

मुखके १ ओष्ट, मसूडे,३ दांत,४ जिह्वा, ५ तालु,६ कंठ और ७ कंठस्थान से लेके समस्त मुख ये सात्त अंग है, इन सातों अंगोंमें८ओष्ठके, १६मसूड़ोंके, ८दन्तोंके ५जिह्वाके, ९ तालुके १८ कंठके,३ सर्व मुखमें ऐसे ६७रोग होते है, ओष्ठरोग१वातज, २पित्तज ३ कफज, ४ सन्निपात ५ रक्तज,६ मांसज ७ मेदोज और ८ क्षतज ऐसे ८ प्रकार के ओष्ठरोग हैं।

१वातजोष्ठ रोगलक्षण—ओष्ठ कठिन, खरदरे, गाढे, काले चिरे हुए और तीव्र वेदनायुक्त हों तो वातज ओष्टरोग जानो।

पित्तजोष्ठरोगलक्षण—ओष्ठोंमें फुन्सियां होकर टपकने लगें और उनमें चहूं ओरसे पीडा, दाह, पाक होकर पीला होजावे तो पित्तसे ओष्ठरोग हुआ जानो।

३कफजौष्ठरोगलक्षण—ओष्ठ देहके वर्ण सदृश होकर चूनें लगें और उनमें पीडारहित फुन्सियां होकर खुजाल आवे और उनमें से ठंडा तथा गाढ़ा पीव निकले तो कफज ओष्ठरोग जानो।

४ सन्निपातजौष्ठरोगलक्षण—ओष्ठ कभी काले पीले और कभी श्वेत तथा फुन्सियों से पूरित रहें तो सन्निपाज ओष्ठरोग जानो

५रक्तजौष्ठलक्षण—खजूरके फल समान फुन्सियां होकर लाल वर्ण और पीडायुक्त होजावें तो रक्त से हुआ ओष्ठरोग जानो।

६मांसजौष्ठरोगलक्षण–जो ओष्ठ भारी, मांस के पिंड समान ऊंचे हो जावें, दोनों गलफरों में कीड़े उत्पन्न होकर निकलें तो मांस से हुआ ओष्ठरोग जानो।

७मेदोजौष्ठरोगलक्षण–ओष्ठघी या मांड (चांवलों का उबला हुआ पानी) के समान दीखें खाजयुक्त भारी रहें, स्वच्छ स्फटिक मणि सदृश जल भरे और ओष्ठ व्रण कठोर होकर अच्छे न हों तो मेदसे ओष्ठरोग हुआ जानो।

८क्षतजौष्ठ रोग लक्षण चोट आदि के लगने से ओष्ठ चीरने या फटने से उनमें गठान होकर खुजाल और आर्द्र(गीले)रहें तो चोट लगने से हुआ ओष्ठरोग जानो। इति ओष्ठरोगाः।

दन्तमूल(मसूढ़ों) के रोग

मसूडोंमें १ शीतोद, २ दन्तपुप्पट.३ दंतवेष्ट ४ सौषिर, ५महा सौषिर ६ परिदर, ७उपकुश, ८ वैदर्भ, ९खलिबर्द्धन, १० अधि मांस, ११ वातनाडीराह, १२ पित्तनाडीराह, १३ कफनाडिराह, १४ सान्निपातनाडीराह, १५क्षतजनाडीराह, और १६दंतविद्रधि ये सोलह रोग मसूड़ों में होते हैं।

१शीतोदलक्षण–मसूड़ों में निष्कारणही दुर्गंधि, काला रक्त निकलने लगे, मसूडे कोमल होकर सडने लगें और एक के लगने से दूसरा सडने लगे तो शीताद रोग जानो।

२दंतपुप्पुटलक्षण–कफ रक्त से दो या तीन दांतों में बहुत सूजन हो जावे उसे दंतपुप्पुट जानो।

३ दंतवेष्टलक्षण–मसूडों में से रक्त युक्त पीव निकल कर दांत हिलने लगें उसे दंतवेष्ट जानो।

४सौषिरलक्षण–कफ रक्तविकार से दांतोंकी जडोंमें वेदना सह शोथ होकर लार गिरे तो सौषिर रोग जानो।

५ महा सौषिरलक्षण–त्रिदोष से दांत मसूडों को छोड़ देवे, ताळु में छिद्र पड जावें उसे महासौषिर जानो।

६ परिदरलक्षण–पित्त रक्त या कफ के कारण से मसूडे बिखर जावें पर रक्त निकले उसे परिदर जानो।

७ उपकुशलक्षण–पित्त रक्तसे मसूडोंमें दाह पाक होकर दांत हिलनें लगें परस्पर दबाने से रक्त गिरकर मसूडे पुनः फूलजावें; वेदना अल्प परन्तु मुखसे दुर्गंध आने लगे तो उपकुश जानो।

८ वैदर्भलक्षण-मसूडोंमें किसी प्रकारकी चोट लगनेसे यादतून आदिकी रगडसे सूजकर दांत हिलने लगे उसे वैदर्भ कहते हैं।

९ खलिवर्द्धनलक्षण–बात कोपसे मसूडेमें दांत बढकर विशेष पीडा करता है उसे खलिवर्द्धन कहते हैं।

१० अधिकमांसलक्षण–कफ से नीचेकी दाढ के अन्त में विशेष सूजन और पीडाहोकर मुखसे लारगिरेतो अधिकमांसरोग जानो।

११ वातनाडीराह, १२ पित्तनाडीराह, १३ कफनाडीराह. १४ सन्नपातनाडीराह और १५ क्षतजनाडीराह रोगोंमें मसूडोंमेंनासूर पडजातेहैं इसालिये इनके लक्षण पूर्वोक्त नाडी व्रणके सदृशजानो

१६ दंतविद्राधिलक्षण– मसूडोंमें पीवयुक्त रक्त बहकर कुछसूजन दाह और पीडा होवे उसे दन्तविद्राधि जानो. इति दन्तमूलरोग।

दन्तरोग-दांतोंमें. १ दालन. २ कृमिदंत. ३ भंजन. ४ दंतहर्ष. ५ दंतशर्करा, ६ कपालि. ७ श्यावदंत और ८ कराल ये ८ रोगहोतेहैं

१ दालनलक्षण–वादी से दांतों में टूटने सदृश पीडा हो तो दालन रोग जानो।

२ कृमिदन्तलक्षण–वातकोपसे दांतों में काले छिद्र पड कर हिलने लगें, शोथ होकर उनमें रुधिर वहे और विना कारण ही पीडाहो तो कृमिदंतरोग जानो।

३ भंजनलक्षण–वात कफ से मुख टेढा हो कर दांत टूट जावें उसे दंत भंजनरोग जानो।

४ दंतहर्षलक्षण–वातकोप से दांत शीतल जल, खारी वस्तु, शीतल पवन. खटाई आदिका स्पर्श न सह सकें उसे दंत हर्ष जानो.

५ दंतशर्करालक्षण–वात पित्त के कारण से दांतों का मैल सूख कर वालूके समान खरखराने लगे तो दंतशर्करारोग जानो।

६ कपालिकालक्षण–शर्करारोगमें मैलयुक्त दांत ठिकरे समान फूटने लगें तो कपालिका जानो।

७ श्यावदंतलक्षण–रक्त मिश्रित पित्त से दांत जलकर पीले काले या नीले होजावें तो उसे श्यावदंत रोग जानो।

८ करालक्षण–वात से दांतों में धीरे धीरे भयंकर कुडौल ऊंचे नीचे करदे तो करालरोग जानो यह असाध्य होता है, विशेषतः ग्रन्थान्तर से हनुमोक्षरोग को लिखते है॥

कुपितवात–दाढ या दांत में प्रवेश होकर पीडा करै और अर्दितरोगकेभी लक्षण मिलें तो हनुमोक्षरोग जानो. इति दन्तरोग

जिह्वारोग–जिह्वा में १ वातजजिह्वारोग २ पित्तजजिह्वारोग, ३ कफजजिह्वारोग. ४ अलास और ५ उपजिह्वा पांचरोग होते हे

वातजजिह्वारोगलक्षण–जिह्वा फट कर सूज जावे हरी हो कर कांटे पडजावें और स्वादका ज्ञाननरहैतो वातज जिह्वारोग जानो

पित्तजजिह्वारोगलक्षण जीभ में दाह. कांटे हो कर लाल वर्ण हो जावै तो पित्तजजिह्वारोग जानो।

३ कफजजिह्वारोगलक्षण–जीभ भारी और मोटी होकर श्वेत कांटे पड जावें तो कफजजिह्वारोग जानो।

४ अलासलक्षण–जीभके नीचे विशेष शोथहोकरऔर पाक होकर जीभ और दाढी जकड जावे इसे अलास जानो।

५ उपजिह्वालक्षण–जीभ के अग्रभाग पर शोथ होकर दूसरी जीभके समान जान पडे और लार, खाज, दाहयुक्त हो तो उपजिह्वारोग जानो। इति जिह्वारोग।

तालुरोग–तालुमें १ गलसुंडी, २ तुंडकेशरी, ३ ध्रुव, ४ कच्छप ५ तालवर्बुद, ६ मांससंघात, ७ तालुपुप्पुट, ८ तालुशोष और ९ तालुपाक ये नौ रोग होते हैं।

१ गलसुंडीलक्षण–कफ रक्तके कोप से तालुकी जड से शोथ बढ़कर फूली हुई भाथीके समान होजावे और तृषा, कास श्वास उत्पन्न करे तो गलसुंडी जानो।

२ तुंडकेशरीलक्षण–कफलोहि से तालुकीजडसेउत्पन्नहुआशोथ दाह, पीडा और पाकको उत्पन्न करताहै उसेतुंडकेशरीरोगजानो

ध्रुवलक्षण–तालुमें लाल शोथ होकर ज्वर उत्पन्न करे उसे ध्रुवरोग जानो।

कच्छपरोगलक्षण–कफ के कारण से तालुमें कछुएके आकारका वेदनारहित शोथ हो उसे कच्छपरोग जानो।

५ तालवर्बुदलक्षण–तालुमें कमलाकार बड़ा अंकुर होजावै उसे तालवर्बुद जानो।

६ मांससंघातलक्षण–तालुमें पीडारहित विकारी मांस बढ़े उसे मांससंघातरोग जानो।

७ तालुपुप्पुटलक्षण–तालुमें पीडारहित बेरके समान शोथहो आवे उसे तालपुप्पुटरोग जानो।

८ तालुशोषलक्षण–तालू सूखकर फटजावे और श्वास चढे तो तालुशोष जानो।

९ तालुपाकलक्षण–गर्मी में तालु विशेष पक जाता है उसे तालुपाकरोग जानो इति तालुरोग।

कंठरोगलक्षण—कंठमें १ वातजारोहिणी २ पित्तजारोहिणी ३ कफजारोहिणी ४ सन्निपातजारोहिणी ५ रक्तजारोहिणी ६ कंठशालूक ७ अधिजिह्वा ८ वलय ९ बलास १० एकवृंद ११ वृंद १२ शतघ्नी १३ गिलायु १४ गलाविद्रधि १५ गलौघ १६ स्वरघ्न १७ मांसतान और १८ बिदारी ये अठारह रोग होते हैं।

१ वातजारोहिणीलक्षण—सर्व जिह्वा में विशेष पीडा होकर मांसांकुर निकल आवें इस कारण से कंठ रुककर वातकेसमस्त उपद्रव हों तो वातजारोहिणी जानो।

२ पित्तजारोहिणी—जिसका गला पककर दाह और ज्वर युक्त हो तो पित्तजारोहिणी होतीहै।

३ कफजारोहिणी—जो कंठको रोककर गलेमें अचलांकुर युक्त धीरे धीरे पकनेवाली फुन्सी हों तो कफजारोहिणी जानो।

४ सान्निपातजारोहिणी लक्षण—गलेके भीतर ही पकनेवाली और उक्त तीनों दोषोंके लक्षणयुक्त ग्रन्थी हो तो सन्निपातजारोहणी जानो यह असाध्य होती है

५ रक्तजारोहिणीलक्षण—जो गले में शीघ्रपाकी छोटे२ फोडेहों और पित्तजारोहिणीके भी लक्षण हों तो रक्तजारोहिणी जानो

६ कण्ठशालूकलक्षण कफसे गलेमें जंगलीबेरकागुठलीसमानखरखरी अचल कांटेसीगढनेवाली गठान हो तो कंठशालूक जानो

७ अधिजिह्वालक्षण—रक्तमिश्रित कफके जीभ पर जीभकी अनी समान सूजन उत्पन्नहो उसे अधिजिह्वा कहते हैं यदि यह सूजन पक जावे तो अच्छा होना ईश्वराधीन है।

८ बलयलक्षण—कंठमें रहनेवाला कफ गल में लम्बी चौडी ऊंची अन्न जल जाने के मार्गको रोकनेवाली गठान उत्पन्न करता है उसे वलयरोग कहते हैं।

९ बलासरोगलक्षण- वर्धित कफ और वायु गलेमें श्वास तथा पीडायुक्त सूजन उत्पन्न करते हैं उसे बलास कहतेहैं यह मर्म स्थानको छेदन करनेवाला अति कठिन रोग होता है।

१० इकवृन्दलक्षण—कफ और रक्तके कोपसे गले में गोल ऊंचे किनारोंकी दाह तथा खुजालयुक्त पकनेपरभी कठिन ऐसी एक सूजन उत्पन्न होती है इसे एकवृन्दरोग कहते हैं।

११ वृन्दरोगलक्षण—पित्तरक्तके कोपसे गलेमें ऊंचा अति दाह तथा ज्वरयुक्त पीडा रहितसूजन उत्पन्न हो उसे दन्दरोगकहतेहैं यदि इसमें सुई चुभनेके समान पीडा होतो वातज जानो।

१२ शतघ्नीरोगलक्षण—त्रिदोषसे गलेमें बत्तीके समान कंठरोग वाली मांसके अंकुरोंसे घिरीहुई कठिन अनेक प्रकारकीपीडा देने वाली जो सूजनहो उसे शतघ्नी कहतेहैं यह प्राणहारणी होतीहै

१३ गिलायुरोगलक्षण—कफ औररुधिरसेगलेमें आंवलेकीगुठली समान,अचल,अल्प पीडायुक्त एक गठान होतीहै जिससे गले में कुछ अटका सा जान पडता है ये लक्षण गिलायुरोग के हैं।

१० गलविद्रधिलक्षण—गलेमें त्रिदोषसे सब प्रकारकी पीडा करनेवाला शोथहो उसे गलविद्रधि कहते हैं इसके सब लक्षण त्रिदोष विद्रधिके समान होते हैं।

१५ गलौघलक्षण-कफ रक्तसे गलेमें अन्न जल और श्वासको भी रोकने वाला तीव्र ज्वरयुक्त बडा शोथ (सूजन) हो उसे गलौघरोग कहते हैं।

१६ स्वरघ्नरोगलक्षण गलेमें वायु (हवा) के निकलनेकामार्ग कफसे रुककर गला घरघराने लगे और श्वास लेनेमें भी क्लेश हो उसे स्वरघ्नरोग जानो।

१७ मांसतानरोगलक्षण-त्रिदोषसे सब गलेमें फैलने वालाअति

कष्टकारक, लटकता हुआ शोथ होकर गलेको रोक लेता है उसे मांसतान कहते हैं।

१८ विदारीलक्षण–पित्तसे गलके भीतर दाह, तीव्र वेदनायुक्त शोथ (सूजन) होकर दुर्गंधियुक्त मांसको गला२ कर गिराता है, जिससे रोगी किसी करवटपर ही सोता रहताहै उसे विदारी रोग कहते हैं. इति कण्ठरोग.

सर्वमुखरोग–सब मुखके भीतर १ वातजसर्वसर, २ पित्तजसर्वसर और ३ कफजसर्वसर ये तीन रोग होते हैं।

१ वातजसर्वसरलक्षण–मुखमें सुई टोंचने की सी पीडायुक्त छाले होजावें उसे वातजसर्वसररोग जानो।

२ पित्तजसर्वसरलक्षण–पीले तथा लालवर्णवाले दाहयुक्त छाले सर्व मुख भरमें होजावे तो पित्तजसर्वसररोग जानो।

३ कफजसर्वसरलक्षण–पीडारहित, खुजालसहित. चर्मके वर्ण समान वर्ण वाले छालों से मुख भर जावे तो कफज सर्वसर रोग जानो इसप्रकार सब ६७ मुखरोग हैं।

मुखरोगके असाध्यलक्षण-ओष्ठरोगोंमें १ मांसज,२ रक्तजऔर ३ त्रिदोषज,दन्तमूलरोगोंमे१सन्निपात,२ नाडीव्रणऔर३ सौषिर दन्तरोगोमें १ श्यावदंत, २ दालन और ३ भंजन जिह्वा रोगों में अलास, तालुरोगमें १ अर्बुद,गलरोगोंमें१स्वरघ्न.२ वलय ३ वृन्द, ४ बलास, ५ विदारी, ६ गलौघ. ७ मांसतन, ८शतघ्नी९ रोहणी ये रोग असाध्य हैं इनपर चिकित्सा करो तो भी प्रथम कहदो कि ये रोग अच्छे न होंगे इति मुख रोगनिदानम्।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे मुखरोग लक्षण निरूपणं नाम चत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४० ॥

स्त्रीरोगनिदान.

अथात्र प्रदरादीनां स्त्रीरोगाणां यथाक्रमात् ॥
विधुवेदे तरंगे वै निदानं कथ्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थ–अब हम इस इकतीलासवें तरंग में स्त्रियों के प्रदर आदि रोगों का निदान यथा क्रमसे कहते है ।

प्रदररोगोत्पत्ति–भोजनपर भोजन अति मैथुन, अति, शोक, अति सवारी (वाहानरोहण) लंघन उपवास. भारउठाना दिनको सोना इन कार्योंको बिशेष करनेसे और गर्भपात तथाचोटलगनेसे. स्त्रियोंके १ वातज २ पित्तज, ३ कफज और ४ सन्निपातज ऐसें चार प्रकारका प्रदररोग होता है ।

प्रदरसामान्यलक्षण–योनिसेबिनामासिकधर्म हीनानाप्रकारका रुधिर (लोहु) निकलने और उसके निकलने से हडफूटन पीडा होतो प्रदररोग जानो ।

१ वायतजप्रदरलक्षण–योनिसे रूखा, फेनयुक्त, मांसके धोवन सदृश रक्त बहै तो उसे वातप्रदररोग जानो ।

२ पित्तजप्रदरलक्षण - योनिसे उष्ण,लाल, पीलिया नीला तथा काले वर्णका, शरीरमें दाह तथा पित्तजन्य व्याधिकारक अधिक लोहू बहै तो पित्तजप्रदर जानो ।

३ कफजप्रदरलक्षण–योनिसे आंवके या चांवलों के मांडके तथा कुदई तथा साठीचांवलोंके धोवन समान पांडुवर्णवाला रुधिर बहैतो कफजप्रदर जानो ।

४ सन्निपातप्रदरलक्षण—योनिसे मधु या घी मज्जा(चर्बीके) समान, दुर्गंधित. हरतालसमानवर्णवालालोहू बहैतोसन्निपातप्रदर जानो,यहअसाध्यहै; प्रदरके उपद्रव,प्रदररोगयुक्ता स्त्रीकोदुर्बलता

थकावट, मूर्छा, तृषा, दाह प्रलाप, देह का वर्ण पीला, तंद्रा और बातरोग होतो निश्चय करो कि अब प्रदर का अति वेग है ।

प्रदरके असाध्यलक्षण—योनिसे निरंतररुधिर बहताहीरहेऔरउक्त उपद्रवसहित होतो असाध्य जानो, इसका अच्छाहोना कठिन है

शुद्धार्तवलक्षण—योनिसेयथार्थ मासानुमास,चिकनाईजलनऔर पीडा रहित न थोडा न बहुतकिंतुयथायोग्य लोहूबहताहुआ पांच दिनतक दृष्टि पडे तो शुद्धार्तव जानो तथा योनिसे खरगोश के रक्त समान या लाखके रसके समान वर्ण वाला जो कि पानीसे धोयेपर कपडेसे निकलजावे जिसका कुछभी चिह्न न रहे ऐसा दाह रहित लोहू प्रथम कथित नियत दिनों तक बहै तो अति शुद्ध रज विकाररहित जानो, इति प्रदररोग ॥

सोमरोग

सोमरोगोत्पत्तिकारण-अति मैथुन, अतिशोक, अतिश्रम, अति रेचक सेवनसे गर (कृत्रिम बिष) के संयोगसे सर्व शरीरकाजल क्षुभित होकर योनिद्वार से बहने लगता है जिससे स्त्री बारंबार अत्यंत मूतने लगती है इसे सोमरोग कहते हैं.

सोमरोगलक्षण-योनिसेस्वच्छ, निर्मल,ठंडा निर्गंध पीडारहित और श्वेतमूत्र बारंवार उतरे जिससे वह स्त्री सर्वदा सुखहीनदुर्बल मस्तक शिथिल, मुख तालुका सूखना, मूर्छा, जमुहाई, प्रलाप त्वचा रूखी तथा भक्ष्य. भोज्य और जलपान से अतृप्ति इन लक्षणोंयुक्त होजाती है ये लक्षण सोमरोगके जानो शरीरको शरीरस्थ जलनेधारणकर रक्खाहै इसलिये उस जलकी सोमसंज्ञा है। उसके क्षीण होने से स्त्रियोंके सोमरोग होता है ।

---

१ सोमरोग पुरुषों के भी होजाता है जिसे रत्नावली ग्रंथमें बहुमूत्र तथा त्रिसूति नामसे भी माना है ।

मिथ्या आहार बिहार करने से वात, पित्त कुपित होकर स्त्रियों की योनिमें २०प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं उन रोगोंयुक्त होनेसे वह योनि १ उदवृत्ता,२ बंध्या, ३ विप्लुता,४ परिप्लुता५ वातला ६लोहितक्षरा,७दुःप्रजाविनी,८ वामिनी, ९ पुत्रघ्नी. १० पित्तला ११ अत्यानंदा, १२ कर्णिनी, १३ चरणा. १४ अतिचरणा १५ श्लेष्मला; १६ अस्तनी, १७ षंडी १८ अंडिनी, १९ विवृत्ता और २० शूचीवक्त्रा कहाती है।

१ उदावृत्तायोनिलक्षण–जिस योनि से रजोधर्मके समय अति कष्टसे झाग युक्त रुधिर निकले उसे उदावृत्तायोनि जानो।

२ बंध्यायोनिलक्षण–जिस योनिसे महीनेके महीने रुधिरनबहै (रजोधर्म न हो) तो उसे बंध्यायोनि जानो ऐसी स्त्रीके बालक न होने से वह स्त्रीभी बन्ध्या (बांझ)कहातीहै।

३ विप्लुतायोनिलक्षण–जिस योनि में नित्य ही पीडा होती रहे उसे विप्लुतायोनि जानो।

४ परिप्लुतायोनिलक्षण–जिस योनि में मासिकरज (लोहू) बहते समय अत्यन्त पीडा हो उसे परि लुप्तायोनि जानो ।

बातलायोनिलक्षण–जो योनि कठोरहो और शूल चले तो वातलायोनि जानो, ये पांचों योनिरोग दूषित बादी से होतेहैं।

६ लोहितक्षरायोनिलक्षण–जिस योनि से दाह युक्त रुधिर निकलता रहे उसे लोहितक्षरायोनि जानो।

दुःप्रजाविनीयोनिलक्षण-जो योनि झरती रहे और मैथुनसमय अति घर्षण होनेसे बाहरको निकल आवै तो दुःप्रजाविनीयोनि कहाती है इस योनिवाली स्त्रीको संतान होनेमें बड़ा कष्ट होता है इसे प्रसंसिनीयोनिभी कहते हैं।

८ वामनीयोनिलक्षण-जिस योनि से पवन और रुधिर युक्त वीर्य निकले उसे वामनीयोनि जानो ।

९ पुत्रघ्नीयोनिलक्षण-जो योनि रक्तक्षयसे रहे, गर्भ को गिरा देती है सो पुत्रघ्नी योनि कहाती है ।

१० पित्तलायोनिलक्षण-जो योनि दाहयुक्त होकर पक जावे और शरीर में ज्वर उत्पन्न करदे उसे पित्तलायोनि कहते हैं, ये पांचों योनिरोग दूषित पित्तसे होते हैं ।

११ अत्यानंदायोनिलक्षण-जो योनि अत्यन्त मैथुन से भी संतुष्ट न हो उसे अत्यानंदा जानो ।

१२ कर्णिनी योनिलक्षण-जिस योनि में कमल [योनिफूल] के चहूं ओर कर्ण फूलके समान मांसकी [ककनी किनारी] सी बनजावे उसे कर्णिनीयोनि जानो ।

१३ चरणायोनिलक्षण-जो योनि मैथुल करने में मनुष्य से पहिले ही स्खलित हो जाती है सो चरणायोनि कहाती है ।

१४ अतिचरणायोनिलक्षण-जो योनि अत्यन्यमैथुनकरनेपरभी मनुष्यसे पीछे खलास (स्खलित) होसोअतिचरणायोनिकहातीहै

१५ श्लेमलायोनिलक्षण-जो योनि अति चिकनी खुजालयुक्त और ठंडी रहै उसे श्लेष्मलायोनि जानो, ये पांचों योनि रोग दूषित कफ से होते हैं ।

१६ अस्तनीयोनिलक्षण-जो स्त्री रजस्वला न हो और स्तन छोटे होवें उसे अस्तनीयोनि जानो, बहुतसी स्त्रियों के मासिक धर्म होकरभी अस्तनीयोनिरोगसे छोटेही स्तन रहजाते हैं ।

१७ षंडीयोनिलक्षण-जो योनि मैथुन करने में खरखरी मालूम हो उसे षंडीयोनि जानो ।

१८ अंडिनीयोनिलक्षण-छोटीअवस्थावाली स्त्रीकीयोनिमें बड़े

लिंगवाले पुरुष के संग होनेसे जो योनि अंडे के समान लटक आवे उसे अंडनीयोनि जानो।

१९ विवृतायोनिलक्षण–जो योनि बडी हो और फैली रहै उसे विवृता या महतीयोनि जानो।

२० शूचीवक्त्रायोनिलक्षण–जिस योनि का बारीक छेद हो उसे शूचीवक्त्रायोनि जानो। इति स्त्रीयोनिरोग।

योनिकन्दरोगोत्पत्ति–दिनको अति शयन, क्रोध, श्रम, मैथुन इनके करने से तथा योनिमें नख, दंत आदि के लगनेसे वातादिदोष कुपित होकर योनिकंदरोगको उत्पन्न करते हैं।

योनिकंदरोगस्वरूप योनिमें रुधिरयुक्त पीववाली गूलरके फल समान एकगठान उत्पन्नहोतीहै उसेयोनिकंद कहतेहैं, यह रोग १ वातज, २ पित्तज, ३ कफज, और ४ सन्निपातज ४ प्रकारका होताहै

१ वातजयोनिकंदलक्षण—योनि में रूखी, विवर्ण (फूटीफटीसी जो गठान हो उसे वातयोनिकंदरोग जानो।

२ पित्तजयोनिकंदरोगलक्षण–योनि में दाह, ललाई और ज्वरयुक्त जो गठानहो उसे पित्तजयोनिकंदरोग जानो।

३ कफजयोनिकंदलक्षण योनिमें अलसीके नीले पुष्पसमान खुजालयुक्त जो गठान हो तो उसे कफजयोनिकंदरोग जानो।

४ सन्निपातजयोनिकंदलक्षण-योनिमेंउक्ततीनोंदोषों के लक्षण युक्त गठान हो तो सन्निपातजयोनिकंद जानो, इसरोग वाली स्त्रीका रजोधर्म बंद होजाने से वह वंध्या (बांझ) हो जाती है इति योनिकंदरोगनिदानम्।

अथ गर्भस्रावगर्भपातरोगोत्पत्तिः

अति मैथुन, मार्गगमन, सवारी पर चढ़ना, दौडना उपवास अजीर्णपर भोजन करने से, वमन याविरेचनकेलेनेसेज्वरकेआने

तथा उदरपीडा से तथा तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, रूखी वस्तुओं के भक्षण, विषमाशन और भय इन कारणों से पेटमें शूल चलकर स्त्रीका गर्भस्राव तथा गर्भपात होता है।

गर्भस्रावगर्भपातलक्षण गर्भ रहनेके दिनके चार मास पर्यंतका गर्भ गिरनेको गर्भस्राव कहते हैं, और चार मास उपरांत पांचवें तथा छटे महीनेमें गर्भ गिरे तो गर्भपात कहाताहै, जैसे वृक्षके लगे हुए या कच्चे पक्के फल हवा के वेगसे या वृक्षके हिलाने से अपने गिरनेके समयसे पूर्वही तत्क्षण गिरपडतेहैं इसीप्रकारउक्त कारणोंसे गर्भभी उत्पन्न होनेके समयसे पूर्वही गिर पडता है, इसलिये स्त्रियों को चाहिये कि उक्त मिथ्या आहार विहार न करें। इति गर्भस्राव व गर्भपात निदानम्।

शुष्कगर्भलक्षण—जिस स्त्री का उदर पूर्ण न दृष्टि पडे तो जानो कि इसका गर्भ वायुसे सूख गया,

मूढगर्भरोगोत्पत्ति—अपने कारणोंसे कुपितवायु गर्भाशयमेंरुक कर गर्भकीगतिकोरोकताहैं उसेमूढगर्भकहते हैं इससे योनि, पेट कमर आदिमें शूल और मूत्रभी रुकजाता है, तब वहगर्भदूषित वायुसे टेढा होकर योनिसे निकलनेके समय योनिद्वारको१ मस्तकसे, २ पांवसे, ३ या शरीरके कुबडेपनसे, ४ तथा एक हाथ से ५ वा दोनों हाथोंसे,६तथा टेढा होनेसे, ७नीचेकोमुख होनेसेऔर ८ पसुरियों के टेढे होने से ऐसी अपनी आठप्रकार की गतिसे रोकता है, इसे मूढगर्भकी इन उक्त गतिसे व्यतिरिक्त १ कीलक २ प्रतिखुर. ३ परिघ और ४ वीजक ये चार गति और होनेसे इन नामोंयुक्त मूढगर्भ कहाता है।

१ कीलकमूढगर्भलक्षण—जो हाथपांवऊंचेकरकेमस्तक से योनि मुखको कीलसदृश रोक लेता है सो कीलकमूढगर्भ कहाता है।

२ प्रतिखुरमूढगर्भ लक्षण-जो दोनों हाथ पांव बाहर निकलकर मध्य शिरसे योनिमुखपर रुकजाताहै सो प्रतिखुरमूढगर्भकहाता है

३ बीजकमूढगर्भलक्षण-जो दोनों भुजाके मध्यमें मस्तक रखके योनि मुखपर अड जाता है, सो बीजकमूढगर्भ कहाता है।

परिघमूढगर्भ लक्षण-जो द्वार की अरगल के समान आडा होके योनि द्वार पर अड जाता है सो परिघमूढ गर्भ कहाताहै

मूढगर्भके असाध्यलक्षण-जिस गर्भणीका मस्तक झुका, शरीर ठंडा, लज्जा का अभाव और कुक्षि की नसें नीली होगई हों तो जान लो इसके गर्भ का वालक और ये दोनों नाश हो जावेंगे।

गर्भमें वालकके मरजानेकेलक्षण-पेटमेंवालकका हिलना, चलना प्रसूतिकाल के चिह्न जैसे योनिसे मूत्रादिकोंकास्राव तथापीडोंका चलना ये न हो, गर्भणी के शरीर का वर्ण काला, पीला, यापांडु होजावे और उसके मुखकी श्वासमें मुर्देकी सी दुर्गंध आवे पेटमें शूल चले तो जान लो कि इसके गर्भ में वालक मर गया।

गर्भमें वालक के मरनेके कारण-माताको बंधु धनादिके नाश वियोगजन्य मानसीदुःखहोनेसे चोटलगने, संबन्धी आगंतुकदुःख होनेसे या रोगोंसे गर्भपीडित होकरवहवालककूखमें मरजाता है

गर्भिणीके असाध्यलक्षण-कूखमें गर्भका चिपटना, योनिसंवरण रोग, मक्कलरोग और स्वासकासादि उपद्रव युक्त मूढगर्भ ये सब स्त्रियोंके नाश करने वालेही जानो।

१योनिसंवरणरोगलक्षण-वातल अन्नपान, मैथुन, रात्रिजागरणादिक करनेसे गर्भिणीस्त्रीकेयोनिनिवासी वायुकुपितहोकेयोनिमार्गको संकुचित कर देता है और ऊर्ध्वगतिसे कोठेमें जाके गर्भको पीडित करता हुआ गर्भाशयका द्वार रोकलेताहै तव गर्भकामुख बंद होने से श्वास रुकके वह वालक मरजाता है, पेटमें उस मृत

बालक के फूलने से गर्भिणी के सब मार्ग रुकने से उसका हृदय रुककर वह मरजाता है, इसे योनि संवरणरोग जानो, किसी ग्रंथ में लिखा है कि यह मृत्युरूप रोग है।

२ मक्कलरोगलक्षण—प्रसूता स्त्रीकेमिथ्या आहारविहारसेवायु कुपित होकर गर्भाशयसे निकले हुए रुधिरको रोकके उसके हृदय मस्तक और पेडूमें शूल उत्पन्न करता है इसे मक्कलरोग कहते हैं. इति मूढगर्भनिदान.

अथ सूतिकारोगोत्पत्ति,

मिथ्या आहार बिहारसे. क्लेश से विषमाशनसे औरअजीर्णमें भोजन करने से प्रसूता स्त्री (जिसके बालक उत्पन्नहोगयाहो उस स्त्री)को प्रसूतिरोग उत्पन्न होता है जिसे लोकमें जापेका तथा प्रसूतका रोगभी कहते हैं।

सूतिकारोगलक्षण—प्रसूता स्त्रीके अंगका टूटना. ज्वर, शरीरका कांपना, तृषाः जडता. सूजन पेटमें शूल, खांसी, और अतिसार ये लक्षण हों तो जानलो कि इसके सूतिकारोग होगया।

विशेषतः-पेटका अफरना. तंद्रा. बलनाश, अन्नपर अरुचि पसीनेका छूटना तथा सूतिकारोगोक्तज्वरादि औरकफवातसंबंधीरोग मांस जठराग्नि और बलके नाश होनेसे कष्टसाध्य होजाते हैं, इसी लिये इनको सूतिका के उपद्रव भी कहते हैं इति सूतिकारोग

स्तनरोगोत्पत्ति—दुग्धयुक्त या दुग्धरहित स्त्रीके स्तनोंमें स्वकारणोंसे कुपित वायु, पित्त, और कफ प्राप्त हो मांसको दूषित करके १वातज, २पित्तज, ३ कफज, ४सन्निपातज और ५ आगंतुकऐसे पांच ग्रंथीरूपी स्तनरोग उत्पन्न करते हैं इन पांचोंके लक्षण रक्त विद्रधिके बिना बाह्यविद्रधियोंके समान जानो, इति स्तनरोग.

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे स्त्रीरोगलक्षण निरूपणं नामैकचत्वारिंशस्तरंगः॥ ४१ ॥

अथ बालरोगमंथज्वर ।

हेतुं कुमाररोगाणां तथा मंथज्वरस्य च ।
नेत्र वेदेतरंगेऽस्मिन् कथ्यते हि मया क्रमात् ॥१॥

भावार्थः-अब हम इस बयालीसवें तरंग में बालरोग औरमंथ ज्वर (मोतीझर, पानीझर) का निदान क्रम से लिखते हैं ।

बालरोगोत्पत्ति-धात्री (दूध पिलानेवाली माता या कोई अन्य स्त्री) के गरिष्ठादि मिथ्या आहार विहारसे वातादि दोष कुपित होके दूधको बिगाड देतेहैं तब उस दूधसे बालकको अनेक रोग पैदा होते हैं, जिनमें वातदूषित दुग्धपानसे वातरोग, पित्त दूषित दुग्धपानसे पित्तरोग और कफदूषित दुग्धपानसे कफरोग होतेहैं

अथ दुग्ध परीक्षा॥

१ वातदूषितदुग्धलक्षण-जो दूध स्वाद में कषैला और पानी पर तिरजावे उसे वातदूषित दुग्ध जानो ।

२ पित्तदूषितदुग्धलक्षण-जो दूध, कडुवा, खट्टा,सलोना और पीली रेखाओं से युक्त हो उसे पित्तदूषित दूध जानो ।

३ कफदूषितदुग्धलक्षण-जो दूध चिकना और भारी [पानीमें डूबने वाला]हो उसे कफदूषित दुग्ध जानो,इसप्रकार दो दोषोंके लक्षणयुक्त होनेसे द्विदोष दूषित और तीनों दोषों लक्षणयुक्त को त्रिदोष दूषित जानो ।

४ शुद्ध दुग्धलक्षण-जो दूध मीठा,श्वेत,पानीमें मिलाने सेभी अपने रंगको न छोडके एकसा होजाने वाला,देखनेमें भीनिर्मलहो उसे दोषरहित शुद्ध दूध जानो, शुद्ध दूध पीनेसे बालक बलयुक्त और रोगरहित तथादूषित दुग्धसे बलहीन रोगयुक्त होजाताहैयह दूधकी परीक्षा पुराने अमृतसागर में नहीं थी परन्तु हमने

अन्य वैद्यक ग्रंथोंसे लिखी है, इसी प्रकार अनेक बातें जो कि पुराने अमृतसागरमें नहींथी और हमने इस नूतन अमृतसागरमें ग्रंथांतर से लिखीहैं जिनकी सूचना कहीं दी और कहीं नही भी दी है परन्तु बिद्वान पुरुष स्वयं जान लेवेंगे, अब वातादि दोष दूषित दूध पीनेसे जो रोगयुक्त बालक होजाता है सो दर्शाते हैं जिसे निम्नलिखित प्रकारसे जानो ।

१ वातदूषितदुग्धपानलक्षण क्षीण, श्वेत,मुख,कृश,शरीर ,मल-मूत्रका रुकना आदि और भी वादीके रोगायुक्त लक्षण दृष्टिपडें तो जानलो कि इसे वातदूषित दुग्धपान से रोग हुए हैं ।

२ पित्तदूषितदुग्धपानलक्षण–पसीना मल पतला, शरीर पीला अति तृषा और अंग उष्ण आदि पित्तरोगयुक्त लक्षणदृष्टि पडेंतो जानो कि पित्तदूषित दुग्धपान से यह बालक ऐसा रोगी हुआहै।

३ कफ दूषितदुग्धपानलक्षण–लार अधिक गिरे, नींद अधिक आवै, शरीर सूना, भारी, श्वेत नेत्र, वमन, कास श्वास आदि कफरोगयुक्त लक्षण दृष्टि पडें तो जान लो कि कफदूषित दुग्ध पीनेसे यह बालक ऐसा रोगी हुआ है ।

इसीप्रकार दो दोषदूषित दुग्धपानसे दो दोषोंके लक्षण औरतीन दोषदूषित दुग्धपान से तीनो दोषोंके लक्षणको विचारलो बिशेषतः ज्वरादिसमस्त रोग बालकोंकोभी बडे मनुष्योंके समानही होतेहैं परन्तु उनसे अलग जो रोग बालकों के होतेहैं उनको दर्शातेहैं.

बालकोंको १ कृमिजन्यज्वर, २ कुकूण ३ पारिगर्भिक ४ ताल कंटक, ५ महापद्म, ६ तुंढीगुदापाक ७ अहि पूतना, ८अजगल्ली, ९ दंतरोग १० बालग्रह और ११ मातृकादोष ये ग्यारह रोग प्रायः होते हैं ।

१कृमिजन्यज्वरलक्षण–बालकोंके समान्यज्वरादि रोग उसके

रुदनादिसे ही ज्ञात होते हैं शरीर विवर्ण, पेटमें शूल, हृदय पीडा वमन, भ्रम, भोजन में अरुचि और अतिसार इन सहित ज्वर हो तो कृमि से उत्पन्न हुआ जानो ।

२कुकूणरोगलक्षण–दुग्धदोषसे बालकोंके नेत्रोंकी पलकोंमेंकुकूण रोग होताहै,इसकेहोनेसे नेत्रोंमेंखुजाल और उसमें पानीका बहाव होकरबालकललाट,नेत्र,पीठ और नासिकाकोघिसतातथासूर्यादि के तेजको देखने और नेत्रों के खोलने मूंदने में असमर्थ होताहै ।

३ पारिगर्भिकरोगलक्षण–गर्भवतीमाताके दुग्ध पीनेसेबालकको कास, मंदाग्नि, उलटी, तंद्रा, कृशता अरुचि और भारीपन हो जाता है ये लक्षण हों तो परिगर्भ रोग जानो ।

४ तालुकंटकलक्षण–कुपित कफसे तालुकेमांसमें तालुकंटकरोग होताहै, जिससे तालुके ऊपर कांटेहोके बैठ जानेसे बालक माता के स्तनोंको नहीं पीता,यदि पीये भी तो बडेकष्टसे,उसकामल पतला,वांति नेत्र, कंठ और मुख रोगयुक्त होकर अपनी गरदन भी नहीं संभाल सक्ताये लक्षण हों तो तालुकंठ रोग जानो ।

५ महापद्मविसर्पलक्षण–त्रिदोष से बालकके पेडू या मस्तक में कमलके आकारकनपटीसे हृदय पर्यंत जाने वालाया हृदय से गुदा पर्यन्त जाने वाला ऐसा महापद्मविसर्प रोग होता है, इस रोग से बालक नहीं बचता ।

६ तुंडी गुदापाक रोग लक्षण–बालक की गुदा पककर नाभि में पीडा अधिक हो तो तुंडी गुदापाक जानो ।

७ अहिपूतनारोगलक्षण–जिस बालककी गुदा सर्वथा मलमूत्र युक्त तथा लालही रहे जिसके धोने या पोंछने तथा तपाने से उस में खुजाल उठकर फोडा होजावे और गुदा से झरता रहे तो अहिपूतना रोग जानो ।

८ अजगल्लीरोगलक्षण-जिससे शरीर में चिकनी लाल मूंगे प्रमाण, पीडारहित बहुतसी फुनसियां हो जावें उसे अजगल्ली रोग कहतेहैं, अहिपूतना और अजगल्लीके विशेष लक्षणदेखना चाहो तो क्षुद्ररोगके निदान में देखो ।

९ दन्तरोगलक्षण-बालक के दांत निकलते समय ज्वर; अनेक वर्णका विरेचन, वमन क्षीणता मस्तकपीडा नेत्रपीडा औरचक्कर आना इत्त्यादि लक्षण दृष्टि पडें तो जानो कि दन्तरोगहैं. ये सब लक्षण प्रत्येक बालकको दन्त निकलने के समय होते और प्रत्येकके दन्त निकल जानेपर शांत भी हो जाते हैं ।

बालकरोगनिश्चय-बालक बोलनेको असमर्थ होताहै इसलिये उसके रोगोंको जानने के उपाय कहतेहैं, १ बालकपीडाकीन्यूनाधिक्यताको बालकके थोडे बहुत रोनेसे जानो थोडा रोवैतोथोड़ी पीडा और बहुत रोवे तो अधिक जानो २ बालकके जिस अंगमें हाथ लगानेसे वह रोवे या चमकेतो उसके उसीअंगमें पीडा जानो ३ बालक नेत्र न खोले तो उसके मस्तक में पीडाजानो. ४ जीभ और होठोंको दबावे दांत पीसै स्वास ले और मुट्ठी बांधेतो बालकके हृदय में पीडा जानो ५ मल मूत्रका रुकना उलटी आंतों का बोलना पीठका और पेटका फूलना या नबना और माता के स्तनोंका काटना ये लक्षण हों तो बालकके कोठेमें पीडाजानो ६ मल मूत्रका अवरोध होकर बालक घबराके चहूं ओर देखै तो उसके पेडूमें (मूत्राशय) अथवा इन्द्री तथा गुदादि गुह्यस्थान में पीडा जानो ।

विशेषतः-इन्द्रियोंको तथा पांव आदि अंगोंको और समस्त संधियोंके ६डे यत्नसे वारम्बार देखके रोगोंका निश्चयकरो, यदि

बालरोगोंसे तथा उनकी चिकित्सासे अधिक ज्ञात होना हो तो सुश्रुत में देखो ये बालरोग होने के उपाय माधवनिदानादि ग्रन्थों से हमने लिखे हैं।

बालग्रहरोग।

बालकोंको १ स्कंदग्रह, २ स्कंदापस्मार, ३ शकुनी, ४ रेवती ५ पूतना ६ अन्धपूतना, ७ शीतपूतना, ८ मुखमंडिका और ९ नैगमय ये नव बालग्रह ग्रहण करके पीडित करते हैं।

ग्रहगृहीत बालकके सामान्यलक्षण—बालक चमके, डरे रोवे, नख तथा दांतोंसे अपने तथा माताके शरीरको विदीर्णकरे, ऊपरकोदेखे दांत चावे, कूल्हे(कांखे) जमुहाई ले भौंहतथा ओंठ चलावे, मुखसे बारंवार फेन गिरावे, शरीर कृश रात्रि निद्रानाश, शोथ, मलका फूटना स्वरका बैठना अल्प आहार और शरीरमें मांस तथा रक्त के तुल्य दुर्गंध ये लक्षण हों तो जानो कि इस बालक को उक्त नव बालग्रहों में से किसी भी बालग्रह का कोप है।

१ स्कंदग्रहगृहीतलक्षण—जिस बालक का एक नेत्र वहै, एक ओरका अंग फरके कंपता रहे, ऊपरको टेढ़ा मुख करके देखे शरीर से रक्तकी सी वास आवे, दांत किरकिरावे, शिथिलताऔर दूध पर अरुचि होतो उसे स्कंदग्रहगृहीत जानो।

२ स्कंदापस्मारगृहीतलक्षण—अचेत पड़ा हुआ मुखसे फेनउगले सचेत होनेपर अत्यन्त रुदन करै और शरीरसे रक्त पीवकी सी दुर्गंध आवे तो उस बालकको स्कंदापस्मारगृहीत जानो।

३शकुनी ग्रहगृहीतलक्षण—जो बालक अंग शिथिल भय से चकित सर्वशरीर व्याधि दाह पाक और स्रावयुक्त फोड़ों से क्लेशित हो तो शकुनीग्रहगृहीत जानो।

४ रेवतीग्रहगृहीतलक्षण—जिसका शरीर फूटे हुए प्राचीन या

नवीन फोड़ोंसे पूरित हो जिनसे कर्दमकीसी दुर्गंधियुक्त बहै, मल फूटाहो, दाह और ज्वर भी हो तो उसे रेवतीग्रहगृहीत जानो ।

५ पूतनाग्रहगृहीतलक्षण–जो बालक अतिसार तृषा ज्वर, तिरछा देखना और निद्रा नाश इन लक्षणों से युक्त हो तो उसे पूतना ग्रहगृहीत जानो ।

६ अंधपूतनाग्रहगृहीतलक्षण–जो बालक वमन ज्वर कास तृषा शरीर में मज्जा (चर्बी) की सी बास और अत्यन्त रुदन युक्त हो उसे अंधपूतनाग्रहगृहीत जानो ।

शीतपूतनाग्रहगृहीतलक्षण–जो बालक कम्प कास क्षीणता नेत्ररोग दुर्गंधि वमन और अतिसारयुक्त हो उसे शीतपूतना ग्रहगृहीत जानो ।

८ मुखमंडिकाग्रहगृहीतलक्षण जो बालक प्रसन्नमुख सुन्दरवर्ण उघड़ी हुई नसोंसे व्याप्त बहुाशी (बहुत खानेवाला) हो और शरीरसे मूत्रकी बास आवैतो उसे मुख मंडिलकाग्रहगृहीत जानो ।

९ नेगमेयग्रहगृहीतलक्षण–जो बालक वमन पसीना कंठ और मुखशोष मूर्छा दुर्गंधियुक्त होकर ऊपरको देखता रहे उसे नैग ग्रहगृहीत जानो और इन्हीं लक्षणोंयुक्त डाकिनी दोष वाला बालक भी होता है ।

अथ द्वादशम तृका दोषनिदानम् ॥

१ नंदामातृकादोषलक्षण–बालक के जन्म होने पश्चात् १ दिन १ मास पहले वर्ष में ज्वर होकर वह बालक अधिक रोवै या अचेत होजावे तो नंदामातृका दोष जानो ।

२ शुभदामातृकादोषलक्षण–जन्मसे दूसरे दिन दूसरे मास दूसरे वर्ष बालकको ज्वरहो नेत्र नहीं मूंचे शरीर कँपे निद्रा न हो अत्यंत चिल्लावे और निश्चेष्ट ये लक्षण हों तो शुभदामातृकादोष जानो ।

३ पूतनामातृकादोषलक्षण-३ रे दिन, ३ रे मास, ३ रे वर्ष बालकको ज्वर, कंप, भाषणरहित मुष्टिका बांधना, चिल्लाना और आकाशकी ओर देखना ऐसे लक्षण हों तो पूतनामातृकदोष जानो

४ मुखमंडिकादोषलक्षण–चौथे दिन, चौथे मास, चौथे वर्ष बालक को ज्वर हो, ग्रीवा न झुके, नेत्र फटे रहें मुखसे बोले नहीं रोता रहे अत्यन्त सोवै, हाथकी मुठी बंधी रक्खे ये लक्षण हों तो मुखमंडिका मातृकादोष जानो

५ पूतनामातृकादोषलक्षण पांचवें दिन, पांचवें मास पांचवें वर्ष बालकके ज्वर, कंप, भाषणाभाव मुष्टिबंधन ये लक्षण हों तो पूतनामातृका दोष जानो ।

६ शकुनीमातृकादोषलक्षण-छटवें दिन, छटवें मास, ६ वें वर्ष बालक को ज्वर, कंप, रात्रिदिनक्लेश और ऊर्ध्व दृष्टि ये लक्षण हों तो शकुनीमातृका दोष जानो ।

७ शुष्करेवतीमातृकादोषलक्षण–७ वें दिन ७ वें मास ७ वें वर्ष बालक को ज्वर गात्र कंप, मुष्टि बंधन, अधिक रुदन, ये लक्षण हों तो शुष्करेवतीमातृकादोष जानो ।

८ नानामातृकादोषलक्षण-आठवें दिन, आठवें मास, आठवें वर्ष बालक को ज्वर, शरीरमें दुर्गंधि, आहारनाश, और गात्रकंप ये लक्षण हों तो नानामातृकादोष जानो ।

९ सूतिकामातृकादोषलक्षण–९ वें दिन ९ वें मास ९ वें वर्षबालकको ज्वर, शरीरपीडा और वमन हो तो सूतिकामातृकादोष जानो

१० क्रियामातृकादोष लक्षण-१०वें दिन १०वें मास १०वें वर्ष बालक को ज्वर कंप रुदन और मल मूत्र त्याग हो तो क्रियामातृकादोष जानो ।

१ पूतनामातृका पंचमदिनादिमें दोष कारणि और पूर्वोक्त पूतना ३ रे दिनादि में दोष कारिणी होने से इन दोनों को पृथक २ जानो ।

११ पिपीलिकामातृकादोष लक्षण-११ वें दिन, ११ वें मास, ११ वें वर्ष बालक ज्वरयुक्त और आहार हीन हो तो पिपीलिकामातृकादोष जानो ।

१२ कामुकामातृदोषलक्षण-१२ वें दिन, १२ वें मास, १२ वें वर्ष बालकको ज्वर हो, हँसे. वस्त्र आदिको हाथसे फेंकनेलगे पुकारे और अधिक श्वासलेतो कामुकामातृकादोषजानो. यहरावणकृत कुमारतंत्र चक्रदत्तमें लिखा है, इतिमातृकादोष इति बालरोग.

अथ मंथज्वरलक्षण

ज्वरो दाहो भ्रमो मोहो ह्यतिसारो वमिस्तृषा ।
अनिद्रा च मुखं रक्तं तालु जिह्वा च शुष्यति ॥ १ ॥

ग्रीवादिषु च दृश्यन्ते स्फोटकः सर्षपोपमाः ।
घृताशनात्स्वेदरोधान्मंथरो जायते नृणाम् ॥ २ ॥ क्षीरपाणि

भाषार्थः-मंथज्वर के लक्षण लिखते हैं, जिसे लोक मे मोती झिरा, मधुरा, मोती माता वा मोतीज्वरभी कहतेहैं यद्यपियहरोग ज्वर प्रकरणमेंही लिखते परन्तु यह बालकोंको ही विशेषकरके घी खाने और पसीनेके रोकनेसे, ज्वर, दाह, भ्रम, मोह अतिसार निकला करताहै इसलिये बालरोगके अंतमेंलिखते हैं, तरुणज्वर वांति, तृषा, निद्रानाश, मुखरक्ता, तालु जिह्वा शोष इन सहित गले के नीचे २ उतरते हुए सरसोंसमान मोतीसे दानेदृष्टि पडतेहैं उन्हें मंथज्वर कहते हैं ऐसा क्षीरपाणि ने कहा है ।

ज्वरस्तन्द्रा च नुर्यस्य दन्तौष्ठेषु च श्यामता ।
घ्राणजिह्वाकण्ठेषु रक्तताक्षि च कर्बुरम् ॥ १ ॥

मुक्ताहारो गले यस्य सप्ताहाद्धार्यते न चेत् ।
तात्रिसप्तादिनादर्वाक्स्फोटाः स्युः सर्षपोपमाः ॥ २ ॥ हारीत

भाषार्थः-हारीत ऋषि कहते हैं कि ज्वर, तंद्रा, दंत ओष्ठों में श्यामता, नासिका, जिह्वा, मुख और कंठमें रक्तता और नेत्र कर्बूर इन लक्षणोंयुक्त गलेमें मोतियोंके हार सदृश दानोंकी पंक्ति निकलती है ऐसे रोगीको ७ दिन तक मोतियोंका हार पहनाना चाहिये, यदि न पहनावे और स्वच्छतादिका ठीक प्रयत्न न रक्खे तो उसके २१ दिन भीतर अंगभरमें सरसोंके समान मोतीसे दानेहोजाते हैं, ये लक्षणहों तो बड़ा मोतीझिरा जानो इसे लोकमें पानीझिराभी कहतेहैं, तीनों दोषों के कोप से होनेके कारण कठिन रोग होताहै, विशेष उपद्रव न उठे तो कष्टसाध्य और उपद्रवहोने से असाध्य जानो, इससे आरोग्य होना परमेश्वर के स्वाधीनहै

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे बालरोगमंथज्वर लक्षण निरूपणं नाम द्विचत्वारिंस्तरंगः

क्लीवरोगः

कारणं क्लीबरोगस्य नृणां लज्जा प्रदस्य वै ॥
रामवेदे तरंगेऽस्मिन् कथ्यते च मया क्रमात् ॥ १ ॥

भाषार्थः-इस ४३ वें तरंगमें मनुष्योंको लज्जा प्राप्त करनेवाले क्लीब (नपुंसक, षंड) रोगका निदान क्रमसे कहते हैं।

अथ नपुंसक नाह:

आसक्यश्च सुगन्धी च कुंभिकश्चेर्ष्यकस्तथा ॥
अमीसशुक्रा बोद्धव्या अशुक्रः षण्डसंज्ञकः ॥ १ ॥

भाषार्थः अब जन्मसेही जो नपुंसक होतेहैं उनको दर्शातेहैं गर्भाधानके समय स्त्रीका रज और पुरुषकावीर्य ये दोनों समान होने से गर्भ नहीं रहताहै, यदि दैववशात् रहभी जावेतो यह

१ यह रोगों में राजाके समान है इस लिये मोतियों का हार पहिनना लिखा है

बालक नपुंसक (स्त्री और पुरुस से भिन्न)होता है, जोजन्मसे नपुंसक होतेहैं वे १ असेक्य, २ सुगन्धी, ३ कुंभिक ४ ईर्ष्यक ५षंढ पांच प्रकार के होतेहैं, इनमें पहिले चार वीर्य, सहित और पिछला (षंड) निर्वीर्यही होता है. और जो वातादि दोषों से तथा मनके बिकारसे नपुंसक होजाते हैं वे ७ प्रकारके होते हैं

१आसेक्य नपुंसकलक्षण-माता पिताके अत्यल्प (अतिन्यून) रज वीर्यके कारण आसेक्यनपुंसक होता है, जो कि अपने मुख में दूसरे से मैथुन करा के आप उसके वीर्य को पी जाता है तब उसका लिंग चैतन्य होताहै इसका दूसरानाम मुखयोनि भी है।

२सौगंधिनपुंसकलक्षण- जो दुर्गंधयुक्त योनिसे उत्पन्न होता है वह सौगंधिनपुंसक कहाता है। वह जब योनि और लिंग को सूंघता है तब मैथुन करने को समर्थ होता है इसका दूसरा नाम नासायोनिभी है।

३कुंभिकनपुंसकलक्षण-जो अपने गुदामें दूसरेसे मैथुन करवा ने पर स्त्री से मैथुन करने को समर्थ होताहै उसे कुंभिक नपुंसक तथा गुदायोनि भी कहते हैं।

४ईर्ष्यकनपुंसकलक्षण-जो दूसरेको मैथुन करता देखे तबआप भी मैथुनको समर्थ हो सो ईर्ष्यक या दृष्टयोनिनपुंसक कहाताहै

५षंडनपुंसकलक्षण—जो पुरुष अज्ञान से गर्भाधान के समय आप नीचे और स्त्रीको ऊपर करके मैथुन करताहै, उसके सकाश से पैदाहुआ बालक षंडनपुंसक कहाताहै, जिसका स्त्रीके सदृश (दाढ़ी , मुंछ रहित) आकार और स्त्रीसे चेष्टा (चटक मटक) तथा दूसरे अपना गुदा में मैथुनभी कराता है । इसके वीर्यक लेश मात्र भी न होनेके कारण आप किसी प्रकार मैथुन नहीं कर सक्ता ये पांच प्रकार के नपुंसक जन्म से ही होते हैं।

षंढास्त्रीलक्षण—ऋतुसमयमें स्त्री जो पुरुषको नीचे सुलाके आप ऊपर होके मनुष्य के समान मैथुन करै उसके गर्भ से यदि कन्या उत्पन्न हो तो वह पुरुष के सदृश बोल चाल करने वाली और दूसरी स्त्री को नीचे सुलाके उसकी योनि से योनि घिसने वाली होती है. ऐसे लक्षणों वाली स्त्री को षंढा कहते हैं।

अथ दोषमानसान्नपुंसकमाह.

क्लीवः स्यात् सुरताशक्त स्तद्भावः क्लैब्यमुच्यते।
तच्च सप्तविधं प्रोक्तं निदानं तस्यकथ्यते ॥ १ ॥ भा. प्र.

भाषार्थः—जन्म से ५ प्रकार के नपुंसक होते हैं उनको पहिले कह चुके, अब वातादि दोषोंसे तथा मनके बिगाडसे नपुंसक होते हैं उनको दर्शातेहैं जो पुरुष मैथुन करने में समर्थ न हो उसे क्लीव और उसक्लीवपनके भावको क्लैब्य कहतेहैं. अर्थात् जन्मसे नपुंसक न होके और पश्चात् नपुंसकता को प्राप्त हो, क्लैब्य ७ प्रकार का होताहै तिसका निदान कहते हैं।

१ मानसक्लैब्यलक्षण—मैथुन के समय भय शोक, क्रोध, लज्जा और शंका इन कारणों से अथवा मनको ग्लानि उत्पन्न करने वाली स्त्री से मनका उत्साह (हर्ष) नष्ट होकर लिंग शिथिल पड जाता है इसे मानसक्लैब्य कहते हैं।

२ पित्तजक्लैब्यलक्षण—पित्त बढ कर वीर्य को नष्ट कर देता है जिससे मनुष्य का लिंग शिथिल पड जाता है इसे पित्तजक्लैब्य कहते हैं।

शुक्रक्षयहेतुक्लैब्यलक्षण—जो पुरुष अत्यन्त मैथुन करै और बाजी करण औषधियों का सेवन न करै सो वीर्य की क्षीणता से नपुंसक होजाता है इसे शुक्रक्षयहेतुक्लैब्य जानो।

४ लिंगरोगजक्लैव्यलक्षण–लिंग में उपदंशादि रोग होने से जो नपुंसकताको प्राप्त होजाना है सो लिंगरोगजक्लैव्य कहाता है।

५वीर्यवाहीशिराच्छेदजक्लैव्य लक्षण–वीर्य को बहाने वाली नसके छिद जाने से जो नपुंसक होजाता है सो वीर्य वाहीशिराच्छदेजक्लैव्य कहाता है।

६ शुक्रस्तंभजक्लैव्यलक्ष–जो बलवान पुरुष मैथुनकी इच्छाहोने परभी वीर्यको रोकके ब्रह्मचर्यमें रहता वह वीर्यनिरोधनिमित्त से नपुन्सकताको प्राप्त होजाता है उसे शुक्रस्तंभजक्लैव्य कहते हैं.

७ सहजक्लैव्यलक्षण–जो जन्मसेही नपुंसक होता है सो सहज क्लैव्य कहाताहै इस सहजक्लैव्य के ५ भेद प्रथम कहचुके हैं.

असाध्यक्लैव्यलक्षण–वीर्य वाही शिराच्छेदजक्लैव्य और सहज क्लैव्य ये दोनों असाध्य और शेष क्लैव्य कष्ट साध्य जानो यह नपुंसकरोग का निदान हमने भावप्रकाश से लिखा है।

इति नूतनामृतसागरे निदानखंडे नपुंसकरोग लक्षण निरूपणं नाम त्रिचत्वारिं शस्तरंगः ॥ ४३ ॥

अथ स्थावरजंगमविषनिदानम्.

द्विविधस्य विषस्यात्र स्थावरस्य चरस्य च ।
तरंगे सिंधुवेदेहि निदानं कथ्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः–अब हम इस चवालीसवें अंतिम तरंग में स्थावर और जंगम विषका निदान कहते हैं।

स्थावरं जंगमं चैव द्विविधं विषमुच्यते ।
मूलात्मकं तदाद्यं स्यात्परं सर्पादिसंभवम् ॥ १ ॥

भाषार्थः–अब बिष का निदान लिखते हैं. स्थावर और जंगम भेद से बिष दो प्रकार का होता है जिसमें बृक्षादि से उत्पन्न हो सो बिष स्थावर और सर्पादिजनित जंगम बिष कहाता है।

१ स्थावरविषस्थिति-स्थावर विष १ वृक्षकी जड. २ पत्र ३पुष्प, ४ फल, ५ छाल, ६ दुग्ध, ७ सार, ८ रस (गोंद), ९धातुमात्र (हरतालादि) और कन्द (सिंगी मोहरा आदि) में रहता है

२ जंगमविषस्थिति-जंगम विष १ मनुष्योंकी दृष्टि २ सर्पादिकी श्वास तथा हाड. ३ श्वान, शृगाल आदिकी दाढ ४ सिंहव्याघ्रादिके नख तथा रोम ५ विशहरा (छिपकली) आदिके मलमूत्र ६ बंदर आदिके वीर्य, ७ पागल श्वान तथा शृगालादि केलार, ८ उष्ण वस्तु खानेवाली स्त्रीकी योंनि, ९ उष्ण वस्तु खानेवाले मनुष्यकी गुदा, १० नकुल (मुंगस) तथा मछलीके पित्त, ११ भंवरे आदिके डंक और मूषक के दांतमें रहता है।

स्थावरविषसामान्यलक्षण-हुचकी, दन्त खट्टे होना, गलाघुट ना, वमन फेनोंका गिरना. अरुचि, श्वास और मूर्छा ये उपद्रव हों तो स्थावरविषसंसर्ग जानो.

स्थावरविषभक्षणविशेषलक्षण

१ मूलविषलक्षण-विषहरे मूल (कणेहर आदिकी जड) भक्षण से देहमें ऐंठन प्रलाप और मोह होता है।

२ पत्रविषलक्षण-विषहरे पत्र भक्षण से जम्हुहाई, कँप, श्वास और मोह होता है।

३ पुष्पविषलक्षण-विषहरे पुष्प भक्षण से वमन, आध्मान और श्वास होता है।

४ फलविषलक्षण-विषहरे फल भक्षणसे मुख शोथ पर दाह और अन्नद्रोह होता है।

५ त्वचा, ६ सार ७ रसविषलक्षण-विषहरे त्वचा, सार औररस भक्षणसे मुखदुर्गंध शरीरमें खरखराहट शिरमें पीडा और कफ गिरता है।

८ दूधविषलक्षण–विषहरे वृक्षके दूध भक्षण से मुखसे फेनों का गिरना मल फूटना और जिह्वाका ऐंठना ये उपद्रव होते हैं।

९ धातुविषलक्षण–अशुद्ध हरितालादि धातुके भक्षणसे हृदयमें पीड़ा मूर्छा और तालु में दाह ये उपद्रव होते हैं पूर्वोक्त सब विष कुछ काल पर्यंत क्लेश देके नष्ट करते हैं।

१० कन्दविषलक्षण–कन्दविष (अशुद्ध बच्छनाग,सिंगी मोहरा आदि) के भक्षणसे हरितालादि धातु विष भक्षण समान, उपद्रव होकर वह पुरुष तत्काल ही मर जाता है।

विशेषतः–उक्त स्थावर विषको वैद्यक शास्त्रोक्त रीतिसे शुद्ध करके खिलाया जावै तो अमृतसमान गुण करता है।

१ विषगुणलक्षण–विषमें रूखापन होनेसे यह बुद्धिको बिगाड़ता और सर्व शरीरके बंधनों को ढीले कर देता है।

२ विषमें सूक्ष्मता होनेसे शरीरके अंग अंगपर बढ़जाता है।

३ विषमें प्रबलता होनेसे यह स्त्रीसंग अधिक करता है।

४ विषमें नाशक शक्ति होनेसे यह शरीरके वातादिक दोषोंके सप्त धातु और मल को बिगाड़ देता है।

५ विषमें शीघ्रता शक्ति होनेसे यह शरीरको क्लेश देता है।

१ विषयुक्तशस्त्रप्रहारलक्षण–जिस मनुष्यका घाव शस्त्र प्रहार होतेही पकजावे और उसमें से काला रक्त बारंम्बार निकले वह घाव सर्वदा भीगा हुआ रहे तथा उस घावसे मांस गल गल कर गिरने लगे और उस प्रहारयुक्त मनुष्यको तृषा, मूर्छा, ज्वर तथा दाह होवे तो जानलो कि विषमें बुझाया हुआ शस्त्र लगा है।

विशेषतः–यदि कोई शत्रु साधारण घाव परभी किसी प्रकार स विष डालदे तो भी ये लक्षण होजाते हैं इस लिये घाव का यत्न अपने विश्वासी पुरुष से ही कराओ।

अथ जंगमविषविशेषलक्षण,

प्रथम सर्पके काटने के विषका लक्षण लिखते हैं. सर्प भी कई प्रकारके होते हैं, जिनको अग्रलिखित लक्षणोंसे जानो।

वातपित्तकात्मानो भोगिमंडलिराजिलाः॥
यथाक्रमम् समाख्याता द्व्यन्तरा द्वंद्वरूपिणः॥ १ ॥

भाषार्थ-१ फणवाले सर्पोंको भोगी जानो, ये वातप्रकृतिवाले होते हैं, २ जिन सर्पोंके अंगपर मंडल होतेहैं उनको मंडलीजानोये पित्तप्रकृतिवाले होते हैं, ३ जिन सर्पोंके शरीर पर रेखा होती है उनको राजिस सर्प जानो, ये कफप्रकृतिवाले होतेहैं, इसी प्रकार माता पिताके जाति विपर्यय से संकर (दगला) जातिके सर्प होते वे हैं द्वंद्वज कहाते हैं।

१ भोगी सर्प काटनेका लक्षण-भोगी सर्प जहां काटताहै वहां काला चिन्ह होकर उसको सर्व वातरोग उत्पन्न होते हैं।

मंडलीसर्प काटनेका लक्षण-डंश सूजा हुआ, पीला, कोमल और पित्त विकारक हो तो जानो कि मंडली सर्प ने काटा है,

३ राजिलसर्पकाटनेकालक्षण-स्थिर शोथयुक्त. चिकना,फैन के सदृश श्वेत, आर्द्र, रक्तयुक्त डंश हो और कफके विकार दृष्टि पडें तो राजिलसर्पने काटा जानो।

सर्प काटनेकेअसाध्यलक्षण-पीपल के नीचे, देवमंदिर, श्मशान, चौमार्ग,बांबीपरतथा संध्यासमय, भरणी, मघा, आर्द्रा आश्लेषा मूल,कृतिका इन नक्षत्रोंमें;पंचमी आदि तिथिमें और शरीरके मर्म स्थानोंमें सर्प काटे तो असाध्य होनेसे वह मनुष्य बचनाकठिनहै यदि अजीर्ण, उष्णता. घाव प्रमेह क्षीणता और क्षुधा युक्तमनु-

च्योंको, बालक, वृद्ध, गर्भवती स्त्रीको तथा जिनके मुख, इंद्रिय और गुदा में रुधिर गिरता हो ऐसेको सर्प काटे तो असाध्य जानकर यत्न मत करो ये नहीं बचते।

दूषीविषभक्षणलक्षण—दूषी विषभक्षणसे मनुष्य मूर्छा, भ्रम और वमनादिद्वारा क्लेशित होकर बच जाता है किंतु मरता नहीं।

दूषीविषलक्षण,

जीर्णं विषघ्नौषधिभिर्हतं वा दावाग्निवातातपशोषितं वा ॥
स्वभावतो वा गुणविप्रहीनं विषं हि दूषी विषतामुपैति ॥ १ ॥

भाषार्थः-पुरानी अथवा विषनाशक औषधियोंसे तेजहीन या दावाग्नि, धूप पवनसे सूखा हुआ अथवा स्वभावसे ही अपने गुण हीन हो जावे सो दूषिविष कहता है इसमें अल्प पराक्रम होनेसे यह मनुष्यको मार नहीं सकता.

१दूषीविषकेदंष्टलक्षण—मूषकका काटनेसे तत्क्षणही उस स्थान से रक्तका बहाव, शरीर में पांडुवर्ण मंडल, ज्वर, अरुचि, रोमांच और दाह ये लक्षण हों तो दूषीविषमूषक काटा जानो. इसके काटने से हानि नहीं होती।

२ प्राणहर मूषकदंष्टलक्षण मूर्छा, शरीर में शोथ, कुरूपता, उबकाई, बधिरता ज्वर; शिरमें भारीपन लारका बहाव और रक्तकी वांति (वमन) हो तो प्राणहर मूषक काटने का विष जानो इन लक्षणयुक्त रोगी असाध्य होता है।।

३ कृकलासदंष्टलक्षण-जहां कांटे वह काला, धूसर या अनेक रंगका डंश मोह और मलका फूटना हो तो कृकलास (किरकांटे गिरगट) काटने का विष जानो।

४ वृश्चिकदंष्टलक्षण—जिसके डंक मारतेही अंगार सीजने लगे तदनंतर ऊपरको विदीर्ण करताहुआ चढ़के बहुत काल पश्चात् डंकहीपर आके ठहरजावे तो बिच्छु के काटने का विष जानो।

असाध्यलक्षण—जिसके हृदय नाक और जीभमें बिच्छू काटे और वहांसे मांस गिरने लगे और पीडा होतो उसे असाध्य जानो

५ मेंडकदंष्टलक्षण—जहां काटे वहां पीडायुक्त शोथ तृषा निद्राधिकता और वमन हों तो विषहरे मेंडक ने काटा जानो।

६ नक्रदंष्टलक्षण-शरीरमें दाह और दंश स्थान पर पीडायुक्त शोथ हो तो विषहरे मकरका काटा हुआ जानो।

७ जलौकादंष्टलक्षण—दंश स्थामपर कंडूयुक्त शोथ ज्वर और मूर्छा हों तो जलौक (जोंक) के काटने का विष जानो।

८ पल्लीदंष्टलक्षण—दंशस्थानपरदहातथा पीडायुक्त शोथ होकर शरीरसें पसीनानिकलेतो पल्ली (छिपकली विषमरा) के काटनें का विष जानो।

९ शतपददंष्टलक्षण—कानखजूरेके काटनेसें दंशमें पसीना पीडा और दाह होती है।

१० मशकदंष्टलक्षण—दंश स्थानपर खाज शोथ मंद मंद पीडा हो तो मच्छर नें काटा जानो।

११वमनशकदंष्टलक्षण-विषहरे वमनमच्छरके काटनेसें दंशस्थान पर पित्तीके समान लाल घाव गहरी पीडायुक्त मंडल होता है।

१२सविषमक्षिकादंष्टलक्षण—विषहरी मक्खी या भौंरा मक्खी के काठनेसे दंशस्थानपर दाहयुक्त कालाव्रण ज्वर और मूर्छा होतीहै इसका काटाहुआ मनुष्य मरणप्राय कष्टपाताहै या मरजाता है।

१३ सिंहव्याघ्रादिदंष्टलक्षण—सिंहव्याघ्रादिके काटनेसे दंश स्थान में घाव पककर उसमें से पीवका बहाव और ज्वर होते हैं।

१४ उन्मत्तश्वानादिदंष्ट्रलक्षण-पागल कुत्ते या स्यार के काटनेसें उस दंशस्थानसे श्याम रक्तका बहाव हृदयतथा शिरमें पीडा, ज्वर अंग जकडाव तृषा वर्णविपर्यय, चक्कर, दाह, दंशस्थानपर खाज शोथ, पीडा और पाकयुक्त गांठ तथा फोड़े होजाते हैं ।

उन्मत्तश्वानादिपरीक्षा-जिस श्वान या शृगालके मुखसे लार गिरे अंध तथा बधिर होकर चहूं ओर भागता फिरे, पूंछ सीधी होजावे जिसकी ठुड्डी, गरदन; शिर अधिकपीडित होनेसे मुख नीचेको रहे तो उसे उन्मत्त (पागल बावरा, दिवाना) जानो,

श्वानदंष्ट्रकेअसाध्यलक्षण-जिसको पागल कुत्ताकाटे उस पुरुष को जल कांच तैलादिमें कुत्ता दीखपड़ै उसके देखतेही पुकारनेलगै श्वानकीसी चेष्टा करनेलगे और पानीसे डरे तो जानो कि यह रोगी असाध्य है नहीं बचेगा ।

विषभक्षणकरानेवालेकीपरीक्षा-मुखकी चेष्टा तथा बाणी बदल जावै, प्रश्नका उत्तर न दे सके जिसके मुख से ठीक २ वाक्य न निकले, इधर उधर देखने लगे, पृथ्वी को अपनी अंगुलीसे खोदने लगे, घरकेबाहरनिकलना चाहे,हँसने लगे और चित घवरा जावै इत्यादि लक्षण जिसमें दृष्टि पडें उसे जानलो कि इस मनुष्य ने अवश्य बिष जहर खिलाया है ।

इति नूतनामृतसागरे निदानखण्डे स्थावरजंगमविषलक्षण निरूपणं नामत्वचत्वारिंशत्तरंगः ॥ ४४ ॥

सकलरोगनिर्णययुतोऽनिदानखण्डः समाप्त ॥ ३ ॥

॥ सूचना ॥



वाचक महात्मागण !

विदित होकि नूतनामृतसागरके इस चतुर्थ खण्ड में निदान-खण्डोक्त समस्त रोगोंकी चिकित्सा(रोगकी नाशकारिणीक्रिया) भली भांति बिस्तार पूर्वक वर्णन की गई है इसी लिये इसे "चिकित्साखण्ड" संज्ञा दी गई है।

इस खंड में ४४ तरंग हैं जिसमें से जिन जिन तरंगों में जिन२ रोगोकीचिकित्साउल्लेखित कीगईहै तिनका ब्यौरा आप तरंगके शीर्षश्लोकसे ज्ञात करही लेवेंगे परन्तु विशेषतः यह कि जहांकहीं श्लोकमें आदि तथा प्रभृतिशब्दभी योजित दृष्टिगोचरहो तहांस्वयं विचार लीजियेगा कि इस तरंगमें श्लोककथित रोगोंसे भी कुछ अधिक रोगोंकी चिकित्सा दी गई है कि बहुनोल्लेखन।

शंखं चक्रं जलौकं दधदमृतघटं चापि दोर्भिश्चतुर्भिः।
सूक्ष्मस्वच्छातिहृद्यांशुकपरिविलसन्मौ,स्यमम्भोजनेत्रं
कालांभोदोज्ज्वलांगं कटितट बिल सच्चारु पीताम्बराढ्यं।
वंदे धन्वन्तरिं तंनिखिलगदवन प्रौढदावाग्निमीशम्॥१॥

अथ चिकित्साखण्ड ।



॥ तत्रादौ चिकित्सालक्षण ॥

या क्रिया व्याधिहारणी सा चिकित्सा निगद्यते ॥
दोषधातुमलानां या साम्यकृत सैव रोगहृत ॥ १ ॥ भा.

भाषार्थः-जो क्रिया व्याधिको हरणकरनेवाली हो सो चिकित्सा कहाती है, क्योंकि जो चिकित्सा वात, पित्त, कफ तथा सप्त धातु और मलको यथा योग करने वाली होगी वही रोग को दूर करेगी ऐसा भावप्रकाशमें लिखा है ।

पृथग्दोषैः प्रभूतानां ज्वराणां हि यथाक्रमात् ॥
तरंगे प्रथमे चात्र चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः-वातादि पृथक् २ दोषों से उत्पन्न भये जो वात, पित्त, कफ, ज्वर तिनकी चिकित्सा इस पहिले तरंग में यथाक्रम से हम लिखते हैं ।

❀ ज्वर यत्न ❀

अब प्रथम ज्वरादि रोगों के यत्न अमृतसागर मूलग्रन्थ के अनुसार दर्शाते हैं ।

सामान्यज्वरयत्न-१ उष्ण जल पिलाना, हलके लंघन कराना, मनुष्यकेबलानुसारहलकापथ्यकराना, वायुविवर्धक स्थान में रखना उत्तम महीन वस्त्रपर सुलाना, ज्वर आने से तीन दिनतक कडुवी,

१ वात पित्त कफ से जो पीडा उत्पन्न हों सो व्याधि और मानसी चिंता को व्याधि कहते हैं २ जिस घर में वायु का समावेश अधिक न हो ।

कैषलो औषध तथा विरेचन (जुलाब) न देना पश्चात् २माशे सोंठ और १ माशे धनियांका क्वाथ बनाकर पिलावे तो आमा: न्यज्वर दूर होकर भुख लगेगी।

१ वातज्वरयत्न-१ वातज्वर वाले को लंघन मत कराओ पर हलकी वस्तु खाने को दो और चिरायता, नागरमोथा, नेत्रवाला (कमलतंतु) दोनों कटाई, गिलोय. [गुर्वेल] और सोंठ ये सब औषध छदाम छमाद भर लेकर क्वाथ बनाओ और ५ दिन तक पिलाओ तो वात ज्वर दूर होगा।

२-सोंठ, नीमकी छाल, धमासी पाठा कचूर अडूसा, अरंडीकी जड और पोहकरमूल छदाम छदामभर लेके क्वाथ बनाकर दो.

३ छोटी पीपल और शुद्ध किया हुआ सिंगीसुहरापानमेंखरल करके आधी रत्ती प्रमाण की गोलियां बनाके नित्य १ गोली ५ दिनतक खिलाओ, यह हिंगलेश्वर रस है।

४-१ छदामभरशतावरी और१छदामभरगुर्वेलका क्वाथ बनाके उसीमें छदामभरजूना गुड मिलाओ और पांच दिन तक पिलाओ

५ वडा काख, पीपल पित्तपापड़ा और सौंफ ये सब छदाम छदामभर लो और क्वाथ बनाकर पिलाओ।

उक्तपांचउपायोंमेंसे एक २ यत्नही वातज्वर को नष्ट कर सक्ताहै

२ पित्तज्वरयत्न-निम्नलिखित २१ यत्नसे पित्तज्वर नष्ट होगा।

१ नागरमोथा, धमासा, पित्तपापड़ा, कमलतंतु चिरायता और नीमकी छाल छदाम छदामभरका क्वाथ बनाकर पिओ।

२ छदाम भर खैर सार का चूर्ण, २ मासे कुटकी और २ टंक मिश्रीका चूर्ण बनाके सेवन करो।

३-१टंक चंदन, १ टंक खश और दो पैसे भर मिश्री का चूर्ण

बनाके ४ पैसे भर फालसे के रसमें डालके पिओ, त्रिंशद ग्रन्थ में लिखा है ।

४–चांवलकी खीलों के पानीमें मिश्री डालकर पियो ।

५–कुटकी किवारेकी गिरी, सागरमोथा हर्रे की छाल और पितपापड़ा छदाम छदाम भरका काथ बनाकर पिओ तो उक्त ज्वर प्यास दाह प्रलाप बकवाद मूर्छा सर्व नाश होवें, यह वैद्यविनोद में लिखा है ।

६–गेंहूंका आटा और मिश्री पानी में डालकर पकाओ, पूर्ण परिपक्व होने पर उतारके ठंडा होने के पश्चात् पीजाओ, यह हरीरा कहाता है ।

७–मीठे अनारका शर्बत रस) पिओ तो दाहभी शांत होगी

८—यदि केवल दाहरूपी ज्वर हो तो सुन्दर चतुर स्वरूपवती पुष्पहार तथा महीन वस्त्रधारिणी श्यामा १६ वर्णकी अवस्थावाली स्त्रीसे मैथुन करो योंही तोता मैना किंवा बालक की मधुरवाणी सुनना पुष्पवाटिकाकी वायु सेवन करना, पुष्पहारतथा कमलपुष्पादि धारण करना, कपूरादि सुगंधित पदार्थसूंघना, मनोहर शृंगाररसयुक्त कथा सुनना सुन्दर स्त्रियोंके समीप वार्तालाप करना और जलके फुहारों के समीप बैठना इत्यादि उपायों से भी दाह ज्वर नाश होकर शीतलता प्राप्त होती है ॥

९–फालसे के रसमें सेंधानमक डालकर पिओ ।

१०—मूंग की दाल में मिश्री डाल कर पिओ ॥

११—दाख के रस में मिश्री डालकर पिओ ॥

१२–पित्तपापड़ा, नागरमोथा और चिरायता ये तीनों ४ टंक लेके काथ बनाकर ३ दिन पिओ, ये सब यत्न ज्वर तिमिर भास्कर में लिखे हैं ।

१३ रक्तचंदन, पद्मकाष्ठ, धनियां, गिलोय और नीमकी छाल छदाम छदाम भर लेकर क्वाथ बनाकर ५ दिन पिओ तो पित्त ज्वर के व्यतिरिक्त दाह, प्यास और वमनभी नष्ट होवें, यह यत्न लोलिम्बराज में लिखा है।

१४ यदि पित्तज्वर अति दाहयुक्त हो तो रोगीको कमलपुष्प शय्या पर सुलाओ।

१५–अथवा केलेके कोमल पत्रों पर सुलाओ।

१६–अथवा उत्तम पुष्पबाटिका में रक्खो।

१७–अथवा खशकी टट्टियोंकी शीतलता में रक्खो।

१८–अथवा गुलाब कातेल मर्दन करो।

१९अथवा १०० या १००० वारके धोयेहुए घृतको मर्दनकरो।

२०–नीमके कोमल पत्तों को पीसके पानी डालो, इस जलको मट्ठे की रीतिसे मथन करो तब इसमें जो फेन निकलेगा उस फेनको रोगीके शरीर मे मर्दन करो।

२१–किंवा उक्त फेनमें ही बहेडे के बीजोंको पीसके शरीरपर लेप करो, ये यत्न वैद्यजीवन में लिखा है।

उपरोक्त इक्कीसों उपायोंमें से एक एकभी पित्तज्वरकी शांति के लिये विशेष उपकारी हो सकता है, इति पित्तज्वर यत्न।

३ कफज्वर यत्न–निम्न लिखित ८ उपायोंसे कफज्वर नष्टहोगा।

१ नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, पसरकटाली, पोहकरमूल, कुटकी, कचूर, अडूसा, कायफल छोटी पीपल और शतावरी छदाम छदामभर लेके क्वाथ वनाकर सात दिन पिओ।

२–कायफल, पीपल, काकड़ासिंगी और पोहकर मूलका चूर्ण छदाम छदामभर मधुमें मिलाके चाटो, वैद्य विनोद में लिखा है कि उक्तौषध से श्वास और खांसी के विकार भी नष्ट होंगे।

३–सेरभर पानी औटते हुए तीन पाव रखकर पीने को दो, वस्त्र

देखकर लंघन कराओ, लंघन के पीछे लंघन तोडो तब मूंग,मोठ या कुल्थीकी दालका पानी पिलाओ दिनको मत सोनेदो, पथ्यके साथही बिजोरेकी (खट्टी) कलीमें सेंधानमक मिलाकरखिलाओ

४-सोंठ, कालीमिरच, छोटी पीपल, चित्रक, पीपलामूल, श्वेत जीरा,श्यामजीरा लौंग,इलायची,सेकीहुई हींग, अजवायन और अजमोद बराबर बराबर लेके चूर्ण बनाओ, इस चूर्णकी छदामें छदाम भरकी मात्रा उष्ण जलके साथ खिलाओ तो कफज्वर नष्ट होके अन्य पाचन होकर भूख लगैगी।

५-कटियाली, गिलोय, सोंठ, पोहकरमूल और अडूसा धेले धेले भर लेके क्वाथ बनाकर सात दिन पिओ।

६-कटियाली, पीपल, काकड़ासिंगी, गिलोय और अडूसा दो दो टंक लेके क्वाथ बनाओ और इसे १०दिनतक पिओ।

७-केवल अडूसे का क्वाथछदामभरकी मात्रासे१० दिनतकपिओ

८-शीतभंजी रस २ रत्ती को अडूसा और सोंठ के काढे के अनुपान से ७ दिन पिओ।

९ शीतभंजी रस विधान-सोधा हुआ पारा ५ टंक, सोधा हुआ गन्धक ५ टंक, तांबेस्वर ५ टंक, शुद्ध कियाहुआ सिंगीमुहरा२टंक सोंठ १ टंक, मिर्च ५ टंक, पीपल ५ टंक शुद्ध सुहागा ५ इन सबको बारीक पीसके चित्रकके रसकी ३ पुटदो,फिर अद्रक रसकी ७ पुट,तदनंतर पानके रसकी ३ पुटदेके १ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनावे इसेही शीतभंजीर रस कहते हैं, उक्त विकार के व्यतिरिक्तबादी और शीतांग के रोगों को नाशकारी है उक्त उपायोंसे कफज्वर नष्ट हो जायगा।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्सा खण्डे वातादिज्वरत्रय यत्न निरूपणं नाम प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

द्वन्द्वज्वर ।

द्वन्द्वदोषैः प्रभूतानां ज्वराणांहि यथाक्रमात् ।
तरंगे द्वितीये चात्र चिकित्सा लिख्यते मया ॥२॥

भाषार्थः-वातादि दो दो दोषों से उत्पन्न भये जो द्वन्द्वज (वात, पित्त, वात कफ. और पित्त कफ,) ज्वर तिनका इस दूसरे तरंग में यथाक्रम से यत्न लिखते हैं ।

४ वातपित्तज्वरयत्न-निम्नोपाय उक्तरोग की निवृत्ति हेतु करो

१-खरेटी (बलाबल) गिलोय जड नागरमोथा, पद्म काष्ठ, भारंगी, छोटी पीपल,-खश और रक्तचंदन पांच२ मासे लेकर क्वाथ बनाओ और छदाम छदामभर १२दिन तक पिओ

२-गिलोय, पित्तपापड़ा, चिरायता, नागरमोथा और सोंठ को। पीसकर चूर्ण, बनावे इस चूर्णमें से प्रति दिन छदाम भरका क्वाथ बनाके बारह दिनतक पिओ यह पंचभद्र क्वाथ कहाता है ।

३-गिलोय, पित्तपापडा, सोंठ, नागरमोथा, अडूसा इन को समान भाग लेके चूर्ण बनालो इस चूर्ण में से छदाम भर का क्वाथ बनाकर पिओ ।

४-पटोल, नीमकी छाल, गिलोय और कुटकी समान भाग ले चूर्ण बनाओ और छदाम भर चूर्ण का क्वाथ बना कर १२ दिन पिलाओ ।

५-महुआ, मुलहटी, गोंद, गौरीसर, (हंसराज) नागरमोथा और किरवारे की गिरी (गूदा) समान भाग लेके छदाम भर का क्वाथ बना कर १२ दिन पर्यन्त पिओ ।

६-चांवलोंकी खीलोंमेंमिश्री और मधु मिलाकर १२दिन पिओ

७-सोंठ, मिर्च, पीपल, परस्पर तुल्य और इन्हीं तीनोंके तुल्य

मिश्री का चूर्ण बनाकर प्राति दिन अधेले भर चूर्ण मधुके साथ मिला कर दस दिन पर्यंत सेवन करे ।

उक्त ७ उपायों से वात पित्तज्वर शांत होजावेगा ।

५ वातकफज्वरयत्न १-इस रोग वाले को दस लंघन कराओ औटाया हुआ जल (जो कि सेरभरका आधसेर रहाहो) पीनेको दो १० दिन के पीछे चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ बराबरका चूर्णबनाके इसमेंसेछदामभरका क्वाथ बनाकर पिलाओ फिर पथ्य दो और जो इस ज्वर वाले को कुछ उपद्रव उत्पन्न न हो तो तीन दिन पश्चात् फिर से यह क्वाथ दो ।

२-कायफल,देवदारु,भारंगी, नागरमोथा, धनियां, पित्तपापडा हरेंकी छाल सोंठ और कणाचकी जड़ समान भागके चूर्णमें से २ टंक भरका क्वाथ पिलाओ तो वातकफज्वर, खांसी और श्वास और सूजन भी नष्ट होगी ।

३-नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय, सोंठ और धमासातुल्य लेकर चूर्ण करो इसमें से छदाम२ भरका क्वाथ दस दिन तक पिओ तो वातकफज्वर उल्टी और दाह मुख शोथभी दूर होंगे ।

४-कटियाली, सोंठ, गिलोय और पीपल समान लेके चूर्ण करो और इसमें से छदाम भर का क्वाथ बनाकर पिओ ।

५-शालपर्णी (बूँटी विशेष) पृष्ठपर्णी बूँटी विशेष दोनों कटाई, गोखरू. बेलकी गिरी अरणी. अरलू, कुम्भेर और पाठ इनका क्वाथ पीपलयुक्त दस दिन तक प्राति दिन पिलाओ ।

६-यदि उक्तरोगीका मुख और तालु सूखकर जिह्वा कठोर

१ केवाच या बहुकंटका भी कहते हैं २ उंट कटाई और पसर कटाई ३ इसे संस्कृत में अग्निमंथ और श्रीपर्णी भी कहते हैं, ४ इसे अलाबु तथा आलकभी कहते हैं इन दशों औषधियों के समूह को दशमूल संज्ञा दी है ।

पड़ जावे तो बिजौरेकी कीली में सेंधा निमक और काली मिर्च मिलाकर जिह्वा को लेप करो तो उक्त विकार नष्ट होगा ।

७-चिरायता, गिलोय, देवदारू, कायफल और वचको समान लेके चूर्ण करो और इसमेंसे छदाम भर चूनेका क्वाथ बनाकर पिलाओ, ये यत्न ज्वर-तिमिरभास्कर में लिखे हैं ।

६ कफपित्तज्वरयत्न-इस रोगवालेको १४ लंघन कराके उष्ण जल [जो कि सेर भर का औटाते हुए आधपाव रहजावे] पिलाओ और ये ६ क्वाथ दो ।

१ गिलोय, रक्तचंदन, सोंठ, कमलतंतु, कायफल और दारुहल्दी समान भागके छदामभर चूरेका क्वाथ १० दिनतक पिलाओ।

२-नीमकी छाल, रक्तचंदन, पद्मकाष्ठ, गिलोय और धनियां का क्वाथ १० दिवस पर्यंत दो तो कफपित्तज्वर, दाह, प्यास उलटी भी नष्ट होगी, यह लोलिम्बराजमें लिखे हैं ।

३-गिलोय, इन्द्रयव, नीमकी छाल, पटोल[1], कुटकी, सोंठ, अगर चंदन, नागरमोथा और पीपलको तुल्योतुल्य लेके चूर्ण बनावे उस मेंसे ४ माशे प्रतिदिवस अष्टावशेष[2] जलके संयोगसे पिलाओ तो कफ पित्तज्वर, खांसी, दाह, अरुचि, और हृदय पीडाभी दूर होगी ।

४—गिलोय, दोनोंकटियाली, दारुहल्दी, पीपल, अडूसा, पटोल नीमकी छाल और चिरायते के चूर्णमें प्रतिदिन छदाम भर का क्वाथ प्रातःकाल तथा सायंकाल १० दिवस पिलाओ ।

६—दाख, किरवारेकी गिरी, धनियां, कुटकी नागरमोथा, पीपरामूल, सोंठ और पीपलके चूर्णमेंसे छदामभर का क्वाथ दोनों

१ कड़वो तुरई जिसे जंगली तुरई भी कहते हैं इसका स्वाद कटु है।

२ जो अपने शीतल रूपकी अपेक्षा औटाने पर १ अष्टमांश रह जावे जैसे १ सेरका आधपाव, सो अष्टावशेष कहाता है।

समय दश दिनतक पिलाओ तो कफपित्तज्वर, शूल, भ्रम, मूर्छा अरुचि और उलटी ये सब दूर हों ।

६-अथवा यह रसदो ५ टंक हिंगुल से निकालाहुआ शुद्धपारा ५ टंक शोधा हुआ गंधक, ५ टंक काली मिर्च और ५ टंक शुद्ध सुहागा इन सबको महीन पीसकर अद्रक के रसकी ७ पुट और पानके रसकी ७ पुट देकर १ रत्ती प्रमाणकी गोली बनालो, इस मेंसे १ गोली प्रातःकाल और १ संध्या के समय ७ दिवस तक दो, उक्त प्रत्येक यत्न कफपित्तज्वर नाशक होगा ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे वातादि द्वन्द्वजज्वर यत्न निरूपणं नाम द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

सन्निपातज्वर ।

गुणदोषैः प्रभूतस्य सन्निपातज्वरस्य हि ॥
तरंगे तृतीये चात्र चिकित्सा लिख्यते मया ॥१॥

भावार्थ-त्रिदोषोंसे उत्पन्न हुआ जो सन्निपातज्वर तिसकी चिकित्सा इस तीसरे तरंगमें लिखते हैं ।

स्थितिवर्णन-उक्तरोगसे दुःखित पुरुषको स्वच्छ कूपके जलमें १ टंक सोंठ डालके औटाओ, जब वह औटाकर आधा रहजावेतब छानकर रखलो, जब वह रोगी जल चाहे तब यहीदो, परन्तु दिन को औटाया हुआ जल रातको और रातका औटाया दिनको मत पिलाओ अर्थात् रातका रातको और दिनका दिनहीको पिलाना चाहिये, वायुविबंधक स्थानमें रक्खो, उसके पास एक दो चतुर मनुष्योंको सदैव रखो. उस रोगी को शीतल यत्न कदापि न करो और मणिधारण, दान, हवन, शिवाभिषेक तथा मंत्र जपादि सदैव अवश्य कराओ. फिर निम्नलिखित यत्न करो ।

सन्निपातयत्न—कायफल, पीपलामूल, इन्द्रयव भारंगी, सोंठ, चिरायता, कालीमिर्च, पीपल, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, रासना दोनों खटाई अजमोदा, छठीला वच पाठ और चव्य समान भाग लेकर क्वाथपिलाओ तो सन्निपातके व्यतिरिक्तवस्तु अज्ञान (किसी वस्तुका ज्ञान न रहना पसीनेकी अधिकाई शीत उदर शूल, अफरा, वात और, कफके सर्व रोग इस क्वाथ से नष्ट होंगे।

२ अर्कमूल, जवासा (यवासा किंवा दुरालाभा भी कहाता है) चिरायता, देवदारु, रास्ना (राट तथा एलापर्णिभी कहाती है) निर्गुंडी वच अर्णी सहजना (शाभांजना और मुंगना) पीपल पीपलामूल, चव्य, त्रिकक सोंठ अतीस और जल भंगरेंके २ टंक चूर्णका क्वाथ दोनों समय दो तो सन्निपातके व्यतिरिक्त धनुर्वात दंतस्तंभन[1] कीतांग प्रसूतरोग श्वास कास और वायुव्याध्यादि भी नष्ट होंगे यह लोलिम्बराज में लिखा है।

३ जो सन्निपातमेंजिह्वास्तंभन[2] हुआ हो तो बिजौरे की केशरमें सेंधानोंन और कालीमिर्च बारीक पीसकर रोगीकी जिह्वा पर लेप करो तो जड़ता निकलकर कोमलत्व प्राप्त होगी।

४ जो स्मृतिभ्रंश[3] हुई हो तो वच महुआ, सेंधानोंन मिर्च और पीपल समान २ ले पीस कपड़छन कर उष्ण जलके साथ नॉस[4] दो तो ज्ञान प्राप्त होकर सर्व भ्रान्ति दूर होगी।

५-८टंक पारा और ८टंक गंधककी कजली[5] के समान प्रमाण सोंठ, मिर्च, पीपलका चूर्ण ये दोनों पदार्थ [कजली और चूर्ण]

---

१ दांत जकड़ना, दनकड़ी बंध जाना, २ जीभ कड़ी पड़जाना, जीभनलौटना।

३ किसी बात का ध्यान ज्ञान न रहना बे सुध होजाना पागलसा होजाना।

४ सूंघनी, नासिका के ऊपर खींचना।

५ पारा और गंधक दोनों साथ घर्षण करने से एक काला पदार्थ उत्पन्न होजाता है इसे कजली कहते हैं।

धतूरेके फलके रसकी ३ पुट देके एक दिन भर खरल करो औरइस रसकी नास दो तो सन्निपात दूर हो इसे उन्मत्तरस कहते हैं।

६-भैरवांजनसेभी सन्निपात दूर होगा. पारा गंधक. कालीमिर्च और पीपली तुल्योतुल्यका चूर्णबनाओ और इसकाचतुर्थांशजमा लगोटालेकेपार और गंधककी कजली मिलाओ तदनंतरजंभीरीके रसमें ८ दिन खरल करके नेत्रोंमें लगाओ यह वैद्यरहस्यमें लिखाहै

७-जमालगोटेके १०टंक बीज, १ टंक काली मिर्च और १ टंक पीपलामूल इन तीनोको जम्भीरीके रसमें सात दिवस पर्यन्त खरल करके इस अंजन को नेत्रों में लगाओ।

८-सिरसके बीज, पीपल, काली मिर्च, सेंधानोंन लहसन, मैन-सिल और बच ये सब बराबर लेके बारीक चूर्णकरलो तदनंतर२१ दिन गोमूत्र के साथ खरल करके इस अंजनको नेत्रों में लगाओ।

९-५ टंक हिंगुलसे निकाला हुआ पारा, ५ टंक पीपली ५ टंक काली मिर्च और ५ टंक कजली [पारे गंधक के योगसे बना हुआ पदार्थ] इन सबको धतूरेके बीजके तेलमें ४ घड़ी खरल करके १ रत्तीकी गोली बांधलो, इस गोलीको अद्रक के रस के साथ दो परन्तु इस रसपर दही और चांवलके व्यतिरिक्त अन्यान्नमत खि लाओ यह वैद्यरहस्यमें लिखा है और यहपंचवक्त्ररस कहाता है।

१०-५ टंक हिंगुलसे निकाला हुआ पारा, ५ टंक शुद्ध किया हुआ गंधक, ५ टंक सिंगीमुहरा, २ टंक जायफल और १० टंक पीपल जिनमें से प्रथम पारे और गंधककी कजली करके शेष औषधी उसमें डालदो और अद्रक के रसमें एक दिनतक खरल करके १ रत्ती प्रमाणकी गोली बनाकर रोगीको दो तो सन्निपा तके व्यतिरिक्त शीतज्वर विषमज्वर, विषूचिका जीर्णज्वर मंदाग्नि और मस्तक रोग सर्व नष्ट हो जावेगें यह वैद्यरहस्य में लिखा है। इसका नाम आनन्दभैरवरस है।

११–यदि सन्निपातमें शीतोत्पन्न होवे तो काली मिर्च पीपल सोंठ हर्रकी छाल, लोद, पोहकर मूल, चिरायता कुटकी कूट कचूर और इन्द्रयव तुल्योतुल्यको कपड़छन चूर्ण करके शरीर को मर्दन करे तो पसीना और शीतांग दूर होंगे ।

१२–५टंक पारा, ५ टंक सिंगीमुहरा, २० टंक काली मिर्च ४० टंक धतूरेके फलकी भस्मको बारीक पीसके शरीरमें मर्दन करो तो अत्यंत पसीना, शीतांग सान्निपात दूर होगा ।

१३–पारा सिंगीमुहरा, काली मिर्च नीला थोथा और नौसाद रका बारीक चूर्ण धतूरे और लहसनके रसमें मलकेरोटीकिया बना ओ तदनंतर रोगीके मस्तकपर और बनवाके वह रोटी प्रहरपर्यन्त रक्खो महासान्निपात दूर हो, इसप्रयत्नमें ध्यान रक्खो कि रोगी के शरीरमें ताप प्राप्त होके चैतन्य होजावे तो वह अवश्य बच जावेगा और जो ताप न हो तो अवश्य ही मर जायेगा ।

१४लहसन, राई और मुगनेकी जड़कोपीसके गोमूत्रमें रोटी बनाओ और१३में नियमानुसार उपचारकरोतो उपरोक्तफलहोगा

१५–सन्निपातके रोगीको विच्छू से कटावे तो महाभयंकर सन्निपात दूर हो जावेगा ।

१६–एवंउक्त रोगीको सर्पसे कटानाभी वैद्यकशास्त्रमें लिखा है परन्तु लोक विरुद्ध है अतएव विचार करके करना चाहिये ।

१७-लोहेकी तप्त शलाक रोगीकी पगथली (पैरोंकेतलुए)या भौंके बीचमें अथवा ललाट के मध्य में चेक(लगा देओ और यंत्र और मंत्रादिकसे भी सन्निपात नष्ट होता है ।

वैद्यको चाहिये कि इन सर्व बातोंपरपूर्ण ध्यानदेके अपनीबुद्धि बलके विचारसे जो प्रयत्न योग्य समझे सो करे परन्तुसन्निपातके

१ शालमलीकाष्ट अर्थात् सेमर वृक्षकी लकड़ी

रोगीको दिनके समय कदापि न सोने देवे और आम तथा कफनाशक प्रयत्नोंको अवश्य करे तथा दोषानुसार लंघन करावे

सुश्रुतादि ग्रंथोंमें सन्निपातको एकही मानाहै परन्तु अन्यान्य ऋषियोंके मतानुसार संधिगादि१३प्रकारका सन्निपात लिखाहैं सो अब हम तेरहों के जुदे जुदे प्रयत्न लिखते हैं ।

१संधिगसन्निपातके यत्न–हरड़े की छाल. गिलोय भुगना चित्रक, लज्जालु, सोंठ, वेदारु, कुटकी कचूर, अडूसा, वांयबिडंग शालपर्णी, दोनो कटाई, बेलकी गिरी अरडी अरलु कुंभेर, पाढा और पीपल तुल्योतुल्यके चूर्णमेंसे२टंकका क्वाथ बनाके दोनों समय पिलावे तो सर्वलक्षणयुक्तभी संधिगसन्निपातदूरहोगा

२अंतकसन्निपात–इसरोगवाला रोगी मरजाताहै उसकेलिये कोई यत्न नहीं तथापि किसी वैद्यकी बुद्धिमें आवेतो अवश्यकरे

३रुग्दाह-हरडेकी छाल; पित्तपापड़ा नीमकी छाल कुटकी देवदारु किरवारेका गूदा द्राक्ष और नागरमोथा तुल्योतुल्य के चूर्ण में से२टंकका क्वाथ बनाके दोनों समय पिलाओ ।

४चित्तभ्रम-ब्राह्मी वच लजवंती (लजनी) त्रिफला कुटकी खरेटी अमलतासकी गिरी नीमकी छाल नागरमोथा कडुवातुर ईकी जड़ द्राक्ष शालपर्णी पुष्टपर्णी दोनों कटाई गोखरू बेलकी गिरी अरणी अरलु कुम्हेर और पाठा समानके चूर्णमेंसे२टंकका क्वाथ दोनों समय ११ दिवस पर्यन्त सेवन कराओ ।

५शीतांग सन्निपात यहभी महाअसाध्यहै इसका रोगीबचना दैवाधारही है तथापि कुछके यत्न लिखते हैं ।

१यहलोकमें लजनी के नामसे प्रसिद्ध है इस बूटी में यह गुण है कि जो इसके एक पत्रको छू दो तो पूर्णतया कुम्हलाजावेगी मानो वह तुम्हारे स्पर्शसे लज्जित होकर सकुच गई हो इसीलिये इसे लजनी नाम दिया गया है ।

१-उक्तरोगीको विच्छुसे कटाओ और बारीक पिसाहुआसिंगी मोहरा तेलमें मिलाके शरीरमें मर्दन करो तथा यह यत्न करो

२-सिंगीमहुरा,लहसन और राईको गोमूत्रमें पीसकर रोटीसी बनाके रोगीके क्षौर किये मस्तकपरधरदो,जबरोगीका शरीरउष्ण हो जावे तव उसे निकाल लो और शरीर उष्ण न होतो वहरोगी निश्चय मर जावेगा।

३-अथवा ५ टंक पारा, ५ टंक सिंगीमुहरा, २०टंककालीमिर्च और ४० टंक धतूरे के फूलोंकी भस्म इन सबोंको बारीकपीसके शरीरमें मर्दन करो तो शीतांगसन्निपात दूर हो।

६ तंद्रिक भारंगी, गिलोय; नागरमोथा कटियाली, हर्डेकीछाल और पोहकरमूलसमान के चूर्णमें से २टंकका क्वाथबनाकरपिलाओ

७कंठकुब्ज काकडासिंगी, चित्रक, हरडेकी छाल, अडूसा, कहूर, चिरायता, भारंगी, दारुहलदी, कटियाली, पोहकरमूल, नागरमोथा, कूडा (तन्द्रवृक्ष) की छाल, इन्द्रयव कुटकी और काली मिर्च तुल्योतुल्यके चूर्णसे२टंकका क्वाथ बनाके दोनों समय ८ दिन पर्यंत पिलाओ।

८कर्णिकसान्निपात-रास्ना (रसा, एलापर्णी औरसुगंधा भी कहते हैं)असगंध,नागरमोथा दोनों कटाई, भारंगी-काकडासिंगी हर्डेकी छाल वच पोहकरमूल और कुटकी बराबरके चूर्णमेंसे २ टंकका क्वाथ बनाके दोनों समय ३० दिनतक दो इसी कर्णिकतथाअन्य सन्निपातमेंभी कानके तले सूजन आजाती है इसे वैद्यकशास्त्रमें कर्णमूल कहते हैं आगे इसका उपाय देखो।

कर्णमूलयत्न-हलदी. हिंगनबटके वृक्षकी जड, कूट, मुगनेकी जड. सेंधानमक, दारुहलदी. देवदारुऔरइन्द्रायनकीजडकोसमान लेके आंकडे के दूधमें खरल करे और कर्णमूल पर ठंडाहीलेपकरो तो कर्णमूल नष्ट होगा।

अथवा कर्णमूलके उत्पन्न होतेही जौंक लगाके उसका रुधिर निकलवा डालो तौभी कर्णमूल नष्ट हो जावेगा ।

९ भग्ननेत्रसान्निपात-दारुहलदी. जंगली या कडवीतुरई किंवा तुमडी. पत्रज,नागरमोथा. कटियाली कुटकी हलदी नीमकीछाल और त्रिफला तुल्यके चूर्णमें से २ टंकका क्वाथ दोनों समय १५ दिवसपर्यन्त पिलाओ।

१० रक्तष्ठीवी-नागरमोथा पद्मकाष्ठ पित्तपापडा रक्तचन्दन महुआ कमलतंतु शतावरी मलयागिरी चन्दन और बकायनकी छाल तुल्यके चूर्णमेंसे २ टंकका क्वाथ बनाके १५ दिवस पर्यंत पिलाओ अथवा दूबके रस या अनार के रसको नासदो ।

११ प्रलाप-नागरमोथा कमलतन्तु शालपर्णी. पृष्ठपर्णीदोनों कटियाली बेलकी गिरी अरलू कुम्भेर पाठा सोंठ पित्तपापडा चन्दन और अडूसा तुल्यके चूर्णमेंसे प्रतिदिन १ टंकका क्वाथ १० दिन पर्यंत पिलाओ ।

१२ जिह्वक वचकटियाली जवासा रास्ना गिलोय नागरमोथा सोंठ कुटकी काकडासिंगी पोहकरमूल ब्राह्मी भारंगी नीमकी छाल अडूसा और कचूरके दो चूर्णमें से दो टंकका क्वाथ प्रति दिन १० दिवस पर्यंत सेवन करो ।

१३ अभिन्यासन्निपात-भारंगी रास्ना जंगली तुरई देवदारु हलदी सोंठ पीपल अडूसा इन्द्रायनकी जड ब्राह्मी चिरायता नीमकी छाल कमलतन्तु कुटकी वच पाठा आलु दारु हलदी कटियाली गिलोय निसोत झाऊ वृक्षकी जड पोहकर मूल नागरमोथा जवासा यन्द्रयव त्रिफला और कचूर तुल्योतुल्यके चूर्णमेंसे २ टंक (प्रतिदिन १२ दिनतक दोनों) को क्वाथ बनाकर पिलाओ अथवा यह नाश दो।

१ यह एक वृक्ष है बहुधा नदियों के तीरके समीप होता है ।

अभिन्यासनाशक नास-काली मिर्च, महुआ, सैंधानोन चित्रक जायफल और पींपल सबको बार्राकपीसके उष्ण जलमें नासदो

अष्टज्वरनाशकचिन्तामणिरस-हिंगुल से निकला हुआ शुद्ध पारा. सोधा हुआ गंधक, अभ्रक तांवेश्वर सोंठ कालीमिर्च पीपल हर्रकीछाल आंवला और शुद्ध जमालगोटातुल्यभागकोदडघलके पत्तोंकेरसमें २ प्रहरतक खरलकरके धूपमें सुखा कर १रत्तीप्रमाणकी गोली वनालो. यह एक गोली देनेसे आठोंप्रकारकेज्वरउदरशूल अजीर्ण और आमवात आदि सर्व रोगनष्ट होगे ऐसा वैद्यरहस्य तथा वैद्यविनोदमें लिखाहै।

अमृतसंजीवनीगुटिका-२ टंक हिंगुलसे निकलाहुआ शुद्धपारा २ टंक शुद्ध गंधक, २ टंक शुद्ध सिंगीमुहरा १ टंक काली मिर्च और चार टंक कालीमिर्च लेके प्रथमपारे और गंधकको कजली बनाओ औरउसमें उपर्युक्तौषध मिलाके इन सबको ब्राह्मीके रसमें १ पुट और १ पुट चित्रककी देके १ रत्तीप्रमाणकी गोली बनाओ तदनन्तर इस गोलीको अद्रकके रसके संयोगसे दो तो सन्निपात मूर्च्छा, आमवात, वायशूल शीतज्वर विषमज्व और मंदाग्नि। ये सब रोग दूर होवेंगे रसमंजरीमें लिखा है कि अमृतसंजीवनी से मृतकभीं जीवित हो सक्ता है।

कालारिरस-१२ माशे शुद्ध पारा २० माशे शुद्धगंधक २२ माशे शुद्ध सिंगीमुहरा ४० माशे काली मिर्च ४० माशे पीपल १६ माशे लौंग १२ माशे धतूरेके बीज २० माशे शुद्ध सुहागा २० माशे जयफल और १२ माशे अकरकरालेके प्रथम पारे और गंधककी कजली बनाओ और उसीमें उपरोक्त औषध पीसकर अद्रकके रसमें

१ गोमा कहते हैं, यह लम्बा हाथ १ ॥ आसरे ऊंचा होता है बीच बीच में इसकी दंडीपै फूल होते हैं, और दो पत्ते होते हैं, यह एक प्रकारका जंगली शाक है जो मारवाड देशमें "दडघल" नाम से प्रसिद्ध है।

३ दिन, नीबूके रसमें ३ दिन और केलकेरसमें ३ दिन खरलकरोत-दनंतर १ या २ रत्तीप्रमाणकीगोली बनाके १ गोलीरोगीकोखिलाओ तोवादी औरसन्निपातकेरोग दूरहों यह योगचिन्तामणिमें लिखाहै

त्रिपुरभैरवरस–४ पैसाभर कालीमिर्च, ४ पैसेभर सोंठ ३ पैसेभर शुद्ध तेलिया सुहागा और पैसेभर शुद्ध सिंगीमुहराको महीन पीसकर नीबूके रसमें ३ दिन अद्रक के रसमें ५ दिन और पान के रसमें ३ दिन खरल करो और रत्ती प्रमाणकी गोली बनाकर १ गोली अद्रकके रसमें दो तो सन्निपात नष्ट हो ।

संज्ञाकरणरस–शुद्धसिंगीमुहरा, संधानमश, कालीमिर्च, रुद्राक्ष कटाली, कायफल महुआ और समुद्रफल समान महीन पीसछान के आक के खारकी तीन पुट दो तदनंतर १-२ तथा ३ रत्ती (आवश्यक्तानुसार) कान तथा नाकके छिद्रमेंसे फूंकद्वाराअंतर प्रविष्ट करो तो संज्ञा होकर सन्निपात नष्ट होगा ।

ब्रह्मास्त्ररस–३ टंक पारेकी भस्म, ३ टंक शुद्ध गंधक, ६ टंकशुद्ध सिंगीमुहरा और १२ टंक कालीमिर्च इन सबको वारीक पीसके केलहारी बंदाल और ज्वालामुखी इन तीनोंकेरसमें खरल करो तदनंतर अद्रक के रसकी २१ पुट देके रत्तीप्रमाणकी गोलियां बांध लो इसकी गोली देनेसे सन्निपात दूर होगा ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे सन्निपातज्वरयत्न निरूपणं नाम तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

आगन्तुक ज्वर

आगन्तुकप्रभृतीनां ज्वराणां हि यथाक्रमात् ॥
तुर्यो तरंग वै चात्र चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १ ॥

मनुष्य तथा वस्तुओंके नाम पहिचानना बोधमय होना. २ कलावी तथा लांगली नामसे मख्यात है, ३ बंदाल कंटकफन या बनालका फल करके प्रसिद्ध है, ४ एक बूँटी जो बहुधा तलाइयों में उगती है ।

भाषार्थः—अत्र इस चौथे तरंगमें शस्त्रादि चोट से उत्पन्न हुए जो आगन्तुक ज्वर तिनका यत्न लिखते हैं।

चोटपर यत्नानुपान—इस ज्वर से पीडित रोगीको लंघन मत कराओ, कषैली और उष्णौषध न दो, मधुर चिकनी वस्तु (हरीरा, औटा, हलुआ) खाने को दो, चोटपर सेको, लेपकरो अथवा पट्टी बांधो और सीवन लगाओ।

भूतादिबाधाजन्यज्वरानुपान—इस ज्वर वालेको बांधके ताडनादि करो, नास दो, अंजन लगाओ तथा यंत्र मूत्रादिक उपयोग करो तो भूतबाधा नष्ट हो।

भूताबाधानाशकमंत्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमो भूतनायक समस्त भुवन भूतारी साधय२ हुं२ इस मंत्रको पढ़के मयूरपक्षका झाडा दो तो भूत खडा न रहेगा।

नृसिंहरक्षामंत्र ॐ नमोनारसिंहाय हिरण्यकशिपु वक्षःस्थल-विदारणाय त्रिभुवनव्यापकायभूत प्रेतपिशाचशाकिनीकोलोन्मूलनास्तम्भोद्भवसमस्तदोषान् हनहन सरसर चल चल कम्प २ मंथ हुं फट् फट् फट् ठःठः महारुद्रो जापयति स्वाहा इस मंत्रको पढकर मयूर पक्षका झाडा दो तो भूत निकल जावे।

भूत बुलवाने (भापण कराने) का मंत्र – ॐनमो भगवते भूतेश्वरायकलिकालतार्क्ष्यायरौद्रपंचकरालवक्त्रायत्रिनयन भूषिताय धगधगितपिंगललाटनेत्रायतीव्रकोपानलायमिततेजसे पाशशूलखट्वांगडमरुकधनुर्बाणमुद्गरभयदण्डभासमुद्राव्यग्रदशदोर्दंडमंडितायकपिलजटाजूटकूटार्धचन्द्रधारिणेभस्मरागरंजितविग्रहाय उग्रफणिपतिघटाघोषमंडितकंठदेशायजयजयभूतडामरेशआत्मरूपंदर्शयदर्शय नृत्यनृत्यसरसरचलचल पाशान बंधबंध हुंकारेणत्रासय त्रासय वज्रदंडेन हनहन निशितखड्गेन छिंधिशूलाग्रेणशिलाग्रेण भिद्य

भिंद्य मुद्गरेण चूर्णय, चूर्णय सर्वग्रहाणां आवेशय आवेशय इसमंत्रसे गऊके घृतमें गूगल मिलाके जिसे भूत लगाहो उसके पास धूपदो और इसी मंत्र से उर्द मंत्रित कर कर के उस पर फेंकते जाओ तो वह बोलने लगेगा तब उससे जो कुछ वृत्तान्त पूछना हो सो पूछ लो और फिर पूर्वोक्त मंत्र से उसे निकाल दो।

भूताबाधानाशकअंजनतथानास–लहसन के रसमें हींग पीस के नाकसे सुंघाओ अथवानेत्रोंमें अंजनलगादो तो भूतभागजावेगा

भूतबाधानाशकतंत्र–८ तुलसीकेपत्र, ८ कालीमिर्च और सहदेईकी जड [रविवारके दिन पवित्र होकर लो] इन तीनों कोएकत्र करके कंठमें बांध दो तो भूत नष्ट हो यह तंत्रोपचार ग्रन्थोंमेंलिखाहै

विषज्वरयत्न–इस ज्वर वाले को लघु वमन तथा विरेचन दो विषानुसार उसको उतार दो. उतार इस ग्रंथ के अंत में लिखेंगे।

कामज्वरयत्न–कामज्वरित पुरुष को अत्यन्त सुन्दर रूपवती तरुणी स्त्री से सम्भोग कराओ और कामज्वरित स्त्री को पति से सम्भोग कराओ।

क्रोधज्वरयत्न–उक्त रोगी को प्रिय, मधुर, मनोहर वचनों से समझाओ अथवा उसके अपराधी से प्रार्थना कराओ।

शोकज्वरयत्न उक्त रोगीको धैर्यदिलाकर ज्ञानोत्पादनी कथा नीत्यादि सुनाओ, अनेक मिष्टान्नरुचिवर्धनपदार्थ खिलाकर पुष्पवाटिकादिमें भ्रमणकराओ तो शोकनिवारण होकर ज्वरजातारहै

भयज्वरयत्न-उक्त रोगीकोवीररससंमिलित हर्षोत्पादनी कथा वार्ता श्रवण कराके पक्ष [हिम्मत]दो तो भयजन्य ज्वर नष्टहो

शापज्वरयत्न-जिस योग्यपुरुषके तिरस्कार करने से शापहुआ है उसे मृदु भाषणद्रव्य, प्रार्थना, शान्ति, क्षमादि और यत्नोंसे प्रसन्न करनेसे शापज्वर नष्ट होगा।

१ इसी धूनीमें नीमके सूखे पत्र और सांपकी कांचली भी डालदो

विषमज्वरयत्न—उक्त रोगी को मूंग या मोंठ की दाल का हलका जल पिलाओ, ठण्डा पानी पीने को न दो और निम्नौषध दो।

१—पटोल, हरें की छाल, इन्द्रयव गुरच और जवासा समान भाग बना कर चूर्ण करो, इस चूर्ण में से २ टंक का क्वाथ बना कर दोनों समय ७ दिन तक पिलाओ तो संततज्वर दूर हो।

२ कटियाली, धनियां, सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, पद्माख, रक्तचंदन, चिरायता, पटोलपत्र, अडूसा, पुहकरमूल, कुटकी इन्द्रयव, नीम की छाल, भारंगी और पित्तपापडा समान भाग २ टंक का क्वाथ दोनों समय १० दिन पिलाओ तो संततादि शीतज्वर नष्ट हो, यह क्षुद्रादि क्वाथ है।

३ चिरायता, नीमकी छाल, कुटकी, गिलोय, हरेंकीछालनागरमोथा, धनियां, अडूसा, त्रायमाण, कटियाली, काकडा सिंगी सोंठ, पित्तपापडा, प्रियंगुपुष्प, पटोल पीपली और कचूर को समान भाग महीन पीस छान के उस में से सवा टंक प्रति दिन शीतल जल के संयोग से ८ दिन तक पियो तो विषमज्वर नष्ट होगा, इस षोडशांग चूर्ण कहते हैं।

४ चिरायता, कुटकी, निसोत नागरमोथा पीपली वायबिडंग सोंठ और नीम की छाल समान भाग महीन पीस छान कर चूर्ण बनाओ और इसमें से १ टंक प्रति दिन उष्ण जल के साथ ७ दिन तक लेवे तो विषमज्वर नष्ट होकर भूख बढेगी।

५ संखियाको पीले पके हुए भांडमें रख के बन्द करदो फिर उसे अग्निमें दवाकर भरता करलो इसीप्रकार १४ भांटों के साथबदल २ कर १४ बार भरता करलो तदनन्तर उसे निकालकर उसीके समान प्रमाणकी पीपली और समानही हिंगुल ये तीनों पदार्थ(पकाहुआ संखिया १ पीपली और २ हिंगुल) बारीक पीसकर पान के रस

साथ राई प्रमाण गोली बनालो रोगी का ज्वर को जाडा लगनेके पूर्व एक गोली बताशे में रखकर खिलादो तो अन्येद्यू तृतीयक और चतुरथक इत्यादि समस्त ज्वर ३ तथा ५ गोलीके देते ही नष्ट हो जावेंगे, इसी को ज्वरांकुश रस कहते हैं।

जीर्णज्वरयत्न–१ भाग सोने के पत्र, २ भाग मोती का चूर्ण, ३ भाग हिंगुल, ४ भाग काली मिर्च और ८ भाग शुद्ध खपरिया इन सर्वौषधोंको पीस कर के गौके मक्खनमें (जहां तक मक्खनकी चिकनाहट न मिटे) खरलकरो, उक्तपदार्थ प्रस्तुत होनेपर बडीबना लो. यह रस जो पीपल और मधुके संयोगसे १ या दो रत्तीप्रमाणकी मात्रासे दिया जावे तो जीर्णज्वर, धातुजन्य (उपदंश, प्रमेहादि) रोग, संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, कास श्वास और प्रदरादि सबरोगोंको नष्ट कर देगा इसी को बंसत मालिनी रस कहते हैं।

२ कटियाली, गिलोय और सोंठ इन तीनों का क्वाथ १० दिन तक पिलाओ तो जीरणज्वर दूर हो।

३–कचूर पित्तपापडा, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, कटियाली और चिरायता, समानके चूरणमेंसे २टंकका क्वाथ प्रतिदिन ११दिन तक पिलाओ तो जीरणज्वर और विषमज्वर दूर होवेंगे।

४–१ सेर भर पीपल की राख, ६ सेर मीठा जल और १० टंक लोद इनसबोंको मिट्टीके घटमें रखकर मन्दमन्द आंचसेओटाओ जब चतुर्थांश रहजावे तब उतारकर छान लो फिर इसी रसमें सेर भर गौ का दही सेर भर मीठा तेल २ टंक सौंफ २ टंक असगन्ध २ टंक हल्दी. २ टंक देवदारु २ टंक सम्भालु २टंक पित्तपापडा २ टंक कुटकी २ टंक मूर्वा[1] २ टंक मुलहटी २ टंक नागरमोथा २ टंक रक्तचन्दन और दो टंक रासना ये सब बारीक पीस कर डालदो

१ इसी को मधूलिका, गोकर्णी और पीलुपर्णी भी कहते हैं।

फिर लाखका रस, घी, तेल, दही, औरये सब औषधोंका चूर्ण इन सब पदार्थोंको हाथसे अच्छी तरह मिलाकर मिट्टीके चिकने घडेमें भरदो इसघटको अग्निपर चढाकर मन्दआंचदो औरजब लाखका रसादि पदार्थ जलकर केवल तेलही रहजावे तब उतारके छानकर शुद्ध तेल बनालो इसे लाक्षादि तेल कहते हैं. इस तेलके मर्दन से जीर्णज्वर दूर होता और शरीर में बल बढता है

५ रोगीको प्रथम दिन ३ दूसरे दिन ४ तीसरे दिन ५ इसी प्रकार से २१ पीपलीतक बढ़ाते जाओ और उसी प्रकार एक २ प्रति दिन क्रम करते हुए तीनही तक ले आओ तो जीर्णज्वर नाश हो जावेगा, इसे वर्द्धमान पीपली कहते हैं। कोई २ वैद्य इन्हींको ५ पीपली से बढाकर ५ हीं तक लाते हैं।

६ बकरीके दूधके फैनको प्रतिदिन पिलाओ।

७-नीमके पत्र, त्रिफला, सोंठ, कालीमिर्च, पीपली अजमोद, सेंधानोंन,सोंचरनोन,बिडनोन,जवाखार नोन चित्रक, चिरायता और पित्तपापड़ा, समान भाग महीन पीस १टंक प्रातःकाल जलके साथ दो तो जीर्णज्वर तथा विषमज्वर भी नष्ट हों इसे निम्बादि चूर्ण कहते हैं।

८-त्रिफला, दारुहल्दी, दोनों कटियाली, कचूर, सोंठ, काली मिर्च, पीपली पीपलामूल, मूर्वा, गुरुच, धनियां, अडूसा,कुटकी त्रायमाण, पित्तपापडा, नागरमोथा, कमल तंतु. नीमकी छाल. पोहकरमूल मुलहटी अजवायन इन्द्रयव, भारंगी मुगने के बीज, फिटकरी, बच तज कमलगट्टा, पद्मकाष्ठ चन्दन अतीस खरेटी [बला] बायबिडंग चित्रक,देवदारु पटोल चव्य, लवंग वंशलोचन पत्रक ये सब समान भाग लेकर सब से आधा चिरायता लो इन सबको बारीक पीसकर १ टंक शीतल जलके साथ प्रतिदिन

दो तो समस्त ज्वरमात्र तथा विषमज्वर भी नष्ट हो जावेंगे इसें सुदर्शन चूर्ण कहते हैं।

९ यदि उक्त यत्नों से भी जीर्ण ज्वर न मिटे तो रोगी की शक्ति के अनुसार वमन अथवा विरेचन कराओ तो विषम और जीर्ण ज्वर नष्ट होवेंगे।

अजीर्णज्वरप्रयत्न–अजमोदा, हरेंकी छाल, सौंचरनोंन और कचूर का चूर्ण बनाकर इसमें से १टंक उष्ण जलके साथ दो तो अजीर्णज्वर दूर हो।

दृष्टिज्वरयत्न १–सेकी हुई हींग, कालीमिर्च पीपल और सोंठके बारीक चूर्णमें से २टंक उष्ण जलके साथ दो तो दृष्टिज्वर दूरहो।

२–मोहरे[1] आदि को धोके उसका जल पिलाओ तो दृष्टिज्वर दूर हो।

रुधिरप्रकोपज्वरयत्न–द्राक्ष, अडूसा, कटियाली, हल्दी, गिलोय, हरेंकी छाल समानके चूर्णमें से २टंकका क्वाथ बनाके अधेलेभर मधुके साथ सात दिन तक दो तो रक्तज्वर नष्ट हो।

मलज्वरयत्न कुटकी, पीपलामूल नागरमोथा हर्डे की छाल और किरमाले का गूदा समान भाग पीसकर २टंक का क्वाथ बनाके पिलाओ तो मलज्वर दूर हो।

कालज्वरयत्न–गऊ, पृथ्वी, स्वर्ण, अन्न और वस्त्रादि श्रद्धानुसार दान करो, परमात्मा का ध्यानकरो तथा सन्निपातोक्त यत्न करो जो परमेश्वर की कृपाहो तो आरोग्यता प्राप्त हो जावेगी नहींतो कालज्वर से बचना दुलभही है, इत्यागंतुकयत्न।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्सा खण्डे अगंन्तुकादिज्वरत्रय यत्न निरूपणं नाम चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

---

१ प्रकार का पत्थर प्रसिद्ध है जिसमें धागा बांधकर अग्नि में डालने से नहीं जलता है।

ज्वरोपद्रव;

ज्वरस्योपद्रवाणां च श्वासादीनां यथक्रमात् ॥
तरंगे पञ्चे चात्र चिकित्सा लिख्यते मया॥२॥

भावार्थः-ज्वरके तृट् [प्यास] आदि १० उपद्रवोंकी चिकित्सा इस पांचवें तरंग में वर्णन करते हैं ।

तृषोपद्रवयत्न१-धनियां,नागरमोथा और पित्तपापडा बारीक पीस २ टंक का क्वाथ बनाकर३दिन पिलाओ तो प्यास, दाह और अतिसार ये तीनों उपद्रव नष्ट हो जावेंगे ।

२-बडके अंकुर,चांवलों की लाही और कमलगट्टा को बारीक पीसके मधु के साथ गोली बनाओ और इसमें से एक गोली मुंह में रक्खो तो प्यास न लगे ।

ज्वरमें उत्पन्न खांसीका यत्न१-पीपल,पीपलामूल,सोंठ,भारंगी, खैरसार,कटियाली,अडूसा,कलोंजी और बहेड़ा समान भाग पीस १टंक काक्वाथ प्रतिदिन ७दिनतक पिलाओतो खांसी दूरहोगी.

ज्वरमेंश्वासकाउपाय१-सोंठ,मिर्च पीपल नागरमोथा कांकडा सिंगी भारंगी और पीहकरमूलके १ टंक चूर्णका क्वाथ प्रतिदिन सात दिवस पर्यंत पिलाओ तो ज्वरकी श्वास दूरहो ।

ज्वरकी हिचकी का यत्न१-जलमें सेंधानोंन पीसके नासदो तो हिचकी बन्द हो जावेगी ।

२-मोरके चन्दवे की राख और पीपल दोनों मधुके साथ चटाओ तो हिचकी और वमन दोनों दूर हों ।

ज्वर में वमन का यत्न-१टंक गुर्चका क्वाथ मधुके संग दो तो ज्वर और वमन दोनों नष्ट होवेंगे ।

२—चांवलों की लाही और पीपल मधुके संग चटाओ तो ज्वर और वमन दोनों नष्ट होवेंगे ।

ज्वरमें अतिसारका यत्न १–सोंठ,अतीस,नागरमोथा,चिरायता गिलोय और कुडेकी छालके २ टंक चूर्णका क्वाथ प्रति दिन ७ दिन तक पिलाने से ज्वर और अतिसार दोनों बंद होजावेंगे ।

२—पीपली. पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ बेलकी गिरी, नागरमोथा चिरायता,कुडेकी छाल और इन्द्रयवके २ टंक चूर्णका क्वाथ प्रतिदिन ७ दिनतक पिलाओ तो ज्वरातिसार, हुचकी मुखशोथ वमन और श्वास खांसी ये सब नष्ट होंगे ।

ज्वरमें अरुचिका यत्न–सेंधानोंन सेकी हुई भांग आलूबुखारा सोंठ पीपल और द्राक्षा इन सबको गोली बनाके मुखमें रखो अरुचि नष्ट ह ।

ज्वरमें बंधकुष्ठ और अफराका यत्न-साबुनकी बत्ती बनाके मूल द्वार [गुदा] पर रक्खो तो बंधकुष्ठ और अफरा दोनों नष्ट होगें ।

ज्वरमें मूर्छाकायत्न-किरवारेकी गिरी,द्राक्ष, पित्तपापडा, हर्डेकी छालके २ टंक चुर्णकाक्वाथ बनाके पिलाओ तो मूर्छा जावेगी ।

ज्वरमें मुखशोथ और जिह्वाकी निरसताका यत्न–द्राक्ष,मिश्री तथा अनारदाने से कुल्ले कराओ तो मुखशोष और निरसता दोनों मिट जावेंगे ।

ज्वरमें निद्राके अभावका यत्न १–एक रत्ती आलूबुखारा और एक रत्ती भंग के चूर्ण को मधु के साथ चटाओ तो भूख और निद्राकी वृद्धि होकर अतिसार और संग्रहणी नष्ट होजावेगी ।

२-अलसी और अंडी दोनोंके तेलको कांसे (फूल) कीथाली में घिसकर नेत्रोंमें अंजन लगाओ तो निद्रा अवश्य आवैगी ।

---

१ जहां किसी प्रकारका पमाण न दिया हो तहां उन सर्वौषधियों को तुल्य ही तुल्य समझो प्रतिवार के लिखने की आवश्यकता नहीं ।

ज्वरनाशहोने के पश्चात् बल पूर्ण होने तक रोगी को किस नियम से रखना चाहिये ।

नियम—१ पथ्य रखो २ मैथुन न करने दो, ३ व्यायाम तथा किसी भी प्रकार का परिश्रम न करने दो ४ बोझा न उठाने दो और ५अधिक भोजन न करनेदो इत्यादि,विपरीत आहार विहारादिकापूर्ण ध्यानरखो नहीं तो नियम भंग होकर ज्वरकी पुनरावृत्ति हुई तो फिर आरोग्य होना कठिनही है ॥

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे ज्वरोपद्रवयत्न निरूपणं नाम पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

❋ अतिसार ❋

षड्विधस्यातिसारस्य वातादेहि यथाक्रमात ॥
षष्ठे तरंगे वै चात्र चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः—अब हम इस छटवें तरंग में वातादि ६ प्रकार के अतिसारकी चिकित्सा लिखते हैं ।

वातातिसारयत्न १—अतीस नागरमोथा, इन्द्रयब और सोंठ के चूर्णमेंसे २ टंक का क्वाथ प्रतिदिन ७ दिनतक पिलाओ तो वातातिसार दूर हो ।

२—इन्द्रयव नागरमोथा, देवदालीकी गिरी, आमकी गुठली और धावडेके पुष्पके २ टंकचूर्णको भैंसके मट्ठे के साथ ७ दिन तक पिलाओ तो वातातिसार दूर हो ।

पित्तातिसारयत्न १—बेलगिरी इन्द्रयव, नागरमोथा कमलतंतु और अतीसके दो० टंक चूर्णका क्वाथ आठ दिन पर्यंत पिलाओ तो पित्तातिसारजावे ।

२—रसौत, अतीस, इन्द्रयव, सोंठ धायके फूलका २ टंक चूर्ण चांवलोंके पानीके साथ सहता सहता ७ दिन तक पिलाओ तो भयंकर पित्तातिसार भी दूर होगा ।

२-बेलकीगिरी, कमलतंतु नागरमोथा, इन्द्रयव और अतीस के २ टंक चूर्णका क्वाथ ७ दिनतक दो तो पित्तातिसार नष्ट हो ।

रक्तातिसारयत्न-१ इन्द्रयवकी छाल और अनार के छिलके २ टंकभरके क्वाथमें ५ टंक मधु मिलाके ७ दिन पर्यन्त पिलाओ तो रक्तातिसार जावे ।

२ इन्द्रवृक्षकी छाल, अतीस नागरमोथा, नेत्रवाला लोद, रक्त चन्दन, धावडेके फूल और अनारके छिलके में से २ टंक क्वाथ में २ टंक मधु मिलाके ७ दिन पर्यन्त पिलाओ तो दाह मल और रक्तातिसार नष्ट हो ।

३-१ टंक श्वेत चंदन (पीस डालो या घिसलो) २ टंक मधु और २ टंक मिश्री एकत्र कर ८ दिवस पर्यंत चटाओ तो रक्तातिसार नष्ट हो ।

४-मीठे अनारका पुटपाक बनाके चटाओ तो रक्तातिसारनष्टहो

५-बकरी का दूध माखन मधु और मिश्री मिलाकर खिलाओ तो रक्तातिसार दूर हो ।

६- २टँक बेलगिरी बकरी के दूधके साथ ७ दिनतक पिलाओ तो रक्तातिसार दूर होता है ।

गुदापकजानेपरयत्न १-पटोलः मुलहटी और महुआ इन तीनों को पानीमें औटाके शीतल होनेपर छानलो और इस जल से गुदा धोओ तो गुदापाक नष्ट हो ।

२-गेहूँ केआटेमें घी मिलाके पानीसे उसन डालो फिर उसेरोटी के समान सेकके सहता सहता सेको तो गुदापाक नष्ट होगा ।

कफातिसारयत्न १—उक्त रोगीको दो या चार लंघन कराके

१ बहुधा उसी औषधको ७ दिन (आदि) पिलाओ तो वही समझी जावेगी परन्तु ऐसे उक्त सदृश संसगपर इतनी २ औषधि एक एक दिन के लिये हैं ।

तदनन्तर थोड़ा २ मूंगा का पथ्य दो और निम्नलिखित क्वाथ पिलाओ तो कफातिसार दूर हो ।

२—चव्य, अतीस, कूटवेलकीगिरी, सोंठ, कुड़ेकीछाल औरतजके २टंक चूरेका क्वाथ ७ दिन पिलाओ तो कफातिसार दूर हो।

३—सेकी हुई हींग, सोंचरनोंन सोंठ काली मिर्च पीपल और अतीसका १ टंक चूर्ण प्रति दिन ७दिन पर्यन्त खिलाओ तो कफातिसार दूर हो।

सन्निपातातिसार– १ पीपली. पीपलामूल चव्य चित्रक सोंठ खरेंटी वेलकी गिरी गिलोय मोथा पाठा चिरायता कुड़की छाल और इन्द्रयव के २ टंक चूर्ण का क्वाथ प्रति दिन १० दिन तक पिलाओ तो सन्निपातातिसार दूर हो।

२—बड़ी हर्र सोंठ और नागरमोथे का २ टंक चूर्ण प्रतिदिन७ दिनतक खिलाओ तो त्रिदोषज (सन्निपात) अतिसार दूर हो

३कुडेकी छालके (पुटपाक रीतिसे निकले हुए रसमें५टंकमधु मिलाकर प्रतिदिन१०दिनतक पिलानेसे सन्निपातातिसार दूरहो

शोक तथा भयातिसार—इस तरंगके आदि में वातातिसार के जो यत्न लिख आये हैं वेही इसके भी जानो।

आमातिसारयत्न१—हर्रकी छालका २ टंक चूर्ण मधुके संयोग से ५ दिन तक चटाओ तो आमातिसार दूर हो।

२—धनियां, सोंठ, बेलकीगिरी, नागरमोथा और त्रायमाण के २टंक चूर्ण का क्वाथ ७ या १० तथा १५ दिन (रोगानुसार) पिलाओ तो आमातिसार और उदरशूल भी बन्द हो जायगा इसे धान्य (धना) पंचक कहते हैं।

३—बड़ी हर्र, मोथा, सोंठ, अतीस और दारुहलदी के दो टंक चूर्ण का क्वाथ सात दिनतक पिलाओ तो आमातिसार दूर हो

४–बड़ी हरें, अतीस, सेकी हुई हींग, सोंचरनोंन और सेंधानोन का २ टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ दो तो आमातिसार दूर हो।

५-सोंठको जलमें पीसके गोली बनालो इस गोलेपर अरंडीके पत्ते लपेटकर आधेसे दृढ़ बांध दो और ऊपर से मिट्टी लपेटकर मंद मंद आंच से पकाओ. पकने पर उसे स्वच्छ (निर्मल)कर प्रति दिन २ टंक के प्रमाण से मधु युक्त कर सात दिन तक खिलाओ तो आमातिसार दूर हो।

पक्कातिसारयत्न१ लोद. धावड़ेके फूल बेलकी गिरी, मोथा, आमकी गुठली इन्द्रयव के २ टंक चूर्णको भैंसकी छाल के साथ पिलाओ तो पक्कातिसार जाय।

२-अजमोदा, मोचरस, सोंठ. धावड़े के फूल जामुन की गुठली और आमकी गुठली का २टंक चूर्ण गऊ के मठेके साथ पिलाओ तो पक्कातिसार नष्ट हो, यह लघुगंगाधर चूर्ण है।

३ सोंठ, जायफल, अहिफेन. (आफू. अफीम) और कच्चे अनारके बीज इन सबको कच्चे अनारमें भरके अनारको पुटपाक करडालो. फिर उन चारोंको चिरमिठी प्रमाणकी गोलियां बना कर इनमें से प्रति दिन एक एक गोली गौ की छाछ के संग ७दिन तक खिलाओ तो पक्वातिसार नष्ट हो जावेगा।

शोथयुक्त आतिसार का यत्न-विषखपरे की जड़ इन्द्रयव, पाठा वायविडंग. अतीस. नागरमोथा. और काली मिर्च के २ टंक चूर्णका क्वाथ ७दिन पिलाओ तो शोथ युक्त आतिसार दूर हो।

अतिसार में वमन का उपाय १आमकी गुठली. बेलकी गिरी २टंक का क्वाथ. २टंक मधु और२टंक मिश्री मिलाकर प्रतिदिन ७दिन पिलाओ तो वमन और आतिसार दोनों बंद हो जावें।

२-भुंजेहुए मूंग और चांवलोंकी लादी दोनोंको पानीमें औटाके

उस मधुके साथ ५ दिन तक पिओ तो वमन, अतिसार, दाह और ज्वर ये सब दूर होवेंगे।

छहों प्रकारका अतिसारमात्र नष्ट करनेका उपाय१-पांच टंक भृंगराज का रस दही के संयोग से सात दिन तक पिलाओ तो छहों प्रकार का अतिसार नष्ट हो।

२-२टंक राल,१०टंक मिश्री (इसी प्रमाणानुसार) दोनोंका चूर्ण रोगानुसार मात्रा से १० दिन पर्यंत दो तो छहों प्रकार का अतिसार नाश हो।

३-धनियां,सोंठ,पीपली, सेंधानोन, अजमोद, भूंजी हुई हींग और जीरे का २ टंक चूर्ण, मठे के साथ पिलाओ तो सबप्रकार का अतिसार, शूल और आम दूर होकर क्षुधा लगे और रुचि बढ़ेगी ऐसा वृन्द में लिखा है।

४-नागरमोथा,मोचरस, लोद, धावडे के फूल, बेलकी गिरी इन्द्रयव, आफू और (शुद्धपारे गंधक की कजली में इन सब का चूर्ण मिलाके २ रत्ती छाछके साथ १० दिनतक पिलाओ तो अतिसार पेटका मुरौं और संग्रहणी भी नष्ट होगी इसे गंगाधर रस कहते हैं।

५-अफीमको मृत्तिका के पात्रमें सेक के खिलाओ।

६-जायफल लवंग धाडवे के फूल बेलकी गिरी नागरमोथा सोंठ मोचरस हिंगुल और अफीम इन सबको पोस्तके रसके संग खरल करके १ या २ रत्ती प्रमाणकी गोली बनालो इनमें से एक प्रति दिन चावलों के पानी अथवा छाछ के साथ ७ दिन तक खिलाओ तो निश्चय है कि सब प्रकार के अतिसार दूर होंगे।

७-१ भाग आफू २ भाग हिंगुल ३ भाग लवंग ४ भाग मोचरस और ३ भाग मिश्री के १ या २ रत्ती चूर्ण षष्टिक तंडुल

---

१ शाल्मलि सेमर वृक्षकी गोंद को मोचरस कहते हैं।

जल अथवा छाछकेसाथ पिलाओ तो भयंकर अतिसारभीनष्टहोगा।

८ जायफल, खारक और अफीम (तीनों समान भाग) ले नागर बेलके पानके रसमें खरल करके१रत्ती प्रमाणकी गोलबिना आ रोगी को उक्त१गोली प्रतिदिन छाछके साथ ७ दिन तक खिलाओ तो अतिसार भी नष्ट होगा।

मुरी अतिसार का यत्न१-बेलकी गिरी .लोद और कालीमिर्च ये तीनों एक एक पैसे भर लेकर महीन पीसकर चूर्ण बनाओ इसमें से १ टंक मधुके साथ चटाओ तो मुरातिसार दूर हो ।

२-२टंक धवडे के फूलका चूर्ण दही के संसर्गसे७दिनतक खिलाओ तो अतिसार दूर हो।

३-८टंक कवीट (कैथा) का रस मधु के साथ ७ दिन तक खिलाओ तो भी मुरा नष्ट होगा।

४-१टंक लोद ७ दिनतक दधिके साथ खिलाओ; ये मुरेके यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

अतिसाररोगमें वर्जितवस्तु—जिसपुरुषको अतिसार रोगहुआ हो वह उष्ण, भारी चिकना पदार्थ, नवीनान्न भक्षण घाममें घूमना परिश्रम, स्नान,मैथुन. चिन्ता इतनी बातोंसे कदापि सम्पर्क न करें ऐसा वैद्यविनोद में लिखा है।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्सखण्डे-अतिसार चिकित्सा निरूपणं नाम षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

संग्रहणी,

पृथग्दोषैःसमस्तैश्च चतुर्धा ग्रहणीमदः ।
तरंगे सप्तमे तस्य चिकित्सा लिख्यते मया॥ १ ॥

---

१ यह अतिसार का एक भेदही है जिसके पेटमें कसेला उठता है यह चार प्रकार का होता है जिसमें हम ऊपर चारों की चिकित्सा लिख चुके हैं।

भाषार्थः—वात, पित्त, कफ तथा सन्निपातसे जो चार प्रकार का संग्रहणी रोग उत्पन्न होता है उसकी चिकित्सा हम इस सातवें तरंग में लिखते हैं।

वातसंग्रहणीयत्न १—सोंठ गुर्च नागरमोथा और अतीस के २ टंक चूर्णका क्वाथ १५ दिवस पर्यंत पिलाओ तो उक्त रोग दूर होकर भूख बढेगी।

२—सोंठ, पीपल, पीपलामूल, चव्य चित्रक का २ टंक चूर्ण नित्य गौकी छाछके साथ पिलाओ और ऊपर से दो चार बार और भी छाछ ही पिलाओ तो वातसंग्रहणी दूर हो।

३—२टंक शुद्ध गंधक, १ टंक शुद्ध पारदकी कजली, १० माशे सोंठ २ टंक कालीमिर्च १० माशे पीपल, १० माशे पांचों नोन, ५ टंक सेका हुआ अजमोद, ५ टंक सिकी हींग, ५ टंक सिकासुहागा और पैसे भर सिकी भंग इनको पीस छानके कजली मिलादो, फिर इसे २ दिन तक और भी खरलकरो तो चूर्ण बनगया इस में से २ तथा ४ माशे गौकी छाछके साथ पिलाओ तो बात संग्रहणी, मंदाग्नि, अतिसार, ववासीर, पेटकी कृमि और क्षयी ये सब रोग नष्ट होजावेंगे, इसीको लाई चूर्ण कहते हैं।

पित्तसंग्रहणीयत्न १—रसौत, अतीस, इन्द्रयव, तज धावडे के फूलका २ टंक चूर्ण गौकी छाछ या मधु या आंवलों के साथ १५ दिन तक पिलाओ तो पित्त संग्रहणी दूर हो।

२—जायफल, चित्रक, श्वेत चंदन, वायबिडंक, इलायची, भीमसेनी कपूर, वंशलोचन, जीरा, सोंठ, काली मिर्च पीपल, तगर, पत्रज और लवंग समान भागले चूर्ण बनाकर इनसब चूर्णसे दूनी मिश्री और थोड़ी बिन सेकी भंग ये सब एकत्र करलो, इनमेंचार या ६ माशे चूर्ण गौकी छाछके संग १५ दिवस पिलाओ तो पित्त संग्रहणी नष्ट हो ऐसा वैद्यरहस्य में लिखा है।

कफसंग्रहणीयत्न १–हरेंकी छाल, पीपली, सोंठ, चित्रक, सोंचर नोंन और कालीमिर्च का २ टंक चूर्ण नित्य गौकी छालके संग १५ दिनतक पिलाओ तो कफसंग्रहणी नष्ट हो।

सन्निपातसंग्रहणीयत्न १–बेलकी गिरी मोचरस नेत्रवाला नागरमोथा इन्द्रयव कूडेकी छालका २ टंक चूर्ण नित्य बकरीके दूध के संग २५ दिवसतक पिलाओ तो सन्निपातसंग्रहणी नष्ट हो।

२–१ टंक अनारदाना, १ टंक जीरा, २५ टंक भर धनियां, १ टंक भर साथ १ टंकभर कालीमिर्च मिश्रीका २ टंक चूर्ण नित्य गौकी छालके संग १ मासतक पिलाओ तो सन्निपात संग्रहणी आमातिसार,पार्श्वशूल अरुचि और पेटमेंका गोला ये सब नष्ट होवें।

३–गंधक पारा सिंगीमुहरा (तीनों शोधे हुए चाहियें) सोंठ कालीमिर्च पीपल सिका सुहागा सार (लोहभस्म अर्थात् कांतिसार) अजमोदा और अफीम तुल्य भागलो और इन सब के तुल्य अभ्रककी भस्म लेके इन सबको चित्रकके क्वाथ में १ दिन खरल करो और कालीमिर्चके समान गोली बनालो इसकोअभ्रक गुटिका कहते हैं उक्त रोगीको इसकी १ गोली नित्य प्रति १ मास तक खिलाओ तो सन्निपातसंग्रहणी नष्ट हो।

४–शुद्ध गंधक शुद्ध पारेकी कजली अभ्रक हिंगुल जवाखार (खार) जायफल बेलकी गिरी मोचरस शुद्ध सिंगीमुहरा अतीस सोंठ कालीमिर्च पीपल धावडे के फूल घृतमें सिकी हरेंकी छाल कवीट अजमोदा चित्रक अनारदाना इन्द्रयव धतूरे के बीज कणकच (करंज कवांच, अर्थात् बहुकंटकी) और अफीम तुल्य भागका चूर्ण [उसीमें कजलीभी] पोस्तके रसके साथ खरलकरके मिर्चके सदृश गोली बनालो उक्तरोगोंको नित्यप्राति १ गोली १५

१ अफीमका डोंडा जिसके बीजको खशखश कहते हैं

दिवस पर्यंत खिलाओ तो सन्निपात संग्रहणी शूल अतिसार और विषूचिका ये सब रोग दूर होंगे वैद्यविनोदमें इसका नाम संग्रहणी कंटकरस लिखा है ।

आमवातसंग्रहणीयत्न-सन्निपात संग्रहणीके लियेयत्नही जानो ।

संग्रहणीमात्रपरविशेषयत्न-८भाग कवीट, ६ भाग मिश्री ३ भाग अजमोदा, ३ भाग पीपल ३ भाग बेलकी गिरी ३ भाग धावडेके फूल,३ भाग अनारदाने,३ भागडांसरयां,[1] १ भाग सोंचरनोंन,१भाग नागकेशर, ३ भाग धनियां १ भाग तज एकभाग पत्रज एकभाग कालीमिर्च १ भाग अजवायन १ भाग पीपलामूल १ भाग नेत्र वाला १ भाग इलायची इन सबके महीन छानेहुए चूर्णमेंसे २ टंक चूर्ण नित्य गौकी छालके साथ पिलाओ तो सर्वसंग्रहणी अतिसार और गोला सर्व नष्ट होंगे इसे कपित्थाष्टक चूर्ण कहते हैं,

संग्रहणीकेरोगीकोवर्जितपदार्थ-भारी, आमोत्पादक क्षुधानाशक तथा अतिसारमें जो वस्तु वर्जित कीगई हैं इन वस्तुओं से विशेष अंतर रखके क्षुधावर्धक वस्तुओंका सेवन कराओ ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंड संग्रहणीरयत्न निरूपण नाम तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

❁ अर्शरोग ❁

निदानखंडे प्रोक्तस्य षड्विधस्यार्शसो त्रवै ।
तरंगे चाष्टमे तस्य चिकित्सा लिख्यते मया ॥२॥

भाषार्थ-निदानखंडमें जो छः प्रकारका अर्शरोग कहा गयाहै इस खंडके ८ वें तरंगमें हम उसकी चिकित्सा लिखते हैं ।

वातार्शयत्न १-जमींकन्दपर मट्ठीलपेटकर भुरता बनाओउसे

१ यह सन्निपातसंग्रहणीका ही एक भेदहै ।
२ जिसे डासरफल तथा ततडीक बीज भी कहते हैं ॥

घृत या तेलमें लपेटकर १ टंकभर नित्य ३१ दिनतक खिलाओ।

२–आकके पत्तोंपर पांचों नोंन लगाके इन्हींपर तेल या खटाई लगादो और इन्हीं पत्तों को जलाके भस्म करदो अब इसी में से सवा या अढाई टंक नित्यप्राति १५ दिन खिलाओ तो वातार्श नष्ट हो यह वैद्य विनोदमें लिखा है।

३–गौकी छाछमें सेंधानोंन डालकर बहुत दिनतक पिलाओ तो वातार्श नष्ट हो।

४–५ टंक हरेकी छाल १ टंक कालीमिर्च १ टंक पीपलामूल १ टके भर पीपली, १ टके भर जीरा, १ टके भर चव्य १ टकेभर चित्रक. १ टके भर सोंठ, १ टके भर शुद्ध भिलावा, पावभर पका या हुआ भूकन्द (जमींकन्द) और १ टकेभर जवाखार इन सब को महीन पीसके इन सबसे दूना गुड़ मिलाकर १ टके भरकी गोलियां बनाकर १ गोली नित्य खिलाओ तो वातार्श जावे।

५—बनालेकी बेलके पत्र पानी में औटाकर उस जलसे गुदा धोओ तो अर्शके मसे नष्ट हों।

६—बनाले के डोडोंकी धूनी दो तो मसे दूर हो।

७–बनालेके डोंडे कांजीमें पीस मसोंपर लेपकरो तो मसे नष्टहों

८–नीमके पत्ते, कनेरके पत्ते, गुड कडवी तुरईकी जड इनसबको कांजीके पानीमें पीसकर मसोंपर लेप करे तो मसे झड़कर गिरपडें।

९–हल्दी कडवी तुरई अकावके पत्र सुनगाकी जड इनको कांजीके पानीमें पीसकर मसोंपर लेपकरे तो मसे झडकर गिरपडें,

१०–एरडकी जड, मुलहटी रास्ना अजवायन और महुएको कांजीके जलमें पीस गरम सहता हुआ मसोंपर लेप करो अथवा उन्हें सेको तो मसोंकी तडक [चमकीली पीडा] शीघ्र नष्ट होकर कालान्तरमें मसे झड जावेंगे, ये यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

१ बनाले के डोडे जो घोड़ों के मसाले में डाले जाते हैं।

११–हीराकसीस, सैंधानोन, पीपल, सोंठ, कूट कलहारी की जड़ पाषाणभेद, कनेरकी जड़, वायविडंग, दात्यूणी, चित्रक, हरताल चोख के चूर्ण से तिगुना तेल और इन तेल सहित औषधों से चौगुना थूहर, आक का दूध और गोमूत्र इन सबको मिलाकर पकाओ जब तेल मात्र रहजावे तब उतारकर छानलो, जो यह तेल नसोंपर मर्दन करोतो मस्से गल जावें, बवासीर दूरहो और त्रिवली की पीड़ा मिट जावे यह क्षार तेल वैद्य रहस्य में लिखाहै।

१२–१६ भाग पकाया हुआ जमीकन्द, ८ भाग चित्रक ८ भाग सोंठ, ४ भाग त्रिफला, ८ भाग पीपलामूल, ८भाग शुद्ध भिलावां ४ भाग इलायची, ८ भाग वायविडंग, ८ भाग शतावरी, १६ भाग बधायरा और ८ भाग भांग इनके चूर्णमें पुराना गुड़ मिलाकर २ टंककी गोली बांधलो, जो यह १ गोली नित्यप्रति १ मासतक खिलाओ तो अर्श, हिचकी, श्वास, राज रोग और प्रमेह ये सब रोग दूर होवेंगे, यह वृहत्सूरणमोदक वैद्य रहस्य में लिखा है।

पित्तार्शयत्न १–२ टंक रसोतको ४ घडी तक जलमें भिगोकर यही जल नित्य २ मास पर्यंत पिलाओ तो पित्तार्श दूर हो।

(२) पीपलकी लाख, मुलहटी, हल्दी, मजीठ और कमलगट्टाकी बीजीका २ टंक चूर्ण नित्य ४१ दिनतक खानेसे पित्तार्श दूर हो।

[३]नागकेशर, मक्खन, मिश्री प्रतिदिन ५ टंक भर ४१ दिन तक खिलाओ तो पित्तार्श दूर हो।

[४] १००टकेभर कुडेकी छाल पीसके १६ सेर पानी में औटाओ अष्टमांस रहनेपर छानलो, तदनन्तर नागरमोथा, सोंठ कालीमिर्च और पीपल प्रत्येक १ टकेभर, ३ टंक भर त्रिफला, २ टके भर,

१ इसे कलाली और लांगली भी कहते है।

२ यह एक प्रकार का काण्ड है जिसे वृद्धदारु और गमवृद्धि भी कहते हैं।

रसोत, २ टकेभर चित्रक, १ टकेभर इन्द्रयव और १ टकेभर वच इन सबको कूट छान चूर्ण करलो तदनंतर कुडेकी छालके जल में गुडकी चाशनी बनाकर उसमें उक्त चूर्ण १ सेर मधु और एक सेर गौ का घी डालकर इन सबको चाशनी चूर्ण मधु घृतको एकत्रित करलो यह कुडेकी छालका अवलेह है यदि रोगीको इस में से नित्यप्रति[1] टकेभर खिलाओ तो पित्तार्श सर्वतो भाव नष्ट होगा, यही जुदे२अनुपान [जैसे ऊपर छाछ सेवन आदि] पांडु संग्रहणी, क्षीणता, और शोथ ये रोग भी नष्ट कर सक्ता है।

५–पारे और गंधककी कजली, बीजाबोल और मोचरस इन तीनों को महीन चूर्ण बनाके ३ मासे नित्य मधुके संग २१ दिन तक सेवन कराओ तो पित्तार्श अतिसार, प्रमेह स्त्री का प्रदर और भगंदर ये सब नष्ट होवेंगे।

६–२ रत्ती वसंतमालतीरस २ तथा ४ पीपलके साथ मधु और मिश्रीके संयोग से नित्य २५ दिवस चटाओ तो पित्तार्श और संग्रहणी भी दूर हो यह वैद्य रहस्य में लिखा है।

७–जो बवासीर में बंधकुष्ठ होकर मसे ऊंचे होजावें, खुजाल चले और रक्तस्राव होने लगे तो उन मसों पर जोंक लगा कर रुधिर निकाल दो तो बवासीर दूर हो।

कफार्श यत्न१–१ टकेभर अद्रक का क्वाथ प्रतिदिन २१ दिवस पर्यंत पिलाओ तो कफार्श नष्ट हो।

२–हल्दी को थूहर के दूधके ७ पुट देके वह हल्दी मसों पर लेप करो तो कफार्श नष्ट हो।

३–त्रिफला, दशमूल, चित्रक, निसोत, दात्यूणी (जमालगोटेकी जड़) ये पांचों औषध सेर भर लेके कूट छान बीस सेर

१–वैद्य रहस्य में लिखते है कि उक्त दशा मे इस से उत्तम कोई भी यत्न नहीं

जल और ७सेर गुडके साथ मिट्टीके पात्रमें डालदो इसपात्रका मुंह बांधकर २१ दिन धरतीमें गढ़ा रखो फिर डमरूयंत्रद्वारामद्य सदृश रस उतारके रोगीको नित्य १ टंकभर पिलाओतो कफार्श सर्वथा नष्ट होवेगा, वृन्दमें इसे दात्यूणी रस नाम दिया है ।

सन्निपातार्शयत्न–१टंक भर अद्रक, १टके भर काली मिर्च, पावभर पीपली, १ टकेभर चव्य, ५ टकेभर नागकेशर, १ टकेभर पीपलमूल, १ टकेभर चित्रक. ५ टकेभर इलायची, १टकेभर अजमोदा और १टकेभर जीरेके चूर्णमें३०टकेभर गुड मिलाकर५टंक प्रमाणकी गोलियां,बनालो.रोगीको प्रातकाल १ गोली खिलाकर पथ्य पूर्वक भोजन कराओ तो सन्निपातार्श, मूत्रकृच्छ्र, वादी के रोग, विषमज्वर,पांडु. गोला प्लीहा (तापतिल्ली) खांसी, श्वास वमन, अतिसार और हिचकी ये सब रोग जुदे २ अनुपानसे नष्ट हो जावेंगे यह प्रागदा गुटिका सर्व संग्रह में लिखा है ।

२-त्रिफला कालीमिर्च,पीपल, तज.पत्रज.इलायची, वच, भुनी हींग, पाठा; सज्जी जवाखार, दारुहल्दी, चव्य, कुटकी. इन्द्रयव सौंफ, पांचोंनोंन, पीपलामूल, बेलगिरी और अजमोदे का १टंक चूर्ण नित्य उष्ण जलके साथ पिलाओ तो बवासीर, कास, श्वास हिचकी, भगंदर- पार्श्वशूल,गोला,उदररोग, प्रमेह, पांडु अंडबृद्धि (पोते बढ़ना) संग्रहणी,विषमज्वर,और उन्माद ये सब रोग जुदे जुदे अनुपानसे दूर होवेंगे, यह विजयाचूर्ण भावप्रकाशमें लिखाहै

३-१ टकेभर शुद्ध पारा, १टकेभर शुद्ध गंधक २ टकेभर तांबेश्वर, ३टकेभर लोहसार ३ टकेभर सौंठ, २ टकेभर काली मिर्च २ टकेभर पीपली १टके भर शुद्ध सिंगीमुहरा १ टकेभर दात्यूणी २ टकेभर चित्रक २ टकेभर बेलकी गिरी ९ पैसे भर जवाखार पैसेभर सुहागा और ५ टकेभर सेंधानोन इनके महीन चूर्णको

३२ टके भर गोमूत्र और ३२ टंक भर थूहर के दूध में मिलाकर मृत्तिकापात्रमें रख मंदमंद आंचसे पकाओ जब वह गाढा होजाय तब दो माशे की गोली बांधलो, १ गोली नित्य उष्ण जलके साथ खिलाओ तो महा असाध्य सन्निपातकार्श भी इससे नाश होगा यह रस योगतरंगिणी में लिखा है।

४-शुद्धपारा और शुद्ध गंधकसमानलेकर कजली बनाकरउसे घृतसे चुपड लो और उससे दूना बीजाबोल उसी कजलीकेसाथ खरल करके टिकियाबनाओ. यहटिकिया लोहेकेपात्रमें धरकेआंच दो जब वह पिघलकर द्रव होजावे तब केले के पत्तेपर ढलका दो और जम जाने पर निकाललो यह पदार्थ प्रातिदिन १रत्तीप्रमाण १५ दिनतक खिलाओ तो सन्निपातकी बवासिर नष्ट होगी यह पर्पटीरस वैद्य विनोद में लिखा है।

रक्तार्श यत्न-पित्तार्श में जो यत्न लिख आये हैं वही इसके यत्न जानो।

विशेषतः-यह है कि इसमें रक्त बहुत गिरता है सो हम आगे रक्तावरोधक यत्न लिखते हैं जिनसे रुधिर गिरना बंदहोगा।

रक्तार्शरक्तावरोधक यत्न-पावभर गोघृत लोहेकी कढाई में तपाकर उसीमें ४ पैसेभर बड़ी बेरीके पान और ४पैसेभरआंवले डालो जबतक कि यह भली भांति औटकर एक रस न होजावे यह घृत ४ माशे प्रति प्रभात २१ दिनतक खिलाओ,जलसेकेवल कुल्ला कर लेनेदो,पर पीने न दो उष्ण वस्तु बाजरा करेला,मिर्च अचार, बैंगन उर्द और केले आदि न खाने दो पर पथ्य से रक्खो तो मसोंसे रुधिर स्राव बंद हो जावेगा।

२-निबौलीकी बीजी और औलिया दोनों समान ले पानीके साथ खरल करके १रत्ती प्रमाण की गोली बांधलो इनमें से एक

गोली नित्य रसोत के साथ ११ दिन पर्यंत खिलाओ तो मसोंसे रक्त गिरना बन्द हो।

रक्तार्शके मसोंका यत्न–रसौत, चीनियांकपूर और निबोली की बीजी इन तीनों को महीन पीसके मसोंपर लेप करो तो मसे छूंछे निर्जीव पड़ जावेंगे तब उन पर नीलेथूथे का लेप करो तो सर्वतः झड़कर गिर पड़ेंगे।

सहजार्शयत्न–मनुष्यके माता पिताके रज वीर्य दोषसे सहजार्श होताहै इसपर कोई यत्न नहीं है. रोगी को योग्य है कि पथ्य से रहे. घृतका विशेष सेवन करे, और दान पुण्य, ईश्वर भजन करे तो सहजार्श का क्लेश विशेष न होगा।

सर्व अर्शमात्रके यत्न–एक समय श्रीनारदमुनिजीने मनुष्यों को बबासीर के असाध्य रोगसे अत्यन्त पीडित देखके महादेव जीसे प्रश्न किया कि हे महाराज, अर्शरोग के निवारणार्थ वैद्यक ग्रंथोंमें संखिया (सम्वल)[1] आदि विषक्रिया कई प्रकारसे वर्णन की है परन्तु विषक्रियाके व्यतिरिक्त आप कोई ऐसा सुगम उपाय बताइये कि जिससे उक्त रोग मनुष्यों को त्रास न देकर समूल नष्ट होजावे, तब महादेवजीने उक्त नियमानुसार लोकोपकारार्थ नारदजीको निम्न लिखित सार बताया जिसके सेवनसे अर्शादि अनेक रोगोंसे मनुष्यों का छुटकारा होता है, सो अब हम शिवमत से कांतिसार बनाने की विधि लिखते हैं।

कांतिसारविधि १–कांति लोहेके वारीक[2] पत्रे बनाके तेल, छाछ

१सम्बलको अर्शनाशक अनेक पदार्थ (जैसे मक्खनादि) के संयोग से मसोंपर लगानेसे मसे जडसे कटकर गिर पडते हैं परन्तु ऐसे प्रयोगसे अनेक मनुष्योंका प्राणहानि होगई है इसलिये ऐसे उपाय कदपि उचित नहीं हैं।

२अर्थात् गजवेलि, चीड या फौलाद जिसके पात्र में दूध औटाने से अधिक आंच देने परभी नहीं उफनता हैं इसलिये ऐसेही लोहेको सार बनानेके उपयोग में लाओ और अन्य का कदापि न लो॥

गोमूत्र, कांजी और त्रिफलाके रसमें क्रमसे सातबार बुझाकर रेती से रेतके चूर्ण कर डालो, इसी चूर्णके तुल्य मैनासिल और तुल्यही सोनामक्खी इन तीनोंको तप्त खरल करके शराव सम्पुटमें बन्द करदो अब यह सम्पुट लुहारकी भट्टीमें धरके धोंकनीसे तीक्ष्ण आंचदो जल जानेपर [जब इसकी गंध आना बन्द होजावे] निकालकर उसे अष्टमांश पारे के साथ आंवलेके रसमें खरल करो और उक्त रीत्यानुसारही उसे चारबार ताम्रदेके खरलमेंपीसलो अबयह जलपर तैरनेवाला उत्तमसार होगया, तदनंतर इसपर विषखपरेके रसकी १० पुट, पलासके रसकी १० पुट, थूहरके दूधकी १० पुट पुनर्नवाके रसकी १० पुट शतावरीके रसकी १० पुट, गुरचके रसकी २० पुट, जामुनके वक्कलके रसकी ७ पुट, गूलरके वक्कलके रसकी ७ पुट, ग्वारपाठेके रसकी १० पुट, तेंदूके रसकी ७ पुट आंवलासार [गंधक] की२० पुट नीबूके रसकी २० पुट, पलाशके वक्कलकी २० पुट, सारसे १२वां भाग हिंगुल ग्वारपाठेकेरसकेसाथ १ पुट, घृतकी १० पुट और मधुकी१० पुट देके लोहसार सिद्धकर लो, नित्यप्रति प्रातःकाल पीपली और मधुके संयोग से १ रत्ती खिलाओ और क्रमशः बढ़ाते बढ़ाते ३ रत्ती तक की मात्रा दो. खानेवालेसे शिवजीका पूजन करा ब्राह्मण द्वारा वेदमंत्रोंसे करा ओ, औषध देते समय इस मंत्रको पढ़ो या रोगी से पढ़ाओ ॐ अमृत भक्षयामि स्वाहा ऐसा कह मात्रा दे दो और ऊपरसे खरेंटीका क्वाथ सेवन कराओ, इसपर पेठा तेल- राई मद्य और खटाई आदिक कुपथ्यी वस्तुएं रोगीको कदापि सेवन न करनेदो

१ येपुट इतना एकसंगही नहीं वरन एक के पीछे एक क्रमशः देना चाहिये पुट इस प्रकार से दीजावे कि जिसका पुट देनाहो उसी वस्तु के साथ सारको खरल करके टिकिया वनाकर सुखालो आर सम्पुट में रख के फूकदो या वैसे ही लोहे के पात्र में रख के गोवरी (कंडा, उपला)की आंच दे दो ॥

जो उक्तौषध उक्त नियमानुसार दो तो वृद्ध पुरुषभी तारुण्य को प्राप्त हो, सब प्रकार के अर्श, मंदाग्नि, श्वास, कास, पाण्डु, वातरक्त,मूत्रकृच्छ्र और अन्त्रवृद्ध्यादि अनेक असाध्य रोगसेछूट जायगा, यह विधि वृहदात्रेय तथा भावप्रकाश में लिखी हैं।

२-२ टंक हर्रेकी छालमें ५ टंक पुराना गुड मिलाकर नित्य प्रति जलके साथ खिलाओ तो अर्श दूर हो।

६-अधापुंष्पी, खरैंटी, दारुहल्दी, पृष्ठपर्णी, गोखरू, इन्द्रयव, सालईके फूल, बडके अंकुर, गूलरके अंकुर और पीपलके कोमल पत्र ये सर्वौषध दो टकेभर ले कूटकर चूर्णबनाओ, इसमें से नित्य २ टंकका क्वाथ बनाकर पिलाओ (और उस पर यह घृत खाने को दो तो और भी उत्तम हो) तो बवासीर मात्र दूरहो।

४-जीवन्तीकी जड, कुटकी, पीपलामूल, कालीमिर्च, सोंठ, देवदारू, शतावरी; चन्दन. रसौत कायफल चित्रक मोथा पियंगु खरैंटी. शालपर्णी. कमलगट्टा, मजीठ. कटियाली. बेलकी गिरी मोचरस और पाठा ये सब औषध अधेले २ भर ले चूराकर इनके क्वाथका चार सेर रसलो. इन औषधोंका चारसेर क्वाथ १ सेर गोघृतके साथ कढाई में औटालो, क्वाथ जल जाने पर घृतको छान लो. यह शुद्धौषध संयोगित घृत नित्य २ टके भर खिलाओ तो बवासीर मात्र दूर होगी।

५-शीशेकी गोली गोके घृतमें घिसकर १० दिन तक मसों पर लगाओ।

६-२ टंक विष्णुक्रांता [बूटीविशेष] २ टंक कालीमिर्च और एक माशे भांगको जलमें घोटके पिलाओ. इस ५-वें और ६ वें उपाय से बवासीर दबी रहेगी।

---

१ यह नीले फूलकी बूटी है जिसे अंधाहोली भी कहते हैं।

अर्शरोगीको वर्जित कार्य-मलमूत्रावरोध, स्त्रीसंग, घोडा ऊंट आदि पशुओंकी सवारी, दोनों पांवके बल अधर बैठे और केले करेले, बाजरा इत्यादि उष्ण वस्तुएं कदापि सेवन न करे।

चर्मकीलरोगयत्न[१]-अग्नि तथा क्षार आदि क्रियासे मसेजलादो २-चूना (खानेका) सज्जी सुहागा और नीलाथोथा समभागको २ दिन नीबूके रसमें भिगोओ तदनंतर खरल करके चर्मकीलके मसोंपर लगाओ तो अवश्य नाश हो जावेंगे।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्सा खण्डे अर्शरोगयत्न निरूपणं नामाष्टमस्तरंगः ॥ ५ ॥

मन्दाग्नि, भस्मक, अजीर्ण,

मन्दाग्निभस्मकाजीर्णरोगाणां हि यथाक्रमात।
तरंगे नवमे चात्र चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः-अब हम इस नवमे तरंग में मन्दाग्नि, भस्मक और अजीर्ण रोगकी चिकित्सा यथाक्रम से लिखते हैं।

मंदाग्नियत्न[२]-अद्रकके छोटे २ टुकडे सैंधानोनके साथ नीबूके रसमें डालके मृत्तिका के पात्रमें रखदो, इस अद्रकको थोडा २ नित्य खाया करो तो मंदाग्नि दूरहो, यह वैद्यजीवनमें लिखा है, २-भोजनके पूर्व सैंधानोन और अद्रककी चटनी नित्य खाया करोतो मन्दाग्नि नष्टहोकर क्षुधाबढ़ेगी जिह्वा तथा कंठकी शुद्धि होगी, भावप्रकाश में लिखा है कि यह प्रयोग सदा पथ्यरूपीहै

भस्मकरोगयत्न-यदि भस्मरोग असाध्य हो तो रोगको ऐसे

---

१ मूलद्वारके व्यतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर मसे होना चर्मकीलरोग कहाता है इसका स्पष्टीकरण निदानखण्ड में देखो.

२ मन्दाग्नि और भस्मक के यत्न प्राचीन अमृतसागर में नहीं लिखे हैं इस लिये भावप्रकाश और वैद्यजीवन से लिखे हैं ॥

पदार्थ खाना बढ़े हुए पित्तको शमन करके कफको विशेष वृद्धिगत करेतो भस्मक रोग नष्ट होगा क्योंकि जो चिकित्सा कफ कारक है वही पित्त नाशक होतीहै। पित्त नाशक होने ही से भस्मक भी दूर होगा और जो असाध्य लक्षण हुए तब इससे रक्षा पाना दैव वशात्ही जानो. भस्म किये बिना क्या छोड़ेगा।

अजीर्णरोग यत्न—१ हर्रेकी छाल और सोंठके २ टंक चूर्ण में १० टंक गुड़ मिलाकर शीतल जल के साथ नित्य खिलाने से अजीर्ण दूर हो और क्षुधा बढ़े।

२—हर्रेकी छाल और सेंधेनोंन का नित्य सेवन कराओ तो अजीर्ण मात्र नष्ट होकर क्षुधा बढ़ेगी।

३—सेंधानोंनें. सोंठ. कालीमिर्च का २ टंक चूर्ण नित्य गऊकी छाछ के साथ १५ दिनतक सेवन कराओ तो अजीर्ण, मन्दाग्नि अर्शभी नष्ट होकर भूख लगेगी।

४—सोंठ, कालीमिर्च. पीपल. अजमोदा सेंधानोन श्वेतजीरा. श्याम जीरा और सेंकी हुई हींग को १ तथा २ टंक घृत युक्त खिचडी में प्रथम ग्रास के साथ नित्य खिलाओ तो अजीर्णमात्र दूर होकर क्षुधा बढ़े तथा गोला और प्लीहा भी होंगे, इसे हिंगाष्टक चूर्ण कहते हैं॥

५—जवाखार, सज्जी, चित्रक, पंचनोंन,इलायची.पत्रज भारंगी पोहकरमूल,कचूर, निसौत. नागरमोथा.इन्द्रयव. डांसरफल. भुनी हुई हींग. अमलवेत, जीरा.आंवले.हर्रेकी छाल.पीपली.अजवायन तिल्लीका खार और पलासके खारका चूर्ण बिजौरेके रसमें आठ पुट देके सिद्ध करो, जो उसमें से २ टंक नित्य जलके साथ सेवन

१ डासरे तंतडी के बीज खट्टे होते हैं।

कराओ तो अजीर्ण मात्र दूर होकर क्षुधा बढेगी, इसीका नाम अग्नि मुख चूर्ण है यह गोला उदररोग अंत्रवृद्धि और बात रक्त के लिये बड़ा लाभकारी है।

६–थूहर, आक चित्रक, अरंडी, पुनर्नवा, तिली, आधीझाडा कदली, पलास, औरडासरा इनप्रत्येककाखार, अजवायन, अजमोद जीरा, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल और सिकी हींग, इन सबका चूर्ण अद्रकके, रसमें ५पुट देकर खरलकरो यह चूर्ण नित्य शीतल जलके साथ सेवन करने से अजीर्ण मात्र दूर होकर क्षुधा बढ़ेगी, अनुपान बदलनेसे और रोगभी नष्ट करसक्ता है, इसे वैश्वानरचूर्ण कहतेहैं।

७–४ पैसे भर सांभर नोंन, ३ पैसेभर सोंचर नोंन ४ टंक वायविडंग ५ टंक सेंधा नोंन ५ टंक धानियां ५ टंक पीपली ५ टंक पीपलामूल, ५ टंक पत्रज, ५ टंक काला जीरा, ५ टंक कालीमिर्च ५ टंक नागकेशर, ५ टंक चव्य, ५ टंक अमलवेत. ५ टंकजीरा, ५ टंक सोंठ, १० टंक अनारके दाने, १टंक इलायची १टंक तज इनका ४ मासेचूर्ण प्रतिदिन गऊकी छाछ तथा कांजीके साथ नित्य सेवन करो अजीर्ण, गोला, प्लीहा, उदररोग; अर्श, संग्रहणी, बंधकुष्ठ, शूल. शोथ, श्वास; कास, आम विकार, पांडु और मंदाग्नि ये सर्व रोग दूर होंगे इसे लवण भास्कर चूर्ण कहते हैं।

८–१ टंक सेंधानोंन, २ टंक पीपलामूल, ३ टंक चव्य, ४ टंक चित्रक, ५ टंक सोंठ, ६ टंक हर्रेकी छाल और इन सब औषधोंके तुल्य मिश्री डालकर चूर्ण बनालो, यह बडवानल चूर्णहै नित्य दो टंक सेवन से अजीर्ण नष्ट कर क्षुधा बढ़ाता है।

९–२ टंक शुद्ध गंधक और १ टंक शुद्ध पारेकी कजलीमें ५ टंक लोहसार और ५ टंक ताम्बेश्वर मिलाकर लोहेकेपात्रमें धरकेआग पर चढ़ादो. पिघल जाने पर अरंडके पत्रों पर ढालके १०० टके

भर जंभीरीके रसके साथ खरल करो, फिर छाया में सुखाकर १०० टकेभर बिजौरेकेरसकेसाथ खरलकरो, फिर छायामें सुखाके पीपल पीपलामूल, चव्य चित्रक सोंठके क्वाथकी ५० पुट दो भली भांति सूख जानेपर इनसबके तुल्य भुना सुहागा और आधा सोंचरनोंन डाल इन सबके तुल्य काली मिर्चे डालो तदनंतर इसे चने के खारकी ७ पुट देके प्रस्तुत कर कांचादिके पात्रमें धरदो, अब यह क्रव्याद रस बन गया, जो २ माशे प्रतिदिन खिलाकर ऊपर से सेंधेनोंन युक्त गो छाछ पिलाओ तो अजीर्णमात्र तत्क्षण दूरहो, अत्यन्त गरिष्ठ भोजनभी पाचन होजावे और शूल गुल्म, वाय गोला, अफरा. प्लीहा, उदर ये भी सब दूर होवेंगे ।

१०-जवाखार सज्जी, सुहागा, शुद्धपारा, शुद्ध गंधक, पीपली पीपलामूल. चव्य. चित्रक. सोंठ इन सबके तुल्य भुनी भांग और आधी मुंगने की जड़ लो, पारे गंधक की कजली करके सर्वौषध डालके महीन पीस लो तदनंतर १दिन भांग के रसमें १ दिन मुंगनेकी जडके रसमें और १ दिन चित्रकके रसमें खरल करके धूप में सुखातेजाओ अंतको सरावसम्पुट करके गजपुटमें फुंकदो तदनंतर सात दिनतक अद्रकके रसमें खरल करके निकाल धरो अब यह ज्वालानलरस बन गया जो १ या दो रत्ती गंधकके साथ चटाकर ऊपरसे गुड़का क्वाथ पिलाओ तो तत्क्षण अजीर्ण मात्र दूर होकर क्षुधाकी दीर्घ वृद्धि हो और अतिसार संग्रहणी. कफके रोग वमन अरुचि आदि भी दूर होवेंगे ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखा है ।

११-शुद्ध गंधक काली मिर्च चूक और सोंचरनोंन का १ टंक चूर्ण नित्य जलके संग खिलाओ तो अजीर्णमात्र दूर हो बंधकुष्ठ जावे और भूख लगे ।

१२-५ टंक शुद्ध पारा और ५ टंक शुद्ध गंधक की कजली

५टंक शुद्ध सिंगीमुहरा, १०टंक कालीमिर्च, २ टंक जायफल इन सबको पीसके ५दिनतकडासरेके रसमें खरलकरो, अब यह राम बाण रस बन गया जो इसको १रत्ती नित्यप्रति७दिनतक खिलाओ तो अजीर्ण मात्र नष्ट होकर भूख बढ़ेगी।

१३—शुद्ध पारा और शुद्धगंधककी कजली, अजमोदा.त्रिफला सज्जी जवाखार; चित्रक, सेंधानोंन सोंचरनोंन जीरा वायविडंग सांभरनोन, सोंठ, कालीमिर्च पीपल ये सब तुल्य लेकर इन सबके तुल्य बकायनके फलोंके छिलके लो, कजली सहित इन सबको जंभीरीके रसमें ७ दिन खरलकरके एक२ रत्ती की गोलियां बनालो, अब ये अग्नितुंडीवती नामक गोली बनगई जोनित्य१गोली खिलाके ऊपर से हरेंकी छाल सोंठ गुडका क्वाथ पिलाओ तो अजीर्णमात्र दूर होके क्षुदा बढेगी और२ रोगभी इससे मिटेंगें।

१४·१ भाग सोंठ, २ भाग काली मिर्च, ३ भाग पीपली ४ भाग सेंधानोन इन सबको नींबूके रसमें १० दिन खरलकरके १ रत्ती की गोलियां बनाओ यह क्षुद्बोध रस है जो एक गोली नित्य खिलाओ तो अजीर्ण मात्र नष्ट होकर क्षुधा बढैगी ।

१५-बिडनोंन सोंचरनोन अजवायन, दोनों जीरे हरेंकी छाल सोंठ कालीमिर्च पीपल चित्रक अम्लवेत अजमोदा धना और डासरफल तुल्य लेके कपडछन चूर्ण बनाओ यह चूर्ण नित्य २टंक खाने से अजीर्ण मात्र दूरहो क्योंकि इसके बल से एक बार पाषाणभी पाचन होवे तो फिर अन्न पाचन में क्या संदेह।

१६—शुद्ध गंधक, कालीमिर्च पीपल सोंठ सेंधानोंन जवाखार और लोंगका चूर्ण १०दिन नीबू के रसमें खरल करके १ रत्ती प्रमाण की गोलियां बनाओ जो नित्य १ गोली खाओ तो अजीर्ण मात्र नष्ट होकर भूख बढ़ेगी ।

१७ ६ भाग हरैंडी छाल, ४ भाग पीपल. २ भाग चित्रक, २ भाग सेंधानोन का चूर्ण बनाकर२टंक नित्य जलके साथसेवन कराओ तो अजीर्ण दूर होकर क्षुधा लगेगी।

१८–२ टंक सिका सुहागा, २ टंक पीपल, २ टंक शुद्ध सिंगी-मुहरा, २ टंक शुद्ध हिंगुल, २ टंक कालीमिर्चकाचूर्ण१०दिनतक नीबूके रसमें खरल करके मटर के समान गोलियां बनालो अब यह अजीर्णकंटक रस बना,जो इसकी१ तथा २ गोलियां जलके साथ सेवन कराओ तो अजीर्ण मात्र दूर होकर भूख लगेगी यह विषूचिका नाश करने की शक्ति भी रखता है।

१९-२टंक शुद्ध सिंगी, २ टंक सिका सुहागा. २ टंक कालीमिर्च, २ टंक सेंधेनोन के चूर्णमें १ सेर भर अद्रक का रस घोट घोट कर मिलादो फिर सेर भर नीबू का रस मिलादो फिर सेरभर दही का पानी भी इसी में गिराके १ रत्ती प्रमाण की गोलियां बांधलो. यहभी एक प्रकारका क्रव्यादि रस है इस की १ गोली नित्य जलके साथ सेवन कराओ तो अजीर्ण मात्र तत्क्षण नष्ट होकर क्षुधा वृद्धि होगा अफरा उदर रोग गोला शूलभी इस से नष्ट होवेंगे।

२०–१०टंक दालचीनी, १० टंक इलायची, १५ टंक लौंग १० टंक सिका सुहागा, १० टंक चित्रक, ५ टंक काली मिर्च और ३ पैसे भर सेंधेनोन का चूर्ण बनाके नित्य सवा टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो अजीर्ण तत्क्षण नष्ट होगा. इसे क्रव्यादि चूर्ण नाम दिया है ये सब यत्नवैद्यरहस्यमें लिखे हैं

२१–सोंठ, काली मिर्च, पीपली त्रिफला पाचों नोन सिका

१ दहीको कपड में बांधकर ऊपर लटका दो और नीचे मृत्तिका पात्र रखदो इसमें जो दहीका पानी टपक जावगा सो उक्त पयोग में लाओ।

२ | १ सेंधा २ सांभर, ३ सामुद्रीय, ४ बिडनोन, और ५ सौंचरनोन ।०

सुहागा जवाखार, सज्जी शुद्ध पारे और शुद्ध गंधककीकजली शुद्ध सिंगी मुहराके चूर्णकी ७ पुट अदरक के रसमें देके १ प्रमाणकी गोलियां बनालो, अब यह क्षुद्रासार चूर्ण प्रस्तुत हुआ जो इसकी १ तथा २ गोलियां लोंगके क्वाथ के संग खिलाओ तो तत्क्षण अजीर्णमात्र नष्ट होकर भूख बढेगी ।

२२–सौ हरें गौकी छाछ में औटाकर गुठली निकाल डालो, सोंठ कालीमिर्च, पीपली चव्य, चित्रक दालचीन, पांचों नोन सिकी हींग, जवाखार,सज्जी,दोनों जीरे, अजमोदाऔरइनसबके समान चूका इनके चूर्णको नीबूकेरसकी दस पुट देके यहचूर्णउपरोक्त विधिसे प्रस्तुत हरोंमेंभरदो और इन्हें धूपमें सुखाके धरदो अब यह अमृत हरीतकी बनगई, जो १ हर्रे प्रतिदिन खिलाओतो अजीर्ण दूर होकर क्षुधा वृद्धि हो तथा मन्दाग्नि,उदररोग, गोल शूल, सग्रहणी, बंध कुष्ठ, अफरा और आमवातभी नष्ट होंगे

२३–७ टंक कालीमिर्च, २ टंक भर अजवायन, २ टंक भर चित्रक, ७ टंक पीपल, २ टंक सोचरनोन,२ टंक सम्भरनोन २ टंक सेंधानोन १ टंक शुद्ध पारा और १ टकेभर शुद्ध गंधककी कजली, १ टकेभर पीपलामूल, ५ पैसेभर सोंठ, ५पैसेभर हर्रेकी छाल ५ टंक बहेडेकीछाल १ टकेभर जीरा ५ टंक चव्यऔरइन सबसे आधी लोंगके चूर्णको अद्रकके रसमें १० पुट देकेइनसबके तुल्य चूका मिलाओ फिर बारीक पीसके२माशे की गोलियांबनालो वैद्यविनोदमें इसे लवंगामृत गुटिका नाम दिया है जो इसकी २ गोली जलके साथ नित्य खिलाओ तो अजीर्णमात्र नष्ट होकर भूख बढे पुष्टता होकर अन्य रोगभी नष्ट होंगे ।

२४–५टंक दालचीनी, १० टंक लवंग १० टंक दोनों जीरे १० टंक सोंठ १० टंक काली मिर्च ५ टंक अजमोद ५ टंक हर्रे

की छाल, ९ टंक पत्रज, १० टंक डांसरे, २० टंक सेंधानोन २० टंक सोंचरनोन, १५ टंक निसोत, पावभर सोनामुखी, आधसेर अनारदाने इन सबके चूर्णको नीबूके रसकी १० पुट देकर इन सब पदार्थों के तुल्य चूका मिलाओ और पीस सुखाके रखदो, यह राजवल्लभ चूर्ण बन गया जो इसे२ टंक नित्य जलकेसाथ सेवन कराओ तो अजीर्णमात्र. बंध कुष्ठ मन्दाग्नि. उदररोग और प्लीहादि दूर होकर भूख बढ़ेगी ।

२५-हरेंकी छाल, पीपल सोंचरनोंनका चूर्ण नित्य २ टंक उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो सर्व प्रकारके अजीर्ण. आध्मान दूर होकर भूख लगैगी।

२६-दाख, हरेंकी छाल, मिश्री को पीसके मधुके साथ दो टंक प्रमाणकी गोलियां बांध लो जो जलके संग नित्य १गोली सेवन कराओ तो अजीर्णमात्र नष्ट हो यह वृन्द में लिखा है ।

२७-जीरा, सोंचरनोंन, सोंठ, मिर्च पीपल, सेंधानोन अजमोद सिकी हींग, हरेंकी छाल ये सब धेले धेले भर और २ टकेभर निसोत इन सबका चूर्ण बनाके२ टंक नित्य उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो अजीर्ण मात्र नष्ट होकर क्षुधा बढ़ेगी. इसे जीरकादि चूर्ण कहते हैं यह योगतरंगिणीमें लिखा है ।

२८-अजमोदा. हरेंकी छाल चित्रक. लवंग. दालचीनी सेंधा नोन इन सबका २टंक चूर्ण नित्य जलके साथ खिलाओ तो अजीर्ण नष्ट होकर भूख बढ़ेगी यह सर्व संग्रह में लिखा है

२९-टंक शुद्ध गंधक, १ टंक भर चित्रक २ टंक कालीमिर्च २ टंक पीपली, ५ टंक सोंठ २टंक जवाखार. १ टंक सेंधानोन ३ टंक सोंचरनोन; १ टंक सांभरनोन के चूर्णको ७ दिनतक नीबू

के रसमें खरल करके एक २टंककी गोलियां बांधलो, इसे सर्वसंग्रह गंधकवटी नाम दिया है। जो इसकी एक गोली नित्य जलके साथ खिलाओ तो अजीर्ण मात्र, शूल, आमदोष, गोला और आध्यमान भी नष्ट होंगे।

ये अजीर्ण मात्रके यत्न दर्शित किये विशेषता यहहै कि आमाजीर्ण पंचलवण, विदग्धाजीर्ण लंघन विष्टब्धाजीर्ण सेंक तथा रसशेषाजीर्णभी सेंक (सिकताव) से नष्ट होता है।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे मन्दाग्निभस्मकाजीर्णयत्न रोग चिकित्सा निरूपणं नाम नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

विषूचिकादि रोग।

विषूचिकालसकयोर्विलम्बिकाकृमिपांडुकामलानाम् ।
चिकित्सा हलीमकस्य यथा क्रमेण रोगस्य ॥
वियाब्धिशाधवेऽस्मिन्तरंगे लिख्यते च विचार्य तन्त्राणि ॥१

भाषार्थः—अब हम इस १० वेंतरंग में १ विषूचिका २ अलस ३ विलम्बिका, ४ कृमि ५ पांडु ६ कामला और ७ हलीमक इन रोगों की चिकित्सा यथाक्रम से अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थों को विचार के लिखते हैं।

विषूचिकायत्न१-एक पोत्या लहसनकी बीजी, जीराशुद्धगंधक सेंधानोन, सोंठ कालीमिर्च, पीपली और सिकी हिंगके चूर्णको नीबूके रसकी पचास पुट देकर छोटे बेरके समान गोलियां बनालो जो एक गोली जलके साथ खिलाओ तो विषूचिका तत्क्षण दूर हो तथा अजीर्णभी नष्ट होकर भूख लगेगी।

२—वायविडंग, सोंठ पीपली, हरेंकी छाल.आंवला, बहेड़ा. बच गिलोय, शुद्ध भिलावा और शुद्ध सिंगी मुहराके चूर्णको १ दिन

मूत्रमें खरल करके १ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनालो, जोअद्रक के रसके साथ खिलाओ तो १ गोलीसे अजीर्ण, २गोलीसे विषूचिका ३ गोलीसे सर्पविष और ४ गोली से सन्निपात दूर होगा इसे संजीवनी गुटिका कहते हैं ।

३-५ टंक सिका सुहागा, ५ टंक शुद्ध पारा. ५ टंक शुद्ध गंधक, ५टंक शुद्ध सिंगीमुहरा, ५टंक पीली कौडीकी भस्म २ टंक सज्जी. २टंक पीपली २ टंक सोंठ २टंक काली मिर्च प्रथम पारे गंधक की कजली बनाकर उसमें यह सब औषध डालदो और ८ दिनतक जँभीरीके रसमें खरलकरके १रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनालो. यह अग्निकुमाररस बन गया जो इसकी१गोली खिलाओ तो विषूचिका नष्ट होवेगी,

४-१ सेर आकके पत्रका रस १ सेर धतूरेके पत्तोंका रस, १ सेर थूहरकादूध, १ सेर भुगनेकी जडका रस, २टकेभर कूट,२टकेभर सेंधानोन, ? सेर तेल ४ सेर कांजी का जल इनसबोंकोकढाईमें डालकर मंद मंद आंचसे औटाओ पक जानेपर जब रस जलकर तेलमात्ररहजावे उतारकरछानलो जो इस तेलका मर्दन करोतो विषूचिका पक्षाघात सब दूर होंगे यह वैद्यरहस्यमें लिखा हैं ।

५-कणगजके बीज,सागरगोटीकीजड आधेझाडे (अपामार्ग) की जड, नीमकी छाल, गिलोय और कुडेकीछालके २टंक चूरेका काथ नित्य ३ दिनतक पिलाओ तो विषूचिका जावेगी ।

हर्रकी छाल, वच सिकी हींग इन्द्रयव भृंगराज. सोंचरनोन, अतीस इनका चूर्ण बनाकर २ टंक पानी के साथ नित्य सेवन कराओ तो विषूचिका तथा बवासीर दोनों नष्ट होवेंगे ।

७-४ माशे इलायची. ४ माशे लौंग १ माशे अफीम १० माशे जायफल इनका ४ माशे चूर्ण नित्य उष्ण जलके साथ पिलाओ तो विषूचिका तत्क्षण अच्छी होगी ।

८पैसेभर जौका आटा, ५ टंक जवाखार इनको छाछ में पका के सहता सहता उष्ण लेप करो तो पेटकाशूल और विषूचिका दूर हो।

९–चूकेको औटाकर सेरभर निकालो और उसमें ५ टंक सेंधा नोन. १० टंक कूट, पावभर तेल डालकर मंदाग्निसे पकाओजब रस जलकर तेल मात्र रहजावे उतारकर छानलो यह तेल विषूचिकाके रोगीको मर्दन करो तो विषूचिका नष्ट होवेगी।

१०–जो विषूचिकावालेको कुक्षिमें पीडा हो तो कडुवे तेलको उष्ण करके मर्दन करो तो पीडा नष्ट होगी।

११–विषूचिका वाले को प्यास अधिक लगै तो लवंग का क्वाथ पिलाओ तो प्यास मिट जावेगी।

१२–जो विषूचिका वेग विशेष बृद्धि पर दीखे तो रोगी के दोनों पार्श्वभागमें दाग दो, विषूचिका नष्ट होगी।

१३ विजोरेकी जड. सोंठ, कालीमिर्च, पीपली, हलदी, कणगज के बीजोंको कांजीमें महीन पीसके अंजन लगादो तो विषूचिका दूर हो ये सर्व संग्रह में लिखे हैं।

अलसतथाविलम्बिकारोगयत्न–९टंक साबुन और १ टंकनीला थोथा दोनोंको पीस गुदामें लगाओ तोबंधछूटकर उक्तरोग दूरहो।

२–दारुहल्दी, चोब, कूट सिकी हींग और सेंधानोन कांजीके जलमें पीसके उष्ण कर सहता हुआ उदरपर लेप लगाओ तो अलस और बिलम्बिका दोनों नष्ट होवेंगे।

३ आधपाव जौका आटा और १टंक सज्जीको जलमें डालके पकाओ और कुक्षपर लेपकरो तो विषूचिका, अलस, विलम्बिका ये सब रोग नष्ट होंगे।

कृमिरोगयत्न–२ टंकभर अजवायन बासी जलके साथ सेवन

कराओतो उदरकीकृमिमुलद्धारसे मलकेसाथबाहरनिकल जावेंगी।

२–१ टंक पलासपापडा पानीमें पीसके २टंक मधुके साथ नित्य ५ दिनतक चटाओ तो कृमि निकल जांयगे ।

३–२ टंक वायुविडंग महीन पीसकर नित्य मधुके साथ ७ दिन तक चटाओ तो कृमि दूर हों ।

४ वायविडंग सेंधानोन हर्रेकी छाल और जवाखार का १ टंक चूर्ण नित्य छाछके साथ ७ दिनतक पिलाओ तो कृमि दूर हों।

५–उक्त चूर्णमें ही नीमके पत्तों का १० टंक रस मिलाकर नित्य ७ दिन पिलाओ तो कृमि नष्ट हों ।

६—[1]टंक शुद्ध पारा और २ टंकशुद्ध गंधककी कजली तीन अजवायन ४ टंक बकायनके फलोंके छिलके, ९ टंक पलासपापडेका २ टंक चूर्ण.५ टंक मधुके साथ नित्य ७ दिन चटाओ तो कृमि दूर हों ये सब यत्न सर्व संग्रह में लिखे हैं ॥

७-नागरमोथा, त्रिफला, देवदारु, और मुगनेकी छालके ८टंक चूर्णका काथ नित्य ७ दिनतक पिलाओ तो कृमि दूर हों ।

८ वायवि.ंग, सेंधानोन, सिकीहींग. पीपली, कपेलासोंचरनोन का २ टंक चूर्ण ७ दिनतक उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो पेटके कृमि मात्र नष्ट होवें यह वैद्याविनोद में लिखा है ।

शिरमेंकी लीख तथा जुओंके नाशका उपाय१–धतूरेके पत्तोंके रसमें पारा घोटकर शिरमें लगाओ तो जुओं का नाश होगा.

२-नागरवेलके पानके रसमें पारा रगडके लगाओ तो लीख तथा जुयें निश्चय मरें।

मुलद्धारोद्भव सूक्ष्मकृमिकायत्न१–लहसन, काली मिर्च, सेंधा

---

१ गेरूके सदृश लाल रंगकी बुकनी प्रसिद्ध ही है ।

नोंन, हींगको पांनीमें पीसके गुदाके भीतर लेप करो तो सूक्ष्म कृमि नष्ट होवें ।

मच्छर, खटमल चामजुएं आदिका यत्न १ महुएके फूल वायविडंग कलिहारी (लांगनी) की जड मैनफल चंदन राल खशकूट भिलावां और लोबान का चूर्ण, बनाकर घरमें धूनी दो तो मच्छर खटमल आदि समस्त दूर होवेंगे ये सब यत्न वैद्यरहस्य तथा वैद्यविनोद में लिखे हैं ।

पांडु कमला और हलीमकके यत्न१-सात दिन तक गोमूत्र में पकाये हुए कान्तिसार को महीन करके १ टंक नित्य जल के साथ १५ दिनतक सेवन कराओ तो पांडुरोग नष्ट हो ।

२—गोमूत्रमें पकाया हुआ १ टंक मंडूर नित्य गुड के साथ १५ दिनतक खिलाओ तो पांडुरोग नष्ट हों ।

३—सांटीकी जड निसोत सोंठ मिर्च पीपल वायविडंग दारुहल्दी चित्रक कूट हल्दी त्रिफला दात्यूणी (जंगली जमालगोटा की जड) चव्य इन्द्रयव कुटकी पीपलामूल नागरमोथा काकडासिंगी करेलेकी बेल अजवायन और कायफल ये सब टकेटकेभर और इनसे दूना मंडूरलेके सबोंका चूर्ण करडालो इस चूर्णको अष्ट गुण गोमूत्रमें पकाके १टंक प्रमाणकी गोलियां बांधलो जो गोली नित्य गौकी छाछके साथ १५ दिनतक सेवन कराओ तो असाध्य पांडु कामला हलीमक तीनों नष्ट हों और श्वास कास शोथ शूल अफरा प्लीहा अर्श संग्रहणी कृमि वातरक्त और कुष्ठ ये समस्त रोगभी नष्ट होंगे, इसे पुनर्नवादि मंडूर कहते हैं ।

---

१ मूलद्वारका स्थान बड़ा कोमल रहता है इस लिये उक्तोपचार करने के पश्चात् गुदाके भीतर घी लगादो वह लेप घृतके साथही करो अर्थात पानी में पीसने के पहले घृतमें पीसो तो उत्तम होगा ।

(४) हर्रे की छाल, आंवले, बहेडेकी छाल, सोंठ, काली मिर्च पीपली, नागरमोथा, वायविडंग, और चित्रक का चूर्ण प्रत्येक ५ टंक ९ पैसे भर लोहसार इन सबको मिलाओ, यह नवायस चूर्ण है। इसमें से ९ रत्ती नित्य मधु या गौ की छाछ या गोमूत्र तथा घृत से १५ दिन खिलाओ तो पांडु, शोथ, अग्निमांद्य और अर्श ये सब रोग नष्ट हो जांयगे, कोई कोई वैद्य इसकी मात्रा २ से १८ रत्ती तकभी बढ़ा देते हैं।

५ अडूसा, गिलोय, नीमकीछाल, त्रिफला, चिरायता, कुटकीके २टंक चूर्णका क्काथ मधुके साथ नित्य १० दिनतक सेवन कराओ तो पांडु, कामला.हलीमक आर रक्त पित्त ये सब दूर होंगे।

६–त्रिफला, गुरच, दारुहल्दी या नीम इनमेसे किसी एकका रस (तथा सर्व सांयोगिक रस) मधु के साथ १० दिनतक पिलाओ तो पांडु, कामला और हलीमक ये सर्व दूर होवेंगे।

७ दडधलका रस नेत्रों में आंजने से उक्त तीनों रोगनष्टहों. यह वैद्य रहस्य में लिखा है।

८–चिरायता, कुटकी, देवदारु, नागरमोथा, गुरच, पटोल, धमासा पित्तपापडा, नीमकी छाल, सोंठ, काली मिर्च, पीपली, चित्रक, त्रिफला, वायविडंगका चूर्ण और इन सबके तुल्य ही कान्तिसार इसमें मिलाकर नित्य १ टंक मधु या छाछके साथ सेवन कराओ तो पांडु, कामला. हलीमक, शोथ. प्रमेह.संग्रहणी, श्वास, रक्तपित्त अर्श, आमवात, गुल्म; और कुष्ठ ये सब नष्ट हो जांयगे। भाव प्रकाश में यह अष्टादशांगावलेह लिखा है।

९–कटु तुम्बडीके रसकी नास दो तो पांडु कामला नष्ट हो।

वार्जितपदार्थ–पांडुरोगसेपीडित मनुष्योंको जौ, गेहूंचांवल मूंग अरहर और मसूरके अतिरिक्त अन्यान्न भक्षणार्थ कदापि नदो।

इति विषूचिकादि चिकित्सा निरूपणं नाम दशमस्तरङ्गः ॥ १० ॥

रक्त पित्त, राज रोग, शोष ।

चिकित्सा रक्तपित्तस्य रोगराटशोषयोस्तथा ।
विधभूमिमिते चास्मिन् तरंगेलिख्यते मया॥१॥

भावार्थः—अब हम इस ग्यारहवें तरंग में यथाक्रमसे रक्त पित्त राजरोग और शोषकी चिकित्सा लिखते हैं ।

रक्त पित्त यत्न १–जिसकी नासिका नेत्र कर्णया मुखसे रुधिर गिरता हो उसे हर्रे. त्रिफला निसोत अथवा किरवाले का जुलाब दो तो रक्त पित्त नष्ट हो ।

२–जिसके अधोमार्ग से रक्त गिरता हो बसे वमन कराने से रक्त पित्त नष्ट होगा ।

३–खस कमलगट्टा अडूसा गुरवेल मुलहटी महुआ नागर मोथा, रक्तचन्दन और धनियां के २ टंक चूर्णका क्वाथ मधुके साथ पिलाओ तो रक्तपित्त नष्ट हो ।

४–प्रियंगु (गोदनी)-के फूल लोद रसौत कुम्हार के चाककी मिट्टी और अडूसेके दो टंक चूर्णका काथ मधु और मिश्रीमिला १० दिन तक पिलाओ तो रक्त पित्त नष्ट हो ।

५-नाकसे रुधिर गिरताहो तो दूबके रस या अनार पुष्परसया अलताई रस या हर्रको शीतल जलमें पीसके उस जलकी नाश दो तो रुधिर प्रवाह बन्द होगा ।

६-दूर्वा और आंवले को शीतल जल में पीसके मस्तक पर लेप करो तो नाकसे रुधिर गिरना बन्द हो ।

७– पकागूलर या छुहारा [खारक] या द्राक्ष (मुनक्का)को मधु के खाने से रक्त पित्त नष्ट हों, यह वैद्य विनोदमें लिखा है ।

८—धनियां: आंवला; अडूसा; द्राक्ष: पित्तपापडे के जल में

भिगोकर ठंडाईके समान उसीमें पीसडालो और चारटंक छानके पिलाओ तो रक्तपित्त, ज्वर, दाह, प्यास ये सब दूर होवेंगे।

९ दाख, चंदन लोद, गोंदिनी फूलोंको महीन पीसके मधु के साथ १० दिन पर्यन्त सेवन कराओ तो सब प्रकारका रक्त पित्त नष्ट होकर रक्त बहाव बंद हो जावेगा ।

१०-बसंतमालिती रस या वीजाबोल बद्धरस अथवा पर्पटीरस दो तो रक्तपित्त दूर होकर नाकसे रक्त गिरना बंद हो ।

११-कांदाके रसकी नास दो तो रक्तपित्त बंद हो ।

१२-शत वार शीतल जल से घी को धोकर मस्तक पर लेप करो तो नकसीर [नाकसे रक्त गिरना] बंद हो ।

१३-श्वेत कृष्मांड (भुरा कुम्हड़ा)को छीलके सब बीज निकाल डालो, मृत्तिकाके पात्रमें डालके जलसे पकाओ पकने पर ठंडा करके गाढ़े वस्त्रमें छानलो जिससे पानी निकलकर शुद्ध पेठा रह जाय, इसे घीके साथ कड़ाहीमें डालकर मंद२ आंचसे तल डालो इसके छने हुए जलमें [जो पहले छान धराथा]मिश्रीकी चासनी बनाकर उसमें वह पेठा [जो तलके धरा है]डालदो तथा उसीके साथ पीपली, सोंठ, जीरा, धनियां, प्रत्येक २ टंक भर पत्रज, इलायची, और वंशलोचन हरएक ४ टंक पीसकर पावभर मधु डालकर रक्खलो यह कूष्मांड़ावलेह बनगया जो इसको नित्य १ तथा २ टंक खिलाओ तो रक्तपित्त, ज्वर दाह प्यास प्रदर क्षीणता, वमन, स्वरभंग, श्वास कास और क्षयी ये सब रोग दूर होंगे, श्वेत के अभाव में पका हुआ पीत कूष्मांड़ भी उपयोग में ला सक्ते हैं।

१४-इलायची, पत्रज, वंशलोचन, तज, दाख, पीपली येसब एक पैसे भर. मिश्री, मुलहटी और खारका चूर्ण हर एक २

टके भर २ टकेभर मधु मिलाकर गोलियां बनालो इसमें से एक गोली नित्य खिलाओ तो रक्तपित्त श्वास, कास, पित्तज्वर, हिचकी मूर्छा, दम प्यास पार्श्वशूल अरुचि शोष. स्वरभंग और क्षयी ये सर्व रोग नष्ट होवेंगेइसे एलादिगुटिका कहते हैं। ये सबयत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

राजरोगशोषयत्न १–८ टंक बंशलोचन ४ टंक पीपली २टंक इलायची १टंक तज और १६ टंक मिश्रीकाचूर्ण मधु और मक्खन के साथ चटाओ तो राजरोग, शोष, ज्वर श्वास, कास पार्श्वशूल मन्दाग्नि. अरुचि, दाह और रक्तपित्त ये सब रोग नष्ट होवेंगे इसे शितोपलादि अवलेह कहते हैं।

२–गिलोयसत और लोहसार को मिलाकर प्रातीदिन १ टंक माखन और मधुके साथ खिलाओ तो राजरोगशोष जाय।

३–३भाग पारदभस्म (मरा हुआ पारा) २ भाग स्वर्णभस्म १ भाग शिलाजीत और १ भागगंधक इन सबको पीसके पीली कौड़ियोंमें भरदो और बकरी के दूधमें सुहागा पीसके उनकौड़ियों के मुखपर लगादो जिसमें मुंह बन्द होजाय फिर इन कौड़ियोंको एक गड़हे (मिट्टीका छोटा वर्तन डुबला) में भरके सराईसे कपड मिट्टी लगाकर उस बर्तन का मुख भली भांति बन्दकरके गज पुटमें फूंकदो, स्वांग शीतल होजानेपर निकालके खरलकर डालो यह राजमृगांक बनगया जो इसकी ४ रत्ती प्रमाणकी मात्रा १ मास पर्यंत वर्द्धमान पिप्पली और मधुके साथ सेवन कराओ तो राजरोग, शोष अवश्य दूर होवेंगे।

४–५ टंक भीमसैनी कपूर, ५ टंक तज, ५ टंक कंकोल, ५ टंक जायफल, ५ टंक लवंग ७ टंक नागकेशर, ८ टंक पिप्पली, ९टंक सोंठ और इन सबके बराबर मिश्री इन सबका चूर्ण बनाकर १टंक

नित्य सेवन कराओतो राजरोग, शोष नष्ट होवेंगे यह कपूरादि चूर्ण जुदे अनुपान से अरुचि. कफ, क्षयी, श्वास, कास. गोला, अर्श, वमन और कंठ रोगादि को भी नष्ट कर देता है।

(५) ५टंक शुद्ध गंधक और ५टंक शुद्ध पारेकी कजली, ५टंक हिंगुल, १टंक मैनसिल, ५टंक अभ्रक और इन सबसे आधा कांति सार इन्हें शतावरीके रसमें १४पुट देके सुखालो यहकुमुदेश्वर रसहै जो इसको २ तथा ३ रत्ती की मात्राप्रतिदिन प्रात काल मिश्री के साथ सेवन कराओ तो राजरोग, शोष, बात पित्तकफकेरोग और सब प्रकारके ज्वर दूर होवेंगे यह वैद्य रहस्य में लिखा है।

६–चौलाई को पकाके घृतके साथ नित्य खिलाओ तो राज रोग, बहुमूत्र नष्ट होवेंगे।

७–पकेहुए बडे गीले ५०० आंवले मृत्तिका के पात्रमें पकाकर रस निकाल लो, इस रसमें ५००टंकभर मिश्री मिट्टीके पात्रमेंही डालकर चासनी बनाओ (होसके इस चासनीको किसी चांदीके पात्रमें रक्खो न तो उसी मृत्तिकापात्रमेंरहनेदो) फिर उसमें दाख, अगर, चंदन, कमलगट्टा. इलायची, हरैंकी छाल, काकोली, क्षीरका कोली, ऋद्धि वृद्धि, मेदा, जीवका. ऋषभक, गुरच, कांकडासिंगी. पोहकरमूल, कचूर, अडूसा, विदारीकंद खरेटी. जीवन्ती शालपर्णी पृष्ठपर्णी, दोनों कटियाली, वेलगिरी अरलु, कुंभेर पाटा ये सब औषध एक एक टकेभर तथा ६टकेभर मधु, १टकेभर पीपली, २टकेभर तज, पत्रज, नागकेशर, इलायची और वंश- लोचन प्रत्येक २टंक इन सबका चूर्ण डालकर खूब मिलालो यह च्यवन प्राशावलेह नित्य १ टकेभर खिलाओ तो राजरो शोष दूर होकर बल और शारीरिक पुष्टि बढे तथा इसकगे सेवन से वृद्ध भी तरुणहो सक्ता है।

८-१टकेभर अडूसा और कटियाली का रस निकाल १टकेभर मधु और २ टंक पीपली के साथ नित्य सेवन कराओ तो राजरोग दूर हो।

९-१ भाग शुद्ध पारा और २ भाग शुद्ध गंधक की कजलीमें १ भाग मृगांक (स्वर्ण भस्म) और १ भाग अनविंधे मोतियोंकाचूरा मिलाकर सबको एक सकोरे में रखो. इस पर दूसरा सकोरा जमाकर कपडामिट्टीसे बन्द करदो,इस सराब सम्पुटकोसुखाकर मृत्तिका के घडे आधे घडेमें नोंन. बीचमें सम्पुट और ऊपर से फिर मुंह तक नोन भर हुए धर दो और इस घडे को चार प्रहर अच्छी तीक्ष्ण आंच देकर स्वांग शीतल हो जाने पर घडेमें से सम्पुट में से रस बडी युक्त पूर्वक निकाल लो. वैद्य विनोदमें इसका कुमुदेश्वर रस नाम है जो नित्य १ तथा २रत्ती की मात्रा मिश्री के साथ खिलाओ तो राज रोग नष्टहोवगा।

१०-पारा और गंधक समान भागकी कजली करके पीली कौडियोंमें भरदो इन कौडियोंके मुखपर सुहागेकी डाट लगाकर अग्निसे तपाओ फिर इन कौडियोंकोसराव सम्पुटमें धरके गजपुट मेंफूंकदो. स्वांगशीतलहोजानेपर सराबसम्पुटमेंसेकौडियोंकोनिकालकर महीन पीसलो, यह पारदेश्वर रस रुद्रदत्त में लिखाहै,इसकी एक रत्ती की मात्रा नित्य सेवन कराओ तो राजरोग, शोष, श्वास.कास,संग्रहणी और ज्वरातिसार सबरोग नष्ट होजाते हैं।

११-चरकमें लिखा है कि शिलाजीत के सेवन करने से भी राजरोग नष्ट हो जावेगा।

१२-१०टंक तालीसपत्र, १० टंक चित्रक, १० टंक हर्रे की छाल, १० टंक अनारदाना, १० टंक डांसरया, २ टंक अजमोदा २ टंक गजपीपल, २ टंक अजवायन, २ टंक झाऊबृक्षकीजड,२टंक

जीरा, धनियां, जायफल, लौंग. पत्रज, इलायची हर एक २ टंक और इन सबके समान मिश्री इन सबका बारकि चूर्ण कर नित्य २ टंक बकरीके दूधके साथ सेवन कराओ तो राजरोग, शोष, क्षयी पीनस, प्लीहा; अतिसार, मूत्रकृच्छ्र. पांडु, प्रमेह, और वात पित्त; कफके के अन्यभी बहुतसे रोग नष्ट होवेंगे, हारीतमें इसका नाम महातालीसादि चूर्ण लिखा है।

सोंठ; कालीमिर्च पीपली. तज, पत्रज इलायची लौंग जायफल वंशलोचन. कपूर. अनारदाना, इन सबको पीस सबके तुल कान्तिसार और इन सबके तुल्य मिश्री मिलाओ, अब यह गंम नायस चर्ण बन गया. जो इसे २टंक नित्य बकरीके दूधके साथ खिलाओ तो राजरो जागमन्दाग्निऔर२० प्रकार के प्रमेह मात्र इससे दूर होवेंगे

१४—लौंग, कंकोल, कालीमिर्च. खश, चंदन, तगर. कमल गट्टा काला जीरा, इलायची, अगर, नागकेशर, सोंठ. पीपली. चित्रक नेत्रवाला भीमसेनी कपूर जायफल वंशलोचन, और इन सबसे आधी मिश्री इन सबका महीन चूर्ण कर नित्य १ टंक खिलाओ तो राजरोग, मदाग्नि. खांसी, हिचकी, संग्रहणी, अतिसार, मंमद प्रमेह ये सबदूर हो जायेंग, इसे लवंगादि चूर्ण कहते हैं।

१५ २ टकेभर अभ्रकभस्म, ४ मासे भीमसेनी कपूर जायपत्री खश पत्रज. लवंग. तालीसपत्र, दालचीनीकारसप्रत्येक ४ मासे धावडेके फूल ६ मासे हरेंकी छाल ४ मासे आंवला ६ मासे बहेडे ी छाल ६ मासे सोंठ और शुद्धपारेगंधककी कजलीदमासे कजलीमें उक्तसबौषधका चूर्ण डाल करजलके साथ खरल कर चने के समान गोलियां बनालो यह शृंगाराभ्रक गुटिक प्रस्तुतहुई सकी चार गोली नित्य शीतल जलके साथ सवना

कराओ तो राजरोग शोथ श्वास कास शूल प्रमेह, वमन अम्ल-पित्त अरुचि संग्रहणी वातरक्त ये सब रोग नष्ट होकर पुष्टता प्राप्त होगी ।

१६-दशमूल, पीपली, चित्रक, कौंचकेबीज, बहेडेकी छाल काय-फल, काकडासिंगी, देवदारू, पुनर्नवाकी जड़, धनियां लवंग कि-रमालकी गिरी, गोखरू, बधायरा, (वृद्धादारू; गर्भवृद्धि) कूट इन्द्रायण इनके टांटकेभरका चूर्ण १६ सेरपानीमें डालकर उसी में अच्छी बड़ी बड़ी चारसेर हरैंभी डालदो ये सब पदार्थ मृत्तिकाके पात्रमें मंद मंद आंचसे औटाकर हरें निकाल शीतल करलो, दूसरे मृत्तिकाके पात्रमें उत्तम मधुके साथ इन्हें ३दिनतक रखकर निकाल लो फिर तीसरे पात्रमें दूसरे मधु (उपरोक्त छोड़दो नया लो) के साथ१५दिन रखके निकाल लो, तदनंतर चौथे पात्रमेंभी नये मधु के साथ१मासे पर्यंत डुबा रक्खो तत्पश्चात् उसी पात्रमें तज पत्र-ज, इलायची, नागकेशर, पीपलका चूर्ण डालके इन सबों को ऐसे मिलादो कि मधु हरें और चूर्ण एकजीव होजावै जो प्रतिदिन१ हरें खिलाओ तो राजरोग शोष, कास, श्वास, हिचकी, वमन, ज्वर मूत्र कृच्छ्र प्रमेह, वातरक्त, बवासीर, संग्रहणी रक्तपित्त दाह' विभूति ब्यांचि (जो पांवके पोरुओंमें होती है) कुष्ठ मृगी और पांडु ये सब रोग नष्ट हों, धन्वन्तरिसंहिता में इसे मधुपक्वहरीत का नाम दिया है ।

१७- सेर अद्रकके रसमें१सेर गुडकी चाशनी मंदमंद आंचसे बनाओ; इस पतली चासनीमें तज पत्रज, नागकेशर, लौंग इला-यची सोंठ, कालीमिर्च, पीपली (एक टकेभर) का चूर्ण डालकर नित्य टकेभर खिलाओ तो राजरोग मंदाग्नि श्वास, कास अरुचि ये सब नष्ट हों यह अद्रकावलेह है ।

१८–बकरीके दूधमें समान जल और उसीमें ३ पीपली डालके मन्द२ आंचदो जब जल औटकर दूध मात्र रहजावै तब वे पीपली खाकर ऊपरसे वही दूध पीजाओ,इस प्रकार १मास तक १ पीहली बढ़ाकर एकही घटाते २पूर्व प्रमाणपर ले आओ तो राजरोग शोष कास श्वास सब नष्टहों यह काशिनाथ पद्धति मे लिखा है।

१९–४ सेर दाख २ मन जलमें डालकर औटाते२ चौथाई रख लो और उसीमें पुराना गुड वायविंडग प्रियंगुपुष्प. तज. पत्रज इलायची नागकेशर टके२ भर डालकर डमरूयन्त्र से मदिराकी रीति पर रस निकाल लो इसे १ टके भर नित्य सेवन करो तो राजरोग श्वास कास ये सर्व रोग नष्ट होंगे योगतरंगिणी में इसे द्राक्षासव संज्ञा दी है।

२०–१ भाग मृगांक २ भाग रूपरस ३ भाग तावेस्वर ४ भाग पारदभस्म ५ भाग अभ्रक इन सबको एकत्रकर १वायविंडग२नाग रमोथा ३ कायफल ४ निर्गुडी ५ दशमूल ६ चित्रक ७ हलदी ८ सोंठ ९ कालीमिर्च और १० पीपली की पुट पृथक२ (एक-के पश्चात् एक) देकर आधी रत्ती प्रमाण की गोलियां बनालो. इसकी एक गोली नित्य खिलाओ तो राजरोग कास प्लीहा गोला ये सर्व नष्ट होवें ये पंचामृत सार संग्रह में लिखा है।

२१–बडे शंखको गोमूत्र में जलाकर इस भस्म की घरियां बनाओ इसमें ५ टंक पारा और ५ टंक गंधककी कजली भरके कपड़ मिट्टी से बंद कर गज पुटमें फूंकदो शीतल होनेपर पीस कर रखलो यह भस्म १ रत्ती प्रतिदिन मधु के साथ चटाओ तो राजरोग नष्ट हो रसार्णव में यह विधि लिखी है।

१ इसे मूस भी कहते हैं जैसे सुनार लोग चांदी सोना गलाने के लिये बनाते हैं।

२१–पावभर थूहरकी लकड़ी, १ टके भर सेंधानोंन १ टकेभर सोंचरनोंन, १ टके भर साम्हरनोंन, १सेर भर मट्ठा, २टकेभर चित्रक इन सबका चूर्ण सराव सम्पुटमें धरके गजपुटमें फूंकदो जो इस भस्ममें से १ मासा प्रतिदिन भोजनोपरान्त जलकेसाथ सेवनकराओ तो राजरोग श्वास, बवासीर, शूल येसब रोग नष्ट होके भोजन तुरन्त पचे और आंव तत्काल भस्म होजावेगी, इसे क्षुद्रादि क्षार कहते हैं, यह रस राजलक्ष्मी नाम ग्रन्थ में लिखा है ।

२३–नीबूके रसमें बुझाई हुई शंखकी १ टके भर भस्म, चव्य, जवाखार. सिकी हींग. पांचों नोंन. सोंठ, कालीमिर्च, पीपली शुद्ध सिंगी मुहरा पारा और शुद्ध गंधक की कजली प्रत्येक १० टंक इन सबका चूर्ण नीबूके रसमें खरल करके चने प्रमाण की गोलियां बनाओ जो एक गोली नित्य लौंगके जलके साथ सेवन कराओ तो राजरोग संग्रहणी शूल गोला ये सब रोग नष्ट होंगे यह शंखवटी योगतरंगिणी में लिखी है ।

२४–दशमूल. कवांचबीज. शंखाहूली. कचूर. खरेटी. गजपीपली अपामार्ग [ऊंगा] पीपलामूल. चित्रक, भारंगी. पोहकरमूल. इन सब २ टंक भर औषधोंका चूर्ण और १०० बडी हर्रें सबकेसब २० सेर पानीमें डालके औटाओ चतुर्थांश रहजाने पर हर्रोंकी गुठली निकालकर महीन पीसडालो फिर१००टके भर पुरानेगुडकी चासनी बनाकर उसीमें उपरोक्त चूर्ण और ८ टंक भर गौका घृत डालदो ये अगस्ति हर्रें बनगई. जो इन्हें १ टंकभर नित्यखिलाओ तो राजरोग शोष. कास. श्वास. हिचकी. विषमज्वर; संग्रहणी पीनस अर्श और अरुचि ये सब रोग नष्ट हों यह विधानवृन्द में लिखा है

२५–१०० टके भर अडूसे को जल में औटाकर चतुर्थांश

क्वाथ रखलो इसमें १०० टकेभर पुराने गुड़की चासनी बनाकर उसीमें आठ टके भर तिलीका तेल, ८ टके भर गौका घृत, १०० हरेंकी छिलकोंका चूर, पीपली, पीपलामूल, कालीमिर्च, पोहकर मूल, द्रव्य, त्रिरक और सोंठ प्रयेक २ टंक का महीन चूर्ण डालकर सिद्ध करलो जो इसको एक टकेभर नित्य खिलाओ तो राजरोग, अर्श, कास, श्वास, स्वरभेद, शोथ, रक्तपित्त, पांडुरोग उदररोग अग्निमांद्य और नपुंसकता ये सब रोग दूर होवेंगे। ऐसा चरक में लिखा है।

विशेषतः—वृन्दमें ऐसा लिखा है कि राजरोग, शोषरोगसे रोगी पुरुषको षष्टितण्डुल, गेंहू, यव मूग, हरिणमांस कुरथी, बकरीका घृत, बकरीका दुग्ध मीठा अनार और आंवला ये पदार्थ अति हितकारी हैं इनके सेवनसेही उक्तरोग नाश हो जावेंगे।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साकंडे रक्तपित्तराजरोगशोषरोगयत्न निरूपणं नामैकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

कास हिक्का श्वास ।

अथ कासस्य हिक्कायाः श्वासस्य हि यथाक्रमात् ॥
नेत्रचंद्रमिते चोर्मौ चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः—अब हम इसके आगे १२ वें तरंग में कास हिक्का और श्वासरोगकी चिकित्सा यथाक्रम से लिखते हैं।

कासरोगयत्न १—५ टंक लवंग, ५ टंक कालीमिर्च ५ टंक बहेड़े की छाल और ५ टंक खैरसारके चूर्णको बबूलकी छालके क्वाथमें खरल करके २ रत्ती प्रमाणकी गोलिया बनाकर १ तथा २ या ३ गोलियां नित्य खिलाओ तो खांसी दूर हो. यह लवंगादि गुटिका लोलिम्बराजमें लिखा है।

१एक प्रकारकी धानका चावल जो ६० दिनमें पकजाती है।

२-१टंक शुद्ध पारा २ टंक शुद्ध गंधक. ३ टंक पिप्पली, ४ टंक हर्रेकी छाल, ५ टंक बहेड़ेकी छाल. ६ टंक काकड़ासिंगी के चूर्णको बबूलके वक्कलके क्वाथमें २१ पुट देकर १ टंक प्रमाणकी गोलियां बनालो. इनमेंसे १ गोली नित्य सोंठके क्वाथके साथ खिलाओतो खांसी अवश्यनष्टहोगी. यह रससमूहतथायोगचिंतामणिमेंलिखाहै

३-२टंक कालीमिर्च २ टंक पीपली १० टंक अनारके छिलके २ टंक भर गुड़ और १ टंक जवाखार को महीन पीस कर चने प्रमाणकी गोलियां बनालो. जो १ तथा ४ गोली नित्य खिलाओ तो सर्व प्रकारकी खांशी नष्ट हो ।

४-पिप्पली, हर्रेकी छाल. पोहकरमूल, सोंठ कचूर और नाग रमोथेका चूर्णगुड़में मिलाकर २ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनाओ जो २ तथा ४गोली नित्य खिलाओ तो सर्व प्रकारकी खांसीजावे

५-सोंठका क्वाथ नित्य सेवन कराओ तो खांसी नष्ट हो ।

६-अद्रक के रसमें मधु मिलाकर नित्य सेवन कराओ तो खांसी जाय ।

७-कटियाली. गुरच. सोंठ पोहकरमूल और अडूसेका क्वाथ पिलाओ तो खांसी नष्टहो. इसे क्षुद्रादि क्वाथ कहते हैं ।

८-छोटी कटियालीका क्वाथ बनाकर रस निकालो और उसमें पिप्पलीका चूर्ण डालकर नित्य पिलाओ तो खांसी नष्ट होगी ।

९-२ टंक सोंठ. २ टंक कालीमिर्च. १ टंक पीपली २ टंकअम लवेत२ टंक चव्य १ टंक चित्रक २ टंक जीरा २टंक डांसरी २ माशे तज २ माशे पत्रज और ४ माशे नागकेशरका चूर्ण पावभर गुड़के साथ मिलाकर २ टंक प्रमाणकी गोलियां बांधलो इसकी एक गोली नित्य प्रभातमें खिलाओ तो खांसा श्वास नष्ट होगा ।

१०-हर्रेकी छाल. पीपली. सोंठ. काली मिर्च के चूर्ण को

गुड के साथ गोलियां बना कर एक या दो तथा तीन गोली नित्य प्राति खिलाओ तो खांसी दूर होगी ।

११–२ टंक लवंग. २ टंक पीपली, २टंक, जायफल, २ टंक काली मिर्च, ८ पैसे भर सोंठ और सबों के तुल्य मिश्री इन सबोंको चूर्ण कर नित्य २ टंककी मात्रा जलके साथ दो तो खांसी ज्वर,प्रमेह,अरुचि, श्वास मन्दाग्नि संग्रहणी ये सब रोग दूर हों, यह लवंगादि चूर्णहै

१२–हिंगुल,कालीमिर्च, नागरमोथा,सिंगीमुहराका चूर्ण जंभीरी या अदरक के रस के साथ खरल करके मूंग प्रमाण की गोलियां बांधलो, एक गोली नित्य खाने से कास श्वास रोग नष्ट हो।

१३–कालीमिर्च, नागर मोथा. कूट, वच शुद्ध सिंगी मुहरा इन सबको अदरकके रसमें खरल करके मूंग प्रमाणकी गोलियां बनालो जो एक गोली नित्य खिलाओ तो कास.श्वास.कफरोग. सूति का रोग और संग्रहणी ये सब नष्ट हों ।

१४–२ या १ टंक लोंग. २ टंक पीपली, ३ टंक हर्रे की छाल. ४ टंक बहेडे की छाल, ५ टंक अडूसा, ६टंक भारंगी और इनसब के तुल्य खैरसार इनसबके चूर्णको बबूलकी छालके क्वाथमें २१ पुट देकर मधु के साथ चने प्रमाण की गोलियां बनालो जो एक गोली नित्य खिलाओ तो कास, श्वास क्षय सब दूर हों, इसे कासकर्तरी गुटिका कहते हैं ।

१५–१टंक भीमसेनी कपूर,१ टंक लोंग, २ टंक काली मिर्च, २ टंक पीपली; २ टंक बहेडेकी छाल, २ टंककुलंजन (नागरबेलके पानकी जड) १ टकेभर अनारका छिलका और इनसबके तुल्य खैरसार इनसबके चूर्णको जलमें खरलकरके चने प्रमाणकी गोली बनालो जो एक गोली नित्य खिलाओ तो खांसी दूर हो यह कपूरादि गुटिका है ये सर्व यत्न वैद्य रहस्य में लिखे हैं।

१६–अर्क पुष्पके मध्यकी फूली और कालीमिर्च दोनोंको पीसकें काली मिर्च के समान गोलियां बांधलो, जो एक गोली नित्य खिलाओ तो खांसी नाश को प्राप्त होगी १७ वां और १६ वां दोनों यत्न रुद्रदत्त में लिखे हैं।

१७–अर्क पुष्प के मध्य की फूली और लौंग को पीसकर १ रत्ती प्रमाण की गोलियां बनालो जो १ गोली नित्य खिलाओ तो खांसी दूर हो।

१८–४ सेर पसर कटियालीको पानी में औटाकर क्वाथ बनाओ इस क्वाथ में १०० हर्रे डाल कर औटाओ पकजाने पर शीतल कर गुठली निकाल डालो, १०० टकेभर गुड की चाशनी में १ टके भर सोंट, टकेभर कालीमिर्च, टकेभर पीपली, टकेभर पत्रज, टके भर तज, टकेभर नागर मोथा टकेभर इलायची, इन सबका चूर्ण और ऊपर लिखी सौ हर्रों का चूर्ण दोनों डालकर एक करदो वह भृगु हरीत की प्रस्तुत हो गई, जो नित्य टके भर खिलाओ तो सब प्रकार की खांसी नष्ट हो।

१९–चार सेर कटियाली के क्वाथ में ४ सेर मिश्री की चाशनी बना उसमें टकेभर गुरच टकेभर काकडासिंगी टके भर चव्य टके भर चित्रक, टके भर सोंठ टके भर नागर मोथा टके भर पीपली टके भर धमासा टके भर भारंगी टके भर कचूर का चूरा और एक सेर मधु डालो यह कटियाली का अवलेह हुआ जो टकेभर नित्य खिलाओ तो सब प्रकार की खांसी नष्ट हो यह भाव प्रकाश में लिखा है।

२०–अडूसेके क्वाथ में मधु डाल कर पिलाओ तो खांसी दूर हो।

२१–अर्क पत्र मैनासिल. सोंठ, कालीमिर्च और पीपल ये सब तमाखू के सदृश चिलम में भरके पिलाओ तो खांसी दूर हो।

२२–शुद्धपारे और गंधककी कजली,शुद्ध सिंगी मुहरा,हिंगुल सोंठ, कालीमिर्च,पीपली सिका सुहागा इन सबका चूर्ण भृंगराज के रसमें १ दिन खरल करके तदनंतर ३ दिन बिजोरे के रस में खरल करो फिर आधी रत्ती प्रमाण की गोलियां बांधकर १गोली नित्य दश दिन तक खिलाओ तो खांसी,क्षय संग्रहणी,सन्निपात और मृगी ये सब रोग दूर हों, यह आनन्द भैरवरस,कहाताहै।

हिक्कारोग यत्न १–प्राणायाम करने, किसी प्रकार डरने भयंकर बात सुनने तथा वायुकफ न्यूनक पदार्थ खाने से हिक्का नष्ट होगी

२–बकरी के दूधमें सोंठ डालकर पकाओ जो यह दूध सोंठ सहित भक्षण कराओ तो हिचकी नष्ट होगी।

३ बिजौरे के रसमें यव का सत्तू और सेंधा नमक मिलाकर खिलाओ तो हिचकी नष्ट होगी।

४ सोंठ और पीपली का चूर्ण मधु के साथ खिलाओ तो हिचकी शीघ्र मिट जावेगी।

५ मक्खीकी बिष्टा दूधमें पीसकर नास दो तो हिचकी जावें।

६–गुड सोंठ पानीमें पीसकर नास दो तो हिचकी नष्ट हों।

७–कांसकी जडके रसमें मधु मिलाकर नास दो तो हिचकी दूर हो।

८ मयूर पक्षकी भस्म मधुके साथ चटाओ तो हिचकी जावे।

९-बिजौर के केशर में सेंधानोन मिलाके खिलाओ तो हिक्का दूर हो।

१०-ग्वार पाठे के रसमें सोंठ डालकर खिलाओ तो हिचकी नष्ट हो।

११-पोहकरमूल, जवाखार कालीमिर्च का चूर्ण गरम जल के साथ खिलाओ तो हिचकी नष्ट हो।

१२-हल्दी, उर्दका चूर्ण निर्धूम अग्निसे तमाखू सदृश पिलाओ तो भयंकर हिक्का दूर हो, ये सब यत्न वैद्य विनोद में लिखेहैं।

१३-सनकी छालका चूरा चिलम में भरके पिलाओ तो हिचकी नष्ट हो जावै।

१४-सोंठ, कालीमिर्च, पीपली जवासा (दुरालभा) कायफल करेले की बेल पोहकर, काकडासिंगी इन सबका चूर्ण बनाकर २टंक नित्य मधुके साथ चटाओ तो हिक्का नष्ट हो।

१५-१टंक पित्तपापडा १ टंक पीपली और ५ टंक गुड इनका क्वाथ बनाकर पिलाओ तो हिक्का नष्ट हो।

१६-१० टंक असाळु (हालु)का क्वाथ बनाकर पिलाओ तो हिक्का तत्काल बंद हो यह वैद्य रहस्य में लिखा है।

१७-१०टंक मुलहटी का चूरा मधु के साथ चटाओ तो हिचकी बन्द हो।

१८-१ टंक पीपली मिश्री के साथ खिलाने से हिक्का जावे।

१९-दुग्धमें घृत डालकर कुनकुनासा पीने से हिक्का बंद हो।

२०-बिजौरे का रस, मधु और सोंचरनोन मिलाकर पिलाओ तो हिक्का नष्ट हो, यह वैद्य रहस्य में लिखा है।

२१-कवीट या आंवले का रस मधु मिलाकर पिलाओ तो हिक्का औरश्वास दोनों बंदहोवें, यह काशिनाथपद्धतिमें लिखाहै

२२-इलायची, दालचीनी, नागकेशर, कालीमिर्च, पीपली सोंठ उत्तरोत्तर वृद्धि क्रमसे (पाहिला १ दूसरा २ तीसरा ३टंकादि) लेकर इन सबके तुल्य मिश्री डालो इस घृतमें छानकर प्रतिदिन २ टंक चूर्ण जलके साथ सेवन करो तो हिक्का अजीर्ण उदर रोग अर्श श्वास और कास थे सब रोग दूर हों यह एलादि चूर्ण वृंद में लिखा है

श्वासरोगयत्न १-नमक. तेलका उष्ण करके हृदयको सेंको तो श्वास दब जावेगा।

२-अद्रकके रसमें मधु मिलायके चटाओ तो श्वास नष्ट हो।

३-१ सेर अदरक के रसमें पावभर सोंठ; पाव भर हवेडे की छालका चूर्ण दो सेर बकरीका मूत्र डालके मृत्तिका के पात्र में औटाओ, गाढा होजानेपर आधसेर मधु मिलाकर नित्य १ टंक सेवन कराओ तो स्वास औरकास दूर हो।

दशमूल, कचूर रास्ना. पीपली, सोंठ, पोहकरमूल, भारंगी, कांकडासिगी गुरुच चिकक इनके २ टंक चूरेका काथ नित्य सेवन कराओ तो स्वास कास पार्स्वशूल ये सब दूर हों।

५-पेंटकी जडका १ टंक चूर्ण नित्य सवन कराके ऊपरसे उष्ण जल पिलाओ तो श्वास नष्ट हो।

६-हल्दी कालीमिर्च- मुनका पीपली, रास्ना, कचूर इन सबका १टंक चूर्ण गुड ओर कडवे (तिलीके)तेलक साथ सेवन कराओ तो श्वास कास नष्ट हो।

७-एक सेर भारंगी को औटाके रस निकालो इसमें. १००टके भर गुडकी चाशनी बनाते समयही एक सेर हरेंकी छालकाचूर्ण डालकर मिलादो शीतल होजाने पर इसीमें ३ टंक मधुऔर१टक भर सोंठ, १टकेभर कालीमिर्च १ टंकेभर पिप्पली २ टंकभर तज १टके भर पत्रज ५टकेभर नागर केशर, २टकेभर जबाखारइनका महीन पिसाहुआचूर्ण उसीचाशनीमें मिलादो,जोएक पैसेभारनित्य खिलाओ तो श्वास कास, अर्श, गुल्म क्षय और उदररोग ये सब नष्ट होवें, इसे भारंगी अवलेह कहतेहैं ये सब भावप्रकाशोक्तहैं।

८-२ टंक शुद्ध पारा और २टंक शुद्ध गंधककी कजली २ टंक सिंगमुहरा, २ टंक सिका सुहागा, २ टंक मैंनसिल२टंकका

ली मिर्च, २ टंक सोंठ, २टंक पीपली इन सबके चूर्णको अद्रकके रसकी १पुट देकर सिद्ध करलो. यह श्वासकुठाररस बनगया,जो इसकी १ रत्ती प्रमाणकी मात्रा नित्य दो तो श्वास नष्ट हो।

९–१ भाग शुद्ध पारा, २ भाग गंधक और ३ भाग तांबेश्वर तीनोंको ग्वारपाठेके रसमें खरल करके तांबेके सम्पुटमेंरख और बालुकायंत्रसे एक दिनभर आंच देकर सिद्ध करलो,यह सूर्यावर्त रस बना. जो इस २रत्ती नित्य सेवन कराओ तो श्वासरोगनष्ट हो। यह वैद्य विनोद में लिखा है।

१०–काकड़ासिंगी, सोंठ, पीपली, नागरमोथा, पोहकरमूल, कचूर, कालीमिर्च और इन सबके तुल्यमिश्री डालकर चूर्णबना लो, इसमेंसे २ ठंक नित्य गुरच, अडूसा,पीपली,पीपलामूल,चव्य चित्रक. सोंठ इनमें से किसी एकके क्वाथके साथ सेवन कराओ तो श्वास नष्ट हो यह चक्रदत्त में लिखा है।

११–पीपली,पोहकरमूल, हरेंकीछाल, सोंठ, कचूर कमलगट्टे इन सबकेचूर्णमें समानगुड मिलाकर चने प्रमाणकी गोलियांबना लो जो १ तथा २ गोली नित्य सेवन कराओतो श्वाशरोगनष्टहो

१२–शुद्ध पारा,शुद्ध गंधक लोहभस्म और इन तीनोंसे दूनी सोंठ, कालीमिर्च, पत्रज, नागकेशर, नागरमोथा, वायाविडंग संभालु, कपेला, पीपलामूल, लेकर चूर्ण कर डालो और जल पीपलीके रसमें ३ पुटदेकर चने प्रमाणकीगोलियांबनालो इसकी १ गोली नित्य सेवनसेश्वास, बवासीर भगंदर संग्रहणी हृदयशूल पार्श्वशूल. उदररोग प्रमेह ये रोग नष्ट हों ये महो दधि सर्व-संग्रह में लिखा है।

१३–शुद्ध पारे और गंधककी कजली, कान्तिसार. सुहागा, रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारू, सोंठ, कालीमिर्च, पीपली

गुरच, कमलगट्टा शुद्ध सिंगीमुहरा इनसबका महीन चूर्ण मधुमें मिश्रित १ तथा २ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनालो, इसकी १ गोली नित्य भक्षण कराओ तो श्वास दूर हो. वैद्यरहस्य में इसे अमृतार्णवरस संज्ञा दी है ।

१४–पारा और गंधक तुल्यकी कजली को चौलाई के रस में ५ दिन पर्यंत खरल करके वज्रमूस (दृढ घरिया) में रख १दिन पर्यंत बालुका यन्त्रसे आंचदो इसमें से १ रत्ती की मात्रा नित्य पानके साथ खिलाओ तो श्वास और हिक्का दोनों नष्ट हों रुद्र दत्तमें इसका नाम मेघडम्बर रस लिखा है ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे कास हिक्का श्वासरोग चिकित्सा निरूपणं नाम द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

स्वरभेद, अरोचक, छर्दि ।

स्वरभेदारोचकयोश्छर्देश्चैव यथ क्रमात् ॥
तरंगेऽन्योषधीशेऽस्मिन्चिकित्सा लिख्यते मया १

भाषार्थः–अब हम इस तेरहवें तरंग में यथाक्रम से स्वरभेद अरोचक और छर्दि तीनों रोगोंकी चिकित्सा लिखते हैं ।

स्वरभेदरोगयत्न १–नोनयुक्त तेल के पदार्थ भक्षण कराओ तो वातस्वरभंग नष्ट हो ।

२–उष्ण जल पिलाओ तो वातस्वरभंग नष्ट हो ।

३–घृत गुडके भक्षणसे वातस्वरभंग नष्ट हो ।

४–घृत, मधुको भक्षण कराओ तो पित्तका स्वरभंग नष्ट हो ।

५–उष्ण दूध पिलाओ तो पित्त स्वरभंग जाय ।

६–खारे, कडुवे पदार्थ अथवा मधु खिलाओ तो कफस्वरभंग नष्ट हो ।

७-पीपली, पीपलामूल और काली मिर्च गोमूत्र में पीसकर पिलाओ तो कफस्वरभंग दूर हो ।

८-गलेके,तालुके मसूड़ों का रुधिर निकाल डालो तो कफ स्वरभंग नष्ट हो ।

९-१००टकेभर कटियाली, ५० टकेभर पीपलामूल, २५टकेभर चित्रक, २५ टकेभर दशमूल इनसबको चूर्ण १ मन पानी में औटाओ जब चार सेर रहजाय उतार लो, ठंडा होने पर छानकर १००टंक भर पुराने गुडकी पतली चासनी बनाओ फिर इसमें८ पल पीपला, ३ पल जायफल, १ पल कालीमिर्च का चूर्ण और एक सेर मधु डालकर सबको एक करदो, जो यह नित्य दो या तीन टके भर खिलाओ तो सर्व प्रकारके स्वरभंग, छर्दि श्वास कास. मन्दाग्नि, कण्ठरोग गुल्म प्रमेह आनाह (अफरा)और मूत्रकृच्छ ये सब रोग दूर होंगे, यह विदग्धिकावलेह (कटिया लीका अवलेह) भावप्रकाश में लिखा है ।

१०-अजमोदा, हलदी. चित्रक जवाखार, आंवलका २ टंकचूर्ण नित्य घृत और मधुके साथ चटाओ तो भयंकर स्वरभंगभीदूरहो

११-हर्रेकी छाल वच पीपलीका चूर्ण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो मेद क्षयरोगका स्वरभंग दूर हो, यह वैद्यविनोद में लिखा है ।

१२-बहेडेकी छाल, पीपली, सेंधानोन और आंवले का चूर्ण गौकी छाछ अथवा गोमूत्रके साथ सेवन कराओ तो स्वरभंग दूर हो, यह वृन्द में लिखा है ।

१३—जायफल, पीपली, नील (वृक्ष विशेष जिससे नील एक प्रकारका रंग निकलता है(और बीजोरेकी कली इनसबकोमहीन

पीसके मधुके साथ चटाओ तो सर्व स्वरभंग होकर मनोहर स्वर हो जावेगा, यह जायफलका अवलेह सर्वसंग्रह में लिखा है.

१४-कुलिंजनको मुखमें रखकर उसका रस चूसते जाओ तो स्वर भंग दूर हो ।

१५-चव्य, अमलवेत, सोंठ, काली मिर्च, पीपली; डांसरे, पत्रज जीरा, चित्रक इलायची इन सबोंका २ टंक चूर्ण तिगुणे गुड़केसाथ नित्य सेवन कराओ तो स्वरभंग, पीनस कफरोग और अरुचि ये सब दूर हों इसे चव्यादि चूर्ण कहते हैं ।

१६-पारदभस्म, ताम्रेश्वर, कांतिसार इन सबको तुल्य लेके कटियालीके रसमें २१ पुट दो और मूंगके समान गोलियां बनाकर एक गोली मुखमें रक्खो तो स्वरभंग दूर हो यह गुरु गोरखनाथ जी की गोली है ।

१७-ब्राह्मी, वच, हर्रेकी छाल अडूसा पीपलीका २ टंक चूर्ण नित्य मधुके साथ १४ दिनतक सेवन कराओ तो स्वरभंग दूर होकर अति मनोहर (किन्नरसदृश) स्वर बन जावेगा ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं ।

अरोचकरोगयत्न १-अद्रक और सेंधानोन भोजन के पूर्व खिलाओ तो अरोचकता जाय ।

२-अद्रक के रसमें मधु डालकर पिलाओ तो अरुचि, कास, श्वास तीनों जांय.

३मिश्री डालकर पक्की इमलीकारसबनाओ और उसमें इलायची लौंग, भीमसेनी (शुद्ध) कपूरकी प्रतिवास (भावना)देकर रस पिलाओ तो अरुचि जाय.

४-राई, जीरा, सिकी हींग सोंठ, सेंधानोनका चूर्ण गौके दही तथा मठेके साथ पिलाओ तो अरुचि दूर होकर क्षुधा बढ़े ।

५–वस्त्रसे छनेहुए गौके दही में मिश्री डालकर इलायची लौंग भीमसेनी कपूर के साथ पिलाओ तो अरुचि तत्काल जाय. इसे सिखरन कहते हैं ।

६–२टकेभर अनारदाने. ८ टकेभर मिश्री, १ टके भर सोंठ, १टकेभर कालीमिर्च, १ टकेभर पीपली, २ टकेभर तज, २ टंक पत्रज, २टंक नागकेशर इनका२ टंक चूर्ण नित्य जलके साथ सेवन करनेसे अरुचि, खांसी नाश होगी, इसे दाड़िमादि चूर्णकहतेहैं ।

७–लवंग, कंकोल, मिर्च, (शीतल मिर्च) खस, चन्दन, अगर तगर, कमलगट्टा, कमलतन्तु काला जीरा, नागकेशर, पीपली सोंठ, चित्रक, इलायची, भीमसेनी कपूर, जायफल वंशलोचन और इन सबसे आधी मिश्री इन सबका १टंक चूर्ण नित्यजलके साथ सेवन कराओ तो अरुचि, मंदाग्नि, क्षीणता, वंधकुष्ठ, खांसी दाह हिचकी, राजरोग, संग्रहणी, अतिसार प्रमेह, ये सब नाश होंगे इसे लवंगादि चूर्ण कहते हैं ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ।

८–सौंफ, कालीमिर्च, डांसरा, अमलवेत सोंचरनोन गुड़, मधु बिजौरेकी केशर, तज. पत्रज वंशलोचन, इलायची अनारदाना जीरा ये अधेले अधेले भर लेके चूर्ण बनाओ और नित्य दो टंकके लगभग जलके साथ सेवन कराओ तो अरोचक नाशहो

९–पीपली, पीपलामूल, चव्य चित्रक, सोंठ कालीमिर्च अज मोदा डांसरा. अमलवेत. असगंद. अजवायन, कैथ (कबीट)येसब अधेले अधेलेभर और४टंक मिश्री इसमें से२ टंक चूर्ण नित्य जलके साथ सेवन कराओ तो अरुचि श्वास. कास. वमन शूल रक्तपित्त नाश हों इस बृहदेलादि चूर्ण कहते हैं. यह सर्व संग्रहमें लिखाहै

१०–जवाखार सज्जी सिका सुहागा. पांचों नोन सोंठ काली मिर्च पीपली. त्रिफला. लोहसार शुद्ध. कपूर. चव्य चित्रक,

अनारदाना, डासरा, अदरक. इनसबके चूर्णको अजवायनके रसकी पुट तदनंतर नीबूके रसकी ५ पुट तदन्तर अमलवेतके रसकी ३ पुठ देकर चने प्रमाणकी गोलियांबांधलो. जो इसकी १गोलीनित्य खिलाओ तो अरुचि, मंदाग्नि. गुल्म, श्वास, कास, कफ प्रमेह इत्यादि रोग पृथक पृथक अनुपानसेदूर होंगे, यहअग्निकुमाररस सर्व संग्रहमें लिखा है।

छर्दिरोगयत्न१—धनियां, सोंठ-दशमूल इनका क्वाथ बनाकर पिलाओ तो वातछर्दि दूर हो।

२—घृतमें सेंधानोन डालकर पिलाओ तो वातछर्दि दूर हो।

३—मूंग और आंवलेको औटाकर रस निकालो और इसमें घृतमें सेंधानोंन डालकर पिलाओ तो वातछर्दि नाश हो।

४—मूंग, मसूर, जौके आटेकी राव (लपसी) में मधुडालकर पिलाओ तो पित्तछर्दि का नाश हो।

५-पित्तपापडेके क्वाथमें मधु डाल पिलाओ तो पित्तछर्दिदूरहो

६—गुरुच, नीमकी छाल. त्रिफला, पटोलके क्वाथमें मधु डाल कर पिलाओ तो पित्तछर्दि दूरहो।

७—८ रवीकी विष्ठा (तथा पादीनेका फूल) मिश्री चंदन इन तीनों को घिसकर मधुके साथ चटाओ तो पित्तछर्दि नाश हों।

८-लाहीके सतूमें मिश्री और मधु डालकर खिलाओ तो पित्तछर्दि दूर हों।

९—मसूरके सतूमें मिश्री डालकर पिलाओ तोपित्तछर्दिनष्टहो

१०—चावलोंके पानीमें मधुडालके पिलाओ तोपित्तछर्दि बंदहो

११—अनारका रस मधुके साथ पिलाओ तो वात, पित्त, कफ तीनोंकी छर्दि का नाश हो।

१२—इलायची, नागरमोथा, नागकेशर, चांवलोंकी लाही गोरी

सर, चंदन. बहुफली बेरकी बीजी, पीपली इनका १ या २ टंक चूर्ण मधु के साथ खिलाओ तो त्रिदोषज छर्दि दूर हो ।

१३-पीपलके पेडके छिलके जलाकर पानीमें बुझाओ और यह बुझा हुआ जल पिलाओ तो उलटी बंद होगी ।

१४-बेरकी बीजी, आंवलोंकी बीजी, छोटी पीपली, मक्खीकी बीट इनके क्वाथमें मधु डालकर पिलाओ तो छर्दि बंदहो ये यत्न वैद्य ।वनोदमें लिखे हैं ।

१५—जामुनके कोमल पत्र और आमके कोमल पत्रोंके पानी औटाकर इसमें लाहीको महीन पीसा आरमधु डालकर पिलाओ तो भयंकर छर्दि भी दूर हो ।

१६-यदि ग्लानिकारक वस्तु से छर्दि हुई होतो उत्तम मनोहर वस्तु (जिसके देखने से चित्तकी ग्लानि नष्ट होकरउत्साह बढ़े) दिखाओ तो ग्लानिजन्य छर्दि जाय ।

७-आंवसे छर्दि हुई हो तो लंघन कराओ छर्दि दूर होगी,

१८-३ मासा केशर. १ मासा इलायची, २ रत्ती हिंगुल इन सबको महीन पीसकर मधुके साथ चटाओ तो सब प्रकार की छर्दि नष्ट होगी ये सर्व यत्न भाव प्रकाशमें लिखे हैं ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडेस्वरभेदअरोचकछर्दिरोगाणां यत्न निरूपणं नाम त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

तृषायाश्चात्रमूर्च्छाया भंगे विदविधौ क्रमात् ॥
मदात्ययादिरागोणां चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः—अब हम इस चौदहवें तरंगमें यथाक्रम से तृषा, मूर्छा मदात्यय रोगकी चिकित्सा लिखते हैं ।

तृषारोगयत्न-१—वायुकी तृषा उष्ण अन्न तथा उष्ण जल सेवन करने से नष्ट होगी।

२—दही और गुड खिलाओ तो वाततृषा का नाश हो।

३—स्वर्ण तथा चांदीको अत्युष्ण(तपाके लाल) कर जल में बुझादो और यह जल पिलाओ तो पित्ततृषा का नाश हो।

४—मिश्रीका ठंडा रस (शर्बत) पिलाओतो पित्ततृषा नष्टहो।

५—रात्रिभर धनियां को भिगोके ठंडाई के समान पीसडालो और मिश्री डालकर पिलाओ तो पित्ततृषा का नाश हो।

६—अनारकेरसमेंमिश्री डालकर पिलाओ तो पित्ततृषानाशहो

७—शीतल जल में रहना. जलक्रीडा करना, अथवा शीतल गीले वस्त्र पहिनने से पित्ततृषा जाय।

८—कपूर चन्दन तथा अगरको शिर ललाट अथवा शरीरपर लपेटने से पित्ततृषा का नाश हो।

९—तीक्ष्ण कटु वस्तुको खिलाने से कफतृषा नष्ट हो॥

१०—लौंगका काथ पिलाओ तो कफतृषा का नाश हो।

११—जीरा, सोंठ. सोंचरनोन का चुर्ण जलके साथ सेवन कराओ तो कफतृषा जाय।

१२—बकरेका रक्त पिलाओ तो शस्त्रप्रहारजन्य तृषा जाय।

१३—बकरे के सोरवे (मांसरस) में मधु डालकर पिलाओ तो प्रहारज तृषा जावे॥

१४-क्षीर [खीर, दूधमें पकाये हुए चांवल) मेंमिश्रीडालकर खिलाओ तो क्षीणताकी तृषा जाय।

१५-गन्ना (ईखकारस)पिलाओ तो क्षीणताकी तृषा नष्ट हो

१६-बडके अंकुर, मुलहटी लाहा, कमलगटटे इनको महीनपीस कर गोली बनालो इसमेंसे१गोली मुँहमें रखनेसे तीक्ष्ण तृषा दूरहो

१७—महुएको मुखमें रक्खा तो तृषा नाश हो।

१८—बिजौरेकी, जड, अनार, कवीटकी जड, चन्दन, लोद, बेरकी जड इन सबको महीन पीसकर सिर पर लेप करो तो तृषा, दाह, शोथ तीनों का नाश हो।

१९—बच और बेलकी क्वाथ पिलाओ तो आंवकी तृषा जाय

२०—अति दुर्बल मनुष्यको तृषा हो तो दूध पिलाने से जायगी

विशेषतः—तृषासे मनुष्य मोह को प्राप्त होकर प्राण छोडदेता है इस लिये किसी भी दशा में पानी पिलाना बन्द न करो वरन रोगानुसार थोडा जल सदा देतेही रहो ये यत्न वैद्यविनोद तथा भावप्रकाशमें लिखे हैं।

मूर्छारोगयत्न १—तिली तथा इंडोली आदि से सेको तो वात मूर्छा नष्ट हो।

२ शीतल रस (शर्बत) पिलाओ तो पित्तमूर्छा जाय।

३—चमत्कारी मणि धारणसे पित्तमूर्छा जावेगी।

४—कपूर, चन्दनादि शीतल पदार्थोंके लेपसे मूर्छा नष्ट होगी

५—बेरकी बीजी, शीतल मिर्च, खश, नागकेशर ये चारों पदार्थ ५टंक लेके शीतल जलमें भिगोदो गलनेपर मसलकर छानलो यह जल मिश्री और मधु डालकर पिलाओ तो मूर्छा नष्ट हो।

६—मीठे अनारके रसमें मिश्री डालकर पिलाओतो मूर्छा जावे

७—दाखके रसमें मिश्री डालकर पिलाओ तो मूर्छा नष्ट हो,

८—साबुन (मार्जन) को घिसके नेत्रोंमें अंजन लगाओ तो कफकी मूर्छा जाती रहे।

९—सिरस (वृक्षविशेष) के बीज, पीपली, कालीमिर्च, सेंधानोन इनको गोमूत्रमें पीस नेत्रोंमें अंजन लगाओतो कफकी मूर्छाजाय

१०—मैनसिल, बच, लहसन इनको गोमूत्रमें पीसके आंखोंमें अंजन लगाओ तो कफ तथा सान्निपातकी मूर्छा नष्ट हो।

११–मैनसिल, महुआ. सेंधानोन. बच, काली मिर्च इनको महीन पीसकर जलके स.थ नास दो तो सब मूर्छा जाय।

१२–शीतल जल शिर पर डालो अथवा अन्य शनिल यत्न करो तो रुधिर मूर्छा जाय।

१३–जिसे मद्यकी मूर्छा हो उसे थोडा मधु पिलाओ तो मद्य की मूर्छा नाश हो।

१४–निद्रासेभी मद्यमूर्छा जाती रहती है।

१५–मैनफल या नीलाथूथा या फिटकरी या पीपली को जलमें औटाकर पिलाओ जिससे वमन हो जावे तो विषमूर्छा जाय,

१६–पीपली. पारदभस्म, ताम्बेश्वर, नागकेशर इनकी १रत्तीकी मात्रा शीतल जलके साथ सेवन कराओ तो सब मूर्छा नष्टहो।

१७–धमासे के क्वाथ में घृत डालकर पिलाओ तो चक्कर आना (जी घूमना, भौंर आना) बन्द हो

१८–हर्रे और आंवलेके क्वाथ में घृत डालकर पिलाओ तो चक्कर बन्द हो।

१९–सोंठ, पीपली सौंफ, हर्रका छाल, पांच टंक का चूर्णकर ६ टकेभर गुड में मिलादो और ५टंक भरकी गोलियां बनाकर १ गोली नित्य खिलाओ तो चक्कर आना बन्द हो।

२०-सेंधानोन. कपूर, मैनासिल. सरसों. पीपली. महुएके पुष्प इन सबको घोडे की लार (थूक) में महीन पीसकर नेत्रों में अंजन लगाओ तो तन्द्रा तथा बहुनिद्रा दोनों नष्ट हों।

२१–सहजने के बीज, सेंधानोन. सरसों, कूट इनको बकरे के मूत्रमें पीसकर नासदो तो तन्द्रा और अति निद्रा जाय।

२२–कालीमिर्च. मुंगनेके बीज. सोंठ. पीपली. इनको अगस्त्य (फूलविशेष)के रसमें पीसकर नास दो तो तंद्रा और निद्राभी जाय. ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

२३–सोंठके रसमें मिश्री डालकर पिलाओ तो मूर्छामात्र दूरहो
२४–कैंवांचकी फली शरीर में लगादो तो मूर्छा दूर हो।

मदात्ययवत्न १–द्राक्षासब (अंगूरकी शराब) आदि शास्त्रोक्त उत्तम मद्य विधिपूर्वक सेवन कराओ तो वातमदात्यय दूरहो. जैसे अग्निसे जलनेपर पुनः अग्निसे तपादोतो पीडा न्यून होकर फफोलानहीं आता इसीतरह वातमदात्यय भी मद्यपानसे दूरहोगा

२-बिजौरेकी केशर, अमल वेत, मीठे बेर, मीठीअनारकी भावना (पुट) अजवायन, जीरे, सोंठके महीनचूर्णमें देकर यहचूर्ण पुराने उत्तम मद्यके साथ पिलाओ तो वातमदात्यय दूर हो ।

३–सोंचरनोन.सोंठ,कालीमिर्च पिप्पली का चूर्ण वैद्यशास्त्रोक्त विधिसे पिलाओ तो वातमदात्यय नष्ट हो ।

४–चव्य सोंचरनोन सिकी हींग सोंठ अजवायनका चूर्ण मधु के साथ खिलाओ तो वातमदात्यय नष्ट हो।

५ लवा(चंडूल) तीतर अथवा मुरगे का मांस खिलाओ तो वात मदात्यय नष्ट हो ।

६–अति स्वरूपवती चतुर १६ वर्षकी युवा स्त्रीसे मैथुन कराओतो वातमदात्य नष्ट हो, ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं

७–दाख अनार खारिक तथा महुएकी मदिरा मिश्रीके संयोगसे पिलाओ तो वातमदात्यय नष्ट होगा ।

८–गौके मट्ठे में मिश्री डालकर पिलाओ तो वातमदात्यय नष्ट हो यह सारसंग्रह में लिखा है ॥

९–समस्त शीतल यत्नोंसे पित्तमदात्यय का नाश होगा,

१०–शीतल जल में मिश्री और मधु डालकर पिलाओ तो पित्तमदात्यय नाश हो.

११-मीठे अनार का रस मिश्री डालकर पिलाओ तो पित्त मदात्यय नष्ट हो ।

१२-मृग.लवाका मांस खिलाओ तो पित्त मदात्यय नष्ट हो।

१३-बकरे का शोरवा तथा षष्टितण्डुल भक्षण कराओ तो पित्त मदात्यय नष्ट हो ।

१४-चंदन तथा खश का लेप करो तो कफमदात्यय नष्ट हो,

१५-यव गेंहू तथा कुलथीका भोजन कराओ तो कफमदात्यय दूर होजावे ।

१६-कटु खट्टी खारी वस्तु खिलाओ तो कफमदात्यय नष्ट हो,

१७-वमन या लंघन कराओ तो कफमदात्यय दूर हो ।

१८-सोंचरनोन, अमलवेत, जीरा, तज, इलायची, कालीमिर्च मिश्री इन सबका चूर्ण जलके साथ सेवन कराने से कफमदात्यय दूर होगा ।

१९-पारे गंधक की १ टंक कजली, आंबले के रसके साथ खिलाओ तो सन्निपात मदात्यय दूर हो ।

२०-दाखके रस तथा अनार के रसमें मधु और मिश्री मिला कर पिलाओ तो पान विभ्रम नष्ट हो, यह वृंद में लिखा है ।

२१-पेठे के रसमें गुड़ डालके पिलाओ तो धतूरेके फल आदि भक्षण से उत्पन्न हुआ मदात्यय नष्ट हो ।

२२-दूधमें मिश्री डालके पिलाओ तो धतूरे और भंग का मदात्यय नष्ट हो ।

२३-कपास की जडका रस या भंटे की जडका रस या पतली छांछ या घृत या मिश्री के जलमें नीबूका रस पिलाओ तो भंग तथा धतूरे का मदात्यय दूर हो ।

विषमदात्ययत्न२४-एकमाशो निबोलीकी बीजी और १ मासे नीलेथोथे को कांजी के साथ पीसकर पिलाओ तो विषमदात्यय मात्र दूर होगा, ये यत्न वैद्योपचारग्रन्थ में लिखे हैं।

इति नूतनामृत सागरे चिकित्सा खंडे तृषामूर्छामदात्ययादि रोगाणां निरूपणं यत्न नामचतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

दाह, उन्माद।

दाहोन्मादरुजोर्वै बाणकलानिधिमिते तरंगेऽस्य। लोकहितायलिखामिनवानामृतसागरस्यसुचिकित्साम

भाषार्थः-अब हम इस नूतनामृतसागरके पन्द्रहवें तरंगमें लोक हितार्थ दाह और उन्माद रोगकी उत्तम चिकित्सा लिखते हैं!

दाहयत्न१-घृतको १०० तथा १०००बार शीतल जलसे धोकर शरीर में मर्दन कराओ तो शरीर की दाह दूर हो।

२-जौके सत्तूमें मिश्री डालकर खिलाओ तो दाह नष्ट होगा,

३-आंवला के जलमें महीने वस्त्र भिगोकर उढ़ाओ तो दाह शीतल हो जावेगी।

४-खश और चंदनको घिसकर शरीरमें लेपकरो तो दाह जावे,

५-केले के कोमल पत्र या कमलपुष्पकी शय्यापर सुलाओ तो दाह शीतल हो।

६-जलके फुहारे तथा जल क्रीड़ा सेवन कराओ तो दाह जावे,

७-खसकी टाट्टियों के मध्य बिठाओ तो दाह शीतल हो,

८-उत्तम शीतल जल पिलाओ तो दाह नष्ट हो।

९-उपब नादि शीतल स्थानोंमें भ्रमण कराओ तो दाह कम हो

१०-चंदन, पित्तपापडा खस, कमलगट्टे, धनियां सौंफ और आंवलेके चूर्ण में से २ टंकका क्वाथ बनाकर पिलाओ तो दाह जावे

११-धनिया को रात्रि भर शीतल जलमें भिगोकर प्रातःकाल

भंगके समान घोट (पीस) डालो,जलमें वस्त्र से छानकर मिश्रीके साथ पिलाओ तो दाह दूर हो, ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं.

१२-यदि रक्त बिगाड से दाह हुई हो तो उसे मनुष्य की फस्द खुलवा दो तो दाह का नाश होगा ।

१३-शुद्ध पारा. शुद्ध गंधककी कजली, भीमसेनी कपुर,चंदन खश और नागरमोथा इनका चूर्ण जलके साथ खरल कर चनेके लगभग गोलियां बनालो. और एक गोली मुंह में रखके चूसो (रसपान करो) तो शरीरकी दाह दूरहो, यह दाहनाशकरस है.

१४-एक तोला शुद्ध पारा. १ तोला शुद्ध गंधक की कजली, १ तोला तांबेस्वर. १ तोला अभ्रक इनको खरल करके नागरमोथे के रसकी १ पुट, मीठे अनारके रसकी १ पुट; केवडे के रसकी एक पुट, सहदेवी (महाबला) के रसकी १ पुट पीपलके रसकी १पुट और दाखके रसकी ७ पुट दो तदनंतर छाया में सुखाके चने प्रमाण की गोलियां बनालो. इसमें से एक गोली नित्य खानें से दाह अम्ल पित्त मूत्रकृच्छ्र, प्रदर और प्रमेह ये सब रोग दूर हों इसे चन्द्रकला रस कहते हैं, (चद्रकला शीतल, ठंडा-शीतल ता में चन्द्र की कल समान)

उन्मादरोगयत्न १-घृतादि पिलाओ तो वातोन्माद दूर हो,

२-अच्छे विरेचन (जुलाब) दो तो पित्तका उन्माद दूर हो

३-वमन कराओ तो कफका उन्माद नष्ट हो ।

४ बस्तिक्रिया (लिंगेन्द्रिय तथा गुदामें पिचकारी लगाना) करने से भी उन्मादरोग का नाश हो ।

५ म्हूण्या [एक सागका नाम जिसे कुल्फा भी कहते हैं] उस का रस निकाल कर उसके समान गुड मिलाओ यह गुड गौकी छाछमें मिलाकर पिलाओ तो उन्माद रोगका नाश हो।

६-खरवटे [वृक्ष विशेष] का डालियों की रस निकाल कर पिलाओ तो उन्माद रोगका नाश हो ।

७-रोगीके शरीर में कडुए तेलका मर्दन करके घाम में खड़ा रक्खो तो उन्माद रोगका नाश हो ।

कोई अद्भुत वस्तु दिखाओ अथवा इष्ट का नामलो तो उन्मादरोग का नाश हो ।

९ उष्ण घृत या तेल या पानी का स्पर्श कराओ तो उन्माद रोग दूर हो ।

१०-कैवांच की फली लगाओ तो उन्माद जाय ।

११-चाबुक की मार लगाओ तो त्रास से उन्माद नष्ट हो ।

१२-शस्त्र. सर्प या हस्ती तथा सिंहादि से रोककर भय बताओ तो उन्मादरोगका नाश हो ।

१३-कूट, असगंध. सेंधानोन, अजमोद, दोनों जीरे. सोंठ कालीमिर्च, पीपली, पाठा, शंखाहूली इन सबके बराबर बचका चूर्ण ब्राह्मी के रसमें १० पुट देकर छाया में सुखाओ, इसमें से २ टंक चूर्ण नित्य घृत और मधुके साथ १५ दिनतक खिलाओ तो सर्व उन्माद, वायुजन्य विकार तथा प्रमेहभी नष्टहो बुद्धि बढकर कविताकी शक्ति प्राप्त होगी. यह सारस्वत चूर्ण ब्रह्माजीकृतहै

त्रिफला, पित्तपापड़ा, देवदारू, शालपर्णी, जवासा, तगर हल्दी दारुहल्दी, इन्द्रायण की जड़, गौरीसर, चंदन. पद्मकाष्ठ कचूर,कमलगट्टे इलायची,कटियाली,मजीठ, पअज. निसोतबाय विडंग, रुद्रवंती, नागकेशर, मुलहटी,पृष्टपर्णी चमेलीके पुष्प येसब अधेले२ भर लेकर चूर्ण बनाओ,इसे १ सेर गौ घृत के साथ चार सेर जल में डालकर मन्द २ आंच से औटाओ पानी जल चुकने और घृत मात्र रहजाने पर उतारकर छानलो,इसमेंसे ५टंक

घृत नित्य भोजनके साथ खिलाओ तो उन्माद अपस्मार (मृगी) और पांडुरोग ये सब दूर होंगे इसे कल्याणघृत कहते हैं।

१५–सोंठ, कालीमिर्च, पीपली, हींग, वच सिरस के बीज, सैंधानोन, सरसों इन सबको गोमूत्रमें पीसके रोगीके नेत्रोंमें अञ्जन लगाओ तो उन्मादरोग दूरहो, ये यत्न वैद्यविनोदमें लिखे हैं,

१६–अजमोद, हलदी, दारुहल्दी, सेंधानोन मुलहटी, वच, कूट पीपली, जीरा इनको गोमूत्रमें पीसकर छाया में सुखाओ इसमेंसे ढाईटंक चूर्ण नित्य घृतके साथ खिलाओतो उन्मादरोग दूरहोकर जिह्वापर सरस्वती वासकरे, यह जिह्वाद्यचूर्णभावप्रकाशमें लिखाहै

१७–ब्राह्मीका रस या पेठेका रस या पीपलामूलका रस अथवा शंखाहोलीका रस १ टंक नित्य पिलाओ तो उन्माद दूर होगा.

१८–बच, कूट, शंखाहोली, धतूरेकी जड इनका चूर्णकर ब्राह्मी के रसकी ७ पुट और काले धतूरेके बीजोंके तेलकी ५ पुट देकर नास बनालो जो यह नास सुंघाओ तो उन्माद दूरहो, ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

१९–सिरसके फूल, मजीठ पीपली, सरसों, वच, हल्दी और सोंठको बकरीके दूधमें पीसकर गोलियां बनाओ सूखनेपर गोली को घिसकर नेत्रों में अंजन लगाओ तो उन्माद नष्ट हो, यह योग रत्नावली में लिखा है।

२०–सिकी हींग, सोंचरनोन, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल ये सब दो टकेभर लेके चूर्ण बनाकर १ सेर गौघृतके साथ चारसेर गौमूत्रमें डालकर मंद२आंच से औटाओ गोमूत्र जल चुकने पर गौघृत मात्र रहजावे तब उतार कर छानलो जो यह घृत५टंक भर नित्य भोजनके साथ खिलाओ तो उन्मादरोग नष्ट होगा।

भूतोन्मादादियत्न– भूतोन्मादादिके यत्न करनेवालेको चाहिये कि प्रथम आप पवित्र होकर अपने शरीरकी रक्षा नारायणकवचादिसे कर लेवे पश्चात् निम्नलिखित क्रमानुसार यत्न करे

भूतबाधायत्न–१कालीमिर्च, पीपली, सेंधानोन और गोरोचनको महीन पीस मधुके साथ अंजन लगादोतो भूतबाधा नष्टहो,

२–ज्वरके प्रकार में भूतज्वर पर जो नृसिंहजी का दिव्य मंत्र लिखा है उसका उपयोग करो तो भूतोन्माद नष्ट हो ।

३–अब भूतादिक उन्माद दूर करने के लिये श्री महादेवजीने उड्डीशतंत्रमें जो साबरी मंत्र यंत्र लिखेहैं सो मंत्रयंत्र लिखतेहैं ॐ नमो भगवते नारसिंहायघोररौद्रमहिषासुररूपायत्रैलोक्यडंबराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रौं ह्रौं क्रीं क्रीं क्रिमिति ताडयताडयमोहयमोहय द्रंभि द्रंभि क्षोभय क्षोभय आंभि आंभि साधय साधय ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीति ललाटे बंधय बंधय ह्रीं हृदये स्तम्भयस्तम्भय किलि किलिईं ह्रीं डाकिनी प्रच्छादयप्रच्छादय शाकिनीप्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय अप्रभूति अदूरि स्वाहाराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय आकाशंप्रच्छादय प्रच्छादय सिंहिनीपुत्र प्रच्छादयप्रच्छादयएतेडाकिनीग्रहं साधय साधय शाकिनीग्रहं साधयसाधयअनेनमंत्रेण डाकिनीशाकिनी भूत पिशाचादि एकाहिक द्व्याहिकत्र्याहिक चातुर्थिके पंचाकत्रातिक पैत्तिक श्लेष्मिकसन्निपातकेशरी डाकिनीग्रहादिमुंच मुंच स्वाहा गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच इति मंत्र

इस मंत्रको मुखसे उच्चारण करते हुए मयूरपक्ष या लोहेकीकोई वस्तु तथा छप्परमें की घाससे इक्कीस वार झाडा दो तोभूतादिके समस्त उन्माद नष्ट होवेगे ।

४–डाकिनीशाकिनीका भाषण करानेका मंत्र–ॐनमोआदेश

गुरूकूं ॐ नमो जयजय नृसिंह तीनलोक बारह भुवनमें हाथचावि आर ओठ चावि नयन लाल लाल सर्व बैरि पछाड मार भक्तन का प्राण राख आदेश आदेश पुरुषको इति मंत्र

रोगी के सन्मुख बैठकर इस मंत्रको पढो और इसी से जल मंत्रित कर उसे पिलाओ तो डाकिनी शाकिनी आदि तत्क्षण मुखसे बोलने लगेंगी।

५-डाकिनी आदिको शरीर में बुलानेकामंत्र ॐ नमो चढो२ शूरवीर धरती चढ पातालचढ पगपातालीचढ कौनकौन बीरचढे हनुमान बीर चढे धरती चढ पगपानी चढ एडीचढ२ मुरचेचढ चढ पीडा चढ२ गोडे चढ चढ जांघ चढ चढ कटी चढ चढ पेट चढ पेटसे धरन चढ धरनसे पसलियों चढ पसलियों से हिये चढ हिये से छाती चढ छातीसे कांधे चढ कांधसे कण्ठचढ कंठसेमुख चढ मुखसे जिह्वा चढ जिह्वासे कर्ण चढ कर्णसे आंखें चढ आंखों से ललाट चढ ललाट से शीश चढ शीशसे कपाल चढ कपाल से चोटी चढ हनुमान नारसिंह करवा रक्तया चला वीर समदवीर दीठवीर अगियाबीर सताबीर ये बीर चढे इति मंत्र।

इस मंत्रसे डाकिनी आदिको बुलवाओ (बकराओ) तो उस रोगी के शरीर में आकर भाषण करने लगे तब उससे इच्छित वार्ता पूछ लो।

६ डाकिनीको चोट लगने का मंत्र-ॐ नमो महाकाययोगिनी योगिनी पारशाकिनी कल्पवृक्षाय दृष्टियोगिनी ासाद्धरुद्रायकाल दम्भेन साधयसाधय मारय २ चूरय चूरय अपहरशाकिनी सपरिवारं नमः ॐ ठं६ॐ ह्रीक्ष्ह्रों ह्रों फट् स्वाहा इति मत्र.

इस मंत्रसे७ वार गूगल मंत्रित करके ओखली में डाल मूसल से कूटो तो वह चोट डाकिनीको लगे, इसी मंत्रसे उस्तरा(छुरा) लेके

अपना घुटना मूडो तो डाकिनीका शिर मूडा जावे; इसी मंत्रसे उर्द मंत्रित करके फेंको तो डाकिनी आनकर नाचने कूदनेलगे और इसी मंत्रसे जल मंत्रितकर नेत्रोंमें लगाओतो डाकिनी बोलनेलगे

७-डाकिनी का दोश दूर होनेका मंत्र-ॐ नमो आदेश गुरूको डाकिनी सिहारी किन्नेमारी यतीहनुमाननेमारी कहांजायदबकी किनोंनेदेखी यती हनुमानने देखी सातवें पातालगई सातवें पातालसे कौन पकड लाया,याति हनुमंत पकड़ लाया यती हनुमंतबीर पकड़ लायके एक तालदे एक कोठा तोडा, दो ताल दे दो कोठे तोडे तीन तालदे तीन कोठे तोडे चार ताल दे चार कोठे तोडे पांच ताल दे पांच कोठे तोडे छःताल दे छः कोठे तोडे सातवां कोठा खोल देखे तो कौन कौन खडे हैं डाकिनी, सिहारी ,भूत, प्रेत चले यती हनुमंत तेरे झाडेसे चले ॐ नमो आदेश गुरूको गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच इतिमंत्र ।

इस मंत्रको मुखसे उच्चारण कर मयूरपक्ष तथा लोहे के चाकू आदिसे झाडा दो तो डाकिनी आदिका दोष [बाधा] दूर हो

८-डाकिनी शाकिनी आदि दूर करने के यंत्र-प्रथम यंत्रको भोजपत्रादिपर लिखके बालकके गलेमें बांधो और द्वितिय यंत्र को भी लिखकर शुद्ध जलमें घोलकर पिलाओतो डाकिनी शाकिनी नष्ट होकर बालक दोषसे निवृत होजायँगा

यंत्र प्रथम ॥ १ ॥

१।६	६६	१	५
७	६	७	६
६	।।	?	-
८	१	ऽ	४०

यंत्र द्वितीय ॥ २ ॥

७	७	६	८
ऽ	६	६	५
४	।।।	ऽ	११
७।।	६	१।।	।।।

९-प्रत्यक्ष दर्शकविधि (जिसे हाजरात भी कहते हैं)मंत्र ॐ

नमः कामाख्यायैसर्वसिद्धिदायै(अमुककर्म) कुरु कुरु स्वाहाअस्य मंत्रस्य बाह्लीकऋषिःजगतीछंदःकामाख्यादेवता कर न्यासः १ ॐ नमःअंगुष्ठाभ्यां नमः २ कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः स्वाहा, ३ सर्वसिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वौषट् ४ (अमुककर्म) अनामिकाभ्यां हूं ५ कुरु कुरु कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् स्वाहा, ६ करतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्

हृदयादिन्यासः १ ॐ नमो हृदयाय २ कामाख्यायै शिरसे स्वाहा ३ सर्व सिद्धि दायै शिखायै वौषट ४ (अमुककर्म) कवचायहूं ५ कुरु कुरु नेत्रत्राय वौषट ६ स्वाहा अस्त्रायं फट् ।

ध्यानम्—योनिमात्रशरीरा या कुंजुवासिनी कामदा ॥ रजस्वला महातेजा कामाक्षीध्येययासदा ॥

उक्त मंत्रको सहस्र (१०००) जाप करके गूगल और गुलतुरेंके फूलकी १०० शत् आहुति दो और मैनफलकीराख (भस्म)को रुईमें मिलाकर बत्तीबनाओ यहवत्ती तेलभरे दीपकमें जलाकर उस दीपककी पूजा करो तदनंतर आठदशवर्षकीअवस्था उत्तम वर्ण देवगणवालेपवित्रबालक (लडकातथालडकी) कोदीपककेसन्मुख बिठाकर आपभी पवित्रता से मंत्रके जपके संकल्पका जल मैनफलपर डालदो और दीपकके सन्मुख इस मंत्रको लिखकेनिम्नालिखितयंत्रकीपूजा करो तथाबालककी हथेली में वह दिखाकरमैनफलकीराखतेलमेंमिलाके बालककी हथेलीपर लगादो औरपूजित यंत्र उसके गलेयादाक्षिणहस्तमेंबांधकर उससे कहो कि तू अपनी हथेलीमें देखताजा फिरउससे जोकुछपूछनाहोसोपूछो वह अपनी हथेलीमें देखकर जोकुछ कहेसो सत्यजानो वह बालक सब बतलावेगा तदनंतर उक्तमंत्रके जापका दशांश तर्पण, दशांशमार्जन और दशांश ब्राह्मणभोजन कराओ, यह विधि उड्डीशमें लिखीहै

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

यही यंत्र बालक के हाथ में बांधना चाहिये ।

भूतोन्मादकायत्न—१०नीमके पत्ते. वच, हींग, सर्पकी कांचली सरसों इनकी धूनी दो तो भूत डाकिनी आदि दूर हों ।

११—कपासके कांकडे (बिनौला) मयूरपक्षका चन्देवा, कटियाली, मरुआ, दौना, तज, छड शिवनिर्माल्य(शिवजीपर चढेहुए पुष्प बेलपत्री आदि) बैलका दांत. बिल्लीकी विष्ठा, वच, तूसा (चलनौसन जो आटा छाननेपर चालनी में वचरहता है) बाल सांपकी कांचली गौका सींग हाथी दांत हींग काली मिर्च इन सबोंके कूटे हुए चूरकी धूनी दो तो सर्व प्रकार की भूतादि बाधा दूर हो यह महामहेश्वर धूप चक्रदत्त में लिखी है ।

१२—पीपली काली मिर्च सेंधानोन गोरोचन इनको मधु में पीसकर अंजन लगाओ तो भूतबाधा दूर हो ।

१३—करंजनकीजड, दारुहलदी सरसों कूट, हींग वच मजीठ त्रिफला, सोंठ, काली मिर्च पीपली और प्रियंगु पुष्प इनको बकरे के मूत्रमें पीसकर नास सुंघाओ तथा अंजन लगाओ तो भूतादि बाधा दूर हो ।

१४—गोरखकक्कडी [गोरखी] को गोमूत्र में पीसकर नास दो तो ब्रह्मराक्षस भी दूर भागेगा ।

१५—शंखाहोली की जडको चांवलोंके पानीमें पीसकर तथा घृतके साथ रगड़के नाश सुंघाओ तो भूतादि बाधा दूर हो ।

विशेषतः—भूतादि बाधा दूर करनेके लिये जो हमने ऊपरमंत्र लिखे हैं उन्हें पहिले ही से ग्रहणमें(ग्राससे मोक्षपर्यंत)जापकरलो

तबवं मंत्र उपरोक्त दर्शित यथार्थ सिद्धिदाता होकर तत्तत्कार्यपर उपयोगी होवेंगे अन्यथा नहीं,

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे दाहोन्मादभूतादिवा-धायत्न निरूपणं नाम पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

अपस्मार, वातव्याधि,

अपस्मारस्यामयस्य वायुजानां यथाक्रमात् ॥
तरंगे रसचन्द्रेऽस्मिन् चिकित्सा लिख्यते मया ॥१ ॥

भाषार्थः—अब हम इस १६ सोलहवें तरंगमें अपस्मार (मृगी) और वातजन्य रोगोंकी चिकित्सा यथाक्रमसे लिखतेहैं।

अपस्माररोगयत्न १—तिली और लहसन मिलाकर खिलाओ तो बातापस्मार दूर होगी।

२—दूधमें शताबरी डालकर पिलाओ तो पित्तापस्मार दूरहो

३—ब्राह्मी का रस मधुके साथ पिलाओ तो कफापस्मार नष्ट हो

४—राई या सरसोंको खिलाओ तथा गोमूत्रमें पीसकर शिर पर लेप करो तो मृगी दूर हो।

५–१ सेरभर तेल, ४ सेर भुंगनेकारस, ४ सेर ग्वारपाठे का रस ४ सेर चिरचिरेका रस, १ सेरभर नीबूकी छालका रस, ४ सेर गोमूत्र मिलाकर मंद मंद आंचसे औंटओ जब जब रस जलकर तेलमात्र रहजावेतबछान कररोगी को मर्दन करो अपस्मादूरहो

६- मैनासिल. नीलकंठ (अथवा नहो तो कबूतर) कीबिष्ठा दोनों को पीसकर अंजन लगाओ तो मृगी दूर हो।

७- पारदभस्म.अभ्रक, कांतिसार. शुद्ध गंधक, मारा हुआ मैन सिल, हरताल भस्म और रसौत इन सबको गोमूत्र में १ दिन खरल करके इन सबसे दूने गंधक के बीचमें रखदो अब ये सब

लोहेके पात्रमें रखकर १प्रहरभर आंचदो शीतल होनेपर निकाल कर १ रत्ती नित्य ७ दिनपर्यंत खिलाओ मृगी दूरहो,

८ सोंठ, कालीमिर्च, पीपली सोचरनौंन और सिकी हुई हींग इन सबका २ टंक चूर्ण नित्य घृतके साथ १५ दिनतक खिलाओ तो मृगी दूर हो।

९–२टंक मुलहटीका चूर्ण पेठेके रसके साथ ७ दिन पर्यंत खिलाओ तो मृगी दूर हो,

१०–बच और कूट दोनोंका २ टंक चूर्ण ब्राह्मी या शंखाहोलीके रस अथवा पुराने गुडके साथ १५ दिनतक सेवन कराओ तो मृगी दूर हो।

११–सेरभर गोघृत, आठ सेर पेठेका रस, दो सेर मुलहटीका क्वाथ इनको मिलाकर आंच दो जब घृतमात्र रहजावे तब छानकर रोगीको भोजनके साथ खिलाओ तो मृगी दूर हो।

१२–मुनगेकी छाल कूट, नेत्रवाला जीरा, लहसन, सोंठ काली मिर्च, पीपली, हींग ये सब पैसे पैसे भर लेकर पीसलो और आधसेर तेलके साथ दो सेर बकरेके मूत्रमें डालकर आंच दो औटते औटते तेलमात्र रहजाने पर कपडेसे छानकर नाकमें डालो तो मृगी दूर होगी, ये सर्व यत्न भावप्रकाश में लिखेहैं।

१३–पीपली पीपलामूल, चव्य चित्रक सोंठ, त्रिफला, बायविडंग, सेंधानोन, अजवायन, धनियां और जीरेका २ टंकचूर्णउष्ण जलके साथ खिलाओ तो मृगी सग्रहणी उन्माद अर्शआदिदूरहो

१४–पुष्पनक्षत्रके दिन कुत्तेका पित्ता (कलेजा) निकालकर उसका अंजन लगाओ या घीके साथ धूपदो तो मृगी दूरहो

१५–बचका २ टंक चूर्ण दूध या मधुके साथ खिलाओ तो मृगी दूर हो ये दोनों यत्न योगतरंगणी में लिखेहैं।

१६–नकुल (न्यौला) की विष्टा, बिल्ली की विष्टा और कौवेकी विष्टाको एकत्रकर धूनीदो तो मृगी दूर हो. यह चक्रदत्तमें लिखाहै

वातव्याधियत्न– १ मीठी, सलौनी, चिकनी, उष्ण वस्तु और आंवले खाने. निद्रा लेने. धूप में फिरने, पसीना निकाल नें तृप्तिपूर्वक भोजन करने, उष्ण उबटन लगाने, तेल मर्दन करने और वातहारक वस्तु खाने से सामान्य वातजरोग दूर होंगे.

शिरोग्रहरोगयत्न–२ दशमूलका क्वाथ बिजौरे का रस और तेल को एकत्र कर आंचदो औटाकर तेलमात्र रह जाने पर छान कर मर्दन करो तो शिरोग्रह नष्ट होगा।

३-कूट, अरंडकी जड, धतूरे की जड. सहजने की जड, सोंठ, पीपली, कालीमिर्च, सिंगीमुहरा इन सबको महीन पीस जल में ओटाओ और उष्ण उष्ण का लेप करो तो शिरोग्रह नष्ट हो।

अल्पकेशरोगयत्न–४देशी गोखरू और तिल्ली के पुष्प का चूर्ण और इन दोनों के समान मधु इन सब को घृत के साथ बालों में लगाओ तो बाल अधिक निकाल कर बढेंगे।

५–मुलहटी, नीले कमल की नाल [जड] और दाख इन सब को घी या तेल या दूध में भली भांति पीसकर बालों में लगाओ तो बाल बढ कर अल्पकेशरोग नाश हो।

अधिक जमुहाई के शमन का यत्न ६–सोंठ, पीपली, सेंधानोन कालीमिर्च. अजमोदा इनका चूर्ण उष्ण जल के साथ खिलाओ तो जमुहाई बंद हो जावेगी.

७–कडुआ तेल, मर्दन कराओ या मिष्ट भोजन कराओ या ताम्बूल खिलाओ तो जमुहाई बंद हो।

८–मुख बंद होगया होतो चिकनी वस्तुके सेंकसे पसीना उत्पन्न कराओ तो मुख खुल जावेगा, जिसका मुख खुला [चौडा,

फटा हुआ] रहगया हो तो शीतल वस्तु के उपचार से मुख बन्द होके चलने [घूमने] लगे और जिसकीहनु [ठुड्डी डाढी] मुरकने [घूमने लौटने] से बन्द हो जावे उसे पीपली और अदरक चवा चबाकर थुकवाओ तो डाढ़ी घूमने लगे और हनुग्रहरोग नष्ट होगा

९-तेल में लहसन को तल के सेंधानोन के साथ खिलाओ तो हनुग्रह रोग नष्ट हो ,

१०-उर्द की पिट्ठी [दाल भीगी पीसी] में सेंधानोन, हींग और अदरक मिला कर बड़े बनाओ और तेल में सेक [तल] के खिलाओ तो हनुग्रह रोग नष्ट होगा ।

११-तेल को उष्ण करके शिर में मर्दन करो तो हनुग्रह नष्ट हो ।

१२-सौ टके भर पीपल के पञ्चांग[1] का चूर्ण कर १६ सेर पानी डाल के औटाओ चार सेर रहने पर छान के इसी में १०० टकेभर तिलीका तेल, १०० टकेभर दही का मट्ठा, १०० टकेभर कांजीका पानी, ४०० टके भर दूध और १ सेर खीप (प्रसारणी) का रस डालो, फिर चित्रक, पीपला मूल, महुआ, सेंधानोंन, बच, सोंफ, देवदारु, रास्ना, गजपीपलामूल, महुआ, रक्तचन्दन, अरंडी की जड, खरेंटीकी जड और सोंठ ये सब टके१ भर लेके चूर्णका क्वाथ बनालो. फिर ये क्वाथ उपरोक्त मिश्रित पदार्थों के साथ मिला कर मंद२ आंच से औटाओ, सब पदार्थ जल कर तेल मात्र रह-जानेपर छान लो, जो इस तेल को मर्दन करो या नास दो या खिलाओ तो बात के सर्व विकार हनुस्तंभ, पंगुरोग जिह्वास्तंभ अर्दित रोगस्कन्धस्तम्भ पृष्ठिकशूल गृध्रसी चांवल धनुर्वातऔर कुब्जरोग ये सब विकार नष्ट होंगे यह प्रसारणीतैल कहाता है

जिह्वा स्तंभरोगयत्न १-मीठा रस नोंन खटाई चिकनाई तथा

---

१ किसी वृक्ष का पचांग कहने से फूल छाल, पर्ण पुष्प और फल का बोध होता है

उष्णता (उष्ण पदार्थ) का यथोचित जिह्वापर मर्दन करो तो जिह्वास्तंभ नष्ट हो ।

२–उष्ण जलके कुल्ले कराओ तो जिह्वास्तम्भरोग नाश होगा

हकलाना, गुनगुनाना तथा गूंगेपनका यत्न १–एक टंक मुगनेकी जड़, १ टंक वच, १ टके भर सेंधानोन, १ टके भर धावड़ेके फूल; १ टके भर लोद इन सबका चूर्ण चार सेर बकरीके दूधके साथ १ सेर गौके घृतमें डालकर मंद२ आंच से औटाओ, दुग्ध जलकर घृतमात्ररहजानेपर छानकर इसेनिम्नलिखित सरस्वती मंत्रसेविधि पूर्वक सेवन कराओ हिकलाना, गुनगुनाना और गूंगापन सर्व दूरहोकर-स्मृति बुद्धि और कान्ति बढ़ेगी,इसेसारस्वतघृत कहते हैं

घृतभक्षणाविधि–" ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः " यह सरस्वतीजीका सिद्धमंत्र है सो इसके जितने अक्षर हैं उतनेही सहस्र (ग्यारह हजार) जाप करके इस मंत्रको सिद्ध करो तदनंतर इस मंत्रसे पूर्वोक्त विधि प्रस्तुत घृतको मंत्रित करके रोगीको खिलाओ तो उक्त तीनों रोग नष्ट होकर सरस्वती प्रसन्न होवै ।

२–उक्त मंत्रसेही मालकांगनीके तेलको मात्रित करके खिलाओ तो रोग नष्ट होकर बुद्धि तत्काल चमत्कारी हो जावे ।

३–हलदी, वच, कूट, पीपली,सोंठ, जीरा, अजमोदा, मुलहटी महुआ और सेंधानोन इन सबका २ टंक चूर्ण माखनके साथउक्त मंत्रसे मंत्रित कर बिधिपूर्वक २१दिनतक खिलाओ तो उक्त रोग नष्ट होकर वह मनुष्य श्रुतिधर [जो सुने वही याद कर लेने वाला] और सहस्रों श्लोक कण्ठ करनेकी शक्ती रखनेवाला हो जावेगा, इसे कल्याणकावलेह कहते हैं ।

प्रलाप तथा वाचालरोगयत्न१–अगर,तगर,पित्तपापड़ा, कुटकी नागरमोथा,असगंध, ब्राह्मी,दाख, दशमूल, शंखाहोली इन सबका

क्वाथ बना कर पिलाओ तो प्रलाप और वाचालरोग नष्ट हो ।
जिह्वानिरसरोगयत्न. १–सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, सेंधानोन, अमलवेत और चूकको पीसकर जिह्वा पर लेपकरो तो जीभको सब रसोंका बोध प्राप्त होगा ।

२–ब्राह्मी, पलासपापड़ा राई, काला जीरा, पीपली, पीपलामूल, चित्रक और सोंठ इन सबका चूर्ण बनाकर जीभ पर लेप करो या क्वाथ बनाकर कुल्ले कराओ तो रसज्ञान प्राप्त होगा ।

३- रोगीको बारंबार अदरख खिलाओ तो रसज्ञान प्राप्त होवे तथा बधिररोग और कर्णनाद भी नष्ट होगा ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे अपस्मारवातव्याधिरोगनिरूपणं नामषोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

त्वक्शून्यादिवातव्याधि,

त्वक्शून्याद्यामयानां हि वातजानां यथाक्रमात् ।
तरंग मुनिसोमेऽस्मिन्चिकित्सालिख्यतेमया ॥ १ ॥

भाषार्थः–अबहम इस सत्रवेंतरगमें बादीसे उत्पन्न होनेवाले जो त्वचाशून्य प्रभृतिरोग हैं उनकी चिकित्सा यथाक्रम से लिखते हैं,

त्वचाशून्यरोगयत्न १–इस रोगीके शरीरमेंसे रक्त निकलवा दो तो त्वचाशून्यरोग नष्ट हो ।

२–नोंन और धमासा तेलमें डाल कर शरीरमें मर्दन कराओ तो त्वचाशून्यरोग नष्ट हो ।

आर्दितरोग १–इस रोगी को चिकने पदार्थ खिलाओ और नारायण तथा विषगर्भआदि तेल को मर्दन कराओ या उष्ण वस्तु खिलाओ तथा अग्नि का दाग दो किंवा उष्ण औषधों से पसीना निकालो अथवा वातहारक तेल मस्तक पर डलवाओ तो आर्दितरोग नष्ट हो ।

वायुआर्दितरोगयत्न १–दशमूलकाक्वाथपिलानेसेवातार्दितनष्टहो

२–बिजौरे का रस पिलाओ तो वातार्दित दूर होगा ।

३–खरेंटी, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोंठ का क्वाथ दो तो वातार्दित नष्ट हो ।

४–हींग और लहसन युक्त उर्द के बडे खिलाकर ऊपर से मांस का शुरवा पिलाओ तो वातार्दित नष्ट हो ।

पित्तार्दितरोगयत्न १–घृतके बस्तिकर्म (मूलद्वारपर घीकीपिच कारी लगाना) या दूध पिलाने से पित्तार्दित नष्ट होगा ।

कफार्दितरोगयत्न १–वमन कराओ तो कफार्दित नष्ट हो ।

२–तिल्ली के तेल में लहसन मिलाकर खिलाओ तो कफार्दित नष्ट हो ।

मन्यास्तम्भरोगयत्न १–दशमूल का क्वाथ पंचमूल का क्वाथ तथा औषधों द्वारा पसीना निकालने अथवा नास लेने से मन्या स्तम्भ नष्ट होगा ।

२–तेल मर्दन करके अरंडीके पत्ते बांधो तो मन्यास्तंभ नाशहो ।

३–मुर्गीके अंडेके रसमें सेंधानोन और घी मिलाकर गर्दन में लगाओ तो मन्यास्तंभ नष्ट हो ।

बाहुशोषरोगयत्न–" उन्माद रोग चिकित्सापर जो कल्याणघृत लिख आये हैं उसका सेवन कराओ तो बाहुशोषरोग नष्ट हो ।

२–खरेंठीके क्वाथ में सेंधानोन मिलाके पिलाओतो मन्यास्तंभ और बाहुशोथ दोनों रोग नष्ट होंगे ।

अव बाहुक रोगयत्न १–शीतलजलकी नासदो तो अव बाहुक रोग नष्ट हों ।

२ गूगल, मोईजडी (मारवाड में प्रसिद्ध) के क्वाथमें गूगल मिलाकर नासदो तो अव बाहुक (भुजास्तंभ) रोग नष्ट हो ।

३–उर्दके पानी की नासदो तो अव बाहुक रोग नष्ट हो ।

४–उर्द, अलसी, जौ (यव) कटसेला, कटियाली; गोखरू, अरलु, कैंवाचकी जड, कपासके विनौला- मुंगनेके बीज, बेरीकी जड, कुल्थी, साठीकी जड, खीप (प्रसारणी) की जड; रास्ना खरेंटीकी जड, गुरच, कुटकी, इन सबको तेल में डालकर पकाओ पकने पर छानकर इसे रोगी को मर्दन करो तो अब बाहुक रोग दूर होगा यह भाष तैल कहाता है ।

विश्वाचीरोग यत्न १–दशमूल,खरेंटी,उर्द, इनका क्वाथ बनाकर तेल के साथ पिलाओतो विश्वाची रोग दूरहो ।

२–उर्द, सेंधानोंन; खरेंटी रास्ना दशमूल हींग बच और सोंठ इनका चूर्ण पानीमें औटाओ तदनन्तर यह पानी तेल में डाल कर आंच दो तेल मात्र रहजाने पर छानकर तेलको रोगी के मर्दन करो तो विश्वाची वाहुशोष अब बाहुक और पक्षाघात ये सब रोग दूर होंगे, इसे भी माषादि तैल कहते हैं ।

ऊर्ध्ववातरोग यत्न १–१० भाग सोंठ १० भाग बधायरा ५भाग हर्रेकी छाल १ भाग असगंध १ भाग सिकी हींग१भाग सेंधानोंन और इन सबके समान चित्रक ५ भाग निसोत इन सबका २ टंक चूर्ण नित्य उष्ण जलके साथ खिलाओ तो ऊर्ध्व बातरोग दूरहो।

आध्मानरोगचिकित्सा १–लंघन कराने पाचक और क्षुधावर्धक औषध खिलाने और वस्तिक्रिया करने से आध्मान रोग दूर हो ।

२–दो टंक पीपली १० टंक निसोत और दस टंक मिश्री का चूर्ण करके इसको २ टंक नित्य मधुके साथ चटाओ तो आध्मान (अफरा) दूर हो ।

३–वच. कूट,सौंफ सिकीहींग सेंधानोंन इनका चूर्ण कांजी के साथ महीन पीसकर उष्ण कर पेटपर लगाओ तो आध्मान दूरहो

४—टके भर हर्रेकी छाल, टकेभर किरवारेकी गिरी, १ टकेभर

आंवला, १टके भर दात्यूणी, टके भर कुठकी, टकेभर निसोत टके भर नागरमोथा, टके भर थुहर का दूध इन सबको पीसकर ४ सेर पानी में औटाओ और आधसेर रह जाने पर उसीमें १ टकेभर जमालगोटा (छिलके निकालकर महीन वस्त्रमें बांधके) डालकेमंदी आंचसे औटाओ जब औटते२ पानी जल जावे तब जमालगोटा निकाललो यह शुद्ध होगया. इसमें से अष्टमांश जमालगोटा उस से त्रिगुणी सोंठ, द्विगुणी कालीमिर्च, तुल्य पारा और तुल्य गंधक लेकर पारे गंधक की कजली करलो और उसमें उक्तौषधें मिलाकर १ प्रहर खरल करो तदंनतर १ रक्त प्रमाणकी गोलियां बनाकर १ गोली शीतल जलके साथ दोतो आध्मान, शूल, आनाह उदावर्त, प्रत्याध्मान, गोला और उदर व्याधिये सर्वरोगदूरहोंगेइसे महानाराचरस करते हैं, इसके खिलानेसे रेचन होतेहैं, रेचनानन्तर दहीमें मिश्रीमिलाकर खिलाओ और तदनंतर सेंधानमकडालकर दही और भात खिलदो तो आध्मान (अफरा) रोग दूर होगा,

प्रत्याध्मान रोग यत्न १-यह रोगभी लंघन, पाचन और बस्ति क्रिया से नष्ट होगा ।

वाताष्ठीलाप्रत्यष्ठीलारोग का यत्न १-सिकी हींग, पीपलामूल धनियां, जीरा, वच, चव्य, चित्रक, पाठा कचूर, अमलवेत, सेंधा सोंचर और साम्भर नोंन, सोंठ, कालीमिर्च, पीपली जवाखारसज्जी अनारदाना, हरेंकी छाल. पोहकरमूल. डांसरा और झाऊकीजड़ के महीन चूर्णको अदरक के रसकी ३ पुट देकर छायामें सुखालो इसमेंसे २ टंक नित्य उष्ण जल के साथ खिलाओ तो वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीला रोग नष्ट होंगे ।

तूनी तथाप्रतितूणीरोग यत्न १--रोगसे पीडित पुरुषकी गुदामें स्नेह[१] पदार्थों से वस्तिक्रिया करो तो ये रोग दूर होंगे ।

१ घृत, तैल, मज्जा आदि चिकने पदार्थ स्नेह कहातेहैं ।

२–सोंठ, पीपली कालीमिर्च, सिकी हींग, जवाखार सज्जी और सेंधानोन इनका २ टंक चूर्ण उष्ण जल के साथ सेवन कराओ तो तूणी तथा प्रतितूणी नाश हो।

त्रिकशूलरोगयत्न १–वालु (रेती) से सेको तो त्रिकशूलजावेगा।

२–गुग्ही बाली (बबूलके वृक्षकी जातमें होतीहै) कीजड़की छाल, असगंध झाऊकी छाल, गुरच शतावरी, गोखरू रास्ना निसोत, सौंफ, कचूर, अजवायन, सोंठइन सबकेसमान शुद्धगूगल गूगल से चतुर्थांश घृत इन सबको युक्त कर ८ माशे नित्य मद्य या मांस रस या उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो त्रिकशूल जानुग्रह, भुजासंधि, संधिगत बात (गठिया वाय) अस्थिभंग लंगडापन, गृध्रसी, पक्षाघात ये सर्व रोग नष्ट होंगे; इसे त्रयोदशांग गूगल कहते हैं।

बास्तिवात(मूत्रावरोधी)रोगयत्न १–खरेंटीकी जड़की छालऔर मिश्रीका२टंक चुर्ण गोदुग्ध के साथ खिलाओ तो वस्तिवातजाय

२–त्रिफला के चूर्ण में समान कांतिसार मिलाकर इसमें से ४ माशे मधु के साथ चटाओ तो वस्तिवात (जिसमें मूत्रकी दोदो बूंद गिरती हैं) नष्ट होगा।

३–चार मासे जवाखार मिश्री के साथ खिलाओ तो दीर्घ वास्तिवात (जो किंचित मात्रभी मूत्र नहीं उतरता हो) को भी बंध खुलकर उत्तम सरलता पूर्वक मूत्र उतरने लगेगा।

४–पेठेके बीज और तेवरसी (फूट ककड़ी) के बीज दोनोंको पानी में घोटकर २ माशे जवाखर डालो और ऊपर से मिश्री मिलाकर पिलाओ तो रुका हुआ मूत्र उतरने लगेगा।

५–चीनिये कपूरकी बत्ती बनाकर पुरुष की लिंगेन्द्रिय और स्त्रीकी भगेन्द्रियमें रक्खो तो अबरोधित मूत्र प्रसण होने लगेगा

गृध्रसीरोगयत्न—१ वमन कराओ तो गृध्रसीरोग दूर हो ।

२—गृध्रसीरोग बस्तिक्रिया से भी दूर होगा परन्तु इस रोग में प्रथम हर्र का जुलाब देकर पीछे यह चिकित्सा करनी चाहिये ।

३—एरंडी का तेल और गोमूत्र युक्त कर अनुमान मुवाफिक १ मासपर्यन्त पिलाओ तो गृध्रसी रोग दूर हो ।

४—तेल, घृत, बिजौरेका रस, अदरक का रस, चूकाऔर गुडइन सबों को मिला कर १ मास पिलाओ तो गृध्रसी. त्रिकशूल. गाखों उदावर्त; कटि और जंघा की पीडा ये सर्व रोग दूर होंगे ।

५—दूधमें एरंडी के बीजोंकी खीर बनाकर १ मासपर्यन्ताखिलाओ तो गृध्रसी और पोतों का शूल नष्ट हो ।

६—एरंडीकी जड, बेल की गिरी और कटियाली केक्वाथमें तेल मिलाकर पिलाओ तो गृध्रसी और पोतों का शूल दोनों नष्ट हों

७—बिडनोन और सोंचरनोन को पीस कर गोमूत्र और अरंडी के संयोगसे पिलाओ तो कफवातकी गृध्रसी नष्टहो ।

८—अडूसा, दात्यूणी और किरमालेकी गिरी के क्वाथमें एरंडी का तेल मिला कर पिलाओ तो गृध्रसी नष्ट हो ।

९—निर्गुणी का रस पिलाओ तो गृध्रसी नष्ट हो ।

१०—६ टके भर रास्ना, ५ टके भर गूगल का चूर्ण घृत के साथ मिला कर ४ मासे प्रमाण की गोलियां बनाओ; १ गोली नित्य खिलाओ तो गृध्रसी नष्ट हो ।

११—गुरच रास्ना, किरमाले की गिरी, देवदारु गोखरू, सोंठ अरंडीकी जडका क्वाथबनाकर पिलाओ तो गृध्रसी, जंघापीडा, उदर पीडा, पार्श्वशूल ये सब नष्ट होंगे· इसे रास्नादि क्वाथकहतेहैं

इति नूतनामृत सागरे चिकित्सा-खंडे वातरोग यत्न निरूपणं नाम सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

❋ खंजादिवातव्याधिः ❋

खजादीनां वातजानां गदानां करवेन्दो वै लिख्यतेऽस्मिन्तरंगे॥
पुंसां वातव्याधिना पीडितानामारोग्यार्थं लाभदात्री चिकित्सा॥१॥

भाषार्थः—अब हम इस अठारहवें तरंग में वातव्याधिसे पीडित पुरुषोंकी आरोग्यताकेहेतु खंज (लंगडापन) आदि रोगकीलाभ दायिनी चिकित्सा लिखते हैं।

खंज तथा पंगुरोगयत्न—१ विरेचन कराओ, उष्ण औषधियोंसे पसीना निकालो, योगराज आदि गूगल दो, बातहारक नारायण आदि तेल मर्दन करो अथवा वस्तिकर्म करो तो ये प्रत्येक यत्न खंजरोग नष्ट करेंगे।

कलापखंजरोगयत्न—१ विषगर्भादि तेल मर्दन करनेसे यहरोग नष्ट होगा।

क्रोष्टुशीर्ष रोगयत्न—१ दो टंक गुरच, १०टंक त्रिफला दोनों का क्वाथ बनाकर२टंक गूगलके साथ एक मास पर्यन्त पिलाओ तो क्रोष्ट शीर्षरोग दूर होगा।

२—एक सेर दूध दस टंक एरंडी का तेल मिलाकर एक मांस पर्यंत पिलाओ तो क्रोष्टुशीर्ष रोग नष्ट हो।

३—ढाई टंक बधायरे का चूर्ण आधसेर गोदुग्ध के साथ पियो तो उक्त रोग दूर हो।

४—तीतरके मास के शुरुवे में दो टंक गूगल मिलाके पिलाओ तो क्रोष्टुशीर्ष रोग दूर हो।

५—किशोर गूगल खिलाओ क्रोष्टुशीर्षरोग नष्ट हो।

घुटनेकी पीडा नाशक यत्न १—प्रथम तेल मर्दन करके ऊपरसे सोंठका महीन चूर्ण मसलो तदन्तर पुनः ऊपरसे तेल चुपड कर बांधदो तो घुटने की पीडा नष्ट हो।

२–दो टंक केवांचके बीज दहीके साथ सात या चौदहदिनतक खिलाओ तो घुटने की पीडा नष्टहो ।

खल्वरोगयत्न १–कूट और सेंधेनोनके क्वाथ तेल और अमलवेत का रसडालकर आंचसे पकाओ रसजलके तेल मात्र रहजानेपर छानकर मर्दन करो तो खल्वरोग नष्टहो ।

वातकंटकरोग १–पांवके गट्टे में से रुधिर निकालो दो वातकं टक नष्टहो ।

२–१ मासपर्यंत ५ टंक अरंडी का तेल नित्य पिलाओ तो वातकंटक नष्टहो ।

पाददाहरोगयत्न १–मसूरकी दालका आटा पानी में औटाकर ठंडा होनेपर कपडेसे छानके पांच सात बार पैरके तलुओंमें बांधो तो पाददाह रोग नष्टहो ।

२–पैरके तलुओं में मक्खन लगाकर आंचके से सेको तोपाद दाह नष्टहो ।

३–अरंडीके बीज गौके दूधमें महीन पीसकर दाहस्थान (पांवके तलुएयाहाथकी हथेली) में मर्दनकरोतो अत्यंतपाददाहभीनष्टहो

पादहर्षरोगयत्न १–कफ और वातहारक यत्नोंसे यहरोग दूरहोगा

पदफूटन (पगफूटनी) यत्न १–तिल्ली, सांभरनोन, हलदीऔर धतूरके बीजोंको पानीमें महीन पीसकर इन सबोंके बराबर गौके मक्खन और इन सबोंसे चौगुणा गौमूत्र ये सब एकत्र करकेआं चसे पकाओ जल और औषधियां जलकर घी मात्र रहजानेपर छानकर पैरके तलुओंमें मर्दन करो तो पैर फूटन बंदहो ।

आक्षेपरोगयत्न १–खरेंटीकी जड, दशमूल जौ कुलथी, बेरकी जडकेअष्टावशेषक्वाथमें तेलडालकरआंचदो पानीजलकरतेलमात्र रहजानेपर उस तेलमें सेंधानोंन, अगर, राल, देवदारु, मजीठकूट

पद्माख, इलायची, छड, पत्रज, तगर. गोरीसर. शतावरी असगंध सोंफ और साठीकी जडकूटकर डालो और पुनः मंदी आंच से पकाकर छानलो जो इस तेलकामर्दन करोतो सर्व प्रकारकेआक्षेप सर्व, बातरोग, हिचकी, काम. श्वास. गोला, अत्रवृद्धि, क्षीणता, अस्थिभंगऔरभ्रम ये रोग दूर होंगे इसे महाबली तैल कहतेहैं,

अन्तरायाम तथावाह्यायामरोगयत्न—जो हम ऊपर आर्दितरोग यत्न लिख आयेहैं वेही यत्न जानो।

धनुस्तंभतथाकुब्जकरोगयत्न १—पूर्वोक्तलिखित प्रसारणीतेल से धनुस्तंभ कुब्जक और अंतरायाम; बाह्यायाम किंवा वातजन्य सकल विकाराही नष्ट होवेंगे।

अपतंत्ररोगयत्न २—कालीमिर्च मुंगनेके बीज अफीम वायविडंग और महुएके चूर्णकी नास दोतो अपतंत्र नष्टहोगा।

२—हरेंकी छाल बच रास्ना सेंधानोन और अमलवेत इनसबों का २ टंक चूर्ण नित्य घृतया अदरकके रसके साथ सेवन कराओ तो अपतंत्र रोग नष्टहोगा

अपतानकरोगयत्न १—दशमूलके क्वाथ में पीपली डालकर पिलाओ तो अपतानक रोग नष्टहो।

२—तेल मर्दन कराओ तो अपतानक रोग नष्टहो।

३—तीक्षण वस्तुको नास दोतो अपतानक रोग नष्टहो।

४—घृत पिलानेसे अपतानक रोग नष्टहो।

५—स्नेहवस्ति करो तो अपतानक रोग नष्टहो।

पक्षाघातरोगयत्न १—उर्द केपाँचबीज अरंडकी जड औरखरेंटीकी जडके क्वाथ में सिकी हींग और सेंधानोन मिलाकर पिलाओ तो पक्षाघात रोग नष्टहो।

२—पीपलामूल चित्रक सोंठ पीपली रास्ना सेंधानोंन और

उर्दके क्वाथमें तेलडालके पकाओपानी जलकर तेलमात्ररहजानेपर छानकर मर्दन करो तो पक्षाघात नष्टहोगा । इसे ग्रंथितैल कहतेहैं

३–उर्दके बावबीज, अतीसकीजड एरंडकी जड रास्ना, सेंधानोन और सौंफके क्वाथमें तेल डालकर पकाओ, क्वाथ जलकरतेलमात्र रहजाने पर छानकर मर्दन करोतो पक्षाघात रोग दूर होगा । इसे माँसादि तैल कहते हैं । ये यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ।

४–कौंवाच बीज, खरेंटीकी जड एरंडकी जड, उर्द, सेंधानोन, और सोंठ का क्वाथ पिलानेसे पक्षाघात दूरहो यह वैद्यविनोदमें लिखे हैं

५–महुए का रस, गूगल, बीजाबोल, बकरीकी लेंडी, कटिथाली का रस, पलासपापड़ा, आंबहलदी. सुहागा, बिजौरेकी जड प्रत्येक को ५ टंक लेकर सबको महीन पीसकर रोगी के शरीर में लेपकरो और दो हाथ चौडा, दो हाथ लम्बा. २ हाथ गहरा गढ़ा खोदके आग जलादो जब यह भली भांति तृप्तहो तब अँगारे निकालकर गढेके पृष्ठ भागमें सर्वत्र आक (अकाव) के पत्ते बिछादो तदन्तर उक्तरोगी को उस गढेमें बैठाकर पसीना निकलने तक उसी में बैठा रहनेदो तो उक्त लेप के गुण तथा आक पत्र के ताव से पक्षाघात रोग अवश्यनष्ट होगा, रोगी का मुख गढे के बाहर रखना चाहिये जिससे ईजा न हो ।

निद्रानाशरोग यत्न १–सिकी भांगको महीन पीसकर छानकरके मधुके साथ रात्रिसमय चटाओ तो निश्चय निद्रा आके क्षुधा बढैगी इसी यत्नसे अतिसार और संग्रहणी भी नष्ट होती है ।

२–पीपलका चूर्ण मधुके साथ खिलाओ तो नष्ट हुई निद्रा भी शीघ्र आवे ।

३–कालहारीकी जड पीसकर मस्तक पर बांधो तो निद्रा आवे,

४–इच्छानुसार सहत २ कंघवे (ककव) से सिरके बाल ऊंचो तो निद्रा आवेगी ।

५-कोमल हाथों से पैरके तलुओं को धीरे धीरे मलवाओ तो निद्रा अवश्य आवे ।

६-भटे (बैंगन) का भुरता मधु मिलाकर खिलानेसे निद्राआवे

७-बैंगन का भुरता तेलकी कांजी या खटाईके साथ रात्रिको खिलाओ तो निद्रा तत्काल आवैगी ।

८-अरंड और अलसी का तेल दोनोंको कांसे (फूलकी)थाली में भली भांति रगड के रोगी की आंखों में अंजन लगाओ तो बहुत निद्रा आवे ।

९-सौंफ और भांग का महीन चूर्ण बकरी के दूध में औटाकर रोगी के ललाट पर लेप करो तो निद्रा आवे ॥

१०-बकरी के दूध से पैरके तलुओं को धोओ तो निद्रा आकर पैरों की दाह भी नष्ट होवे ।

११-मृगमद [कस्तूरी] को स्त्री के दूध में पीस कर अंजन लगाओ तो बहुत दिनों की नष्ट हुई निद्रा भी पुनः आवैगी ये सब यत्न वैद्य रहस्य में लिखे हैं ।

सर्वांगकुपितवातयत्न १-विष गर्भादि तैल मर्दन करो तो उक्त रोग नष्ट हों ।

सप्तधातुकुपितवात यत्न-त्वचाके रसमें कुपित हुई वात तैल-मर्दन करने से नाश होगी ।

२-रक्त में कुपित हुई वात शीतललेप तथा विरेचन या रुधिर निकलवाने से अच्छी होगी ।

३-मांस में कुपित हुई वात विरेचन से शांति होगी ।

४-मेदा में कुपित हुई बात भी विरेचन से ही शांति पावेगी ।

५-आस्थि [हड्डियों] में कुपित हुई बात चिकने पदार्थों के खिलाने से अच्छी होगी ॥

६-मज्जागतकुपितवात चिकने पदार्थोंकेखाने या मर्दनसेशांतिहो
७-वीर्यमें बिगड़ाहुआ वात पौष्टिक औषधि खानेसे शांतिहो ।

कोष्टगतकुपित वात यत्न १—पाचनादि औषध भक्षण तथा दुग्धपान कराने से अच्छा होगा ।

आमाशयगत कुपितवात यत्न १-दीपनपाचन औषध दो, लंघन कराओ २ वमन कराओ. ४विरेचनदो और ५ पुराने मूंग चांवल खिलाओ इनमें से एक एक उपाय उक्त रोग नाशक हैं ।

२-अथवा रोहिस (रोहितक) हरेंकी छाल कचूर, पोहकरमूल, गुरच, बेलकी गूदा, देवदारु, सोंठ, वच, अतीस पीपल, और वायविडंग का क्वाथ पिलाने से आमाशयगत कुपितबात दूर हो ।

पक्काशय या हृदय तथा मूल द्वारगत कुपितवात यत्न १-गुर्च कालीमिर्च का चूर्ण उष्ण जलके साथ खाने से उक्त रोग दूर हो ।

२-असगंध और बहेडे की छाल का चूर्ण गुड मिला कर खिलाओ तो उक्त तीनों स्थानों का कुपित वात दूर हो ।

३-देवदारु और सोंठ का चूर्ण उष्ण जलके साथ पिलाओ तो तीनों स्थानों का कुपित वात दूर हो ।

कर्णादिइन्द्रियगत कुपितवात यत्न १-सेक (ताव) तथा तैलादि मर्दन से कर्णादि इन्द्रियगत कुपितवात शांत हो ।

स्नायुगतकुपितवातयत्न—शरीर छुडाने (जिसे यूनानी माल्जेमें फस्द खुलवाना कहते हैं) से स्नायु (नस) गत कुपितवात शांतहो

संधिगत कुपितवात यत्न १-सेक तथा तेल मर्दन से संधिगत कुहितवात दूर हो ।

२-दो टंक इन्द्राणी की जड और २ टंक पीपली का चूर्ण गुड मिलाकर खिलाओ तो संधिगत कुपित वात अवश्य नष्ट हो ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे वातरोग यत्न निरूपणं नामाष्टदशस्तरंगः ॥ १८ ॥

समस्त वातव्याधि ।

सर्वेषां वातरोगाणां नन्दानन्तामिते मया ॥
पूर्वोक्तानां तरंगे अस्मिन् लिख्यतेरुक्प्रतीक्रिया ॥ १ ॥

भाषार्थः—अब हम इस उन्नीसवें तरंग में निदानखंड लिखित समस्त वातरोगों की चिकित्सा लिखते हैं।

वातव्याधिके सामान्ययत्न १ असगंध, खरेंटीकीजड. बेलकागूदा दोनों पाटल* कटियाली, गोखरू गगेरनकी छाल, साटी (पुनर्नवा) कीजड) अरलु खींप और अरणीये सब औषधि १०टकेभरकूटकर १६ सेर पानीमे औटाकर चतुर्थांश रहजाने पर छानलोयह ४ सेर क्वाथ ४ सेर तिलीकातेल ४ सेर सतावरीका रस और १६ सेर गौका दूधये सब एकत्र कर मंद २ आंचसे पकाओ पकते समय १ टके भर कूठ, इलायची. रक्त चंदन, वच, छड. शिलाजीत, सेंधानोंन, असगंध. खरेंटी, रासना. सोंफ, इन्द्रायणी, शालपर्णी उर्दपर्णी प्रत्येक औषधि दो२ टके भर लेकर डालदो. औटाते२ सब पानी जलकर तेलमात्र रहजाने पर छानकर मर्दन करो या खिलाओ या वस्तिक्रिया करो तो पक्षापात हनुस्तंभ. मन्यास्तंभ गलग्रह बहरापन, गतिभंग कटिग्रह, गात्रशोष नष्टशुक्र विषमज्वर, अंत्र वृद्धि. शिरोग्रह, पार्श्वशूल गृध्रसी और वायु के समस्त रोग नष्ट होंगे इसे नारायण तेल कहते हैं।

२ सोंठ. पीपली, पीपलामूल चव्य चित्रक सिकी हींग, अजमोदा. सरसों, दोनोंजीरे, सम्भालु इद्रयव, पाठा बायविंडग गजपीपली. कुटकी, अतीस, भारंगी, वचऔर मूर्वा ये सर्वोषधि चार२मासे भर और इन सबके बोझसे दूना त्रिफला तथा इन सबके प्रमाण

* श्वेत और लाल दोनों गुलाब पाटल—गुलाब या कुज सेवती दोरंगकी होती है

से शुद्ध गूगल लेकर इन सबोंका चूर्ण करलो तदनंतर सबों को एक जीवकरके४मासे प्रमाणकी गोलियां बनालो, इन गोलियोंको मृत्तिकाकेचिकने पात्रमें धरकेरास्नादि क्वाथकेसाथ १ गोलीनित्य खिलाओतोसमस्त बातव्याधिदूरहो,किरमालके पंचांगके क्वाथके साथ दोतो कफके सर्वरोग दूरहों,दारूहलदीकेक्वाथके साथ दोतो प्रमेह दूरहो, गोमूत्रके साथ खिलाओतो पांडुरोग नष्टहोगा,मधुके साथ खिलाओतो वातरक्त रोगनष्टहोंगे और पुनर्नवादि क्वाथ से खिलाओतो उदरामय व्याधि नष्टहोगी, ये सर्व यत्न भाव प्रकाश में लिखेहैं, यह योगराजगूगलहै ।

विशेषतः—योगराजगूगलको सेवन करने वाले रोगीको मैथुन (स्त्रीसंग) और खट्टे पदार्थ भक्षण करना कदापि योग्यनहीं है । रास्नादिक्वाथ—रास्नासाटीसोंठगिलोयऔरअरंडकीजडकाक्वाथ रास्नादिक्वाथकहाताहै,जिसे ऊपरयोगराजगूगलके साथ दिया है

महारास्नादिक्वाथ—रास्ना,धमासा.खरेंटीकी जड़ अरंडकी जड़ देवदारु कचूर,वच, अडूसा, हर्रकी छाल, किरमालकीगिरी, द्व्य नागरमोथा. सांटीकीजड़ गुरच.वधायरा, सोंफ, गोखरू, असगंध अतीम.शतावरी,सहजनेका वकल, धानिया दोनों कटियाली की क्वाथ महारास्नादिक्वाथ कहाताहै, इसके साथ योगराज गूगलको खिलाओ तो वायुके समस्त.रोग दूर होवेंगे ।

३—१ टकेभर लहसनका रस और १ टकेभर तेलमें सेंधानोन डालकर पिलाओ तो वायुके सर्व रोगोंका नाश हो ।

४—दूध घृत या तेल या मांसरस के साथ १४ दिन पर्यंत लहसन खिलाओ तो सर्व प्रकारकी वात विषमज्वर, शूल, गोला अग्निमांद्य, प्लीहा, मस्तकरोग और वायुके सर्व रोग दूर होंगे, ये दोनों (तृतीय और चतुर्थ यत्न) लहसनकल्प कहाते हैं ।

पत्रज, प्रत्येक एक पैसेभर नागरमोथा, सम्भालु सोंठ, काली मिर्च पीपली, पीपलामूल, शुद्ध सिंगीमुहरा, लोहसार, वंशलोचन, शुद्ध पारा, और शुद्ध गंधक प्रत्येक १० टंककी कजली इन सबोंको महीन पीसकर २ वर्षके पुराने गुड़के साथ बेरकी बीजके समान गोलियां बनाके घृतके चिकने पात्रमें रखदो ये रोगी के बलानुसार एक या दो तथा तीन गोली २ मास पर्यन्त नित्य खिलाओ तो कफ पित्तकेसबरोग, ४ मास तक खिलाओ तो वायुके सर्व रोग, १ वर्षतक खिलाओ तो समस्त रोग मात्र दूर होवे २ वर्षतक खिलाओ तो वृद्धता नष्ट होकर तरुणाई प्राप्तहो और इसी रसको ३ वर्ष पर्यन्त युक्ति और प्रमाण पूर्वक सेवन कराओ तो शरीर सर्व प्रकारसे रोग रहित होकर आयुवृद्धि होगी, यह त्रिजयभैरव रस है।

१२-१भाग शुद्ध पारा, २ भाग गंधक, ३ भाग त्रिफला४भाग चित्रक,५भाग शुद्ध गूगल इन सबोंको अरंडी के तेल में दिनभर खरल करके हिंगाष्टक चूर्ण के साथ १ दिनभर फिर खरलकरो और २ टंक प्रमाणकी गोलियां बनाकर एकमासपर्यंत प्रतिदिन१ गोली रोगी कोब्रह्मचर्यपूर्वकलौंग,सोंठ,अंडीकीजड़के क्काथ केसाथ सेवन कराओतो सर्वप्रकारके वातरोग नष्टहोंगे औरसाधारणवात तो ७ दिनके सेवन से ही नष्टहो जाताहै इसको वातारिरसकहतेहैं

१३ शुद्ध गंधक शुद्धसिंगी मुहरा सोंठ कालीमिर्च; पारा पीपली (पारे गंधककी १ कजलीके साथ) को महीन पीसकरामिला डालो और भंग के रसकी सातपुटदेके१रत्तीप्रमाणकी गोलियां बनालो जो नित्य १ गोली अद्रक के रस के साथ खिलाओ तो सर्व प्रकारकी वायु पीड़ा दूर होगी यहसमीरपन्नग रस कहाताहै

१ जहां पारे गंधक का संयोग हो वहां उनकी कजली बना लेना चाहिये

१४-उत्तम नवीन अफीम, कुचला, कालीमिर्च इन तीनों को महीन पीसकर १ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनाओ, जो पानकेरस के साथ प्रभातकाल१ गोलीनित्य खिलाकर ऊपरसे पान खिलाओ तो समस्त वातरोग, शोथ,विशूचिका, अरुचि और अपस्मार ये सब रोग दूर होवेंगे. यह समीरगजकेशरी रस कहाता है ये यत्न वैद्यरहस्य में लिखेहैं।

१५-तीव्रा (मदकारणी जिसे खुरसानीभी कहतेहैं)अजवायन जीरा, काकडासिंगी ,अजमोदा असगंध इन सबोंका १ मासाचूर्ण नित्य उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो सर्व प्रकारकी वायुका श्वास प्रलाप, अतिनिद्रा और अरुचि ये सब रोग दूर होंगे इसे वृद्धि चिंतामणि रस कहते हैं।

१६-२टकेभर चित्रक. २ टकेभर हरेंकीछाल, १ टकेभर पारा, सोंठ, कालीमिर्च पीपली, पीपलामूल, नागरमोथा, जायफल, प्रत्येक एक टकेभर बधायरा ५ टंक इलायची, ५ टंक कूट, ७ टंक शुद्ध गंधक, ५ टंक हिंगुल, ५ टंक अकलकरा, ५ टंक मालकांगनी. ५ टंक तज ५ टंक अभ्रक, ५ टंक शुद्ध सिंगीमुहरा; और ८ टकेभर गुड, इन सबोंको पीस छान एकत्रकरके जलभंगराके रसकी १ पुट दो और २या ३ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनाकर १ गोली नित्य खिलाओतो सर्ववात रोग कुष्ट,प्रमेह मृगी क्षयी आमवातश्वासशोथ पांडु, और अर्श ये सर्व रोग दूर होंगे यह अमृतनाम्नी गुटिका योगतरंगिणी में लिखा है।

१७-शुद्ध पारे और गंधककी कजलीको दूधीके रसकी एकपुट तुलसीके रसकी १ पुट वावची (माल वावरी)के रसकी पुट मयूरशिखा (हरेपुष्प वाली बूटी) केरसकी १पुट मुलहटीके रसकी एक पुटवराहीकंदके रसकी १ पुट और कुहालीके रसकी १पुटयथा

क्रमसे देके प्रत्येक पुटके साथ सुखाते जाओ, सर्व पुट हो चुकनेपर मुर्गी के अंडेका रस निकालकर खोखलाको पानीसे धोकेइसखोखलामें पूर्वोक्त कजली भरदो इस कजली भरेहुए अंडेकी ७ कपड़मिट्टी (सुखा सुखाके एकान्तर एक)से लपेटकर गजपुटमेंपकाओ इसी प्रकार तीनवार गजपुट में फूंकके निकाललो, जोइसमेंसे १ रत्तीमात्र खिलाओ तो सर्व प्रकारकी वादी दूर होकर क्षुधावृद्धि होगी, यह राक्षसरस रसार्णव में लिखा है।

१८–शुद्ध पारे और गंधककी कजली बनाके उसमें इनदोनोंसे आधी हरताल डालो, इनमें इन तीनोंके समानरांगा डालकरचारोंको आकके दूध में साथ दिनतक खरल करो और सुखाके काचकी दृढ आतसी शीशीमें भरदो इस शीशाको कपड़ मिट्टीमें लपेटके १२ प्रहरतक वालुकायंत्रसे आंचदो स्वांग शीतल होजानेपर निकालकर आधी रत्ती पानमें रखके खिलाओ तो सर्वप्रकारकी बात, उन्माद, क्षीणता, मंदाग्नि कुष्ट व्रण और विषमज्वर ये सब नष्टहों, यह बंगेश्वररस योगतरंगिणी में लिखा है।

१९–शुद्धहरताल शुद्ध गंधक शुद्ध पारा हिंगुल सुहागा सोंठ मिर्च पीपल इन सबों के चूर्णको अदरकके रसकी ४ पुट देके मूंग प्रमाणकी गोलियां बनालो, जो एक गोलीनित्य प्रभातसमय खिलाओ तो सब प्रकारकीवातव्याधि मन्दाग्नि सूतिका रोग शीत ज्वर और संग्रहणी ये सर्व उपद्रव नष्टहों यहहरितालगुटिका रस रत्नप्रदीप में लिखा है।

२०–पैसेभर लहसनको जीरेके सदृश कतरके १ पैसेभर दूध और अधेलेभर पानीमें पकाओ दूधपानी सूख जानेपर लहसन कोखरल करके लुगदीको बांधलो इसलुगदीको अधेलेभर घीकेसाथआंचदेकर लालहोजानेपर निकाललो अनन्तर आधीरत्तीकस्तूरी

४रत्तीलौंग, १मासाजायफल १मासादालचीनी; २ स्वर्णपत्र(सोनेके वर्क) और उपरोक्त निर्मित लहसनकी लुगदी येसब पीसके २ पैसे भर मिश्रीकी चासनीमें डालदो तदनन्तरइसकी चार गोलीबनाकर १गोली प्रातःकाल(और अधिक वायुका वेगहोतो १ गोली सांयंकालको) खिलाओतोवायूजन्य वेदना सर्वशांन्त होजावे, यदि वात्व्याधिकी विशेष तीव्रताहो या उक्त क्रमानुसार २१तथा२२ दिनपर्यंत इसीगोली का सेवन कराओ तो समस्त रोगदूर होकर शरीरको पुष्टता और क्षुधा प्राप्त होगी ये गोलियां जितनाचाहो उक्त प्रमाणसे ही बनाओ इसे लहसन पाक कहते हैं।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे वातरोग यत्न निरूपणं नामाष्टदशस्तरंगः ॥ १८ ॥

आम वातादि रोग।

ऊरुस्तम्भरोगस्य चामांनिलस्याभ्रनेत्रे लिखा
मीह भंगे चिकित्साम् ॥ तथा पित्तजानां बलासो
द्भवानां गदानां नवीनामृताब्धेर्य शोदाम् ॥

भाषार्थः—अबहम इस नवीनामृतसागरके बीसवे तरंग में ऊरुस्तम्भ आमवात, पित्त और कफरोगोंकी यशदायिनी चिकित्सालिखतेहैं

ऊरुस्तम्भरोग चिकित्सा १—त्रिफला, कालीमिर्च, सोंठ, पीपल और पीपलामूल का २ टंक चूर्ण नित्य मधु के साथ चटाओ तो ऊरुस्तम्भ दूरहो।

२—सोंठ, पीपल शिलाजीत और गूगल (येसब ५ मासेभर) का चूर्ण गोमूत्र के साथ पिलाओ तो ऊरुस्तम्भ नष्टहो।

३—दशमूलके क्वाथ के साथ गूगल सेवन कराओ तो ऊरुस्तम्भ दूरहो यह भावप्रकाश में लिखा है।

४—१टंक भिलावा, १ टंक गुरच, १ टंकसोंठ, १ टंक देवदारू,

१ टंक हरेंकी छाल,१साटीकी जड,औंर१टंक दशमूल का क्वाथ पिलाओ तो ऊरुस्तम्भ दूरहो ।

५–१टंक गूगल नित्य गोमूत्र के साथ पन्द्रह दिनतक पिलाओ तो ऊरुस्तम्भ दूरहो।

६–सर्पकी बांबी (सर्प रहने का भूछिद्र) की मट्टी मधुमें खरल करके मर्दन करो तो ऊरुस्तम्भ दूरहो ।

७–२ टंक बच का चूर्ण उष्ण जलके साथ खिलाओ तो ऊरु स्तम्भ दूरहो ।

८–खशका रस या नीबूका रस मधु या गुडके साथपिलाओ तो ऊरुस्तम्भ दूरहो यह काशीनाथ पद्धति में लिखा है ।

९–चब्य, हरेंकी छाल, चित्रक, दवदारु, सागरगोटीके फूल सरसों का चूर्ण २ टंक मधुके साथ नित्य सेवन कराओ तो ऊरु स्तम्भ नष्टहो । यह सर्व संग्रह में लिखा है ।

ऊरुस्तम्भ में वर्जित कर्म- शीर छुडाकर सरीरकारक्त निकालना वमन कराना;विरेचनदेनाऔरवास्तविकक्रियाकरनायेकृत्यऊरुस्तभ वाले रोगीको सर्वदा वर्जित हैं वैद्यरहस्य में लिखा है कि ये कृत्य कदापि न करो ।

आमबातरोगयत्न १–आमबातके रोगीको लंघन कराओ- सेको तीक्षण रसदा क्षुधावर्द्धक औषधें खिलाओ विरेचन दो बस्तिकर्म करो, बालु या नमक से ताबदो(सेको)दाग(दँभ)दोबेंगन या करेलेका शाक खिलाओ कोदों या यव वा साठी चांवलयापुराने चांवल या कुल्थी या मटर या चना खिलाओ, इन कार्यों को बिचार पूर्वक करो तो आमवात नष्टहो ।

२–चित्रक कुटकी, हरेंकी छाल, बच, देवदारु, अतीस और गुरचके २ टंक चूर्णका क्वाथ नित्य पिलाओ तो आमवात दूरहो

३–कचूर सोंठ हरेंकी छाल, बच देवदारु, अतीस और गुरचका २ टंक क्वाथ नित्य पिलाओ तो आमवात नष्ट हो।

४–५ टंक अरंडीके तेलको नित्य पिलाओ तो आमवात दूरहो

५–हरेंकी छालका चूर्ण अरंडके तेलके साथ सेवन कराओतो आमवात और गृध्रसी दोंनो नष्टहो।

६–किरमालके पत्तेतेलमें भूंजके चावलों केसाथ नित्यखिलाओ तो आमवात नष्टहो।

७– अरंडके बीजोंकी दूधमेंखीर बनाकर पिलाओतोआमवात और ग्रध्रसी नष्टहोंगे।

८–खरेंटी, रास्ना, अडूसा, अरंडकी जड, धमासा कचूर दारु हल्दी नागरमोथा, सोंठ, अतीस, हरेंकीछाल, गोखरू, चव्य दारु जनाऔर दोनों कटियाली येसब बराबर और एकसे तिगुना रास्ना इन सबोंके५टंक चूर्णका क्वाथ नित्य पिलाओतो पक्षाघात कम्प अर्दित कुब्जवात, घुटनावात, संधिवात, पिंडलीवात, ग्रध्रसी हनुग्रह, ऊरुस्तम्भ, वातरक्तार्श, वीर्य दोष और स्त्रीका बंध्यापन ये सब रोग नष्टहों इसे महारास्नादि क्वाथ कहते हैं।

९–अजमोदा, कालीमिर्च, पीपली बायविडंग, देवदारु चित्रक सोंफ सेंधानोन पीपलामूल (ये सब टकेभर) १० टकेभर सोंठ १० टकेभर बधायरा५टकेभर हरेंकी छाल और इन सबोंके बराबर गुड़ लेके प्रथम ओषधियोंका चूर्ण कर गुड़के साथ खरलकरके दोटंकभरकी गोलियां बनाओ, जो एक गोली नित्य उष्ण जलके साथ खिलाओ तो आमवात अफरा शूल ग्रध्रसी गोली प्रतितूणी कटिपीडा पृष्ठपीडा शोथजांय और हड्डियों की फूटन ये सब नष्टहों यह अजमोदादि चूर्ण है।

१०–योगराजगुग्गलका सेवन कराओ तो आमवात नष्टहो।

११–८ टकेभर सोंठ १ सेर गौ के घी में चूर्ण करके मिलादो और सोंठयुक्त घी ८सेर दूधमें डाल कर खोवा बनालो तदनन्तर ५ टके भर मिश्री की चाशनी में उक्त निर्मित खोवा डाल कर १ टके भर सोंठ १ टके भर नागकेशरका चूर्णभी उसीमें डालदो और १ टके भरकी गोलियांबनाकर १ गोली प्रातःकाल और १ सायं काल नित्य खिलाओ तो आमवात नष्ट होकर शरीर पराक्रमी तथा बलाढ्य होगा इसे सुंठीपाक कहते हैं ।

१२–८ टकेभर मेथी और ८ टकेभर सोंठ का चूर्ण सेरभर घीमें मिलाके ४सेर गौके दूधमें डालदो इसदूधकाखोवा बनाकरचारसेर मिश्री की चाशनी में डालो और ऊपरसे कालीमिर्च, चित्रक, पीपली, धनियां, प्रत्येक एक टकेभर २ टकेभर सोंठ पीपलामूल अजवायन, जीरा सोंफ जायफल, कचूर, तज, पत्रज, और नागरमोथा प्रत्येक टके भर का चूर्ण डालकर १ टकेभरकी गोलीयांबनाओ, जो एक गोली नित्य खिलाओ तो आमवात, बात व्याधि, विषमज्वर, पांडु, उन्माद मृगी प्रमेह; बातरक्त अम्लपित्त शिरोग्रह, नेत्ररोग और प्रदर, ये सर्वनष्ट होकर वीर्य बढैगा इस मेथीपाक कहते हैं ।

१३–२टंक लहसनकारस, २टंक गौकेघीके संग नित्य पिलाओ तो आमवात नष्ट हो ।

१४–सैंधानोंन,हरंकीछाल. पोहकरमूल, महुआ पीपलीकाचूर्ण प्रत्येक ५ टंक १ सेर अरंडी का तेल, १ सेर सोंफ का रस २ सेर कांजी और ४ सेर दहीका मट्ठा इन सबों को कडाही में डालकर मंद २ आंचदो. रसादिक, जलकर तेलमात्र रहजाने पर छानकर २ टंक नित्य खिलाओ या मर्दन करो तो आमवात नष्ट होकर क्षुधा बढैगी; इसे ब्रह्मासिद्ध बोध तैल कहते हैं ।

१५–शुद्धपारा, शुद्ध गंधक, सोंठ कुटकी, त्रिफला, किरमालेकीगिरी समभाग और एकसे तिगुनी हर्रकीछाल इन सबोंका चूर्ण और पारेगंधककी कजली; दोनों को मिलाकर भली भांति करो, जो इसमेंसे १ माशेभर रस नित्य सोंठ और अरंड की जड के क्वाथ के साथ सेवन कराओ तो आमवात नष्टहो इसे आमवातारिरस कहते हैं।

१६–१ सेर गूगल १ सेर कडुआ तैल, १ सेर हर्रकीछाल, १ सेर बहेडेकी छाल और१सेर आंवले का चूर्ण इन सबोंकोचौबीस सेर पानीके साथ चूल्हेपर चढ़ाकर आंचदो, चतुर्थांश रहजाने पर छानके पुनः चूल्हेपर चढाओ और कुछ गाढ़ा होजाने पर पारा, गंधक, सोंठ, मिर्च, पीपल त्रिफला नागरमोथा, देवदारु प्रत्येक २ टंक और १०० शुद्ध जमालगोटे इन सबों का चूर्ण उक्त क्वाथ में डालके १ माशे भर नित्य उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो आमवात, वातरोग भगंदर शोथ अर्श ये सर्व रोग दूर होकर क्षुधा और वीर्य की वृद्धि,होंगी इसे व्याधिशार्दूल गूगल कहते हैं।

१७–हर्रकीछाल, सेंधानोंन; निसोत इन्द्रायणके फलके बीजी इन्द्रायणकी जड और सोंठका चूर्ण जलके साथ लोहेके पात्रमें डाल कर मंद२ आंचसे पकाओ जल औटाकरगाढ़ा होनेपर बेरकेसमान गोलियां बनाकर १.गोलीनित्य उष्ण जलके साथ खिलाकेऊपर से घृतयुक्त चांवल खिलाओ तो आमवात नष्टहो इसे आमादि गुटिका कहते हैं ये वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

१८–सोंठ, कालीमिर्च, पीपली त्रिफला, नागरमोथा वाय विडंग चव्य चित्रक बच इलायची झाऊकी जड पीपलामूल देवदारु कूट तुम्बरु (तस्तुम्बा इन्द्रायणफल) पोहकरमूल दोनों

हल्दी सोंठ, सोंफ जीरा, पत्रज, धमासा सोंचरनोंन जवाखार, सज्जी गजपीपल, सेंधानोंन और इन सबोंके बराबर शुद्ध गूगल इन सबोंका २ टंकचर्ण नित्य घृत या मधुके साथ सेवनकराओतो आमवात, उदावर्त पांडु कृमि रोग, विषमज्वर, आध्मान, उन्माद कुष्ट, और शोथ ये रोग नष्टहोंगे धन्वतरिजी ने इसका नाम द्वाविंशद्गूगल रक्खाहै यह बीरसिंहावलोकन ग्रंथ में लिखाहै

१९-१ सेर शुद्ध गूगल ८ टकेभर कडुआ तेल, १ सेरहरंकी छाल, १ सेर बहेडेकी छाल, १ सेर आँवला; इन सबोंकाचूर्णकर चौबीस सेर जलमें औटाओ चतुर्थांश रहनेपर छानकर पुनः अग्निपर चढाओ कुछ गाढाहोनेपर सोंठ, काली मिर्च, पीपल, त्रिफला नागरमोथा, देवदारू, गुरच. निसोत दात्यूणी वच कंद धतूरे के बीज शुद्ध गंधक शुद्ध पारा प्रत्येक को दो टंक लेकर और इन सबोंका चूर्ण उक्त क्वाथमें डालके १ माशा नित्य उष्ण जल के साथ सेवन कराओ तो आमवात मस्तक पीड़ा कटिपीडा भगंदर घुटनों की वायु जांघकीवायु पथरी और मूत्रकृच्छ ये सर्वरोग नष्टहोकर क्षुधा और धातुकी वृद्धिहोगी तथा शरीर रोगरहित रहेगा इसे सिंहनादगूगल कहतेहैं यह योगतरंगिणी में लिखाहै।

२०-५ टंक शुद्ध गंधक ५ टंक ताम्बेश्वर २टंक शुद्ध पारा २टंक लोहसार इनसबों को इकठे पीसकर लोहेके पात्रमें डालदो और आंचसेपिघलाकर एरंडके पत्तोंपर डालदो तदन्तर पत्तों सहित खरल करके पीपली पीपलामूल चव्य चित्रक सोंठके क्वाथकी १ पुट बहेडेकी क्वाथकी २ पुट और गुरचके रसकी १० पुटदो तदनंतर इस पदार्थके समान सिकासुहागा सुहागेसेआधा बिडनोंन बिडनोंनकेसम कालीमिर्च मिर्चकेसम डांसरे और डांसरेके समान

सोंठ, सोंठके समान पीपली, पीपलीके समान त्रिफला, त्रिफलाके समान लवंग इन सबका महीन चूर्ण करके १ मासेभर नित्य खिलाओ तो आमवात दूर होकर क्षुधावृद्धिहो, यह आमवातेश्वर रस रोगयुक्त स्थूल मनुष्यको कृश और कृशको स्थूल करताहै, अतिशय भोजन को शीघ्र पचाता और न्यारे २ अनुपानों से अनेक अन्य रोगों को भी नष्ट करताहै, यह सार संग्रह में लिखा है।

आमवातमें वर्जित पदार्थ- दही दध, गुड़ उर्द, मांस और मछली ये पदार्थ उक्त रोगमें सर्वथा वर्जितहैं, ऐसा भाव प्रकाशमें लिखाहै.

पित्तरोग यत्न १-निम्बकी छाल आदि तीक्षणवस्तु, मिश्री आदि मिष्ट वस्तुकाभक्षण, चंदनादि शीतल पदार्थका लेपन शीतलछाया चन्द्रमा की चांदनी, तलघर, यारात्रि को किसी शीतल स्थान में निवास, खशके पंखे द्वारा शीतल पवन सेवन, दुग्धपान विरेचन तथा फस्द से पित्तके चालीसों रोग नष्ट होंगे।

कफरोगके सामान्ययत्न १-उष्ण, रूखी कषैली, कटुवस्तु खिलाओ, कुरले, वमन लंधन, मल्लक्रीड़ा, जलक्रीड़ामार्गगमनजागरण मैथुन, श्रमकराओ पसीना निकालो प्यासरोको हुक्कापिलाओनास दो या चित्रक खिलाओ इन यत्नोंसे २० प्रकारके कफरोग नष्टहोंगे

इति नूतनामृत-सागरे चिकित्सा खंडे ऊरुस्तम्भवातपित्तरोग कफरोगाणां यत्न निरूपणं नाम विंशतितमस्तरंगः ॥२०॥

वात रक्त शूलादि रोग ।

गदानां वात रक्तस्य शूलादीनां यथाक्रमात् ॥
तरंगे भूनेत्रामिते चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः-अब हम इस इक्कीसवें तरंग में वातरक्त और शूल आदि रोगोंकी चिकित्सा यथाक्रम से लिखतेहैं ।

वातरक्तयत्न १-रोगी के शरीर से जोंक सिंगी या फस्द या

उस्तरे से ऐसा रक्त निकाल दो जिससे वायु ट्ढने न पावै तौ वात रक्त दूर हो ।

२—१टंक गूगल गुरच के क्वाथ के साथ नित्य खिलाओ तो वातरक्त नष्ट हो ।

३—२टंक अंडी का तेल गुरचके क्वाथ के साथ पिलाओ तो बात रक्त नष्टहो ।

४—मजीठ, त्रिफला, कुटकी, वच, दारुहलदी गुरच और नीमकी छालकी २ टंक चूर्ण का क्वाथ, १ मंडल (चालीसादिन तक पिलाओ तो वातरक्त, कुष्ठ, पामा (खुजली)और फोड़े ये सब नष्ट होंगे । यह लघुमंजिष्ठादि क्वाथहै ।।

५—गुरच बावची पंवार, नीमकी छाल, हल्दी, हरंकी छाल, आंवला, अडूसा, शतावरी, कमलतंतु, मुलहटी, खरेंटी, महुआ गोखरू, खश, मजीठ और रक्तचन्दनका चूरा इनका २ टंकक्वाथ नित्य पिलाओतो वातरक्त, कुष्ठ, पामा और दाद येसब नष्टहोंगे ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं । इसे गडूच्यादि क्वाथ कहतेहैं

६—सेरभर शुद्ध भैंसा गूगल, सेरभर हरंकी छाल,सेरभर बहेड़े की छाल, सेरभर आंवला, ३ २ टंक गुरच इन सबका चूर्ण ६४सेर पानीमें औटाकर आधा रहजाने पर छानलो फिर कड़ाही में डाल कर कुछ गाढ़ा होजाने पर गंधक, निसोत, गुरच, दात्यूणी, दो२टंक और १ टंक वायविडंग का चूर्ण उक्त क्वाथमें डालदो इन सबको एक जीव करके चार या आठ मासे नित्य मंजिष्ठादि क्वाथ के साथ सेवन कराओतो वातरक्त श्वास, गोला, कुष्ठ, शोथ, व्रण, उदररोग, पांडु प्रमेह और मंदाग्नि ये सबरोग नष्ट होंगे,यह किशोर गूगल कहाता है। इस गूगलको सेवन करने वाले रोगी को अग्नि तापना घाममें फिरना श्रम करना, मार्ग चलना मैथुन करना और खटाई मांस, दही नोन तेल यह नहीं खाना चाहिये।

७-२ सेर भिलावा के मुख रेतीसे घिसकर १६ सेर पानी में औटाओ औटते समय २ सेर गुरचका महीन चूर्ण डालकर चतुर्थांश रखलो तदनंतर गुरच, बावची, निम्बकी छाल, हर्रकीछाल हल्दी नागरमोथा,तज(ये सब दो दो टंक) इलायची, गोखरू, कचूर रक्तचंदन (ये चारों पांच२ टंक) का बारीक चूर्ण उक्त ४ सेर क्वाथमें डालकर भिलावा सहित सर्व औषध और जल आदिको कूट डालो इन सबको एकत्र कर ५टंक नित्य जलके साथ सेवन कराओ तौ बातरक्त. कुष्ठ. अर्श, पामा, विसर्प, सर्व बात विकार सर्व रक्त बिकार दूर होंगे, इसके सेवन करनेमें रोगी को छठें यत्नोक्त वस्तुएं बर्जना चाहिये. यह अमृत भल्लातक है ।

८-अलसी या अरंडी के बीजों को दूध में पीसकर हाथ पैरों पर लेप करो तो वातरक्त दूर हो ।

९-गौगिरस. राल, मोम, मजीठ; को तेल में पकाकर इस तैल का मर्दन करो तो वात रक्त दूर हो ।

१०-एरंड की जड, गुरच और अडूसे के क्वाथ में ४ माशे गूगल और दो टंक एरंडी का तेल डालकर पिलाओ तो बात रक्त मूर्छा, श्वास मस्तक पीडा और फोड़े ये सब दूर हों, यह वैद्य रहस्य में लिखा है ।

११-हरतालको पुनर्नवा के रसमें खरलके टिकिया बनाओ सूख जाने पर पुनर्नवाकी राख के बीचमें धरके ठीकरे को चूल्हे पर चढादो मंद २ आंचसे ५ दिन ५ रात्रि तपाकर स्वांग शीतल होजाने पर टिकिया निकालो जो इसमेंसे१रत्ती भस्म गुडूच्यादि क्वाथ के साथ सेवन कराने से वात रक्त अठारह प्रकार के कुष्ठ पामा. फिरंगवात विसर्प और फोड़े ये सब रोग दूर हों, सेवन

१ जो पानी में डालने से नहीं डूबे ऐसा पक्का बोझल भिलावा इस पाक के लिये लेना चाहिये।

करनेवाले पुरुष को नौंन खटाई कटु, रस, धूप,अग्निका बचाव करना चाहिये और सेंधानोंन तथा मीठी वस्तुयें भक्षण करना चाहिये टिकिया आंच पर से निकालने पर श्वेत रंग बोझ पूर्ववत (जो बोझ पहिले था उतनाही रहना चाहिये) और निर्धूम हो जाना चाहिये हरतालेश्वर रस भावप्रकाशमें लिखा है।

वातरक्तवालेको वर्जित पदार्थ-दिवस निद्रा क्रोध श्रम, मैथुन और कटु उष्ण भारी खारी खट्टी वस्तु भक्षण न करना चाहिये

तथा योग्य कार्य-जौ गेहूं लाही (ये पुराने) अरहर, चना मूंग कुल्था मसूर, धनियां, चिरपोटणी, बथुआ, चौलवा, छूण्या (कुल्फा) बकरीका दूध और बकरीकाही घी तथा मांसाहारियोंको बटेर और तीतरका मांस ये पदार्थ उक्तरोगी के खाने योग्यहैं।

वात शूल रोग यत्न १-अजवायन, सेंधानोंन, सिकी हींग जवाखार, सोंचरनोंन हर्रेकी छाल का २ टंक चूर्ण उष्ण जल के साथ दो तो वात शूल दूर हो।

२-१ टंक सोंचरनोंन, ३ टंक जीरा ४ टंक काली मिर्च के चूर्ण को अमलवेत के रसकी ७ पुट और बिजौरेके रसकी ७ पुट देकर ४ माशेभर गोलियां बनाओ जो १ गोली उष्ण जल के साथ दो तो वात शूल दूर होगा।

३-निसोत वायविडंग, सहजनाकी फली, हर्रेकी छाल, कपेला के चूर्णको अश्वके मूत्र में पकाकर २ टंक मद्य के साथ पिलाओ तो वातदर्द दूर हो यह चक्रदत्त में लिखा है।

४-सिकी हींग, अमलवेत, पिप्पली, अजवायन, जवाखार हर्रेकी छाल और सेंधेनोंन का २ टंक चूर्ण मद्य के साथ पिलाओ तो वातदर्द दूर हो।

५-२टंक बिजौरेकी जड का चूर्ण घृत के साथ खिलाओ तो वातदर्द नष्ट हो यह बीजपूरादि योग सर्व संग्रह में लिखा है।

६–शुद्ध पारा शुद्ध गंधक अभ्रक अमलवेत ताम्रेश्वर और शुद्ध सिंगीमुहराको पीसकर अदरक के रस में २ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनाओ जो एक गोली नित्य जलके साथ सेवन कराओ तो वातशूल दूर हो इसे अग्निमुख रस कहते हैं।

पित्तशूल यत्न १–हरेंकी छालको गुड में पीसकर घृतके साथ खिलाओ तो पित्तशूल जाय।

२—विरेचन कराओ तो पित्तशूल जाय।

कफशूल१—आंवले का चूर्ण मधुके साथ चटाओ तो कफशूल नष्ट हो।

२—नीमकी छालका क्वाथ मदिरा के साथ पिलाओ तो कफ शूल जाय।

३—जवाखार सेंधानोंन सांभरनोंन सोंचरनोंन पीपली पीपला मूल चव्य चित्रक सोंठ और सिकी हींग का २ टंक चूर्ण उष्ण जल के साथ सेवन कराओ तो कफशूल जाय।

त्रिदोषशूलयत्न १–त्रिफला, सार मुलहटी महुआ इनका १ टंक चूर्ण मधु या घृतके साथ चटाओ तो त्रिदोषज शूल दूर हो।

२ शंखभस्म सोंचरनोंन सिकी हींग सोंठ कालीमिर्च पीपली इनका दो टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो त्रिदोषज शूल जाय।

आमशूलयत्न१–आंवलेका चूर्णमधुकेसाथ चटाओतो आमशूल नष्टहोगा उपरोक्त कफरोगके तीनोंयत्नभी आमशूलको नष्टकरतेहैं।

सामान्यशूलमात्रके यत्न १–रोगीको वमन या लँघन कराओ औषधियों से प्रस्वेद निकालो पाचन सज्जीखार का चूर्ण या क्रव्यादि चूर्ण खिलाओ वस्तिक्रिया करो कुल्थीया तपी हुई रेतकी पोटलीसे पानी सींचकर सेकोतो प्रत्येक उपाय से शूलरोग दूरहो।

२–काकड़ासिंगी–कुल्थी तिल जौ अलसी अरंडकी जड पुनर्नवाकी जड लहमन कीबीजीको कांजीमें पकाकर शूलके स्थान में सेक करो तो दर्द जाय ।

३–तिलीको पीसकर कांजीमें पकाओ पकते समय कुछ तेलभी डालके पोटली बनाकर सेको तो सूल ततक्षण जाय ।

४–मेनफलको कांजी में पीसकर नाभीपर लेप करोतो सूलजाय

५–सोंठ और अरंडकी जडका क्वाथ पिलाओतो शूलजाय।

६–सोंठ और अरंडका क्वाथ हींग या सोंचरनोंन के साथ पिलाओ शूल नाश हो ।

७–गुगको पानी में औटाकर जवाखार डालके पिलाओ तो शूल नाश हो ।

८–कांसे या चांदी या ताम्बे का जलभरा पात्र शूल के स्थान पर फिराओ तोशूल नाश हो ।

९–राई और त्रिफलाका चूर्ण मधु या घृतके साथ दोतो शूल मात्र नाश हो ।

१०–दारुहल्दी, चोख कूट सोंफ सिकी हींग और सेंधानोंनइन का बारीक चूरण उष्ण कांजी के साथ लेपकरो तो शूल नाशहो

११–बेलकी जड एरंडकी जड चित्रक सोंठ सिकीहींग सेंधानोंन इनका २ टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ खिलाओतो शूल नाशहो ।

१०–पक्के कुम्हडे सूखेहुए टुकडे जैसे शाक बनानेके लियेकर तेहैं पीतलके पात्रमें भरकर मुँह बन्द करदो इसे चूल्हे पर चढाके इतनी आंचदो कि जिससे जलकर कोयला बनजावे स्वांग शीतल होजाने पर २ माशे राख सोंठ के चूर्णके साथ खिलाकर ऊपर से जल पिलाओ तो असाध्य शूलभी नष्टहो इसे कूष्मांडक्षार कहते हैं ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखेहैं ।

१३-सोंठ हरेंकी छाल, पीपली, निसोत और सोंचर नोंन का १ टके भर चूर्ण उष्ण जलके साथ खिलाओ तो दर्द, अफरा अर्श आमवात ये सब नाशहों इसे पञ्चसम चूर्ण कहते हैं।

१४-सिकी हींग और सोंचरनोंनका चूर्ण सोंठ से क्वाथ और अरंडी के तेलके साथ सेवन कराओ तो दर्द तत्काल नष्टहो।

१५-शंखका चूर्ण सोंचरनोंन, सिकी हींग, कालीमिर्च और पीपली का २टंक चूर्ण उष्णजल के साथ खिलाओतो दर्द तुरन्तदूरहो

१६-दर्द सिंगीमुहरा, सोंठ, चित्रक, कालीमिर्च पीपल, जीराऔर सिकी हींगके चूर्णका भंगरेके रसका३पुट देकर चने सदृशगोलियां बनालो और १गोली उष्ण जलकेसाथ खिलाओतो शूलदूर होगा

१७शंख भस्म, करंजमूल, सिकी हींग, सोंठ, काली मिर्च पीपल और सेंधानोंनका२टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ खिलाओ तो शूल नाशहो, यह शूल नाशक चूर्ण कहाता है।

१८-चित्रक, सोंठ, सिकीहींग, पाठी, पीपल, कालीमिर्च, जीरा धनियां पांचोनोंन छड अजमायन और पीपलामूल के चूर्णको जंभीरीके रसकी ५ पुट देके ४ मासे प्रमाणकी गोलियां बनाओ१गोली उष्ण जलके साथ खिलाओ तो हृदयशूल, आमशूल, पार्श्वशूल समस्त शूल, अरुचि और अस्सी प्रकारके वात ये सर्व रोग तुरन्त नाश होंगे, इसे चित्रादिक गुटिका कहते हैं।

१९-हरेंकी छाल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल कुचला शुद्धगंधक सिकी हींग और सेंधे नोंनको जलसे खरल करके चने प्रमाणकी गोलियां बनालो, १ गोली नित्य प्रातःकाल उष्णजल के साथ सेवन कराओ तो संग्रहणी अतिसार; अजीर्ण, मन्दाग्नि ये सब रोग दूर होंगे, इसे दर्द नाशनी गुटिका कहते हैं।

२०-२टंक कूट (शाल्मलिवृक्ष) २ कंट सोंठ, १ कंट सोंचरनोंन

१ टंक सिकी हींगका चूर्ण सहजने या लहसनके रसमेंमिलाकर गोलियां बनालो, जो १ गोली उष्ण जलके साथदो तो शूल तत्काल दूर होगा, इसे कुचलादि गुटिका कहते हैं।

२१–शुद्ध पारा और शुद्ध सिंगीमुहरा दस दस टंक कालीमिर्चे, पीपली. सोंठ. सिकी हींग. प्रत्येक२०टंक५टंक पाचोंनोंन८टंक इमलीका खार ८ टंक जम्भारीका खार ८ टकेभर शंखकी राख इन सबको नीबूके रसमे ५ दिन खरलकरके१टंक रस उष्ण जलके साथसेवनकराओतोशूल तत्काल नाश हो इसे शूलदावानल कहतेहैं

२२—आधसेर हीराकसी सेरभर लाहौरी फिटकरी सेरभर सेंधा नोंन सेरभर शोराकाचूर्ण करके ठकली(यंत्रोंमेंप्रसिद्धहै) यंत्रसे रस निकाललो जो १ माशे भर खिलाओतो सूल गुल्म अर्श प्लीहा उदररोग अजीर्ण और बातरोग सबनाश होंगे, इसेसंखद्राब कहतेहैं

२३–गन्धक गन्धकसे आधापारा इन दोनोंके समान कंटकवेधी ताम्बेके पत्र तीनोंको एक दिन खरल करके गोला बनालो और हांडीमें नमक भरके उसके बीचमें यह गोला धरदो,हांडीको चूल्हेपर तीन दिन आंच देकर स्वांग सीतल होजानेपर गोलेको निकालके पीस डालो, जो इस भस्मको २ रत्ती प्रमाणकी मात्रा से नागरवेल पानके साथ खिलाओ तो सूलतत्काल नाशहो। इसे सूल गजकेसरी रस कहते हैं।

२४–जीरा सोंठ काली मिर्च सिकीहींग और बच इसका २ टंकचूरण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो शूल नाशहो।

१ प्राचीन ग्रन्थमें इसे कुचलादि गुटिका नाम दिया परन्तु इसमें कुचिले का नाम भी नहीं दृष्टि पडता हो जो कूटादिगुटकाभी कहाजावे तोही योग्य है।

२ इस पदार्थ को कांच या चीनीकी शीशी को छोड़ अन्यपात्र में न धरो क्यों कि यह उसे खाजायगा तो फिरद्रव पदार्थ हाथ न लगेगा और इसके खाने के समय रोगीके मुखमें घृत लगानेसे उनके दांत और जीभको हानि न पहुंचेगी।

२५–१ टके भर त्रिफला, ५ टके भर शुद्ध गंधक, २ टके भर कांतिसार इन्होंका चूर्ण अनुमानसे २ टंक मधु और २टंकघृतके साथ ३ मासपर्यंत चटाओ तो सर्वशूल वायुके विकार औरफोड़े ये सब दूर हों इसे गंधकरसायन कहते हैं।

२६–१ टकेभर गुड, १ टकेभर आंवला, २ टकेभर मंडूरइनका २ टंक चूर्ण मधु के साथ चटाओतो शूल, अन्नोपद्रव, जरापित्त अम्लपित्त, परिणामशूल दूर हों, यह गुडादिमंडूर कहाता है।

२७–वायविडंग, चित्रक चव्य त्रिफला सोंठ; काली मिर्च, और पीपल इन सबके बराबर मंडूर और तुल्यही गुड तथा इन सबसे १० गुणा गोमूत्र लो फिर सब औषध और गुडादि को गोमूत्रमेंपकाकर दृढकरलो और पिंडाबनाकर घृतके चिकने पात्रमें रखदो जो इसमेंसे २टंक नित्य भोजनके पूर्व भक्षण कराओ तो शूल पक्ति दर्द, कामलापांडु, शोथ, मन्दाग्नि अर्श; संग्रहणी, कृमि गुल्म उदररोग अम्लपित्त ये सब रोग नष्ट होंगे यह तारामंडूर है।

२८–हर्रेकीछाल, सुहागा, सोंठ, सिकीहींग, कालीमिर्च चित्रक शुद्ध गंधकसेंधानोंन और इन सबके समान शुद्धकुचला इनसबको पीसकर एक२ माशे गोलियां बनालो जो एक गोली नित्य जलके साथ सेवन कराओ तो दर्द अफरा बंधकुष्ट, कफरोग अजीर्ण मन्दाग्नि ज्वर ये सब दूर हों यह स्थूलगजकेसरी गुटिका है।

२९–कर्णगजकीजड सिकीहींगा सोंठ सिका सुहागा, इनसबका २ टंक चूर्ण, उष्ण जलसे सेवन कराओ तो महादर्दभी नष्ट हो ये सर्व यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

३०–सोंचरनोंन अमलवेत जीरा और मिरच ये सब एक दूसरेसे क्रमानुसार दूने लेकर चूर्णकरो और बिजोरेके रसमें गोलियां बनाकर १ गोली उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो दर्द दूरहो इसे सौवर्चलादि गुटिका कहते हैं।

३१–सिकी हींग अमलवेत काली मिर्च पीपली; अजवायन सांभरनोंन सोंचरनोंन इन सबको पीसकर बिजौरे के रस में गोलियां बनाओ जो एकगोली उष्ण जलके साथ खिलाओतो समस्त शूल नष्ट होगा इसे हिंग्वादि गुटिका कहते हैं ।

३२–हल्दी सहजना, मुंगनाकी छाल सेंधानोंन, एरंड की जड़ सोंफ भैंसागूगल, सरसों, दानामेथी, असगंध और महुएके चूर्ण को कांजीके पानीमें सान के रोटी बनाओ और अग्निपर सेकके रोगीके पेटपर बांधो या ताव दो तो पेटका शूल दूरहो।

३३–कौड़ियोंकीराख, शुद्ध सिंगीमुहरा, सेंधानोंन, कालीमिर्च पीपली इन सबका चूर्ण पानके रसमें १ रत्ती प्रमाण की गोली बनाओ जो १ गोली नित्य खिलाओ तो दर्दरोग दूर हो यह दर्दगजकेसरी रस है ।

३४–बडे शंखको तपा तपाकर ग्यारह बार नीबूके रस में बुझाओ फिर इस बुझे हुए शंखकी राखमें १ टकेभरइमली का खार५टके सोंचरनोंन सेंधानोंन साम्हरनोंन कचनोंन बिगडनोंन प्रत्येक १ टकेभर ६ माशे सोंठ, ६ माशे काली मिर्च ६ माशे पीपली १ टकेभर सिकी हींग १ टकेभर शुद्धगंधक १ टकेभर शुद्ध पारा १ टंक शुद्ध सिंगीमुहरा ये सब औषधें मिलाकर एक जींव करदो तदनंतर जलकेसाथ घोटकर छोटे बेरकी बराबर गोलियां बनाओ जोएकगोली लवंगके काथकेसाथ सेवनकराओ तो दर्द तत्काल नष्ट हो इसका नाम शंखवटी रस है ।

३५–जो भोजन कियेपर दर्द उत्पन्नहो तो २ टंक शीशे (कांच) की भस्म उष्ण जलके साथ पिलाओ तो दर्द नष्ट होगा ।

३६–एक टंक शुद्ध पारा १ टंक शुद्धगंधक १ टंक शुद्धसिंगी मुहरा १ टकेभर काली मिर्च २ टकेभर कांकडासिंगी २ टकेभर

पीपली, २ टके भर सिकी हींग, ८ टके भर पांचों नान ८ टके भर इमलीका खार, ८ टकेभर नीबूके रसमें बुझे हुए शंखकी भस्म इन सबके चूर्णको नीबूके रसमें खरल करके १ टंक प्रमाणकी गोलियां बनालो, जो एक गोली जलके साथ सेवन कराओतो शूल, अजीर्ण, उदररोग और मन्दाग्नि ये नष्ट होंगे इसे शूलदावानल रस कहते हैं, ये सब यत्न सर्वसंग्रहग्रन्थमें लिखे है।

पार्श्वशूलयत्न १ सिंगीमुहरा, हरताल, सिकी हींग राई, नौसादर मैनासिल, लहसन; वच एलुवा इन सबों को पानी में पीसकर उष्ण करो और रोगीके पार्श्वभागपर लेप करो तो पार्स्व दर्द (पसली दुखना) नाश होगा।

इति नृतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे वातरक्तशूलादिरोगाणांयत्न निरूपणं नामैकविंशतितमस्तरंगः ॥ २१ ॥

उदावर्त, अनाह।

उदावर्तानाहगदयोस्तरंगे हि यथाक्रमात् ॥
पक्षनेत्रमिते चास्मिन् चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १ ॥

भावार्थः-अब हम इस २२ वें तरंग में उदावर्त और आनाह रोगकी चिकित्सा यथाक्रम से लिखते हैं।

उदावर्तरोगयत्न १-स्नेहपान कराओ तथा अधोवायु आने वाली औषधें सेवन कराओतो अधोवायु के प्रतिबंधसे उत्पन्न हुआ उदावर्त नष्ट होवे।

२-विरेचनसे मलको दूर करने वाली औषध या मल शुद्ध करने वाले अन्न भक्षण कराओ, फलवर्ती या तेल मर्दन करो या +वस्तिक्रिया करो तो मल रोकने का उदावर्तरोग नाश हो।

---

१ जहां हींग सेकने लिये कहा हो तहां हींग को गौके घृत में तेल डालो या रुई में लपेटकर अग्नि पर तपा के फुला डालो तो हींग सिकजावेगी।

२ स्नेहपान फलवर्ती और वस्तिक्रिया आगे वर्णन करेंगे।

३—१टंक जवाखार, १ टंक बचको पानीमें पीसके पिलाओ तो मूत्र रोकने का उदावर्त नाश होगा।

४—कटियाली और अर्जुनवृक्षकी जडका क्वाथ पिलाओ तो मूत्र रोकने का उदावर्त नाश होगा।

५—मिश्री, गन्नेका रस, दूध, दाखका रस पिलाओतो मूत्ररोकने का उदावर्त नाश होगा, इससे वायुजन्य रोगभी नाश होतेहैं।

६—स्नेहपान या मर्दनद्वारा पसीना निकालने से जमुहाई रोकने का उदावर्त नाश होगा।

७—उच्चस्वरसे रुदन करके आंसु बहाओ या सुखपूर्वक शयन कराओ या मनोहरकथा सुनाओतो आंसू रोकने का उदावर्तदूरहो

८—कालीमिर्च, राईकी नाश दो या नकछिकनी सुंघाओ या सूर्याभिमुख होकर छिकाओ छींक लिवाओ) या तेल मर्दन करके पसीना निकालोतो छींक रोकने से उत्पन्न हुआ उदावर्त नाशहो

९—तेल मर्दन करो या पसीना निकालोतो डकारका वेग रोकने से उत्पन्न हुआ उदावर्त नाशहो।

१०—वमन या लंघनया विरेचन या बास्तिकर्म करो तेल मसलोया नासिकाके सुरों से पानी पिलाओतो वमनोदावर्त नाश होगा।

११—१६ वर्षवाली सुन्दर रूपवती स्त्रीसे भोग कराओ या तेल मर्दन करो या मद्यादि मादक पदार्थ पिलाओ या मुर्गे के मांस सांठी धानके चांवल खिलाओ या बस्तिक्रिया करो तो वीर्य के रोकने से जो उदावर्त उत्पन्न हुआहै सो नाश होगा।

१२—चिकना, उष्ण, रुचिकारक, हल्का, हितकारकभोजनकराओ या सुगंधित पुष्प धारण कराओतोक्षुधारोकनेकोउदावर्तदूर होगा

१३—शीत क्रिया करो, फुहारों के समीप बिठाओ, महीन वस्त्र पहिनाओ, जलक्रीडा कराओ या शीतल जलमें भीमसैनी कपूर घोलकर धीरे २ पिलाओ तो तृषाका उदावर्त नाश होगा।

१४—श्रमदूर होनेपर, विश्रामदेनेसे वा मांसरस के साथ चांवल खिलाने से श्वास रोकने का उदावर्त नष्ट होगा।

१५—उष्ण दूधमें मिश्री डालकर सहता सहता पिलाओ, मनोहर कथा सुनाओ या सुखसेसुलाओ तो निद्राकाउदावर्तनष्ट होगा

सूचना यहांतकहमने तेरह वेगोंके रोकनेसे जो उदावर्त उत्पन्न होते हैं तिनकी क्रिया चिकित्सा लिख चुके इसके आगे अवसब उदावर्त मात्रके नष्ट होनेके यत्न प्रकाश करते हैं।

उदावर्तयत्न १—हींग, मधु और सेंधेनोनको पीसकर बत्ती बनाओ और घीसे चुपडकर सहता सहता गुदामें रखो तो उदावर्त मात्र नष्ट हो, इसे हिंग्वादिफलवती कहते हैं।

२—मैनफल, पीपली, कूट वच, सरसों, गुड इन सबोंको दूध में महीन पीसकर बत्ती बना के मलद्वारपर रक्खो तो उदावर्त मात्र नष्ट हो, इसे मदनफलादि फलवर्ती कहते हैं।

३—१टकेभर शक्कर २ टकेभर निसोत और ५ टकेभरपिप्पली इनका१टंक चूर्ण मधुके साथ सेवन कराओ तो दृढ मलद्राव होकर उतरे और उदावर्त नष्ट हो इसे नाराच चूर्ण कहते हैं।

४—सोंठ, मिर्च पिपली, पीपलामूल, निसोत, दारचूणी चित्रक इनका १ टंक चूर्ण गुडके साथ नित्य प्रातकाल खिलाकर ऊपर से जल पिलाओ तो उदावर्त पांडु, प्लीहा, गुल्म और शोथ ये सब रोग नष्ट होंगे इसे गुडाष्टक कहते हैं।

५—सूखी मूली, सांठीकी जड, पीपली, पीपलामूल चव्य, चित्रक, सोंठ,दशमूल किरवारेकी गिरी इन सबका घृत बनाकर खिलाओ तो उदावर्त नष्टहो इसे शुष्कमूलकादि घृत कहते हैं ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं।

६—शुद्ध जमालगोटा, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक सिका सुहागा

सोंठ, मिर्च, पीपल इन सबका १ माशा चूर्ण मिश्रीके साथ सेवन कराओ तो उदावर्त, अफरा, उदररोग और गुल्म येसब नष्ट होंगे इसे अजयपाल रस कहते हैं, यह वैद्य रहस्य में लिखा है।

७-निसोत या थूहरपत्र या तिल्ली आदि वस्तु युक्ति पूर्वक सेवन कराओ तो उदावर्त नष्ट हो।

८-निसोत, दात्यूणी, तज.थूहर किरवारे, शखाहोली, कणगच की जड, कबीला इन सबके १ टंक चूर्ण का क्वाथ २ टंक तेल और २ टंक घीके साथ ७दिनपर्यंत पिलाओ तो उदावर्त, उदर रोग, अफरा. तृषा और गुल्म ये सब नष्ट होंगे।

आनाहरोगयत्न१-उदावर्त रोग के जो उपरोक्त यत्न लिखे हैं, उन्ही यत्नों से आनाहरोगभी नष्ट होगा।

२-इसकेनिम्नालिखितयत्न औरभीजानो, २भागनिसोत४भाग पीपली ५ भाग बहेडेकी छाल और इन सबके समान गुड इन सबोंको महीन पीसकर १ टंकप्रमाणकी गोलियां बनालो जोएक गोली नित्यजलकेसाथ १५दिनतक खिलाओतो आनाहरोगदूरहो

३-सोंठ कालीमिर्च पीपली, सेंधानोन, सरसों, धमासा, और मैनफल का चूरण गुडके साथ मिलाकर अंगूठे समान मोटी बत्ती बनाओ और घीमें भिगोकर गुदामें रक्खोतो आनाह (अफरा) उदावर्त, उदररोग, मूत्राशय रोग और गुल्मरोग ये सब नष्टहोंगे ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे उदावर्तानाहरोगयत्न निरूपणं नाम द्वाविंशतरंगः॥ २२

❀ गुल्मरोग ❀

गुल्मामयस्यास्य नूनं चात्र पञ्चविधस्य वै॥
रामनेत्र मिते भंगे चिकित्सा लिख्यते मया॥ १॥

भावार्थः–अब हम इस २३ वें तरंगमें पांच प्रकारके गुल्म रोग की चिकित्सा लिखते हैं।

वातगुल्मरोगयत्न १–हर्रेका चूर्ण और एरंडी का तेल दूध में डालकर पिलाओ तो वातगुल्मरोग नष्ट हो।

२–सज्जी, कूट जवाखार और केवडके खारका चूर्ण एरंडी के तेल के साथ पिलाओतो वातगुल्म नाश हो।

पित्तगुल्मरोगयत्न १–निसोतका चूर्ण या त्रिफलाका चूर्णखिलाओयाकपील।को मिश्रीया मधुकेसाथ चटाओतो पित्तगुल्म नाशहो

कफगुल्मरोगयत्न १–वातगुल्मके यत्न ही इसपर चलतेहैं।

समस्तगुल्मरोगयत्न १–सिकीहींग. पीपलामूल, धनियां जीरा वच, चव्य,,चित्रक पाठं, कचूर, अमलवेत, साम्हरनोन, सोंचर नोन सेंधानोंन; जवाखार. सज्जी, अनारदाना, हर्रेकी छाल पोहकरमूल डांसरा, झाऊकी जड इन सबके चूर्णको अदरक के रसकी ७ पुट और बिजैरिके रसकी ७ पुट देकर २ टंक चूर्णनित्य खिलाओ तो गुल्म, अनाह, अर्श., संग्रहणी उदावर्त उदररोग ऊरुस्तंभ उन्माद और शूल ये सब नाश होंगे. इसे हिंग्वादि चूर्ण कहतेहैं।

२–४ मासे सज्जी और ४ मासे गुड नित्य खिलाओ तो गुल्म नाश हो।

३–पलासखार, थूहरखार, इमलीखार, अर्कखार. तिलखारजवा खार, सज्जखिार और ओंगा के खारका चूर्ण १ या २ टंक उष्ण जलके साथ सेवन कराओतो गुल्म और शूल दोनों नाश होंगे इसका नाम क्षाराष्टक चूर्णहै।

४–सांभरनोंन, सेंधानोंन. कचनोन ,जवाखार, सुहागा. सोंचर नोन और सज्जीका चूर्ण ३ दिनतक थूहरके दूधमें भिगोकर धूपमें सुखाओ, इसे आकके पत्तोंपर लपेटके पत्तोंको घडे में भरदो और

इस घडेको गजपुटमेंफूककर स्वांग शीतल होनेपर घडे में से भस्म निकाल लो, तदनन्तर,सोंठ काली मिरच पीली त्रिफला, अजवायन , जीरा, और चित्रकका चूर्ण उक्त भस्मके साथ खरल करके २ टंक चूर्ण नित्य उष्ण जल या गोमूत्र के साथ सेवन कराओ तो गुल्म. शूल अजीर्ण, शोथ, उदररोग,मंदाग्नि.उदावर्त;प्लीहा.येसब रोग नष्ट होंगे, इसे वज्रक्षारचूर्ण कहतेहैं ।

५–सोंठ, काली मिर्च,पीपली,सेंधेनोनको २ टंक चूर्ण ग्वारपाठे के गूदेमें लपेटदो और इसी घीके साथ खिलाओ तो गुल्म और प्लीहा दोनों नाश हों ।

६–१ मनभर ग्वारपाठेका गूदा, २०० टकेभर गुड, १०० टकेभर मधुमें २ सेर धावडे के फूल, २ टकेभर सोंठ, २टकेभर मिर्च २ टकेभर पीपली, २ टकेभर तज, २ टकेभर पत्रज, २ टके भर इलायची, २ टकेभर चव्य, २ टकेभर चित्रक २ टकेभर, कचूर २ टकेभर नागकेशर, २ टकेभर झाऊकी जड दोटकेभर अजमोद दोटकेभर जीरा दोटकेभर देवदारू दोटकेभरबबूलकी छाल,दोटकभर असगंध दोटकभर रास्ना,दोटकेभर धायरा, और दोटके भर इन्द्रयवका चूर्ण मिलाकर एकजीवकरदो तदनन्तरएक मृत्तिका के चिकने पात्र में इन सबको धरके पात्रका मुह बंद करदो इस पात्रको ३१ दिनपर्यंत पृथ्वी में गाडकर पश्चात्बाहर निकालो जो इसमेंसे नित्य २ टकेभर खिलाओतो गुल्म उदररोग विषूचिका गृध्रसी स्वास कास पांडु और वातव्याधि के समस्त रोग नष्ट होवेंगे, इसे ग्वारपाठेका आसव कहतेहैं ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं ।

७–१ टंक सोरा और १ टंक अद्रक नित्य नित्य खिलाओतोगुल्म दूर होगा ।

८—१ टंक सीपकी भस्म, ४ मासे गुड़के साथ नित्य खिलाओ तो गुल्मरोग दूर हो इसे सीप प्रयोग कहते हैं ।

९—२ टंक लहसनकी दूधमें खीर बनाकर खिलाओ तो गुल्म दूर है ।

१०—एरंडकी जड, चित्रक, सोंठ, बायबिंडग पीपलामूल सिकी हींग, सेंधानोन इन सबका क्वाथ पिलाओ तो गुल्म, अफरा और दर्द ये सब रोग दूर होंगे ।

११—१६ मासे अजवायन, जीरा, धनियां कालीमिर्च, कूडेकी छाल, अजमोद, काला जीरा, सिकी हींग प्रत्येक ५ टंक पांचों नोंन, निसोत प्रत्येक, ८ टंक दारचूणी, कचूर पोहकरमूल, वाय बिडंग, अनारदाना हर्रेकीछाल, चित्रक, अमलवेत, और सोंठ इनमें से हर एक १० टंक इन सबके चूर्णको बिजौरेकेरसकी १० पुट देके १ टंक प्रमाण की गोलियां बनाओ जो नित्य १ गोली घृत या मधुके साथ खिलाओ तो पित्तगुल्म मधुके साथ खिलाओ तो वातगुल्म, और दशमूलके क्वाथ के साथ खिलाओ तो त्रिदोषज गुल्म, हृदयरोग, संग्रहणी दर्द कृमि और अर्श ये सब रोग नष्ट होंगे, इसे कंकायणी गुटिका कहते हैं ।

१२—पूर्वोक्त लवण भास्कर चूर्ण खिलाओ तो गुल्म नष्ट होगा

१३—तिल्लीका क्वाथ पिलाओ तो गुल्म नष्ट होगा ।

१४—भारंगी, गुड, घृत, पिपली, तिल्ली, सोंठ और मिरचका क्वाथ पिलाओ तो गुल्म नष्ट हो ।

१५—भारंगी, पीपली, पीपलामूल, देवदारु, कृष्णगन्धकी जड और तिल्ली का क्वाथ पिलाओ तो गुल्म दूर हो, यह कृष्णादि क्वाथ कहाता है ।

१६-शुद्धमैनासिल, शुद्धहरताल, शुद्धरूपामक्खी, शुद्धआंवला सार गंधक, शुद्धपारा, तांबेश्वर इन सबके चूर्णको पीपली के क्वाथमें १दिन खरलकरके थूहरके दूधमें खरल करो जो इसमेंसे १टंक मधु या गौमूत्रके साथ सेवन कराओ तो गुल्म और दर्द दोनों नष्ट हों इसे विद्याररस कहते हैं

१७-पारा, गंधक हरताल, जमालगोटा, ताम्बेश्वर सिंगीमुहरा छःहों शुद्ध करो), सिका सुहागा, त्रिफला, सोंठ, कालीमिर्च पपिल इन सबके चूर्णको भांगरेकेरसकी तीनपुट१दिनतक देकर पुनः २ दिन खरल करो और १ रत्ती की गोलियां बनाकर १ गोली अदरकके रसके साथ खिलाओ तो गुल्मरोग दूर होगा इसे गुल्मकुठार रस कहते हैं. ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें लिखे हैं

१८-हाथकी सीर (फस्त) छुडवाओ तो गुल्मरोग नष्ट हो

१९-सिकी हींग अनारदाने और बिडनोनका चूर्ण बिजौरेके रसमें खरल करके २ टंक चूर्ण मधुके साथ खिलाओ तो गुल्म रोग नष्ट हो।

२०-५टंक अजवायन, १ टंक नोन और ५ टंक गुडको कूट छाछके साथ नित्य पिलाओ तो गुल्मरोग नष्ट होकर क्षुधालगे और मलमूत्र भली भांति सरण होगा, यह वृन्दमें लिखा है।

२१-सिकी हींग, अजवायन, जवाखार, सेंधानोन, सोंचरनो-हरेंकी छाल इन सबका २ टंक चूर्ण मधुके साथ पिलाओ तो गुल्म और दर्द दोनों नष्ट होंगे।

२२-१ भाग सिकी हींग. २ भाग सेंधानोन, ३ भाग पीपली ४ भाग पीपलामूल, ५ भाग कंकोल मिर्च ६ भाग अजवायन. भाग हरेंकी छाल, ८ भाग अनारदाना९ भाग आमकी जडकी

छाल, १० भाग चित्रक, ११ भाग सोंठ, १२ भाग फिटकरी सबोंका २ टंक चूर्ण नित्यजलके साथ सेवन कराओतो गुल्मअरुचि हृदयरोग,अनाह. अर्श, और बादी के समस्त विकार दूर होंगे इस हिंगुद्वादशक चूर्ण कहतेहैं।

२३–वच, हर्रेकी छाल, सिकी हींग, सेंधानोन, अमलवेत जवाखार और अजवायन इनका २ टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ सेवनकराओ तो गुल्म और शूल ये दोनों दूरहों इसे वचादि चूर्ण कहतेहैं

२४–२५ बडी हरैं १६ सेर पानीमें डालकर औटाओ. औटते समय इसमें १६ टकेभर दात्यूणी और १६ टकेभर चित्रकको कुछ कुछ कूटके डालदो.मंदमंद आंचसेऔटाते हुए चतुर्थांश (४सेर) जल रह जानेपर छानकरइस ४ सेर जलमें वे २५ हरैंगुटली निकालके पीस डालो इसीमें १६ टकेभर गुड डालकर पुन औटाओ औटते औटते आधा (२ सेर) जल रह जानेपर १टकेभरपीपली १ टकेभर सोंठ, चार टकेभर घी, ४ टकेभर मधु, १ टकेभर तज १ टकेभर पत्रज, १ टकेभर नागकेशर, १ टकेभर इलायची इन सबका चूर्ण भीइसी अर्द्धावशेष जलमें डालकर अवलेह बनाओजो इसमेंसे १ टकेभर नित्य खिलाओ तो गुल्म, संग्रहणी, पांडु शोथ विषमज्वर. कुष्ट, अर्श. अरुचि, प्लीहा हृदयरोग ये सब दूर होकर शुद्ध रेचन (दस्त साफ) होगा, इसे दन्तीहरीतकी कहतेहैं।

२५–पूर्वनिर्मित शंखद्राव सेवन कराओ तो गुल्म रोग नाशहो

२६–२०० बडीपक्की जंभीरीका रस घृतके चिकने पात्रमें भरके इसीमें १ टकेभर सिकी हींग, १ टकेभर सेंधानोन, १ टकेभर सोंठ १ टकेभर कालीमिरच ४ टकेभर सोंचरनोंन १ टकेभर अजवायन और १ टकेभर सरसोंका चूर्णडालदो, फिर उस पात्र का मुख बंद कर २१ दिनतक कूडेमें गाड रक्खो। फिर बाइसवें दिन निकाल

कर १ टकेभर नित्य खिलाओ तो गुल्म, प्लीहा, विद्रधि, अष्ठीला वायु कफ अतिसार, पार्श्वशूल हृद्रोग , नाभिशूल, वंधकुष्ठ, विषान्माद उदररोग वातरोग,कफ रोग, ये सब दूरहोंगे,इसे जभीरीद्राव कहते हैं ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ।

२७-नदीका खार, कुडे वृक्ष काखार आकका खार. सहजने का खार कठियालीकाखार, थूहरकाखार, बेलकाखार, पलास का खार बकायनका खार, ओंगा का खार, कदंब का खार, अडूसे का खार, सांभरनोंन और सिकीहींग इन सबका २ टंक चूरण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो गुल्म,शूल, उदररोग ये सब दूर हों इसे नादेयक्षार कहते हैं यह योगशतकमें लिखा है ।

२८-सौंफ कणगचकी जड, तज, दारुहलदी और पीपल के क्वाथमें तिल,गुड,सोंठ,कालीमिर्च.सिकीहींग और भारंगी डाल कर पुनः औटाओ,फिर छानकर पिलाओतो रक्तगुल्म दूरहो तथा स्त्री का मासिक रजोधर्म बंद हुआ हो तो पुन प्रवृत होगा ।

२९-जवाखार; सोंठ; कालीमिर्च. पीपल. इनका काथ पिलाओ तो रक्तगुल्म दूर हो ।

३०-३ भाग शुद्ध पारा. १ भाग वंगभस्म. ४भाग शुद्ध गंधक ४ भाग ताम्बेश्वर इन सबको आकके दूधमें २ दिन खरल करके ४ गोला बनाओ शरावसम्पुट में करके गजपुट में फूंकदो स्वांग शीतल होजानेपर निकालकर २रत्ती रस घृतके साथ खिलाओ तो गुल्म प्लीहा. उदररोग ये सब दूरहों यह वंगेस्वर रस कहाता है ।

गुल्मरोगोदभयोनिशूलयत्न-त्रिफला निसोत दारचूणी और दशमूल १ टकेभर कूटकर चूर्ण बनाओ इसमेंसे ६ टंक चूर्णकाकाथ एरंडी का तेल घी और दुध इन सबको मिलाकर पिलाओ तो योनिका दर्द नाश हो ।

रोगी को वर्जित पदार्थ—सूखा साग दाल मछलीका मांस और मीठे फल ये चारों पदार्थ गुल्मरोगीको कदापि भक्षण मत कर वाओ यह सर्व संग्रह में लिखा है।

इति नूतनामृत सागरे चिकित्सा खंडेगुल्मरोगयत्न नरूपर्ण नाम त्रयोविंशस्तरंगः ॥२३॥



यकृत प्लीहा हृद्रोग।

यकृत्प्लीहाहृदरुजां च मया ह्यत्र यथाक्रमात।
वेदनेत्रमिते भंगे लिख्यते रुक्प्रतिक्रिया ॥ १ ॥

भाषार्थ—अब हम इस २४ वें तरंगमें यकृत प्लीहा और हृद्रोग की चिकित्सा यथाक्रम से लिखते हैं।

यकृत और प्लीहारोगयत्न १—जवाखार को ऊंटनी के दूध में मिलाकर पिलाओ तो प्लीहा जाय।

२—सीपी की भस्म दही के साथ खिलाओ तो प्लीहा जाय।

३—१टंक पीपल नित्य दूधमें डालकर पिलाओतो प्लीहा जाय।

४—आकके पत्तोंकी भस्म और नोंन मही (मट्ठा) में डालकर पिलाओ तो प्लीहा जाय।

५-सिकी हींग सोंठ कालीमिरच पीपल कूट जवाखार और सेंधानोंन इनका २ टंक चूर्ण नित्य बिजौरेके रसके साथ खिलाओ तो प्लीहा जाय।

६-पलासके खारमें भिगोई हुई २टंक पिप्पली नित्य खिलाओ तो प्लीहा और गुल्म भी नाश हो।

७-चार माशे शंखकी भस्म जंभीरी के रसके साथ खिलाओ तो प्लीहा नाश हो।

८–बांये हाथकी फस्द खुलवाओ तो प्लीहा और दाहिने हाथकी फस्द खुलवाओ तो यकृत रोग नष्ट हो ।

९–पक्के आमके रसमें मधु डालकर पिलाओ तो प्लीहा जाय।

१०–अजवायन चित्रक,जवाखार,पीपल, पीपलामूल, दात्यूणी इनका २ टंक चूर्ण मठा या मदिराके साथ नित्य पिलाओ तो प्लीहा दूर होगी, ये सर्व यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ।

११––५ टंक सेंधानोंन जलमें औटाकर नित्य पिलाओ तो प्लीहा नष्ट हो यह वैद्यरहस्य में लिखा है ।

१२–जवाखार, वायविडंग पीपली कणगचकी जड अमलवेत और इन सबोंसे दूनी हरेंकी छाल इन सबोंका चूर्ण गुडमें मिलाकर जलके साथ खिलाओ तो प्लीहा रोग नष्ट हो ।

१३–पीपल, सोंठ, दात्यूणी और इन सबसे दूनी हरेंकी छाल इन सबका चूरण गुडके साथ खिलाओ तो प्लीहा रोग नाशहो

१४–वायविडंग चित्रक इन्द्रायणी की जड इन सब के बराबर साठी की जड और वायविडंग इनसे दूनी देवदारु तिगुणी सोंठ और चौगुणी दात्यूणी लेकर चूरण बनाओ इसमें से १ टंक चूरण नित्य उष्ण जलके साथ खिलाओ तो प्लीहा नाश हो ।

१५–शुद्ध भिलावा हरेंकी छाल और जीरेका चूरण कर इन सबके बराबर गुड मिलाओ जो ५ टंक नित्य खिलाओ तो प्लीहा नाश हो ।

१६–लहसन पीपलामूल हरेंकी छाल उनका २ टंक चूरण गोमूत्र के साथ नित्य खिलाओ तो प्लीहा नाशहो ये चक्रदत्तमें लिखेहैं ।

१७–रोहीस[1] की जड हरेंकी छाल और सोंठ का २ टंक चूरण

---

१ रोहीस एक प्रकार की सुगंधित घास है जिसका तेल वातरोग पर अत्युपयोगी होता है इसे रोहितक भी कहते हैं ।

गोमूत्र के साथ नित्य खिलाओ तो उदररोग प्रमेह कफ अर्श कुष्ट और प्लीहा ये सब नष्ट होंगे यह योगतरंगिणीमें लिखाहै

१८–साम्भरनोंन राई हलदी टकेटकेभर चूर्णको १०० टकेभर छाछके साथ चिकने घडेमें भरके १५ दिनतकगलनेदो पीछे दो टंक नित्य इक्कीस दिन पिलाओ तो प्लीहा रोग नष्टहो इसे तक्र संधान कहते हैं यह भावप्रकाश में लिखा है।

१९–१०० टकेभर रोहीस और ४ सेर बेरीकी जडको कूट के १६ सेर पानीमें औटाओ चौथाई (४ सेर) रह जानेपर छानकर १ सेर गौका घृत और ४ सेर बकरीके दूधमें मिलादो फिर सोंठ साठीकी जड तुम्बरू वायबिंडग जवाखार पोहकर मूल झाऊ की जड और बच ये सब ढाई टंक लेकर चूर्ण बनाओ और यह चूर्णउपरोक्त द्रव पदार्थ (क्वाथ घी दूधमें) डालकर मंद मंदआंच से औटाओ दुग्धादि औषध जलकर घीमात्र रह जानेपर छानकर दो या तीन टंक नित्य खिलाओ तो प्लीहा प्लीहोदर पांडुकुक्षि शूल आपार्श्वशूल अरुचिबंधकुष्ठ अतिसार वमन औरविषमज्वर ये सब रोग नष्ट होंगे इसे महारोगहीतघृत कहते हैं इसकेभक्षक रोगीको पथ्यसे रखना चाहिये यहचक्रदत्तमें लिखा है।

२०–१०० टकेभर चित्रकके क्वाथमें २० टकेभर कांजीका पानी ४००टकेभर दहीका मट्ठा और १ सेर घी इन सबको एकत्र करके यह औषधि मिलावे पीपल पीपलामूल चव्य चित्रक सोंठ जवाखार तालीसपत्र सेंधानोंन दोनो हलदी प्रत्येक टके टके भरऔर १ टंक कालीमिर्च इन सबका चूर्ण भी इसी में डालदे औरफिर सब पदार्थ को मंदमंद आंच देकर घृतमात्र रहजानेपर छानलोजो इस घृतका सेवन कराओ तो गुल्म प्लीहा उदर रोग आनाह पांडु अरुचि शोथ विषमज्वर मन्दाग्नि और मूत्राशयके समस्त

रोग नष्ट होके बलकी बृद्धि होगी इसे चित्रकादि घृत कहते हैं यह बृंद में लिखा है ।

विशेषतः—यकृत् और प्लीहा दोनों रोगों पर एक समान ही चिकित्सा है इस लिये उपरोक्त बीसों नियम यकृत् और प्लीहा दोनों रोगों पर जानना चाहिये ।

हृदयरोगयत्न १—बहेडे के वक्कल का २ टंक चूर्ण नित्य दूध घृत या गुड़के पानीके साथ पिलाओ तो हृद्रोग जीर्णज्वर और रक्त पित्त ये तीनों नष्ट होंगे ।

२—हर्रेकी छाल वच रास्ना पीपली सोंठ कचूर पोहकर मूल इन सबका २ टँक चूर्ण नित्य जल के साथ सेवन कराओ तो हृदय दुरहोगा ।

३—हरिणके सींगका पुटपाक करके गौके घृतके साथ खिलाओ तो शूल और हृद्रोग दोनों नष्ट होंगे ।

४—खरेंटी गंगेरण के बृक्षकी छाल काहूके वृक्षकी छाल औरमुलहटी इन सबके २ टंक चूर्ण क्काथ नित्य पिलाओ तो हृद्रोग वातरक्त रक्तपित्त नष्ट होंगेये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं ।

५—कूट और बायविडंगका २ टंक चूर्ण गोमूत्रके साथ खिलाओ तो हृदयकी कृमि झड़के हृद्रोग नाश होगा ।

७—गंगेरण की जड काहू बृक्षकी छाल और पोहकरमूलका २ टंक चूर्ण नित्य दूध या मधुके साथ पिलाओतो हृद्रोग श्वास कास छर्दि और हिचकी ये सब नष्ट होंगे ।

७७—हर्रेकी छाल वच रास्नापीपली सोंठकचूर पोहकरमूलइन सबका चूर्ण नित्य प्रमाणानुसार विचारपूर्वक सेवन कराओ तो हृद्रोग नष्ट होगा इसे हरीतक्यादि चूर्ण कहतेहैं ।

८–देश मूलके क्वाथमें एरंडीका तेल और सांभरनोन डालकर पिलाओ तो हृद्रोग दूर होगा ।

९–सिकी हींग वच, बायविडंग, सोंठ, पीपली, हर्रे की छाल चित्रक जवाखार, सोंचरनोन और पोहकरमूल का २ टंक चूर्ण नित्य जलके साथ सेवन कराओ तो हृद्रोग दूर हो, यह योग रत्नावली में लिखा है ।

१०–२ टंक पोहकरमूलका चूर्ण मधुके साथ चटाओ तो हृद्रोग श्वास, कास राजरोग और हिक्का ये सब दूर होंगे ।

११–सिकी हींग, सोंठ, चित्रक कूट जवाखार हर्रेकी छाल वच बायबिडंग, सोंचरनोन शुद्ध पारा और पोहकरमूल इन सबका चूर्ण नित्य जलके साथ सेवन कराओ तो हृद्रोग अजीर्ण और विषूचिका ये सब रोग दूर होंगे यह रसप्रदीप ग्रंथ में लिखा है ।

१२–पोहकरमूल, सोंठ कचूर हर्रेकी छाल जवाखार इनके क्वाथ में घी डालकर पिलाओ तो वात हृद्रोग नष्ट होगा यह वैद्य रहस्य में लिखा है !

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे यकृत्प्लीहहृद्रोगयत्न निरूपण नाम चतुर्विंशतिस्तरंग ॥ २४

मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात ।

चिकित्सा मूत्रकृच्छ्रस्य मूत्रा घातस्य वै क्रमात् ।
पञ्चविंशतिमे चात्र तरंगे लिख्यते मया ॥ १ ॥

भावार्थ–अब हम इसके आगे मूत्रकृच्छ और मूत्राघातरोगोंकी चिकित्सा इस पच्चीसवें तरंग में यथाक्रम से लिखते हैं ।

मूत्रकृच्छ्ररोगयत्न :–बडे गोखरू किरवारे कीगिरी, दाभ (दर्भ) [1] की जड कासकी जड जवासा आंवला पथरचट (पाषाण भेद)

[1] एक प्रकार को घास होती है ३-४ फुटतक ऊंचा बढता है

और हरेंकी छाल इन सबके २ टंक चूर्ण का क्वाथ मधुके साथ पिलाओतो मूत्रकृच्छ्र और पथरी यह असाध्य रोगभी नष्टहोगा इसे गोक्षुरादि क्वाथ कहते हैं ।

२–इलायची पाषाणभेद शिलाजीत पीपली तेवरसी (खीरा) ककडी) के बीज केशर सेंधानोन इन सब का २ टंक चूर्ण चांवल के जलके साथ सेवन कराओ तो मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो ।

३–आंवले का रस पुराने गुडके पानी के साथ पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र नष्ट होगा !

४–दूध में पुराना गुड या मिश्री डालकर पेट भर पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो ।

५—आंवले या सांटे के रस में मधु मिलाकर पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो ।

६ गोखरू के क्वाथ में जवाखार डालकर पिलाओ तो मला वरोधज मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो ।

७–५ टंक त्रिफला और ५ टंक बेरकी जडकी छालको रात्रिभर पानी में भिगोकर प्रातकाल दोनों को उसी पानी में ठंडाई के समान पीस छानकर सेंधेनोन के साथ पिलाओ तो मल रोकने का मूत्रकृच्छ्र नष्ट होगा ।

८—५ मासे जवाखार और ५ मासे मिश्री का चूर्ण जलके साथ पिलाओ तो मल रोकने का उदावर्त नष्ट होगा ।

९—५ टंक दाख १० टंक मिश्री और १० टंक दही का मठा तीनों को मिलाकर पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो ।

१०—गोखरू के पञ्चांग का क्वाथ मिश्री और मधुके साथ पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं,

११–गुरच, सोंठ, आंवला, असगंध और गोखरू के २ टंक चूर्ण का क्वाथ नित्य पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो।

१२–गौके दुग्ध में पक्के नीबू का रस डालकर मन माना पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्रः प्रमेह दाह और स्त्री की योनि दोष से उत्पन्न हुए रोग नष्ट होंगे।

१३–हर्रेकी छाल, किरबारे का गूदा, गोखरू, पाषाण भेद, धमासा और अडूसेके ५ टंक चूर्ण का क्वाथ मधु के साथ नित्य पिलाओ तो दाह संयुक्त मूत्रकृच्छ्र और बंधकुष्ठ नष्टहों, यह हरीतक्यादि क्वाथ है।

१४–डाभ, कांस, दूब, सरकना (मूंज) और सांठी इनपांचों कीजड़का क्वाथ पिलाओतो मूत्रकृच्छ्र की बेदना नष्ट होगी।

१५–पक्के कुह्मड़े के रस में मिश्री मिलाकर पिलाओतो मूत्र कृच्छ्र नष्ट हो इसे कूष्मांडरस कहते हैं।

१६–कटियालीका रस मधुके साथ पिलानेसे मूत्रकृच्छ्र नष्टहो।

१७–२टंक गोखरू का चूरा अठगुणे (१६टके भर) पानी में औटा के आधा रहजाने पर छानलो, इसी पानी में ७टकेभर गूगल डालकर पुनःऔटाओ कुछ औटाने पर इसी में सोंठ काली मिर्चें नागरमोथा, हर्रेकी छाल बहेड़े की छाल, और आंवला यह एक एक टकेभर का महीन चूर्ण कर डालदो ये सब पदार्थ परस्पर मिलाकर दृढ हो जाने पर उतार के घृत के चिकने पात्र में रखदे इसमें से नित्य५ मासे जल के साथ खिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, प्रमेह, प्रदर, वातरक्त, शुक्रदोष ये सब रोग नष्ट होंगे। इसे गोक्षुरादि गूगल कहते हैं।

१८–१टके भर जीरा और १टके भर गुड़ नित्य खिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र नष्ट होगा।

१९-२टंक जवाखार गौकी छाछके साथ पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र और पथरी दोनों नष्ट हों, इसे जवाखार तक्रयोग कहते हैं ।

२-१भाग शुद्ध पारा और ४ भाग शुद्ध गंधककी कजलीवड़ी कौड़ी में भरके पानीमें पिसे हुए सुहागेसे उसका मुह बंदकरदो और मिट्टीकी कुलिया में धरके गजपुट में फूंकदो, शीतल होजाने पर पीसके इसमें से ४ मासे भस्म इक्कीस कालीमिर्चके चूर्ण में मिला कर घृतके साथ चटाओ तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो, यह लघुलोकेश्वर रस कहता है ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं,

२१-निरूह बास्तिकी या उत्तर बास्तिकी क्रिया करो तो मूत्र कृच्छ्र जाय ।

२२-शतावरी, कांसकी जड, डाभकी जड़, गोखरू बिदारी कन्द, सालर कीजड़ और किसोरियातालाव के कीचड़ में गोलं२ होतेहैं हिन्दूस्तान में कसेरू भी कहतेहैं इनका क्वाथ मधुके साथ पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र नष्ट होयह चक्रदत्त में लिखा है ॥

२३-तेवरसी के बीज, महुआ, दारुहलदी इनका क्वाथ पिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र जाय ।

४-केलेके रस में गोमूत्र मिलाकर पिलाओतो कफका मूत्र कृच्छ्र नष्ट हो ।

२५—इलायची का महीन चूर्ण जलके साथ पिलाओ तो कफ मूत्रकृच्छ्र जाय ।

२६-मूंगका १टंक चूर्ण तंडुलके जलके साथ पिलाओ तो कफ मूत्र कृच्छ्र नष्ट हो ॥

२७-गोखरू और सोंठका क्वाथ पिलाओ तो कफ मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो ।

२८-बड़ी कटियाली पाठ, मुलहटी महुआ और-इन्द्रयवका क्वाथ पिलाओ तो सन्निपातका मूत्रकृच्छ नष्टहो ।

२९-शिलाजीतको मधुके साथ चटाओ तो शुक्रमूत्रकृच्छ्र दूर हो. यह चक्रदत्तमें लिखा है ।

३०-उत्तम स्त्रीसे मैथुन कराओ तो शुक्रमूत्रकृच्छ्र दूर होगा.

३१-खरेटीकी जडका क्वाथ पिलाओ तो सर्व मूत्रकृच्छ्र दूर हो,

३२-सौ टकेभर गोखरूका पंचांग कूटकर अठगुणे (८००टकेभर) पानीमें औटाओ. चतुर्थांश रहजाने पर छानकर इसमें ५० टकेभर मिश्रीकी (गाढी चाटने योग्य) चासनी बनाओ फिर सोंठ.पीपली. इलायची, जवाखार. केशर. कहवेवृक्षकी छाल. तेवरसी ये सब१टकेभर और४टकेभर वंशलोचन इन सबका महीन चूर्णउक्त चासनी में डालकर नित्य१टकेभर खिलाओतो मूत्रकृच्छ्र दाह.पथरी,वंधकुष्ठ रक्तमूत्र और मधुप्रमेह ये सर्व रोग दूरहोंगे. यह गोक्षुरावलेह कहाता है ये सब यत्न सर्वसंग्रहमें लिखे हैं।

मूत्राघातरोगयत्न१-नरसल (देवनल). डाभ, कांस साठीऔर खरेंटी इन सबकी जडोंका क्वाथ बनाकर शीतल होनेपर मधुके साथ पिलाओ तो मूत्राघात नष्ट हो ।

२-जलमें पिसा हुआ कपूर अत्यंत महीन वस्त्र पर लेप करके उस वस्त्रकी बत्ती बनालो जो यह बत्ती इन्द्रीके छिद्रमें धरो तो मूत्राघात नष्ट हो ।

३-धनियां और गोखरूके क्वाथमें घृत पकाके खिलाओ तो मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात और शुक्रदोष तीनों नष्ट होंगे यह धान्य गोक्षुरघृत हैं ।

४-५टंक तेवरसीके बीज और ५ टंक धनियां रात्रि को जलमें भिगोकर प्रातःकाल ठंडाईके समान उसी जलमें पीस छानकर१ टंक सेंधानोन डालके पिलाओ तो मूत्राघात दूरहो ।

५–३टंक पाटल (गुलाब) वृक्षकी खार और १ टंक सौंचर नोन मदिराके साथ पिलाओ तो मूत्राघात नष्ट हो,

६–खट्टे अनारका रस और इलायची मदिराके साथ पिलाओ तो मूत्राघात दूर हो।

७ शिलाजीत सेवन कराओ तो मूत्राघात दूरहो

८–५टंक केवांचके बीज, १ टंक पीपली, १ टंक तालमखाना १० टंक मिश्री और १० टंक दाख इन सबका चूर्णमधुऔरघृतके साथ उष्णदूधमें डालकरपिलाओतो शुक्रावरोधजमूत्राघात जाय,

९–आधसेर चित्रक; ५ टंक गोरीसर, १० टंक खरेटीकी जड, आधपाव दाख, ५टंक इन्द्रायण की जड ५ टंक पीपली १० टंक त्रिफला, १० टंक महुआ १०० टंक बडे आंवले इन सबका चूर्ण १६ सेर पानीके साथ औटाकर ४ सेर रहजाने पर छान लो इस क्वाथमें ४ सेर घी डालकर पकाओ रस जलकर घीमात्र रहजाने पर छानकर आधपाव बंशलोचनकाचूर्ण डालदो अब यह चित्रकादिकघृत बनगया जोनित्य आधपाव सेवन कराओ तो मूत्राघात सब प्रकारके वीर्यदोष. योनिदोष प्रदर और मूत्रकृच्छ्रको दूर कर स्त्रीका गर्भोत्पादक होगा यह चरकमें लिखा है.

१०–त्रिफलाके क्वाथमें दूध और गुड डालकर पिलाओ तो मूत्राघात नष्ट हो।

११–पाटल, अरलु. नीमकी छाल. हलदी, गोखरू. पलास के व फल इन सबकाक्वाथ गुडके साथ पिलाओतो मूत्राघातदूरहो

२० अत्यंत रूपवती स्त्रीसे मैथुन करो तो मूत्राघात दूरहो यह सब आत्रेयसंहितामें लिखे हैं।

१ वृन्द संग्रह में लिखा है कि इसके सेवनसे वांझ स्त्री को भी गर्भ प्राप्त होकर बलवोत्पत्ति होगी।

मूत्रावरोधयत्न १३-बिनौला (सरकी कांकडा या कपास का बीज की बीजी त्रिफला और सेंधानोंन का ५ टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ खिलाओ तो मूत्र स्वच्छ उतरेगा ।

१४-तिल्ली और बिनौला इन दोनोंका क्षार मधु और दही के साथ खिलाओ तो मूत्र बन्द होगा ।

१५-कमलकी जड और तिलीको गौके मूत्रमें पीसकर पिलाओ। तो मूत्राका रुकाव बन्द होकर मूत्र उतरे ।

अत्यन्त उष्णमूत्रयत्न १६--चमेलीकी जडको बकरी के दूधमें पीसकर पिलाओ तो मूत्रकी विशेष उष्णता नष्ट हो ।

सूचना--इधर जो यत्न मूत्रकृच्छ्र और पथरीके लिखे हैं वे सब मूत्राघात को भी उपयोगी हो सकतेहैं यह भाव प्रकाशमें लिखाहै। जो यत्न मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात रोग पर बताये गये हैं वे सब मूत्रावरोध (पेशाब बन्द होजाने) पर चल सक्ते हैं

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात रोग यत्न निरूपणं नाम पञ्चविंशतितमस्तरंगः ॥ २१ ॥

अस्मरी, प्रमेह, पिडिका

अस्मरीमेहापिडिका रोगाणां हि यथाक्रमात ॥
रसनेत्रामिते भंग लिख्यते रुक्प्रतिक्रिया ॥ १ ॥

भाषार्थः- अब हम इस २६ वें तरंग में अस्मरी अर्थात् पथरी प्रमेह और पिडिकारोगकी चिकित्सा यथा क्रमसे लिखते हैं ।

अश्मरी (पथरी) रोगयत्न १ सोंठ अरणी पाषण भेद कूट गोखरू एरंडकी छाल और किरमालेका गूदा इनके पांच टंक चूर्ण का क्वाथ सिकी हींग जवाखार और सेंधानोंन डालकर पिलाओ तो पथरी मूत्रकृच्छ्र अर्श उपदंश (गर्मी) और कोटेकी वायु ये सब रोग दूर होंगे यह शुण्ठयादि क्वाथ दीपन पाचन है ।

२– इलायची, पीपली, महुआ; पाषगभेद पित्तपापड़ा, अडूसा गोखरू और अरंडकी जडका क्वाथ शिलाजीतके साथ पिलाओ तो पथरी और मूत्रकृच्छ्र दूरहो यह एलादिक्वाथ है ।

३–पेठेके रसमें हींग और जवाखार डालकर पिलाओ तोपथरी और पेडू की पीडा दूर हो ।

४–वरण्या पाषणभेद सोंठ और गोखरूका क्वाथ जवाखार के साथ पिलाओ तो पथरी नष्ट होवे ।

५–५ टंक गोखरूकाचूर्ण मधु और भेडीके दूधके साथ पिलाओ तो पथरी नष्ट हो ।

६ वरण्याकी जडके क्वाथ में गुग डालकर पिलाओ तो पथरी और मूत्राशयकी पीडा भी नष्ट होवे ।

७ अदरकका रस जवाखार हरेंकीछाल और मलयागिर चन्दन का क्वाथ पिलाओ पथरीरोग नष्ट हो ॥

८–१० टकेभर वरण्या के वक्कल चौगुने (चारसेर) पानी में औटाकर चतुर्थांश (१ सेर) रह जानेपर छानलो इसमें १०० टकेभर गुणकी चासनी बनाकर सोंठ पेठेके बीज बहेडेकी बीजी बथुएके बीज सहजनेके बीज इलायची हरेंकी छाल और वायविडंग (येसब टकेटकेभर) का चूर्ण डालदो तदनंतर एक जीवकरके नित्य २ टकेभर खिलाओ तो पथरी नष्ट हो इसे वरुणगुण कहते हैं

९–मजीठ तेवरसीकेबीज जीरा सौंफ आंवला बेरकी बीजी शुद्ध आंवलासार गंधक और शुद्ध मैनासिल इन सबको १ टंक चूर्ण नित्य मधुके साथ खिलाओ तो पथरी निश्चय नष्ट हो

१० -२ टकेभर कुलथी के क्वाथ में २ माशे सेंधा नोंन हो

---

१ वरण्या किंवा वरुण वृक्ष मारवाड प्रान्त में उत्पन्न होते हैं उस देश में यह प्रसिद्ध है ॥

दो मासे शरपंखे (मारवाड़में धोला धमासा कहतेहैं)का रस डाल कर पिलाओ तो पथरी दूरहो, ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखेहैं।

११–५टंक हल्दीका चूर्ण और दस टकेभर गुड़ इनमें से नित्य एक मासा लेके कांजी के साथ पिलाओ तो पथरी नाशहो।

बारह–सोंचरनोंन,मधु,दूध और तिरली का खार मदिरामें मिला ३ दिन पर्यंत पिलाओतो पथरी नाशहो, यह चक्रदत्तमें लिखाहै।

तेरह–२टंक तिल्लीका खार और ५ टंक मधु दूधमें मिलाकर १५ दिन पर्यन्त पिलाओ तो पथरी झड़कर निश्चय गिर जावेगी।

चौदह–२ टंक गोल ककड़ी की जड़ रात्रि को पानी में भिगोकर प्रातःकाल उसी पानीमें (ठँडाई समान) पीसके सातादिन पर्यंत पिलाओतो पथरी इंद्रियद्वारसे झड़कर गिर जावेगी, यह राज मार्तंड में लिखा है।

पंद्रह–कुल्थी, सेंधानोंन, वायविडंग, सार (सार समझके डाल ना)मिश्री, सांठेका रस, पेठे का रस जवाखार तिरली का खार; पेठेके बीज और गोखरू के क्वाथ मे गौका घी पकाकर नित्यएक टकेभर खिलाओतो पथरी,मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और शुक्रवन्ध ये सब रोग नाश होंगे इसेकुलथ्यादि घृत कहतेहैं, यह वृन्दमें लिखाहै।

पथरी रोग पर पथ्य–मूंग जौ, गेहूं चांवल, दूध घी, सेंधानोंन और ढेंडस (टींडसी जिसका शाक मारवाड़ में बहुत होता है) ये वस्तुएं पथरी रोगपर पथ्यहैं।

वातजमधुप्रमेहयत्न एक वड़कीजड़, अरलकी जड़;चिरोंजी चार के वृक्षकी जड़, आंवलेकी जड़, पीपलवृक्षकी जड़,किरमालेकी जड़ (इन सब जड़ोंकी ववकल), मुलहटी, लोद, नीमकी छाल, पटोल

एक मधुप्रमेह सबके पीछे है परन्तु यह अति क्लिष्ट तथा असाध्यहै इसलियेहमने यहीं ही में दिया है।

वरणेकी छाल, दात्यूणी मेंढासिंगी. चित्रक. कणगचकजिड. इन्द्र यव त्रिफला शुद्ध भिलावा सोंठ कालीमिर्च तज पत्रज और इला यची इन सबका महीन चूर्ण मधुके साथ चटाओतो मधु प्रमेह नाशहो. इसे न्यग्रोधादि चूर्ण कहतेहैं ।

२–उपरोक्त कथित औषधों का क्वाथ पिलानेसे तथा इन्हीं औ षधों का तेल बनाकर शरीर में मर्दन करनेसे किंवा इन्हीं का घृत बनाकर खिलानेसे भी वातज मधु प्रमेह नाश होगा ।

३–शुद्ध सोनामक्खी, पाषाणभेद, शुद्ध शिलाजीत. चन्दन कचूर पिप्पली और वंशलोचन इनका २ टंक चूर्ण १० टंक मधु के साथ दूधमें मिलाकर नित्य पिलाओतो वातज मधु प्रमेह और मूत्रावरोध नाशहो, ये यत्न आत्रेयमें लिखेहैं ।

४–शुद्ध पारा शुद्धगंधक मिश्री और कहुवेकी छाल के महीन चूर्णको सालंई का जड़के रसकी ३पुटदे १ मासे प्रमाणकी गोलि यां बनाओ जो इसकी १ गोली नित्य खिलाओ तो वातज मधु प्रमेह नाशहो यह वैद्यरहस्यमें लिखा है ।

पित्तजक्षारप्रमेहयत्न १–धव कहवा अरलु (इनके वक्कल)क. सेरू, केलेके बृक्षके भीतरकी श्वेत छाल कमलकी जड और दाख इनका क्वाथ पिलाओतो पित्तजक्षार प्रमेह नाशहो ।

२–सुन्दर स्त्रीसे मैथुन कराओतो पित्तजक्षारप्रमेह नाशहो ।

रक्तप्रमेहयत्न १–बांसी (रात्री का भरा हुआ) पानी में दाख भिगोके मसल डालो और मुलहटी और श्वेत चन्दन डालकर पिलाओतो पित्तज रक्तप्रमेह नाशहो ।

४—खश, लोद कहुवेकी छाल और रक्तचन्दन के ५ टंक चूर्णका क्वाथ मधुके साथ पिलाओ तो पित्तज प्रमेह मात्र नाश हो यह भावप्रकाश में लिखा है ।

५–कमलनाल, कडुवेके जड़, इन्द्रयव, धवकी जडकी छाल, इमलकी छाल, आंवले और निबोलीके क्वाथमें या क्वाथमेंमिश्री डालकर पिलाओ तो पित्तप्रमेह मात्र नष्ट हो ।

कफजप्रमेहयत्न कफजउदरप्रमेहयत्न १–धवके वक्कल, कडुवेके वक्कल, रक्तचंदन और सालर के बक्कलका क्वाथ पिलाओतो कफजउदरप्रमेह नष्टहो ।

इक्षुप्रमेहयत्न २–कूट पित्तपापडा, कुटकी, मिश्री उनका क्वाथ पिलाओ तो कफजइक्षुप्रमेह नष्ट हो ।

३–अररायाकी जड, पाटल, धमासा, अरलू और पलास का क्वाथ पिलाओ तो इक्षुप्रमेह नष्टहो ।

शुक्रप्रमेह यत्न ४–दूब, मूर्वा भारंगीकीजड कासकीजड दारुचूर्णी, मजीठ सालरके वक्कल इनका क्वाथ पिलाओ तो कफजशुक्रप्रमेहतथा पित्तजरुधिरप्रमेह दोनों दूरहों, ये सब आत्रेयमें लिखेहैं,

लालाप्रमेहयत्न ५–कपासकी बीजोंको भैंसकी छाछमें ७ दिन खरल करके नित्य २ मासे खिलाओ तो कफजलाप्रमेहनष्टहो यह रसरत्नाकरमें लिखाहै ।

प्रमेहमात्रयत्न ६–नागरमोथा, हरेंकी छाल, लोद, कायफल इनके ५ टंक चूर्णका क्वाथ मधुके साथ पिलाओ तो कफज दशों प्रमेह मात्र नष्टहों, यह भावप्रकाशमें लिखा है ।

७–वायविडंग राल, कायफल,लोद बिजयसार (औषधिविशेष) कदम्बके वक्कल और कहेवृक्षकी छालका क्वाथ नित्य पिलाओ तो कफज प्रमेह मात्र नष्टहो ।

आत्रेयमतानिर्मित प्रमेहयत्न तथातक्रप्रमेहयत्न १ लोद, कडुवेके वक्कल,खैर नीमके पत्ते,आंवल, रक्तचंदन इनके क्वाथमें गुडडालके पिलाओ तो तक्रप्रमेह और पिडिकाप्रमेह दोनों नष्ट हों ।

घृतप्रमेहयत्न २–त्रिफला, किरवारेका गूदा, बेरकी जड़, मूर्वा. मुंगनेके पत्ते, नीमके पत्ते दारव और केलेके वृक्षके भीतरकीश्वेत छाल इन सबका क्वाथ पिलाओ तो घृतप्रमेह नष्टहो।

३–गुरच चित्रक, पाठा कूड़े (इन्द्रवृक्ष) की छाल, सिकीहींग और कूट इनका २ टंक चूर्ण जलके साथ सेवन कराओ। घृतप्रमेह नष्टहो, यह सर्वसंग्रहमें लिखा है,

अतिमूत्रप्रमेहयत्न ४–मूर्वा, पारा बंग (या बंगेश्वर) और अभ्रकको १ दिनभर मधुके साथ खरल करके नित्य १ मासे मधुके साथ सेवन कराओ तो अति (बहु)मूत्रप्रमेह दूरहो इसे तालकेश्वर रस कहते हैं इसके ऊपर गूलरके फलोंका २ टंक चूर्ण अवश्य लेना चाहिये।

५–२मासे पंचवक्त्ररस नित्य सेवन कराओ तो बहु मूत्रप्रमेह नष्टहो, यह रसरत्नाकर में लिखा है।

सर्वप्रमेहमात्रयत्न १–नागरमोथा, त्रिफला, हलदी, देवदारु, मूर्वा, इंद्रयव और लोद इनका क्वाथ पिलाओ तो प्रमेह और मूत्रग्रह नष्ट हो।

२–काकलहरी (बूटी विशेष) हरेंकी छाल, हलदी, कहुबेकेव क्कल इन सबके चूर्णमें समान मिश्री मिलाकर ५ टंक नित्यमधुके साथ चटाओ तो समस्त प्रमेह नष्टहो, यह आत्रेय में लिखा है,

३–कचूर, वचनागरमोथा, चिरायता, देवदारु, हलदी, अतीस दारुहलदी, पीपलामूल, चित्रक, धनियां त्रिफला, चव्य, गजपीपल जवाखार, सज्जी, सेंधानोंन, सोंचरनोंन (येसब एक एकटंक ५टंक सार, २ टंक मिश्री, ४ टंक शुद्ध शिलाजीत और ४ टकेभर शुद्ध गूगल इन को न्यारे न्यारे पीस कपड़छानकर एकत्र करो, शुद्ध गंधक, शुद्ध पारेकी कजली और अभ्रक प्रत्येक १ टकेभर में

उपरोक्त चूर्ण मिलाकर इसमें से ४मासेनित्य मधुके साथ चटाओ तो सबप्रमेहमात्र-अर्श,क्षयी वीर्य दोष,नेत्ररोग,दन्त रोग.पांडुरोग कंडुरोग,उदररोग,मूत्रकृच्छ्र,मूत्राघात,प्लीहा.खांसी और कुष्ट ये सब दूरहों इसे चन्द्रप्रभागुटिका कहते हैं।

४–त्रिफला, जीरा, धनियां, कौंचबीज (ये चार चार टकेभर) छोटीइलायची,दालचीनी-लौंग,नागकेशर और बावची (तकमरिया) के बीज ये सब दोदोटकेभर इन सबके चूर्णमें मिश्री और घी डालकर १ टकेप्रमाणकी गोलियां बनालो जो १ गोलीनित्यप्रति खिलाओ तो प्रमेह नष्टहो इसे प्रमेहहारी चूर्ण कहते हैं।

५–टकेभरलोदको मधु या खरैंटीके क्वाथके साथ सेवन कराओ तो प्रमेहमात्र दूरहो।

६–गुरचसत्व त्रिफला और लोहसार इन तीनोंको मिलाकर मधु या मिश्रीके साथ१ टंक सेवन कराओतो प्रमेह मात्र दूरहो।

७—मिश्री सिंघाडे और श्वेत चीनीका २ टंकमहीन चूर्ण जलके साथ सेवन कराओ तो बहुत प्राचीन प्रमेह भी दूरहो।

८–१टकेभर गूलरके पक्के फल सेंधानोंनके साथ सेवन कराओ तो असाध्य प्रमेहभी नष्टहो।

९–१रत्ती बंगेश्वर मधुके साथ खिलाकरऊपरसे मधुके साथ गूलर के पक्के फलोंका चूर्ण चटाओ तो असाध्य प्रमेह नष्ट होगा।

बंगेश्वररसनिर्माणविधि—पावभर उत्तम रांगा को आधपाव पारे के साथ गलाकर थालीमें डालके (चौडा पत्थर जैसा करके) छोटे २ टुकडे करलो पांच २ सेरगोबरकी २ गोबरी (उपली, कंडे छेना बनाकर सुखालो, २ सेर टेसू (पलाश) के फूल और २ सेर मेंहदीके पत्तोंको सुखाकर चूर्ण करलो, अबगोबरीनीचेरख कर उसपर फूल, पत्तों का आधा सेरभर। चूर्ण बिछादो, उसपर दे

रांगके टुकडे जमाकर ऊपरसे बचाहुआ चूर्ण डालदो और ऊपर से दूसरी गोबरी दृढता पूर्वक जमाकर निर्वात (जहांवायुनलगे) स्थानमें आगसे जलादो फिर स्वांग शीतल हो जानेपर रसको निकालकर उपयोग में लाओ. इसके गुण कहांतक लिखें जुदे २ अनुपानसे अनेक रोगोंको नष्ट करता है।

१—१ गोली प्रात और १ संध्याको सुपारीपाक द्रोतो प्रमेह मात्र दूरहो।

सुपारीपाकनिर्माणविधि—आठटके भर सुपारी (चिकनी कोकप-डछान कर चूर्णको ८ टकेभर गोघृतके साथ मिलाओ फिर २ सेर गोदुग्धमें डालकर मंदमंद आंचसे खोवा बनालो और नागकेशर नागरमोथा चंदन सोंठ कालीमिर्च पीपली आंवला कोयल (अपराजिता वेलीविशेष) केबीज जायफल बंग धनियां चिरों जी दाने तज पत्रज इलायची दोनों जीरे सिंघाडे और बंशलोचन (येसब पांच पांच टंक) को महीन कपड़छन चूर्ण और उपरोक्त खोवा दोनों ५० टकेभर मिश्रीकी चासनीमें डालकर १ टंकप्रमा णकी गोलियाँ बनालो जो १ गोली प्रातः और १ संध्या को खि लाओतो प्रमेहमात्र जीर्ण ज्वर अम्लपित्त अर्श मन्दाग्नि शुक्रदोष और प्रदर ये सब रोग दूर होकर शरीरपुष्ट होगा।

गोखरूपाकविधि ११—आधसेर गोखरूका चूर्ण सेरभर गो घृत केसाथ पाँचसेर गोदुग्धमें डालकर मन्दाग्निसे बनाओ अनन्तर बेलकीगिरी कालीमिर्च जायफल समुद्रशोष इलायची भीमसेनी कपूर दालचीनी पत्रज हलदी कूट अफीम तालमखाना

१. बंगके टुकडे अग्निके तापसे जलकर भस्म होजाने पर फूलकर श्वेत होजाते हैं परन्तु इनका बोझ कुछ न्यूनाधिक नहीं होता है. पश्चात् इन्हें किंचित् मसल दो तो ये चूर्ण हो जाते है इसे वंगेश्वर रस कहते हैं।

ये सब दो २ टंक ५ टंक लोहसार इन सबके बोझसे आधी भांगको महीन कपडछन चूर्ण और उपरोक्त खोवा ४ सेरमिश्रीकी चासनी डालकर पांचटंक प्रमाणकी गोलियां बनालो जो १ गोली नित्य सेवन कराओ तो प्रमेह मात्र दूर होकरस्तंभनशक्ति प्राप्तहोस्त्री मैथुन समय बहुत प्रसन्न हो।

१२—चित्रक शुद्ध गंधक सोंठ कालीमिर्च पिप्पली शुद्ध पारा शुद्ध सिंगीमुहरा त्रिफला और नागरमोथा (पारे गंधककी कजली करलो) इन सबके महीन चूर्णको भृंगराजकी रसकी १ पुट देकर खरल कर और १ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनाकरएक गोली नित्यप्रातःकाल खिलाओ तो बीसोंप्रकारके प्रमेहदूर होंगे इसे पंचाननी गुटिका कहतेहैं यह वैद्य रहस्यमें लिखा है।

१३—१ मासा भीमसेनीकपूर १ मासा कस्तूरी ४ मासे अफीम और ४ मासे जायपत्री इन सबको नागरबेल पानके रसमें खरल करके १ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनालो जो १ गोली दूध मिश्रीके साथ नित्य सेवन कराओ तो प्रमेह नाश होकर वीर्य स्तम्भित होगा।

१४—आंवले और हल्दीका ५ टंक चूर्ण रात्रिमें जलमें भिगोकर प्रातःकाल उसी पानीमें पीसलो और भंगके समान कपडेसे छान कर मधुके साथ पिलाओ तो प्रमेहमात्र नाश हो।

मेघनादरस विधि १५—शुद्धपारा शुद्ध गंधककी कजलीशुद्ध सोनामक्खी सोंठ कालीमिर्च पीपली त्रिफला बेरकीबीजी. शिलाजीत हलदी और कैथके चूर्णको भांगेरकी रसकी २१ पुट देकर १ टंक नित्य खिलाओ तो प्रमेहमात्र नाशहो।

हरिशंकररसविधि १६—शुद्धपारा और अभ्रक दोनोंकोआंवले के रसमें सात दिन पर्यंत खरल करके १ रत्तीभर नित्य खिलाओ तो प्रमेह मात्र नाशहो।

प्रमेह कुठाररसविधि १–इलायची. भीमसेनी कपूर भारंगी. जायफल गोखरू सलाईवृक्षकी छाल शुद्धपारा अभ्रक मोचरस और वंगसार इन सबको महीन पीसकर इस रसमेंसे नित्य २ रत्ती खिलाओ तो प्रमेह मात्र नष्ट हो।

१८–५ टंक बकायन के बीज चांवलके पानीमें पीसकर गोघृत केसाथ नित्य खिलाओ तो विशेष प्राचीन प्रमेहभी नष्टहो, येसब यत्न सर्व संग्रह में लिखेहैं।

पिडिकारोगयत्न १ धव (धावडा) कहुवा कदंब बेर सरसों नीम इन सबोंके बक्कलों का क्वाथ बनाकर उस जलसे नित्यपि डिकाओं को धोओ तो पिडिका नाशहो

२–काहूके बक्कल कदम्ब के बक्कल और तेंदूकी अंतरछालके क्वाथसे पिडिकाओं को नित्य धोओ तोइन्द्रियके ऊपरकी पीवयुक्त पिडिका तथा शरीरमात्र की पिडिका नाशहो।

वातपिडिकायत्न ३—भंगरेकारस तुलसीके पत्ते और पटोलके पत्तोंको कांजीमें महीन पीसकर लेप करोतो बात पिडिकानष्टहो

पित्तपिडिकायत्न ४—मुलहटी कूट रक्तचंदनखश रोहिसगेरू और कमगट्टों को दुग्धमें पीसकर लेप करो तो पित्तपिडिका और उनकी दाह नासहो।

पिडिकाकी दाहका यत्न ५—मक्खनको १०० या १०० बार जलसे धोकर पिडिकाओं पर करो तो इन्द्रियकी पिडिकाओं की दाह तथा उनसे पीवका बहाव भी बंदहोगा (मक्खन कांसीकी थालीमें मथमथके धोना चाहिये)

पीवबहावका यत्न ६—कदम्ब काहू अनार और आंबेकेपत्तोंके

१ भीमसेनी कपूर को शास्त्र में शुद्ध कपूर नाम दिया है, जो कि यत्न से उद्धृत शुद्ध किया जाता है जिसका नाम बरास कपूर भी है

उष्ण जलमें पीसकर लेप करो तो पिडिकाओंसे पीव बहनाबंदहो

७-पिडिकाओं को कांजी या छाछ या शीतल जलसे नित्य धोया करो तो पीब बहना बंद होकर पिडिका नष्ट होजावें, ये सब यत्न आत्रेय में लिखे हैं।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे भसमरी पमह पिडिका यतन निरूपणं नाम षड्विंशतितमस्तरंगः ॥ २६ ॥

मद, स्थूल, कार्स्य, उदररोग।

मेदःकार्श्योदररुजां तरंगे इस्मिन यथक्रमात् ॥
सप्ताद्विभमिते नूनं चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः—अब हम इस सत्ताईसवें तरंग में मद, कार्स्य, और उदर रोगकी चिकित्सा यथाक्रम से वर्णन करते हैं।

मेदरोग यत्न १—गुरच और त्रिफला क्वाथ में मधु डालकर पिलाओ तो मदरोग दूर हो।

२—बासे ठंडे पानी में मधु मिलाकर पिलाने से मेदरोग दूरहो

३—उष्ण अन्न भक्षण कराओ या चांवलों का मांड पिलाओ तो मेदरोग दूर हो।

४—सोंठ, मिर्च, पीपली, चित्रक, त्रिफला नागर मोथा और वायविडंगके क्वाथ में गूगल डालकर पिलानेसे मेदरोगनष्टहो,

५—मधुके साथ पिप्पली चटाओ तो मेदरोग नष्ट हो।

६—धतूरे के पत्तोंका रस शरीर से मर्दन करोतोमेदरोगनष्टहो

७—शुद्ध पारा, तांबेश्वर, लोहसार, और बीजाबोलके चूर्णकोकूट कर भांगरे के रस में ३ दिन खरल करके १ रत्ती मधु के साथ नित्य खिलाओ तो मेदरोग दूर हो इसे बडनयन रस कहते हैं यह वैद्य रहस्य में लिखा है।

८—चव्य, जीरा, सोंठ, काली मिर्च, पीपली सिकी हींग और

सोंचरनोंन का २ टंक चूर्ण जोके सत्तूके साथ खिलाओ तो मेद रोग दूरहो यह चक्रदत्तमें लिखा है ।

९-बायविडंग सोंठ जवाखार और लोहसारका १ टंक चूर्ण आंवलेके चूर्ण और मधुके साथ खिलानेसे मेदरोग नाशहो ।

१००-बेरीके बक्कल(वृक्षकीछाल) मेंकांजीकापानी,अरण्याका रस और शिलाजीत मिलाकर पिलानेसे मेदरोग नाशहो ।

११-गुरच, इलायची कूडेकी छाल और आंवले ये सब एकसे एक बढकर(१-२-३)आदि औरइन सबके समान गूगललेकर सबको महीन पीस सवा या डेढ़ टंक मधुके साथ सेवन कराओ तो मेद रोग और भगंदर दोनों नाशहों इसे अमृत गूगल कहते हैं यह चक्रदत्त में लिखाहै ।

१२-त्रिफला अतीस मूर्वा निसोत चित्रक अडूसा निम्बछाल किरवारेकी गिरी पीपलामूल दोनों हलदी गुरच इन्द्रायन पीपली कूट सरसों और सोंठ इनके क्वाथमें कुछ तुलसीका रस औरतेल डालकर आगदो,रस जलकर तेलमात्र रहजानेपर छानकरशरीर मर्दन या वस्तिक्रिया करोतोमेद और कफके अन्यरोगभीनाशहो इसे त्रिफलादि तेल कहतेहैं। यह चक्रदत्त में लिखा हैं ।

मेदरोगीको सेवनीय पदार्थ-पुराने चांवल मूंगकुल्थी, कोदों जौ, कडुवा रस, मधु, एरंडोके पत्तोंकाशाकहींग चांवलोंकामांड लेपनबास्तिकर्म,चिंता,परिश्रम,मल्लक्रीडा,मार्गगमनऔरजागरण इन विषयोंके सेवन मात्र से मेदरोग नाशको प्राप्तहो ।

शरीरदुर्गंधियत्न१-शंखका चूर्ण अडूसेके पत्तेके रसमें मिलाके लेप करोतो शरीर में पसीना आनेसे दुर्गन्धि आतीहैसोनाशहो

२-बेलपत्र के रसमें शंखका चूर्ण मिलाकर शरीरको लेप करोतो दुर्गंधि नाशहो ।

३-नागकेशर, सिरसके बक्कल. लोद,खश और हर्रैकीछाल को जलमें पीसकर उबटन करो तो शरीर की दुर्गंधि दूर हो।

४-बबूल के पत्ते जलमें पीसकर स्नान के पुर्व शरीरमें मर्दन करो तो दुर्गंधि दूर हो यह भाव प्रकाश में लिखा है।

५-ताम्बूल के पत्ते हर्रे की छाल और कूटको जलमें पीसकर शरीर में मर्दन करो तो दुर्गंधि नष्ट हो।

६-कुल्थी, कूट. छडछडीला,चंदन.तज, वच और जौका सिका हुआ आटा इन सबको जल में महीन पीसकर शरीर में मर्दन करो तो दुर्गंधि नष्ट हो। यह शार्गंधर में लिखा है।

कक्षादुर्गंधि निवृत्तियत्न १-कांखों (हाथ औरधडके संगमपर नीचे के भाग) में नीबू के पत्तों का रस लगाओ तो कांखों में पसीना आने की दुर्गंधि नष्ट हो।

२-हलदी को अधजली कर पानीमें पीसकर कांखा में लगा ओ तो कांखा की दुर्गंधि नष्ट हो।

३-कूट और दोनों हलदी को गोमूत्र या गोवरमें पीसकरलेप करो तो दुर्गंधि और कुष्ठभी नष्ट हो.यह चक्रदत्तमें लिखा है।

स्त्रीका सुवर्णकारक (सुन्दर रंग होनेका) लेप १-हर्रेकीछाल लोद,नमिके पत्तेअनारके वक्कल आमके बक्कलकोजलमें पीसके स्त्री के शरीर पर लेप करो तो देहका कुवर्ण दूर होकर सुंदरवर्ण (रंग) प्राप्तहो और कांतिबढ़े, यह काशिनाथपद्धति में लिखाहै।

कार्श्यरोगयत्न १-जितनी बलकारी वीर्यवर्द्धक वीर्य विवंधक और पुष्टकारी औषध तथा घी दूध आदि वस्तु हैं ये सब कार्श्य (क्षणिता, दुवलापन रोग नष्ट करने वाली हैं।

२-जो जो पुष्पकारी प्रयत्न है वे सब कार्श्यरोग के यत्न ही जानो यह भाव प्रकाश में लिखा है।

वातोदररोगयत्न १–दश मूलके क्वाथमें अरंडी का तेल डाल करके पिलाओ तो वातोदर नष्ट हो ।

२–त्रिफलाका काथ गोमूत्रके साथ पिलाओ तो वातोदर जाय,

३–कूट, दारुचूणी, जवाखार, पाठ, वच, सोंठ, सैंधव, संचर, और सांभरनोंनका ५ टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ खिलाओ तो वातोदर नष्ट हो इसे कुष्ठादि चूर्ण कहते हैं ।

४–१००टकेभर एक पोत्या लहसनको पीसकर १६ सेर जल में औटाओ औटाते समय उसीमें सोंठ कालीमिर्च, पीपली साटीकी जड, सोंचरनोंन.दारुचूणी, बिडनोंन, सहजनेकी जड,अजवायन, गजपीपली (ये सब टके टके भर) ३ टके भर त्रिफला और ६टके भर निसोत इन सबका महीन चूर्ण तथा २ सेर तिलीका तेलभी डाल मंद आंच से औटाओ औटाते २ सब औषध जलकर तेल मात्र रहजाने पर छानके कांचके पात्र में भरदो इस तेल में से नित्य प्रातःकाल ५ टंक (तथा रोगीकी शक्त्यनुसार) पिलाओ तो आठों प्रकारके उदररोग; मूत्रकृच्छ उदावर्त अंत्रवृद्धि पार्श्व, शूल, आमशूल. अरुचि प्लीहा अष्ठीला हड फूटन और वायुके समस्त विकार एक माशे सेवन से नष्ट होंगे ।

५–उष्ण दुग्ध में अरंडी का तेल और गोमूत्र डालकर पिलाओ तो वातोदर नष्ट हो ।

६—छाछ में सोंचरनोंन और पीपली डालकर पिलाओ तो वातोदर नष्ट हो ।

पित्तोदरयत्न १–विरेचन (जुलाब) दो तो पित्तोदर नष्ट हो ।

२–मिश्री और कालीमिर्च जलके साथ सेवन कराओ तो पित्तोदर नष्ट हो ।

कफोदरयत्न १—पीपली. पीपलामूल. चित्रक भेले भर १ टंक निसोत और ५ टंक अरंडीका तेल ऊंटनी के दूधमें उष्ण करके नित्य मास पर्यन्त पिलाओ तो कफोदर नष्ट हो।

२—अजवायन जीरा. सोंठ. कालीमिर्च. पीपली और झाऊ वृक्ष की जड ५टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ पिलाओ तो कफोदर जाय।

३—साटी. दारुहलदी, कुटकी. पटोल. हरेंकी छाल. देवदारु, नीमकी छाल. सोंठ और गुर्चके ५टंक चूर्णका क्वाथ पिलाओते कफोदर, पार्श्वशूल. श्वास. और पांडु ये सब रोगदूरहों.इसे पुनर्नवादि क्वाथ कहते हैं यह भावप्रकाश में लिखा है।

सन्निपातोदरयत्न १—सोंठ और त्रिफलाके क्वाथमें दही घी या तेल डालकर पकाओ पानी जलकर तेल या घी (जो डाला हो) रहजाने पर छानकर पिलाओ तो सन्निपातोदर नष्ट हो।

२—सोंठ पीपली कालीमिर्च. जवाखार सेंधानोंनइनको ५ टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो सन्निपातोदर नष्ट हे

समस्तउदररोगमात्रयत्न १—अजवायन झाऊवृक्षकी छाल धानियां. त्रिफला पीपली कालाजीरा अजमोदा पीपलामूल बायविडंग ये नवों एक एक भाग तीन भाग दात्यूणी दो भाग निसोत २ भाग इन्द्रायण इनके चूर्ण को २६ भाग थूहरके दूधको १ पुटदेके२ टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो सब उदररोग तथा वातरोग दूरहो यह नारायणादि चूर्ण कहाताहै इसीको बेरीके वक्कलके क्वाथके साथ देनेसे गुल्म मद्यके साथ देने से आध्मान मट्ठेके साथ देनेसे वंधकुष्ठ अनारके क्वाथके साथ देनेसेंअर्शऔर उष्ण जलके साथ दो तो अजीर्ण भगंदर पांडु कास स्वास क्षयी संग्रहणी कुष्ट मदाग्नि और विषमात्र दूरहों. जैसे विष्णु भगवान

दैत्यों का नाश कर देते हैं तैसेही यह नारायण चूर्ण उक्त रोगों को समूल नष्ट कर देता है।

हमने यह नारायण चूर्ण प्राचीनामृतसागरानुसार लिखाहै परंतु भावप्रकाश में इसके निर्मितार्थ निम्न श्लोक दिये हैं जिन्हें विद्वान स्वयं जान लेवेंगे।

यवानी हबुषा धान्यंत्रिफलाचोपकुञ्चिका। कारवी पीप्पली मूलमजगन्धा शठी वचा॥१॥शताह्वा जीरका व्योषं स्वर्णक्षारीच चित्रकम्। द्वौ क्षारौ पोष्करं मूलं कुष्ठं लवणपञ्चकम्॥२॥विडंग च समांशानि दन्त्य भागत्रयं भवेत्। त्रिवृद्धिशाले द्विगुणेशीतला स्याच्चतुर्गुणा॥३॥ एष नारायनो नाम्ना चूर्णो रोगगणापहः। एनं प्राप्य निवर्तंते रोगा विष्णुं यथासुराः॥ ४॥ तक्रेणोदरिभिःपेयं गुल्मिभिर्बदराम्बुना। आनद्धवाते सुरया वातरोगे प्रसन्नया॥५॥ दधिमंडेन विड्वन्धेदाडिमांबुभिरर्शसि। हरिकतैंषुवृक्षाम्लैरुष्णांबुभिरजीर्णके॥६॥ भगंदरे पांडुरोगे कासे स्वासे गलग्रहे हृद्रोगे ग्रहणीरोगेकुष्ठेमन्दानलेज्वरे॥७॥दंष्ट्रात्रिवोषमूलविषेपगरेकृत्रिमविषे यथार्हंस्निग्धकोष्णेनपयमेतद्विरेचनम्॥ ८॥ इत्युक्तं भावप्रकाशे

२–थूहरका दूध, दात्यूणी, त्रिफला बायविडंग· कटियाली, चित्रककूकर भंगरा ये सब दोसेर लेकर आठसेर पानीमें डालकर औटाओऔरऔटातेसमय १सेरगौघृत पानीमें डालकर पानीजलके घृतमात्र रहजानेपर छानकेर टंकनित्य खिलाओतो विरेचनहोकर सब उदररोग नाशहो यह नारायणघृत भावप्रकाशमें लिखा है।

३–१ टकेभर अजवायन औरर टके सिके सुहागे का चूर्ण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो सब उदररोग नष्ट हो।

४–५टके भर पीपली थूहर के दूध में भिगो कर सात दिन छायामें सुखाओ तदन्तर महीन पीसकर जलके साथ ४ मासे

भर १ दिनके अन्तरसे खिलाके ऊपरसे छाछ या चांवल खिलाओ तो उदररोग दूरहो ।

५–एक सहस्र (१०००) पीपली का चूर्ण हर्रेका चूर्ण थूहरके दूधमें ७ पुष्ट देकर छायामें सुखाओ और १ टंक गोमूत्रके साथ सेवन कराओ तो समस्त उदररोग नष्टहों ।

६–दात्यूणी पीपली सोंठ १ भाग ६ भाग चोख और पौन भाग बिडनोन का १ टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ सेवन कराओ तो प्लीहा गुल्म मन्दाग्नि पांडु और समस्त उदररोग नाशहों ।

७–आकके पत्ते सेंधव घड़ेमें भर कर मुंह बंद करदो और मट्टी में जला कर स्वांगशीतल होजानेपर निकालकर पीस डालो जो इसमेंसे ५ टंक नित्य छाछया ग्वारपाठेके रसकेसाथ सेवन कराओ तो उदररोग नाशहो ।

८–सोंठ या हर्रेया पीपलको गुडके साथ नित्य २ टंक खिलाओ तो उदररोग शोथ, पीनस,खांसी अरुचि, जीर्णज्वर अर्श संग्रहणी कफरोग और वातरोग येसब नाशहों येसबवैद्यरहस्यमें लिखेहैं ।

९—सोंठ कालीमिर्च पीपली सुहागा पांचोंनोंन सज्जी और इन सबके समान शुद्धजमालगोटेके चूर्णको दात्यूणीके रसकी ३ पुट और बिजौरेके रसकी ३ पुट देकेखरलकरो और छायामेंसुखा कर आधी रत्ती नित्य खिलाओ तो समस्त उदररोग प्लीहा, गुल्म अफरा, शूल और अर्श ये सब रोग नाशहों इसकी आंखोंमें आंजदो तो सर्पविष उत्तर जावेगा इसे उदयभास्कर रस कहते हैं यह रत्नप्रदीप में लिखा है ।

१०—आंकडेका दूध कूडेकी छाल (ये दोदो टंकेभर) चित्रक पीपली शंखाहोली नीमकी जड निसोत हर्रेकीछाल, कपीला

(येसब एक एक टकेभर) और ६ टकेभर थूहरका दूध इन सब का चूर्ण १ सेरभर घी ५ सेर पानी में डाल कर औटाओ रसादिक जलकर घृत मात्र रह जाने पर छान कर जितने बिरेचन करना उतनी ही बूंद खिलाओ ता प्रतिबूंद पर १ विरेचन होकर उदररोग शोथ भगंदार और गुल्म ये सब दूरहों इसे बिंदुघृतकहते हैं यह वैद्य विनाद में लिखा है ।

जलोदरयत्न १—नीलाथूथा गंधक पीपल और हरेंकी छालका चूर्ण थूहरके दूधमें ५ दिन और किरमालके गूदेके रसमें ५ दिन खरल करके उष्ण जलके साथ नित्य १ मासा सेवन कराओतो जलोदर नाशहो इस के ऊपर चांवल और इमलीके रसका पथ्य देनाचाहियेइसेउदरारिरस कहतेहैं यहयोगतरंगिणी में लिखा है ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे मेदोरोगकार्श्यरोगोदर रोग निरूपणं नाम सप्तविंशतितमस्तरंग ॥ २७ ॥

शोथ, अंडवृद्धि, वर्ध्म,

शोथस्य वृद्धिरोगस्य वर्ध्मरोगस्य च क्रमात् ।
वसुपक्षेतरगेऽस्मिन् कथ्यते रुक्प्रतिक्रिया ॥ १ ॥

भापार्थः—अब हम इस अट्ठाईसवें तरंग में शोथ अंडवृद्धि और वर्ध्मरोगोंकी चिकित्सा यथाक्रम से लिखतेहैं ।

वातशोथयत्न१—सोंठ साठीकी जड, अरंड की छाल, पीपली पीपलामूल चव्य चित्रक इनका क्वाथ पिलाओ तो बादीसूजन नाशहो ।

पित्तशोथयत्न१—पटोल त्रिफला नीमकीछाल और दारुहलदी के क्वाथ में गुड डालकर पिलाओतो पितशोथतृषाज्वर नाशहो ।

कफशोथयत्न१—काली मकोई के रसमें साठीकीजड पीस लगाओ तो कफकी सूजन नष्ट हो ।

सन्निपातशोथयत्न१-पीपल या हर्रेको थूहरक दूधमें १ दिन भिगोकर सुखालो और महीन पीसकर २ टंक नित्य १० दिन तक सेवन कराओ तो सन्निपात शोथ दूर हो।

भल्लातकशोथयत्न१-तिल्ली और काली मिट्टीका भैंसकेदूध या भैंस के मक्खन में पीसकर लेप करो तो भिलावे की उदली हुई सूजन नाशहो।

२-मुलहटी, काला तिल्ली, भैंसका दूधऔर भैंसकामक्खन इन सबको पीसकर लेप करोतो भिलावे की सूजन नष्टहो।

३-सालई के पत्ते पीसकरलेपकरो तो भिलावे की सूजननष्टहो,

विषशोथयत्न१-विष शोथके यत्न जिस२ विषकी निर्वृत्तिको जो २ उपाय आगे विष प्रकरणमें लिखेंगे वेही जानो।

सामान्य शोथयत्न१-हर्रेकीछाल हल्दी भारंगी; गुरच; चित्रक दारुहलदी, सांठीकी जड और सोंठका क्वाथ पिलाओ तो पेट पैर और मुखकी सूजन नाशहो, इसे पथ्यादि क्वाथ कहते हैं।

२- विषखपरे की जड, देवदारु, और सोंठ का क्वाथ पिलाओ तो शोथमात्र नाश हो।

३-दारचूणी, निसोत, सोंठ, कालीमिर्च, पीपली, और चित्रक का क्वाथ पिलाओ तो शोथ नाशहो।

४-सोनामक्खी, विषखपरा, नीमकी छाल, गोमूत्रका क्वाथ पिलाओ तो शोथ नाश हो।

५-सांठकी जड़, दारुहल्दी,सहजनेकीजड़,सोंठ और सरसोंको कांजीके पानीमेंपीसके उष्ण करके लेप करो तो शोथनाश हो।

६-अदरक या पीपल या सोंठ या हर्रेकी छाल इनमें से किसी को गुडके साथ पीसकर २ टंकसे बढाते २ एक टकेभर तक बढ़ा,

कर १ मास तक खिलाओ तो शोथ, पीनस, कंठरोग, श्वास, कास अरुचि, जीर्णज्वर; संग्रहणी और सब विकार नष्ट होते हैं,

७-पीपली और सोंठके चूर्णमें समान गुड मिलाकर खिलाओ तो शोथ अजीर्ण और शूल ये सब दूरहों।

८-२ टके भर गुड, २ टके भर सोंठ, २ टकेभर पीपली, १ टके भर मंडूर, १ टके भर तिल्ली, इन सबका २ टंक चूर्ण नित्य खिलाओ तो शोथ नष्टहो।

९-सूखी मूली, सांठीकी जड, दारुहलदी, रास्ना और सोंठमें तेल पकाकर यह तेल मर्दन करो तो शूलयुक्तशोथ मात्र नाश हो, यह भाव प्रकाश में लिखे हैं।

१०-सांठीकी जड, दारुहलदी, गुरच, पाठ, सोंठ और गोखरू इनका २ टंक चूर्ण गोमूत्रके साथ पिलाओतो सब शरीरमें विस्तृत शोथ, उदररोग और व्रण मात्र नाशहो, यह पुनर्नवादि चूर्ण है.

११-सांठीकी जड, नीमकी छाल, पटोल, सोंठ, कुटकी गुरच दारुहलदी, हरैंकीछाल, इनकाक्वाथपिलाओ तो सर्वांगशोथ, कास उदररोग और पांडु रोग नाश हो, यह पुनर्नवादि क्वाथ है।

अंडकोश शोथ यत्न१-त्रिफला के क्वाथमें गोमूत्र डालकर पिलाओ तो अंडकोश (पोतों) की सूजन नष्टहो।

शोथ दाह यत्न १-बहेडे की मींजी जलमें पीसकर लेपकरो तो सूजनकी जलन नष्टहो।

वातांडवृद्धियत्न १-दूधमें अंडीका तेल डालकर पिलाओ तो १ मास में वायुकी अंडवृद्धि कानाश हो।

पित्तांडवृद्धियत्न १-गूगल, एरंडीका तेल, और गोमूत्र तीनों को मिलाकर पिलाओतो पित्तकी अंडवृद्धि कानाशहो।

२-रक्तचन्दन, महुआ, कमलगट्टा, कमलनाल और खशको

दूध में खरल करके पोतों पर लेप करो तो पित्तकी अँडवृद्धि, दाह और पीडा ये सब नाशहों।

कफांडवृद्धि यत्न १–सोंठ, कालीमिर्च, पीपली और त्रिफलाके क्वाथमें जवाखार और सेंधानोंन डालकर पिलाओ तो कफकी अंडवृद्धि शांत हो।

रक्तांडवृद्धियत्न१–जलौका (जोंक) लगाकर अंडकोस का रुधिर निकलवा दो तो रक्तकीअंडावृद्धि नाशहो।

२–विरेचन कराओ तो रक्तकी अंडवृद्धि नाशहो।

३–मिश्रीऔरमधुजलकेसाथपिलाओतोरक्तकीअंडवृद्धिनष्टहो।

४–शीतल द्रव्यों (ठंडे पदार्थों) के लेपसे रक्तज तथा पित्तज दोनों अंडवृद्धि नाशहो।

मेदांडवृद्धियत्न१–अंडकोषकी मेस (चर्बी) निकलवाडालो तो मेदकी अंडवृद्धि नाश हों।

२–तुलसी के पत्ते पीसके औटाकर सुहाते २ लेप करो तो मेदकी अंडवृद्धि नाशहो।

मूत्रांडवृद्धियत्न १––अंडकोषका जल निकलवादो तोमूत्रांड वृद्धि नष्टहो

२–मूत्राशय (पोते) की सींवनके पार्श्वोंके नीचेमहीन वस्त्रको बांधो तो मूत्रकी अंडवृद्धि नाश हो।

समस्तांडवृद्धियत्न १–कडवी तूम्बडी या रूखी वस्तुका सहता हुआ लेपकरो या उन्हींके उष्णजलसे सेकोतो अंडवृद्धिमात्रदूरहो

२–१५ टंक खैरका गोंद, १ टंक वच, १५ टंक सोंठ ८ पैसे भर गौका दूध और आठ टकेभर सालममिश्री इनकोगोदुग्धमें खरल करके ४ टंक नित्य पोतेपर लेपकरातो २१ दिनकेयत्नसें अंडवृद्धि शान्त हो ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं।

३–रास्ना, मुलहटी, गुरच अरंडकी जड, खरैंटी, किरमाले की गिरी गोखरू, पटोल और अडूसेके क्वाथमें अरडीका तेल डाल कर पिलाओ तो अण्डवृद्धि मात्र नष्ट हो।

४—हरेंकी, छाल चिरायता, धनियां ये सब पैसे पैसेभर, पौन पैसे भर लौंग. १ टकेभर सोनामक्खी इन सबके तुल्य मिश्री और मिश्रीके तुल्य मधु इन सबको ५ दिन खरल करके इसमें से नित्य २टंक खिलाओ तो अंडवृद्धि दूर हो यह वैद्यरहस्यमें लिखा है।

तलगत अंडकोषयत्न १–भेडी का घी कांसेकी थालीमें मसलो फिर इसीमें राल का चूर्ण डालकर फिर मथो, फिरशुद्धसिंगीसुहरा चूर्ण डालकर मसलो तीनों का एक जीव होजाने पर पत्ते पर इस पदार्थ का मर्दन करो तो उतरा हुआ पोता (गोसा,) यथास्थित होकर अच्छा होजावैगा यह भावप्रकाश में लिखा है।

बर्ध्मरोगयत्न १–हरेंकी छाल पीपल, और सेंधेनोंन को महीन पीसकर, अरंडीके तेल में भूंज (पका के २ टंक नित्य खिलाओतो वर्ध्म (बद) रोग बैठ जावै।

२—जीरा, झाऊबृक्षकी छाल, गेहूँ, कूट बेरके पत्ते ये सब कांजीके पानी में महीन पीसकर बदन पर लेप करो तो वद रोग दूर हो, यह भावप्रकाश में लिखा है।

३–तत्काल (तुरन्त) मरे हुए कौवेका अन्तरमूल उष्ण करके बद पर बांधो या लेप करो तो वह तत्काल दूर हो यह वैद्यरहस्यमें लिखा है।

४–कुन्दरूको भेडीके दूधमें पीसकर लेप करो तो बद रोगनष्टहो

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे शोथ वृद्धिवर्ध्मरोगाणां यत्न-निरूपणं नामाष्टाविंशतितमस्तरंगः ॥ २८ ॥

गलगंड गंडमाला, अपची, ग्रन्थि, अर्बुदरोग।

गलगंडादिरोगाणामर्बुदस्य यथाक्रमात।
नंदनेत्रमिते भंगे चिकित्सा लिख्यते मया॥ १॥

भाषार्थः—अब हम इस उन्नीसवें तरंगमें गलगंड गंडमाला, अपची ग्रन्थि और अर्बुद रोगों की चिकित्सा यथाक्रम से लिखतेहैं।

गलगंडरोगयत्न १—सरसों अलसी यव सनकेबीज मुगनेकेबीज और मूलीके बीज इनको छाछमें महीन पीस लेपकरो तो गलगंड गंडमाला(कंठमाला)और ग्रन्थि (गांठ) ये तीनों रोग नाशहों।

२—सरसों और जलकुम्भी (बूँटीविशेष) दोनोंकी भस्म तेलमें घिसके लेप करो तो गलगंड जाय।

३—शंखाहोली को जलमें पीस और भंगके समान छानकर १५ दिन पर्यन्त प्रभात समय पिलाओ और ऊपरसे गौका घी पिलाओ तो गलगंड नाश हो।

४—कुटकीको पीसकर रात्रिभर घिया तुरईमें भर रक्खो तदनंतर प्रातःकाल उसी घिया तुरईको पीसछानकर उसरस को ७ दिन पर्यंत पिलाओ तो गंड़माला जाय।

५—गुरच नीमकी छाल जड़, कपास (रुई) वृक्षकी छाल दोनों पीपली खरेंटी, देवदारु,इनके क्वाथको तेलमें पकाओ और यहतेल १५ दिन पर्यन्त नित्य पिलाओ तो गलगंड नाशहो यह अमृतादि तैल है।

६-यव, मूंग, पटोल,कटुवस्तु रूखा अन्न वमन और रुधिर निकालना ये सब गलगंड रोगके नष्ट करने के उपाय हैं।

७—५ टंक कचनारकी छाल, १ टंकभर सोंठ १टंक पीपल १टंक मिर्च, ५टंक हरैंकी छाल ५टंक बहेडेकी छाल ५टंक आंवले

६ टंकबरण्याकी छाल. १ टंक तज १ टंक पत्रज. १ टंक इलायची और इन सबके समान शुद्ध गूगल इन सबका चूर्ण ५ मासपर्यंत नित्य प्रभात जलके साथ सेवन कराओतो गलगंड अर्बुद,ग्रन्थि व्रण गुल्म, कुष्ठ भगंदर, ये सब रोग जुदे २ अनुपानोंसे नाश होंगे, ये यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

८—लाल एरंडकी जड़. पलासकी जड, दोनों को चांवलों के पानीमेंपीसकरलेप करौतोगलगंड नाशहो यहवैद्यरहस्यमेंलिखाहै।

गंडमाला (कंठमाला) रोगयत्न–जलकुम्भी सेंधानोंन और पीपली तीनोंको ठंडाई के समान पीसछानकर सोंठके चूर्णकेसाथ पिलाओ तो कंठमाला रोग जाय।

२—बरन्याकी जडका क्वाथ मधुके साथ पिलाओतो कंठमाला नाश हो।

३—वायविडंगकी जड़के क्वाथमें भंगरेका रस और मीठा तेल डालकर मंद मंद आंचसे पकाओ रस जलकर तेलमात्ररहजानेपर सिंदूर डालकर छानलो अब यह चक्रमर्दन तेल बनगया जो इस का लेप करौ तो कंठमाला नाश हो।

४—चिरसी (गुमची) का पंचांग जलमें पीसकर तेलके साथ पकाओ रस जलकर तेलमात्र रहजानेपर छानकर मर्दन करौतो कंठमाला नष्टहो,इसे गुंजादितैलकहतेहैं, ये सबयत्नभावप्रकाशमेंलिखेहैं।

५—किरमाले की जड चांवलोंके जलमें पीसकर लेप करौ तो कंठमाला नष्ट हो।

६—संभालुकीजड पानीमें पीसकर लेपकरौ तौ कंठमालानष्टहो।

७—सरसों और सूकरकी विष्ठाको खपरी (ठीकरी) में जलाकर कडुवे तेलमें खरल करो और रोगीके रोग स्थानपर लेप करोतो कंठमाला [गंडमाला] नष्ट हो ये यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

अपचीरोगयत्न१—सरसों,नीम के पत्ते और भिलावे को बकरीके मूत्रमें पीसकर लेप करोतो अपची रोग नाशहो।

२—रक्तचन्दन, हरेकीछाल,लाख. वच, और कुटकीको जलमें पीसकर तेल में पकाओ और इस तेल का मर्दन करोतो अपची रोग नाशहो इसे चंदनादि तेल कहते हैं।

३-सोंठ कालीमिर्च, वायविडंग; महुआ, सेंधानोंन, और देव दारुको जलमें पीसकर तेल में पकाओ पानी जल कर तेल मात्र रह जानेपर छानकर इस तेल की नासदो (सुंघाओ) तो अपची रोग नष्टहो इसे व्योषादितेल कहते हैं।

ग्रंथिरोगयत्न १—सज्जी मूलीका खार और शंखके चूर्णकोपानी में पीसकर लेप करोतो ग्रंथि और अर्बुद नाशहो।

२—व्रणरोगकी चिकित्सामें जात्यादिघृत वर्णन करेंगे वह घृत भी ग्रंथि और व्रण दोनोंको लाभकारी है।

अर्बुदरोगयत्न१—हलदी लोद, पतंग, धमासा और मैनासिल को मधुमें पीसकर लेप करो तो मेदोर्बुदरोग जाय।

२—मूलीका खार. हलदी और शंखके चूर्णको महीनपीसकर लेप करो तो अर्बुद रोग नाशहो।

३—कूट.नोन और बडका दूध इनको महीन पीसकर लेपकरो और ऊपर से बडकापत्ता बांधो तो७दिनमेंही अर्बुद रोग जाय।

४-सहजनेकी जड और बीज,सरसों,तुलसीपत्र, जौ कनेरकी कीछाल और इन्द्रयवको छाछमें महीन पीसकर लेपकरोतो अर्बुद रोग नाशहो ये यत्नभावप्रकाश में लिखेहैं।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे गलगंडमालापच्यर्बुद ग्रंथ्यादि यत्न निरूपणं नाम कोतिशस्तरंग. ॥ ३६ ॥

श्लीपद, विद्रधि.

श्लीपदस्य विद्रधेश्च ह्यामस्य यथाक्रमात् ॥
विंशद्रामेतरंगेऽस्मिन चिकित्सा कथ्यतेमया ॥

भाषार्थः—अब हम इस तीसवें तरंग में श्लीपद और विद्रधि रोगों की चिकित्सा यथाक्रमसे वर्णन करते हैं ।

श्लीपदरोगयत्न १ लंघन, लेपन, स्वदेन, विरेचन, रुधिरनिष्कासन, और उष्णवस्तु सेवन ये प्रत्यकेकर्मश्लीपदरोगपर लाभकारी हैं

२—सरसों,मुगनेकीजड,सोंठ देवदारु गोमूत्रमें पीसकर लेपकरो तो श्लीपदरोग नाशहो ।

३—सांठकी जडसोंठ और सरसों कांकिजामे पीसकर लेपकरो तो श्लीपद रोग शांति पावेगा ।

४—धतूरा, एरंड, सम्भालु, मुगना इनकीजड और सरसोंको जलमें महीन पीसकर लेप करोतो श्लीपद नाशहो ।

५—सहदेई (महाबला) को ताडफलके रसमें पीसकरलेपकरो तो श्लीपद जाय ।

६—शाखोटक (सहोर) पेडके बक्कलका काथ गोमूत्रकेसाथ पिलाओ तो श्लीपद रोग जाय ।

७—हलदी और गुडकोमहीन पीसकर गोमूत्रकेसाथ पिलाओ तो श्लीपद दाह और कुष्ठ तीनों जाय ।

८—सांठीकी जड,त्रिफला और पीपली इनका दो टंकमहीन चूर्ण मधुके साथ चटाओ तो बहुत दिनोंकाभी श्लीपद जाय ।

९—बडे हरेंकी चूर्णमें अरंडका तेल और गोमूत्र मिलाकर १५ दिन पर्यन्त पिलाओ तो श्लीपद नाशहो ये सबयत्न भावप्रकाश में लिखेहैं ।

१०—वृषायत्त सोंठ, पीपली, कालीमिर्च वायविडंग को जल में पीस कर तेलमें मंद आंच से पकाओ और तेलमात्र रहजानेपर छान कर मर्दन करोतो श्लीपद रोग जाय।

११—धतूरे के बीज क्रमशः एक से बीस तक बढ़ाते जाओ इन्हें खाकर ऊपर से शीतल जल पिलाओ तो श्लीपद जाय ये यत्न वैद्य रहस्य में लिखे हैं।

१२—कसोंधी (एक जात का दरख्त है) की दो टंक जड गोघृत के साथ पिलाओ तो श्लीपद रोग जाय।

१३—पीपली त्रिफलाऔर देवदारु का दो टंक चूर्ण नित्यकांजी के जल के साथ सेवन कराओ तो श्लीपद अजीर्ण बात रोग और प्लीहा ये सब दूर होकर क्षुधावृद्धि होगी इसे पीपलादिचूर्ण कहते हैं यह वृन्द में लिखा है।

१४—मजीठ महुवा रास्ना जाल (पीलू वृक्ष विशेष मारवाड में बहुत होता है) और सांठीकी जडको कांजीमें महीन पीसलेपकरो तो पित्त का श्लीपद जाय।

१५—अंगूठों के ऊपर की नसों का रक्त निकालदो तो पित्तका श्लीपद जाय।

विद्रधि रोगयत्न १—एरण्ड की जड के क्वाथ में तेल या घृत पका कर उस से सहता हुआ सेक करोतो बादी की विद्रधि जाय।

२—विरेचन कराओ तो पित्त की विद्रधि जाय।

३—असगंध खश महुवा रक्त चन्दनको दूध में महीनपीसकरघी मिलाओ और उष्ण कर के लेप करो तो पित्त विद्रधि जाय।

४—ईट, बालू लोहे का मैल और गोबर को महीन पीसकर गोमूत्र में पकाओ और सहता सहता हुआ सेक करो तो कफ की विद्रधि नाश हो।

५-जौंक लगाकर रुधिर निकलवा दो तो सबै विद्रधि जाय।

६-जब तक विद्रधि पकन जावे तबतक उसका यत्नव्रण शोथ सदृश करो ।

७-यव, गेहूं और मूग तीनोंके आटे को घृत में पकाकर लेप करो तो बिना पकी विद्रधि भी अच्छी हो जावे ।

८-दशमूलके क्वाथमें तेलसा घी मिलाकर व्रणको धोओतो विद्रधि का व्रण और सूजन दोनों नाश हो ।

९-रक्तचंदन, मजीठ, हल्दी, महुआ और गेरू को दूधमें पका कर लेप करोतो रुधिर और चोट लगने की दोनोंविद्रधि जांय।

१०-काला जीरा, इन्द्रायणकी जड और तुरई इनका दो टंक चूर्णका क्वाथबनाकर पिलाओ तो कोठकी विद्रधिका नाश हो।

११-सहजने की जड के रसमें मधु मिला कर पिलाओ तो शरीर भीतर (अन्तर) की विद्रधिका नाश हो ।

१२-सुंनगेके क्वाथमें सेंधानोन और हींग डालकर प्रातःकाल ही पिलाओ तो अन्तर (शरीर के भीतर की) विद्रधि जाय । ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे शली पद विद्रधिरोग यत्न निरूपणं नाम त्रिंशत्तरंगः ॥ ३० ॥

व्रणशोथ, व्रणरोग, अग्निदग्ध ।

व्रणशोथस्य व्रणस्याग्निदग्धस्य यथाक्रमात् ।
ज्याकुशानीतरंगेऽस्मिन कथ्यते रुक्प्रतिक्रिया ॥ १ ॥

भाषार्थः-अब हम इस इकत्तीसवें तरंग में व्रणशोथ व्रणरोग अग्निदग्धकी चिकित्सा यथाक्रम से कहते हैं ।

शरीरिकव्रणयत्न १-१लेप, २ औषधों के उष्ण जलसे धोना

३ बांसकी लकडीपर अंगूठा मलकर उस अंगूठेसे व्रणपरपसीना निकालना ४ जलौका आदिकर्मसेरक्त निकालना,५ औषधों की पट्टी बांधकर व्रणपर पसीनानिकालना ६व्रणको पकाना ७ शस्त्र क्रियासे चीरना ८ अंगूठेसे दबाकर पीव निकालना,९ व्रणका शोधन करना,१० व्रणमें अंकूर लाना ११ औरअंतमें त्वचाके वर्ण सदृश वर्ण कर देना ये ११ उपाय यथाक्रम करनेसे व्रणनष्ट होजावेगा चरक और सुश्रुतग्रंथमें इसी प्रकारके ६० उपायव्रण रोगके लिये लिखेहैं।

बातजव्रणशोथलेप १—बिजौरेकी जड़,कूड,देवदारु,सोंठ,रास्ना और अरणीको पानीमें पीसलो और उष्ण करके सहता २ लेप करो तो बातज व्रणशोथकी सूजन नाशहो, जैसे जल अग्निको बुझाता है तैसे यह लेप इसको मिटाता है।

पित्तजव्रणशोथ लेप १—महुवा रक्तचंदन दूर्वा, आंवले, कमलकी नाल खश,नेत्रवाला और पद्माखको ठंडेजलमें पीसकरलेपकरोतो पित्तव्रणकी सूजन उतर जायगी।

२—बडकी जड,गूगलबेरके बक्कल कोजलमें पीसकर इनसे दशमांश घृत डालकर लेपकरो तो पित्तके व्रणकी सूजनजाय।

कफजव्रणशोथ लेप १—नगद (नागदमनी)वावची मेढासिंगी मजीठ राल असगंध और शतावरी सबको महीन पीस औरउष्ण करके सहता हुआ लेप करो तो कफजव्रणका शोथनाश हो।

पीपली खली (तिल्लो अलसी आदि तैलिक अन्नोंका निस्तैलभाग) सहजनेके बक्कल नदी का रेत (बालू) औहरें की छालको गोमूत्र में पीसकर उष्णलेप करोतो कफके व्रणकी सूजन जाय।

१.लेप मात्र करना शोथकाल में वर्जित है।

सन्निपातजव्रण शोथलेप १—इस पर वैद्य अपनी बुद्धिसे विचार पूर्वक लेप करे ।

रक्तजव्रणशोथ लेप १—इसपर पित्तजव्रण शोथके समान लेपकरे

समस्तव्रणमात्रलेप १—साठीकीजड देवदारु हलदी सोंठ भुगने का बक्कल और सरसोंको खटाईमें पीसकर सहता हुआ उष्ण लेप करो तो वातजव्रण शोथकी सूजन नाशहो ।

२—दशमूल खोंटी रास्ना, असगंध, खीप अरंडकीजड, या फल भुगना निर्गुंडी सांठी पीपली सेंधानोन भुगनाके बीज, रुई के बीज (विनौले) अलसी कुलथी तिल्ली, जौ, सरसों, मूली के बीज, सोंफ नींमके पत्ते, नागरवेलके पत्ते गुलाबांस (हवास) के पत्ते, इनको उष्ण करके बांधो या क्वाथ बनाकर शोथको धोओ तो बादी के व्रणकी सूजन उतर जावेगी ।

३—तेल या मांसरस या घृत या कांजीको उष्ण कर सहते २ व्रणशोथको धोओतो बादीके व्रणशोथकी सूजन उतर जावेगी

पित्तजव्रणशोथ मार्जन १—शीतल औषधोंके क्वाथ या दूध या घृत, या शक्कर के पानी या सांठेके रस से धोओतो पित्तके व्रणकी सूजन जाय ।

कफजव्रणशोथ मार्जन १—कफ नाशक औषधोंके उष्ण क्वाथ या तेल या गोमूत्रयाखारके जलसे धोओ तो कफके व्रणकी सूजन जाय ।

सन्निपातज व्रणशोथ मार्जन १—सन्निपात नाशक औषधोंके उष्ण सहतेहुए क्वाथसे धोओतो सन्निपातके व्रणकाशोथजाय ।

रक्तजव्रणशोथ मार्जन १—इसपर पित्तजव्रणशोथ के समान उपायकरो ।

व्रणशोथमाङ्गमार्जन १-हरैंके वक्कलाको पानीमें औटाकरशोथ पर सहती सहती धारा छोडों तो व्रणकी सूजन मात्र दूरहो।

समस्तव्रणशोथस्वेदन १-कठोर व्रणपर अंगूठेसे या बांसकी स्वच्छ चिकनी लकडीसे शनैःशनैःघिसकर (मसलकर) पसीना निकालो तो वह ढीला होकर अच्छा हो जावैगा।

व्रणशोथरक्तनिष्कासनविधि १-जिस व्रणका वर्णविपर्यय हो या कालाहो और पीडा अधिक हो या किसी विषैले जीव के काटने से शोथ होगया हो उसका जलौका (जौंक) या छुरे (रतुरा) से रुधिर निकलवा दो तो वह तुरंत अच्छा होगा।

व्रणशोथपाकविधि १-जो व्रण लेप आदि पूर्वोक्त यत्नों से न पके तो सहजनेकी जड, और फल, तिल्ली सरसों अलसीअव गेंहू नीमके पत्ते या मदिरा निकालनेका जावा इत्यादिको पकाकर व्रणपर बांधो तो व्रण पक जावेगा।

पक्वव्रणचीरनविधि -१जिस व्रणमें पीव भर गयाहो उसेशस्त्र क्रियामें कुशल ऐसा वैद्य शस्त्र (नश्तर) से चीरकर उसका पीव निकाल देवे और पीव स्वच्छ हो जानेपर मरहमकी पट्टी बांध देवे तो व्रण अच्छा होजावेगा।

शस्त्रक्रियावर्णन-बालक वृद्ध क्षीण पुरुष भयभीत शस्त्रक्रिया (चीरफाड) कोन सहनवाला स्त्री और जिसे मर्म स्थान में व्रण हुआ हो ऐसे रोगीका व्रण मत चीरो परन्तु नीचे लिखी औष, धियोंसे पीव निकालदो।

व्रणभेदन औषध १—करञ्ज (करंज) की जड चित्रक दात्यू णी, भिलावें कनेर और कबूतरकी विष्टा इनमेंसे किसी एकका भी लेप करोतो अवश्यही पक्क व्रण फूटकर पीव निकल जावे

२-खारानोन जवाखार सज्जी और आपामार्ग ऊंगा, औंधा

क्षार) का क्षार इनमेंसे किसी एकका लेप करो तो व्रण फूटकर पीव बह जावेगी ।

२-यदि व्रण अति कठोर हो तो उसपर हाथीका दांत पानी में घिसकर लगादो तो उस व्रणका शोथ उतरकर फूटके पीव बह जावेगा।

व्रणपीडनविधि १-मर्म स्थानके व्रणमें पीव उत्पन्न होगई होतो उसे मत चीरो किन्तु यव गेंहू और उर्दको पानी में पीस और पकाके उस व्रणपर बांधदो तो उसमेंसे पीव बहकर हलका हो जावेगा, तब उसपर मलहम लगाकर आरोग्य करलो ।

व्रणशोधनविधि १-जो कच्चा व्रण होतो उसे पटोलके पत्ते या नीमके पत्तोंको पानी में औटाकर उस पनीसे धोओ तो व्रण अच्छाहो जावेगा ।

२ कच्चे व्रणको गूलरके वक्कलके क्वाथसे धोओतो अच्छाहोगा

३ कच्चेव्रणको किरमालेकेवक्कलकेक्वाथसेधोओतोअच्छाहोगा।

४-कच्चे व्रणको पीपल वृक्ष गूलर वड और बेल इन चारों के वक्कलके क्वाथसे धोओ तो व्रणकी सूजन और उपदंश (गर्मी) दोनों दूरहों ।

५-तिल सेंधानोंन मुलहटी नीमके पत्ते दोनों हलदी निसोत और नागरमोथा इन सबको जलमें पीसकर व्रणपर लेप करो तो व्रण पककर उसमेंका पीव निकल जावेगा ।

दुष्टव्रणयत्न १-नीमके पत्ते तिल दात्यूणी निसोत औरसेंधे नोंनको पीसकर लेप करो तो दुष्टव्रण अच्छा होजायगा ।

२-नीमके पत्ते जलमें औटाकर व्रणपर बांधो तो दुष्टव्रणदूरहो

३-हर्रे निसोत सेंधानोन दात्यूणी और कलहारी की जडको मधुमें पीसकर इसकी बत्ती व्रणमें रखादो तो दुष्टव्रणअच्छाहो

४-जिस व्रणका मुँह छोटा हो उस में नीमके पत्तोंके रसकी बत्ती बनाकर चलाओ तो व्रण कुशल होगा।

५-नीमके पत्ते घी, मधु दारुहलदी और मुलहटीकी बत्ती बना कर चलाओ तो व्रण दूर हो।

६-तिल्लीको औटाकर बत्ती बनाके व्रण में चलाओ तो व्रण अच्छा होगा।

व्रणभरणयत्न १०-नीमके पत्ते जलमें चुड़ोकर उस जलसे व्रणको धोओ और मधुयुक्त तेलका फुहा (रुई) उसपर बांधो तो व्रण भरकर अच्छा होजावेगा।

२ असगंध, लोद, कायफल, मुलहटी, मजीठ और धावडेकेफूल इन सबको पीसकर व्रण पर बांधो तो व्रण भरकर अच्छा होजावेगा।

व्रणदाह तथा शूल यत्न ०-जौका आटा, मधु, तेल घी इनसबको इकट्ठे तपाकर व्रणपर लेप करो तो दाह और शूल व्रणसे दूरहों।

व्रणकृमियत्न०-कणगजकी जड, नीमकी छाल और निर्गुंडीको पीसकर लेप करो तो व्रणकी कृमि निवृत्ति होगी।

२-लहसन पीसकर लेप करो तो व्रणकी कृमि नष्ट होगी।

३-हींग औरनीमकी छालको पीसकर लेप करो तो व्रणकी कृमि नाश होगी।

कण्डूकृमियत्न१० नीमके पत्ते, वच, हींग, सरसों, घी, नोंनइन का चूर्ण एकत्र कर धीमें सान अग्निपर धूनी दो तो व्रणपर छत पड़नेके कारण जो खुजाल होकर कृमि पड़जाती हैं सो कृमि और व्रणकी पीडा दूर होगी ये सर्व यत्न भावप्रकाश में हैं।

व्रणपूरणयत्न १०-२ पैसेभर कडवा तेलऔर ८ पैसे भर पानी कासे (फूल) की थालीमें रख दिनभर हाथसे मसलो तदनंतर

इसमें ५ पैसेभर राल, १० टके भर खैरसार, ५ टंक कूट २ टंक नीला थूथा, १० टंक गंधाविरोजा और १ टंक कालीमिर्च इन सब का कपडछान किया चूर्ण डालकर पुनः हाथसे मसलो अब जो इस मलहमकी पट्टी व्रणपर लगाओ तो व्रण तत्काल भर जावेगा ।

आगन्तुकव्रणयत्न १–तलवार आदि नाना प्रकारकी धार के घावसे किसी मनुष्यकी त्वचाका कोई भाग फटजावे तो चतुर वैद्यको चाहिये कि उस घावको रेशमके पक्के धागेसे टांके लगा कर रोगीको निर्वातस्थानमें रक्खे, तदनन्तर गेहूँ के मैदा में जल और घी डालके पकावे और पानी जलकर घृतयुक्त तप्त मैदा रहजाने पर उस टिकिया से वह टांके लगा हुआ घाव सहता सहता सेके तो वह घाव अच्छा होजावेगा ॥

२–कुटकी, मोंग हल्दी, मेंहदी मुलहटी, करंज के फल, पत्ते और जड पटोल चमेलीके पत्ते और नीमके पत्ते इनको घी में डालकर पकाओ जब ये सूखकर घृत मात्र रहजावे तब उस घृतसे व्रणको सेको तो व्रण तत्क्षण कुशल होजावेगा, ये सब यत्न वैद्यरत्न में लिखे हैं ।

३–शस्त्रादिके प्रहार से यदि अधिक रुधिर निकलजाकर वायु कुपित होनेमें अधिक पीडा होने लगे हो उक्त प्रकारके रोगीको घी पिलाओ जिससे वात शमन होकर पीडा दूर हो ।

४–यदि खड्गादि से गात्र छिन्न होजावे तो उस घाव में गँगेरनकी जडका रस भरदो तो वह घाव भरकर शीघ्रही अच्छा होगा

५–शस्त्र प्रहार वाले रोगीको सर्व सीतल यत्न लाभदायक ही है,

६–यदि शस्त्र प्रहार से आमाशय में रुधिर एकत्र होजावे तो उसे वमनद्वारा तथा पक्वाशयमें रुधिर जमगया हो तो विरेचन द्वारा रुधिर निकालकर रोगीको आरोग्य करदो ॥

७-बासकी छाल, अरंडकी छाल, गोखरू, पाषाणभेद इन के क्वाथमें सिकी हींग और सेंधानोन डालकर पिलाओ तो कोठे का जमा हुआ रुधिर निकलकर वह रोगी आरोग्य होजावेगा।

८-आगंतुक व्रणरोगीको यव, कुल्थी, सेंधानोन और सूखा पदार्थ खाना ये लाभ जनक होंगे।

९-चमेली के पत्ते नीम के पत्ते, पटोल,कुटकी,दारुहलदी, गौरीसर, मजीठ, मोम, हरेकी छाल,तज हलदी,नीला थूथा, मधु करंजबीज इन सबके समान गौका घी और सब औषधियों से अष्ट गुणा जल ये सब पदार्थ एकत्र कर मंद मंद आंचसे पकाओ, फिर रस जलकर घृत मात्र रह जाने पर छानकर इसकी बत्ती तथा लेप व्रणमें लगाओ तो शारीरिक तथा आगंतुक गम्भीर व्रणभी भर जावेगा इसे जात्यादि घृत कहतेहैं।

१०-चमेली के पत्ते,नीमके पत्ते, पटोलके पत्ते, किरमालेके पत्ते महुआ, मोम कूट,दारुहलदी, कुटकी, मजीठ, पद्माख हरेकीछाल लोद, तज, कमलगट्टे, गौरीसर, नीलाथूथा और किरमाले का गूदा इनके क्वाथमें तिलका तेल पकाकर छानलो जो इस तेलकी बत्ती या फुरेरी व्रण पर लगाओ तो वह व्रण तत्क्षण भर कर अच्छा हो जावेगा, इसे जात्यादितैल कहतेहैं।

११-चित्रक लहसन,हींग, सरपेख (यह गौडदेशमें प्रसिद्धहोहै) कलिहारीकी जड,सिंदूर,अतीस और कूट इन सबके चूर्णको कडुवे तेलके साथ जलमें डालकर पकाओ जब पानी जलकर तेल मात्र रहजावे तब छानकर रुई आदि द्वारा व्रणपर लगाओ तो आगंतुक व्रण, दुष्टव्रण और नाडीव्रण इन सबका समूल नाश कर देवेगा इसे विपरीतमल्ल तेल कहतेहैं।

१२-गुरच,पटोलकी जड,त्रिफला बायविडंग और इनके समान

समान गूगल इन सबका २ टंक बारीक चूर्ण नित्य जलके साथ सेवन कराओ तो व्रणमात्र,वातरक्त गुल्मउदररोग ये सब दूर हों इसे अमृतादिगूगल कहतेहैं. ये सब यत्न भाव प्रकाशमें लिखेहैं ।

प्लुष्टदग्धयत्न १-अग्निसे जलेहुए को अग्निसेही तपाओतो अच्छा होगा ।

२-जले स्थानपर अगरादि उष्ण औषधियों का लेप करो तो जला हुआ अवयव अच्छा हो जायगा ।

दुर्दग्धयत्न १-औषधियोंका बनाहुआ संशोधित तथा साधारण घृतभी तपाकर ठंडा होनेपरलगाओ तोदुर्दग्ध अच्छा होजावेगा

सम्यग्दग्धयत्न १-तबाखीर. बडकीजड, रक्तचंदन, सोनागेरू,गुरच इन सबको पीसकर घीकेसाथ लेपकरो तो सम्यग्दग्ध कुशलहो,

अतिदग्धयत्न १-बिगडे हुए मांसको निकालकर सांठी चांवल और तेंदूको घी में पीसकर लेप करो और ऊपरसे गुरच के पत्ते बांधो तो अतिदग्ध कुशल हो ।

२-मोम,महुआ,लोद,राल,मजीठ, रक्तचंदन औरमूर्वाको घीमें पकाकर घीका लेप करो तो अतिदग्धकी जलन मिटकर नवीन मांसांकुर उत्पन्न होगा, इसे चित्रकादिघृत कहतेहैं ।

३-पटोलके पचांगके क्वाथमें कडुआ तेल पकाकर क्वाथ जलके तेल मात्र रह जानेपर छानलो जो इसका लेप करो तो अग्निदग्धका दाह झरना और फटना ये सब शमन होजावेंगे,ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं ।

४-पुराना कलीका चूना दहीके पानीमेंपीसकर जलेपर लगाओ तो अग्निदग्ध तथा तैलदग्धका फफोला दोनों शीतलपड़जावेंगे

५-जौ को जलाकर तिलके तेलके संयोग से लेप करो तो जला हुआ अच्छा होगा ।

६—सिका जीरा मोम और राल घीमें पीसकर लगाओ तो जला हुआ अच्छाहोगा ।

तैलदग्धयत्न १—पावभर तिलके तेलमें पुराना कलीका २ पैसे भर चूना १ प्रहरपर्यन्त हाथ से मलकर एक जीव कर लो और रुईसे जले स्थानपर लगाओ तो तत्काल अच्छा होगा (चूना पानी में भीगा हुआ लेना)

व्रणग्रंथियत्न १—कथीला वायाविडंग, तज और दारुहल दीको जलमें महीन पीसकर तिल्लीके तेलके साथ मंद आंचसे पकाओ पानी जलकर तेलमात्र रह जानेपर छानकर इस तेल का लेप करो तो व्रणग्रंथि नष्टहो ।

इतिश्री अमृतसागरे चिकित्साखण्डे व्रणशोथव्रणग्रन्थिदग्धव्रणप्रभृत्य रोगाणां चिकित्सा निरूपण नामैकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

❀ भग्नरोग नाडीव्रणरोग ❀

चिकित्सा भग्नरोगस्य तथा नाडीव्रणस्यहि ॥
नेत्ररामामिते भंगे लिख्यते च यथाक्रमात् ॥ १ ॥

भावार्थः—अब हम इस १२ वें तरंग में भग्नरोग और नाडी व्रणकी चिकित्सा यथाक्रमसे लिखतेहैं ।

जो चोट आदि लगनेसे हड्डी जोडपरसे उखड जावे या टूट जावे तो उसपर वहीं तुरंत गीले कपडेकी पट्टी बांधकर ऊपरसे ठण्डा पानी डालो किसी जर्राह से इलाज कराओ इसे विकार पर सेक करो या पट्टी बांधो सो सब शीतल उपाय करो. पट्टी बहुत कडी खींचकर मत बांधो क्योंकि ऐसा करने से त्वचापर शोथ होकर चमडी पक जावेगी. इसलिये साधारण दशाकी ढीली पाटी बांधो हड्डी यथार्थ मजकर लाभकारी हो ।

भग्नरोगयत्न१—भग्नस्थानको शोधकर उसपर गीली ओषधियां दर्भ (डाव एक प्रकार की घास) से कसकर बाँधो या कीपडलगाओ तो हड्डी अच्छी हो जावेगी ।

२—मजीठ और महुएको ठंडे पानीमें पीसकर अस्थिभंगस्थान पर लगाओ तो वह अच्छा होगा ।

३—१०० बार पानीसे धोये हुए घीमें सांठी चांवल पीसकर लेप करो तो अस्थिभंग अच्छा होगा ।

४—बेरीकी लाख पीपलकी लाख गेहूं और काहूके वक्कलको घीमें पीसकर दूधके साथ ५ टंक नित्य सेवन कराओ तो अस्थि भंग अच्छा हो ।

५—लाख काहूके वक्कल असगंध खरैटी और गूगल इनका २ टंक चूर्ण दूधके साथ सेवन कराओ तो अस्थिभंग दूरहो ।

६—गेहूंको अधजले करके समान फिटकरीके साथ पीस लो और यह ५ टंक चूर्ण १० टंक मधुके साथ ७ दिन चटाओ तो अस्थिभंग दूरहो ।

७—आंवले मैदालकडी और तिलको शीतल जलमें पीसकर चोटपर लेप करो तो अस्थिभंग कुशलहो ।

८—उत्तम ममाई (जोकि मनुष्यके मांससे बनतीहै) खिलाओ तो उखडी हुई या टूटी हुई हड्डी अच्छीहो ।

९—१ टंक लाखका चूर्ण दूधके साथ १५ दिन पर्यंत पिलाओ तो टूटी हुई हड्डी जुड जावेगी (लाख पीपल वृक्ष या बेरीकीलेना)

१०—दो या तीन रत्ती पीली कौडीका चूर्ण उष्ण दूधके साथ पिलाओ तो टूटी हड्डी जुड जावेगी ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं ।

११-बबूलके वक्कल, त्रिफला, सोंठ, मिर्च, पीपली और इन सबके समान गुगलका २ टंक चूर्ण १५ दिनतक दूधके साथ पिलाओ तो अस्थिभंग दूर होकर वज्रसा दृढ़ होजावेगा।

१२-बबूलके ववकलका २ टंक चूर्ण एक मास पर्यन्त मधुकेसाथ चटाओ तो शरीर वज्रसा होजावे, यह योगतरंगिणीमें लिखाहै।

१३-मेथी मैदालकड़ी, सोंठ और आंवले को गोमूत्रमें महीन पीसकर चोटपर लेपलगाओ तो मुग्दरआदिकी चोटभी जाय।

१४-मांस या मांसरस (शोर्बा, दूध, घी और सर्व पौष्टिक औषधियां ये सब पदार्थ भग्नरोगवाले को सेवन योग्य है।

१५-नमक,कटु,वस्तु खार खटाई मैथुन, श्रम, घाममें भ्रमण और रूखा अन्न भक्षण ये इस रोगीको सेवन अयोग्य है।

विशेषतः-बालक और तरुणको अस्थिभंग होतो शीघ्रअच्छा हो, परन्तु वृद्ध तथा रोगी को लगीहुई चोट शीघ्र अच्छीनहोगी

नाडीव्रणरोगयत्न १छोटेमुखकी नाडीव्रण जिसके मुखसे सर्वदा पीव बहती रहती हो उसके मुखपर थूहर या आकके दूधमें भीगी हुई दारुहलदीको घिसकर बत्ती बनाके धरोतो यहव्रण भरकर अच्छा होगा।

२-किरवारेकी जड,हलदी और मजीठको मधुमें पीसकर बत्ती बनाकर व्रणके मुखमें चलाओ तो नाडी वृण अच्छा हो।

३-चमेलीके पत्तोंका रस, आंकडेकी जड,किरमालेकी जड, दारुचूणी, सेंधानोंन, सोंचरनोंन सांभरनोंन और जवाखार इनको महीन पीसकर छोटेमुखवाले व्रणके मुखपर युक्तिसे धरोतो वहव्रण अच्छा होजावे।

४-जात्यादि घृत तथा जात्यादि तैलसे भीनाडीव्रणअच्छाहोगा

५-त्रिफला सोंठ, कालीमिर्च, पीपल और इनसब के समानशुद्ध

गूगलका २ टंक चूर्ण नित्य शीतलजलके साथ १४वसे ४९ दिन पर्यन्त सेवन कराओ तो सर्व प्रकारके नाडीव्रज नाशहों ।

६-गूगल और सिंदूरको महीन पीसकर व्रणमें युक्तिसे भरोतो नाडव्रिण अच्छा हो, ये सर्व यत्न भावप्रकाश में लिखेहैं

७-मधु या नमक या तैलको बत्तीचलाओतो दुष्टव्रण अच्छाहो

८—सज्जी, जवाखार कपेला;महँदी,सुहागा,श्वेत खैरसारको गोघृत में १ दिन खरल करके व्रणमें भरोतो व्रणका शोथ और कृमि नष्ट होकर व्रणभर आवेगा यह स्वर्जादिघृत चक्रदत्तमेंलिखाहै

९-सम्भालूके पत्तोंके रसमें पकाये हुए तेलकीबत्ती व्रणमेंदो तो व्रण अच्छाहो यह निर्गुडीतैल वृंदमें लिखा है ।

१०-१ पैसेभर राल, १ पैसेभर सफेदा, २ पैसेभर, श्वेतमोम, १पैसेभरमुर्दासिंगी इनमेंसे मोमको ७पैसेभर उष्ण घीमें पिघलाकर शुद्ध करलो और विशेषऔषधोंका महीनचूर्णउसमें मिलाकरकांसे कीथालीमें जलकेसाथ १०८बार हाथसे मसल मसलकर धोओऔर इसको व्रण में भरो तो व्रण अच्छाहो इसे श्वेतमलहम कहतेहैं ।

११—शुद्ध पारा, शुद्ध आंवलासार गंधक,इन दोनोंके समान मुर्दासिंगी,इन तीनोंके समान कपैला कुछ नीलाथोथा इन सबसे चौगुना घी और कुछ नीमके पत्तों का रस इन सबको २ दिन तक खरल करके व्रणपर लगाओ तो व्रणमात्र अच्छे हों यह वैद्यरहस्य में लिखा है ।

१२—मस्तंगीकी गोंद रूमीमस्तंगी मैंढल,नीलाथोथा सज्जी सुहागा,सिंदूर कपेला, मुर्दासिंगी गूगल, कालीमिर्च, सोनागेरू, इलायची,गंधाबिरोजा,सफेदा हींगुल,और शुद्ध गंधक, इनका चूर्ण करो और इनमेंसे किसी१ के बराबर मोमको गोघृतमें पिघ

लाकर शुद्ध करो तदनन्तर उक्त चूर्णमें मिलाकर दो दिन पर्यंत खरल करके व्रणमें भरोतो शारीरिक तथा आगन्तुक दुष्टव्रणप्रभृति सब अच्छे होवेंगे।

१३—नीला थोथा कपेला मुर्दासिंगी श्वेत खेरसार सिंदूर मोम हिंगुल, केशर और इन सबके समान गोघृत लेकर प्रथम गोघृत में नीलाथोथा और मोमपिघलाओ फिर बचीहुई औषधोंका चूर्णडाल कर उतारलो तदनंतर ठंडा होजानेपर काँसेकी थालीमें जलकेसाथ १ दिन पर्यंत मथन करके व्रणपर लगाओ तो व्रण मात्र तथा व्रणका घाव भरके अच्छाहो. ये वैद्यकुतूहल में लिखेहैं।

१४—२ पैसेभर हिंगुल १ पैसेभर मुर्दासिंगी २ पैसेभर सज्जी प्रथम १ पैसेभर नीमके पत्तोंकी टिकियाको गोघृतमें पकाकर उसी में २ पैसेभर श्वेत मोम पिघलाओ और शेष औषधों का चूर्ण इसीमें डालकर व्रण में भरोतो व्रणमात्र अच्छे हों।

१५—१ पैसेभर राल एक पैसेभर कत्था एक पैसेभर कालीमिर्च. ४ पैसेभर गोघृत, ४ पैसेभर चमेलीका तेल इन सबको लोहे की कड़ाही में पीसकर बिवाई (पांवकी ऐडीकी फटीहुई दरारें) में भरो तो बिवाई अच्छी हो।

१६—नीमके पत्तोंका सेरभर रस पावभर गोघृत के साथ कड़ाहीमें औटाओ जबजल घृतमात्र रहजानेपर उसमें ४ पैसेभरराल १ पैसेभर नीलाथोथा १ पैसेभर मुर्दासिंगी इनका महीन चूर्णडाल कर एक जीव करदो इस मरहम को कपडेकी पट्टीपर लगाकरव्रण पर चिपकाओ व्रण निश्चय अच्छाहो।

१७—मैनासिल मजीठ लाख दोनों हलदी इन सबको घी और मधुके साथ महीन पीसकर त्वचापर लेप करो व्रणजन्य विकार से कालीपड़ी हुई त्वचाका पूर्ववत हो जावेगा।

१८–अपामार्ग (आंधझारे) के बीज और तिल दोनोंकोमहीन पीसकर लेप करे तो बातजन्य नाडव्रिण जाय।

१९ तिल मधु और घी को एकत्र पीसकर लेप करो तोपित्त नाडी व्रण जाय।

२०–तिल मजीठ हस्तिदंत इनको महीन पीसकर जलके साथ लेप करो तो पित्तकी नाडीव्रण नाशहो।

२१–तिल मुलहटी दात्यूणी नीमकी छाल या पत्ते सैंधानोंन इन सबको महीन पीसकर लेप करो तो पित्तका नाडीव्रण नाशहो।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे भग्नरोगनाडी व्रण रोग यत्न निरूपण नामाष्टाविंशतितमस्तरंग, ॥ ३२ ॥

भगन्दर. उपदंश,

भगन्दरस्य रोगस्य चोपदंशस्य वैक्रमात।
रामाग्नि प्रमिते भंगे चिकित्सा लिख्यते मया ॥ १

भावार्थः–अब हम आगे तेतीसवें तरंगमें भगंदर और उपदंश रोगकी चिकित्सा यथाक्रम से वर्णन करतेहैं।

भगंदररोगयत्न १–वैद्यको चाहिये कि भगंदरकी उत्पत्ति होतेही जोंक आदि किसीभी उपायसे वहांका रुधिर इस तरह निकालदे कि जिसमें फुसी न पकने पावे तो भगंदर जाय।

२–सांठीकी जड गुरच सोंठ मुलहटी और बडके कोमल पत्तों को महीन पीसकर और पकाके सहता सहता लेप करोतो भगंदर जाय।

३–चमेलीके पत्ते बडके पत्ते गुरच सोंठ और सधानोन इन सबको महीन पीसकर लेप करो तो भगंदर का नाशहो।

४-हलदी, आक के पत्ते, सेंधानोन गूगल और कनेर के पत्ते इन सब का चूर्ण तेल में पकाकर वह तेल लगाओ तो भगंदर जाय।

५-गूगल, त्रिफला और पीपली का १ टंक चूर्ण जल के साथ सेवन करओ तो भगंदर, शोथ, गुल्म, अर्श ये सब रोग नष्ट हों इसे नवकार्षिगूगल कहते हैं।

६-चतुर वैद्य या सथिया भगंदर के व्रणको चीरकर उस पर व्रण यत्न लिखित मरहमादि लगावे तो भगंदर नाश हो।

७-रसौत, दोनों हल्दी, निसौत, मजीठ, नीम के पत्ते, तेजबल और दात्यूणी को महीन पीस कर भगंदर पर लेप कर इन्हीं के जल से धोओ तो भगंदर नाश हो।

८-कुत्ते की हड्डी के चुरे (मज्जा) को गंधक रक्त में पीस कर लेप करो तो भगंदर नाश हो।

९-बिल्ली की हड्डी त्रिफला के रस में पीस कर लेप करो तो भगंदर नाश हो।

१०-बिल्ली और कुत्ते दोनों की हड्डी की राख गौ घृत के साथ लोहे के पात्र में घिसकर लेप करो तो भगंदर जाय।

११-२ भाग शुद्ध पारा और ४ भाग ताम्र के मैल को कलहारी के रस में १५ दिन खरल करके ताम्बे के सम्पुट में बंद करदे और उस सम्पुट को बालू भरी हंडी के बीच में धरके ८ पहर तक आंच दो स्वांग शीतल होजाने पर निकाल कर उसमें घी मधु और सुहागा मिलाओ तदन्तर इसको पक्का रस में धर कर आंच दो (जैसे सुनार चांदी गलानेमें नलीसे फूकदेता है) जब वह पदार्थ उसी में घूमने लगे तब निकाल कर उस में २ रत्ती की मात्रा मधु के साथ दो और ऊपर से त्रिफला का क्वाथ पिला कर पथ्य से रक्खो तो भगंदर निश्चय अच्छा होगा इसे रूपराजरस कहते हैं।

११–१ भाग पारा २ भाग आंवलासार गंधक दोनों की कजली को ग्वारपाठेके रसमें खरल करके तांबेके सम्पुटमें बंदकरो और इस सम्पुट को राख भरी हंडी में गाढ कर १ दिन आंचदो अनंतर स्वांग शीतल आपही आपठण्डी होजाने पर निकालकर जंभीरी के रस की ७ पुट दो जो इस में से १ रत्ती को मधु या घी के साथ चटाकर ऊपरसे मूली या लहसन खिलाओ तो भगंदर दूरहो इस के सेवन वाले को मीठा अहार दिवस निद्रा मैथुन और शीतल भोजन का बचाव करना चाहिये इस रवि सुन्दर रस कहतेहैं यह रस सिंधु में लिखा है ।

१२–तिल, नीमकी छाल और महुआ इन सब को शीतलजल के साथ पीस कर लेप करो तो पित्तज भगंदर जाय ।

भगंदर पर वर्जित पदार्थ–श्रम मैथुन, युद्ध, घोडे आदि पर चढना, और ऊगा हुआ (अंकुरित) अनखाना भगंदर अच्छा होने पर भी १ वर्ष तक वर्जित है, ये भाव प्रकाश में लिखे हैं ।

उपदंश रोग यत्न १ जोंक लगाकर रोगस्थान का रक्तनिकलवा दो तो उपदंश नाश हो । परन्तु घाव पकना नहीं चाहिये ।

२–सांठी की जड, गिलोय, सोंठ, मुलहटी और बड के कोमल पत्तों को जल में औटा कर इस जल से लिंगेन्द्रिय को धोओ तो उपदंश नाश हो ।

३–लिंगेन्द्रिय की (फस्त) छुडवाओ तो उपदंश अच्छा होगा

४–बड के कोमल पत्ते काहू की छाल जामुन की छाल, लोदपूरें की छाल और हलदी इन सबको जल में पीस कर लेप करोतो गर्मी नाश हो ।

५–चतुर्थयत्नोक्त (ऊपर को लिखे हुए) औषधों के जल से धोओ तो लिंगेन्द्रिय का शोथ तथा पकाव भी नाश हो ।

६-त्रिफला के क्वाथ या भंगरे के रस या कमलके जलसे धोवे तथा लेप करने से उपदंश नाश हो।

७-गिझने (मारवाड में प्रसिद्ध) पेडकी छाल अथवा अनार की छालको जलमें पीसकर लेप करो तो उपदंश अच्छा हो।

८-सुपारीको जलमें घिसकर इन्द्रिय पर लगाओ तो गर्मी अच्छी हो।

९-त्रिफला को कढाई में जलाकर उस भस्म को मधु के साथ इन्द्रिय पर लेप करो तो उपदंश जाय।

१०-पटोल नीमकी छाल, त्रिफला, चिरायता, खैरसार, विजय खार और गूगल इनका क्वाथ पिलाओ तो गर्मी नाशहो।

११-चिरायता नीमकी छाल, त्रिफला, पटोल, कटहलकी जड़, आंवला, खैरसार और विजयखार का क्वाथ घृत में पका कर इस घी का लेप या भोजनके साथ खिलाओ तो उपदंश नष्ट हो इसे भूनिंबादि घृत कहते हैं।

१२-कुष्ठ और व्रणयत्न लिखित घृतों का लेप करो या खिलाओ तो उपदंश जाय।

१३-विरेचन दोतो उपदंश जाय।

१४-पैसेभर छोटी हर्रें १ पैसेभर श्वेतकत्था एक पैसेभर नीला थोथा इन सबको १०० पक्के नीबूके रसमें खरल करके एक मासे प्रमाणकी गोलियां बनाओ और प्रतिदिन दहीके साथ एक गोली १५ दिनतक बिला पथ्य से रक्खो तो गर्मी नाश हो

१५-एकभाग नीलाथोथा एकभाग कत्था एकभाग मुर्दासिंगी और २ भाग सुपारी की राखको महीन पीसकर उपदंश पर भुर काओ तो छाल सूखकर उपदंश मिट जावेगा।

१६-शुद्ध पारा गंधक, हरताल, सिंदूर और मैनसिल को

तांबे के पात्र में घोटे से घृतके साथ १ दिन तक घोटकर इन्द्रिय पर लेप करो तो उपदंश जाय ये यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं।

लिंगवर्तीयत्न १–मर्द दूर होनेकी औषधी से इसकी चिकित्सा करो तो लिंगवर्ती (लिंगार्श) दूर होगा ॥

शूकरोगयत्न १–एक विषदूर करनेके यत्न करो २ जोंक लगाकर इन्द्रियका विकारी रक्त निकालदो ३ लिंग विरेचन अर्थात् इन्द्रिय जुलाबदो ४ अल्पाहार कराओ ५त्रिफला के क्वाथ के साथ गूगल सेवन कराओ ६औषधी के लेप तथा सेक लगाओ ७खरैटीकातेल मर्दन करो ८शीतल प्रयत्न करो और९दारुहल्दी तुलसी मुलहटी अमासा इन्हें तेलमें पकाकर उस तेल का मर्दन करो इन नौ यत्नोंमें से प्रत्येक यत्न १८ हों प्रकारके शूकरोगोंको दूर करता है

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे भगंदररोपदंश लिंगर्व ति शूकरोगाणां यत्न निरूपणं नाम त्रियस्त्रिंशस्तरंगः ॥ ३३ ॥

कुष्ठ रोग ।

चिकित्सा कुष्ठरोगस्य नराणां सुखदायिनी ॥
वेदवेश्वानेर ह्यास्मिन तरंगे कथ्यते मया ॥ १ ॥

भाषार्थः–अब हम इस चौतीसवें तरंगमें मनुष्यों को सुखप्राप्त करने वाली कुष्ठरोगोंकी चिकित्सा का कथन करते हैं।

कुष्ठरोगयत्न १–हरकी छाल कणगचकी जड सरसों हलदी बावची सेंधानोन और नागरमोथा इन सबको गोमूत्रमें पीसकर कुष्ठ पर लगाओ तो कुष्ठ अच्छाहो इसे पथ्यादि लेप कहते हैं।

२–बावची के चूर्ण को अदरकके रसकी पुटदे कुष्ठपर उबटन करो तो कुष्ठ जाय ॥

३ निम्बपचांग दोनों हलदी त्रिफला सोंठ काली मिर्च

पीसत्र बासी; नोसरू शुद्ध मिलावा, चित्रक, वायविडंग सार, वाराहीकंद, गुरच, हरड़ी, त्रिफला मिश्री, कूट, इन्द्रयवपाठा और खैरसार इनके चूर्णको नागरमोथे के रसकी १ पुट निम्बपंचांग की ७ पुट और भंगरेके रसकी पुटदे हर बारमें सुखालो फिर पीस कर इसमेंसे अधेले भर चूर्ण शुभदिनसे मधु या खैरसारके क्वाथ के साथ प्रातःकाल उष्ण जलसे कुष्ठरोगीको दो और अनु दिन कुछ२ बढाते बढाते २ टंकतक बढाकर ऊपरसे घृत सहित हलका भोजन कराओ तो त्रिषविका उदुम्बर पुंडरीक दाद का पालिका किटिभ अलस, सतारु, विस्फोटक ये सब कुष्ठ तथा विसर्परोग नष्ट होवेंगे, यह निम्बपंचांगावलेह ब्रह्मा जी ने मार्कण्डेय ऋषिजी को बताया है।

४—२टकेभर बावची ५ टकेभर शुद्ध गूगल, ३ टकेभर शुद्ध सोनामक्खी २ टकेभर सार, ३ टकेभर गोरखमुंडी, १टकेभरकण गच ४ टकेभर खैरसार, २ टकेभर गुरच, २ टकेभरनिसोत, २टके भर नागरमोथा, टकेभर वायविडंग १ टकेभर हलदी २टकेभर ततज, ५ टकेभर निम्बपचांग २ टकेभर त्रिफला और १ टकेभर चित्रक इन सबके चूर्ण घृत और मधुके साथ मिलाकर ४टके प्रमा णकी गोलियां बनालो और प्रतिदिन प्रातःकाल १ गोली गोमूत्र के साथ सेवन कराओ तो कुष्ठमात्र वातरक्त पांडुरोग उदररोग प्रमेह और कुल के रोग नष्ट होकर वृद्धभी तरुण सदृश बलवान हो जाता है इसे स्वायम्भुवगूगल कहते हैं।

५—चित्रक; त्रिफला, सोंठमिर्च पीपली, जीरा, कलौंजी बच सेंधानोन. अतीस द्रव्य, कूट इलायची जवाखार वायविडंगअज मोद नागरमोथा देवदारु और इनसब के समान शुद्ध गूगलइन सबके चूर्णको मधुके साथ ४ माशे प्रमाणकी गोलियांबनाकरएक

गोली नित्य भोजनके समय खिलाओ तो कुष्ट मात्र, व्रणमात्र कृमि, संग्रहणी, मुखरोग, अर्श, गृध्रसी और गुल्म ये सब रोग नष्ट होवेंगे, इसे किशोर गूगल कहते हैं।

६-सेर शुद्ध भिलावा ६ सेर जल में औटाकर औटने समय ४सेर गुरच कूटकर डाल दो औटते औटते चतुर्थांश रहजाने पर उतारकर छान लो और इसमें १ सेर गोघृत ४सेर गोदुग्ध १सेर मिश्री आधसेर मधु मिलाकर मंद आंचसे पकाओ दृढ हो जानेपर उतारकर उसमें बावची पवारकेबीज नीमकी छाल हरेंकी छाल आंवले,सेंधव नागरमोथा इलायची नागकेशर पित्तपापड़ा मजीठ नेत्रवाला खस चंदन गोखरू कचूर और रक्तचंदन इनका दो दो टंक महीन चूर्ण मिला दो इसमेंसे प्रतिदिन १ टंकभर प्रातःकाल जलके साथ सेवनकराओ तो समस्त कुष्टमात्र वातरक्त और अर्श ये सब रोग दूर होंगे इसमें श्रम करना धाम में विचरना अग्नि तापना खटाई मांस दही खाना तेल मर्दन और नारीगमन वर्जित है इसे अमृतभल्लातकावलेह कहते हैं।

७-नीमकी छाल गौरीसर, मजीठ, त्रायमाण, त्रिफला, नागर मोथा,पित्तपापड़ा, बावची, जवासा, बच खैरसार रक्त चंदन पाठा सोंठ, भारंगी अडूसा चिरायता कूड़ेकी छाल इन्द्रायणी की जड़, चित्रक गुरच निसोत मूर्वा वायविडंग इन्द्रयव मानपात (रामबाण) बकायन पटोल दोनों हलदी पीपल किरमालेकागूदा कलहारीकी जड़ सतो(?)धू (औषधीविशेष)शुद्धवत;विरमू. रास्ना सांठीकी जड़, दात्यूणी शुद्ध जमालगोटा, भंगरा, कठसेला अकोटक साखोटक

१ एक प्रकारका कटीला पौधा जिसके पीत पुष्प शिवजी को प्रिय होते हैं
२ एक प्रकार का कटीला वृक्ष जिसके फल ... जामुन सदृश होते हैं यह वृक्ष ... प्रसिद्ध है

(भूतावास) ये सब दो दो टकेभर कूटकर १६ सेर पानीमें औटाओ और चतुर्थांश रहजाने पर उतार कर छानलो फिर ९ सेर शुरुक मिलावा १६ सेर जलमें औटाकर चौथाई रहजाने पर छानलो और पूर्वनिमित ४सेर पानीमें मिलाकर इस ८सेर पानीमें १०० टके भर गुडकी चासनी बनाओ पश्चात् सोंठ. मिर्च. पीपल. नागरमोथा वायविडंग. चित्रक. चन्दन. कूट अजमोद. पत्रज नाग केशर इलायची ये सब एकएक टकेभर. सेंधानोन २टकेभर. त्रिफला ३टके भर इन सबका चूर्ण उक्त चासनीमें डालदो और शुभ दिन देख इसमेंसे नित्य २टकेभर खिलाकर खटाई और उष्ण वस्तुओंकापथ्य रक्खो तो कुष्ठनाश. व्रणमात्र. अर्श. कृमि. रक्तपित्त. उदावर्त. कास, श्वास, भगंदर येसब रोगनष्टहोकर तरुणाई, शरीरकी कांति और क्षुधाकी वृद्धि होवेगी, इसेमहाभल्लातकावलेह कहते हैं ॥

८—मजीठ, त्रिफला, कुटकी, बच, नीमकीछाल दारुहलदी और गुरच इन सबके ५ टके चूर्णका क्वाथ प्रतिदिन पिलाओतो कुष्ठ नाश, वातरक्त, विस्फोटक और विसर्प ये सब रोग नाशहोवेगे इसे लघुमंजिष्ठादि क्वाथ कहते हैं।

९—मजीठ बावची, पवाड. नीमकी छाल, हरडकीछाल हलदी आंवले. अडूसा, शतावरी, खरेटी, गंगेरणकी छाल, मुलहटी, महुआ, कटियाली, पटोल खश गिलोय रक्तचंदन इन सबके ५ टके चूर्णका क्वाथ प्रतिदिन पिलाओतो सबकुष्ठ और वातरक्त नाश होंगे इसे मध्यममंजिष्ठादि क्वाथ कहतेहैं।

१०—मजीठ, इन्द्रयव, गुरच नागरमोथा बच, सोंठ, हलदी दोनों कटियाली, नीमकी छाल पटोल कूट हलदी, भारंगी वाय विडग, चित्रकमूर्वा, देवदारुजलभंगरा पीपल, त्रायमाण पाठ शतावरी; खैरसार विजयसार. त्रिफला: किरायता. बकायन; किरमा

ठेकीगिरी, निसोत, रक्तचन्दन बावची, वरणा दारुगी साखोट अडूसा, पित्तपापडा गोरीसर, अतीस जवासा, और इन्द्रायणकी जड इनसबके ५ टक चूर्णका काथ प्रतिदिन सेवन कराओ तो अठारहों प्रकारका कुष्ठ वातरक्त रक्तविकार विसर्परोग औरत्वचा अन्यये सब रोग दूरहों.इसे बृहन्मंजिष्ठादिक्वाथकहतेहैं ॥

११–कालीमिर्च, निसोत नागरमोथा, हरताल देवदारु दोनों हलदी, जड, छड, कलौंजी आकका दूध गोवरका रस ये सब धेले धेले भर पैसेभर सिंगीमुहरा १ सेर कडुआ तेल, ४ सेर पानी और ८ सेर गोमुत्र इन सबको एकत्र कर मंदाग्नि से औटाओ और रसादिक जलकर तेलमात्ररहजानेपर उतार छान के मर्दन करो तो कुष्टमात्र दूरहो इसेलघुमरीच्यादि तैल कहते हैं।

१२–कालीमिर्च निसोत दारुणी, आकका दूध गोवरका रस देवदारु दोनों हलदी छड कूट रक्तचंदन इन्द्रायणकी जड कलौंजी हरताल मैनासिल कन्हेरकी जड चित्रक नागरमोथा कलहारी की जड वायविडंग पवांड कुडेकी छाल सिरसकी जड नीमकी छाल सतोने की छाल गुरच थूहरकादूध दिरमालेका गूदा खेरसार बावची बच मालकांगनी ये सब टके टकेभर २ टके भर सिंगीमुहरा चार सेर कडुआ तेल और १६ सेरगौमूत्र इनसबको एकत्र कर मंद मंद आंचसे औटाओ और गौमूत्रादि जलकर तेलमात्र रहजानेपर छानके इस तेलका मर्दनकरोतो कुष्ठमात्रखु जली फोडी दाह मुखच्छायाये सब रोग नाशहोंगे यह तेल मनुष्य तो क्या बानर हाथी घोडे आदि पशुओंको भी बलहारक और जीवनप्रदहै इसे महामरीच्यादि तैल कहतेहैं ।

१३–उत्तमहरतालके पत्रों का चित्रककेरसमें ३ दिनऔरसाठीके रसमें १ दिन खरल करके टिकिया बनाकर सुखाओ तदनन्तर

यह टिकिया साठी के पचांग खारमे रखकर इस प्रकारसे दाबो कि जिससे धूआं न निकलने पावे और चूल्हेपर चढ़ाकर मंद-मंद बढ़तीहुई आंचसे४दिन रात निरन्तर तपाके स्वांग शीतलहोजाने पर निकाललो जो यह तोलमें पूर्ववत् (पहिले थी जितनी) निर्धूम और श्वेतवर्णकी होआई हो तो उसमें से२रत्ती की मात्रा गुरचके क्वाथके साथ सेवन कराओतो अठारहोप्रकारकाकुष्ठ,वातरक्तउपदंश,फिरंगवाय ये सब रोगदूरहोंगे,इसके सेवन करनेवाले कोनोन खटाई, कटुरस और धूपमें फिरना निषिद्धहैयदि नोन बिनानरह सकेतो सेंधानोन औरमिठाई खिलाओ इसे तालकेश्वर रस कहतेहैं

१४—पारा, शुद्ध गंधक, ताम्रेश्वर, लोंहसार, गूगल, चित्रक शिलाजीत, कुचला, बच, अभ्रक और गिलोय १ के प्रमाणसेचौगुने कणगचकेबीजइन सबो के चूर्णको पारेगंधककीकजलीमें मिलाकर इसमेंसे २ टंक मिश्रण मधु और घृतके साथ सेवन कराओ और ऊपरसे चांवल दूध खिलाओतो गलितकुष्ठभी दूरहोकर रोगीका शरीर कामदेव सदृश सुन्दरहो जावेगा, इसके सेवन काल में स्त्रीसंग करना वर्जित है, इसे गलितकुष्ठादि रस कहते हैं।

विभूतिकुष्ठयत्न१—कूट,मूलीके बीज, सरसों केशर औरहलदी को सिरसके जलमें पकाकर लेप करो तो बहुत पुरानी विभूति भी नष्ट होगी।

२—केलेके खार, हलदी, दारुहलदी, मूलीकेबीज हरताल देवदारु और शंखका चूना इनको नागरबेलके पानके रसमें महीन कर लेप करो तो विभूति (सहुआ) जाय,

चर्मदलकुष्ठयत्न—१ अमचूर और सेंधेनोनको जलके साथताम्र पात्रमें ताम्रके घोटेसे महीन पीसकर लेप करो तो चर्मदलदूरहो, पामायत्न(पांव) १—१ टकेभर जीरा और टकेभर सेंदुर कडुवे

तेलमें पीसकर पकाके लेपकरो तो पामा (खुजली) अच्छी हो

२–मजीठ, त्रिफला, लाख कलहारी कीजड, हलदी और आंवलासार गंधक इन सबको पीसकर घाममेंउष्ण करो और लेपकरो तो पामा (खुजली)जाय,

३पारा, दोनों जीरा दोनों हलदी, काली मिर्च, सिंदूर, आंवलासार गंधक इन सब औषधोंके चूर्णको पारे गंधककी कजलीके साथ गौघृतमें १ दिन मर्दन करके लगादो तो पामाजाय ।

४पारा और आंवलासार गंधककी कजली, नीलाथोथा हलदी मेंहदी तीव्रा, अजवायन, मालकांगनी इन सबके चूर्ण औरघृतमें पिघलाया हुआ मोम. इन सबको गौके घृतमें १ दिन खरलकरके मर्दन करो तो पामा (खुजली) आदि रुधिरविकार सबदूर हो

५–२टंक शुद्ध आंवलासारगंधकऔर तीन माशे नीलाथोथा दोनोंको पानी के साथ महीन पीसकर गोली बनाओ इसगोली को महीन कपडेमें बांधकर गेहूंके मसले हुए अलोने आटेसेछापदो फिर उस गोली सहित आटेकी बाटी बनाकर सेक डालो फिरवह पांचबाटियां बना घीमें तल डालो याधी शक्करमेंचूरमा मलीदा) बनाओ, जोयह चूरमा इसी प्रकार५दिनतक नित्य खिलाओतो पामा (खुजली) आदि समस्त रक्तविकार दूर होवेंगे ।

६–सेंधानोंन, पंवारके बीज, सरसों और पीपलका कांजी में महीन पीसकर लेप करो तो पामा जाय ।

कच्छदादयत्न १–आकके पत्तोंका रस, हल्दीका क्वाथ और कडुआ तेल इन तीनोंको एकत्र कर मंदाग्निसे पकाओ रस जल कर तेलमात्र रह जाने पर छानकर मर्दन करो तो कच्छदाद नष्टहो. यह अकतेल कहाता है ।

२–मैनसिल, हीराकसीस, आंवलासार गंधक, सेंधानोन सोना मक्खी, पत्थरफोडो, सोंट, पीपली, कलहारी, कनेर, पंवार, वायविडंग, चित्रक, दात्यूणी और नीमके पत्ते ये सब अधेले अधेले भर लेकर जलके साथ महीन पीसो और इस पानीको २सेरकडुवे तेलके साथ पकाकर पकनेही के समय इसमें आकका दूध थूहर का दूध छटांक छटांकभर और४सेर गोमूत्र डालदो. जबजलते-जलते रसादिक जलकर तेलमात्र अवशिष्ट रहजावे तब छानकर मर्दन करो तो असाध्य कच्छदाद, पामा, खुजाल तथा रुधिर, प्रकोपज समस्त रोग दूर होवेंगे, इसे कच्छराक्षसतैल कहते हैं।

दद्रुकुष्ठयत्न १–कूट, वाय विडंग, पंवाडके बीज, सरसों, तिल सेंधानोन इनसबको खटाईसे महीन पीसकर लेपकरोतो दद्रुनष्टहो

२–दूध, हर्रकी छाल, सेंधानोंन, पंवारके बीज, कनेरकी छाल, इन सबको कांजी या छाछमें पीसकर लेप करो तो दाद, कच्छ दाद और खुजाल ये सब दूर होवेंगे।

श्वित्रकुष्ठयत्न१–बहेडेकी छाल, हर्रकी छाल, कठूंवर (कैथका गदा) और बावची इनका क्वाथ पिलाओ तो श्वित्रकुष्ठ जाय।

२–हरताल, मैनसिल, चिरमी और चित्रक इनको गोमूत्रमें महीन पीसकर लेपकरो तो श्वित्रकुष्ठ जाय।

३–विष्णुक्रांता (तिलकँठी) शँखाहोली, बावची, खैरसार और आंवले के चूर्णका सेवन करके पथ्यसे रक्खो तो श्वित्रकुष्ठ जाय, ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं।

४–४टकेभर हलदी, ६ टकेभर गौका घी, ४ सेर दूध, ५० टक भर मिश्री, १ टकेभर सोंठ, १ टकेभर कालीमिर्च, १टकेभर पीपली १ टकेभर तज, १ टकेभर पत्रज, १ टकेभर वायविडंग, १टकेभर नागकेशर, १ टकेभर निसोत, १ टकेभर त्रिफला, १ टकेभर

केशर और १ टकेभर नागरमोथा इन सबको जुदे जुदे पीसकर घी में छानलो और हल्दी का चूर्ण दूध में डाल कर दूध का खोया बनालो तदनंतर मिश्री की चासनी में यह घी युक्त औषधी और हलदी युक्त खोवा डालकर १ टके प्रमाणकी गोली बनालो, जो इसकी १ गोली नित्य खिलाओ तो कुष्ठ, खुजली फोडे और दद्द ये सब रोग नाश होवेंगे। इसे हरिद्राखंड कहते हैं।

५-पंवारके बीज, बावची, सरसों तिल कूट, दोनों हलदी और नागरमोथा इन को छाछ में पीसकर लेप करो खाल व्योंची येसब रोग नाश हों।

कुष्ठमात्रयत्न १ उत्तम निर्धूम श्वेत और बोझमें पहिलेकेसमान तबकिया हरतालकी भस्ममेंसे १ रत्तीकी मात्रा पुराने गुडके साथ २१ दिन सेवन करके ऊपरसे चनेकीरोटी साठी धान के चांवल और गौका घृत खिलाओ नोंन खटाई का पथ्य रखो तो अठारहों प्रकार के कुष्ठ वातरक्त और फिरंगवात ये सब जाय।

२ २टंक पारा, २ टंक शुद्ध गंधक १ टंक हरताल २ टंक मैनसिल, ५टंक बावची, २ टंक धमासा २ टंक सिंदूर, २ टंक दोनों हलदी इन सबको गौके घीमें महीन पीसकर लेप करो और ३ प्रहरपर्यंत धूपमें बिठाकर स्नान करा ओ तो कंडू, दद्रु, कृमि और सब कुष्ठमात्र ३ दिनमें नाश होवेंगे, (धूपमें शक्ति देखकेबैठना)

३–५८टकेभर पलासकी जडके सूखे टुकडों को जलाकर इनकी राखको कच्ची कोरी हांडी में भरदो और इस राखके बीचमें २माशे उत्तम तबकिया हरताल दबाकर हंडीकामुंह सराईसे ढांकदो फिर इसे कपडमिट्टी से बंद करके सुखालोइस सूखी हंडीको चूल्हेपर चढाय ग्यारह प्रहरपर्यन्त आंचदो और स्वांग शीतल होजानेपर हरतालसहित राखको पीसकर कपडछन करके इसमेंसे १ रत्तीकी

मात्रा १ माशे कच्चे (दिन सेके) जीरे के चूर्णके साथ पान में रख कर खिलाओ और ऊपरसे शीतल जल पिलाकर पवन और धूप के बचाव से चने की अलोनी रोटी खिलाओ तो १ मंडल (४० दिनका मंडल) पर्यंत सेवन करने से १८ प्रकार के कुष्ठमात्र व्रणमात्र, वातरक्त, पिडिका और वात व्याधि ये सब रोग नाश हों

४–१टंक नीलाथोथा १ टंक सुहागा, और ५ टंक बाकुची को जलभंगरेके रसकी ७ पुट देकर लेप करो तो कुष्टमात्र नाश हो ये सब यत्न वैद्य रहस्य में लिखे हैं।

५–५टंक पारा, शंखकाखार, आंवलारेका खार, तिलखार साठी का खार, हरेंका खार, अडूसेकाखार, पटोलकाखार अरंडकाखार जवाखार, सज्जी, सुहागा, नौसादर, आंवलासार गंधक, पांचों नोंन, कूट, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, डासरे की जड़ दहगच की जड कलिहारीकी जड हलदी जमीकन्द, गोरखमुंडी का खार काहूकाखार पीपलकाखार राई सरसों सिंदूर शिलाजीतपापडाखार कपालखोंद थूहरकीजडलोंदआककीजड़नीलाथोताचित्रकऔरथूक पंचांगखार इन सबको एक एकटकेभर लेकेगोमूत्रके साथ पीसलो फिर इसको महिषीमूत्र अश्वमूत्र अजामूत्र हारितमूत्र उष्ट्रमूत्र नीबू कारस जंभीरीकारस बिजौरेकारस नारंगीका रस चनाखार मुंगले का रस और राई संयोग की बनी हुई सात धान्य की कांजी ये सब एकताम्र पात्र में एकत्र कर उस का मुख बन्द करदो और २१ दिन रक्खो रहने के पश्चात इसका लेप करो तो समस्त कुष्ठ मात्र गंडमाला विसर्प अर्श और वातरोग ये सब १ मासके लेपसे नाशहों यह कुष्ठमहालेप रससंग्रहमें लिखा है।

इतिश्री रत्नसागरे चिकित्साखण्डे कुष्ठादिरत्न निरूपण नामचतुर्विंशस्तरंगः ॥२४॥

१८–चिरायता, अडूसा, कुटकी पटोल, त्रिफला रक्त चन्दन और नीम की छाल का क्वाथ सेवन कराओ तो पित्तरोग, फोडे दाह, ज्वर, मुखशोष, तृषा वमन ये सब नष्ट होंगे।

१९–जंगली कंडा (छेना उपलो गोबर की राख) (भस्म) शरीर में मर्दन करो तो पित्ति नष्ट हो।

२०–नागरबेल के पान के रस में फिटकरी को महीन पीसकर मर्दन करो तो पित्ति मिट जावे।

२१–१ टकेभर लहसन खिलाओ या ५ टंक त्रिफला का चूर्ण मधु के साथ चटाओ तो पित्ति मिट जावेगी।

२२–१ टकेभर मेथीदाने १ टकेभर काली मिर्च १ टकेभर हलदी इन तीनों को महीन पीस कर अदरक के रसकी ३पुट दो और २ टंक प्रमाण की गोलियां बनाकर १ गोली नित्य खिलाओ तो पित्ति के समस्त विकार नष्ट होंगे, ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

अम्लपित्तयत्न १ पटोल नीम की छाल और अडूसा इनका क्वाथ पिलाकर वमन कराओ तो अम्लपित्त शांत हो।

२ मैनफल और सेंधानोन मधु के साथ चटा कर वमन कराओ तो अम्लपित्त दब जावेगा।

३–विरेचन देने से भी अम्लपित्त दब जाता है।

४–निसोत और आंवला मधुके साथ चटाकर विरेचन कराओ तो अम्लपित्त शांत हो जावेगा।

५–ऊर्ध्वगामी अम्लपित्त वमन से और अधोगामी अम्लपित्त विरेचन से नष्ट होवेगा।

६–जौ या गेहूं या चांवल का सत्तू मिश्री के साथ खिलाओ तो अम्लपित्त शांत होवेगा।

७-जौ (यव). अडूसा, आंवला, तज, पत्रज, और इलायचीके क्वाथ मधु के साथ पिलाओ तो अम्लपित्त दूर हो।

८-गुरच निम्बछाल, पटोलका क्वाथ मधुके संयोगसे पिलाओ तो अम्लपित्त नष्ट हो।

९-अडूसा गुरच. पित्तपापडा. चिरायता. नीम की छाल. जल भंगरा. त्रिफला. और कुलथीके क्वाथमें मधु डालकर पिलाओ तो अम्लपित्त नष्ट हो इसे दशांगक्वाथ कहते हैं।

१०-भोजन के पश्चात् आंवले का रस पिलाओ तो अम्लपित्त वमन. अरुचि दाह तिमिर मोह और मूत्रदोष ये सब रोग दूर हो कर वृद्ध भी तरुण हो जावेगा।

११-पक्के पेठेकी छाल और बीज निकाल कर कूट के १०० टके भर रस निकालो यह रस १०० टकेभर गोदुग्ध, ८ टकेभर आंवलोंका चूर्ण ८ टकेभर मिश्री और ८ टकेभर गोघृत के साथ मिट्टी के बर्तन में डालकर मंद मंद आंच से पकाओ और औटते औटते अवलेह की चासनी सदृश होजाने पर उतार कर ५ टंक भर या १ टकेभर नित्य खिलाओ तो अम्लपित्त दूर हो।

१२-नारियल का खोपरा छील कर खरल में महीन पीसो और गौके दूधमें डालकर खोवा बनाओ और खोपरेसे चौगुने बिनौलेके रस में शक्कर की चासनी बनाकर उक्त खोवे में मिलादो फिर धनियां, पीपलामूल तज पत्रज नागकेशर और इलायची ये सबएकर टंक महीन पीसकर इनका चूर्ण भी चासनी में डालदो सबोंको भली भांति मिश्रित कर ५ टंक या एक टंक प्रमाणकी गोलियां बनाकर १ गोली नित्य खिलाओतो अम्लपित्त रक्त और शूल ये सब दूर होंगे इसे नारिकेलखण्ड कहते हैं ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहे,

१३-१ भाग द्राक्ष (धोकर बीज निकालदो) का गूदा एक भाग

बडी हरोंकी छालका चूर्ण और २ भाग मिश्री इन तीनों को खरल कर एक टंक प्रमाणकी गोलियां बनाओ और १ गोली नित्य खिलाओ तो अम्लपित्त, हृदयतथा कंठकी दाह, तृषा मूर्छा, चक्कर मन्दाग्नि और आमवात ये सव रोग नष्ट होंगे, इसे द्राक्षादिगुटिकाकहतेहैं

१४—सोंठ, कालीमिर्च, पीपली, त्रिफला इलायची नागरमोथा बायबिडंग और पत्रज ये सब तुल्य भाग, इन सबके समानलौंग इन सब से दूनी निसोत तथा इन सब औषधों के समान मिश्री लेकर सबको कपडछन चूर्ण कर डालो, इसमें से २ टंक चूर्ण शीतल जल के साथ सेवन कराओ तो अम्लपित्त नष्ट हो। इसे अविपित्तक चूर्ण कहते हैं।

विसर्परोगयत्न १—वमन विरेचन रक्तमोचन और औषधोंकालेप औषधों का तेल लगाना ये प्रत्येक कार्य विसर्प रोग को नष्ट करने वाले हैं।

वातजविसर्पयत्न २—रास्ना, कमल गट्टा, देवदारु, खरेंटी रक्तचंदन और महुआ इन सब को दूध या घृत में महीन पीस कर लेप करो तो वातजविसर्प नष्ट हो।

पित्तजविसर्पयत्न ३—कसरू सिंघाडे कमल गट्टे जलका सिवार (काई) और रक्तचंदन सबको धोये हुए गोघृतमें खरल करके या शीतल जल में पीस कर लेप करो तो पित्तजविसर्प नष्ट हो।

कफजाविसर्पयत्न ४—त्रिफला कमल गट्टे खश लाजलू जवासा कनेरमूल और नरसलकी जडको जलमें महीन पीसकर लेप करो तो कफका बिसर्प नष्ट हो,

बिसर्पमात्रयत्न ५—सिरसकी जड, मुलहटी, रक्तचंदन इलायची छड, तगर तीनों हलदी और नेत्रवाला इन सबको जलमेंपीसकर लेप करो तो विसर्पमात्र नष्ट हो।

६-चिरायता, अडूसा, कुटकी, पटोल, त्रिफला, रक्तचंदन और नीमकी छाल इनके २टंक चूर्णका क्वाथ पिलाओ तो विसर्पदाह ज्वरे शोथ खाज फोडे और वमन इन सबका शमन होवेगा।

७-सतोन्यूके बक्कल. कणगच, कलहारीकी जड़, थूहरकादूध-आकका दूध, चित्रक, जलभंगरा. हलदी, सिंगीमुहरा ये सब टके टकेभर लेकर अधकुचले करो और २ सेर पानी२सेर गोमूत्र सेर भर तिल्लीके तेलके साथ एकत्रकर मंद २ आंचसे पकाओ तदंनतर रसादिक जलकर तेल मात्र रहजानेपर छानके शरीरमें मर्दन करो तो बिसर्प फोडे और न्योंचीभी दूर होगी, ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं।

८-बडकी जटा, नागरमोथा, केलेका मध्यगर्भ (गाबा) इन को घोये हुए घीमें खरल करके लेप करोतो बिसर्प और ग्रंथिभी नाशहोगी।

९-सिरसकी छालको १०० बारके घोयेहुए घृतमेंखरल करके लेप करोतो विसर्पमात्र नाशहो।

१०-जोंक लगाकर रुधिर निकलवा दो तो बिसर्पकोढ और शीतला ये सब रोग नाशहों येसब वैद्यरहस्य में लिखेहैं।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे शीतपित्तोदर्द कोठोत्कोठीम्लपित्तविसर्प रोगाणां यत्न निरूपणं नाम पंचविंशस्तरंगः ॥ २५ ॥

स्नायुक, विस्फोटक, मसूरिका, फिरंगवात. चिकित्सा लिख्यते स्नायुविस्फोटकमसूरिका।
फिरंगवातरोगाणां भंगे रसधनंजये ॥ १ ॥

भावार्थः-अबहम इस २६ वें तरंगमेंस्नायुक बिस्फोटकमसूरिका और फिरंगवात रोगोंकी चिकित्सा क्रमानुसार लिखतेहैं।

स्नायुकरोगयत्न १-५टंक हींग शीतल जलके साथ २ दिनतक

नित्य सेवन कराओतो स्नायुकनष्ट होकर फिर कदापि न होगा।

२—पावभरघृत नित्य पान कराओ तो स्नायुक रोग नाशहो।

३—तीनचार पैसेभर निर्गुंडीका रस नित्यपिलाओतो तीनही दिनके सेवन से स्नायुक (नहरुआ) मिटजावेगा।

४—कलौंजी शीतलजलके साथ७दिन पर्यन्त सेवन कराओ तो स्नायुक रोग मिटजायेगा।

५—अरंडकीजड का रस गोघृतके७दिन पर्यंत सेवन कराओ तो स्नायुकरोग नाशहो।

६—अतीस, नागरमोथा, भारंगी, सोंठ, पीपल और बहेडेकी छाल का १टंक चूर्ण नित्य उष्ण जलकेसाथ सेवन कराओतो स्नायुक रोग नाशहो।

७—सहजने की जड और पानको कांजीमें पीसकर सेंधेनोन के साथ स्नायुक पर बांधो तो स्नायुक (नहरुआ) नाशहो।

८—कटियाली जालकी जडको जलमें पीसकर बांधोतो स्नायुक बाला निश्चय नष्टहो ये सर्व यत्न भावप्रकाश में लिखेहैं।

९—कूट, सोंठ, सहजनेकी जड इन तीनों को जलमें महीन पीस कर लेप करो या पिलाओ तो स्नायुकरोग नाशहो।

१०—धतूरेके पत्तोंमें तेललगाकर नहरुआ पर बांधोतो नहरुआ अच्छा होजायगा।

११—बबूलके बीजोंको कांजीमें पकाकर बांधो तो नहरुआ अच्छा होगा।

१२—निम्नलिखित मंत्रसेगुडको सातबार मंत्रित करकेरोगी को खिलाओ तो उसका नहरुआ अच्छा होजायगा।

ॐ विरूपनाथ बामनका पूत सूतकाटि कियेदहुतपाककूटेपीडा करैंतो विरूपनाथकी आज्ञा फुरै. इतिस्नायुकनाश मंत्र।

१३-मधुके साथ पारावत (कबूतर) की विष्ठाकी गोली बना कर १ गोली नित्य सात दिनतक निगलवादो तो नहरुआ कभी न निकलेगा, ये सब यत्न वैद्य रहस्य में लिखे हैं ।

१४-सज्जीको मधुके साथ पीसकर लेप करोतो स्नायुक नाशहो

वातविस्फोटकयत्न१-रास्ना, दारुहलदी, खश, कटियाली, गुरच धनियां और नागरमोथा इनका क्वाथ पिलाओतो वातका विस्फोटक दूर होगा ।

पित्तविस्फोटकयत्न २-दाख, कुम्भेर, पटोल खारक, नीमकी छाल, अडूसा कुटकी, जवाखार, औरचावलों की लाही इन सब का क्वाथ बनाकर पिलाओतो विस्फोटक नाशहो ।

कफविस्फोटकयत्न३-चिरायता, वच, अडूसा, त्रिफला, इन्द्रयव कूडेकी छाल, और पटोल इनका क्वाथ मधुके साथ पिलाओ तो कफका विस्फोटक नाशहो ।

विस्फोटकमात्रयत्न४-लंघन, वमन, विरेचन, और पथ्य भोजन पुराने चावल, जौ, गेहूं मूंग, मसूर, और हर्र सेवन ये सबकार्य विस्फोटक (शीतला) ग्रसित रोगीको लाभकारी हैं ।

५-दशमूलका क्वाथ पिलाओ तो विस्फोटक शमनहो ।

६-चिरायता, कुटकी, नीमकी छाल, नागरमोथा, मुलहटी, पटोल, पित्तपापडा, खश त्रिफला और कूडेकीछाल इनका क्वाथ पिलाओतो सब प्रकारका विस्फोटक दूरहो ।

७-चांवल और कूडेकी छाल को जलमें पीसकर विस्फोटक के (फोड़ों) पर लेप करो तो विस्फोटक अच्छा है ।

८-गुरच, पटोल, चिरायता, अडूसा नीमकी छाल पित्तपापडा खस इनसबका क्वाथपिलाओतो विस्फोटकरोग अवश्य नष्टहो ।

९–चन्दन, नागकेशर, गौरीसर, चौलाईकीजड सिरसका वक्कल और चमेली के पत्ते इन सबको जल में पीसकर लेप करो तो बिस्फोटक अच्छा हे ।

१०–कमलगट्टा, रक्तचन्दन, लोद, खश; और गौरीसर इनको जलके साथ महीन पीसकर लेप करोतो बिस्फोटक अच्छा होगा ।

११–जियापोतेकी मींगी को जलमें पीसकर लेप करो तो बिस्फोटक कक्षा; गलगंड, कर्णग्रन्थि फोडे फुनसी, मात्र दूर होंगे ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ।

१२–किशोरगूगल और दशांग का लेपभी बिस्फोटक नाशकहैं विशेषतः–यदि बिस्फोटक पक जावे तो जंगली कंडोंकी राख रोगीकी शय्यापर बिछाकर सुलाओ नीमकी डाली (झारें) से मक्खियां उडाओ इसके ज्वरमें शीतलजल पिलाओ पवित्र होकर शीतल दवा पर शीतल जलकी पवित्र धारा छोडो तथा शीतला देवीकी पूजा करो, विशेष यत्नभी मत करो यदि करना भी हो तो ये यत्न करो ।

शीतलायत्न१—हल्दी को शीतल जलमें घोलकर पिलाओतो शीतलाके व्रण बहुत थोडे निकलेंगे ॥

२–श्वेतचन्दनको केलके रसमें या महुएको अडूसेके रस किंवा मधुमें पीसकर पिलाओ तो शीतला (बिस्फोटक) के व्रण बहुत थोडे निकलेंगे तथा दैवकृपासे नहीं भी निकलें ये दोनों उपाय शीतलाका पूर्वरूप होते ही करना चाहिये ॥

वर्तमानशीतलायत्न - जिस घरमें शीतला वाला बालक रहै उस

पूर्वामृतसागर मे शीतला का नाम तथा चिकित्सा निदान विस्फोटकसे पृथक लिखा है पर शास्त्रकारने विस्फोटक रोगपर शीतला का आराधन लिखा है अतः हम शीतला का निदान तथा चिकित्सा विस्फोटक से जुदी नहीं लिखी ।

घरके सन्मुख नीमके बन्दनवारें बांधो. विस्फोटकजन्य ज्वरदूरकरने कोलिये चंदन, अडूसा, गुरुचऔरदाखका क्वाथपिलाओ श्रद्धाभक्ति समेत जप, हवन, दान, ब्राह्मण भोजन शिवाभिषेक आदि कराओ, तथा निम्न लिखित शीतलाष्टक का पाठ कराओतोबालककी रक्षा होकर शीतलादेवीकी कृपा से विस्फोटक रोग से छुटकारा होगा।

॥ अथ सीतलाष्टकम् ॥ स्कन्द उवाच ॥

भगवन् देवदेवेश सीतलायाः स्तवं शुभम् । वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम् ॥ १॥ईश्वर उवाच ॥ वंदेऽहं शीतलांदेवीसर्वरोगभयापहम् । यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥ २ ॥ सीतले २ चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः । विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य विनश्यति ॥ ३ यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा सम्पूजयेन्नरः ॥ विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ४ ॥ शीतले सनुजान् रोगान्नृणांहरसुदुस्तरान् । विस्फोटकविशीर्णानांत्वमेकामृतवर्षिणी ॥५॥गलगंडग्रहा रोगा येचान्येदारुणानृणाम् । त्वदनुध्यानमात्रेण सीतले यांति संक्षयम् ॥ ६ ॥ न मंत्र नौषधं किंचित् पापरोगस्य विद्यते । त्वमेका शीतले त्राहि नान्यांपश्यामि देवताम्॥७॥मृणालतन्तुसदृशी नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् । यस्त्वांविचिंतयेद्देवितस्य मृत्युर्न जायते ॥८॥ श्रोतव्यं पठितव्यं वै नरैर्भक्तिसमन्वितैः। उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ ९ ॥ शीतलाष्टकमेतच्च नदेयमस्यं कस्यचित । किन्तु तस्मै प्रदातव्यंभक्तिश्रद्धान्वितायच॥१०

इति श्रीस्कंद पुराणे शीतलाष्टकं सम्पूर्णम्, इति विस्फोटक यत्न

मसूरिकायत्न१— मसूरिका निकलने के आरम्भ मेंही श्वेतचंदन को भिगोकर घिसके ७ दिन पर्यन्त पिलाओ तो बहुत थोड़ी मसूरिका निकलेंगी।

वातजमसूरिकायत्न१–दशमूल,रास्ना, आंवला, खश, धमासा गुरच, धनियां नागरमोथा इनका क्वाथ पिलाओ तो बादी की मसूरिका नष्ट हो ॥

२–मजीठ,बड़के अंकुर सिरसके वक्कल गुलालकी छाल इनको घीके साथ खरल करके या इन सबका घी बनाके लगाओ तो बादी की मसूरिका अच्छी हो ।

३–गुरच, महुआ, दाख, मूर्वा और अनारके वक्कल इन का क्वाथ गुडके साथ पिलाओ तो बादीकी मसूरिका अच्छी हो ।

पित्तजमसूरिका यत्न १–पटोलकी जडका क्वाथ या महुएका रस पिलाओ तो पित्तकी मसूरिका अच्छी हो ।

२–नीमकी छाल, पित्तपापरा, पाठ, पटोल, खश, दोनों चन्दन कुटकी, आंवला, अडूसा, और जवासे का क्वाथ मिश्रीकेसंयोग से पिलाओ तो पित्तकी मसूरिका अच्छी हो ।

कफजमसूरिकायत्न१ अडूसा, चिरायता, त्रिफला, जवासा पटोल नीमकी छाल इनका क्वाथ मधुके संयोग से पिलाओ तो कफकी मसूरिका नाशहो ॥

रक्तजमसूरिकायत्न१–रक्त मोचन कराओ तो रक्तज मसूरिका अच्छी हो ॥

मसूरिकामात्रयत्न १–पाठ, पटोल, कुटकी, दोनोंचंदन; खश आंवला, अडूसा और जवाखार इनका क्वाथ मिश्रीके योग से पिलाओ तो मसूरिका नाशहो ।

मसूरिका जयन्कंठस्थव्रणयत्न १–आंवला और महुएके क्वाथ में मधु डालकर इस रसके कुल्ले कराओ तो मसूरिका और गलेमें व्रण होगया होसो अच्छाहो ।

मसूरिकाजन्यनेत्ररुद्धयत्न१–महुएके पानीमें अरंड औटाकरइस

जलसे मसूरिकामें चिपकी हुई आंख धोओ तो आंख खुलजावेंगी

मसूरिकाजन्यनेत्रव्रणयत्न १–महुआ त्रिफला, दारुहल्दी, खश, मूर्वा, कमलगट्टा, लोद मजीठ इनको जलमें पीसकर लगाओतो मसूरिका जन्य आंखोंके फोडे अच्छे होकर फिर न होंगे ।

२–बड़,पीपल और गूलर इन तीनों के बक्कलों को पीसकर नेत्रों पर लेप करो तो अच्छे हो जावेंगे ।

३–जंगली कंडों की राख लगाने से मसूरिकामात्र अच्छी हो,

विशेषतः–मसूरिका के रोगी को साठी चांवल,मूंग, मसूर और मिश्री मनमानी दो परन्तु नोंनका बिशेष बचाव रक्खो यदि खिलाना चाहो तो थोड़ा सा सेंधानोन खिलाओ और सब आहार बिहार मर्यादा पूर्वक रक्खोगे तो मसूरिका से तुरन्त आरोग्य होगा ये सब यत्न भावप्रकाश से लिखे हैं ।

फिरंगवातयत्न १–१रत्ती शुद्ध रसकपूरको गेहूंके मसले हुएआटेकी गोलीके बीचमें दबाके वह गोली लोंगके महीन चूर्णसे लपट दो, और उसे दांत का स्पर्श बचाकर निगलवा दो फिर कत्था चूना रहित पान खिलाओ, रोगी को तेल, खटाई और नोन से पथ्य कराके श्रम और धूपका बचाव रक्खो तो इस तरह रस कपूरके सेवन करने से दो चार दिनमें ही फिरंगवात दूर होगी ।

२–१टंक शुद्ध पारा,१ टंक खैरसार, २ टंक अकरकरा और ३ टंक मधु इन सबको खरल करके ७ गोलियां बनालो १ गोली नित्य प्रातःकाल शीतल जलके साथ सेवन कराके नोन और खटाई का बचाव रक्खो तो फिरंगवात दूर होगा, इसे सप्तसारणी गुटिका कहते हैं ।

३–२टंक पारा, २ टंक आंवलासार गंधक और १ टंक चांवल

इनको खरल करके ७ पुडिया बना लो और प्रतिदिन १ पुडिया की धूनी इन्द्रिय को दो तो फिरंगवात ७ दिनमें दूरहो

४–पीले फूलवाली खरेंटीके पत्तोंका१टंक रस और एकटंकपारा दोनोंको रोगीके हाथोंमें (पारालोप होजानेतक,मलवातेजाओऔर वह पारा मिश्रित खरेंटीका रस हाथोंमें पूर्ण रूपसे भिद जाने पर (कुछ पसीना निकलने तक)हाथोंको आचसे तपाओ और नोन खटाई का बचाव रक्खो तो ७ दिन में ही फिरंगवात दूर होगी,

५–५टंक नीबूके पत्ते, ७ टंक हर्रे की छाल. ७ टंक आंवला, १ टंक हल्दी और १ टंक पारा इन सबको खरल करके प्रतिदिन ४ माशे शीतल जलके साथ सेवन कराओ तो७ दिनमें बाहिरी और भीतरी दोनों ओर की फिरंगवात दूर होगी ।

६–बावचीका ४ मासे चूर्ण मधुके साथ १५ दिन तक चटाकर नोन खटाई का बचाव रक्खो तो फिरगवात दूर हो ।

७—१टंक पारा कठसेला (खटसेरुआ के रसमें खरल करके अकरकरा, गूगल और गोघृत ये प्रत्येक पांच २ टंक मिलाओ और इसमें से १ टंक चूर्ण५टंक त्रिफलाका चूर्ण और ५टंक मधुके संयोग से२१दिन मर्दन करके चटाकर नोन और खटाईकापचाव रक्खो तो फिरंगवात दूर होगी.ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं

८—विरेचन और रक्तमोचन से भी फिरंगवात दूर होगी ॥

९—पारा,हिंगुल, नीलाथोथा, हीराकसीस और आंवलासार गंधक इन सबको प्रथम शुद्ध करके खरल करो और इस बुकनी को सूखीही फिरंगवात पर मसलो या जल के साथ लेप करो तो फिरंगवात दूर हो इसे सूतिकादि लेप कहते हैं ।

१०–२००बार धोया हुआ गोघृत लेप करो तो फिरंगवात नष्ट होगी ॥

११—१टंकेभर कड़ु तेल ५टंक मोम अधेलेभ बेरजाअधेले भर कपेला २ टंक सिन्दूर २ टंक शोरा २ टंक मुर्दासिंगी को महीन पीसकर पीतलके पात्रमें मंद २ आंच से पकाओ फिर ठंडा होनेपर हाथसे मलके कांच या चीनी पात्र तथा काष्ट के डब्बे में रखलो, इसकी पट्टी व्रणपर लगाओतो फिरंगजन्यव्रण उपदंश और घाव ये सब अच्छे होवेंगे, इसे मलहर (मलहम) कहते।

१२—आधपाव सिंदूर और सेरभर गोघृत दोनोंको भली भांति मथकर शरीरपर लेपकरो और ऊपर से पत्ते लपेटकर केवल क्षीर (खीर) मात्र खिलाओ तोव्रण, विसफोटक और फिरंगजन्य फोडे ये सब अच्छे होजायेंगे।

१३—पारा और शीसेकी कजली गेहूंके तुस (भुस्सा) इमलीके बीज (वियें) नीमके पत्ते और घरका धुवांसा (धोंसा) इनसबकोर, नीबू के रसमें खरलकर २ टंक प्रमाणकी गोलियां बनालो औ शरीरको वस्त्रसे ढांककर १ गोलीकी धूनी ७ दिनतकदो और ऊपरसे खीरके व्यतिरिक्त कुछ न खिलानेसे सब फिरंगवातनष्ट हो

१४—त्रिफला खैरसार और जायपत्रीको जलमें औटाकर इस जलसे मुख धुलाओ (कुरले) कराओ और धुआं (भाफ) दो तो फिरंगवात नाशहो।

१५-३टंक काला जीरा, ३टंक कूट, और १८ टंक पुराना गुड़ सबको खरलकरके १५ गोली बनाओ और इसमेंसे १ गोलीप्रभात और एक संध्याके समय खिलाकर घृतयुक्त गेहूं की रोटी खाने को दोतो फिरंगवात नाशहो,इसे फिरंग गजकेसरीरस कहते हैं।

१६—६मासे हिंगुल, १० मासे सुहागा, १ मासे अकरकराओर १० मासे मोमइनसबको खरल करके १ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनाओ और बूढ़े वृक्ष के कोयले को आगकर नित्य १ गोली की धूनी दोतो फिरंगवात नाशहो।

१७—मुंगना बड झाऊ नीम जलभंगरा कटियाली और कचनार इन सबके बक्कलका क्वाथ७ दिन तक पिलाओ तो फिरंग वात नाशहो ।

१८—हिंगुल और मैनासिल की १माशा बुकनी बेरीकेकोयलों की आगपर धूनी देकर निर्वातस्थान में कपडेसे ढांकदो तोफिरंग बात नाशहो ।

रसकर्पूरशांति—यदि रसकपूरके सेवनसे मुखके मसूडे फूल कर मुह आजावे तो पीपल,गूलर,छोटी जातिकाबड, बडीजातिका बड़ और वेत इनके बक्कल का क्वाथ बनाकर कुरले कराओतो मसूडे मिलकर मुखका शोथ पाक और पीडा आदिदूर होवेगा ।

२—२टक जीरा औ २ टंक खैरसार इनको जलमें पीसकर मुख के छालोंपर लगाओ तो रसकर्पूरजन्य मुखपाक शांति होगा ।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे स्नायुविस्फोटकमसूरिकाफिरंगवातरोगाणां यत्न निरूपणं नाम षट्त्रिंशत्तरंगाः ॥ ३६ ॥

क्षुद्ररोग ।

अजगल्लिकादिक्षुद्राणामामयानां यथाक्रमात् ।
मुनिरामतरंगेऽस्मिन् कथ्यते रुक्प्रतिक्रिया ॥ १ ॥

भाषार्थः—इस सैंतीसवें तरंगमें अजगल्लिका प्रभृति क्षुद्ररोगों (छोटेरोगों)की चिकित्सा वर्णन की जावेगी ।

अजगल्लिकादिक्षुद्ररोगयत्न१—अजगल्लिका फुनसियोंका रक्त मोचन करानेसे वे सब अच्छी हो जावेंगी ।

२—पक्वव्रणयत्नों (पहिले कहेगये हैं) सेभी अजगल्लिकादि फुनसियां शमन होवेंगी ।

३—फिटकरी सोंफका खार जलमें पीसकर लेपकरो तो अजग, ल्लिकादि फुनसियां अच्छी होवेंगी ।

४–मैनसिल, कूट और देवदारुको जलमें पीसकर लेपकरो तो वे फुनसियां पक जावेंगी तब शस्त्रसे चीर पीव निकालके मलहम की पट्टी लगादो तो अजगल्लिकादिफुनसियां जाती रहेंगी ।

विदारिकायत्न१–सहजना और देवदारु को जलमें पीसकर लेप करो तो विदारिका अच्छी होगी ।

इरिवेल्लिकायत्न१–पित्तजविसर्पके यत्न से येभी नष्टहोंगी ।

पनसिकायत्न१–प्रथम नीमके पत्तोंको बांधकर इसे पकाओ तदनंतर मैनसिल कूट हलदी और तिल्लीका लेप कर पूर्ण रूप से पकाओ तब शस्त्रसे चीरकर पीव निकलवाकर ऊपरसे मलहमकी पट्टी चढादो तो पनसिका अच्छी हो जावेगी ।

पाषाणगर्दभयत्न१–प्रथम जोंक लगाकर रुधिर निकलवादो या उष्ण लेप करो तदनंतर व्रणके समान यत्न करोतो पाषाणगर्दभ अच्छी होगी ।

वल्मीकयत्न१–प्रथम पकने पर चीरकर नोन और चित्रक लेप करो और सर्वथा पीव निकल जानेपर अर्बुदरोगके यत्न करो तो वल्मीक अच्छी होगी ।

२––जोंकसे रक्तमोचन कराओ तो वल्मीक अच्छी होगी ।

३––कुल्थीकी जड, गुरच.किरमालेकी जड,नोन,दारचूणी और निसौत को जलके साथ पीसकर उष्णकरो और थोडा घी मिलाकर लेप करो पकनेपर चीरकर मुरदार मांस निकाल डालो और व्रणके मलहमकी पट्टी आदि उपाय करो तो वल्मीक जाय ।

४––मैनसिल, इलायची, रक्तचंदन,अगर,कूट, भिलावा, नीमके पत्ते, चमेलीकेपत्ते, इन सबको तेलमें पकाकर वह तेल लगाओ तो शोथयुक्त वल्मीक फुनसी अच्छी होवेंगी ।

कक्षा तथा अग्निरोहिणीयत्न १-उत्पन्न होतेही रक्तमोचनकरा ओ तो दोनों अच्छी होवेंगी।

२-पित्त विसर्पके यत्न करो तो दोनों अच्छी होवेंगी।

३-देवदारु मैनासिल और कूट इनको जलमें पीसकर उष्णकर। के लेप करो तो बगलबिलाई (कांखोलाई) और अग्निरोहिणी दोनों अच्छी होंगी।

४-देवदारु, मैनासिल और कूट इनको पीसकर गरम करके सहती २ बांधो तो बगलबिलाई और अग्निरोहिणी अच्छी होगी।

अवपाटिकायत्न १-चिकनी वस्तुका सहता सहता सेक करो तो अवपाटिका अच्छी हो।

निरुद्धप्रकाशयत्न १-चूकेके रसमें तेल पकाकर इस तेलको लगाओ तो निरुद्धप्रकाश अच्छा हो।

२-शूकरकी मेद [चर्बी] का सेक करो तो निरुद्धप्रकाश दूरहो

सन्निरुद्धगुदयत्न १-वातध्वंसक या साधारण तेलका सहता २ सेक करो तो सन्निरुद्धगुद अच्छा हो।

वृषणकच्छयत्न १-राल कूट, सेंधानोन और सरसों को जलमें महीन पीसकर उबटन कराओ तो वृषणकच्छुरोग दूरहो।

गुदभ्रंशयत्न १-गोघृतआदि चिकने पदार्थोंका सहता २ सेक करो तो गुदभ्रंश दूरहो।

२-कमलनी के पत्तोको सुखाकर चूर्ण करलो और इसमें से २ टंक चूर्ण मिश्रीके साथ नित्य खिलाओ तो गुदभ्रंश अच्छाहो।

३-चूहेके मांसका घी [चर्बी] निकली हुई कांछपर लेपकरोतो कांछ निकलना गुदभ्रंश अच्छाहो।

४-डांसरे, चित्रक, कूगरुग, बेलकागूदा पाठ और जवाखार इनका २ टंक चूर्ण गोकी छाछके साथ सेवन कराओ तो गुदभ्रंश अच्छाहो।

५-चूहेके मांस और दशमूलके क्वाथमें तेल पकाकर इस तेलका लेप करो तो गुदभ्रंश, गुदाशूल और भगंदर ये सब नष्ट हों, इसे मूषक तेल कहते हैं।

६-मूषक तेल की क्रिया है उसी मुवाफिक छछूंदर का तेल बना कर लेप करो तो गुदाभ्रंश नाश हो।

७-सम्भालूकारस बेरकीजडकारस. दही, छाछ, सोंठ जवाखार और घी इन सब को एकत्र कर पकाओ और सब रसादिक जलकर घृत मात्र रहजाने पर छान कर इसमें से ५ टंक घी नित्य सेवन कराओ तो गुदभ्रंश नाश हो, इसे चांगेरीघृत कहते हैं।

शूकरदंष्ट्रयत्न १-जलभंमरेकी जड और हलदी को जलमें पीस सूअरकेकाटेहुए घावपर लगाओतो सूअरकी डाढजन्य पीडादूरहो

अलसयत्न १-पटोल, मैनसिल, नीबू, गोरोचन, कालीमिर्च तिल्ली, कटियाली का रस और कांजी में कडुआ तेल पकाकर इस का मर्दन करो तो अपल (खारुआ) रोग नाश हो।

२-कगगच के बीज हलदी, हीराकसी, महुआ, गोरोचन और हरताल इन सब को मधु के साथ महीन पीसकर लेपकरो तो अलस रोग नाश हो।

पाददारिकारोगयत्न १-तेलको तपा कर सहता २ सेक करो तो ब्याऊं (बिवाई) अच्छी हो।

२-मोम और जवाखार घी में मिलाकर गरम २ बिवाई में भरो तो अच्छी हो।

३-राल, सेंधानोन, मधु और घृत को तेलमें मथके ब्याऊं भरो तो ब्याऊं अच्छी हो।

४-मधु, मोम, गेरू, घृत, गुड़, गूगल और रालको महीन पीस कर ब्याऊं में भरो तो अच्छी होजावेगी।

५–धतूरेके बीज और जवाखार इनको कडुव तेलमें पकाकर इस तेल का मर्दन करो तो बिवाई अच्छी होगी।

कदररोगयत्न १–उष्ण तेलसे सेको या दूधमें गुड डालकर बांधो तो पांवमें कांटाया कंकरलगनेसे उत्पन्न हुई गाँठ (टाँकयाटीपन) अच्छी हो जावेगी।

तिलयत्न–तिलको किसी बस्तुसे रगडकर सरसों, सज्जी, हल्दी और केशरको जलके साथ महीन पीस के इसका उस रगडे हुए स्थान पर उबटन करो तो तिल मिट जावेगा।

माषयत्न १–सज्जी, चूना और साबुन को जलके साथ पीसकर मसे पर लगाओ तो मसा जाय।

उग्रगंधा (लहसन) यत्न १–लहसनके मंडलको छुरेसे रगड के सरसों हल्दी, कूट, सज्जी जवाखार और केशरके जलके साथ खरल करके उबटन करो तो उग्रगंधा (लहसन) मिट जावेगा।

२–अधेलेभर हिंगुल. अधेलेभर सिकाहुआ नीलाथोथा, १ टंक सिंदूर और ७ टंक राल इन सबको ६ टंकेभर गोघृत के साथ कांसके पात्र में तांबे या लोहेकी मूसली से तीन दिन पर्यंत रगड कर काजल सदृश होजाने पर लेप करो तो लहसन, मसे, तिल फोडे और खुजाल आदि सब नष्ट होवेंगे।

३—२ टंक काला जीरा, ६ टंक नौसादर, ७ टंक सीपका चूर्ण और २ टंक नीलेथोथे के चूर्णको अरणीके रसकी ७ पुट फिर जल भंगरेके रसकी २ पुट देकर धूपमें सुखाओ और बछिया के मूत्रमें गोली बनाकर बछडे के मूत्रमें घिसके लेप करो तो लहसन मसे और तिल ये सब विकार नष्ट होवेंगे।

व्यंग्यारोगयत्न १—जोंक आदि द्वारा रक्तमोचन कराओ तो व्यंग्या नाश हो।

१–सुपारी की भस्म, कत्था कपेला, मुर्दासिंगी, नीलाथोथा इन सब का भुर्का (चूर्ण) कर के लगाओ तो चप्पा अच्छा हो।

२–हर्रे को हलदीके रस साथ लोहपात्र में पीस कर उष्ण कर के लगाओ तो चेप्पा रोग अच्छा होगा।

कुनखरोगयत्न१–१ मासासार (कांतिसार) मधुके साथ सेवन कराओ या कुटकी का साधन कराओ तो कुनखरोग दूर हो।

कडूयत्न१–एक भाग आंवलासार गंधक २भाग पारा और तीन भाग नीलाथोथा इन तीनोंको गोघृतके साथ लोहपात्रमें लोहदंड से घोट कर लेप करो तो शरीर की खुजाल मात्र दूर हो।

पलितरोगयत्न१–२ टंक लोह का चूर्ण, २ टंक आम की गुठली २ टंक आंवला, २ टंक बडी हर्रे का चूर्ण, १ टंक बहेडेका चूर्ण इन सब का चूर्ण लोहपात्रमें जलभंगरेके रसके साथ २ दिन भिगो कर बालों में लेप करो तो श्वेत बाल काले होजावेंगे।

२–केतकी या केवडे की जड, मुगने के फूल, कुम्भेर की जड, लोहचूर, जलभंगरा और त्रिफला इन सब को तेल में पकाकर उस तेलको लोहपात्रमें भरदो और १ मासपर्यंत भूमि में गड़ा रहने दो फिर निकाल कर श्वेत बालों में लगाओ तो श्याम होजावेंगे,

३–त्रिफला, निम्बपत्र, लोह चूर और जल भंगरे का रस इन सबों को भेंडी के मूत्रके साथ पीसकर बालों पर लेप करो तो श्याम हो जावेंगे।

४– १ मासा पापडखार, १ मासा सिंदूर, १ मासा मुरदासिंगी और ८ मासे चूना इन सबको पानीके साथ पत्थर पर १ घडी तक रगडके(नखपर लगानेसे श्याम होनेपर बालोंमें लगाओ तो श्याम हो जावेंगे।

५–बडे बडे नये माजूफल भूभल में निर्दाग सेंको सेंकते हु

फट जाने पर निकाल लो फिर १ माजूफल, १ मासा शंखजीरा ४ रत्ती नीलाथोथा, ३ रत्ती नौसादर, २ रत्ती लौंग २ रत्ती फिटकरी और १ मासा लोहचूर इनसबको आंवलेके रसके साथ लोह पात्रमें लोहदंडसे १प्रहार तक घोटकर [नखपरलगानेसेकाला होने पर] श्वेत बालोंको प्रथम आंवलेके रससे धोओ और इसका लेप लगा कर ऊपरसे १ प्रहार पर्यंत अरंडके पत्ते बांधके पुनःआंवलेके जल से ही धो डालो तो श्वेत केश श्याम हो जावेंगे ।

६-खानेकाचूना या लुहारकी भट्टी की राख या कौडीकी भस्म इनमेंसे किसी एकको सीसेसे रगड कर कुछ गोपीचंदन और १मासा मुरद्दासिंगी मिलाओ फिर रगडकर (नख पर लगाने से काला हो जाने पर] श्वतेबालों पर लगाकर ऊपर से अरंड के पत्ते बांध दो तो श्वेत बाल श्याम हो जावेंगे ।

उंदरीयत्न १ -पटोल के पत्तों के रस में कुटकी पीसकर लेपकरो तो गये हुए बाल पुनः जम [ऊग] आवेंगे ।

२-हाथी दांत की राखको बकरीके दूधमें मिलाकर लगाओ तो गये हुए बाल पुनः आवेंगे ।

३-कमलनाल, दाक्ष, तैल, घी, और दूध इन सब को इकट्ठे खरल कर के लगाओ तो बाल पुनः जम आवेंगे ।

४-चमेली के पत्ते कणगच की जड, कनेरमूल (जड) और चित्रकाको तेलमें पकाकर उस तेलका लेप या मर्दन करो तो बाल ऊग आवेंगे ।

चांईयत्न १-अधजली चिरोंजीको जलमें पीसकर लेपकरो तो चांई दूर होवेंगी, ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं,

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे अजगल्लिकादिक्षुद्र रोगाणां यत्न निरूपणं नाम सप्तत्रिंशत्तरंगः ॥ ३७ ॥

शिरोरोग. नेत्ररोग।

शिरोरुजां नेत्ररुजां चिकित्साश्च यथाक्रमात्॥
वसुवैश्वानरे ह्यत्र तरंगे कथ्यते मया॥ १॥

भाषार्थः—अब हम इस ३८वें तरंगमें शिरोरोग औरनेत्ररोग की चिकित्सा क्रमपूर्वक लिखतेहैं।

वातजशिरोरोगयत्न १—वातहारी तैल या साधारणतैलकेमर्दन औरवातहारिणी औषधोंके खानेसे वादीका सिर दर्द नाश होगा।

२—स्वास, कुठाररस की नास सुंघनी दो तो सिरकी नाना प्रकारकी पीड़ा शांत होगी।

३—उर्दके आटेकी रोटी बनाकर १ पहर तक सिरपर बांधो तो सिरकी वातसम्बन्धी पीड़ा नष्ट होगा।

४—उर्दके सने हुए आटेसे सिरपर ८ या १६ अंगुलीकी ऊंची बाड़ी (पार.दीवार) बांधकर उसमें उष्ण तेल भरदो और४घड़ी या १ प्रहर रखकर निकाल डालोतो वातज शिरोरोग, कर्णरोग ग्रीवारोग और दाढके रोगभी पांच सात दिनके सेवनसे शमन हो जावेंगे. इसे शिरोवस्ति कहतेहैं।

पित्तजशिरोरोगयत्न १—चन्दन और कमलगट्टेको शीतलजल के साथ पीसकर लेप करो तो पित्तका शिरोरोग शांत होगा।

२—१०० वार धोये हुए गोघृतको मस्तकपर लेप करो तो पित्त का शिरोरोग शांत होगा।

३—खार, कुठाररस, केशर, मिश्री और चन्दन को बकरी के दूधमें पीसकर लेप करो तो पित्तका शिरोरोग दूरहो।

कफजशिरोरोगयत्न १—लंघन भूख या कफनाशक औषधियोंके उष्ण लेपसे शिरोरोग शांतहो।

सन्निपातज शिरोरोगयत्न एक सन्निपातनाशक औषधोंके लेप और भक्षणसे सन्निपातका शिरोरोग शांत होगा

रक्तजाशिरोरागेयत्न एक पूर्व लिखित पित्तज शिरोरोगकेयत्नों से या सिरकी फस्द खुयवाने से रक्तका शिरोरोग नाश होगा

क्षयजशिरोरोगयत्न एक-क्षीणतानाशक और बलवर्द्धकऔषध के सेवन और यत्नोंसे क्षीणताका शिरोरोग शांतहोगा।

कृमिजशिरोरोगयत्न-एक सोंठ,मिर्च,पीपल,किरमालेकी जड और सहजनेके बीजोंको बकरीके दूधमें महीन पीसकर नासदोतौ मस्तककी कृमि नाश होकर पीडा शांत होगी।

२-अरंडकी जड, तगर, सोंफ सेंधानोंन, जीवंती,रास्ना जल भंगरा, वायविडंग, सोंठ मुलहटी, इन सबसे चौगुनाजलभंगरेका रस,चौगुना बकरीका दूध और आठगुनातेल इनसबको कडाहीमें मंद २ आंचसे पकाकर रसादिक जल के तेलमात्र रहजानेपरछान लो और इसमें से ६ बूद तेल रोगीकी नाक में टपका करनास दोतो शिरोरोग मात्र दूर होकर दंत और नेत्ररोग भी दूर होवेंगे, इसे षडबिंदु तेल कहते हैं

३—सोंठ और गुड जलमें पीसकर नासदो तो सर्व शिरोरोग नाश होंगे।

सूर्यवर्तीशिरोरोगयत्न १-दूध और घी मिलाकर नासदो तो सूर्यावर्तशिरोरोग (आधाशीशी) शान्तहो

२—गुडके घीमें सेंके हुए अपूप (मालपुआ) या क्षीर खिलाओ तथा तिलोंसे सेंक करो तो सूर्यावर्त नष्टहो।

३-जलभंगरे का रस और बकरी का दूध धूप में उष्ण करके नासदो तो सूर्यावर्त नाशहो।

४-सिंगीमुहरा, अहिफेन (आफू, अफीम) अर्क मूल, श्वेत

रेकामूल, सोंठ, कूट लहसन, और हींग को गोमूत्र में पीसके तपाके लेप करोतो सूर्यावर्त शान्तहो।

५–विरचेन दो या उष्ण २ स्निग्ध भोजन कराओ या मिश्री दूधके योगसे कच्चे नारियल का जल पिलाओ तो सूर्यावर्त जाय

६–वायविडंग और काले तिल पीसकर लेपकरो तो सूर्यावर्त शांतहो।

अनंतबातशिरोरोगयत्न१–सूर्यावर्त के उपर्युक्त सर्व यत्न अनंत बातको लाभदाता हैं।

२–मधुके योगसे घीसे सिके मालपुए खिलाओ या माथेकीनसों का रक्तमोचन कराओ अनंतवात शांतहो।

३–हर्रकीछाल,बहेडा, आंवला, हलदी, चिरायता, गुरच नीमकी छाल और गुड इनका क्वाथ पिलाओ या नासदो तो अनंतवात नेत्रपीडा.कनपटी,और आधे सिरकी पीडा (आधाशीशी)दूरहो इसे पथ्यादि क्वाथ कहतेहैं।

कपालकृमियत्न १–कडुवे ककोडे (कटहर सदृश छोटासाफल जिसके अंगपर गोखरूकेसे कांटे होतेहैं) के पत्तोंकी नासदोतो कपाल के कीडे नष्ट हो जावेंगे ये सब यत्न वैद्यवल्लभमें लिखेहैं

शंखकशिरोरोगयत्न १–दारुहलदी,मजीठ,गौरीसर,खश,हलदी कमलगट्टे इन सबको शीतल जलके साथ महीन पीसकर कनप टीपर लेपकरो तो कनपटी की पीडा शांतहोगी।

२–शीतल जलके साथ शीतल औषधों का लेप करोतो शंखक नाशहो।

३–एक भाग सिंगीमुहरा २ भाग मुलहटी;और २ भाग उडदइन तीनोंको पीसकर एक सरसों प्रमाण सुंघाओ तो शंखकादि सर्वशिरो रोग नाशहोंगे।

शिरोरोगमात्रयत्न—एक आंवला,सीपका चूना और नौसादर को हथेली पर मसलके सुंघाओ तो सर्व शिरोरोग दूरहो।

२—सोंठ मिर्च,पीपली, पोहकरमूल, हलदी, रास्ना देवदारुऔर असगंधका क्वाथ पिलाओ तो सब शिरोरोग नाशहोंगे।

३—मिश्री—और अनारकी कलीको पीसकर सुंघाओ या मुचकुदके पुष्पों को पीसकर लेपकरो तो सर्व शिरो रोग नाश होंगे।

४—कूट और अंरडमूलको कांजीमें पीसकर लेपकरोया देवदारु तगर.कूठ खश सोंठ और तिलोंकी कांजीमें पीसकर लेपकरो तो मस्तककी समस्त पीडा मात्र नाशहोगी।

अर्द्धावभेद शिरोरोगयत्न एक मिश्री और केशरको घीमेंतलकर नास दो तो अर्द्धाव भेद आधाशीशी कनपटीभौंह नेत्र और कानकी पीडा नाशहोगी ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं।

२—मिश्री और मैनफलको गोमूत्रमें पीसकर नासदोतो आधाशीशी नष्टहो।

३—खरहा(शशाखरगोश) कामांसरस चर्बीकेसाथभोजनकेपहिले ७ दिन पर्यन्त पिलाओ तो आधाशीशी आदि शिरोरोग नाश हो जावेंगे ये सब यत्न वैद्य रहस्यमें लिखेहैं।

४—चंदन नोंन और सोंठको जलमें पीसकरलेप करोतोआधाशीशी आदि शिरोरोग नाशहो।

५-आमकी छालको जलके साथ या जलँभगरा और कूठको घृतके साथ पीसकर लेप करो तो आधा शीशी नाशहो।

६-पीपली मिर्च, लादको सूखी या लवँग मिर्च और हींगको जलके साथ पीसकर नास दो तो आधाशीशी नष्ट हो।

७-पीपल, आंवला आंधाझार, सरसों और आंकडेके बीजों को शीतल जलमें पीसकर लेपलगाओ तो आधाशीशी शिरोरोग नाशहो।

८–अर्द्धावभेद शिरोरोग नाशक सिद्धमंत्र "ॐ नमोकाली देवी किलकिलेवासी मूधोभ्यासे हनुमन्त वीर हांकमारे आधी शीशी अर्धकपाली नाशे, ज़ाजारी पापनी जाजारी हत्यारिन जावे तो तेरे गुरु की आज्ञा हनुमन्त वीर की आज्ञा गरुडपंखकी आज्ञा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा,, इस मंत्र को कृष्णपक्ष की चतुर्दशीके दिन शक्त्यनुसार जाप करो तो सदा सिद्ध रहेगा सो इस मंत्र से मस्तक को २१ वार मंत्रित कर शनैःशनैः फूंक देते जाओतो आधीशीशी निश्चय अच्छी हो जावेगी।

१–"ॐ नमो आधाशीशी हूँहूँकारी पहरहारी खमू मूद पाट ले मारी अमुकारे शीशरहे महेश्वरकी आज्ञाफुरे ॐ ठंठं स्वाहा,, यह दूसरा मन्त्र भी २१ बार पढकर मस्तक पर अंगुली फेरते जाओ तो आधाशीशी दूर होजावेगी।

केशवृद्धियत्न १–छडछडीला, कूट; काले तिल, गोरीसर कम लगट्टे, मधु और दूध इन सब को इकट्ठे खरल करके सिरपर लेप करो तो वाल बहुत बढेंगे।

२–गुंजा (चिरमू)- जलभंगरेका रस, इलायची, छड और कूट इन सब को तेलमें पकाकर उस तेलका मर्दन करो तो सिरके बाल बहुत होंगे।

३–छड, खरेटी आंवले, कूट और मोरछली की छाल इनको जलके साथ महीन पीसकर लेप करो तो वाल बढेंगे।

नेत्र रोगयत्न १–लंघन, लेप स्वेदकर्म, सिरकारक्तमोचन कराना और आश्योतन कर्म[1] इत्यादि यत्नों से नेत्रोंके सबविकार नाशहों

१ आख खोलकर औषध के रस को ८ बूंदें टपका दो शीतकाल में उष्ण तथा उष्ण काल में शीतल औषधों का प्रयोग करो जो वातनेत्र हों तो तीखी और कफ जन्य हों तो तीखी खारी या उष्ण औषधि डालो यह कर्म रात्रि को नहीं वरन दिन को करना योग्य है। इसे आश्च्योतनकर्म कहते हैं

२-पठानी लोद का चूर्ण घी में सेककर उसको जल से सिक्ताव दो तो नेत्रों का बात रोग दूर होगा ।

अरंड की जड, पत्र और छाल का क्वाथ बकरीके दूध में औटा कर रस जलके दूधमात्ररह जानेपर १०० तक गिनने पर्यंत उस तक दूध की धार नेत्रों पर मारो तो बातज नेत्ररोग नष्ट होगा ।

४-पानी के संयोग से नीबू के पत्तों का रस निकालकर उस में लोद पीसो और उष्ण कर के लेप करो तो बात और रक्त पित्त नेत्र विकार नष्ट होगा ।

५-नेत्रोंमें स्त्रीके दूधसे आश्च्योतन (८ बूंद डालना) कर्मकराओ तो बात और रक्तपित्तका नेत्रविकार दूर होगा ।

६-बातप्रकोप से नेत्रों में खुजाल चलके बहुत यत्नोंसे भी अच्छा न हो तो ललाट का रक्तमोचन कराओ या भौंहके ऊपर दाग दो तो नेत्र की खुजाल बन्द हो जावेगी ।

७-सहजना या नीमके पत्तोंकी पींड (लुगदी) बांधोतो कफकी खुजाल बन्द होगी ।

पठानी लोद और मुलहटी का चूर्ण घी में सेंककर बकरी के दूध में पकाओ और इस दूध से नेत्रों को तर्पण (धारा मारना) कराओ तो उष्णता और रक्तका नेत्ररोग जाय.

९-त्रिफला,लोद,मुलहटी,मिश्री और नागरमोथा इनको शीतल जलमें पीसकर इससे तर्पण कराओ तो रक्तज नेत्ररोग जाय ।

१०-बकायन या आंवलेके पत्तों की लुगदी बांधो तो उष्णता की खुजाल नष्ट होगी ।

११-त्रिफला और लोदको कांजीके जलमें पीसकर घी में

१ इने तर्पणकर्म कहते हैं, १ सेक, २ आश्च्योतन, ३ पिंड, ४ विडालकर्म ५ तर्पण ६ पुटपाक, ७ अंजन और ८ शस्त्रक्रिया ये आठों काम बडी सावधानी से करने चाहिये,

तलो और इसकी पींड आंखोंपर बांधो तो उष्णता और कफ की खुजाल नष्ट होगी ।

१२–सोंठ नीमके पत्ते और सेंधानोन पीसकर नेत्रोंपै पीड़ बांधो तो नेत्रों की खुजाल और शोथ नाशहो ।

१३–नेत्रोंकी गुहांजनी (गोहरी, आंखपरकी फुडिया)कोशस्त्र से चीरकर घीसे सेको फिर ऊपरसे मैनसिल,हरताल तगर और मधुको पीसकर लेप चढाओ तो गुहांजनी मिट जावेगी ।

१४–कमलगट्टा,सहजनेके वीच और नागकेशर इनको पीस कर अंजन दो तो नींद नहीं आवेगी ।

१५—कालीमिर्च को मधु या घोड़े की लारके साथ पीसकर अंजन दो तो नींद नहिं आवे ।

१६—मूंगा, कालीमिर्च, कुटकी वच और सेंधानोन बछियाके मूत्रमें घिसकर अंजन करो तो तंद्रा (झपकी)नाशहो।

१७—जमालगोटेकी बीजीको नीबूके रसकी २१ पुटदेकर गोली बनाओऔर मनुष्य की लार में घिसकर अंजन करोतो सर्पादिका विषभी नाश होकर मृत मनुष्यभी जीवित होना सम्भव है।

१८–अत्तारकी दवा और बडी हरों को पानीमें घिसकर लेप करो तो बात पित्त; तीनोंका नेत्राभिष्यंद (आखें आता) नाशहोगा ।

१९—निर्मली के फल मधु में घिसकर कपूरके संयोगसे अंजन करो तो नेत्र निर्मल (स्वच्छ)हो जावेंगे।

२०–निर्मलीके फलोंको जलमें घिसकर अंजन दो तो नेत्र स्राव (बहता हुआ जल) नाशहो ।

२१–ओल (वमूसनी,पागलवमूल) कंटवमूलके पत्तोंके गाढ़े क्वाथ में मधु मिलाकर अंजन करो तो नेत्रस्राव नाशहोगा ।

२२–साठीकी जड़को स्त्री के दूध में घिसकर अंजन करो तो नेत्रोंकी खाज दूरहो इसीप्रकार मधुकेसाथ आंजनेसेनेत्रस्राव घृत के साथ आंजने से फूली तेलके साथ आंजने से तिमिर और कांजी के साथ आंजो तो रतौंधभी नष्टहोगी।

२३–२टंक गिलोय का रस, १ मासे सोंठ और एक मासे सेंधानोंन कोमहीन पीसकर अंजन करो तो मोतियाबिंद, तिमिर, धुंध और नेत्रकांच आदि समस्त नेत्र बिकार नाशहोंगे।

२४–राल, चमेली के फूल, मैनसिल, समुद्रफेन, सेंधानोंन, काली मिर्च और गेरूको मधुके साथ महीन पीसकर अंजन करो तो नेत्रों की खुजाल नाशहोकर झडे हुएरोम जम आवेंगे।

२५–चीनियां कपूरको बडके दूधमें पीसकर अंजन करो तो दो मासमें फूली कट जावेगी।

२६–नीलाथोथा, सोनामुखी, सेंधानोंन, मिश्री, शखकी नाभि, गेरू, कालीमिर्च और समुद्रफेन को मधु के साथ पीसकर अंजन करोतो तिमिर, नेत्र कांच और फूली नष्ट होगी।

२७–आँवलेकी बीजी, बहेड़ेकी बीजी और हरेंकी बीजी को महीन पीसकर अँजन करोतो नेत्रोंका बहाव औरबातरक्त नाशहो

२८–रसोत, दोनोंहलदी, चमेलीके पत्ते या फूल और नीमके पत्तोंका गोबरके रसमें पीसकर लेप करोतो रतौंधी नाशहोगी।

२९–८० तिल पुष्प, ६० पीपली बीज, ५० जबेली (मारवाडमें प्रसिद्ध) पुष्प और १६ मिर्चको पीसकर गोली बनाओ और जलमें घिसकर अँजन करो तो तिमिर, अर्जुन, फूली और माँस बृद्धि ये समस्त रोग नाशहोंगे इसे रोपणी गुटिका कहते हैं।

३०–शूकर दँत, गौदन्त, गर्दभदन्त, शँखकीनाभि, निर्वंधा,

(बीध बिना) माती और समुद्रफेनको महीन पीसकर अंजनकरो तो फूली आदि समस्त नेत्ररोग नष्ट होंगे,इसे दंतवर्ती कहतेहैं।

२१–कडगचके बीजोंके चूर्णको टेसूके रसकी बहुतसी पुटदेकर गोलियां बनाओ और जलमें घिसकर नेत्रोंमें अंजन करोतोफूली आदि समस्त नेत्र विकार नष्ट होंगे इसे लेपनीगुटिका कहतेहैं।

२२–शंखकी नाभि, बहेडेकी बीजी हर्रकी बीजी, मैनसिल पीपल,मिर्च कूट और बचको बकरी के दूध में पीसकर नेत्रों में अँजन करो तो फूली,मांसवृद्धि,नेत्राभिष्यंद, पटल,रतौंधी और सर्व नेत्र रोग नष्ट होंगे इसे चन्द्रोदय गुटिका कहतेहैं।

२३–नेत्ररोगीको निर्वात स्थानेंमे पीठके बल (चित्ता)सुलाकर उसके नेत्रोंके आसपास उर्दके मलेहुए आटेकी २अँगुल ऊँचीदीवार सी बनादो कुछ २ तपाहुआ या १००वार का धोया हुआ घृत तथा दूध इस दीवार के मध्य (आंखों में) भरके १०० गिननेके समय तक भरा रहने देतो नेत्रवक्रता,पक्ष (वरौनी) का झडना अनामिष (पलक न लगना तिमिर) फूली खुजाल और शिरा रोग ये सब विकार नष्ट होंगे।

२४—पठानी लोद,फिटकरी,रसौत, मुलहटी प्रत्येक १ माशा को ग्वार पीठेके रस या पोस्त के रस या जलमें पीसकर पोटली बनाओ और नेत्रों पर बारम्बार फेरोतो नेत्र अच्छे होंगे।

२५–मुलहटी गेरू,सैंधानोंन दारुहलदी और रसौतको जल में पीसकर लेप करो तो सब नेत्ररोग नष्ट होंगे।

२६–१ मासा अफीम, १ मासा फूलीहुई फिटकरी और एकमासा लोदको नीबू के रसके साथ लोहेकी कढाई में घोटके कुछ गर्मकर नेत्रों पर लेप करो तो नेत्ररोग तत्काल अच्छा होगा।

---

१ यह प्रयोग बादल उष्णकाल चिंता और भ्रम दशा में कदापि मत करो।

३७–लोहेकी कढाईमें नीबूका रस घोटकर लेप करो तो नेत्र भिष्पंदरोग अच्छा होजावैगा ।

३८–हर्रकी छाल. सेंधानोंन ,सोनागेरूको रसौतके जलमें पीस कर नेत्रोंपर लेप करो तो सर्व नेत्ररोग नष्ट होंगे ।

३९–काले सांपकी बसा (चर्बी)में शंखकी नाभि और निर्मलीको पीसकर अंजन दोतो मोतियाबिंद और कांचनष्ट होगी ।

४०–मुर्गीके अडोंके खोखला छिलके मैनासिल, कांच, शख की नाभि, चन्दन और सेंधानोंनको पीसकर अंजन करो तोमोतियाबिंद और फूली आदि नेत्रविकार नष्ट होवेंगे ।

४१—काली मिर्च, समुद्रफेनें, पीपली, सेंधानोंन और सुर्माये सब दादो माशे लेकर आत महीन पीसो और चित्रा नक्षत्र के दिन आंखों में अंजन दो तो फूली, खाज और कांच आदि सब रोग दूर हो जावेंगे ।

४२–खपरियाको पीसकर जलमें डुबादो और उसके ऊपर का पानी छानकर नीचे का गाढ़ा भाग सुखा लो इस सूखी हुई पपडी को त्रिफलाके रसकी तीन पुटें देकर इससे दशमांशकपूर मिलाओ अनन्तर दोनोंको पीसकर अंजन करोतो नेत्रके समस्त रोग दूर होजावेंगे ।

४३–सुरमाको तपाकर ७ बार त्रिफलाके रसमें ७ बार स्त्रीके दूधमें७बार गोमूत्रमें और ५बारपुनःस्त्रीके दूधमें डुबाकर महीन पीसके अँजन करो तो सर्व नेत्रबिकार नाश होवेंगे ।

४४–शुद्ध सीसा, जल, पारा, सुर्मा और इन सब से दशमांश भीमसेनी कपूर इन सबको महीन पीसकर अंजन करो तो सब नेत्ररोग नष्ट होंगे इसे नयनामृतांजन कहतेहैं ।

४५—सीसा गला गलाकर १०० बार त्रिफलाके रस, में ५०

वार जलभंगरेके रसमें, २५ वार सोंठके रसमें, ५० वार घृतमें २५ वार गोमूत्रमें, २५ वार मधुमें और २५ वार बकरीके दूधमेंडुबाडुबा कर अंतमें इसकी शलाका (सलाई.सीक)बनाओजोयहसीकसू खी ही नेत्रोंमें प्रतिदिनकरोतो नेत्रोंके सब विकार नष्ट होजायेंगे

विशेषतः—नेत्राभिष्यंद (नेत्रदुखनेआये)होतो ३ दिनतककच्चे नेत्रोंका यत्न मतकरोपश्चातपकजानेपर चौथेदिन अंजनादिऔष धकरोतो नेत्र अच्छे होजावेंगे. हेमन्त और शिशिरऋतुमे मध्याह्न समय ग्रीष्मऔरशरदमें मध्याह्न के पहिले वर्षामें आकाशस्वच्छ (निर्मेघ) होनेके समय और वसन्तऋतुमें चाहैं तबअंजनभरसक्ते हैं अंजन लगानेके लिये प्रथमबायीं पश्चात्दाहिनी आंखमेंअंजन भरो, उपरोक्त प्रथासे अंजन भरोतो शीघ्रही आरोग्य होजावेंगे।

वर्जितकर्म —नेत्रके रोगीको सुर्मा धारण. विशेष, घी. कषैली वस्तु.खट्टे पदार्थ औरगारिष्टान्न भक्षण.स्नान औरताम्बूलआदि उष्ण वस्तुओंका सेवन कदापि मत करने दो।

वाग्भट्टके मतसे मोतिया बिंद रोगयत्न—कच्चे मोतियाबिंदका जाला शलाका से निकलवाना वर्जित है परन्तु पक्क जाने पर जाला निकलवाने से कुछ हानि नहीं वरन लाभहीहै।

वर्जितरोगी—पीनस. कास, अजीर्ण.शिरोरोग. कर्णरोगऔरशू ल पीडासे पीडित भयातुर और वमन किया हुआइनमें से किसी भी दशामें रोगीहो तो उसका जाला मत निकालो।

जालनिष्कासनविधि—श्रावण कार्तिक और चैत्रको छोडअन्य मासोंमें नेत्रका जाला निकालो इन तीनों महीने में मत निकालो मध्यान्ह समयसे पहिलेही जाला निकालो दोपहर पीछे मत नि कालो जाला निकालते समय निर्वात स्थानका उपयोग करो जिसमें रोगी पवन से सुरक्षित रहे जाला निकालने के पूर्व

रोगीको जुलाव देकर शरीर शुद्धि करले। फिर सुन्दरहल्काभोजन देकर शरीर निरालस्य होजानेदो तब रोगीको आसन (पालथी) मारकर बिठाओ और उसके पीछे एक चतुर मनुष्य को बिठा कर रोगीको थम्भवाओजिससेवह हिलने न पावे इसप्रकारबिठाने पर अपने मुखकी भापसे नेत्रोंको फूंककरस्वेदितकरदो औरअंगूठे से नेत्रको मलकर नेत्रोंका मल इकट्ठा करलो, फिर सधेहुएहाथसे बडी चतुराई पूर्वक शलाकासे नेत्रके प्रांतभाग (गार) काजाला विदीर्ण करके समस्त जाला इकट्ठा करके बाहर निकाललो यहां तक कि जब पुतलीपर के मोतियाबिंदकी डीक (टिकडी बूंद, पटरा) निकलकर रोगीको उसी समय समस्त वस्तु यथार्थ दीखपडे तब नेत्रोंपर घीके फोहे (रुई) बांधकर चित्ता (सीधा) सुलादो उपरोक्त क्रिया होने पर उस रोगीको कांचके प्रतिबिम्बसेबचाओ औंधा सोना, शरीरया सिरहिलाना, छींक, खांसी, डकार थूकना दन्तधावन, स्नान, श्रम और जलपानं कार्योंकी विशेषतानहोनेदो यदिदैवबशात्होगी तोबडी सावधानी और स्वल्पतापूर्वकहोनेदो घृतादि गरिष्ठान्नका त्यागकरहल्काभोजनखिलाओ इसपथ्यको सात दिन तक करते रहो फिर कुछ घी डालकर हलके अन्नका लपटा (पतला, दालिया खिलाकरबात नाशक मिश्री आदि पदार्थ खिलाओ, वायु तेज (प्रकाश) तथा महीनवस्तु मत देखने दो. नेत्रोंकी शीतल दायक हरित वस्तुओं पर दृष्टि विशेष पडने दो और कुपथ्यसे बचाओ, यह कृत्य १ मंडल(४०दिन) पर्यंतकरो

यह सब हो चुकने पर मोतियाबिन्दु सम्बन्धी शीतल उपनेत्र (चश्मा एनक) सदैव लगाते रहो ऐसा करनेसे पुन मोतियबिंद कदापि न होगा यह सबबिधिवाग्भट्ट में लिखी है।

नेत्रप्रकाशकांजन१—हींगको दुडघलके पत्तोंके रसमें घिसकर

अंजन करो तो पाण्डुरोग (पीलिया) तथा कामला भी दूर होगी यह यत्न पांडुरोगमें लिखना योग्य था परन्तु नेत्र सम्बन्ध से यहां लिख दिया है।

२–बेल और तुलसी दोनोंके पत्ताका रस तथा इन दोनों के समान स्त्रीका दूध इन तीनोंके कांसेकी थालीमें गजबेली (उत्तम लोहे के घोटे) से २ प्रहर और ताम्बेके घोटेसे ३ प्रहर घोटकर अंजन लगाओ तो नेत्रशूल और नेत्रपाक दोनों नष्ट होवेंगे इसे नारायणाञ्जन कहते हैं।

३–सोंठ,हरेंकी छाल कुल्थी, खपरिया, फिटकरी, खैरसार और मांजूफल ये सब एक एक भाग तथा भीमसेनी कपूर,कस्तूरी और अविद्ध मोती ये सब आधे भाग लेकर इन सबको महीन पीसो और नीबूके रसमें ५ दिन खरल करके गोलियां बनालो जो इसकी गोलीको जलमें घिसकर अंजन करो तो नेत्रोंका तिमिर स्त्रीके दूधमें घिसकर अंजन करो तो फूली और पटल मधु में घिसकर अंजन करो तो नेत्रस्राव,गोमूत्रमें घिसकर लगाओ तो रतोंधी और जायपत्रीके रसमें घिसकर अंजन लगाओ तो नेत्रों की मांसवृद्धि होगी,इसे नयनामृतगुटिका कहते हैं।

४–अपमार्ग (आंधेझाडे) के पत्तोंको गोमूत्रमें पीसकर आधे भाग खपरियाके साथ खरल करो और इस खरल किये हुए पदार्थको जस्तेके टुकडोंके ऊपर छाप (लपेट) कर ऊपरसे कपड मिट्टी लपेट दो तदनंतर सूख चुकनेपर जंगली कंडोंकी आंचमें गजपुटमें फूक दो स्वांग शीतल हो चुकने पर पीसकर नेत्रों में अंजन करो तो झडे हुए पलक (बरौनी) पुनः जम आवेंगे

५–गधेकी डाढ घिसकर अंजन करो तो शीतलामें पडी हुई फूली फटकर नेत्र स्वच्छ हो जावेंगे।

६-आंवले और गन्धकसे मारे हुए ताम्बेका महीन पीसकर अंजन करो तो सबलबात और पटल आदि सब नेत्र रोग नष्ट होंगे ये सब यत्न वैद्यरहस्यमे लिखेहैं ।

७-५टंक शुद्ध नीलाथोथा और ५ टंक फूली हुई फिटकरी ५टंक पीपलीके (जलमें भिगोकर निकाले हुए) बीज और ५ मासे मिश्रीको महीन पीसकर अंजन करो तो फूली नेत्र स्राव और धुन्ध ये सर्व बिकार नष्ट होवेंगे ।

८-शंखकी नाभि, बहेडेकी बीजी हर्रकी छाल मनोसल पीपली, काली मिर्च, कूट और बचको बकरी के दूधमें खरल करके गोली बनाओ और सूखने पर जलमें घिसकर लगाओ तो तिमिर, पटल, कांच रतौंधी, फूली और मांसबृद्धि ये सर्व बिकार हीन हो जावेंगे इसे चन्द्रोदयगुटिका कहते हैं ।

९-हलदी, नीमके पत्ते पीपली, मिर्च, बायबिडंग नागरमोथा और हर्रकी छालको बकरीके मूत्रमें ३ दिन पर्यंत खरल करके गोलियां बनाओ और छायामें सूखने पर गोमूत्रकेसाथघिसकर अंजनकरो तो नेत्रकी कांच जलमें घिसकर लगाओ तो तिमिर मधुमें घिसकर लगाओ तो पटल और स्त्रीके दुग्धमें घिसकरके लगाओ तो फूली नष्ट हो जावेगी इसे चन्द्रप्रभा गुटिका कहतेहैं

१०-१भाग हर्रकी छाल २ भाग बहेडेकी छाल ४ भाग आंवलेकी छाल २ टकेभर शतावरी १ टकेभर लोहसार १ टंक मुलहटी, २ टंक तज ५ टंक सैंधानोन ५ टंक पीपली और इन सबोंके समान मिश्रीका २टंक चूर्ण मधु और घृतके संयोगसे४१ दिन पर्यन्त खिलाओ तो तिमिर पटल नेत्र काच रतौंधी फूली नेत्रस्राव और सबल वात आदि सर्व नेत्रबिकार नष्ट हो जावेंगे इसे द्वादशामृतहरीतं कहते हैं

११-सेरभर त्रिफलाका रस, सेरभर गुरचकारस, सेरभर आंवले का रस, सेरभर जलभंगरे का रस, सेरभर अड़ूसे का रस, सेरभर शतावरीका रस, सेरभर बकरीका दूध और आधसेर (कमलगट्टा त्रिफला मुलहटी, पीपली, दाख, मिश्री और कटियालीका) क्वाथ सेरभर गौघृत और २ सेर गौ दुग्ध इन सबको पकाकर रसादिक जलके घृत मात्र रहजाने पर छानलो और इस घृतमें से नित्य दो टकेभर खिलानेसे तिमिर, कांच, फूली, आदि नेत्ररोग तथा सर्व वायुजन्य रोग नष्ट होंगे, इसे महा त्रिफलादि घृत कहते हैं।

१२-१०मासे शुद्ध सफेदा महीन पीस कर भली भांति धोओ फिर तीनवार धो चुकने पर सुखाकर पीसलो और लडकी वाली स्त्री के दूधकी ५ पुटें देकर शुद्ध करलो पीछे इसमें ३ मासे अत्तार की औषध, १ मासा, कपीला, ४ रत्ती भीमसेनी कपूर, १ मासा श्वेत गोंद इन सब को गुलाबजल से खरल कर के बेरके समान गोलियां बनाओ और सूखने पर गुलाबजल या सामान्य जलके साथ घिस कर अंजन करो या लेप लगाओ तो उष्णताजन्य नेत्र विकार सर्वथा नष्ट हो जावेंगे।

१३-अब हम अन्त को समस्त मनुष्यों के सुगमता तथा निष्परिश्रम पूर्वक प्राप्त होने योग्य एक साधारण उपाय लिखते हैं।

मुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि दीयते ।
जातरोगा विनश्यंति तिमिराणि तथैवच ॥

भाषार्थः-शार्ंगधर में कहा है कि भोजन के पीछे आचमन करके उन्हेंन गीले हाथोंकी हथेली परस्पर घिसकर अपने नेत्रों पर नित्य फेरा करोतो तिमिरादि सर्व नेत्र विकार दूर ही भागते रहेंगे।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे शिरोरोग नेत्ररोग
यत्न निरूपणं नामऽष्टत्रिंशत्तरङ्गः ॥ ३८ ॥

कर्णरोग, नासारोग ।

मयात्र कर्णरोगस्य तथा नासामयस्य च ।
तरंगे नन्दरामे हि कथ्यते रुक्प्रतिक्रिया ॥ १ ॥

भाषार्थः–अब हम इस उन्तालीसवें तरंग में कान और नाक के रोगों की चिकित्सा यथाक्रम से वर्णन करते हैं ।

कर्णरोगयत्न १–अकाव (आंकडा) के पात्तोंको खटाईसे पीस कर रस निकालो इस रस में तैल और नोंन मिलाकर थूहर की लकडी में भरदो तदनन्तर इस लकडी को कपडमिट्टी करके पुट पाक रीति से उसका रस निकाललो, जो यह रस उष्ण कर सहता सहता कान में डालो तो कान का शूल नाश होगा ।

२–आंकडे के पत्ते घी लगाकर अग्नि से तपाओ और उन का रस निकाल कर कुछ उष्ण सहता हुआ कान में डालो तो कान का शूल नाश होगा ।

३–बकरी के मूत्र में सैंधानोन औटाकर सहता सहता कान में डालो तो कान का शूल दूर होगा ।

४–अरलु (अलागु) के रस में तेल पकाकर यह तेल सहता हुआ कान में डालो तो त्रिदोष कर्णशूल भी शांत होगा ॥

५–बेलकी जड का रस, सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, ओंधे झारेका खार, जवाखार, कूट और गोमूत्रको तेलमें मंद मंद आंच से पकाकर रस जल के तेल मात्र रहजाने पर छान लो और इसे कान में डालो तो बाधिर्य (बहरापन) कर्णनाद और कर्णस्राव आदि कानके सम्पूर्ण रोग अच्छे होजावेंगे, इसे बिल्वतैल कहतेहैं

६–कच्चे बिल्वफल के रस में सज्जी का चूर्ण डालकर पिलाओ तो कान की पीडा, बहरापन कान की जलन आदि कर्ण रोग अच्छे हो जावेंगे ।

७–मूली की जडका रस, मधु और तैल को तपाकर सुहाता२ कानमें डालो तो कानका बहरापन अच्छा होगा ।

८–आंवले, जामुन, महुआ, और चमेली के पत्ते तथा बडकी जडकी छाल इन सबका रस तेल में पकाकर यह तेल कान में डालो तो कान से पीवका बहाव बंद हो जावेगा ।

९–स्त्रीके दूध में रसौत घिसकर कुछ मधुके संयोग से कानमें डालो तो कानसे पीवका बहाव बंद हो जावेगा ॥

१०–कूट, हींग, दारुहल्दी, सौंफ, सौंठ, सैंधानोन इनका चूर्ण बकरे के मूत्र के साथ तेल में पकाकर यह तेल कान में डालो तो कानसे पीवका बहाव रुक जावेगा ।

११–समुद्र फेन, सुपारी की राख, और कत्थाको पीसकर कानमें डालो तो कानमें पीवका बहाव बंद हो जावेगा ।

१२–बडी सीपका चूर्ण तेलमें पका कर गह तेल कान में डालो तो कान का व्रण (फोडा) अच्छा हो जावेगा ।

१३–एक एक टकेभर आंवला सार गंधक, मैनसिल, हल्दी और धतूरे के पत्तों का रस इन सबको महीन पीसकर ८टके भर तेलके साथ पकाकर यह तेल कानमें डालो तो कानका व्रण अच्छा होगा

१४–बैंगनकी जड़का रस और सरसों का तेल मिलाकर कान को धुनी दी तो कानकी कृमिगिर जावेंगी, तथा उपरोक्त बारहों यत्नभी कृमि कर्णरोगके निवृत्यर्थ उपयोगी, होते हैं ।

विशेषतः–कर्णशोथ, कर्णार्श और कर्णार्बुद रोगोंकी चिकित्सा शोथ, अर्श और अर्बुद रोगोंमें कथित यत्नोंसे ही करो ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं ।

१५–सोंठ, पीपल, सेंधा नोंन, कूट, हींग, वच, लहसन और आकके पक्के पत्तों का रस ये सब तिली के तेलमें पकाकर यह तेल कान में डालो तो कानकी पीड़ा दूर होगी ।

१६-बडी मोटी सीप, पद्मकाष्ठ, हींग, तुम्बरू, सेंधानौंन, कूट और बिलोनेके चूर्णके क्वाथमें ७टकेभर कडुवातेल और इन सबके समान हुलहुलका रस डालकर मंद आंचसे पकाओ और सब रसादि जलके तेलमात्र रहजाने पर छानकर कानमें डालोतो कर्णव्रण कर्णस्राव, बाधिय और कर्णनादादि सब रोग अच्छे हो जावेंगे

१७-पावभर कूकरभंगरेका रस, हरफारेवडी (आंवले जैसी होती है) का रस चार पैसेभर लहसनका रस सौंफ वच कूट, सोंठ, मिर्च और लवंग (दो दो टंक) आधसेर बकरीका दूध और ५ टकेभर कडुवा तेल इन सबको एकत्र कर मंद आंचसे औटाओ, रसादि जलकर तेल मात्र रहजाने पर छानकर कानमें डालतो बहिरापन पीवका बहाव आदि कर्णरोग मात्र अच्छे हो जावेंगे ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें लिखे हैं ।

१८-शतावरी, असगंध, अरंडकी बीज और दूधको तिल्लीके तेलमें मंद आंचसे पकाओ और तेलमात्र रहजाने पर छानकर कानकी लोलक (लौर) में लगाओ तो लोलकका पकाव तथा पीडा आदि सब बिकार दूर होकर लोलकका छिद्र बढ जावेगा

१९-अष्टवर्गमें तेल पकाकर इस तेलका मर्दन करोतो पारिपोटिका नाम कर्णरोग अच्छा हो जावेगा ।

२०-जोंक लगाकर रक्तमोचन करादो कर्णोत्पातिरोग अच्छा हो जावेगा ।

२१-सुरमा काकुलहरी, वावची, और कंकपक्षी (मारवाड में प्रसिद्ध) का मांस ये सब तेलमें पकाकर कानकी लोलक पर लगाओ तो उन्मथरोग अच्छा हो जावेगा ।

२६-आम जामुन और बडके पत्तोंका क्वाथ तेलमें पकाकर वह तेल मर्दन करो तो दुःख बर्द्धन रोग कुशल होगा ।

२३–गौके गोवरके अधजले कंडे (छाना गोबरी उपली) की आंचसे सेको या कपूरको दूध तथा गोमूत्र में पीसकर लेपकरो तो कानकी लोलक अच्छी होगी ये सब यत्न भाव प्रकाशमें लिखेहैं

नासारोगयत्न१–कालीमिर्च, गुड और दही को मिलाकर खिलाओ तो पीनस नाम नासारोग अच्छा होगा।

२–कायफल. पोहकर मूल,सोंठ, काकडासिंगी पीपली, काली मिर्च और कलौंजी इनका२टंक चूर्ण अद्रकके रस के साथ खिलाओ या इसीका क्वाथ पिलाओ तो पीनस स्वरभंग. कफ श्वास और ये सब रोग नष्ट होंगे ।

३–कायफल हींग मिर्च लाख, इन्द्रयव, कूट, वच. वायबिड़ंग और सहजनेकी जडका क्वाथ पिलाओ तो पीनस जाय ।

४–सोंठ कालीमिर्च, पीपली, चित्रक. तालीसपत्र, डांसरिया अमलवेत, चव्य, जीरा, इलायची, तज और पत्रजका चूर्णइनसब को समान पुराने गुडमें मिलाकर २ टंक प्रमाणकी गोलियां बनालो इसमेंसे १ गोली नित्य १ दिन पर्यंत खिलाओ तो पीनस कफ और अरुचि ये सब नाशहो इसे व्योपादि गुटिका कहते हैं।

५–कटियाली दात्यूणी वच सहजने की छाल तुलसी पत्र सोंठ, मिर्च, पीपली, और सेंधानोंन इन सबकी तेल पकाकर तेलकीनास (सुंघनी) दोतो पीनस दूरहो इसे व्याघ्रीतेलकहतेहैं

६–सुंगनेकी छाल, कटियाली, निसोत, सोंठ, मिर्च, पीपल सेंधानोंन और बिल्वपत्रका रससबको तेलमें पकाकर,इस तेलकी नास दोतो पीनस जायगी इसे शिशुतेल कहते हैं ।

७–वायबिडंग सेंधानोंन, हींग गूगल वच और मैनसिल के चूर्णकी नासदो तो पीनसरोग जाय ।

८—भांगके पत्तों का रस और सेंधानोंन तेलमें पकाकर तेलकी नासदो तो पीनस जाय ।

९—जीरेका चूर्ण और घी शक्करके साथ नित्य खिलाओतो पीनस नष्ट हो ।

१०—रात्रिका सोते समय औटा हुआ अर्द्धावशेष जल नित्य पिलाओ तो पीनस नष्टहो जावेगी ।

११—घी गूगल और मोमका मिश्रणकर नाकके सन्मुख धूनी दोतो विशेष छींक आना बन्द हो जावेगा ।

१२—सोंठ कूट पीपल, बेलकागूदा, और दाखके क्वाथ में तेल पकाकर इसकी नास दो तो अधिक छींकें आना बंद हो जावेगा

१३—धमासा, पीपली, दारुहल्दी, औधझारेके बीज जवाखार क्रिरमालेकी गिरी (न हो तो बक्कल, और सेंधानोंन इनकाचूर्ण तेलमें लगाओ तो नासार्श नष्ट होगा ।

विशेषतः—नासार्बुद, नासाशोष, नासार्श, नासापाकादि नासा रोगोंके यत्न अर्बुद शोष अर्श पाकादिरोगोंमें लिखे अनुसार करें।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखण्डे कर्णरोगनासारोग यत्न निरूपणं नाम एकोन चत्वारिंशत्तरंगः ॥ ३९ ॥

मुखरोग ।

मायाननरोगाणां सुविचार्य यथाक्रमात् ।
तरंगेऽस्मसमुद्रे वै कथ्यते रुक्प्रतिक्रिया ॥ १ ॥

भाषार्थः—अबहम इस चालीसवें तरंगमें मुखके रोगोंकीचिकित्सा भली भांति विचारपूर्वक यथाक्रमानुसार लिखतेहैं ।

ओष्ठरोगयत्न१—जोंक लगाकर या फस्द छुडाकर ओष्ठ का रक्तमोचन कराओ तो ओष्ठरोग नाशहो ।

२-घृतमें शुद्ध मोम तपाकर इससे सेंक करो तो ओष्ठरोग नष्ट होगा।

३-तेल,घृत,मोम,और मेद (चर्वी) आदि स्नेह पदार्थोंमें मोम तपाकर इससे सेक करो तो ओष्ट रोग नाश हो।

४-शीतल औषधोंका लेप करोतो ओष्टरोग नाशहो।

५-प्रियंगुपुष्प, त्रिफला और लोदको स्नेहमें तपाकर सेंककरो या मधुके साथ खिलाओ तो ओठोंका रोग नाश हो।

६--ओष्ठोंमें व्रण पड जावै तो उनके यत्न पूर्वोक्त व्रणलिखित यत्नोंके समान ही करो।

विशेषतः-ओष्ठोंमें चूर्ण, अवलेह आदि औषधी अंगुलीसेलगाना चाहिये, इस क्रियाको प्रतिसारण कहतेहैं।

दंतमूलरोग १-मुखका रक्त मोचन कराके सोंठ, सरसों और त्रिफलाके क्वाथ से कुरले कराओ तो मसूडे अच्छे होजावेंगे।

२-हीराकसी, पठानीलोंद, प्रियंगुपुष्प, मैनासिल और तेज बल इनको मधुके साथ पीसकर मुँह में लगाओ तो मसूडे अच्छे हो जावेंगे।

३-तेल किंवा घीके कुरले कराओ तो मसूडे अच्छे होजावेंगे।

४-मुखका रक्तमोचन कराके पंचनोन जवाखार और मधुके क्वाथ से कुरले कराओतो दंतपुप्पुट नाम मसूडोंका रोग अच्छाहो

५—चिकने पदार्थ खिलाओ और तेलके कुरले कराओ तो दंत वेष्टि नाम मसूडों का विकार दूर होगा।

६—लोंग पतंग,महुआ,खारा,और मौरासिरी के बक्कलकाचूर्ण मुँहमें मलो तो चलदंत नाम मसूडों का रोग अच्छा होगा।

७-नागरमोथा, हर्रकी छाल सोंठ, मिर्च, पीपल वायविडंग और नीमके पत्तोंके चूर्णकी गोली गोमूत्रके साथ बनाकर छायामें

खाओ और सोते समय १ गोली मुँहमें रक्खोतो चलदन्तरोग दूर होकर दन्त दृढ़ होजावेंगे, इसे भद्रमुस्तादिगुटिका कहते हैं।

८-नीले फूलके कटसला (कठसेरुआ,) धमासा, खैरसार जामुनकी छाल,आमलेकी छाल मुलहटी और कमलगट्टा ये सब टके टकेभर चूर्ण कर १६ सेर जलमें औटाओ और चतुर्थांश रह जाने पर बकरी के दूध वा तेलमें पकाओ तदनन्तर रसादिकजल कर स्नेहमात्र रहजानेपर इसका कुरला २ घड़ी पर्यन्त मुहमें रक्खो तो दांत दृढ़ होजावेंगे. इसे सहचराद्य तेल कहते हैं।

९-मुंहका रक्तमोचन कराके लोद, नागरमोथा और रसौतका चूर्ण मधुके साथ मसूड़ोंपर लगाओ और उत्तमदूधके कुरले कराओ तो सौषिर नाम मसूड़ों का रोग अच्छा होगा।

१०-मसढ़ों का रक्तमोचन कराके सोंठ,सरसों. और त्रिफलाके क्वाथ से कुरले कराओ तो परिदर और उपकुश नाम मसूड़ोंके दोनों रोग नष्ट हों।

११-रक्तमोचन कराके गूलर के पत्ते. मधु. नोंन. सोंठ, मिर्च और पीपलके क्वाथसे कुरले कराओ और ऊपरसे लवण तथा कोई अन्य क्षार लगा हो तो मसूड़ों के व्रण अच्छे होकर उनकी कृमि नष्ट हो जावेगी।

१२-प्रथम मसूड़ोंका मास काटकर मधुके कुरले कराओ तदनंतर वच, तेजवल पाठ सज्जी, जवाखार और पीपलका चूर्ण उन पर लगाओ तो खालिवर्द्धन नामी दंतमूलरोग नष्ट हो।

१३-शस्त्रसे मसूड़ोंकामांस काटकर पटोल नीमके पत्ते और त्रिफला के क्वाथसे कुरले कराओ तो पंच नाड़ीव्रण नामी मसूड़ोंके रोग नष्ट हो जावेंगे।

१४-चमेली के पत्ते,कटियाली,धतूर के पत्ते मजीठ गोखरूका

पचांग, लोद खैरसार, और मुलहटीके क्वाथमें तेल पकाकर इसके कुरले कराओ तो व्रणादि मसूडों के समस्त रोग दूर होवेंगे,

दंतरोगयत्न १–लोद, कायफल, मजीठ, कमलगट्टा, कमलकेसर रक्तचंदन और मुलहटी ये सब टके टकेभर लेकर क्वाथ बनाओ फिर इस क्वाथमें सेर भर लाखका रस, पावभर तिलीका तेल और पावभर गोदुग्ध डालकर मंद२ आंचसे औटाओ रसादिके जलकर तेल मात्र रहजानेपर १ घडी पर्यंत इसका कुरला मुंह में रखाओ तो दांतोंके आठों रोग दूर होकर दांत दृढ हो जावेंगे इसे लाक्षादितेल कहते हैं।

२–बातहारी तेलके कुरले कराओ तो दांत दृढ होजावेंगे।

३–हींगको उष्ण करके दांतोंके बीचमें दबाये रक्खो तो दांतों की कृमि मर जावेंगी,

४–काकलहरी, नीलकी जड और पटोलकी जड इनके चूर्ण से दांतोका मंजन कराओ तो दांतोंके कीडे मर जावेंगे।

५–सांभरनोंन, नरकचुर सोंठ और अकरकरा इनका चूर्ण दांतों में रगडो तो खट्टे हुए (आंवे) दांत अच्छे हो जावेंगे।

६–पंचनोंन, नीलाथोथा, सोंठ, मिर्च पीपली, हीराकसी, पीपला मूल, माजूफल और वायविडंग इनके चूर्णसे दंतमंजन करवाओ तो सम्पूर्ण दंतरोग अच्छे हो जावेंगे।

७–हीराकसी, मांजूफल, सोनामक्खी, लोहचूर, मजीठ त्रिफला और फूलीहुई फिटकरी इनके १मासे महीन चूर्णसे प्रति दिन सात दिन पर्यंत दंतमंजन कराओ तो सब दांतोंके रोग दूर होकर दृढ हो जावेंगे।

८–सिकी फिटकरी, नीलाथोथा, तेजबल पपडिया कत्था, सोंठ, मिर्च पीपल, हीराकसी, आंवला माजूफल माजीठ, रूमीम

स्तंगी,सेंधानोन चिक्कनीसुपारी मौरसिरीकेवक्कल और पीपलकी कच्ची लाख इनके चूर्णको मौरसिरीके रसकी२१पुट और निर्गुडीके रसकी२१पुट देकर घाममें सुखालो और कुछ सेंधे नोनके संयोग से दंतमंजन करोतो सब दंतरोग नष्ट होंगे।

९-कूट, सोंठ, मिर्च, पीपल, तीव्रजवान, हरकी छाल और कत्था इनके चूर्णसे दंतमंजन करोतो दंतरोग नष्टहोगा।

१०-अन्तर्वेदी (गंगापारकी तमाखु) अकलकरा, कायफल मिर्च,सोंठ,पीपल,नोन और वायबिंडग इनके चूर्णसे दंतमंजन करो तो दांतोंकी सब वेदना दूरहोगी।

११-पीपल सेंधानोन, जीरा हरेंकी छाल और मोचरस इनके चूर्णसे दंतमंजन करो तो दांत दृढ होकर सब पीडा नष्ट होगी।

१२-नागरमोथा हरेंकी छाल; सोंठ, मिर्च, पीपल; वायबिंडग और नीमकेपत्ते इनकेचूर्णको गोमूत्रकेसाथ तीन पुट देकर गोली बनाओ और छायामें सुखाकर१गोली रात्रिको सोते समय मुँहमेंधर दो और प्रातःकाल थूककर कुरले कराओ तोसब दंतरोग नष्ट हो

१३-फिटकरी. नीलाथोथा, खैरसार, पपडियाकत्था तेजबल कच्ची लाख, वंशलोचन,मिर्च आंवला रूमीमस्तंगी मजीठ मौल सिरीकेबक्कल,सेंधानोन माजूफलऔरचिकनीसुपारीइनके चूर्णको निर्गुंडीके रसकी चमेलीके रसकी और कुछ मौलसिरी के रसकी बहुतसी पुट देकर सुखालो तदनंतर उसको महीन चूर्णकर दंत मंजन करो तो सब दंतरोग नष्टहो जावेंगे।

१४-सेंधानोन,खैरसार कूट धना सोंठ और सिके जीरेका चूर्ण कर दंतमंजनकरो तो दांतोंसे निकलता हुआ रक्त बंद होजावेगा जिह्वारोगयत्न १-जीभकारक्तमोचन कराओ तो जिह्वारोग दूर होगा॥

२-गुरच, पीपल, नीमकी छाल और कुटकी इनके क्वाथ के कुरले कराओ तो जीभके सब रोग नष्ट होवेंगे।

३-ओष्टरोगलिखित चिकित्सासभी जिह्वारोग दूर होगा।

४-मिर्च, सोंठ पीपली, जवाखार और हर्रे का चूर्ण जीभपर लगाओ तो जिह्वारोग नष्टहो या इसीको तेलमें पकाकर कुरले कराओ तो उपजिह्वारोग नाशहो।

५-कचनारकी छालके क्वाथके कुरले कराओ तो जीभके सम्पूर्ण रोग नष्ट होजावेंगे।

तालुरोगयत्न १-गलशुंडीको चतुराई पूर्वक शास्त्र या विष से काट दोतो गलशुंडी नाम तालु रोग नष्ट हो।

२—कूट, मिर्च सेंधानोन पाठ और नागरमोथा इनका चूर्ण गलशुंडीपर मलो गलशुंडी अच्छी हो जायगी।

३-पीपली, अतीस, कूट, वच सोंठ कालीमिर्च और सेंधानोन इनका चूर्ण मधुके साथ लगाओ तो गलशुंडी अच्छी होगी।

४-पीपली, अतीस कूट बच रास्ना कुटकी और नीमकीछाल इनका क्वाथ पिलाओ तो गलशुंडी और तुंडकेशरी, आदिसमस्त तालुरोग नाश होंगे।

कंठरोगयत्न १—जोंक लगाकर गलेका रक्तमोचन कराओ तो रोहिणीनाम कंठ रोग नाश हो।

२-वमन धूम्रपान औषधोंके कुरले करना सीर छुडाना लवणका सेंक देना स्नेहं के कुरले करना ये सर्व कार्य कंठ रोग अति लाभकारी है।

३—मिश्री मधु औरप्रियंगुपुष्प इनका क्वाथ पिलाओ तो पित्त का कंठ रोग नास होगा।

४—कुटकी और धौंसेका क्वाथदो तो कफका कंठरोग नाश हो

५—कुटकी, सोंठ, पीपली, मिरच, वायविडंग. दात्यूणी और सेंधानोंन इनका क्वाथ तेलमें पकाकर उसकी नासदो तो कफका कंठ रोग अच्छाहो ।

६—विष्णुकांताका क्वाथ पिलाओ तो रोहिणी कंठरोग अच्छाहो

७—विष्णुकांता और शंखाहोलीको जलमें पीसकर पिलाओतो कंठशालुक,तुंडकशरी,उपजिह्वक, अधिजिह्वक बृंदागिलायऔर एकवृंद आदि समस्त कंण्ठरोग नष्टहोवेंगे ।

८—शास्त्रक्रियासे कंठका रक्तमोचन कराओ तो गलविद्रधि आदि सब कण्ठ रोग अच्छे होवेंगे।

९—रक्तमोचन कराओ या नास दोतो सर्व कण्ठरोग नाशहो।

१०—दारुहलदी,नीमकीछाल, इन्द्रयव हरेंकीछाल और तज इनका क्वाथ दोतो सब कण्ठरोग नाश होजावेंगे ।

११—कुटकी,अतीस,दारुहलदी,नागरमोथा औरइन्द्रयव इनका क्वाथ गोमूत्रके साथ पिलाओतो सर्व कंठरोगोंका नाशहो।

१२—हरेंकी छालका क्वाथ मधुके साथ पिलाओ तो सब कंठरोग नाश होवेंगे ।

१३—द्राक्ष,कुटकी,सोंठ,मिर्च,पीपल, दारुहलदी, तज त्रिफला नागरमोथा पाट,रसौत,मूर्वा,तेजबल और हलदी इनका क्वाथ मधुके साथ पिलाओ या इसी क्वाथके कुरले कराओ या इन्हीं औषधोंके चूर्णको मधु के साथ गोलियां बनाकर १ गोली मुँहमें धराओ तो सब कण्ठरोग नाशहोवेंगे ।

---

१ धौंसा धमासा रसोई के घरका जाला आदि छतका कचराजो अधर लटकता है ।

१४–तेजबल, पाठ रसोत, दारुहल्दी और पीपल इनके चूर्ण की मधुके साथ गोलियां बनाकर १ गोली मुहमें धरो तो सब कंठरोग दूर होवेंगे ।

सम्पूर्णमुखरोगयत्न १ लवण और फिटकरीके जलसे कुरले कराओ तो वातके छाले अच्छे हेंगे,

२–वातहारी तैलके कुरले कराओ तो बातके छाले दूर होंगे,

३–मुलहटी और खैरसार का क्वाथ बनाकर मधुके साथ कुरले कराओ तो पित्तसे मुखमें आये हुए छाले अच्छे हो जावेंगे,

४–उष्ण दूधमें घी और मधु मिलाकर कुरले कराओ तो पित्त मुखरोग अच्छा होगा,

५–नीलाथोथा और फिटकरी का चूर्ण छालोंपर लगाकर मुंहकी लार बहाते जाओ तो कफके छाले नष्ट होवेंगे ।

मुखकी नसोंकी फस्द छुडवाओतो सन्निपातके छालेअच्छेहोंगे

७–चमेलीके पत्ते, गिलोय, त्रिफल, जवाखार, दाखऔरदारुहलदी इनके क्वाथमें मधु मिलाकर कुरले करओ तो त्रिदोषके छाले अच्छे हो जावेंगे,

८–काला जीरा कूट और इन्द्रयव इनका चूर्ण दांतोंकेनीचेदवा कर रस थूकते जाओ तो त्रिदोषके छाले अच्छे होंगे ।

९–पटोलपत्र, आमलकपत्र और चमेलीपत्र इनके क्वाथमें कुरल कराओ तो त्रिदोषका मुखपाक अच्छा होगा ।

१०–पटोलपत्र, त्रिफला और दारुहलदी इनके क्वाथमें मधु मिलाकर कुरले कराओ तो त्रिदोषका मुखपाक अच्छा होगा,

११–खश, पटोल, नागरमोथा हरंकी छाल, कूट, मुलहटी किरमालेकी छाल और रक्त चन्दन इनके क्वाथमें कुरले कराओ तो त्रिदोषका मुखपाक अच्छा होगा ।

१२-तिलवृक्ष,कमलनाल,घृत,मिश्री, दूध और मधु इनको द्रवकर इसक क्वाथके कुरलेकराओतो त्रिदोषजमुखपाकनष्टहोगा

१२-हलदी, निम्बपत्र, मुलहटी और कमलनाल, इनको तेल में पकाकर इस तेलसे कुरले कराओ तो त्रिदोषज मुखपाक नष्ट होगा, ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं।

१४ चमेली के पत्ते चबाओ तो मुखके छाले मिटजावेंगे।

१५—खैरसार, जायफल, भीमसेन कपूर, नागरमोथा, तज, पत्रज,चिकनी (चोल) सुपारी,इलायची और कस्तूरी इनका चूर्ण खैरसारके क्वाथमें सानकर चने प्रमाणकी गोलिया बनाओ और रोगीके मुखमें १ गोली दबाये रक्खो तो जीभ, ओठ, दांत, कंठ तालु और समस्त मुखके रोग मात्र नष्ट होजावेंगे।

१६—जवाखार, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर, सुपारी और इन सबके समान खैरसार इनको महीन पीस गोलियां बनाओ और और १ गोली मुखमें रखवाओ तो मुखके सम्पूर्ण रोग नष्टहोंगे,

१७—दारुहलदी, गिलोय, चमेलीके पत्ते, दाख अजवायन और त्रिफलाके क्वाथके कुरले कराओ तो मुखके सम्पूर्ण रोग नष्ट होजावेंगे, ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें लिखे हैं।

१८-लोद,धना,बच,गोरोचनऔर मिर्चकोजलके साथ पीसकरमुख मण्डलपर लेप करो मुखपर की छाया(श्यामता) मिट जावेगी।

१-सरसों, बच, लोद और सेंधानोंन को जलमें पीसकर मुखपर लेप करो तो मुखकी छाया दूर होगी।

२०—रक्त चन्दन, मजीठ,कूट लोद,वडके अंकुर और प्रि, यगुको जलमें पीसकर लेप करो तो छाया नष्ट होगी।

२१—जायफलको जलमें घिसकर लेपकरो तो छाया नष्ट होगी

२२–हलदीको अकावके दूधमें मथकर मुँहपर लेप करोतोछाया मिट जावेगी।

२३–मसूर को दूध में पीस कर घृत के संयोग से लेप करो तो छाया मिट कर कांति बढ़ेगी।

२४–केशर,कमलनाल,रक्तचन्दन, लोद, खश, मजीठ; मुलहटी पत्रज, कूठ. गोरोचन. दोनों हलदी, लाख-नागकेसर. टेसू केफूल प्रियंगु. बडके अंकुर. चमेलीके पत्ते. बचऔर सरसोंके क्वाथमेंतेल पकाकर इस तेलका मर्दन करो तो मुख की छाया कील तिल मसे आदि मुख के सम्पूर्ण विकार नष्ट होवेंगे, इसे कुंकमाद्य तैल कहते हैं। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

इति नूतनामृत सागरे चिकित्सा खण्ड मुखरोगयत्न निरूपणं नाम चत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४० ॥

स्त्रीरोग।

योषामयानां हि मया कथ्यते रुक्प्रतिक्रिया।
भूदेवराजसिन्धौ च तरंगेऽत्र यथाक्रमात ॥ १ ॥

भाषार्थः–अब हम इस इकतालीसवें तरंग में क्रमानुसार स्त्री रोग की चिकित्सा का कथन करते हैं।

प्रदररोगयत्न १–सोंचरनोंन, जीरा, मुलहटी और कमलगट्टे इनका क्वाथ मधुके साथ पिलाओ तो वादीका प्रदर रोग (पैर) अच्छा होगा।

२ टंक मुलहटी और २ टंक मिश्री इनका चुर्ण तण्डुल जल के साथ दोतो पित्त प्रदररोग अच्छा होगा।

२–२ टंक रसोत और २ टंक चौलाई की जड इनको पीस मधु के साथ ७ दिन पिलाओ तो सब प्रदर अच्छे होंगे।

४–आसापाले की छाल का क्वाथ दूध के साथ पिलाओ तो असाध्य प्रदररोग भी नष्ट हो ।

५–डाभ की जडतण्डुलजलमें पीसकर तीन दिन पर्यंत पिलाओ तो प्रदर रोग अच्छा होगा ।

६–कबीठ की छाल का रस तण्डुलजलमें मधु या मिश्री मिलाकर पिलाओ तो सब प्रदररोग अच्छे होंगे ।

७–दारुहलदी रसौत. चिरायता अडूसा. नागरमोथा. रक्तचंदन और अकाव के फलों का क्वाथ मधु के साथ पिलाओ तो लाल श्वेत, पीत आदि सब प्रकार का प्रदर नष्ट होगा ।

८–गूलर के सूखे फलों का चूर्ण मिश्री और मधु में छानकर १ टके भर की गोलियां बनालो, १ गोली प्राति दिन ७ दिन पर्यंत खिलाओ तो प्रदररोग अच्छा होगा ।

९–आंवले की ५ टंक बीजी जल में पीसकर मधु और मिश्रीके साथ १५ दिन पर्यंत चटाओ तो श्वेत प्रदर नष्ट होजावेगा ।

१०–१टंक मूषक की लेंडी और २ टंक मिश्री का चूर्ण दूध के संयोग से पिलाओ तो सब प्रदर दूर होंगे ।

११–धावडे के फूल बीजाबोले मूषक की लेंडी और मिश्री का २टंक चूर्ण जल के साथ दो तो प्रदररोग नाश होगा ।

१२–कुंभार के चाक की मिट्टी, गेरू, चमेली, मजीठ, रसौत धावडेके फूल और राल इनका २ टंक चूर्ण मधुके साथ दो तो स्त्री के प्रदर आदि समस्त रोग नाश हो जावेंगे ।

सोमरोगयत्न १–मिश्री के साथ पके केले (कदलीफल) खिलाओ तो सोमरोग नष्ट होगा ।

२–मधुके साथ आंवले का रसपिलाओ तो सोमरोग नष्टहोगा ।

३–उडद का आटा मुलहटी या बिदारीकन्द और इन दोनोंके

समान मिश्री इनका १ टंक भर चूर्ण दूधके साथ १० दिन पर्यन्त सेवन कराओ तो सोमरोग दूर होगा।

मूत्रातिसार यत्न१—ताडकी जड, खारक, मुलहटी और विदारीकंदका १ टंके भर चूर्ण मधु और मिश्री के साथ खिलाओ तो मूत्रातिसार नष्ट होगा।

२—पंवाड के (चिरोंटया) की जड तण्डुल जल के साथ पिलाओ तो मूत्रातिसार नष्ट होगा।

३—श्वेत मूसल, ताडकी जड, खारक और पक्के केलोंको दूधके साथ सेवन कराओ तो मूत्रातिसार नष्ट होगा।

वंध्यारोग।—स्त्रीको नित्य मछली की मांस या कांजीया तिल या उडद या दही खिलाओ तो रजोधर्म प्राप्त होकर वन्ध्या (बांझ) दोष निवृत्त हो जावेगा।

२—इक्षु (सांठे) के बीज, कडुवी तुंबी, दात्यूणी, पीपल, गुड मैनासिल, जवाखार, दारुका जावा (मद्यका वेसवार अर्थात् मसाला) और थूहरके दूधकी बत्ती बनाकर यही बत्ती योनि में धरो तो तत्काल रज प्राप्त होकर वंध्यादोष नाश होगा।

३—खरेंटी, गंगेरनकी छाल, वडके अंकुर, महुआ और नागकेशरका ५ टंक चूर्ण गोदुग्ध और मधु के साथ १५ दिन पर्यन्त सेवन कराओ तो निश्चय है कि बांझ स्त्रीके पुत्रोत्पन्न हो।

४—मालकांगनी राई, विजयसार और बचको जलमें पीसकर ५ दिन तक पिलाओ तो स्त्रीधर्म होकर वंध्यारोग नष्ट होगा।

५—काले तिल, सोंठ, मिर्च, पीपल, भारंगी और गुडके १टंक चूर्णका क्वाथ १४ दिन तक पिलाओ तो रजोधर्म होकर रुधिर गुल्म और वंध्यादोष दूर होगा।

६—असगंधका क्वाथ गोदुग्ध और गोघृत के साथ ऋतुप्राप्त कालमें ५ दिन तक नित्य प्रातःकाल पिलाओ तो गर्भ धारणहोगा

पुष्पनक्षत्र के तीन दिन में उखाडी हुई श्वेत कटियाली की जड़ को २ टंक चूर्ण दूध के साथ ऋतुकाल में ३ दिन पिलाओ तो निश्चय गर्भ धारण होगा ।

८-कठसेला (खट सेरुआ) की जड, धावडे के फूल, वडके अंकुर और कमलगट्टे इनका ढाई टंक चूर्ण ऋतुकाल में जडके साथ दो तो निश्चय गर्भ धारण होगा ॥

९-पार्श्व पीपलीकी जड या बीज, श्वेत जीरा और सरपंखका २टंक चूर्ण दूधके साथ ऋतुकाल में पिलाओ तो निश्चय गर्भ धारण होकर पुत्रोत्पत्ति होगी ।

१० वाराहीकंद, कवीठ और शिवलिंगीका २ टंक चूर्ण दूधके साथ ऋतुकालके समय पिलाओ तो निश्चय संतान होगी ।

११-गार्भिणी स्त्रीको प्रातिदिन पलास का १ पत्र गोदुग्धके साथ पिलाओ तो उसके अति पराक्रमी पुत्र होगा, ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं ॥

१२-गोदुग्धमें बिजौरे के बीजोंको उबाल कर तुल्य घी और तुल्य नागकेशर मिलाओ तदनंतर इसका ५ टंक चूर्ण मिश्री के साथ ऋतुकाल में सात दिन देने से स्त्रीको गर्भधारण हो, १३-एरंडी की बीजो और बीजोंको घृतमें पीसकर ऋतुकाल में दुग्धके साथ ३ दिन सेवन कराओ तो स्त्रीको गर्भ धारण हो ।

१४-सोंठ,मिर्च, पीपली और नागकेशर का चूर्ण घृतके साथ ऋतुकाल में ३ दिन खिलाओ तो स्त्रीको गर्भ धारण होगा । ये सब यत्न सर्व संग्रह में लिखे हैं ॥

गर्भ निवारण यत्न—पीपल, वायविडंग और सुहागेका चूर्ण जलके साथ ऋतुकाल में ५ दिन खिलाओ तो स्त्रीको कदापि गर्भ धारण नहीं होगा ।

२–१ टके भर पुराना गुड जलमें औटाकर १७ दिन पिलाओ तो उस स्त्री को कदापि गर्भ धारण न होगा।

३–नीमके (निबोली में से निकाले) तेलमें रुई भिगोकर ५ दिन पर्यन्त योनि में धरो तो वह स्त्री कदापि गर्भ धारण न करेगी, ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं।

योनिरोग यत्न–सेंधानोंन, तगर, कंटियाली और देवदारु इनके क्वाथमें तेल पकाकर इस तेलका फुहा (भीगी हुई रुई) योनिमें धरो तो विप्लुता नाम योनि रोग अच्छा होगा।

२–पाटलके पत्ते या छालको सिजाकर उस जल से योनिको पसीना दो या धोओ तो बातजन्म योनिरोग नष्ट होगा।

३–तिलीके तेल में निबोली (नीमके बीज) तल कर तेलसे योनिको सेको तो पित्तका योनिरोग अच्छा हो।

४–पित्तनाशक औषधों के घी से सेको तो पित्तजयोनि रोग नाश होगा।

५–आंवले के रसमें मिश्री डालकर १० दिन तक पिलाओ तो योनिकी दाह नष्ट होकर योनि शीतल हो जावेगी।

६–कूकर भंगरे का रस और तण्डुल जलमें मिश्री मिलाकर पिलाओ तो योनि के पीवका बहाव बंद होगा।

७–नीमके पत्ते, किरमाले के पत्ते, अडूसे के पत्ते, पटोलके पत्ते और बच इनके क्वाथ से योनिको धोनेसे योनिकी दुर्गंध नष्टहो;

८–पीपली, मिर्च, उर्द सौंफ, कूट और सेंधानोना के क्वाथ से योनिको धोओ तो योनिके सम्पूर्ण कफजन्यरोग नष्टहों,

योनि संकोचनयत्न १–मूगके फूल, खैरसार, हर्रे, जायफल, माजूफल और सुपारी का महीन चूर्ण योनि में धरो तो स्त्रीकी योनि संकीर्ण हो जावेगी।

२–योनिको कैंबाच (कांचकुडी)के क्वाथ से धोओतोयोनि संकीर्ण होवेगी ।

३–मोचरस ता भगके चूर्णकी पोटली बांधकर योनिमें धरो तो योनि संकीर्ण (गाढी) होजायगी ।

४–आंवलेकी जड, बबूलनी (छोल, बाबरादमूर) टेसू. बेर की जड, अडूसाकी जड और मांजूफल इनके क्वाथसे योनिको धोओ तो योनि गाढी हो जावेगी ।

५–दहीसे योनिको धोओ तो योनि गाढी हो जावेगी,

६–फूली हुई फिटकरी,धावडेके फूल और मांजूफलके चूर्णकी पोटली योनिमें धरोतो भग संकीर्ण हो जावेगी ।

योनिकंदरोगयत्न १ गेरू,वावविडंग, हलदी और कायफलका चूर्ण त्रिफलाके क्वाथ और मधुमें छानकर योनिमें धरो तो योनिकंदनाम योनिका रोग अच्छा होगा ।

गर्भस्तम्भयत्न १-झाऊकी जड,अतीस, नागरमोथा, मोचरस इन्द्रयव इनका क्वाथ पिलाओतो गिरता हुआ गर्भ ठहरजावेगा

२–कमलनाल,कमलपुष्प और मुलहटी को दूधमें औटाकर गार्भिणी स्त्रीको पिलाओ तो गर्भस्राव थंभकर दाह,प्यास,मुर्च्छा छर्दि और अरुचि येसमस्त विकार दूर होजावेंगे,

३–गोखरू,मुलहटी, कटियाली और मदनबाण के फूलोंको गोदुग्धमें औटाकर पिलाओतो गर्भपात ठहरकर स्त्रीके शरीरका सम्पूर्ण वेदना दूर होगी ।

—भौंरीके घरकी मिट्टी मजीठ लजनी, किशोराओरकमल नालको गोदुग्ध में औटाकर पिलाओतो गिरता हुआ गर्भ ठहर जावेगा ।

५–मुलहटी, सालवृक्षके बीज, क्षीरकाकोली, देवदारु, काले

तिल,लुणख्या,रामपीपली,शतावरी,कमलनाल. जवासा गोरीसर रास्ना,कटियाली,सिंघाडा,किसोरा दाख और मिश्रीकोऔटाकर ७ मासका गर्भ होजानेतक प्रतिमास ७ दिन पिलाओ तो सब प्रकार के उपद्रव शांत होकर गर्भ पातका भय न रहेगा।

६–कैथ, कटियाली बेल, पटोल और साठी इन सबकी जड़ें दूधमें पकाकर आठवें माससे पिलाओ तो गर्भ पुष्ट होकर पतन भय न रहेगा।

७–अधेले अधेलेभर मुलहटी जवासा.क्षीर काकोली और गोरी सर इनको दूधमें औटाकर नववें मासमें पिलाओ तो गर्भ पुष्टहो कर पतनभय न होगा।

८–सोंठ और क्षीर काकोलीको दूध में औटाकर दशम मासमें पिलाओ तो गर्भ रहजाने का भय न होगा।

९–सोंठ.मुलहटी,देवदारु, क्षीरकाकोली,कमलगटटा, और म जीठ,इनका क्वाथ दूधमें औटाकर दूध रहजाने पर १० वें मासमें पिलाओ तो सर्वोपद्रवशांत होकर गर्भ पुष्ट और आरोग्य रहेगा.

१०–दूध, मांसरस और पौष्टिक औषधों का सेवन कराओतो बातनाश होकर बातसे सूखा हुआ गर्भ पुष्ट होजावेगा।

गर्भिणीरोगयत्न १–मुलहटी रक्तचन्दन,गोरीसर,खश औरकम लगट्टे इसका क्वाथ मिश्री और मधुके साथ पिलाओ तो गर्भिणी का ज्वर नष्ट होगा।

२–रक्तचन्दन,दाख गोरीसर, खश,मुलहटी,धना, महुआ, नेत्र वाला और मिश्री इनका क्वाथ ७ दिन पिलाओतोगर्भवती का ज्वर नष्ट होगा।

३–चावलका सत्तू. आम और जामनकी छाल इनके क्वाथके साथदो तो गर्भवती स्त्रीका संग्रहणी रोग नष्ट होगा।

४–झाऊकी छाल अर्लूकी छाल, रक्तचन्दन, खरैंटी, धना कुडे कीछाल, नागरमोथा, जवासा, पित्तपापडा और अतीस इनका क्वाथ पिलाओ तो गर्भवती स्त्रीके अतीसार, ज्वर और संग्रहणी तीनों रोग शमन होजावेंगे।

५–डाभ, कास, अरंडकी और गोखरू चारोंकी जडें.दूधमेंऔटा कर पिलाओतो गर्भिणीके हृदयकाशूल शांतहोगा।

६–डाभकीजड दूबकीजड, वच, रसौत हींग और सोंचरनोन इनको दूधमें औटाकर पिलाओ तो गर्भवती का अफरा उतर जावेगा।

७–डाभ दूब कास तीनोंकी जडें दूधमें औटाकर पिलाओ तो स्त्रीका रुकाहुआ मूत्र सुख पूर्वक उतरने लगेगा।

८–मजीठ, मुलहटी, कूट, त्रिफला, मिश्री, पाषाणभेद, असगंध अजमोद, दोनों हलदी, प्रियंगपुष्प.कुटकी. कमलगट्टा, रक्तचन्दन और दाख ये सब अधेले अधेलेभर लेकर चूर्ण करो और १ सेर गोघृतके साथ चारसेर शतावरीके रसमें मंद २ आंचसे पका कर रसादिकमिलकेघृतमात्र रहजानेपर छानलो जो इसमेंसे टकेभर घी प्रतिदिन सेवन कराओ तो समस्त योनिरोग नष्टहों औरपुरुष को खिलाओ तो नपुंसक भी महाकामी होजावै तथा इन दोनों के संसर्गसे बडापराक्रमदीर्घायु बलधारी और चतुरपुत्र उत्पन्न होगा।

प्रसूतयत्न १–सांपकी कांचली और मरुआकी धूनी दोतो स्त्री को तत्काल सुखपूर्वक प्रसव उत्पन्न होगा।

२–स्त्रीके हाथ पांव में कलहारीकी जड बांधो तो सुखपूर्वक तत्काल बालक होगा।

३–स्त्रीके हाथ पांवमें कूकरभंगरा और पाठेकी जड बांधोतोसुख पूर्वक तत्काल बालक होगा।

४—उपरोक्त जड़ोंके क्वाथमें तेल मिलाकर गर्भको लेप करो तो तत्काल सुखसे उत्पत्ति होगी।

५—पीपल और वचको जलमें पीसकर भगपर लेप करो तो सुखसे उत्पत्ति होगी।

६—स्त्रीकी नाभिपर एरंडका तेल लगाओ तो सुख पूर्वक उत्पत्ति होगी।

७—बिजौरेकी जड महुएको जलमें पीसकर पिलाओ तो सुख से बालक होगा।

८—स्त्रीकी कटिमें साठीकी जड बांधो तो सुखसे बालक उत्पन्न होगा ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं।

९—अधाहोली और कलिहारी दोनों की जड स्त्रीकी कटिमें बांधो तो सुखसे बालक होगा यह रोग चिंतामणिमें लिखा है।

१०—मुक्ता या सा विमुक्ताश्च मुक्ता सूर्येण रश्मयः। मुक्तः सर्वभयाद्गर्भो देहिमाचिरमा चिर स्वाहा॥ इस मंत्रसे जलको ७ बार मंत्रित कर स्त्री को पिलाओ तो सुख पूर्वक तत्काल बालक उत्पन्न होगा।

६	६	८
२	१०	१८
२	१४	४

११—स्त्रीको यह यंत्र धोकर पिलाओ तो सुखपूर्वक तुरन्त बालक उत्पन्न होजावेगा।

मूढगर्भयत्न—यदि स्त्रीके गर्भाशय में भगके समीप बालक टेढा मेढा अटकगया होतो १ हाथों में घी लगाकर बडी सावधानीसे भग में हाथ प्रवेश करो फिर प्रथम बालक को

१ स्त्रीचिकित्साके विशेषकर ऐसे प्रसंगोपर पुरुष नहीं वरन स्त्री वैद्यों दाईयों की योजना की जाती है क्योंकि स्त्री को ऐसी लज्जास्पद दशामें प्राणान्त होनेपर भी वे अपनी चिकित्सा पुरुष वैद्य से नहीं करावेगी।

भीतरही सीधा करके तत्काल जीवत ही बाहर निकाललो तो प्रसव और माता दोनोंका प्राण संरक्षण हो सकेगा ।

मृतगर्भयत्न१-स्त्रीके गर्भाशयमेंही प्रसव मृत्युको प्राप्त होगया हो तो हाथमें घी लगाकर अति चतुराई और सावधानी से एक छोटा और तीक्ष्ण छुरा योनि मार्ग से प्रवेश करो और उदरमें ही उस मृत बालक के अंगोंके खंड खंडकर शनैः शनैः बाहर निकाल लो तदनंतर भगको सहते हुए उष्ण जलसे धोकर घृत या जलसे सेंकदो और निम्नलिखित उपाय करो तो सर्व उपद्रव शांत होकर माताका प्राण संरक्षण होजावेगी ।

२—कडुवी तूम्बीके पत्ते और ५ठानी लोदको जलकेसाथपीस कर भगपर लेप करो तो भग ज्योंकी त्यों होजावेगा ।

३—पलासपापडा और गूलरके पक्के फल तिल्लीके तेलमेंपीस कर २१ दिन लेप करोतो फटी हुई भग गाढ़ी हो जावेगी ।

४-सांपकी कांचली कुटकी और सरसों को कडुवे तेलमें पीस कर भगकोधूनी दो तो पूर्ववत् होकर सब पीडा शान्त होगा ।

५-कलिहारीकी जडके क्वाथ से हाथ पांव धुलाओ तो मृत गर्भजन्य भगपीडा शान्त होजावेगी ।

मक्कलरोगयत्न१—जवाखारको उष्ण जलमें पीसकर पिलाओ तो मक्कल दूर होगा ।

२—पीपल गजपीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च, सम्भालु, इलायची, अजमोद, सरसों, पाठ, सिकीहींग, भारंगी, बकायन, इन्द्रयव, जीरा, मूर्वा, अतीस, कुटकी और वायबिडंग इनका २ टंक चूर्ण उष्ण जलके साथ दो या क्वाथ बनाकर सेंधेनोन के साथ दो तो मक्कल गुल्म शूल आम और वातकफकृ समस्त रोग दूर होकर क्षुधाकी विशेष वृद्धि होगी ।

३–सोंठ, मिर्च, पीपल, नागकेशर, तज,पत्रज,इलायची और धना इनका २ टंक चूर्ण पुराने गुण के साथ दो तो मक्कल रोग दूर होजावेगा।

वर्जितकर्म–प्रसूता स्त्री को खेद मैथुन क्रोध शीतमें निवास और मिथ्या आहार बिहार मत करनेदो।

सूतिकारोगयत्न १–वातनाशक समस्त औषधें विशेषकर सूति कारोग को नाशकारिणी हैं।

२–दशमूलका क्वाथ पिलाओ तो सूतिका रोग नाशहो।

३–गुरच, सोंठ, सहजना, पीपल पीपलमूल, चव्य, चित्रक और नेत्रवालेका क्वाथ मधुकेसाथ दो तो सूतिकारोग नाशहोगा

४–देवदारु,कूट वच, पीपल, सोंट, चिरायता, कायफल, नाग रमोथा हरेंकीछाल, गजपीपल, धमासा, गोखरू जवासा कटि याली, गिलोय और कालाजीरा,इनका क्वाथ हींग औरसेंधेनोनके साथ दो तो सूतिका रोग,शूल,कास, श्वास, ज्वर मूर्छा शिरो रोग,तंद्रा,तृषा, प्रलाप अतिसार और वमन ये सब बिकार दूर होंगे इसे देवदार्व्या क्वाथ कहते हैं।

५–दोनो जीरे सोंफ अजवायन; अजमोद धना मेथी, सोंठ, पपिल, पीपलामूल चित्रक कूट झाऊकीजड बेरकी बीजी और कपेला ये सब टकेभर लेकर चूर्ण करो और इस चूर्णकोसेरभर गो घृतमें तलकर ४ सेर गो दुग्धमें औटाओ फिरकडाखोवा बनाओ १००टकेभर शक्करकी चासनीमें डालदो और १ टकेभर गोलियां बनाकर प्रतिदिन १गोली प्रसूत स्त्रीको दोतो प्रसूतरोग ज्वरत्रयी श्वास, कास, पांडु क्षीणता और बातके सबरोग दूर होजावेंगे।

६–आधसेर सतुआ सोंठका चूर्णआधसेर गोघृतमेंतलकर५सेर गोदुग्ध में डालो और कंडा खोवा बनाकर५सेरशक्करकी चाशनी

मिलादो फिर इसीमें टकेभर वाय बिडंग, धना, सौंफ सोंठ मिर्चें; पीपल नागकेशर और नागरमोथा इनका चूर्ण डालो पांच२ टंक अभ्रक और कांतिसार डालो तथा इच्छा नुसार फारक बदामादि पौष्टिक फल डालकर १ टंक प्रमाणकी गोलियां बनालो जो इसमें से प्रतिदिन १ गोली खिलाओ तो प्रसूत रोग प्यास ज्वर, दाह, कास, श्वास, पांडुरोग और मन्दाग्नि ये समस्त रोग नष्टहो जावेंगे इसे सौभाग्तसुंठिपाक कहेतह।

७-अजमोद जीरा, बंशलोचन खैरसार, बिजौरा सौंफ धना और मोचरस इन सबके २ टंक चूर्ण का क्वाथ १० दिन तक पिलाओ तो सूतिकाज्वर नाशहो।

स्तनरोगयत्न १-१ विद्रधीरोग लिखित यत्न करो २ स्तनपर गांठहो तो पित्त नाशक शीतल यत्न करो ३ स्तनपर जोंक लगाकर रक्तमोचन कराओ ४ इन्द्रायणकी जड जलमें पीसकर लेप करो ५ हलदी और धतूरेकी जड जलमें पीसकर लेप करो ६ बांझ कंकोलीकी जड जलमें घिसके लेप करो ७ तप्त लोहा जलमें बुझाकर यह जल स्त्री को पिलाओ तो इन सातों उपायों में से प्रत्येक यत्न स्तन रोग नष्ट करनेके लिये समर्थ है।

इति नूतनामृत सागरे चिकित्सा खंडे स्त्रीरोगयत्न निरूपणं नामैक चत्वारिंशत्तरंगः ॥ ४१ ॥

बालरोग।

चिकित्सा बालरोगाणां यथा मंथज्वरस्य च ॥
मेत्रसिंधौ तरंगे अस्मिन कथ्यते हि मयाक्रमात ॥ १ ॥

भाषार्थः-अब हम इस ब्यालीसवें तरंगमें बालरोग और मंथ ज्वरकी चिकित्सा क्रमानुसार वर्णन करते हैं।

ज्वरयत्न१—बालककी माता या धात्री (धाय) को हलका भोजन दे निम्न लिखित यत्न करो तो बालकको ज्वर दूर होगा।

२—नागरमोथा, हरेंकी छाल नीमकी छाल और पटोल इनका क्वाथ मधुके साथ दो तो बालक का सर्व प्रकार का ज्वर नष्ट हो जावेगा इसे भद्रमुस्ता क्वाथ कहते हैं।

३—एक एक मासा नागरमोथा. हरेंकी छाल और मुलहटी इन का क्वाथ ७ दिन तक पिलाओतो बालकका ज्वर दूरहो.

४—चांवलों की लाही मुलहटी छड और महुए का चूर्ण मधु के साथ दो तो बालक का ज्वर दूर होगा।

५—लाक्षादि तेल मर्दन से भी बाल ज्वर उतर जाता है।

अतिसार यत्न १—अतीस, बेलकी गिरी धावडेके फूल, इन्द्र, यव, लोद धना और नेत्र वालेका २ मासे चुर्ण इनका क्वाथ दो तो ज्वरातिसार नष्ट होगा।

२—नागरमोथा. पीपल, अतीस, और काकडासिंगी. इनका चूर्ण मधुके साथ चटाओतो ज्वरातिसार खांसी और वमन भीनष्ट होंगे इसे चातुर्भद्रादि चूर्ण कहते हैं।

३—बेलका गूदा धावडे के फूल नेत्रवाला गज पीपल और लोद इनका क्वाथ मधुके साथ दो तो अतिसार नष्ट होगा।

४—मजीठ धावडेके फूल लोद और गांरीसरका क्वाथ मधुकेसंग देनेसे भयंकर अतिसार नष्ट होगा, इस समंत्रादि क्वाथ कहते हैं।

५—बायविडंग. अजमोद और पीपल का चूर्ण तण्डुल जलके साथ दोतो आमातिसार होगा; इसे विडंगादि क्वाथ कहते हैं।

१ यदि बालक की माता के दूध न हो तो धात्री और धात्री के दूध को प्रभाव शा में बकरी को दूध पिलाना योग्य ह।

६-मोचरस,मजीठ, धायके फूल और कमल केशरका चूर्ण साठी चांवलों के जलके साथ दो तो रक्तातिसार नष्ट होगा ।

७-सोंठ अतीस,नागरमोथा,नेत्रवाला और इंद्रयवका क्वाथ दो तो सब प्रकारका अतिसार नष्ट होगा,

८-चावलोंका लाही, मुलहटी,महुवा और मिश्रीका चूर्ण मधुके साथ दो तो मुर्रातिसार (मोडानिवाही)दूर होगा ।

संग्रहणीयत्न १-हलदी, चव्य, देवदारु, काटियाली, गजपीपल सौंफ और पृष्ठपर्णीका चूर्ण मधु और घृतके साथदो तो संग्रहणी पांडुरोग और ज्वरातिसार अच्छे होकर भूखबढ़ेगी इसे राज्यादि चूर्ण कहते हैं ।

कासयत्न १-नागरमोथा, अतीस,अडूसा, पीपल और काक, डासिंगीका चूर्ण मधुके साथ चटाओ तो पांचों प्रकारकी खाँसीदूर होगी इसे मुस्तादि चूर्ण कहते हैं ।

२-कटियालीकी केशर मधुके साथ चटाओ तो खांसी दूर होगी

श्वासयत्न १—दाख, अडूसा, हरेंकी छाल और पीपलकाचूर्ण मधु और घृतके साथ दो तो श्वास और कास दोनों दूर होंगे, इसे द्राक्षादि चूर्ण कहते हैं ।

हिक्कायत्न १—कुटकीका चूर्ण मधुके साथ दो तो हिचकीऔर उल्टी भी नष्ट हो जावेगी ।

छर्दियत्न १- इमलीकी बीजी चांवलकीलाही और सेंधानोनका चूर्ण मधुके साथ चटाओ तो बालक का दूध डालना बन्द होगा,

२—काटियालीके फलोंका रस, पीपल, पीपलामूल, चव्य चित्रक और सोंठ इनका चूर्ण मधुके साथ चटाओ तो बालक दूध डालने से रुक जावेगा ।

आध्मानयत्न १—सेंधानोन, सोंठ, इलायची, सिकी हींग और भारंगीका चूर्ण उष्ण जलके साथ दो तो अफरा और शूल दोनों उदररोग नष्ट होंगे।

मूत्रावरोधयत्न १—पीपल, मिर्च, इलायची, सेंधानोन और मिश्री इनका चूर्ण मधुके साथ चटाओ तो बालक का रुका हुआ मूत्र उतरने लगेगा।

लालाप्रवाहयत्न १—गौरीसर, तिल और लोद इनका क्वाथ मधुके साथ पिलाओ तो बालककी लार बहना बंद हो जावेगा।

मुखपाकयत्न १—पीपलकी छाल और पत्ते पीसकर मधुके साथ चटाओ तो बालकके मुखमें छाले अच्छे हो जावेंगे,

नाभिशोथयत्न१—पीली मिट्टीको अग्निसे तपाकर दूध डालके इस मिट्टीसे नाभिको सेको तो नाभि की सूजन अच्छी होगी,

नाभिपाकयत्न १—तप्त घृतसे सहता हुआ सेंक करो तो नाभि (ढुंडी, टोंडी) का पकाव अच्छा होगा।

गुदापाकयत्न १—रसोतको जलमें घिसकर लेप करो तो गुदा का पकाव अच्छा होगा।

२—शंख मुलहटी और रसोत इनको जलमें पीसकर लेप करो तो गुदाका पकाव अच्छा होगा।

दंतरोगयत्न १—धावडेके फूल और पीपल को आंवले के रसमें पीसकर दांत निकलनेके प्रथमही मसुडोंपर लेप करो तो खिडबिड (दुहरे) उगत हुए दांत उत्तम सरल पंक्तिमें ऊगेंगे।

कृमिरोगयत्न १—पलासपापडा, नीमकी छाल, सहजनेकी जड़, नागरमोथा, देवदारु और वायविडंग इनके १ टंक चूर्णका क्वाथ ७दिनपर्यन्त पिलाओ तो बालक के पेट की कृमि नष्ट होकर ज्वर शांत होजावेंगे।

बिशेषतः-मनुष्योंके लिये जिस रोगपर जो यत्न कहे गये हैं बालकोंके लियेभी उस रोगपर वही चिकित्साउपयोगी हो सक्तीहै, औरभी स्मरण रक्खो कि बालकको एकवर्षकी अवस्था तक औषध एक एक रत्ती के अंदाजसे और दूसरे वर्षमें एक मासे के प्रमाणसदेना चाहिये।

ग्रहदोषयत्न १-गोरखमुंडी और खश के क्वाथ से बालक को स्नान कराओ या हलदी और कूटको चंदनसे घिसकर लेप करो तो सर्व ग्रहदोष नष्ट होंगे।

२-सांपकीकांचली, लहसन, सरसों, नीमकेपत्ते, बिल्लीकाविष्ठा बकरेके बाल. मेंढासिंगी और वचको मधुमें पीसकर धूनी दो तो बालकके सर्व ग्रहदोष नष्ट हों,

स्कंदग्रहयत्न १-सरसों, सांपकीकांचली, बच, काकलहरी ऊंटके बाल और बकरे के बाल इनके चूर्णको घीमें मिलाकर धूनी दो तो स्कंदग्रहका दोष छूट जाय।

स्कान्दापस्मारयत्न १-बेलकी जड़ सिरसकी जड, श्वेतदूध, श्वेत सरसों, पाठ, मरुआ, राई श्वेतबावची, कायफल, कुसुम, वायाबिडंग संभालु, गूलर, खरेंटी, चिरपोटनी, काली तुलसी, बकायन और भारंगीके क्वाथसे स्नानकरोओ तो स्कंदपस्मार ग्रहदोष छूटजाय

२-गाय, भैंस, भेडी, बकरी, घोड़ा गधा और ऊंट के मूत्रमें तेल पकाकर मर्दन करो तो स्कंदापस्मार ग्रहदोष नष्ट हो,

३-सिरके बाल, हाथके नख और बैलके रोमको घीमें मिलाकर धूनी दो स्कंदापस्मारदोष छूटजाय।

४-जवासा, मैनसिल, कस्तूरी और कवाचकी जड इनके चूर्ण की धूनी दो या बालक के गलेमें बांधो तो स्कंदापस्मार दोष दूर होगा।

५–बालकको चौहटे (चौमार्ग) में स्नान कराओ तो स्कंदापस्मार और विशाखा दोनों के दोष दूर होंगे।

शकुनीयत्न१–बेतकी लकड़ी, आमकी जड़ और कैथकी जड़, इनसें बालक को स्नान कराओ तो शकुनीग्रहका दोष दूरहोगा,

२ झाऊकी जड, महुआ, खश, गौरीसर, कमलनाल, पद्मकाष्ट लोद, प्रियंगु पुष्प, मजीठ और गेरू को जलमें पीसकर उवटन कराओ तो शकुनीग्रहदोषसे बालक छूट जावेगा।

३–शतावरी या इन्द्रायणकीजड या नागदमनी या काटियाली या सहदेई की पूजाकर गलेमें बांधोतो शकुनीग्रह दोष मिटजावेगा

४–ग्रहको तिल, चांवल, माला, हरताल और मैनासिलकाविधिवत् बलिदान दो तो शकुनीग्रहदोष छूट जावेगा।

५–स्कंदापस्मार लिखित यत्न भी शकुनीग्रहदोषको शांतकर सक्ते हैं।

रेवतीयत्न१–असगन्ध, मेंढासिंगी, गौरीसर, सांठीकी जड, सेवतीके फूल और बिदारीकंद इनके क्वाथसे स्नान कराओ तो रेवती ग्रहके दोषसे बालक अच्छा हो जावगा।

२–तेलका मर्दन करो या कूट, राल, गूगल, खुश, हलदी इनके चूर्णकी धूंनी दोतो रेवतीग्रहदोष दूर होगा।

३–सुगंधित श्वेत पुष्प लाही; दूध, दही और रंधीसाल (चुडा हुआ पोहा) बालक के ऊपर उतारकर स्नान कराओ औरइन्हीं पदार्थोंसे गौशाला में धूनी दो तो रेवतीदोष नष्ट होगा।

पूतनाग्रहयत्न १–नीमकी छाल, विष्णुकांता और वाणि रुईके झाड की छाल इनके काथसे बालकको स्नान कराओ तो पूतनाग्रहदोषसे बालक मुक्त होगा।

२–बिदारीकंद श्वेत, दाख, हरताल, मैनासिल, रालऔरकूटके

क्वाथमेंतेल या घृत पकाकर बालकको मर्दन करो तो पूतनादोष नाशहोगा ।

गंधकपूतनायत्न १–नीम. पटोल, कटियाली, गिलोयऔर अडूसे पत्तोंके क्वाथसे स्नान कराओ तो गंधपूतना का दोष छूट जावेगा

२–पीपल पीपलामुल और दोनों कटियालीके क्वाथमें गोघृत पकाकर मर्दन करोतो बालक गंधपूतना दोषसे मुक्त होजावेगा ।

३–केशर, अगर, कपूर, कस्तूरी, और चंदन इनको महीनपीसकर नेत्रोंपर लेप करो तो गधपूतनाका दोष छूट जावेगा ।

४–कुत्तेकी विष्ठा, बालक के बाललहसन की छाल और घी बालकपर से उतारकर चौकपर डालदोतोगधपूतना दोष नष्ट होगा ।

शीतपूतनायत्न १–गो मूत्र, अजा. (बकरी) कामूत्र देवदारु, नागरमोथा और चंदनादि सुगंधित पदार्थोंमें तेल पकाकर मर्दन करोतो शीतपूतना ग्रहका दोष नष्ट होगा ।

२—कुटकी नीमकी छाल, खैरसार, पलासकी छाल और काहूकी छाल में घृत पकाकर बालकको खिलाओ या मर्दन करो तो शीत पूतनाग्रह का दोष छूट जावेगा ।

३–नीम के पत्तो की धूनी दो, चिरमू की माला पहिनाओ तो शीतपूतना दोष नष्ट होगा ।

४–नदीकेकिनार शीतपूतनाके नामके मूँग और चावल अर्पण करो तो शीतपूतना दोष नष्ट होगा ।

मुखमंडिकाग्रहयत्न १–कैथ बेल अरण्य (अग्निमंथ) अडूसा श्वेत अरण्ड और कूट इनके क्वाथसे स्नान कराओतो मुखमंडिका ग्रहदोष से बालक मुक्त हो ।

२ भंगरेका रस और बच तेलमें पकाकर मर्दन करो तो मुख मंडिका नाश हो ।

३-राल और कूट इनके क्वाथमें घृत पकाकर मर्दन करो तो मुखमंडिका दोष दूर होगा।

४-गौशालामें बलि देकर "अलंकृता कामवती सुभगा कामरूपिणी। गोष्ठमध्यालयरता पातु त्वां मुखमंडिका॥" इस मंत्र से मंत्रित जलमें स्नान कराओ तो मुखमंडिका का दोष दूर होगा।

नैगमेयग्रहयत्न १-बेलके जडकी वक्कल, अरण्याकी जड और कगणचकी जड इनके क्वाथमें बालकको स्नान कराओ तो नैगमेयका दोष निवृत्त होगा।

२-प्रियगुं पुष्प, जवासा, सौंफ और चित्रककी छाल इनका क्वाथ गोमूत्र, दही और कांजी इन सबको तेलमें पकाकर बालकको मर्दन करो तो नैगमेयग्रह का दोष दूर हो जावेगा।

३-तिल, चांवल, फूलकी माला और मोदक मिठाई आदि "अजाननश्चलाक्षिभ्रःकामरूपी महायशाः। बालः पालयते देवो नैगमेयो भिरऽक्षतु॥" इस मंत्रसे बालक पर ७ वार उतारकर वृक्षकी पीठ पर डालोतो बालक नैगमेयग्रहके दोषसे अच्छा हो जावेगा, ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखेहैं।

नंदामातृकायत्न १-नदी के दोनों तीरोंकी मिट्टी का पुतला चांवल, ७ श्वेत फूल, ७ध्वजा, ७ दीपक, गुलगुला, पान, गँध धूप माँस और मद्य ये सब एक कोरी सराईमें धरके "ॐ नमो भगवते रावणाय हन हन मुँच मुँच स्वाहा" इस मंत्र से बालक पर उतारा करके मध्यान्हसमय पूर्वदिशाके चौमार्गपर बलि दो और पीपलका पत्ता बालकके शिरपर धरके स्नान कराना, फिर सरसों मेंढासिंगी, नीमके पत्ते और शिवनिर्माल्यकी धूनी दो, इसी भाँति चार दिन करने से नंदामातृका दोष निवारण होगा।

शुगदामातृकायत्न १-सवासेर चाँवल, दही, मद्य, तिल और

मछली का मांस येसब एक कोरी सराईमें धरकर "ॐ नमोरावणाय हन हन मुंच मुंच फट् फट् स्वाहा ,, इस मंत्रसे बालकपर उतारा करके संध्यासमय पश्चिमके चौमार्गपर बलिदो और शीतल जलसे स्नान कराके शिवनिर्माल्य, खश बिल्लीके रोम,घृत और दूब,की धूनी दो इसी प्रकार तीन दिन बलि देकर चौथे दिन यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराओ तो शुभदामातृकादोषसे बालक मुक्त होगा

पूतनामातृकायत्न ३–नदीके दोनों तटों की मिट्टीका पुतलापान लाल पुष्प, रक्तचन्दन,७ ध्वजा, ७दीपक,भात, मांस,मद्य येसब कोरीसराईमें धरकर, ॐनमो रावणायनमःहन हन मुंच मुंच त्रास य त्रासय स्वाहा,इस मंत्रसे बालकपर उतारा करके तीसरे प्रहर दक्षिण दिशाके चौमार्गपर बलिदो और शिवनिर्माल्य, गूगल सरसोंनीमके पत्ते और मेढासिंगीकी धूनी देकर इसी प्रकार ३ दिन करना तदनन्तर चौथेदिन यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करादो तो बालक पूतनामृतका के दोष से छूट जावेगा।

मुखमण्डिकामातृकायत्न ४–नदीके दोनों तीरोंकी मिट्टीका पुतला, कमलपुष्प,गंध ताम्बूल,श्वेत पुष्प.४ दिये १२ मालपुए.मछलीका माँस. मद्य और छाछ;ये सब वस्तु कोरी सराई में धर कर ॐ नमो रावणाय हन हन मंथ मंथ स्वाहा इस मंत्रसे बालक पर उतारा करके तीसरे प्रहर उत्तम दिशाके चौमार्गपरबलि दो इसी प्रकार ३ दिन करके फिर चौथादिन यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन करादोतो मुखमँडिका दोष ग्रसित बालक कुशल होगा।

पूतनामातृकायत्न ५–कुम्हारके चाककी मिट्टीका पुतला गंध ताम्बूल,चांवल,श्वेत पुष्प.ध्वजा,५दिये और ५ बडे (वडे खानेके) ये सब एक कोरी सराईमें धरकर "ॐ नमो रावणाय चूर्णय चूर्णय स्वाहा,,इस मंत्रसे बालकपर उताराकर के ईशान दिशामें बलिदो

और शांति (ग्रहशांति) के जलसे स्नान कराके शिवनिर्माल्य सांपकी कांचली, घी और नीमके पत्तोंकी धूनी दो, इसी प्रकार तीन दिन करके फिर चौथे दिन यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करा दो तो बालक पूतना दोषसे अच्छा होगा,

शकुनीमातृकायत्न ६– गेहूंके आटेका पूतला, श्वेत पुष्प, लाल पुष्प, पीत पुष्प, मद्य, मांस, १० दिये, १० ध्वजा, बडे और दूध ये सब ऊँ नमो रावणाय चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा,, इस मंत्रसे बालकपर उतारा करके मध्याह्न समय आग्नेयादिशामेंबलि दो और शीतल जलसे स्नान कराके शिवनिर्माल्य,घृत लहसन गूगल,सरसों, सापकी कांचली और नीमके पत्तोंकी धूनी दो तो शकुनीमातृका दोष शांत हो जावेगा,

शुष्करेवतीमातृकायत्न७–नदी के तलकी मिट्टी का पुतलालाल फूल.मद्य,ताम्बूल,लाल चांवलकी खिचडी,१० दिये, १२ ध्वजा और ये सब ऊं नमो रावणाय तत्तेजसे हन हन मुंच मुंच स्वाहा, इस मंत्रसे बालकपर उतारा करके तीसरे प्रहर पश्चिम दिशामेंब, लिदो और स्नान कराके शिवनिर्माल्य,सरसों मेढेका सींग,खश और घृतकी धूनी दो इसी प्रकार तीन दिन करके चौथेदिन यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन करादोतो शुष्करेवतीकादोष शांतहो जावेगा

नानामातृकायत्न ८– लालफूल, पीली ध्वजारक्तचन्दन, क्षीर मास और सुराको "ऊँ नमो रावणाय त्रैलोक्यविन्द्रावणाय चतुर शीमोक्षणाय ज्वर हन हन ऊँ फट स्वाहा,इस मंत्रसे बालकपर उ, तारा करके प्रभात समय बलि दो तो नानामातृकादोष दूरहोगा,

सूतिकामातृकायत्न९–नदीके दोनों तीरोंकी मिट्टीका पुतला श्वेत वस्त्र, गंध, ताम्बूल, १३ दिये और ध्वजायें सब ऊँनमो रावणाय हन हन स्वाहा" इस मंत्रसे बालक पर उतारा करके

उत्तर दिशामें गावके बाहर बलिदान दो और शीतल जल से स्नान कराके गूगल, नीमके पत्ते, गौका सींग, सरसों और घृतकी धूनी दो इसी प्रकार ३ दिन करके चौथे दिन यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन कराओ तो सूतिका दोष दूर होगा।

क्रियामात्रकायत्न १० नदीके दोनों तीरोंकी मिट्टी का पुतला मद्य ताम्बूल, लालफूल, रक्तचन्दन, ५ ध्वजा, ५ दिये, मालपुए और मांस ये सर्व पदार्थ ॐ नमो रावणाय चूर्णितहस्ताय मुंच मुंच स्वाहा., इस मन्त्रसे बालकपर उतारा करके वायव्य कोण में बलि दो और काकविष्ठा, गौका सींग निम्बपत्र, घृत और बिल्ली के रोमकी धूनी दो तो क्रियामात्रकादोष छूट जावेगा।

पिपीलिकामात्रयत्न ११-गेंहूंके आटेका पुतला, दूध रक्त चंदन, पीत पुष्प, गंध ताम्बूल ७ दिये, मालपूवा, मांसऔर मद्यको "ॐ नमो रावणाय मुंच मुंच स्वाहा. इस मंत्रसे बालक पर उतारा करके पूर्व दिशामें बलिदो तदन्तर शांति के जलसे स्नान कराके शिवनिर्माल्य गूगल, गौका सींग सांपकी कांचली और घृतकी-धूनी दोऔर तीन दिन इसी प्रकार करके चौथे दिन ब्राह्मणभोजन कराओ तो बालक पिपीलिका दोष से मुक्त होगा।

कामुकामातृकायत्न १२-गेंहूंके आटेका पुतला, ताम्बूल, गंध श्वेत पुष्प ७ध्वजा और सातमालपुए" ॐ नमो रावणाय मुंचमुंच हन हन स्वाहा इस मंत्रसे बालकपर उतारा करके बलि दो और शांतिके जलसे स्नान कराके शिवनिर्माल्य. गूगल सरसों और घृतकी धूनी दोतोकामुकामातृका के दोष से बालक मुक्त होजावेगा। यह रावणकृत कुमारतन्त्रचक्रदत्तमें लिखा है।

मन्थज्वरयत्न १—यह रोग सर्व रोगों का राजा है इस लिये सर्व प्रयत्न बडी पवित्रता पूर्वक करना चाहिये।

रोगीको पवित्रस्थानमें रखो पवित्र वस्त्र पहिनाओ पवित्र मनुष्यको परिचर्यामें रखो दृष्टिमें अपवित्र वस्तुऐं न आने दे स्त्री आदिकीछाया न पडनेदो, लाल कम्बल या पीताम्बरको ओट पर्दा) बांधो सुगंधधूप चंदन कपूरादिसे गृहकोसुगंधित रक्खो दरख्तोंके कुंड या हरियाली और मोतीआदिरत्न लटकाओओर स्वधर्मके मनोहर इतिहासादि सुनाओतो मोतीज्वरा शांतिहोकर रोगकी पीडा शांत होगी ।

२—चिरायता सोंठ घिसकर पिलाओ काला अगर घिसकर पिलाओ तुलसीका रस गोबरका रस जीरे और सोना मक्खीकी भस्म घिसकर पिलाओ सांभरका सींग चंदनजीरा नेत्रवाला नागरमोथा चिरायता कूडा कालाजीरा गिलोय इलायची और कमलगट्टेको घिसकर पिलाओ तो मोतिज्वरा शांति होगा ।

३—श्वेतचंदन लालचंदन नेत्रवाला पित्तपापडा नागरमोथा सोंठ चिरायता और खशका क्वाथ पिलाओतो दाहग्लानिप्रलाप विकलता तिमिर और पित्त व सर्वोपद्रव शांति होंगे ।

४—लघुशिवणी दाख नेत्रवाला चंदन नागरमोथा खश पित्त पापडा और मुलहटी इनका अष्टावशेष क्वाथ मधुके साथ दोतो पित्तज्वर भ्रम दाह और छर्दिका अतिकोपभी शांतहोगा ।

५—रक्तचंदन धना काला बाला पित्तपापडा नागरमोथाओर सोंठ इनका क्वाथदो बडके पत्ते और बाजरेके आटेका क्वाथदो पोदीना वनतुलसी और श्यामतुलसीके रसमें मिश्री डालकरतीन या सात दिन पिलाओ नागरमोथा कपूरकाचरी बनतुलसीपित्त पापडा और सोंठ इनका क्वाथ दोतो मोतिज्वरा शांत होगी

६—ऊँनमो अंजनीपुत्र ब्रह्मचारी बाचा अविचल स्वामिन उ कार्य सारिखा क्षांक्षःमगधदेसराज बडे स्थानके तहां मूसलीकन्द

ब्रह्मगने मथुरा उत्पन्नाकिया पृथ्वीमें मोकल्यो हनुमन्तबाचाबली मडा हनुमन्तजी दृष्टि पडो हनुमन्तनामम गच्छ गच्छ स्वाहा इस मंत्रको शुद्ध होकर १०८बारजपो और चंदन अगर धूप श्वेत पुष्प को सरवे(मिट्टीकेपात्र)में धरके रोगीके माथे परसे उतार शुद्धजल मेंडालदोतो मंथज्वर शांतहोकर रोगीसमस्त पीडासे विमुक्तहोगा।

इति नूतनामृतसागरे चिकित्साखंडे बालरोग मंथज्वर यत्न निरूपणं नाम द्विचत्वारिंशत्तरंगः ॥

क्लीवरोग ।

चिकित्सा क्लीवरोगस्य नृणां लज्जाप्रदस्य वै ।
वह्निवदे तरंगेऽत्र कथ्यते च यथा क्रमात् ॥ ५ ॥

भाषार्थः–अबहम इस तेतालीसवें तरंगमें मनुष्यों को लज्जाप्राप्त करनेवाले क्लीबरोगकी चिकित्सा का वर्णन क्रमानुसार करते हैं

क्लीवरोगयत्न १–अति सुन्दर स्त्रीकी मनोहर बाणी सुनाओ ताम्बूल आसव दूध मिश्री दधि शिखरण अमरस उडद भीमसेनी कपूर कस्तूरी म्रगांक चन्द्रोदय तथा अन्य पौष्टिक स्वादिष्ट मनोहर पदार्थ सेवन कराओ सुन्दर उपबनमें भ्रमण कराओ इत्यादि उपभोगोंके विधिवत् सेवनसे नपुंसकता दूर होगी ।

२—गोखरू तालपुखरा असगन्ध शतावरी कैंवांचकेबीज श्वेत मूसली मुलहटी खरेंटी गंगेरणकी छालका ५ टंक चूर्ण दूध मिश्री के संयोगसे खिलाकर पथ्यसेरक्खो तो नपुंसकपनादूर होगा इसे गोक्षुरादि चूर्ण कहते हैं ।

३–आधसेर चोलसुपारी ४ दिन जलमें भिगोकर टुकडे कर सुखाके चूर्णकर लो इस चूर्णको आधसेर गोघृतमोमिलाकर ४ सेर दूधकेसंयोगसे खोबाबनालो इस खोबेकोश्सेर मिश्रीकीचास नीम

डालकर टके टकेभरइलायची लौंग गंगेरणकी छाल खरेंटी नाय फल पीपल दाख जायफल पत्रज सोंठ शतावरी मूसली कौंच बीज बिदारिकन्द जीरा सालममिश्री सिंघाडे गोखरू छड वंशलो चन असगंध कस्तूरी केशर कपूर चन्दन भीमसेनी कपूर और अ गर का चूर्ण भी उसी में डालदो तदनन्तर मृगांक चंद्रोदय अभ्रक वंग कांतिसार पौष्टिक फल (मेवे) तथाअन्य सुगंधितद्रव्य मिला करके १टके प्रमाणकी गोलियां बनालोजो इसमेंसे १ मोदक प्रति दिन देकर पथ्य से रखो तो निश्चय है कि निपुंसकत्व निकल जा वेगा इसे वल्लभपूगपाग कहते हैं ।

४-पके मीठे आमका १६सेर रस ४ सेर मिश्री और१सेर घी के मृत्तिका के पात्र में पकाकर गाढा होनेपर चांदी के पात्र में डालो तदनन्तर आठ टके भर सोंठ ८ टके भर मिर्च २ टके भर पीपल २ टके भर धमासा ४ मासे कस्तूरी १ टंक भीमसेनी कपूर १ सेर भर मधु और १ टके भर जीरा चित्रक पत्रज दालचीनी नाग के-शर लौंग इलायची जायफल और केशर इन सबका चूर्ण उपरोक्त चासनीमें एकजीव करके १टके प्रमाणकी गोलियाँ बनालो जो इस में से १ गोली नित्य खिलाओ तो नपुंसकत्व संग्रहणी क्षयी श्वास अरुचि रक्तपित्त अम्लपित्त और पांडुये सब रोग दूर होकर मैथुन में विशेष शक्ति प्राप्त होगी । इसे आम्रपाक कहते हैं ।

५-८टंकभर गोखरू का चूर्ण ५ टंक मधु बकरी के दूध के साथ २ मास पर्यंतनित्यचटाओ तोहस्तक्रियासेहुआनपुंसकत्व दूर होगा

६-चार २ मासे रक्तचन्दन पतंग अगर देवदारु चीढ पद्मकाठ कपूर केशर कस्तूरी जायफल जायपत्री लौंग इलायची बडी इलायची, कंकोल, दालचीनी, पत्रज, नागकेशर, नेत्रवाला, खश छड दारुहलदी मूर्वा कपूर शिलाजीत नागरमोथा प्रयंगु पुष्प सम्भालु लोहवन गूगल खश नख धावडे के फूल पीपलामूल,

मजीठ नगर और मोम इनका क्काथ चतुरावशेष रखे क्काथमें सेरभर सांठा तेल पकाकर मर्दन करो तो शरीर के सम्पूर्ण रोगदूर होकर वृद्ध मनुष्यभी तरुण समान होजावेगा इसे चन्दनादि तैल कहतेहैं

७–सेरभर कैंवाचबीज सेरभर गौदुधमें पकाकर छिलके छीललो इन बीजोंका चूर्णगौदूध में मसल कर २०टंक प्रमाणकी टिकियें(कचियें) बनालो इन वडोंको गौघृत में तलकर २ सेर मिश्रीकी चाशनीमेंपागदोतदन्तरइन्हेंमधुमेंडालकरप्रतिदिन१टिकिया१ मासपर्यंत खिलाओ तो नपुंसकत्व दूर होकर विशेष कालपर्यंत वीर्य स्तंभन होगा, इसे वानरी गुटिका कहते हैं।

८–अधेले अधेलेभर अकुलकरा, सोंठ, लवंग, केशर, पीपल, श्वेत चदंन जायफल जायपत्री औऱ१टकेभर अहिफेन (अफीम) इन का चूर्ण मधुमें मिलाकर उडद प्रमाणकी गोलियांवनालोजो१ गोली नित्य रात्रिकालमें खिलाकर ऊपर दुध पिलाओ तो नपुंसकत्व दूर होकर वीर्य बहुत कालतक पात नहीं होगा ये सवयत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

९–तिलोंका मुर्गीके अण्डेके पानीमें ११ वार भिगोकर सुखाओ और प्रतिदिन ५ टंक खिलाकर ऊपरसे दूध पिलाओतो नपुंसकत्व दूर होकर स्त्री प्रसंग में शक्ति बढैगी।

१०सूखेविदारिकंन्दके चूर्णको गीलेविदारिकन्दकेरसकी२१पुटदेकर सुखाये जाओ तदन्तर मिश्री मधु और घृतकेसाथ प्रतिदिन २टंक चूर्ण खिलाके ऊपर से दुध पिलाओ तो वृद्ध भी तरुण समान हो जावेगा यह वृन्द में लिखा है।

११-सूखे आंवले के चूर्ण को गीले आंवले के रस की २१ पुट दे देकर सुखाते जाओ और मिश्री मधु औरघृतके साथ२ टंकप्रतिदिन खिलाकर ऊपरसेदुध पिलाओतो वृद्धभी तरुणताको प्राप्त होजावेगा यह चक्रदत्त में लिखा है।

१२–सोंठ, मिर्च, पीपली के चार भाग; १ भाग पारा २ भाग बंग, ७भाग शतावरी और दोदो भाग, तज, पत्रज, नागकेशर, इलायची जायफल, सोंठमिर्च, पीपली लौंग और जायपत्री इनसबोंकामहीन चूर्ण मिश्री, मधुऔरघृतमें मिलाकर ५ टंकप्रमाणकीगोलियांबनालो इसकी एकगोली प्रतिदिन खिलाके ऊपरसे दूधपिलाओतो वृद्धभी तरुण समानहो यह मदनमंजरीगुटिका योगतरंगिणी में लिखाहै

१३–अफीम और पारे को धतूरेके बीजोंके तेलमें ३ दिन पर्यंत खरल करके समान मिश्री और भंग में मिलादो प्रतिदिन १ रत्ती खिलाकर ऊपरसे दूध पिलाओ तो नपुंसकत्व नष्ट होकर वीर्य दृढ़ होजावेगा यह सार संग्रह में लिखा है।

१४–जायफल, अकलकरा, लौंग, सोंठ, केशर, पीपल, कस्तूरी भीमसेनी कपूर अभ्रक और इन सबोंके समान अफीम कोखरल करके मूंग प्रमाणकी गोलियां बनालो जो इसकी १या२ गोलियां खिलाकर ऊपर से दूध पिलाओ तो वीर्य महादृढ होजावेगा ।

१५-चीनीकपूर, सुहागा और पारे को अगस्त्यके रस और मधुके साथ १दिन पर्यंत खरलकरके लिंग पर लेप करो १ प्रहर रखकर धो डालो तदनंतर स्त्री संगकरो तो वीर्य विशेष बिलम्बसे स्खलित होगा, इसे नागार्जुन लेप कहते हैं।

१६–श्वेत कन्हेरकी जडकेबक्कल, अकलकरा, अजमोद, काले धतूरे के बीज और जायफलों को जलमें पीसकर उर्द प्रमाणकी गोलियां बनालो जो इसमें से १गोली मनुष्यों के मूत्र में घिसकर लिंगपर लेप करो तो नपुंसकत्व नष्ट होकर वीर्य स्तंभ होगा।

१–शूकरकी मेद और घी को खरलकरके लिंगपर लेप करो तो सर्व विकार दूर होकर पौरुष प्राप्त होगा।

२८–श्वेत कन्हेरकी जडकी छाल दूध में डालकर दूधको

जमादो इस दही को विलोकर घी निकालो और घृत में माहरा जायफल, अफीम और शुद्ध जमालगोटेका चूर्ण मिलाकरलिंगपर लेपकरो तदनंतर ऊपर से पान (ताम्बूल) बांधकर ब्रह्मचर्य रक्खोतो प्रति दिन ऐसा करने से नपुंसकत्व दूर होगा।

विशेषद्रष्टव्य-अब आगे धातुओंको दग्धकर उनकी भस्मसेरस बनानेमेंअतिक्लिष्टताहैइसकेनिर्माणमेंबड़ीसावधानीसेक्रिया करनी चाहिये,इसकाबिशेष ध्यानरक्खो कि इसविषय में जिनधातु उपधातु तथावत्सनागप्रभृतिविषों का उपयोगकरो वेसबविचारखंडालिखित विधान से शुद्धकरके योजित करो और पारे को जितना शुद्धकर सकोउतनाही अच्छाहोगा इनमेंसेकिसी भी धातुके शोधनसंस्कार मेंक्वचितन्यूनता भी रही तो वहरस यथेष्टगुणको प्राप्त नहींहोगा

मृगांकनिमार्णविधि१-स्वर्ण के पतले पत्तों को दूने पारेके साथ खटाई के संयोग से खरलकरके गोलाबनाओ इस गोलेके समान आंवलासार गंधक का चूर्ण गोले के ऊपर नीचे शराब सम्पुट में धर कर कपड़मिट्टी से लपट दो और इसी भांति ३ पुट दे कर ३ बार गजपुट में फूंकदो तो उत्तम मृगांक बन जावेगा।

२-स्वर्णपत्र और १६ वेंभागसीसे को खटाईके साथ खरलकरके गोलीबनाओ इस गोलेकेसमान आंवलासारगंधकका चूर्ण गलेके ऊपर नीचेशराबसम्पुटधरकर कपड़मिट्टीसेलपेटकर गजपुटमेंफूंक दो इसीभांति ७वारपुटें देदेकर फूंकदेनेसे उत्तममृगांक बनजावेगा

३-स्वर्णपात्र और समान पारे को खटाई के साथ खरल करके कचनारके रसकी १ पुट, अग्निझालकेरसकी३पुटें और कालिहारी की जड़ के रस की १ पुट दो तदनंतर स्वर्णपत्र से चतुर्थांशमोती मिलाकर [illegible]नः खरल करो तब इन सबों के समान गंधक के साथ २ दिनप[illegible] खरलकरके गोलाबनालो इस गोले को शराबसम्पुटमें धरके [illegible] मिट्टीकरकेगजपुटमेंफूकदोतो उत्तममृगांक बनजावेगा

मृगांक भक्षणविधि१९—१रत्ती मृगांक १ रत्ती पीपली का चूर्ण और२टंक मधुके साथ देकर खटाई आदिकेपथ्यसे रखोतो श्वास कास,क्षयी और अरुचि आदि समस्त रोगनष्ट होकर४मासे सेवन से शरीर पुष्ट हो जावेगा।

रूपरसानिर्माणाबिधि१—२ भाग चांदी के पत्र और १ भाग हर तालको खटाई से खरल करके गोला बनाओ और इस गोलेको शराब सम्पुट में धरकर गजपुट में फूक दो इस प्रकार १वार पुट देकर फूकने से अत्युत्तम रूपरस बन जावेगा।

२—चांदी के समान रूपामक्खी के चूर्ण को चांदीके पत्तों के ऊपर नीचे रखकर शरावसम्पुट में धरदो और कपड़ मिट्टी करके गजपुट में फूंक दो तो उत्तम रूपरस बन जावेगा।

रूपरसभक्षणविधि२०—१रत्ती रूपरस को नित्य सेवन कराओ तो वह मनुष्य सर्व रोग रहित और पूर्ण बलवीर्ययुक्त हो जावेगा

तांवेश्वरानिर्माणबिधि१—ताम्रपत्रकेसमानरूपामक्खीका चूर्णउस के ऊपरनीचेसम्पुटमेंधरकरगजपुटमेंफूकदोतो ताम्बेश्वरबन जावेगा

ताम्बेश्वरभक्षणाबिधि२१—रत्तीभर ताम्बेश्वर नित्य १ मासेपर्यंत सेवन कराओतो श्वास,कास आदि सर्व रोग नष्ट होकर बलबढेगा

नागेश्वरनिर्माणाबिधि१—सीसेकोकढाईमेंचूल्हेपर चढाकरगला ओ इससे चतुर्थांश पीपल की छालका चूर्ण और इमलीकीछाल का चूर्ण पिघलते हुए सीसे में थोंड़ा२डालकर लोंहेकी करछली १दिनभर चलाते जाओ तदनंतर जम्भीरीके रस में खरल करके गजपुट में फूकदो इसी प्रकार जंभीरीके रसकी १० पुटें देकर फूंको नागरबेलके पानके रसचीभी १०पुटें देकर फूंको और इसी सीसे को समान मेनासिल के साथ काजीमें खरलकरके टिकिया बनाओ इस टिकियाको सुखाकर सम्पुटसे गजपुटमें फूं [illegible] जो इसी विधि से इसे ६० आच दो तो उत्तमनागेश्वर [illegible] जावेगा।

२-सीसे को कढाईमेंपिघलाकर १ दिनभर केवडेके घोटेसे घोटते हुए नीचे आंच देते जाओतो लाल भस्मका नागेश्वर बनजावेगा

नागेश्वर भक्षण विधि २२-एक या डेढ रत्ती की मात्रा २१ दिन पर्यंत दो तो समस्त रोग दूर होकर बलवृद्धि हो जावेगी

वंगेश्वरनिर्माणविधिः-रांगेको कढाईमे चढाकर में नीचेसे आंच देते जाओ और इस पर चौथाई पीपली की छाल और चौथाई इमली की छाल का चूर्ण डालते हुए दो प्रहर तक करछुली से हिलाते जाओ पीछे इसको सामान हरतालके साथ खटाई में खरल करके गजपुट में फूंकदो तो शुद्ध बंगेश्वर बन जावेगा ।

२-पावभर रांगेको गलाकर गलनेपर उसमेंपावभर पारा मिला दो और ढालकर पत्र बनालो तदंनतर एक कंडे (गोवरी) पर कसेलाका चूर्ण तथा चूर्ण पर वे रांगेके टुकडे उनपर पुनः चूर्ण और चूर्ण पर दूसरा कंडा जमाकर निर्वातस्थान में गजपुट से फूंक दो तो वे रांगे के टुकड़े श्वेत भस्म होकर फूल जावेंगे इसी को बंगेश्वर रस कहते हैं बजन पूरा उतारना चाहिये ।

बंगेश्वर भक्षणविधि२३-१रत्ती वंगेश्वर की मात्रा खिलाने से वीर्यको अति पुष्ट और शरीरको अति पराक्रम प्राप्त होगा ।

कांतिसार निर्माणविधि१-गज बेली लोहचूर को आकके दूध की ७ थूहरके दूधको ७ त्रिफलाके रसकी ७ और अनारपत्र के रसकी७पुट देकर प्रति पुटपर भस्म करते जाओ तदंनतर खरल करके जलपर तैराओ तो उत्तम कांतिसार बनजावेगा ।

२-गजबेली लोहचूर्णको नौसादर और नीबू के रसकी २१ पुट दे देकर प्रतिपुट गजपुट में फूकते जाओ तो उत्तम कांतिसार बनजावेगा ।

कांतिसारभक्षण विधि२४-जो इसकी १ रत्ती की मात्रा दो तो श्वास कास क्षयी आदि रोग नष्टकरके कांति बढ़ावेगा ।

सोनामक्खीभस्मविधि१-सोनामक्खी को कुल्थीके साथ क्वाथया तेल या छाछ या बकरीके दूध इनमेंसे किसी एकमें खरल कर के गजपुट में फूंकदो तो सोनामक्खीकी शुद्ध भस्म होजावेगी

सोनामक्खी भक्षणाविधि२५-जो इसकी १ रत्ती की मात्रा दो तो प्रेमहादिक बिकार भी दूर हो जावेंगे।

अभ्रकनिर्माणविधि १–श्याम अभ्रक के पत्र महीन पीसकर सुखादो और कम्बल के टुकड़ों पर डालकर तण्डुल जलके साथ मसल२केपानी निकालते जाओ फिर आकके दूध में खरल कर टिकियाको सुखालो और आकके पत्तोंमें लपेटकर कपडमिट्टीकर फूंकदो इसी प्रकार आकके दूधकी ७थूहरकेदूधकी७ग्वारकेपाटेके रसकी७पुटें दो तदनंतर चौलाई के रस या नागरमोथा के क्वाथ या कांजी या चित्रक क्वाथ या जंभीरी के रस या त्रिफला के रस या गोमूत्र की ७ पुटें देकर फिर बडके जटाके क्वाथ की ७ और मजीठके क्वाथकी ७ पुट दो इसी विधि से प्रति पुट पर फूंकते जाओ तो उत्तम अभ्रक बन जावेगा।

२–श्वेतअभ्रक के पत्रोंपर समान गुण पानीमें गलाकर गाढा सा लगादो और इसके अभ्रक से आधे शोरे का चूर्ण उन पत्रों पर भुरकाके एक पर एक ऐसी घड़ी बनालो तदनंतर इस घडी को जंगली कंडों की आंचमें फूंकके निश्चन्द्र (चमकरहित) होने तक फूंकते जाओ तो अभ्रक भस्म बन जावेगा।

अभ्रकभक्षणविधि २६–एक या दो रत्ती अभ्रक दो मासे तक सेवन करावो तो प्रमेहादि अनेकरोग दूरहोकर शरीर पुष्ट और नपुंसकता का नाश होजावेगा इन दोनों विधियों में प्रथम श्रेष्ठ और द्वितीय उससे कुछ न्यूनता लिये रहेगा।

हरतालभस्मनिर्माणविधि१–पीली हरताल को दूधके रसमें दो

दिन और खरेंटीके रसमें खरल करके गोली बनालो इसे छायामें सुखाकर पलासकीराखकेंबीच हंडीमें दवाओ उस हंडीको चूल्हेपर चढाकर प्रथम मंद फिर मध्य तदनतर विशेष आंचदो आंच देते समय इसमेंसे धुवां न निकलने पावे जो निकले भी तो छिवला (पलासखांकर) की राखसे मूंदते जानाचाहिये इसी प्रकार ३ दिन तक आंच देकर स्वांग शीतल होजाने पर निकाललो तो निर्धूमी श्वेतवर्ण और बोझमें पूर्ववत् होकर शुद्ध हरताल भस्म होजावेगा

२–पीली हरतालको ग्वारपाठके रसमें ३ दिन खरल करके टिकिया बनाके छाया में सुखालो और छिवलेकीराखकेमध्यहांडी मेंदबाकर४प्रहरकी आंचदोऔर स्वांग शीतलहोनेपरनिकाललोतो श्वेत निर्धूमी तथा बोझमें पूरी होकर उत्तमहरताल भस्म होगी ।

३–पीली हरतालकी दशमांश सुहागेके साथ चौघड़ी कपडेकी पोटलीमेंबांधकर जंभीरीके रसके कांजीमें पेठेकेरसमें और त्रिफला केरसमें दोलायंत्रसें प्रति रसमें दो दो प्रहरपर्यंत आंचदो तदनंतर खटाईसे धोकर पलाशके रसके साथ२दिन पर्यंत खरल करो और गोलाबनाकरधूपमेंसुखालो इसगोलेको शराब सम्पुटसे गजपुटमें फूंकके स्वांग शीतल होनेपर निकाललो पुनः बकरीके दूधसे १ दिन खरलकरके गोला बनालो और धूपमें सुखाकर ४सेर पलासकीराखके मध्य हांडीमें दाबदो इस हांडीको चूल्हेपर चढाकर ३२ प्रहरकी आंचदो आंच देते समय धुंऐ को पलासकी राख से मूंदते जाओ स्वांग शीतल हो जाने पर निकालो तो श्वेत निर्धूम और बोझमें पूरी उत्तम हरताल भस्म बन जावेगी ।

रहतालभक्षणाविधि २७–हरताल भस्मकी १रत्ती मात्रा पान के साथदोतो कुष्ठ आदि समस्त रोग नष्टहोकर अतिशय बलप्राप्ति होगी इस भस्मपर मोठ और चने की अलोनी रोटी पथ्य है ।

चंद्रोदयानिर्माणविधि १-१ टके भर स्वर्णपत्र, ८ टके भर पारा और १६ टकेभर गंधक को नंदनवन (कपास) के फूलों के रसमें ३ दिन और ग्वारपाठे के रस में ३ दिन खरल करके सुखालो और इसे आतसी (दृढ) शीशी में भरके कपड़मिट्टी के सात पुट देके सुखालो तदनंतर शीशी का मुख बंद करके बालुका यंत्र से ३२ प्रहर आंच दो और स्वांग शीतल होजाने पर निकालो तो हिंगुल सदृश लाल वर्ण का चन्द्रोदय बन जावेगा।

चंद्रोदयभक्षणविधि२८-१ रत्ती चंद्रोदय की मात्रा, जायफल, भीमसेनी कपूर, समुद्रशोष, लौंग और कस्तूरी के चूर्ण केसाथदेके ऊपर से मिश्री युक्त औटा दूध पिलाओ तो नपुंसकता दूर होकर बिशेष मैथुनशक्ति प्राप्त होगी, इसका भक्षण प्रभात या रात्री को यथा सेवन पर्यंत पौष्टिक पदार्थों को ग्रहण और खटाई आदि कुपथ्य को त्याग करना चाहिये।

रससिंदूरनिर्माणविधि १-५ टंक पारा ५ टंक गंधक २ टंक नौसादर और २ टंक फिटकरी को ३ दिन खरल करके आतसी (दृढ) शीशी में भरो और कपड़मिट्टी के ७ पुटें देकर वालु का यंत्रसे ३२ प्रहर की आंचदो तदनंतर शीतल होजाने परशीशीमेंसे निकाललो, वहरससिंदूर बन जावेगा इसे हरगौरी रस भी कहतेहैं

२ पारे और गंधक को वड़ की जटा के रस में १ दिन खरल करके (दृढ) शीशी में भर दो इस शीशी को सात कपड़ामिट्टी में लपेट कर बालुका यंत्र से २१ प्रहर की आंचदो तो हिंगुल के सदृश लाल वर्ण का रससिंदूर बन जावेगा।

रससिंदूरभक्षणविधि२९-१ रत्ती रससिंदूर की मात्रा पानकेसाथ खिलाओ तो सर्व रोग दूर होकर अति पुष्टता प्राप्त होगी।

पारदभस्मनिर्माणविधि १-पारेको गूलर के दूधमें १ प्रहर खरल

करकेगोली बनाओ तदनंतर हींगको गूलरके दूधमें पीसकर २ मूसें (घरियां)बनाओ इन दोनों मूसो के भीतर गोली रखकर बंदकरदो और सुखाकर १ सेर कडोंकी भभूदर (आग) में फूंक दो तदनंतर स्वांगशीतलहोजानेपर निकाललोतो सुन्दर पारदभस्मबनजावेगी

२ पारेको गूलरके दूधमें खरल कर गोली बनाओ और आंधे झारे के बीजोंके चूर्णकी२मूसे बनाकर इन दोनों में दडघलपुष्प, वायबिंडग और खैरके चुर्ण के मध्य पारेकी गोलीधरदो तदनंतर मूसको भली भांति बंद करके कोयलोंकी आंचमे भाथी (धूमन) से धोंकदो फिर इस मूसपर कपडमिट्टी देकर गजपुट में फूंकदो तो श्वेत शुद्ध और तोलमें पूर्ववत उत्तम पारद भस्म बन जावेगी

पारदभस्मभक्षणविधि२०—यह पारद भस्म जुदे जुदे अनुपानोंसे समस्त रोगों को निवृत करती है इस सर्वोत्तम रसके सेवनसे वल वीर्य और तेज बढ़कर दिव्य देह हो जाता है।

वसंतमालतीरसनिर्माणविधि १—१मासा स्वर्णपत्र २ मासे मोती ३ मासे हिंगुल ४ मासे मिरच ८ मासे सूतरी खपरा और८मासे चांदी लेकर खपरेको गोमूत्र में दोलायंत्रसे १६ प्रहर पकाओ और सर्व पदार्थ मक्खन के साथ खरल करके माखन सूखके चिकनाहट दूर हो जानेपर टिकियाबनालो यह बसंतमालती रस बनजावेगा।

बसंतमालतीरसभक्षणाबिधि२१—१ रत्ती बसंतमालतीरसकीमात्रा २ पीपली और मधुके साथ नित्य दो तो विषमज्वरादि समस्त रोग नष्ट होकर शरीर पुष्ट होजावेगा।

हिंगुलभस्मनिर्माणविधि१—४ पैसभर हिंगुलको छोटी कढ़ाई में रखकर आंच देते हुए २ सेर नीबुका रस और२सेर कांदे (प्याज) कारस डालकर शनैः शनैः सुखादो तदनंतरइसडलीको १ सेरभर कांदेकी लुगदीके मध्यकड़ाही में रखकर पकाओ फिर १ सेर कुचला

१ सेर राई, १ सेर मालकांगनी, १ सेर कांदा, १ सेर घी, और १ सेर मधु इनको कूट पीसकर लुगदी बनाओ इस लुगदीमें वह हिंगुल की गोली रखकर ८ प्रहर आंचदो तो लाल वर्ण निर्धूम और बोझमें पूरा हिंगुल भस्म होगा।

हिंगुल भक्षणविधि ३२-१ या आधी रत्ती हिंगुलभस्म पानके साथ दो तो सब रोग दूर होकर भूख और पुंस्त्वशक्ति विशेषबढेगी दशमूलासव निर्माणविधि १-पैसेभर शाल पर्णी, पृष्ठपर्णी. दोनों कटियाली, गोखरू, बेल, अरणी, अरलु,कुंभेर और पाढलकीजडें पचीस २ टकेभर चित्रक, पोहकरमूल, वीस वीस टकेभर लोद और गिलोय, १६ टकेभर आंवला. बारह बारह टकेभर धमासा खैरसार, विजयसार. और हरेंकी छाल, ८६ टकेभर कूट दो दो टकेभर मजीठ,देवदारु, वाय विडंग, सारंगी. कैथ, बहेडेकी छाल मोठीकी जड, छड, पद्मकाष्ठ, नागकेशर, नागरमोथा, प्रयंगुपुष्प ग्रंथ,कालाजीरा,गोरीसर,निसोत, सम्भालु,रास्ना पीपलसुपारी कपूर.सौंफ, हलदी, इन्द्रयव. काकडासिंगी, विषम मेदा, महामेदा क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि, ६० टकेभर दाख, ३२टकेभरमधु ८ सेर धायके फूल बेरकी झडी और बोलकी छाल इन सब को गुने जलमें औटाकर चतुर्थांश रखलो या सबको कूट कर जल साथ १ बडे मटके में डालदो और इसीमें पनकामन भर गुड रकर मुँह भली भांति वंद करदो फिर इस मटकेको खातकी मी में गाडकर २१दिन पश्चात् दो दो टकेभर खश, चन्दन यफल,लौंग, दालचीनी. इलायची, पत्रज, केशर, पीपल और४ मे कस्तूरी के चूर्णकी पोटली मद्य उतारनेके यंत्रकी नलीकेमुख वरके इसी यंत्रमें उस मटके का पदार्थ भी डालदो फिरमद्य के की विधिसे इसका आसव उतारकरशुद्ध पात्रमें धरलो

आसवभक्षणविधि२३—जो पुराना आसव मदात्यय प्रकरणमें लिखी हुई विधि से सेवन कराओ तो क्षयी, छर्दि पांडुरोग, अरुचि, संग्रहणी, कास, श्वास. भगंदर. कुष्ट अर्श प्रमेह अस्मर मंदाग्नि, मूत्रकृच्छ, नपुसकत्व, उदररोग और सब वातरोगन होकर क्षुधा, वीर्य, पुष्टता और बलकी विशेष वृद्धि होगी।

मूसलीपाकनिर्माणविधि१—पावभर श्वेत मूसली, दोदो टकेभर कैंवाचबीज, बिदारी कंद, गोखरू, शतावरी, एक २ टकेभर सों तज, गंगेरन की छाल औरखरेटीके बीज इन सबका चूर्ण ३२ट भर घीमें तलकर १०सेर दूधके साथ औटाओ तदनन्तर इस चू सहित दूधका खोवा बनाकर ७ सेर शक्करकी चासनीमें डाल और इसीके साथ दो दो टकेभर मिर्च, पीपल. सोंठ, दालचीनि पत्रज, नागकेशर, जायफल और जायपत्री. एक२ टकेभर लौंग इलायची और वंशलोचन. ४ माशे कस्तूरी तथा थोडे २ बंगेश्व अभ्रक, मृगांक, हरगौरी आदि रस और इच्छापूर्वक खारक बद मादि पौष्टिक फल (मेवा) भी इसीमें मिलादो पश्चात् इन सब भली भांति एक जीव करके टके प्रमाणकी गोलियां बांधलो, इसमें से १ गोली प्रभात और संध्या समय प्रतिदिन खिलाओ प्रमेहादिक सब रोग दूर होकर शरीर पुष्ट होगा।

यवक्षारनिर्माणविधि१—गर्भ (गभोट) पर आये हुएजौ (काटकर सुखालो उन्हें जलाकर सजीव राखको २ दिन पर पात्रमें भिगो रखो तदनन्तर उस जलको वस्त्रसे छानकरऔटा जब आंच देते देते सब जल उड़कर तलीमें नोंनके समान क्ष जम जावै उसे निकाल लो यही यवक्षार जवाखार बन गया।

चणक्षारनिर्माणविधि१—माघ मास में तीन चार घड़ी पिछ रात्रिरहेचनेके खेतपर महीनवस्त्रचतुराईसे फेरो जिसमें वह चने वृक्षोंपर पड़ी हुई क्षारयुक्त ओससे भीग जावै तदनंतर इसवस्त्र

८ केशर, तगर और सोंठ जलमें पीसकर लेप करोतो मक्खी का विष उतर जावेगा।

९- सोंठ. कबूतरकी विष्टा हरताल और सेंधानोन बिजौरेकेरसमें पीसकर लेप करोतो मधुमक्खी का विष उतर जावेगा।

१०- धमासा, मजीठ, हलदी और सेंधेनोन को जलमें पीसकर लेप करो तो मूषक (चूहे)का विष उतर जावेगा।

११- थूहरके दूधमें सिरसके बीज पीसकर लेप करोतो मेंडक (मेंडक) का विष उतर जावेगा।

१२- जलते हुए दीपकके तेलका लेप करोतो कनसला (कनखजूरा)का विष उतर जावेगा।

१३- दंशितव्रणका रक्तमोचन कराओ या उस व्रणको तप्तलोहेसे दग्ध करदो तो बावले कुत्तेया स्यारका विष उतर जावेगा।

१४- एक टकेभर धतूरेकारस, एक टकेभर अकावकारस और टके घृत इनतीनोंको खरल करके लेप करो तो उन्मत्त श्वानका [illegible] जावेगा।

[illegible] के फल चौलाईकी जडके रसमें या गोभी या मधुके [illegible] लेप करो तो बावले कुत्तेका विष उतर जावेगा।

[illegible] अकावको, दूध, तेल गुड, और चाख्याका चूर्ण [illegible] की गोलिया बनाले [illegible] सात दिन पर्यन्त १ गोली [illegible] लाओ तो कुत्तेका विष उतर [illegible] वेगा।

[illegible] वीमार्ग या नदीके तीरपर चौकेमें पवित्र [illegible] बैठकर [illegible] काधिपते यक्ष सारमेयगणाधिप। अलर्क [illegible]

[illegible] चिरात् स्वाहा, इस मंत्रसे १०८ वार आहुती देकर [illegible] भसे झाडा दो तो बावले कुत्तेका विष उतर जावेगा।

[illegible]— गुड, तेल और अकावको दूधमें मिश्रित कर लेपकरो तो [illegible] विष उतर जावेगा।

करकेगोली बनाओ तदनंतर हींगको गूलरके दूधमें पीसकर २ मूसें (घरियां)बनाओ इन दोनों मूसो के भीतर गोली रखकर बंदकरदो और सुखाकर १ सेर कडोंकी भभूदर (आग) में फूंक दो तदनंतर स्वांगशीतलहोजानेपर निकाललोतो सुन्दर पारदभस्मबनजावेगी

२ पारेको गूलरके दूधमें खरल कर गोली बनाओ और आंधे झारे के बीजोंके चूर्णकी२मूसे बनाकर इन दोनों में दडघलपुष्प, वायबिंडग और खैरके चुर्ण के मध्य पारेकी गोलीधरदो तदनंतर मूसको भली भांति बंद करके कोयलोंकी आंचमे भाथी (धूमन) से धोंकदो फिर इस मूसपर कपडमिट्टी देकर गजपुट में फूंकदो तो श्वेत शुद्ध और तोलमें पूर्ववत उत्तम पारद भस्म बन जावेगी

पारदभस्मभक्षणविधि३०—यह पारद भस्म जुदे जुदे अनुपानोंसे समस्त रोगों को निवृत करती है इस सर्वोत्तम रसके सेवनसे बल वीर्य और तेज बढ़कर दिव्य देह हो जाता है।

वसंतमालतीरसनिर्माणविधि १—१मासा स्वर्णपत्र २ मासे मोती ३ मासे हिंगुल ४ मासे मिरच ८ मासे सूतरी खपरा और८मासे चांदी लेकर खपरेको गोमूत्र में दोलायंत्रसे १६ प्रहर पकाओ और सर्व पदार्थ मक्खन के साथ खरल करके माखन सूखके चिकनाहट दूर हो जानेपर टिकियाबनालो यह बसंतमालती रस बनजावेगा।

बसंतमालतीरसभक्षणाविधि२१—१ रत्ती बसंतमालतीरसकीमात्रा २ पीपली और मधुके साथ नित्य दो तो विषमज्वरादि समस्त रोग नष्ट होकर शरीर पुष्ट होजावेगा।

हिंगुलभस्मनिर्माणविधि१—४ पैसभर हिंगुलको छोटी कढ़ाई में रखकर आंच देते हुए २ सेर नीबूका रस और२सेर कांदे (प्याज) कारस डालकर शनैः शनैः सुखादो तदनंतरइसडलीको १ सेरभर कांदेकी लुगदीके मध्यकड़ाही में रखकर पकाओ फिर १ सेर कुचला

१ सेर राई, १ सैर मालकांगनी, १ सेर कांदा, १ सेर घी, और १ सेर मधु इनको कूट पीसकर लुगदी बनाओ इस लुग्दीमें वह हिंगुल की गोली रखकर ८ प्रहर आंचदो तो लाल वर्ण निर्धूम और वोझमें पूरा हिंगुल भस्म होगी।

हिंगुल भक्षणविधि ३२—१ या आधी रत्ती हिंगुलभस्म पानके साथ दो तो सब रोग दूर होकर सुख और पुंस्त्वशक्ति विशेषबढेगी

दशमूलासव निर्माणविधि १—पैसेभर शाल पर्णी, पृष्ठपर्णी. दोनों फटियाली, गोखरू, बेल, अरणी, अरलु, कुंभेर और पाडलकीजडें बीस २ टकेभर चित्रक. पोहकरमूल, बीस बीस टकेभर लोद ैर गिलोय, १६ टकेभर आंवला. बारह बारह टकेभर धमासा रसार, विजयसार. और हर्रेकी छाल, ८ टकेभर कूट दो दो केभर मजीठ, देवदारु, वाय विडंग, भारंगी. कैथ,, बहेडेकी छाल ठीकी जड, छड, पद्मकाष्ठ, नागकेशर, नागरमोथा, प्रियंगुपुष्प थ, कालाजीरा, गौरीसर, निसोत, सम्भालु, रास्ना पीपलसुपारी ूर, सौंफ, हलदी, इन्द्रयव. काकडासिंगी, विषम मेदा, महामेदा रकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि, ६० टकेभर दाख, ३२टकेभरमधु ार धायके फूल वेरकी झडी और वोलकी छाल इन सब को ं जलमें औटाकर चतुर्थांश रखलो या सबको कूट कर जल र १ बडे मटके में डालदो और इसमें पक्कामन भर गुड र मुँह भली भांति बंद करदो फिर इस मटकेको खातकी में गाडकर २१दिन पश्चात् दो दो टकेभर खश, चन्दन ल, लौंग, दालचीनी. इलायची, पत्रज, केशर, पीपल और४ स्तूरी के चूर्णकी पोटली मद्य उतारनेके यंत्रकी नलीकेमुख इसी यंत्रमें उस मटके का पदार्थ भी डालदो फिरमद्य विधिसे इसका आसव उतारकर [illegible]

आसवभक्षणविधि३२—जो पुराना आसव मदात्यय प्रकरणमें लिखी हुई बिधि से सेवन कराओ तो क्षयी, छर्दि, पांडुरोग, शूल अरुचि, संग्रहणी, कास, श्वास, भगंदर, कुष्ट अर्श प्रमेह अश्मरी मंदाग्नि, मूत्रकृच्छ, नपुंसकत्व, उदररोग और सब बातरोगनष्ट होकर क्षुधा, वीर्य, पुष्टता और दलकी बिशेष वृद्धि होगी।

मूसलीपाकनिर्माणविधि१—पावभर श्वेत मूसली, दोदो टकेभर कैंवाचबीज, बिदारी कंद, गोखरू, शतावरी, एक २ टकेभर सोंठ तज, गंगेरन की छाल औरखरेटीके बीज इन सबका चूर्ण ३२टके भर घीमें तलकर १०सेर दूधके साथ औटाओ तदनन्तर इस चूर्ण सहित दूधका खोवा बनाकर ७ सेर शक्करकी चासनीमें डालदो और इसीके साथ दो दो टकेभर मिर्च, पीपल, सोंठ, दालचीनी पत्रज, नागकेशर, जायफल और जायपत्री, एक२ टकेभर लौंग इलायची और वंशलोचन, ४ माशे कस्तूरी तथा थोडे २ बंगेश्वर अभ्रक, मृगांक, हरगौरी आदि रस और इच्छापूर्वक खारक बदामादि पौष्टिक फल (मेवा) भी इसीमें मिलादो पश्चात् इन सबको भली भांति एक जीव करके टके प्रमाणकी गोलियां बांधलो, जो इसमें से १ गोली प्रभात और संध्या समय प्रतिदिन खिलाओतो प्रमेहादिक सब रोग दूर होकर शरीर पुष्ट होगा।

यवक्षारनिर्माणविधि१—गर्भ (गभोट) पर आये हुएजौ (. काटकर सुखालो उन्हें जलाकर सजीव राखको २ दिन प पात्रमें भिगो रखो तदनन्तर उस जलको वस्त्रसे छानकरऔटा जब आंच देते देते सब जल उड़कर तलीमें नोंनके समान जम जावे उसे निकाल लो यही यवक्षार जवाखार बन गया

चणक्षारनिर्माणविधि१—माघ मास में तीन चार घड़ी पिछ रात्रिरहेचनेके खेतपर महीनवस्त्रचतुराईसे फेरो जिसमें वह चने वृक्षोंपर पड़ी हुई क्षारयुक्त ओससे भीग जावे तदनंतर इ स्त्र

...सोंठ जलमें पीसकर लेप करोतो मक्खी...

...विष्टा हरतालऔर सेंधानोन बिजौरेकेरसमें... मधुमक्खी का विष उतर जावेगा।

...हलदी और सेंधेनोन को जलमें पीसकर... (चूहे)का विष उतर जावेगा।

...सिरसके बीज पीसकर लेप करोतो मेंडक... उतर जावेगा।

...दीपकके तेलका लेप करोतो कनसला (कनख... उतर जावेगा।

...का रक्तमोचन कराओ या उस व्रणको तप्तलोहेसे... वावले कुत्तेया स्यारका विष उतर जावेगा।

...भर धतूरेकारस, एक टकेभर अकावकारस और टके... खरल करके लेप करो तो उन्मत्त श्वानका... ।

...के फल चौलाईकी जडके रसमें या गोभी या मधुके... लेप करो तो वावले कुत्तेका विष उतर जावेगा।

...अकावका, दूध, तेल गुड, और चाख्याका चूर्ण... गोलिया बनालो और सात दिन पर्यन्त १ गोली... लाओ तो कुत्तेका विष उतर जावेगा।

...मार्ग या नदीके तीरपर चौकेमें पवित्रत... बैठकर ...धिपते यक्ष सारमेयगणाधिप! अलर्क... ...रात् स्वाहा, इस मंत्रसे १०८ वार आहुती देकर रो... झाडा दो तो वावले कुत्तेका विष उतर जावेगा।

...तेल और अकावको दूधमें मिश्रित कर लेपकरो तो... उतर जावेगा।